

सुख और स्याह

लेखक
स्तांधाल
अनुवादक
नेमिचंद्र जैन



दिल्ली
रणजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स

प्रकाशक

रणजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
४८७२, चांदनी चौक
दिल्ली

प्रथम संस्करण १९५८
मूल्य—दस रुपये

मुद्रक—जसवन्त प्रिंटिंग प्रेस, पहाड़गज, देहली ।

छोटा-सा नगर

वेरियेर का छोटा-सा नगर फ्राँशकोते के सबसे सुन्दर स्थानों में से है। उसके लाल खपरैल और नुकीली छतों वाले सफेद पुते हुए घर एक पहाड़ी के किनारे-किनारे फैले हुए हैं जहाँ हर छोटे-से मोड़ पर चैस्टनट वृक्षों के झुरमुट सशक्त भाव से ऊपर उठे हुए दिखाई पड़ते हैं। नीचे घाटी में दू नदी बहती है। उसकी धारा अब उन प्राचीनों के सैकड़ों फीट नीचे है जिन्हें शताब्दियों पहले स्पेनवासियों ने बनाया था, पर जो अब बहुत दिनों से जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पड़ी है। शहर के बहुत ऊपर, उत्तरी ओर से उसकी रक्षा करती हुई, वेरी पहाड़ की ऊँची-नीची चोटियाँ दिखाई पड़ती हैं। यह पहाड़ जुरा पर्वतमाला की एक शाखा है जिसकी चोटी अक्तूबर का शीत आरम्भ होते ही बर्फ से ढक जाती है।

पर्वत के किनारे से नीचे झपटती हुई एक पहाड़ी धारा कूदकर दूबज में विलीन हो जाने के पहले बहुत-से चिराई के कारखानों को गतिमान् करती जाती है। यह कोई बहुत महत्वपूर्ण उद्योग-धंधा नहीं है, पर उस में काम करनेवालों को, जिनका रहन-सहन और रचियाँ शहरवालों की अपेक्षा सरल देहातियों की-सी अधिक हैं, साधारणतः सुविधापूर्वक आजीविका उपार्जन करने का अवसर मिल जाता है। किन्तु शहर की समृद्धि इन कारखानों से नहीं बल्कि उस छपे हुए कपड़े के उत्पादन से है जिसे मुलूज वस्त्र कहते हैं। नैपोलियन के पतन-काल से लगाकर आज तक वेरियेर का प्रत्येक निवासी जिस समृद्धि के कारण अपने घर के

अग्र-भाग को फिर से बनाने में सफल हो सका है, उसका कारण यही है
 बेरियर में प्रवेश करनेवाले के कान एक दैत्याकार भयंकर मशीन
 के खट-खट शब्द से बहरे हुए बिना नहीं रह सकते। नदी की धारा द्वारा
 चढ़नेवाले एक चक्के में जुड़े हुए बीस भारी-भारी घन, जो ऐसे भयंकर
 शब्द के साथ गिरते और फिर हवा में उठते रहते हैं कि पत्थर की गोल
 चिकनी बटियाँ काँपने लगती हैं, हर रोज अनगिनती ज़ीले तैयार करते
 हैं। १२ फ्रांस और स्विट्जरलैंड के बीच के पहाड़ों में से निकलने वाले
 टात्री वो सबसे अधिक आश्चर्य इस बात से होता है कि इन घनों के
 बीच लोहे के छोटे-छोटे टुकड़े रखने का अत्यन्त कठोर कार्य करती है
 सुन्दर उत्फुल्ल गुलाबी गालों वाली युवतियाँ।

य आगन्तुक पूछे कि मुख्य सड़क पर आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के
 कानों को दहका दना देनेवाली इस मशीन का स्वामी कौन है तो कोई न
 कोई अवश्य ही उस जिले की अपनी खास जबान में उसे बता देगा,
 'अरे, यह तो मेयर साहब की मशीन है।' और यदि वह इन नदी के
 किनारे से ऊपर पहाड़ी की ओर जानेवाली सड़क पर पलभर रुका रहे
 तो यह भी बहुत सम्भव है कि उसे अपने महत्व के प्रति सजग और ऊपर
 से अपने कारोबार के मामलों में डूबा हुआ एक लम्बा-सा व्यक्ति सड़क
 पर चलता दिखाई पड़ जाय।

उसके पास से निकलते ही हर आदमी तुरन्त अपनी टोपी उठाकर
 उसका अभिवादन करता है। उसके बाल सफेद होने लगे हैं और उसके
 कपड़े भी फीके भूरे रंग के हैं। उसके कोट का कालर सम्मानसूचक
 चिह्नों से भरा हुआ है। उसका माथा चौड़ा, नाक लम्बी, पतली और
 आकृति कुल मिलाकर देखने में सुघड़ लगती है। उसने मुख-मुद्रा ऐसी
 बना रखी है जिसे छोटे-छोटे अफसर उसकी स्थिति के उपयुक्त ही समझते
 हैं, पर तो भी उसके चेहरे पर एक ऐसा लुभावनापन है जो ४८-५० की
 अवस्था के व्यक्ति में बहुत कम ही दिखाई पड़ता है।

फिर भी पेरिस के अधिक विशाल जगत् से आनेवाले व्यक्ति को

तुरन्त ही यह अनुभव होगा और वह इससे क्षुब्ध होगा कि इस व्यक्ति में कुछ ऐसा है जिससे न केवल वह आत्म-सम्पूर्ण दिखाई पड़ता है बल्कि बहुत ही सीमित और निश्च्योगी भी है। उसे यह भी लगेगा कि अन्ततः ऐसे व्यक्ति की सारी शक्ति इसी बात में लगी रहती है कि दूसरे तो उसका वर्ज चुकाते रहे, पर अपने ऊपर वर्ज को वह आखिरी क्षण तक टालना रहे।

वेरियर के मेयर म० द रेनाल मक्षेप में ऐसे ही व्यक्ति हैं जो सड़क पर धीमे-धीमे दम्भभरी चाल से चलते हुए आते हैं और नगरपालिका की इमारत के भीतर चले जाते हैं। यदि दर्शक और भी आगे चले तो सड़क पर कोई ५० गज बाद ही उसे एक सुन्दर-सा मकान दिखाई पड़ेगा और उसके चारों ओर लगी हुई लोहे की रेलिंग के बीच से उसे एक बड़े भारी शानदार बगीचे की झलक भी दीख जायगी। उसके पार दूर क्षितिज पर बरगडी की पहाड़ियाँ दिखाई पड़ती हैं। उनकी पक्ति से ऐसी आकृति बनती है मानो वह दृष्टि को लुभाने के लिए ही विशेष रूप से बनाई गई हो। यह दृश्य इतना मनोहर है कि देखनेवाला उस छोटे-से नगर की बात ही भूल जाता है, जहाँ क्षुद्र आर्थिक स्वार्थों ने वातावरण को विषाक्त बना रखा है और जिसमें हर आगन्तुक का दम घुटने लगता है।

यह सुन्दर घर अब बनकर लगभग तैयार हो चुका है और उसके हाल ही में कटे हुए पत्थर बड़े नये-नये से लग रहे हैं। आगन्तुक को शीघ्र ही पता चलेगा कि यह घर म० द रेनाल का है जो कीलो के उत्पादन के मुनाफे से बना है। कहा जाता है कि उनके पूर्वज स्पेन के निवासी थे जो १४वें लुई द्वारा फ्राँसकोते पर अधिकार होने से पहले ही इस प्रदेश में आकर बस गये थे।

१८१५ से उन्हें अपने व्यवसायी होने के कारण कुछ सकोच होने लगा है। उसी वर्ष वह वेरियर के मेयर हुए थे। दू नदी के किनारे अनेक सीढ़ियों पर फैले हुए उनके शानदार बगीचे की बगारियों को सहारा देने वाली दीवारे, उनके घर की भाँति ही, लोहे के व्यवसाय में उनकी दक्षता

का ही पुरस्कार है ।

फ्रांस के उद्योग-प्रधान शहरों में ऐसे शानदार बगीचे नहीं हैं जैसे न्यूरमबर्ग, फ्रैंकफोर्ट और लिबजीग तथा अन्य जर्मन उद्योग-केन्द्रों में नगर से बाहर दिखाई पड़ते हैं । फ्राँसकोते में जो व्यक्ति जितनी अधिक दीवारें बनाता है उतना ही अधिक उसके पड़ोसी उसका सम्मान करते हैं । म० द रेनाल के बगीचे और उसकी दीवारों की प्रशंसा इमलिये और भी अधिक होती है कि जमीन के जिन छोटे-छोटे टुकड़ों पर वह लगा हुआ है, उनमें से कुछेक को उन्होंने सोने के मोल खरीदा था । जहाँ अब चौथी क्यारी की दीवार बन रही है, उस जगह पहले एक चिराई का कारखाना था । नया कारखाना अब दू नदी के किनारे ही कोई पाँच सौ गज हटकर है और शहर में प्रवेश करते ही निस्सन्देह उसकी ओर ध्यान आकर्षित होता है । छत के ऊपर एक साइन-बोर्ड पर बड़े भारी अक्षरों में उसके स्वामी सोरेल का नाम लिखा हुआ है जिस पर नजर न जाना असम्भव है ।

अपने अभिमान के बावजूद मेयर को उस जिद्दी और कठिनाई से बात माननेवाले बूढ़े किसान सोरेल के पास कई बार जा ग पड़ा था और सोरेल को अपना कारखाना किसी दूसरी जगह हटा लेने को तैयार करने के लिए उसे अच्छी खासी रकम सोने के सिक्कों में देनी पड़ी थी । जहाँ तक कारखाने को चलाने वाली धारा का सवाल है, वह तो सारे शहर की सम्पत्ति थी किन्तु म० द रेनाल अपने पेरिस के प्रभावशाली मित्रों की कृपा के फलस्वरूप धारा का मार्ग बदलवा देने में भी सफल हो गए थे । यह कृपा उन्हें १८२-के चुनावों के बाद प्राप्त हुई थी ।

मेयर ने सोरेल को एक के बदले में चार एकड़ जमीन दी थी । कारखाने की नई जगह दू नदी के किनारे लगभग पाँच सौ गज आगे चिराई के काम के लिए कहीं अधिक सुविधाजनक थी । किन्तु सोरेल, जो धनी हो जाने के बाद से बड़ा सोरेल कहलाने लगा था, बड़ा चतुर था । उसने अपने पड़ोसी की अधीरता और जमीन के लिए लालच का पूरा-पूरा लाभ उठाया और बदले की जमीन से होनेवाले लाभ के

अतिरिक्त ऊपर से ६,००० फ्रैंक की रकम भी वसूल कर ली थी ।

यह सही है कि इस सौदे की ज़िले के लालबुभक्कडो ने बड़ी आलोचना की थी । फिर चार बरस पहले एक दिन इतवार को जब वह मेयर के सज्जा में गिरजाघर से लौट रहे थे तो म० द रेनाल ने बूढ़े सोरेल को अपने बेटों के साथ दूर खड़े देखा और अनुभव किया कि वह उन्हें देखकर मुस्करा रहा है । तुरन्त ही उस मुस्कान का अर्थ मेयर के आगे तीखे रूप में स्पष्ट हो गया और उस क्षण से उन्होंने यह मान लिया कि सौदे में वह मात खा गये थे ।

वेरियेर में लोगों का आदर प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि दीवारे बनाते समय इटली से लाई हुई कोई ऐसी योजना न स्वीकार की जाय जो हर साल बसन्त ऋतु में पेरिस के रास्ते में जुरा की पहाड़ियों को पार करके जानेवाले सगतराश बता जाया करते हैं । ऐसी नवीनता स्वीकार कर लेने से दीवारे बनानेवाले को हमेशा के लिए स्वीकृत परम्पराओं से विद्रोही मान लिया जायगा और फ्राँशकोते में व्यक्ति की प्रतिष्ठा तौलनेवाले दुद्धिमान् और चतुर व्यक्तियों की दृष्टि में उसकी प्रतिष्ठा की कोई सम्भावना नहीं बचेगी ।

मच बात यह है कि ऐसे सब पण्डितों ने ही यहाँ यह क्षोभदायक निरकुश नियन्त्रण कर रखा है । यही कारण है कि जो व्यक्ति प्रजातन्त्र की नगरी पेरिस में रह चुका है, उसे इन छोटे-छोटे शहरों की जिन्दगी असहनीय जान पड़ती है । जनमत का अत्याचार—और वह भी कैसा जनमत !—फ्रांस के इन छोटे-मोटे स्थानों में उसी प्रकार और उतनी ही मूर्खता से शासन करता है जैसा किसी छोटे-से पिछड़े अमरीकी शहर में ।

: २ :

मेयर

प्रशासक के रूप में मे० द रेनाल की प्रतिष्ठा के लिए सौभाग्य की बात यह हुई कि एक सार्वजनिक भ्रमण-स्थान के लिए एक बड़ी भारी सहारे की दीवार की तुरन्त आवश्यकता थी। यह भ्रमण-स्थान नदी के लगभग सौ फीट ऊपर पहाड़ के किनारे-किनारे बना हुआ था जहाँ से ऐसा प्राकृतिक दृश्य दिखाई पड़ता था जिसकी तुलना फ्रांस के सुन्दरतम स्थानों से की जा सकती है। हर वसन्त ऋतु में भारी वर्षा होने पर मिट्टी कट जाने से रास्ते में बड़े गहरे-गहरे गड्ढे हो जाते थे और चलना लगभग असम्भव हो जाता था। यह असुविधा सबको समान रूप से प्रभावित करती थी और इसने मे० द रेनाल को ऐसा सुखद अवसर प्रदान कर दिया था कि कोई २० फीट ऊँची और लगभग २॥ फीट लम्बी दीवार बनाकर वह अपनी शासन-व्यवस्था के लिए अमर ख्याति अर्जित कर ले। जहाँ तक इस दीवार की मुडेल का प्रश्न है मे० द रेनाल को उसके लिए तीन बार पेरिस की यात्रा करनी पड़ी थी क्योंकि तत्कालीन गृह-मन्त्री ने इस भ्रमण-स्थान के सुधार की हर योजना के विरोधी होने की घोषणा कर रखी थी। जो हो, अब यह मुडेल धरती से अच्छी-भली चार फीट ऊँची खड़ी हो गई है और इस समय भी उसके ऊपर ग्रेनाइट पत्थर के ठोम चौके, मानो भूत और वर्तमान सभी मन्त्रियों की अवज्ञा करते हुए, जड़े जा रहे हैं।

कितनी ही बार मैं उन बड़े-बड़े नीलाभ धूसर पत्थरों के ऊपर झुक

कर हाल ही में छूटे पेरिस के नृत्य और राग-रग की बात सोचता हुआ दू नदी की घाटी की ओर देखता खड़ा रहा हूँ। आगे पश्चिमी ढलानों पर पाच या छः अन्य घाटियाँ जैसे टेढ़े-मेढ़े होते हुए पहाड़ों में जा छिपती हैं। इनमें से प्रत्येक में अनगिनती छोटी-छोटी धाराएँ एक झुरमट में निकल कर दूसरे में गिरती हुई अन्त में नदी से जा मिलती दिखाई पड़ती हैं। इन पहाड़ों में सूरज की किरणें गरम लगती हैं पर जिस समय वहाँ धूप पूरी प्रखरता से उन पर पड़ती हुई दीखती है, उस समय भी यहाँ इस ढालू वीथि पर सुन्दर वृक्षों की छाया अधिक और उसके स्वप्न की रक्षा करती रहती है।

इन पेड़ों के इतनी जल्दी बढ़ने का और उनके सुन्दर पत्तों के नीले हरे रंग का कारण वह उत्तम ममृद्ध मिट्टी है जिसे मेयर ने अपनी सहाय्य देने वाली विशाल दीवार के पीछे ढलवाने का आदेश दिया था, क्योंकि नगर-परिषद् के विरोध के बावजूद म० देनाल ने भ्रमण-स्थान को पहले की अपेक्षा कोई ६ फीट चौड़ा बनवाया था। (यद्यपि वह धीरे दक्षिणपथी है और मैं उदारपथी, तो भी मैं इसके लिए उनकी प्रशंसा करता हूँ। वेरियेर के अनाथाश्रम के सफल प्रभाग म० बालनो की भाँति उन्हें भी इसमें यह विश्वास करने का अवसर मिल गया था कि इस वीथि की तुलना गेट जरे गेट-ऑफ़ की प्रसिद्ध वीथि से की जा सकती है।)

जहाँ तक मेरा प्रश्न है मुझे 'कूर द ला फिदेलिने' में एक ही चीज की कमी दिखाई पड़ती है यद्यपि उसका नाम उन समरमर के पत्थरों पर पड़ा जा सकता है जो मेयर ने १५ या २० स्थानों पर लगवा दिये थे, जिसके लिए उन्हें एक और सम्मान-चिह्न भी प्राप्त हुआ था। मुझे केवल एक बात से आपत्ति है कि स्थानीय अधिकारी अपने चिन्तार के पैरा की काँट-छाँट बड़े निर्मम भाव से करते हैं। किसी मकान के पिछवाड़े के साधारण पौधों की भाँति नीचे-नीचे कुचले और छूटे हुए दिखाई देने की बजाय यदि वे इंग्लैंड की भाँति अपने सम्पूर्ण भव्य

सुख और स्याह

आकार में दिखाई पड़ते तो क्या बात थी। किन्तु एक निरकुश मेयर की इच्छा के आगे कोई बस नहीं, और वर्ष में दो बार कम्यून के सारे वृक्ष निर्मम भाव से छाँट दिये जाते हैं। पास-पड़ोस के उदारपथी, निस्सदेह कुछ बड़ा-चढ़ाकर ही कहते हैं कि जब से नये धर्माधिकारी म० मास्लो को, जिन्हें कुछ बरस पहले बजासो से फादर शेला तथा जिले के दूसरे पुरोहितों पर नजर रखने के लिए भेजा गया था, इस काँट-छाँट से आर्थिक लाभ उठाने का चस्का पड़ा तब से नगर-परिषद् द्वारा नियुक्त माली इन पेड़ों को और भी अधिक काटने लगा है।

इटली की लड़ाई का योद्धा बूढ़ा सैनिक डाक्टर भी सेना में अवकाश ग्रहण करने के बाद वेरियेर में रहने लगा था। मेयर के कथनानुसार वह अपने जमाने में जैकोबिन भी रह चुका था और बोनापार्टपथी भी। इन डाक्टर महोदय ने भी एक बार स्वयं मेयर से बीच-बीच में इन पेड़ों के इस बुरी तरह नष्ट-भ्रष्ट किये जाने की शिकायत की थी।

“मुझे छाया पसन्द है”, म० द रेनाल ने उदासीनता में उत्तर दिया था। उनके स्वर में ऐसी दर्पभरी दूरी थी जो किसी सम्मानित सेना (लीजियन आफ आनर) के सदस्य तथा डाक्टर से बातचीत करने के लिए बहुत ही उपयुक्त थी। “मैं अपने पेड़ों को भी छाया देने के लिए कटवा देता हूँ। मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता कि पेड़ और होता किस लिए है, खासकर जबकि उपयोगी वालनट की भाँति उससे कोई पैसा भी न मिलता हो।”

‘पैसा मिलना’—वेरियेर में हर बात को निर्धारित करनेवाला जादू का मन्त्र यही है। वहाँ की तीन-चौथाई से अधिक आबादी के लिए यह अपने आप में एक विचारणीय विषय बना रहता है। इतने सुन्दर दिखाई पड़नेवाले इस छोटे से शहर में हर बात का असली कारण ‘पैसा मिलना’ ही है। कोई आगन्तुक यहाँ पहले-पहल आने पर चारों ओर की शीतल गहरी घाटियों से मुग्ध होकर यह कल्पना करने लगता है कि यह के निवासियों का सौन्दर्य-बोध बड़ा सूक्ष्म होगा। यह सही भी है कि

वे शहर और उसके चारों ओर की सुन्दरता के विषय में प्रायः चर्चा भी किया करते हैं; इस बात से भी कोई इनकार नहीं कर सकता कि वे उसका मूल्य बहुत अधिक आँकते हैं। पर इसका कारण केवल यही है कि इस सुन्दरता से दर्शक आकर्षित होते हैं जिनके पैसे से सराय के मालिकों की सम्पत्ति में वृद्धि होती रहती है और फिर वे भी बाहर से आनेवाली चीजों पर चुंगी देकर नगर की आमदनी को बढ़ाते रहते हैं।

एक दिन शरद ऋतु में म० द रेनाल 'कूर दि ला फिदेलिते' पर अपनी पत्नी का हाथ पकड़े भ्रमण कर रहे थे। पत्नी से बात करते समय उनके चेहरे की मुद्रा बड़ी गम्भीर थी। पर वह उनकी बात सुनते-सुनते तीन छोटे बालकों की गतिविधि को व्यग्रतापूर्वक देखती चल रही थी। उनमें सबसे बड़ा लगभग ११ बरस का जान पड़ता था। वह बार-बार मुड़के बहुत नजदीक आ जाता था और लगता था कि कहीं वह उस के ऊपर न चढ़ जाय। जब भी वह इस बात का प्रयत्न करता तो एक कोमल-सी आवाज़ उसका नाम पुकारती 'अडौल्फी' और हर बार बालक अपने महत्वपूर्ण प्रयत्न को त्याग देता। मादाम द रेनाल की अवस्था ३० के लगभग होगी पर वह अभी भी बहुत सुन्दर लगती थी।

"पेरिस से यह जो सज्जन आये हैं", म० द रेनाल क्रुद्ध भाव से कह रहे थे और उनके गाल सदा से अधिक पीले जलन पड़ते थे, "इन्हें अपनी करतूत के लिए पछताना पड़ेगा। शातो में मेरे भी दोस्तों की कमी नहीं है....."

किन्तु प्रान्तों के विषय में १००-२०० पन्नों तक आपसे चर्चा करने का उद्देश्य होने पर भी मैं इतना कठोर नहीं बनूँगा कि आपके ऊपर प्रान्तीय चर्चा की लम्बी-लम्बी और सूक्ष्म विवेचनाओं का बोझ लादूँ।

मेयर महोदय को पेरिस के जो सज्जन इतने अप्रीतिकर लग रहे थे, वह म० आप्पेर के अतिरिक्त और कोई न थे। म० आप्पेर दो दिन पहले किसी प्रकार न केवल जेल और अनाथालय में पहुँच गए थे बल्कि मेयर तथा जिले के प्रमुख जमींदारों द्वारा चलाये जानेवाले एक सार्व-

जनिक अस्पताल मे भी जा धमके थे ।

“पर पेरिस के यह सज्जन तुम्हारा क्या नुकसान कर सकते हैं ?”
मा० द रेनाल ने कुछ दबी जवान से कहा । “गरीबों की सहायता के लिए
जो रुपया मिलता है, उसका प्रबन्ध तुम तो इतनी सचाई और ईमानदारी
से करते हो ।”

“वह यहाँ किसी न किसी का दोष निकालने के लिए ही आया है
और बाद मे वह तमाम उदारपथी अखबारों मे लेख निकलवा देगा ।”

“पर तुम्हे इससे क्या डर ? तुम तो उन्हें पढते ही नहीं ।”

“मैं चाहे न भी पढ़ूँ, पर दूसरे लोग तो इस क्रान्तिकारी बकवास
के बारे मे बताते रहते हैं । इस तरह की चीज से बड़ी परेशानी होती
है और उसके कारण भला काम करने में बाधा पड़ती है । जहाँ तक
मेरा सवाल है, मैं इस आदमी को कभी क्षमा नहीं करूँगा ।”

गरीबों की सहायता

यहाँ अब मैं आपको सूचित कर देना चाहता हूँ कि वेरियेर के धर्माधिकारी ८० बरस के वृद्ध होते हुए भी पहाड़ी हवा के कारण सदा की भाँति ही स्वस्थ और धुन के पक्के व्यक्ति थे। उन्हें रात या दिन में किसी भी समय जेल, अस्पताल और अनाथालय तक में जाने का अधिकार प्राप्त था। म० आप्पेर ने इस कौतुहल-भरे छोटे-से शहर में अपने आने का समय बहुत बुद्धिमानी से चुना और वह सवेरे के ठीक ६ बजे वेरियेर पहुँचे तथा मीधे धर्माधिकारी के घर जा उपस्थित हुए।

उन्होंने धर्माधिकारी को राज्य के एक बड़े सरदार तथा प्रान्त के सब से धनी जमींदार मार्कि द ला मोल का पत्र पढ़कर सुनाया जिसे सुनकर फादर गैलों विचारमग्न हो गए।

“मैं बूढ़ा प्रादमी हूँ”, उन्होंने आखिरकार बहुत धीमे से कहा मानो स्वयं अपने आपको बता रहे हो “और यहाँ के लोग मुझमें स्नेह करते हैं “ उन्हें ऐसा साहम नहीं हो सकता।” फिर वह अपने अभ्यागत की ओर बढ़े और वृद्धावस्था के बावजूद उनकी आँखें ऐसे पवित्र तेज से जगमगा उठी जिससे प्रकट होता था कि थोड़ा-बहुत विपत्तिपूर्ण होने हुए भी भला काम करने में उन्हें प्रसन्नता होती है।

“मेरे साथ चलिये”, उन्होंने कहा. “पर कृपा करके मेरा एक अनुग्रह मानियेगा कि आप जो कुछ देखें उसके बारे में जेलर के सामने कुछ न कहें और अनाथाश्रम के कर्मचारियों के सामने विशेष रूप से सावधान रहें।”

म० आप्पेर समझ गए कि वह दयाशील और उदार हृदय वाले व्यक्ति है। वह वृद्ध पादरी के पीछे-पीछे चले और जेल, अस्पताल तथा अनाथाश्रम देख आये। वहाँ उन्होंने बहुत से प्रश्न भी लोगों से पूछे और कुछेक अजीब उत्तर पाने पर भी अपने मुँह से कोई अप्रिय बात न निकलने दी।

यह निरीक्षण कई घण्टे तक चला। पादरी ने म० आप्पेर को रात के भोजन के लिए निमन्त्रित किया जिसे वह चिट्ठियाँ लिखने का बहाना करके टाल गये। वास्तव में बात यह थी कि वह अपने साहसी सहयोगी को अधिक उलझन में न डालना चाहते थे। तीन बजे के लगभग दोनों व्यक्तियों ने अनाथाश्रम-निरीक्षण समाप्त किया और फिर जेल की ओर लौटे। वहाँ फाटक पर उनकी जेलर से मुलाकात हुई। वह लम्बा-चौड़ा भीमकाय व्यक्ति था जिसकी ऊँचाई ६ फीट से अधिक ही होगी। उसके पैर कुछ मुड़े हुए थे और उसका क्षुद्रतापूर्ण चेहरा भय के कारण विशेष रूप से कुरूप दिखाई पड़ने लगा था।

“ओह !” धर्माधिकारी को देखते ही वह तुरन्त बोल उठा। “आपके साथ जो सज्जन हैं वह म० आप्पेर ही हैं न ?”

“इससे क्या ?” पादरी ने उत्तर में कहा।

“जी, बात यह है”, जेलर ने उत्तर दिया, “मुझे कल ही बड़ा सख्त हुक्म मिला है—एक पुलिस का सिपाही रात भर घोड़े पर चल कर यह हुक्म लाया था—कि मैं म० आप्पेर को जेल में प्रवेश न करने दूँ।”

“म० न्वाबू, मेरे साथ म० आप्पेर ही है, यह ठीक है। पर आप यह बात मानते हैं या नहीं कि मुझे इस जेल में, दिन या रात में, किसी समय प्रवेश करने का तथा अपने साथ जिसे चाहूँ लाने का अधिकार है ?”

“हाँ श्रीमान्”, जेलर ने बहुत ही धीमे से कहा और उसका सिर उस बुलडाग की तरह से लटक गया जो केवल मालिक के डर से अनिच्छापूर्वक आज्ञा का पालन करता है। “पर श्रीमान्, मेरे भी बीबी-

बच्चे है। अगर किसी ने शिकायत कर दी तो मेरी नौकरी चली जायगी। इस नौकरी के सिवाय मेरा और कोई सहारा नहीं है।”

“मेरी नौकरी चली जाय तो मुझे भी इतना ही कष्ट होगा”, बूढ़े पादरी ने आगे कहा। उनका स्वर अधिकाधिक दुखी होता जा रहा था।

“पर दोनों में कितना अन्तर है।” जेलर ने जल्दी से उत्तर दिया।” सभी जानते हैं, श्रीमान्, कि आपके पास ८०० फ्रैंक से अधिक की निजी आमदनी है और घाटी के धूप वाले हिस्से में अच्छी-सी जमीन भी है ... ”

यही हैं वे सब घटनाएँ जिनको बेरियेर के छोटे से शहर में पिछले दो दिनों से बीसियों अलग-अलग तरीकों से घटा-बढ़ाकर कहा जा रहा था तथा जिनकी चर्चा से हर प्रकार की जघन्य उत्तेजना फैल रही थी। म० द रेनाल का अपनी पत्नी के साथ छोटी-सी चर्चा का विषय भी इस समय यही था।

उस दिन सवेरे अनाथालय के निर्देशक म० वालनो के साथ म० द रेनाल पादरी के घर अपने घोर असन्तोष को प्रगट करने के लिए गए थे। फादर शेर्ला का कोई सरक्षक न था, वह भली भाँति समझ गए कि उनके शब्दों का क्या अभिप्राय है।

“ठीक है, सज्जनों”, उन्होंने कहा, “इस भाँति इस इलाके से आजीविका से वंचित किया जाने वाला ८० वर्ष की उम्र का मैं तीसरा पादरी होऊँगा। मैं यहाँ ५६ बरस से रहता आया हूँ। मैंने इस शहर के लगभग सभी निवासियों का नामकरण सस्कार किया है और लगभग प्रत्येक दिन मैं उन नौजवानों के विवाह कराता हूँ जिनके दादाओं के विवाह मैं बहुत वर्षों पहले करा चुका था। बेरियेर मेरे परिवार की भाँति है। पर जब इस अजनबी से मेरी मुलाकात हुई, तो मैंने मन ही मन में कहा, हो सकता है कि पेरिस से आनेवाला यह व्यक्ति उदारपथी हो जो आजकल चारों ओर दिखाई पड़ते हैं। पर

वह मेरे शहर के गरीबों अथवा जेल के कैदियों को क्या हानि पहुँचा सकता है।”

यह सुनकर मेयर की, विशेषकर अनाथालय के निदेशक की भर्त्सना और भी तीखी हो गई और यहाँ तक कि आखिरकार बूढ़े पादरी ने काँपती हुई आवाज में कहा, “अच्छी बात है, सज्जनो, प्राप चाहते हैं तो मेरी जीविका छीन लीजिये। पर मैं रहूँगा इस जिले के अन्दर ही। सब जानते हैं कि मेरे पास छोटी-सी जायदाद है, जिससे मुझे ८०० फ्रैंक की आमदनी होती है। मैं उसी आमदनी में गुजारा कर सकता हूँ। मैं कोई बेईमानी नहीं करता”, उन्होंने जरा तीखे स्वर में कहा, “और शायद यही कारण है कि जब लोग मेरी जीविका छीनने की बात करते हैं तो मैं उनसे डरता नहीं।”

म० द रेनाल अपनी पत्नी के साथ हमेशा ही बड़ा अच्छा व्यवहार करते थे। पर जब उसने दबी जवान से यह सवाल दोहराया कि “पेरिस का वह आदमी कैदियों को क्या नुकसान पहुँचा सकता है?” तो वह उसके ऊपर बरस पड़ने ही वाले थे कि एकाएक वह चीख पड़ी। उनका मँझला बेटा दीवार की मुड़ेल पर चढ़ कर दौड़ रहा था, यद्यपि यह दीवार दूसरी ओर की अगूर की क्यारियों से २० फीट से भी अधिक ऊँची थी। म० द रेनाल बालक से कुछ भी कहते डरती थी कि कहीं वह उनकी बात से चौंक कर गिर न जाय। थोड़ी देर बाद बालक ने, जो अपने साहसिक करतब के कारण गर्व से हँस रहा था, पीछे मुड़कर अपनी माँ की ओर देखा और उन्हें इतना भयभीत देखते ही तुरन्त सड़क पर कूद पड़ा और उनके पास दौड़ आया। उसको बहुत डाँट खानी पड़ी।

इस छोटी-सी घटना ने बातचीत का रुख ही बदल दिया।

“मैंने यह पक्का इरादा कर लिया है”, म० द रेनाल ने कहा, “कि बढई के बेटे छोटे सोरेल को मैं अपने यहाँ बच्चों की देखभाल के लिए नौकर रख लूँगा। अब हमारे लिए अकेले उनकी देखभाल करना कठिन

हो गया है। यह नौजवान पुरोहित है या होने ही वाला है, लैटिन अच्छी तरह से जानता है। वह बच्चों को काम-काज में ठीक से लगाये रखेगा क्योंकि वह स्वयं भी बड़े दृढ़ चरित्र का व्यक्ति है—कम से कम धर्माधिकारी का कहना तो यही है। मैं उसे ३०० फ्रैंक और खाना दिया करूँगा।”

मेयर ने आगे कहा, ‘पहले मुझे उसके चाल-चलन के बारे में थोड़ा-सा शक था क्योंकि उस बूढ़े फौजी डाक्टर के साथ उसकी बड़ी घनिष्ठता थी जो आकर सोरेल परिवार का रिश्तेदार बनकर उनके यहाँ चिपक गया था। कोई ताज्जुब नहीं कि वह आदमी उदारपथियों का जासूस रहा हो हालांकि वह कहता यही था कि यहाँ कि पहाड़ी हवा दमे के लिए बड़ी फायदेमन्द है। पर इसका कोई सबूत नहीं है। वह उस बोनापार्ट की इटली वाली लड़ाई में लड़ा था और कहते हैं कि एक बार उसने साम्राज्य के विरुद्ध वोट तक दिया था। इस उदारपथी ने ही सोरेल को लैटिन सिखाई और उसे बहुत-सी किताबें भी दे गया है। इसीलिए मैं पहले इस लड़के को अपने बच्चों के साथ रखने की कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था। पर अभी उसी दिन, हमेशा के लिए भगडा होने से एक दिन पहले ही, पादरी ने मुझे बताया कि लड़का पिछले तीन साल से धर्मशास्त्र का अध्ययन कर रहा है। इसलिए वह उदारपथी कभी नहीं हो सकता, और लैटिन तो वह जानता ही है।”

म० द रेनाल ने पेनी दृष्टि से अपनी पत्नी की ओर देखा और फिर कहने लगे, “इस व्यवस्था में मुझे एक से अधिक लाभ हैं। यह आदमी वालनो है न, उसे आजकल इस बात का बड़ा घमण्ड है कि उसने अपनी गाड़ी के लिए दो बढिया नौरमन घोड़े खरीद लिए हैं, पर बच्चों के लिए शिक्षक कोई नहीं है।”

“कहीं वह हम से पहले उसे न अपने यहाँ रख ले।”

“तो तुम्हें मेरी योजना पसन्द है?” म० द रेनाल ने मुस्कराकर अपनी पत्नी को इस उत्तम सूझ के लिए धन्यवाद देते हुए कहा। “अच्छी

बात है, तो यह पक्का रहा ।”

“ओहो”, पत्नी ने कहा, “तुम कितनी जल्दी अपना इरादा पक्का कर लेते हो !”

“इसका कारण यह है कि मैं चरित्र वाला आदमी हूँ। पादरी भी यह बात भली भाँति समझ गया। पर अब हमें उस चीज को छिपाकर नहीं रखना चाहिए। यहाँ आजकल उदारपथियों की बड़ी भीड़ है। मुझे पक्का यकीन है कि वे जो कपड़ों के कारखानेदार हैं न—वे सब मुझसे जलते हैं। अच्छी बात है। वे भी ज़रा देखें कि मा० द रेनाल के बच्चे अपने शिक्षक के साथ धूमने के लिए जाते हैं। इसका लोगो पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। मेरे बाबा मुझे अक्सर बताया करते थे कि जब वह छोटे थे तो उनका एक शिक्षक था। इस काम में ३०० फ्रैंक का खर्च तो जरूर पड़ेगा पर यह एक ऐसी चीज है जिसे समाज में अपनी इज्जत बनाये रखने के लिए जरूरी खर्चों में शुमार करना चाहिए।”

इस आकस्मिक निश्चय ने मा० द रेनाल को बड़ी हैरत में डाल दिया। वह ऊँचे कद और सुडौल शरीर वाली महिला थी और जिले की सुन्दरियों में गिनी जाती थी। किसी भी पेरिस-निवासी की दृष्टि तुरन्त इस बात पर पड़ती कि उनके व्यवहार में एक स्वाभाविक सहजता है और तमाम भाव-भगिमाओं में बड़ी सजीवता। यह भी सम्भव है कि उनके भोले, उत्सुक और पूर्णतः स्वाभाविक लावण्य से उसके मन में एक प्रकार के हल्के-हल्के इन्द्रियजन्य सुख के विचार भी आते हैं, यद्यपि यदि मा० द रेनाल को अपनी इस सफलता का पता चलता तो वह निश्चय ही बेहद सकोच अनुभव करती। उनके हृदय में दूसरों को रिक्ताने की भावना अथवा बनावट के लिए कोई स्थान न था। ऐसी अफवाह है कि एक बार धनी मा० वालनो ने उनसे प्रेम करना चाहा था, पर कोई सफलता नहीं मिली। इससे अत्यन्त शीलवती स्त्री के रूप में उनकी ख्याति और भी बढ़ गई थी क्योंकि मा० वालनो लम्बे कद, सुडौल शरीर, लाल रंग और प्रभावशाली काले-काले बालों वाले

नौजवान थे और ऐसा उजड़ड़, साहसी और उछल-कूद मचाने वाले व्यक्ति थे जो प्रान्तों में सुन्दर समझे जाते हैं ।

वास्तव में मा० द रेनाल बहुत ही संकोची स्वभाव की और बड़ी तुनक-मिजाज महिला थी और उन्हें म० वालनो की ऊँची आवाज और उनके चंचल तथा धूमधाम वाले तरीके बहुत ही अप्रिय लगते थे । वेरियेर में आनन्ददायक समझी जाने वाली चीजों के प्रति अपनी अरुचि के कारण उनकी यह ख्याति थी कि उन्हें अपने ऊँचे खानदान का बड़ा अभिमान है । उन्हें स्वयं इस बात का कोई पता न था और जब लोगो ने उनके यहाँ आना-जाना कम किया तो उन्हें इससे प्रसन्नता ही हुई । इस बात को छिपाने में कोई लाभ नहीं कि उनकी परिचित विवाहित स्त्रियाँ उन्हें नीरस और बुद्धू समझती थी, क्योंकि बात बनाकर अपने स्वामी से मनमानी करा लेने की कला उन्हें न आती थी और इस भाँति वह बजासो अथवा पेरिस से नए से नए फैशन की टोपियाँ खरीदने के अच्छे से अच्छा अवसर गवा दिया करती थी किन्तु मा० द रेनाल को इससे कोई शिकायत न थी और उन्हें अपने सुन्दर बाग में अकेले घूमते रहना सबसे अच्छा लगता था ।

वास्तव में मा० द रेनाल का स्वभाव बच्चों जैसा सरल था । वह अपने पति के गुण-दोषों का फैसला करने का साहस भी कभी न कर सकती थी और न यह कल्पना कर सकती थी कि वह नीरस हैं । उनका विश्वास था, यद्यपि वह अपने विचारों को शब्दबद्ध नहीं करती थी, कि किसी पति-पत्नी में इतने अच्छे सम्बन्ध नहीं होते होंगे । म० द रेनाल के प्रति सबसे अधिक स्नेह वे तब अनुभव करती थी जब वह उनसे बच्चों के बारे में बातचीत करने लगते थे । म० द रेनाल ने तय किया था कि सबसे बड़े को सेना में भेजेगे, मँफ़ले को जज बनायेगे और तीसरे को धर्माध्यक्ष । संक्षेप में म० द रेनाल उन्हें अपने परिचित सभी पुरुषों से कम नीरस लगते थे ।

ऐसी पत्नी-सुलभ भावना के लिए उनके पास पर्याप्त कारण थे

भी, क्योंकि वेरियेर के मेयर ने अपने चाचा से सुनी हुई कुछ मतोरंजक कहानियों के आधार पर वाक्पटु और सुशिक्षित होने की ख्याति प्राप्त कर रखी थी। बूढ़े कप्तान द रेनाल क्रान्ति से पहले ओर्लेयाँ के ड्यूक की रेजिमेंट में अफसर थे और बाद में पेरिस आने पर राजमहल के निमन्त्रणों में अतिथि हुआ करते थे। वही पर उनकी भेंट मादाम द मोतेसो, प्रसिद्ध मादाम द जालिस और ड्यूक के परिवार के एक व्यक्ति आविष्कारक म० दुक्रे से भी हुई थी। म० द रेनाल के चुटकुलों में इन सब व्यक्तियों का प्रायः उल्लेख हुआ करता था, यद्यपि धीरे-धीरे ऐसी सूक्ष्म बातों के बार-बार वर्णन से उन्हें अब कुछ उकताहट होने लगी थी और ओर्लेयाँ परिवार से सम्बन्धित चुटकुले अब महत्वपूर्ण अवसरों पर ही दोहराये जाते थे। बातचीत का विषय पैसा न हो तो म० द रेनाल सदा बहुत शिष्ट और विनम्र रहते थे। इसलिए इस बात के पर्याप्त कारण थे कि उन्हें वेरियेर में सबसे अधिक उल्लेखनीय और अमीराना तबीयत का व्यक्ति समझा जाता था।

बाप-बेटे

अगले दिन सबेरे छः बजे ढाल पर उतर कर बूढ़े सोरेल के कार-खाने की ओर जाते हुए वेरियेर के मेयर ने सोचा कि मेरी पत्नी में बुद्धि तो जरूर है। चाहे मैंने अपना बडप्पन बनाये रखने के लिए उससे यह बात कही हो, पर सचमुच यह मुझे भी न सूझा था कि यदि मैंने इस लड़के सोरेल को, जिसे, सुना है लैटिन का बहुत अच्छा ज्ञान है, अपने यहाँ न रखा, तो सम्भव है कि अनाथालय के निर्देशक महोदय को ही यह बात सूझ जाय और वह मुझ से पहले ही उसे हथिया ले। फिर वह अपने बच्चों के शिक्षक की बात किस घमण्ड से सुनाया करेगा!..... अच्छा, मेरा यह काम मिल जाने पर क्या यह लड़का पादरी का काम करेगा ?

म० द रेनाल इसी सोच-विचार में डूबे हुए थे कि कुछ दूर पर एक किसान दिखाई पड़ा। वह छः फीट लम्बा-ऊँचा आदमी था जो स्पष्ट ही बहुत तडके से दू के किनारे पड़े हुए लकड़ी के तख्तों को नापने में बहुत व्यस्त था। मेयर को आते देख वह बहुत खुश नहीं हुआ क्योंकि उन लट्ठों ने रास्ते को रोक रखा था और उन्हें ऐसे वहाँ पड़े रहने देना कानून की दृष्टि से अनुचित था।

वह किसान और कोई नहीं स्वयं सोरेल था। अपने बेटे के सम्बन्ध में म० द रेनाल के अद्भुत प्रस्ताव को सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और इससे भी अधिक गहरा सन्तोष हुआ। तो भी वह सारी बात को उसी असन्तोष और मौन उदासीनता के भाव से सुनता रहा जिसके

पीछे इन पहाडों के निवासी अपनी तीक्ष्ण स्वार्थ-बुद्धि को इतनी चालाकी से छिपाये रखते हैं। स्पेन के अधिकार के ज़माने में ये किसान दास थे और उनके चेहरों पर अभी तक कुछ-कुछ वैसा ही भाव मौजूद है जो मिस्र के किसानों की विशेषता है।

उत्तर में सोरेल ने सबसे पहले तो विस्तारपूर्वक उन सब बातों को दोहराया जो साधारणतः आदर प्रगट करने के लिए कही जाती हैं और जिन्हें उसने कण्ठस्थ कर रखा था। इन खोखले शब्दों को दोहराते समय उसके चेहरे पर एक ऐसी अजीब-सी मुस्कराहट थी जो उसके मुख की स्वाभाविक मक्कारी बल्कि शैतानी भरे भाव को और भी स्पष्ट कर देती थी। साथ ही इन शब्दों को कहते-कहते वह मन ही मन यह समझने की कोशिश कर रहा था कि उसके निकम्मे बेटे को यह इतना बड़ा आदमी अपने घर में क्यों रखना चाहता है। वह स्वयं जुलिये से असन्तुष्ट था, पर उसी के लिए म० द रेनाल खाने के अलावा ३०० फ्रैंक प्रति वर्ष का अप्रत्याशित वेतन, यहाँ तक कि कपड़े भी, देने को तैयार थे। यह कपड़ों की बात सोरेल ने ही चतुराई से एकदम अचानक कह दी थी जिसे म० द रेनाल ने उतनी ही तत्परता से स्वीकार किया था।

मेयर इस माँग से बहुत ही प्रभावित हुए। उन्होंने मन ही मन सोचा कि यह तो स्पष्ट है कि सोरेल मेरे प्रस्ताव से एकदम गद्गद और प्रसन्न नहीं हुआ। इसका अर्थ है कि उसे किसी और जगह से भी ऐसा प्रस्ताव मिल चुका है। और कौन कर सकता है ऐसा प्रस्ताव, म० बालनो को छोड़कर? म० द रेनाल ने मामले को उसी समय पक्का करने का आग्रह किया पर इसमें उन्हें सफलता न मिली क्योंकि उस बूढ़े मक्कार किसान का मन इस बात के लिए तनिक भी तैयार न था। ऊपर से उसने अपने बेटे से पूछने का बहाना बनाया, यद्यपि इन छोटे-छोटे कस्बों में पैसे वाला बाप अपने बेरोज़गार बेटे से दिखावे के सिवाय कभी कोई बात पूछना ज़रूरी नहीं समझता था।

पानी से चलने वाले चिराई के कारखाने में नदी के किनारे एक

बड़ा-सा खुला हुआ छप्पर होता है जिसमें लकड़ी के चार मजबूत खम्भों पर छत डालने के लिए लकड़ी का ही एक ढाँचा बना होता है। छप्पर के बीचोबीच ज़मीन से कोई ६-१० फीट की ऊँचाई पर चीरनेवाला आरा ऊपर-नीचे चलता दिखाई पड़ता है और एक बहुत ही सरल-सी तरकीब से लकड़ी का लट्ठा उसकी ओर धकेला जाता रहता है। पानी की धारा से चलने वाले एक पहिये के द्वारा इस दोहरी मशीन के दोनों हिस्से चलते हैं। एक हिस्सा वह है जिससे आरे को ऊपर-नीचे चलाते हैं, और दूसरा वह जिसमें लकड़ी का लट्ठा आरे की तरफ धीरे-धीरे खिसकाया जाता है ताकि उसके तख्ते चीरे जा सकें।

कारखाने के समीप पहुँचते ही बूढ़े सोरेल ने जुलिये को बुलन्द और जोरदार आवाज में पुकारा। पर किसी ने उत्तर नहीं दिया। उसे केवल अपने बड़े बेटे दिखाई पड़े। वे सब बड़े भारी डील-डौल के लोग थे जो हाथ में बड़ी-बड़ी कुल्हाड़ियाँ लिए हुए चीड़ के बड़े-बड़े लट्ठों को आरे के पास लाने के पहले काट कर चौकोर कर रहे थे। वे सब लट्ठे पर लगे हुए ठीक काले निशान के ऊपर कुल्हाड़ियाँ मार रहे थे, जिससे हर आघात पर बड़े-बड़े टुकड़े उछल कर दूर जा गिरते थे। वे सब अपने काम में इतने डूबे हुए थे कि उन्हें अपने पिता की आवाज सुनाई न दी। सोरेल छप्पर की ओर आगे बढ़ा और प्रवेश करके वह व्यर्थ ही जुलिये की तलाश आरे के पास उस जगह करने लगा जहाँ उसे होना चाहिए था। पर वह उसे ५-६ फीट और ऊँचाई पर छत में एक कड़ी के ऊपर बैठा दिखाई पड़ा। मशीन के ऊपर होशियारी से नजर रखने के बजाय वह किताब पढ़ रहा था। बूढ़े सोरेल के लिए इससे अधिक आपत्तिजनक दूसरी चीज़ न हो सकती थी। वह जुलिये को उसके दुबले-पतले शरीर के लिए क्षमा करने को तैयार था जो न केवल कठोर परिश्रम के लिए अनुपयुक्त था बल्कि उसके दूसरे बड़े भाइयों के डील-डौल से इतना भिन्न भी था। पर इस पढ़ने के पागलपन से तो उसके तन-बदन में आग लग जाती थी। वह खुद भी पढ़ना न

जानता था ।

उसने जुलिये को दो-तीन आवाजे दी, पर सब बेकार । आरे के शोर से भी अधिक अपनी किताब में लवलीन होने के कारण लडका अपने पिता की डरावनी आवाज न सुन सका । अन्त में बूढ़ा होने पर भी सोरेल फुर्ती से उछल कर चिरते हुए लट्ठे पर चढ़ गया और वहाँ छत को थामनेवाली बल्ली पर एक जोर के थप्पड़ से जुलिये के हाथ की किताब उड़कर नदी में जा गिरी । दूसरा थप्पड़ उतने ही जोर से उसके सिर पर पड़ा जिससे लडके के हाथ-पैर डगमगा गए । वह १०-१५ फीट नीचे चलती हुई मशीन के बीच, जहाँ उसके टुकड़े-टुकड़े उड़ जाते, गिरने को ही था कि उसके पिता के बाये हाथ ने उसे पकड़कर थाम लिया ।

“निकम्मे, आलसी कही के ! आरा देखने बिठाओ तो भी हमेशा बेकार की किताबें ही पढ़ता रहेगा ! पढ़नी ही है तो शाम को पढ़ाकर जब वहाँ पादरी के यहाँ जाकर अपना वक्त बरबाद करता है ।”

थप्पड़ों के जोर से जुलिये हक्का-बक्का रह गया था और उसके चेहरे से खन बहने लगा था तो भी वह जाकर आरे के पास अपने काम पर खड़ा हो गया । शारीरिक कष्ट से भी अधिक अपनी प्यारी पुस्तक के हाथ से चले जाने के कारण उसकी आँखों में आँसू भर आये थे ।

“नीचे चल बेवकूफ, तुझसे कुछ बात करनी है ।” इस बार भी मशीन के शोर के कारण जुलिये इस आदेश को न सुन सका । उसका पिता घरनी पर उतर आया था और दुबारा मशीन पर चढ़ने की तकलीफ नहीं करना चाहता था । इसलिए वह जाकर वालनट गिराने का लम्बा बाँस उठा लाया और उससे जुलिये के कंधे पर आघात किया ।

जुलिये मुश्किल से नीचे पहुँचा होगा कि उसके पिता उसे धकेलते हुए घर की ओर ले चले । भगवान जाने आज क्या होगा, लडका मन ही मन सोचने लगा । आगे बढ़ते-बढ़ते उसने बड़ी उदासी के साथ उस जगह की ओर देखा जहाँ उसकी पुस्तक गिरी थी । वह उसकी सबसे प्रिय

पुस्तक थी—‘सेतेलेन के सस्मरण ।’

उसके गाल लाल हो गए थे और आँखें भुका हुई थी। वह कुछ नाटे कद का लडका था, उम्र यही कोई १८-१९ बरस होगी, चेहरे की आकृति कुछ अनगढ़ किन्तु सुकुमार और नाक नुकीली थी। उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें, जिनमें अधिक शान्त क्षणों में एक विचारवान और ज्वलन्त व्यक्तित्व की झलक मिलती थी, इस समय तीव्रतम बर्बर घृणा से चमक रही थी। उसके गहरे भूरे बालों के लटक आने से माथा बहुत छोटा दिखाई पड़ने लगता था और क्रोध की अवस्था में इस कारण उसकी मुद्रा बड़ी डरावनी और कठोर हो जाती थी। मनुष्य की जितनी भी विभिन्न आकृतियाँ दिखाई पड़ती हैं, उनमें से शायद ही किसी दूसरी को ऐसा विलक्षण व्यक्तित्व मिला हो। उसके दुबले, सुडौल शरीर में फुर्ती झलकती थी। उसका विचारशील मुद्रा और चेहरे के बेहद फीकेपन के कारण बचपन से ही उसके पिता की यह धारणा हो गई थी कि वह बहुत दिन नहीं जीयेगा अथवा जीयेगा तो परिवार के ऊपर भार बनकर। घर में सब उसका तिरस्कार करते थे और उसे भी अपने भाइयों और पिता से बड़ी घृणा थी। शहर के मैदान में इतवार के दिन होने वाले खेलों में वह हमेशा हार जाया करता था।

कुछ ही दिनों से, बल्कि पिछले एक वर्ष से कम ही से, उसके सुन्दर चेहरे के कारण कुछ युवतियाँ उसके विषय में आत्मीयता से चर्चा करने लगी थी। अपनी दुर्बलता के कारण हर व्यक्ति द्वारा तिरस्कृत होने के फलस्वरूप जुलिये उस बूढ़े फौजी डाक्टर की पूजा करने लगा था जिसने एक दिन हिम्मत करके मेयर से चिनार के पेड़ों के बारे में बातचीत की थी। वह डाक्टर कभी-कभी बूढ़े सोरेल को उसके बेटे के दिन भर के काम के लिए कुछ दे देता और उसे लैटिन भाषा तथा इतिहास पढ़ाया करता था। कम से कम जितना इतिहास वह जानता था, अर्थात् १७९६ की इटली की लड़ाई के बारे में, उसने सब कुछ जुलिये को बता दिया था। जब उसकी मृत्यु हुई तो वह अपना सम्मानित सेना वाला पदक, बचा

सुख और स्याह

हुआ आधा वेतन और ३०-४० पुस्तके जूलियन को ही दे गया था । इन्हीं पुस्तको मे से जो जूलियन को सबसे अधिक प्रिय थी, वही अभी-अभी उछलकर उस सार्वजनिक धारा मे जा गिरी थी जिसका मार्ग मेयर के प्रभाव के कारण बदल गया था ।

जुलिये ने मुश्किल से घर मे प्रवेश ही किया था कि उसे अपने कंधे पर अपने पिता के सशक्त हाथ के स्पर्श का अनुभव हुआ जिससे वह एक-दम निश्चल खड़ा रह गया । एक पल को वह और पीटे जाने की आशका से काँप उठा ।

“मुझे अभी जवाब दो, बिना झूठ बोले ।” बूढ़े किसान का स्वर जुलिये के कानो मे कर्कश रूप मे गूँज उठा । उसके पिता के हाथ ने उसे पकड़कर ऐसे घुमा दिया जैसे किसी बालक का हाथ खिलौने के सिपाही को अपनी ओर घुमाता है । जूलियन की बड़ी-बड़ी काली आँखे आँसुओं से भर गयी और उसने देखा कि बूढ़े मिस्त्री की फीकी भूरी आँखे जैसे उसकी आत्मा की गहराई तक को पढ़ने का प्रयत्न कर रही है ।

बातचीत

“अब मुझे जवाब दे, बिना झूठ बोले। अभागा, किताबी कीड़ा कही का। म० द रेनाल से तेरी कैसे जान-पहचान हुई? उनसे तेरी बातचीत कैसे हुई?”

“मेरी कभी उनसे बातचीत नहीं हुई”, जुलिये ने उत्तर दिया।
“मैंने गिरजाघर के सिवाय उन्हें कभी देखा भी नहीं।”

“पर उनकी ओर ताका तो है तूने? ताका है या नहीं, बेहया?”

“कभी नहीं। आप जानते हैं कि गिरजाघर में मुझे स्वयं भगवान के अतिरिक्त और कोई नहीं दिखाई पड़ता”, जुलिये ने हल्के-से ढोंग के भाव से कहा। इसे वह अधिक मारपीट से बचने का सबसे अच्छा उपाय समझता था।

“कोई न कोई बात तो इसमें है ही”, मक्कार बूढ़े किसान ने उत्तर दिया और क्षण भर के लिए एकाएक चुप हो गया। “पर तूझ ढोंगी से कोई बात मेरे पल्ले न पड़ेगी, यह मैं जानता हूँ। जो हो, अब तুমसे मेरा पीछा छूट जायगा और मेरा आरा कुछ अच्छा ही चल सकेगा। तूने किसी न किसी तरह से पादरी को अथवा किसी और को प्रसन्न कर लिया है जिससे तुझे बड़ा अच्छा काम मिल गया है। जा, और अपना सामान बाँध ले। मैं तुझे म० द रेनाल के घर पहुँचा दूँगा, जहाँ तुझे उनके बच्चों के शिक्षक का काम करना पड़ेगा।”

“उसके लिए मुझे मिलेगा क्या?”

भुक कर नमस्कार करना तथा आदरसूचक बात करना शुरू कर दिया । एक के बाद एक तरह-तरह की आपत्तियों का सामना करने के बाद सोरेल अन्ततः यह समझ गया कि उसका बेटा गृहस्वामी और गृहस्वामिनी के साथ ही भोजन किया करेगा और मेहमानों के आने पर अलग कमरे में बच्चों के साथ । मेयर के सर्वथा वास्तविक आग्रह को पहचान कर तथा अपने विस्मय और अविश्वास के कारण सोरेल ने तरह-तरह की कठिनाइयाँ उठाई और अन्त में अपने बेटे के सोने का कमरा देखना चाहा । वह एक भली-भाँति सजा हुआ बड़ा-सा कमरा था, जिसमें एक नौकर तीनो बालकों के पलंग भी लाकर बिछा रहा था ।

इस दृश्य से बूढ़े किसान के मन में एकाएक बिजली-सी चमक गई । उसने वही और तुरन्त ही साहसपूर्वक यह देखने की माँग की कि उसके बेटे को कपड़े कौन से दिये जाएँगे । म० द रेनाल ने अपनी मेज की दराज खोलकर १०० फ्रैंक निकाले ।

“लीजिए, यह लेकर म० दुरॉ बजाज के यहाँ चले जाइये और उसके लिए एक काले सूट का आदेश दे दीजिये ।”

“आपके यहाँ से छोड़ने पर भी यह काला सूट उसी के पास रहेगा ?” अचानक अपनी सारी विनय और शिष्टाचार को भूल कर किसान ने कहा ।

“अवश्य ।”

“अच्छी बात है ।” सोरेल ने चबा-चबा कर बोलते हुए कहा, “अब तो उसके वेतन के सिवाय और कोई बात तय करने के लिए नहीं बची ।”

“क्या ।” म० द रेनाल ने कुछ गुस्से से कहा, “उसका फैसला तो कल ही हो गया था । मैं उसे ३०० फ्रैंक दूँगा । मेरे विचार से यह रकम काफी है, बल्कि कुछ अधिक ही है ।”

“आपने कहा इतना ही था, इस बात से मुझे इन्कार नहीं”, बूढ़े सोरेल ने और भी धीरे-धीरे कहा । और फिर एक अद्भुत सूझ के

साथ, जिस पर केवल फ्राँसकोते के किसान से अपरिचित लोगों को ही आश्चर्य होगा, उसने म० द रेनाल को तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए कहा, “दूसरी जगह हमें इससे कुछ अधिक मिल सकता है।”

ये शब्द सुनते ही मेयर का चेहरा उतर गया। किन्तु उन्होंने अपने आपको सम्हाला और लगभग दो घंटे तक बड़ी चतुराई भरी बातचीत के बाद, जिसमें एक शब्द भी निरुद्देश्य न था, किसान की चालाकी ने धनी आदमी की चालाकी पर विजय पाई, क्योंकि धनी आदमी अपनी आजीविका के लिए अपनी चालाकी पर निर्भर नहीं होता। जुलिये की नई जिन्दगी की विभिन्न बातें समुचित रूप में निर्धारित हो गईं। न केवल उसका वेतन ४०० फ्रैंक तय हुआ बल्कि यह भी निश्चित हो गया कि वह उसे हर महीने के प्रारम्भ में पेशगी मिल जाया करेगा।

“अच्छी बात है।” म० द रेनाल ने कहा, “मैं उसे ३५ फ्रैंक दे दूंगा।”

“पूरे ३६ फ्रैंक ही कर दीजिये। आप जैसे उदार और धनी व्यक्ति के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं”, किसान ने कुछ झुशामद के स्वर में कहा।

“अच्छा, अच्छा।” म० द रेनाल बोले। “बस अब और कुछ नहीं।”

इस बार क्रोध के कारण उनके स्वर में दृढ़ता आ गई थी। किसान समझ गया कि अब और अधिक दबाने का प्रयत्न व्यर्थ है। उसके बाद म० द रेनाल का पलड़ा कुछ भारी पड़ने लगा। पहले महीने का वेतन बूढ़े सोरेल को देने के लिए वह किसी प्रकार तैयार न हुए, यद्यपि वह अपने बेटे की ओर से यह रकम ले लेने के लिए बहुत ही उत्सुक था। म० द रेनाल को अचानक याद पड़ा कि इस सौदे में अपनी चतुराई का वर्णन उन्हें अपनी पत्नी के आगे करना होगा।

“और जो १०० फ्रैंक मैंने तुम्हें दिये थे, वे मुझे लौटा दो”, उन्होंने कुछ रुष्ट स्वर में कहा, “म० दुराँ पर मेरे कुछ रुपये निकलते हैं। मैं

स्वयं तुम्हारे बेटे के साथ जाकर उसके लिए काले सूट का आदेश दे आऊँगा ।”

दृढता के इस प्रदर्शन को देखकर सोरेल ने फिर से विनय और सम्मान-पूर्वक बातचीत करने में ही बुद्धिमानी समझी । इस सम्मान-प्रदर्शन में कोई १४ मिनट लग गए । अन्त में यह समझ कर कि अब इसके द्वारा भी किसी अन्य लाभ की कोई आशा नहीं बची, उसने विदा माँगी । चलते-चलते उसने अन्तिम अभिवादन के साथ यह भी कहा, “मैं अपने बेटे को अभी आपके महल में भेजता हूँ ।” मेयर के अधिकार-क्षेत्र में रहने वाले व्यक्ति जब उन्हें प्रसन्न करना चाहते तो उनके मकान का इन्हीं शब्दों में उल्लेख करते थे ।

कारखाने लौटकर सोरेल ने अपने बेटे की तलाश की, पर उसका कोई पता न चला । न जाने क्या हो, इस डर से जुलिये आधी रात को ही घर से चला गया था । वह अपनी पुस्तकें और सम्मानित सेना वाला पदक किसी सुरक्षित स्थान में रखना चाहता था । इसलिए उन सब चीजों को साथ लेकर अपने एक मित्र के घर जा पहुँचा था जिसका नाम था फूके । वह अभी नौजवान ही था और इमारती लकड़ी का धंधा करता था । बेरियेर से थोड़ी ऊँचाई पर पहाड़ी ढाल पर उसका घर था । जब जुलिये लौटा तो पिता ने उसे बुलाया और कहा, “आलसी, निकम्मे लडके ! भगवान जाने तू कभी इस लायक होगा भी या नहीं कि पिछले इनने वर्षों से तेरे खाने-कपड़े पर जो खर्च करता रहा हूँ, उसे चुका सके । चलो उठाओ अपने चीथड़े और पहुँचो मेयर के घर ।”

जुलिये इस बात से ही बहुत चर्कित था कि फिर से मार नहीं पड़ी, इसलिए वह जल्दी-जल्दी वहाँ से चल पड़ा पर अपने पिता की दृष्टि से ओझल होते ही उसकी चाल धीमी पड़ गई । उसने सोचा कि इस समय जाकर गिरजाघर में प्रार्थना करना उसके ढोंग के लिए लाभदायक सिद्ध होगा ।

१ । * इस ‘ढोंग’ शब्द से आपको आश्चर्य होता है ? इस किसान युवक

की आत्मा को इस भयानक शब्द तक पहुँचने में बड़ी ही लम्बी यात्रा करनी पड़ी थी ।

जुलिये जब बहुत ही छोटा था तो उसने एक बार छठी रेजिमेण्ट के कुछ दस्तों को इटली से लौटते देखा था । उन्होंने उसके घर की खिड़कियों की लोहे की छड़ों से प्रपने घोड़े बाँध दिये थे । उनके लम्बे सफेद लबादों, सिर पर घोड़े के बाल की लम्बी काली कलगियों तथा लोहे की टोपियों से वह इतना आकर्षित हुआ था कि उसी समय उसने सैनिक बनने का निश्चय कर डाला था । बाद में उसने बूढ़े फौजी डाक्टर के मुँह से लोड़ी के पुल की, आरकोला और रिवोली की लड़ाइयों की कहानियाँ मुग्ध भाव से सुनी थी और देखा था कि बूढ़े डाक्टर की आँखें अपने पदक पर नज़र पड़ते ही कैसी चमक उठा करती थी ।

किन्तु जब जुलिये चौदह बरस का हुआ तो वेरियेर में एक गिरजाघर बनने लगा जो उस छोटे से शहर के लिए बहुत शानदार ही था । उसमें चार सगमरमर के खम्बे थे जिनसे वह विशेष रूप से प्रभावित हुआ था । ये खम्बे सारे जिले में प्रसिद्ध भी हो गए थे क्योंकि उनके कारण न्यायाधीश और बजासों से आये हुए एक युवक पादरी में, जिसे जेस्विटपंथी जासूस समझा जाता था, बड़ी गहरी शत्रुता हो गई थी । उन दिनों कम से कम साधारण लोग तो यही सोचने लगे थे कि न्यायाधीश को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा क्योंकि उसने ऐसे पादरी से झगडा मोल लिया था जो लगभग हर पखवाड़े बजासों जाता था जहाँ लोगों के कथनानुसार वह बिशप महोदय से भी मिला करता था ।

इसी बीच इस न्यायाधीश ने, जिसका परिवार बहुत बड़ा था, ऐसे फैसले किये जो स्पष्ट ही अन्यायपूर्ण थे । वे सब के सब उन नगर-निवासियों के विरुद्ध थे जो 'कोन्सुलैटुस्योनल' नामक पत्रिका पढ़ा करते थे । इस बात से चर्च के पदाधिकारियों का दल बहुत प्रसन्न हुआ ।

यह सही है कि उन फ़ैसलो में चार-पाँच फ़्रैंक के जुर्माने की सजा ही दी गई थी, पर उन जुर्माना देनेवालों में एक कीलो का कारख़ानेदार भी था जो जुलिये का धर्मपिता था। इस व्यक्ति ने क्रोध में कहा था, “कैसा चोला बदला है ! और यह न्यायाधीश बीम बरस से कितना ईमानदार आदमी समझा जाना था !” तब तक जुलिये के मित्र फौजी डाक्टर की मृत्यु हो चुकी थी।

उस समय से जुलिये ने नौपोलियन की चर्चा करना एकदम बन्द कर दिया। उसने घोषणा की कि अब तो वह पुरोहित बनेगा। तब से प्रायः ही देखा जाता कि अपने पिता के कारख़ाने में वह धर्माधिकारी की दी हुई लैटिन बाइबिल कण्ठस्थ करता रहता है। नगर के बड़े क्यूरे इस दिशा में उसकी प्रगति से बड़े प्रभावित हुए और रोज़ शाम को कुछ समय देकर उसे धर्मशास्त्र पढ़ाने लगे। उनकी उपस्थिति में जुलिये धार्मिक भावनाओं के अतिरिक्त और कोई बात ही प्रकट न करता। इस बात की कौन कल्पना कर सकता था कि उसके इतने पीले और लडकियों जैसे सुकुमार चेहरे के पीछे असफलता की अपेक्षा हजार बार मौत का सामना करने का अटल विश्वास छिपा हुआ है ?

जुलिये के लिए सफल होने का प्रथम और सर्वप्रमुख अर्थ था वेरियेर से मुक्ति पाना। अपने इस जन्मस्थान से उसे तीव्र घृणा थी। वहाँ की हर वस्तु उसकी कल्पना को जड़, निर्जीव बना देती थी। बहुत छोटी उम्र से ही प्रायः वह प्रबल भावावेग की उत्तेजना अनुभव करता था। वह ऐसे सपनों में डूबा रहता कि एक दिन उसका परिचय पेरिस की सुन्दरियों से होगा जिन्हें अपने किसी न किसी अद्भुत करतब से अपनी ओर आकर्षित करने में वह सफल होगा। जैसे गरीब बोनापार्ट से वह प्रसिद्ध महिला मादाम द बोअर्नो प्रेम करने लगी थी वैसे ही उससे कोई स्त्री क्यों नहीं प्रेम कर सकती ? पिछले बहुत वर्षों से जुलिये ने शायद एक घंटा भी ऐसा न बिताया होगा जब उसने बोनापार्ट जैसे अपरिचित निर्धन अफसर द्वारा अपनी तलवार के जोर से दुनिया पर अधिकार

करने की बात न सोची हो। इस विचार से उसे अपने दुर्भाग्य के बड़े असहनीय क्षणों में भी बड़ी सान्त्वना मिलती और जो थोड़ी-बहुत प्रसन्नता उसके फल्ले पड़ती उसे अधिक आनन्ददायक बना देती।

गिरजाघर के निर्माण और न्यायाधीश के फैसलों की घटनाओं ने बिजली की तरह कौध कर उसको रास्ता सुझा दिया। उसके मन में एक ऐसा विचार आया जिसके कारण लगातार कई सप्ताह तक वह लगभग पागल जैसा रहा और अन्त में जिसने अत्यधिक भावनाशील स्वभाव के व्यक्तियों की भाँति उसे बशीभूत कर लिया।

उमने सोचा कि जिस समय बोनापार्ट ने अपने आपको आगे बढ़ाया उस समय फ्रांस बाहरी शत्रु के आक्रमण के भय से आक्रान्त था। सैनिक योग्यता उस समय एक अनिवार्य आवश्यकता थी और वही फैशन बन गई। आज हम देखते हैं कि चालीस बरस के पुरोहित भी एक लाख फ्रैंक वेतन पाते हैं—अर्थात् नैपोलियन के प्रसिद्ध सेनानायकों से भी तीन गुना अधिक। निश्चय ही ऐसे लोग अवश्य होंगे जो उनका समर्थन करते हैं। उदाहरण के लिए अपने न्यायाधीश को ही देखो। वह कितना भला आदमी था और इतना बुजुर्ग। साथ ही आज तक कितना प्रतिष्ठित और सच्चा व्यक्ति समझा जाता था। वह भी तीस बरस के पुरोहित को अप्रसन्न न करने के भय से ऐसे अन्यायपूर्ण काम करने के लिए बाध्य हो गया। मुझे अवश्य ही पुरोहित बनना चाहिए।

अपनी इस नई-नई प्राप्त धार्मिकता के बीच दो बरस तक धर्म-शास्त्र का अध्ययन कर चुकने के बाद एक बार अचानक जुलिये के भीतर सुलगती हुई आग फूट पड़ी। घटना म० शेला के घर हुई। क्यूरे ने अपने अन्य सहयोगियों को दावत दी थी जिसमें उन्होंने जुलिये का परिचय बड़े ही होनहार युवक के रूप में सबसे कराया था। वही जुलिये को न जाने क्या सूझा कि वह नैपोलियन की बड़ी लम्बी-चौड़ी असयत प्रशंसा कर बैठा। बाद में इसके दण्डस्वरूप उसने अपना दाहिना हाथ सीने के पास बाँध कर लटका लिया और बहाना किया कि चीड़ के

लट्ठे उठाते समय उसका हाथ उतर गया है। अपने हाथ को इस असु-विधाजनक अवस्था में उसने दो महीने तक रखा और ऐसा शारीरिक दण्ड सहन करने के बाद उसने अपने आपको उस भूल के लिए क्षमा कर लिया। ऐसा ही था यह अठारह वर्ष का नवयुवक जो देखने में इतना दुबला-पतला था कि सत्रह का भी मुश्किल से लगता। उसी ने इस समय एक छोटा-सा पुलिन्दा बगल में दबाये बेरियर के शानदार गिरजाघर में प्रवेश किया।

गिरजाघर इस समय सुनसान और अँधेरा था। एक उत्सव के सिलसिले में भवन की सारी खिडकियों पर गहरे लाल रंग का पर्दा डाल दिया गया था। इस कारण छनकर आनेवाली सूरज की किरणों का प्रकाश अत्यन्त ही गरिमायुक्त और पवित्र जान पड़ता था। जुलियें एकाएक चौंक पड़ा। इस समय वह गिरजाघर में एकदम अकेला था। वह जाकर सबसे उत्तम दिखाई पड़नेवाले स्थान पर बैठ गया। उसके ऊपर म० द रेनाल का पारिवारिक चिह्न बना हुआ था।

वही जुलिये ने एक कागज़ का टुकड़ा पड़ा देखा जिस पर कुछ लिखा हुआ था और वह इस प्रकार रक्खा था जैसे पढ़े जाने के लिए ही हो। उसने कागज़ पर एक नज़र डाली और यह शब्द लिखे देखे। “लुई आरेल के मृत्युदण्ड और उसके अन्तिम क्षणों का वर्णन जिसे बजासो में.....।”

कागज़ फटा हुआ था। कागज़ के दूसरी ओर लिखा था : “पहली बात.....।”

यहाँ यह कागज़ किसने रक्खा होगा, जुलिये सोचने लगा। बेचारा अभाग आदमी ! उसने लम्बी साँस लेते हुए मन ही मन कहा। उसका नाम भी तो मेरी ही भाँति समाप्त होता है और उसने कागज़ को हाथ में लेकर मसल दिया।

जैसे ही वह चलने के लिए उठा, उसे लगा कि पवित्र जल के बर्तन के समीप जैसे रक्त पड़ा हो। वास्तव में थोड़ा-सा पवित्र जल फैल गया

था जो खिड़कियों पर पड़े हुए लाल पर्दों की छाया के कारण रक्त जैसा दिखाई पड़ रहा था ।

जुलिये अपने इस अज्ञात भय के लिए लज्जित हो उठा । क्या मैं सचमुच कायर ही हूँ, उसने मन ही मन सोचा । 'अस्त्र उठाओ ।'

बूढ़े डाक्टर की लड़ाई की कहानियों में ये शब्द प्रायः आया करते थे और जुलिये के मन में वीरता की भावना से जूड़े हुए थे । वह उछल कर खड़ा हो गया और द्रुतगति से म० द रेनाल के घर की ओर चल पड़ा । किन्तु अपने सारे निश्चय के बावजूद घर से बीस फीट पहले उसे ऐसे सकोच का अनुभव होने लगा जिसे दूर करना कठिन हो गया । खुला हुआ लोहे का फाटक उसे बड़ा भारी और रोबदार मालूम हुआ । जो भी हो, जाना तो उसे था ही ।

इस घर में आने के कारण केवल जुलिये के हृदय में ही घबराहट नहीं थी । अपने अत्यधिक सकोची स्वभाव के कारण मा० द रेनाल भी एक ऐसे अजनबी की उपस्थिति के विचार से कुछ परेशान थी जो अपने विशेष प्रकार के कार्य के फलस्वरूप निरन्तर उनके और उनके बच्चों के बीच में पड़ता रहेगा । उनके बालक सभी उन्हीं के कमरे में सोते थे । उस दिन सबेरे जब उनके छोटे-छोटे पलग शिक्षक के कमरे में ले जाये गये तो वह बहुत देर तक आँसू बहाती रही थी । उन्होंने अपने पति से इस बात का अनुरोध भी किया कि सबसे छोटे बेटे स्तानिस्लास-जाँविये का पलग उन्हीं के कमरे में रहने दिया जाय । किन्तु इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली थी ।

नारी-सुलभ चेतना मा० द रेनाल में अत्यधिक मात्रा में विकसित हो चुकी थी । उन्होंने मन ही मन एक अशिष्ट और बेढगे व्यक्ति का अत्यन्त ही अप्रीतिकर चित्र बनाया जो एकमात्र अपने लैटिन के ज्ञान के कारण उनके बालकों पर डाट-डपट किया करेगा । वह सोचने लगी कि एक बर्बर भाषा को लेकर उनके बच्चों पर मार

सुख और स्याह

उकताहट

मा० द रेनाल ड्राइंग रूम से बगीचे में जानेवाली खिड़की में से निकल रही थी। उस समय उनकी मुद्रा से ऐसा सजीलेपन, सन्तोष और उल्लास का भाव प्रकट हो रहा था जो किसी पुरुष की दृष्टि से दूर होने पर उनके लिए सर्वथा स्वाभाविक था। उसी समय उन्होंने सामने के फाटक से एक किसान युवक को प्रवेश करते हुए देखा। वह देखने में अभी बिलकुल बालक ही लगता था और उसका चेहरा बहुत ही पीला था और उस पर अभी-अभी आँसू बहने के चिह्न मौजूद थे। वह एक साफ धुली हुई कमीज पहने था और उसकी बगल में बैंगनी रंग की बहुत साफ-सी तह की हुई जैकट दबी हुई थी।

इस किसान युवक के चेहरे का रंग इतना उजला और उसकी आँखें इतनी सुकुमार थी कि मा० द रेनाल ने अपने कल्पना-प्रधान स्वभाव के कारण पहले तो यह सोचा कि अवश्य ही कोई स्त्री वेश बदल कर मेयर से कुछ सहायता माँगने आई है। वह फाटक के सामने चुपचाप खड़ा था और स्पष्ट था कि घटी बजाने के लिए हाथ बढ़ाने का साहस भी उसे नहीं हो रहा था। उसकी यह अवस्था देखकर मा० द रेनाल को बड़ी दया आई। वह उसकी ओर बढ़ आयी और शिक्षक के आने की सम्भावना से जो दुःख उनके मन में हो रहा था, उसे क्षण भर के लिए भूल गई। जुलिये का मुख फाटक की ओर था। इसलिए उसने उन्हें पास आते हुए नहीं देखा। इसी से जब एक कोमल-सा स्वर उसे अपने

कान के पास सुनाई पडा तो वह चौक उठा । “यहाँ किस लिए आये हो, बालक ?”

जुलिये भटके के साथ घूमा और मा० द रेनाल के मुख पर बहुत ही सुन्दर सुकुमार भाव देखकर उसका संकोच थोड़ा-थोड़ा जाता रहा । बहुत शीघ्र ही उनके सौन्दर्य से चकित होकर वह सब कुछ भूल गया, यहाँ तक कि अपने वहाँ आने का उद्देश्य भी उसे याद न रहा । मा० द रेनाल ने अपना प्रश्न फिर दोहराया ।

“मुझे यहाँ शिक्षक के काम के लिए बुलाया गया है”, उसने आखिरकार कहा । उसे अपने आँसुओं पर बड़ी लज्जा हो रही थी और वह किसी प्रकार उन्हें पोछ डालने का पूरा-पूरा प्रयत्न कर रहा था ।

मा० द रेनाल पल भर अवाक् रह गई । वे दोनों बहुत पास-पास खड़े हुए थे और एक-दूसरे की ओर ताक रहे थे । जुलिये की आज तक किसी ऐसी सुमज्जित विशेषकर इतनी चकाचौध कर देनेवाली सुन्दर रूपवती महिला से, भेट न हुई थी जिसने उससे इतने स्नेह से बात की हो । मा० द रेनाल उन बड़ी-बड़ी गोल आँसुओं की बूंदों की ओर ताक रही थी जो इस किसान युवक के गालों पर बीच ही में थम गई थी और जो पहले इतने पीले लगने के बाद अब इतने गुलाबी लग रहे थे । तुरत ही वह एक बालिका के असयत उल्लास से हँसने लगी । उन्हें हँसी अपने ऊपर आ रही थी क्योंकि अपने आनन्द की पूरी सीमा का अनुमान करना उनके लिए अमम्भव हो उठा था । क्या ! यही है वह शिक्षक जिसकी उन्होंने मन ही मन एक बेढगे, गन्दे पादरी, उनके बालकों पर डाँट-डपट करने और उन्हें पीटने वाले पुरोहित के रूप में कल्पना की थी ।

“अच्छा, महोदय”, उन्होंने आखिरकार कहा, “तो आप लैटिन जानते हैं ?”

“महोदय” शब्द से जुलिये इतना आश्चर्यचकित हुआ कि वह पल भर सोचता हुआ चुप रह गया ।

“हाँ, मैडम”, उसने शरमाते हुए कहा ।

मा० द रेनाल इतनी प्रसन्न थी कि उन्होंने जुलिये से यह कहने का साहस कर डाला, “इन बेचारे बच्चों को आप बहुत डाँटे-डपटेंगे तो नहीं, नहीं न ?”

“डाँटें-डपटूँगा ।” जुलिये ने विस्मय से कहा । “वह क्यों !”

“आप उन्हें प्यार से पढायेगे न, पढायेगे न, महोदय ?” उन्होंने पल भर चुप रहने के बाद कहा । उनका स्वर प्रत्येक क्षण अधिकाधिक भावावेग से अभिभूत होता जा रहा था । “आप मुझे वचन देते हैं न ?”

दूसरी बार अपने आपको ‘महोदय’ सम्बोधित होते सुनना, और वह भी ऐसी सुसज्जित महिला द्वारा, इतनी गम्भीरतापूर्वक—जुलिये के लिए सर्वथा अप्रत्याशित और कल्पनातीत था । अपनी किशोरसुलभ कल्पना में उसने जिन महलों की रचना की थी, उनमें से प्रत्येक में उसने यही सोचा था कि जब तक वह सुन्दर सैनिक वस्त्र पहने हुए न होगा कोई वास्तविक महिला तब तक उससे बातचीत करने की कृपा न करेगी । दूसरी ओर जहाँ तक मा० द रेनाल का प्रश्न था, वह जुलिये के रंग की सुन्दरता, उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखों और उसके सुन्दर बालों से भरे सिर से पूरी तरह वशीभूत हो गई थी । जुलिये के बाल इस समय साधारण से अधिक घुँघराले लग रहे थे क्योंकि दिन भर की थकान दूर करने के लिए वह अभी-अभी सरकारी फव्वारे के बेसिन में अपना सिर धोकर आया था । मा० द रेनाल को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि जिस शिक्षक को भाग्य ने उनके ऊपर थोपा है और जिसके कठोर स्वभाव और असंस्कृत व्यवहार की कल्पना से ही उन्हें अपने बालकों के लिए बड़ा भय लग रहा था, उसमें एक किशोर जैसा सकोच है । जिस बात का उन्हें डर था और जो कुछ इस समय उनकी आँखों के सामने उपस्थित था, उन दोनों के अन्तर का मा० द रेनाल जैसी शान्त स्वभाव की महिला के लिए बहुत ही महत्व था । धीरे-धीरे जब उनका विस्मय कुछ दूर हुआ तो यह सोचकर उन्हें बड़ा

आश्चर्य हुआ कि वह अपने घर के फाटक पर केवल कमीज पहने हुए इस युवक के साथ इस प्रकार और वह भी उसके इतने समीप खड़ी हुई है।

“भीतर चलिये”, उन्होंने जुलिये से कुछ उलझन भरे स्वर में कहा।

मा० द रेनाल अपने जीवन में पहले कभी भी किसी सम्पूर्णतः आनन्ददायक अनुभव से इतनी अधिक विचलित न हुई थी, ऐसी त्रासदायक आशंका के बाद ऐसा सुन्दर दृश्य कभी देखने को न मिला था। जिन सुन्दर बालको को उन्होंने इतने लाड-प्यार से पाला था, वे किसी गन्दे और अप्रीतिकर पुरोहित के हाथों में न पड़ेगे।

हॉल में प्रवेश करते-करते ही उन्होंने मुड़कर जुलिये की ओर देखा जो कुछ घबराया सा उनके पीछे-पीछे आ रहा था। ऐसे सुन्दर घर को देखकर उसका विस्मय भरा भाव भी मा० द रेनाल को बड़ा अच्छा लगा। उन्हें विश्वास ही न होता था कि वे आँखें किसी शिक्षक की होगी। उन्हें लगता था कि शिक्षक तो अवश्य ही काला सूट पहनने वाला व्यक्ति होता है।

“किन्तु क्या यह वास्तव में सत्य है, महोदय, कि आप सचमुच लैटिन जानते हैं?” वह एकाएक फिर रुककर बोली। जो कुछ उन्होंने देखा, उससे उन्हें इतनी प्रसन्नता हुई थी कि अचानक उन्हें भय हो आया कि कहीं वह भूल न कर बैठी हो।

उनके शब्दों से जुलिये के अभिमान को ठेस पहुँची और पिछले पन्द्रह मिनट से जिस मोह ने उसे मन्त्रमुग्ध कर रखा था, वह टूट गया।

“हाँ, देवी जी”, उसने अपने स्वर में कुछ रुखाई लाते हुए उत्तर दिया। “मैं लैटिन भनी-भाँति जानता हूँ, लगभग क्यूरे महाशय के बराबर ही। बल्कि कभी-कभी तो उन्होंने मुझ से यह कहने की कृपा भी की है कि मैं कुछ अधिक ही जानता हूँ।”

मा० द रेनाल को लगा कि जुलिये बहुत रूखा और चिड़चिड़ा हो

उठा है। वह उनसे कुछ ही दूर पर ठहर गया था। वह मुडकर उसके पास पहुँची और बहुत ही धीमे-धीमे स्वर में बोली, “मेरे बच्चे अपना पाठ याद न कर सके तो भी आप पहले कुछ दिनों में उन्हें पीटेंगे तो नहीं ? नहीं पीटेंगे न ?”

ऐसा मधुर और अनुनय भरा कण्ठ-स्वर ऐसी सुन्दर महिला के मुख से सुनकर जुलिये तुरन्त यह भूल गया कि उसे अपने लैटिन के विद्वान होने की प्रतिष्ठा की रक्षा करनी है। मा० द रेनाल का मुख उसके समीप आ गया था और एक स्त्री के ग्रीष्मकालीन वस्त्रों की सुगन्ध उसे आ रही थी। एक साधारण किसान युवक के लिए यह बहुत ही अद्भुत अनुभव था। उसका मुख एकदम लाल हो गया और एक लम्बी साँस खींचकर उसने कुछ लडखडाती हुई आवाज में कहा, “आप परेशान न हो, देवी जी ! मैं आपके सब आदेशों का पालन करूँगा।”

बच्चों के सम्बन्ध में सारी चिन्ता पूरी तरह दूर होने के बाद ही अब मा० द रेनाल को एकाएक अनुभव हुआ कि जुलिये देखने में भी कितना सुन्दर है। उसका लज्जाशील व्यवहार तथा उसके मुख की लगभग लडकियों जैसी आकृति उन्हें किसी प्रकार असगतन लगी क्योंकि वह स्वयं भी अत्यन्त सकोची स्वभाव की महिला थी। पौरुष-सुलभ शक्ति से, जिसे साधारणतः पुरुष के सौन्दर्य का आवश्यक अंग समझा जाता है, उन्हें केवल भय का ही अनुभव होता।

“आपकी उम्र क्या है ?” उन्होंने जुलिये से पूछा।

“जल्दी ही मेरा उन्नीसवाँ वर्ष पूरा होनेवाला है।”

“मेरा सबसे बड़ा लडका ग्यारह साल का है”, मा० द रेनाल ने पूर्णतः आश्चर्य होकर कहा। “वह तो लगभग आपका साथी हो सकता। उससे तो आप बहस कर सकेंगे। एक बार उसके पिता ने उसे पीटा था तो वह सप्ताह भर बीमार रहा, यद्यपि मार कोई अधिक नहीं पड़ी थी।”

मुझसे कितना भिन्न है, जुलिये सोचने लगा। मेरे पिता ने तो कल

ही मुझे पीटा था । ये धनी लोग कितने तकदीर वाले होते हैं !

मा० द रेनाल अभी से शिक्षक के मन में आने वाले सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव की कल्पना करने लगी थी । उन्होंने जुलिये की इस क्षणिक अवस्था के भाव को सकोच समझा और उसे साहस दिलाने का प्रयत्न करने लगी ।

“आपका नाम क्या है ?” उन्होंने ऐसे मधुर मोहक स्वर में पूछा कि जुलिये को ठीक-ठीक कारण समझे बिना ही बड़े तीव्र आकर्षण का अनुभव हुआ ।

“मेरा नाम जुलिये सोरेल है, देवी जी ! किसी अजनबी घर में प्रवेश करते समय जीवन में आज पहली बार मैं ऊपर से नीचे तक कँप-कँपी का अनुभव कर रहा हूँ । मुझे आपकी कृपा की आवश्यकता है और शुरू के कुछ दिनों में आपको मेरी बहुत-सी बातें क्षमा करनी पड़ेगी । मैं कभी स्कूल नहीं गया, इतना गरीब था । मैंने अपने चचेरे भाई, फौजी डाक्टर और अपने क्यूरे म० शेला को छोड़कर किसी दूसरे व्यक्ति से कभी कोई बात नहीं की । म० शेला मेरे बारे में आपको अधिक बता सकेंगे । मेरे भाई मुझे सदा मारते-पीटते रहे हैं । यदि वे मेरी कोई बुराई करे तो कृपा करके उनका विश्वास न कीजिए, और देवी जी, मेरी गलतियों के लिए मुझे अवश्य क्षमा कीजिएगा । मैं जान-बूझकर कभी कोई बुराई न करूँगा ।”

यह लम्बा व्याख्यान देते-देते जुलिये मा० द रेनाल के मुख के भावों का भी अध्ययन करता जा रहा था और धीरे-धीरे उसका आत्म-विश्वास लौट रहा था । निर्दोष लावण्य जब स्वाभाविक गुण के रूप में प्रकट हो और विशेषकर उसे धारण करने वाला व्यक्ति अपनी इस विशेषता के प्रति बहुत सचेत न हो, तो उसका ऐसा ही प्रभाव होता है । नारी-सौन्दर्य का अच्छा पारखी होने पर भी जुलिये इस समय सौगन्ध खा कर कह सकता था कि उसके सामने खड़ी हुई स्त्री की अवस्था बीस से अधिक नहीं । उसी समय उसके मन में एक साहसिक विचार भी आया कि वह मा० द रेनाल का हाथ चूम ले किन्तु तुरन्त ही वह अपने इस

विचार से भयभीत हो उठा। पल भर बाद वह मन ही मन कह रहा था कि एक गरीब बूढ़े के लड़के के प्रति इस सम्भ्रान्त महिला के तिरस्कार भरे भाव को कम करने वाले तथा लाभदायक काम को न करना बड़ी कायरता की बात होगी। शायद जुलिये को इस बात से भी थोड़ा प्रोत्साहन मिला हो कि पिछले छ महीनों में प्रत्येक रविवार को बहुत-सी नवयुवतियों के मुँह से अपने विषय में वह कई बार यह सुन चुका था कि लड़का देखने में तो सुन्दर है।

जिस समय उसके भीतर इस प्रकार का तर्क-वितर्क चल रहा था, उस समय मा० द रेनाल उसे बच्चों से व्यवहार के विषय में समझा रही थी। जुलिये को इस समय अपने ऊपर बड़े कठोर नियन्त्रण की आवश्यकता पड़ी। इसलिए उसके चेहरे का पीलापन फिर लौट आया। उसने कुछ सख्ती से कहा, “मैं आपके बच्चों को कभी हाथ न लगाऊँगा, देवी जी, मैं भगवान की सौगन्ध खाकर कहता हूँ।”

ये शब्द कहते-कहते उसने साहस करके मा० द रेनाल का हाथ पकड़ कर अपने होठों से लगा लिया। वह उसके इस कार्य से अश्चर्य रह गई और पल भर सोचने के बाद उन्हें कुछ धक्का-सा लगा। मौसम गर्म होने के कारण उनकी बाँह शाल के नीचे बिलकुल नगी थी और जुलिये के होठों तक ले जाने में बिलकुल उधड़ गई थी। एक या दो सैकन्ड बाद वह अपना रोष तुरन्त ही प्रगट न कर सकने के लिए मन ही मन अपने आपको धिक्कारने लगी।

किसी को बातचीत करते सुनकर मा० द रेनाल अपने अध्ययन-कक्ष से बाहर निकल आये और जुलिये से बोले, “बच्चों से भेट होने के पहले मुझे आपसे एक आवश्यक बात कहनी है।” उनका स्वर वैसा ही बड़प्पन भरा और गरिमायुक्त था जैसा टाउनहॉल में किसी विवाह के अवसर पर नगर के सम्भ्रान्त व्यक्ति के नाते हुआ करता होगा।

वह जुलिये को अपने साथ एक कमरे में ले आये और अपनी पत्नी को भी वही रोक लिया, यद्यपि वह इस समय वहाँ से चले जाने

के लिए बहुत व्यग्र थी। द्वार बन्द करने के बाद म० द रेनाल गम्भीरता-पूर्वक बैठ गये।

“क्यूरे ने मुझमें कहा है कि तुम बहुत ही शिष्ट और सयत स्वभाव के लडके हो। ये सब लोग तुम्हारे साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करेंगे और यदि मैं स्वयं भी तुम्हारे काम से सन्तुष्ट हुआ तो बाद में तुम्हारे अपने निजी कारबार जमाने में सहायता कर दूँगा। मैं यह नहीं चाहता कि अब तुम अपने मित्रों और परिवार वालों से अधिक मिलो-जुलो। उनके तौर-तरीके मेरे बच्चों के लिए ठीक न होंगे। यह लो अपना पहले महीने का वेतन ३६ फ्रैंक। पर तुम्हें एक बात का वचन देना होगा कि इसमें से एक भी पैसा तुम अपने पिता को न दोगे।”

बूढ़े किसान से भेंट का काँटा अभी तक उनके मन में कसक रहा था। इस मामले में वह उनसे कहीं अधिक चतुर सिद्ध हुआ था।

“अब महोदय—मैंने सब को यह आदेश दिया है कि तुम्हें महोदय कहकर पुकारा करे—और इससे तुम्हें किसी भले आदमी के घर में रहने का लाभ समझ में आयेगा—अब, महोदय, यह उचित नहीं है कि मेरे बच्चे आपको यह बड़ी पहने देखें। क्या नौकरो ने इनको देखा है?” म० द रेनाल ने अपनी पत्नी से पूछा।

“नहीं, अभी नहीं”, कुछ अत्यन्त ही विचारमग्न मुद्रा में उन्होंने उत्तर दिया।

“अच्छा ही हुआ। लो, यह पहन लो।” उन्होंने विस्मित नवयुवक की ओर स्वयं अपना एक फ्राक कोट बढाते हुए कहा। ‘और चलो, अब हम लोग मदुरा बजाज के यहाँ हो आये।’

जब म० द रेनाल घण्टे भर बाद नये शिक्षक को सिर से पैर तक काले कपड़ों में सज्जित करके लौटे तो उन्होंने अपनी पत्नी को ठीक वही बैठा पाया जहाँ वह उसे छोड़ गये थे। जुलिये को अपने सामने देखकर वह कुछ प्रकृतिस्थ हो गई, उसका और भी सूक्ष्मता से अध्ययन करने के बाद उनका सारा भय जाता रहा। जहाँ तक जुलिये का प्रश्न

है, उसे चिन्ता करने का अवकाश ही न था। भाग्य और मानव जाति में अपने समस्त अविश्वास के बावजूद इस समय उसका हृदय एक बालक की भाँति था। उसे लग रहा था कि तीन घंटे पहले गिरजाघर में काँपते हुए खड़े रहने की बात को ब्रह्मसो बीत चुके हैं। उसने मा० द रेनाल के खाई-भरे दूरी के-से भाव को देखा और सोचने लगा कि वह उसके दुस्साहस से अप्रसन्न हैं। किन्तु आज तक के अभ्यास से सर्वथा भिन्न वस्त्रों के सम्पर्क से उसे ऐसे गर्व का अनुभव हो रहा था कि उसकी हर चेष्टा एक विचित्र अक्खड़पन से भरी थी। साथ ही उसके मन में इतनी प्रसन्नता उमड़ रही थी, जिसे छिपाने के लिए भी वह उत्सुक था, मा० द रेनाल एकदम चकित दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी।

“यदि आप चाहते हैं कि मेरे बच्चे और नौकर आपका सम्मान करें तो आपको और अधिक सयत व्यवहार करना चाहिए, महोदय,” म० द रेनाल ने उसे चेतावनी देते हुए कहा।

“इन कपड़ों में मुझे बड़ी बेचैनी हो रही है,” जुलिये ने उत्तर दिया। “मैं गरीब किसान का बेटा हूँ जिसने बड़ी के सिवाय कभी और कुछ नहीं पहना। श्रीमान, यदि आज्ञा दें तो कुछ देर के लिए मैं अपने कमरे में चला जाऊँ।”

“क्या खयाल है तुम्हारा इस नये आदमी के बारे में?” म० द रेनाल ने उसके जाने के बाद अपनी पत्नी से पूछा।

अनजाने ही एक प्रकार की स्वाभाविक प्रवृत्तिवश मा० द रेनाल ने अपने पति से सच्ची बात छिपा ली। वह बोली, “मुझे तो इतना अच्छा नहीं लगा जितना शायद तुम्हें लगा है। तुम्हारी इतनी सारी कृपा उसे घृष्ट बना देगी और महीने भर के भीतर ही तुम उसे निकालन के लिये मजबूर हो जाओगे।”

“ठीक है। इसमें क्या, तब निकाल देंगे। अधिक से अधिक सौ फ्रैंक का ही तो खर्च है। पर एक बार वेरियेर म० द रेनाल के बच्चों को शिक्षक के साथ जाते देखने का अभ्यस्त तो हो जायगा। यदि मैं

उसे मजूरों वाले वस्त्रो मे रहने देता तो यह उद्देश्य पूरा न होता । अवश्य ही उसे निकालते समय मैं उस काले सूट को उसे न ले जाने दूंगा जिसका मैं अभी बजाज को आदेश देकर आया हूँ । जो बना-बनाया सूट इस समय वह पहने हुए है, वही उसे ले जाने दूंगा ।”

जुलिये ने अपने कमरे मे जो एक घण्टा बिताया वह मा० द रेनाल को एक मिनट के बराबर लगा । बच्चों को अपने नये शिक्षक के आने का पता चल गया था और उन्होंने अपनी माँ से उसके विषय में प्रश्नों का ताँता लगा रखा था । अन्त मे जब जुलिये निकल कर आया तो वह एकदम दूसरा ही व्यक्ति था । उसे देखकर यह कहना तो गलत ही होता कि वह गम्भीर था । उस समय तबे वह गम्भीरता की मूर्ति बना हुआ था । जब उसका बच्चा से परिचय कराया गया तो वह उनसे ऐसे स्वर मे बोला कि म० द रेनाल भी चकित रह गये ।

“मैं यहाँ आपको लैटिन सिखाने के लिए आया हूँ”, उसने अन्त में कहा । “आप जानते हैं कि अपना पाठ किस तरह से सुनाना चाहिए । यह देखिए, पवित्र बाइबिल,” उसने काली जिल्द की एक छोटी-सी पुस्तक दिखाते हुए कहा । “यह महात्मा जीसस क्राइस्ट की जीवनी है अर्थात् वह भाग है जिसे न्यू टेस्टामेंट कहते है । मैं प्राय आपसे अपना पाठ पढकर सुनाने के लिए कहूँगा । अब सुनिये मैं कैसे पढता हूँ ।”

सबसे बड़े बालक अदोल्फ ने पुस्तक ले ली । जुलिये ने कहा, “कोई भी पृष्ठ खोल लीजिये और किसी पैराग्राफ के प्रारम्भ के शब्द बोलिये । प्रत्येक व्यक्ति के आचरण का निर्देशन करने वाली इस पवित्र पुस्तक का प्रत्येक शब्द मैं बिना देखे सुना दूँगा ।”

अदोल्फ ने पुस्तक खोलकर एक शब्द पढा और जुलिये सारे पृष्ठ को इस आसानी से सुनाने लगा मानो वह फ्रेंच भाषा मे बोल रहा हो । म० द रेनाल ने विजय के भाव से अपनी पत्नी की ओर देखा । बच्चे अपने माता-पिता के विस्मय को देखकर समूचे दृश्य को आँख फाड़े देखते रह गए । एक नौकर ड्राइंग रूम के द्वार तक आया किन्तु जुलिये लैटिन

बोलता ही रहा। नौकर कुछ देर तो स्तम्भित खड़ा रहा और फिर तुरन्त गायब हो गया। शीघ्र ही मा० द रेनाल की नौकरानी और रसोइन भी द्वार के पास आकर खड़ी हो गईं। तब तक अदोल्फ पुस्तक को आठ विभिन्न स्थानों में खोल चुका था और जुलिये उतनी ही सुगमता से सुनाता रहा था।

“भगवान भला करे ! कैसा छोटा-सा सुन्दर पुरोहित है।” रसोइन ने विस्मय से कहा। वह बड़े अच्छे स्वभाव की और बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति वाली युवती थी।

मा० द रेनाल के आत्म-सम्मान को इस बात से कुछ चोट पहुँची। शिक्षक की परीक्षा लेने की बात सोचना तो दूर, इस समय वह अपना दिमाग इसलिए कुरेद रहे थे कि लैटिन के दो-चार शब्द तो याद आ जाये। अन्त में होरेस की एक पक्ति उन्होंने दोहराई। जुलिये बाइबिल के अतिरिक्त और अधिक लैटिन न जानता था। उसने कुछ तेवर चढाते हुए उत्तर दिया, “जिस पवित्र धर्म की सेवा में मैंने अपने आपको अर्पित कर दिया है, वह मुझे ऐसे अधार्मिक कवि को पढ़ने का आदेश नहीं देता।”

मा० द रेनाल ने होरेस की तथाकथित पक्तियाँ कुछेक और भी सुनायी और बच्चों को बताने लगे कि होरेस कौन था। किन्तु बालक विस्मय से इतने आक्रान्त थे कि उन्होंने अपने पिता की बात पर कोई ध्यान न दिया। वे जुलिये की ओर ही देखते रहे।

नौकर अभी तक द्वार के पास एकत्र थे। इसलिए जुलिये ने इस परीक्षा को जारी रखना आवश्यक समझा। उसने सबसे छोटे बालक से कहा, “मास्टर स्तानिस्लास जॉविये, आप भी मेरे लिए पवित्र पुस्तक से कोई उद्धरण चुनिये।”

नन्हे स्तानिस्लास जॉविये के गर्व का कोई ठिकाना न था। उसने एक पैराग्राफ का पहला शब्द लगभग ठीक-ठीक पढ़ा और उसके बाद जुलिये ने समूचा पृष्ठ सुना दिया। मा० द रेनाल की विजय को जैसे

पूर्ण करने के लिए उसी समय उत्तम नौरमन घोड़ों के स्वामी म० वालनो और उपजिलाधीश म० शार्को द मोजिरो भी आ गये । जुलिये उस समय भी सुना ही रहा था । इस घटना ने जुलिये का 'महोदय' पुकारे जाने का अधिकार ऐसे प्रतिष्ठित कर दिया कि अब नौकर भी उसे उल्लंघन करने का साहस नहीं कर सकते थे ।

उस दिन शाम को वेरियेर का हर व्यक्ति म० द रेनाल के घर इस चमत्कार को देखने के लिए उमड़ पड़ा । जुलिये ने अपने रूखे उत्तरो से किसी को अधिक पास न फटकने दिया । उसकी ख्याति इतनी तेजी से फैली कि कुछ ही दिनों के भीतर म० द रेनाल को भय लगने लगा कि कहीं कोई और न उसे छीन ले जाय । यह सोचकर न्होने जुलिये से प्रस्ताव किया कि दो साल का पट्टा क्यों न लिख लिया जाय ।

“नहीं श्रीमान्”, जुलिये ने कुछ बेरुखी से उत्तर दिया । “आप यदि मुझे निवालना चाहेंगे तो मुझे जाना ही पड़ेगा । जिस इकरारनामे में सिर्फ मुझ पर ही बन्धन हो, आप पर नहीं, वह बराबरी का नहीं हुआ । यह मैं करने को तैयार नहीं ।”

जुलिये ने हर बात को इतनी योग्यता से समझाला कि महीने भर के अन्दर ही स्वयं म० द रेनाल तक उसका आदर करने लगे और क्यूरे से म० द रेनाल तथा म० वालनो का झगडा होने के कारण यह बताने वाला तो कोई था ही नहीं कि जुलिये पहले नैपोलियन का भक्त था । अब वह स्वयं तो नैपोलियन का नाम बड़ी घृणा के साथ ही लेता था ।

मनोनीत सहानुभूतियाँ

बच्चे तो उसके ऊपर लट्टू थे। उसे स्वयं उनसे कोई प्रेम न था—उसका मन तो 'कही और ही था। पर वह उन नन्हे शैतान बालको की किसी बात से अपना धीरज न खोता था। उसकी बेरुखी, न्यायप्रियता, भावहीनता के बावजूद बच्चे उसे प्यार करते थे क्योंकि उसके आने से घर का उबा देनेवाला वातावरण बहुत कुछ हल्का हो गया था और साथ ही वह शिक्षक भी बहुत अच्छा था। जहाँ तक उस का प्रश्न था, इस प्रतिष्ठित समाज के प्रति विरक्ति और घृणा के प्रतिरिक्त और कुछ उसके मन में न आता था। वास्तव में वह इस समाज की सबसे निचली सीढ़ी पर था और शायद उसकी समस्त घृणा और विरक्ति का कारण यही रहा हो। बहुत-सी ऐसी शिष्टाचार की दावतें होती जिनमें अपने चारों ओर की प्रत्येक वस्तु के प्रति अपनी घृणा पर नियन्त्रण रखना उसके लिए अत्यन्त ही कठिन हो जाता। एक बार से-लुई के भोज के अवसर पर जब म० वालनो शेखी बघार रहे थे तो वह बड़ी कठिनाई से अपने भावों को वश में कर पाया। बच्चों को देखने का बहाना करके वह तुरन्त बगीचे में चला गया था।

उसने मन ही मन कहा कि ईमानदारी की प्रशंसा में कैसे-कैसे गीत ये लोग गाते हैं। उनकी बातें सुनकर तो लगता है जैसे केवल यही एक गुण ससार में है। और तो भी वे सब किस दीन भाव से उस व्यक्ति का सम्मान करते रहते हैं जिसने गरीबों की सहायता के धन की व्यवस्था

हाथ में आने के बाद से अपनी सम्पत्ति का दुगुना-तिगुना कर लिया था। मैं तो शर्त लगाने को तैयार हूँ कि अनाथ बच्चों के धन में से भी वह जरूर कुछ न कुछ बनाता होगा—उन अनाथ बच्चों के धन से जिनका कष्ट अन्य व्यक्तियों के कष्ट से कहीं अधिक पवित्र है। आह ! निर्दयी ! पशु कहीं के ! और मैं भी तो एक प्रकार का अनाथ ही तो हूँ—माँ-बाप, बाप-भाई तथा सारे परिवार से तिरस्कृत और त्यक्त ।

से-लुई की पूजा में कुछ ही दिन पहले एक बार वह क्रूर दिला फिदे लिते के समीप ही वेनवेदे नामक छोटे-से उपवन में अकेला टहल-टहल कर नैतिक पूजा की पुस्तक को जोर-जोर से पढ़ रहा था। वहाँ निर्जन से रास्ते पर उसे अपने भाई कुछ दूर पर आते हुए दिखाई दिये। उसने उनकी दृष्टि से छिपने का प्रयत्न किया पर सफल न हो सका। उसके सुन्दर काले सूट और अत्यन्त परिष्कृत वेश-भूषा के तथा उनके प्रति उसके खुल्लमखुल्ला तिरस्कार भाव के कारण उन असभ्य मजूरों की ईर्ष्या इतनी जाग्रत हुई कि उन्होंने मिलकर उसे खूब पीटा और उसे वही खून से लथपथ हाँफता हुआ छोड़ गये।

उसी समय म० द रेनाल तथा म० वालनो उपजिलाधीश के साथ उस उपवन में भ्रमण के लिए आ निकली और जुलिये को इस प्रकार घरती पर पड़ा देखकर उन्होंने समझा कि वह मर गया है। यह सोचकर उनको इतना धक्का लगा कि इससे म० वालनो की ईर्ष्या जाग उठी।

जुलिये को मा० द रेनाल बहुत सुन्दर लगती थी किन्तु वह इनकी इस सुन्दरता से ही घृणा करता था क्योंकि उसके कारण ही उसका भविष्य पहले दिन चकनाचूर होते-होते बचा था। उनसे वह यथासम्भव कम ही बोलता। उसे आशा थी कि इस भाँति वह उस भावातिरेक को भूल जायेगी जिसके कारण वह पहले दिन उनका हाथ चूमने के लिए प्रेरित हो उठा था।

उधर मा० द रेनाल की नौकरानी एलिजा भी युवक शिक्षक से प्रेम करने लगी थी और प्रायः उसके बारे में अपनी मालकिन से बातचीत

किया करती थी। एलिजा के प्रेम के कारण एक नौकर जुलिये से घृणा भी करने लगा था। उसने एक दिन नौकर को एलिजा से यह कहते सुना, “जिस दिन से यह चीकट मास्टर इस घर ने आया है, मुझसे तो तुम बात ही नहीं करती।” जुलिये इस अपमान के योग्य न था, किन्तु सुन्दर नौजवान के स्वाभाविक अभिमान के कारण अब वह अपनी वेश-भूषा और बनाव-शृ गार पर अधिक ध्यान देने लगा। इससे म० वालनो की घृणा भी बढ़ उठी। वह खुल्लमखुल्ला कहते थे कि ऐसा बनाव-शृ गार जवान पुरोहित के लिए ठीक नहीं। यद्यपि जुलिये पुरोहित का चोगा नहीं पहनता था तो भी उसके वस्त्र बहुत कुछ पुरोहितों जैसे ही थे।

मा० द रेनाल ने भी यह अनुभव किया कि जुलिये एलिजा से कुछ अधिक बातचीत करता है। उन्हें पता लगा कि कपडों की कमी के कारण जुलिये को बार-बार एलिजा से बातचीत करनी पड़ती है। उसके पास नीचे पहनने के कपड़े इतने कम थे कि उसे प्रायः घर से बाहर धुलवाने पड़ते थे और ऐसे छोटे-छोटे कामों में एलिजा से उसे बड़ी सहायता मिलती थी। मा० द रेनाल को इस बात की कल्पना भी न थी कि जुलिये इतना गरीब है और इससे उनका दिल पसीज उठा। उनकी इच्छा हुई कि उसे कुछेक कपड़े उपहार में दे दे। किन्तु ऐसा करने का साहस वह न कर सकी। अपने मन के इस धर्म-संकट से जुलिये को लेकर उनके मन में पहला कष्टदायक अनुभव हुआ। अब तक जुलिये का नाम उनके लिए शुद्ध स्वर्गिक आनन्द का ही समानार्थक रहा था। उसकी गरीबी के विचार से व्यथित होकर उन्होंने अपने पति से जिज्ञासा किया कि क्यों न उसे कुछ कपड़े उपहार में दे दिये जायें।

“कैसा वाहियात विचार है।” उन्होंने उत्तर दिया। “क्या ऐसे आदमी को उपहार दिये जायें जिससे हम पूरी तरह सन्तुष्ट हैं और जो हमारा काम भली प्रकार कर रहा है? यदि वह अपनी वेश-भूषा की उपेक्षा करने लगे तब अवश्य उसे उत्साहित करने के लिए कुछ

सुख और स्याह

आवश्यकता होगी ।

मा० द रेनाल को अपने पति के इस दृष्टिकोण से बड़ी ग्लानि हुई, यद्यपि जुलिये के आने के पहले शायद उनका ध्यान ही इस ओर न जाता । इस छोटे-से पुरोहित के वस्त्रों की सयत किन्तु सुशुचिपूर्ण स्वच्छता को देखकर उनके मन में यह प्रश्न उठे बिना न रहता कि बेचारा किस तरह से अपना काम चलाता होगा । धीरे-धीरे जुलिये के कामों में धक्का-सा महसूस करने के बजाय उन पर उन्हें तरस आने लगा ।

मा० द रेनाल छोटे नगरों में दिखाई पड़ने वाली उन स्त्रियों में से थी, जो परिचय के शुरू में एकदम नादान जान पड़ती हैं । उन्हें जीवन का तनिक भी अनुभव न था और वह कभी बातचीत चलाने का प्रयत्न न करती थी । स्वभाव से कोमल प्रकृति की और अभिगानिनी होने पर भी मनुष्य मात्र में सुख की स्वाभाविक खोज की प्रवृत्ति के वश मा० द रेनाल अधिकांश समय उन अशिष्ट कठोर प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों के कार्यों की ओर तनिक भी ध्यान न देती थी जिनके साथ संयोगवश वह रहने को मजबूर थी ।

यदि उन्हें किसी प्रकार की शिक्षा मिली होती तो उनकी सुशुचि और प्राणवानता से लोग अवश्य प्रभावित होते । किन्तु बहुत धनी परिवार में उत्पन्न होने के कारण उनका लालन-पालन एक मठ में हुआ था जहाँ की धार्मिक स्त्रियाँ सदा पूजा में तल्लीन रहती हैं और उन तमाम फ्रांसवासियों को घृणा की दृष्टि से देखती हैं जो जेस्विट सम्प्रदाय के विरोधी हैं । मा० द रेनाल में इतनी समझ तो थी ही कि मठ में सीखी हुई सारी बातों को वास्तव्य में समझकर भूल जाये । किन्तु उनके स्थान पर उन्होंने कोई दूसरी बातें स्वीकार न की थी जिसके फलस्वरूप अब उन्हें किसी भी प्रकार का ज्ञान न था ।

बड़ी भारी सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी होने के कारण बहुत छोटी अवस्था से ही उन्हें प्रशंसा और विभिन्न व्यक्तियों का आदर प्राप्त हुआ था । इसके फलस्वरूप और अपने स्वभाव में गहरा धार्मिक रुझान होने

सुख और स्याह

के कारण वह कुछ-कुछ अन्तर्मुखी बन गई थी। बाहर से वह अपने पति की हर बात को सम्पूर्णतः स्वीकार करती थी और अपनी इच्छा-शक्ति को उन्होंने पूर्णतः अपने पति को सौंप दिया था। यहाँ तक कि बेरियर में प्रत्येक पति अपनी पत्नी के आगे उनका नाम आदर्श रूप में लेता था जिसमें म० द रेनाल भी बड़े आत्म-सन्तोष का अनुभव किया करते थे। किन्तु उनके आन्तरिक जीवन की गतिविधि एक उच्चाकाक्षी आत्मा के आदेशों पर ही चलती थी। अपने गर्व के लिए विख्यात बहुतासी राजकुमारियाँ अपने इर्द-गिर्द रहने वाले पुरुषों के कार्यों की ओर जितना ध्यान देती हैं, यह अत्यन्त ही मीठे स्वभाव और विनम्र प्रकृति वाली महिला अपने पति के शब्दों और कार्यों की ओर उतना भी ध्यान न देती थी। जुलिये के आने के पहले तक वास्तव में उनका ध्यान अपने बालकों के अतिरिक्त किसी ओर था ही नहीं। उनकी छोटी-मोटी बीमारियाँ, उनके कष्ट, उनकी शिशु-सुलभ प्रसन्नताएँ—इन्हीं सब बातों में उनकी भावना-शक्ति पूरी तरह एकाग्र थी। पिछले सारे जीवन में, विशेषकर जब वह बजासो के मठ में थी, उन्होंने परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी की पूजा को अपने हृदय में स्थान न दिया था।

यदि कभी उनके किसी बालक को ज्वर आ जाता तो यद्यपि वह किसी से कुछ कहती न थी तो भी उनकी ऐसी अवस्था हो जाती मानो बालक की मृत्यु हो गई हो। अपने इस प्रकार के दुखों का भेद अपने वैवाहिक जीवन के प्रारम्भ में कुछ दिन तक उन्होंने अपने पति को बताने का प्रयत्न किया था। किन्तु उनके ऐसे प्रयत्नों का स्वागत सदा उच्च अट्टहास, उपेक्षाभरी हँसी अथवा स्त्रियों की मूर्खता सम्बन्धी किसी उद्धरण के द्वारा ही होता। इस तरह की रसिकता, विशेषकर यदि उनका सम्बन्ध बालकों की बीमारी से हो तो, मा० द रेनाल के हृदय में बर्छी का-सा घाव करती थी। यही बात उन्हें जेस्विट मठ के मीठे-मीठे और खुशामद भरे प्रशंसा-वाक्यों में अनुभव हुई थी जहाँ उनकी किशोरावस्था बीती थी। उनकी शिक्षा दुःख की पाठशाला में हुई थी।

सुख और स्याह

आत्माभिमान के कारण इस प्रकार के दुःख का जिक्र वह किसी से, अपनी सहेली मा० देर्विल तक से, नहीं कर पाती थी। उन्हें सारे पुरुष अपने पति जैसे अथवा म० वालनो अथवा म० शाकों द मोजिरो जैसे ही जान पड़ते थे। धन, पद अथवा सम्मान-चिह्न सम्बन्धी प्रश्नों को छोड़कर बाकी प्रत्येक वस्तु के प्रति बर्बर कठोरता का भाव तथा स्थूलता, प्रत्येक विरोधी दृष्टिकोण के प्रति अन्धी घृणा—ये प्रवृत्तियाँ उन्हें पुरुष जाति में उतनी ही स्वाभाविक जान पड़ती जितना उनका ऊँचे जूते अथवा फैल्ट टोपिया पहनना। इतने दिनों बाद भी मा० द रेनाल उन धनी लोगों के दृष्टिकोण की अभ्यस्त नहीं हो पाई थी जिनके साथ उन्हें रहना पड़ता था।

किसान युवक जुलिये की सफलता का यही कारण था। उसके अभिमान और उच्च स्वभाव के साथ समवेदनापूर्ण समानता के कारण वह इन ही मन नवीनता के आकर्षण से उद्भूत मधुर प्रसन्नता का अनुभव करती थी। मा० द रेनाल ने शीघ्र ही उसके नितान्त अज्ञान को क्षमा कर दिया था जो वास्तव में उनकी दृष्टि में उसका एक गुण बन गया था। उसके व्यवहार की अशिष्टता को वह दूर करने में सफल हो सकी थी। साधारण में साधारण विषय पर बातचीत भी, सड़क पार करते हुए किसान की गाड़ी के नीचे दब जाने वाले कुत्ते की चर्चा तक उसके मुख से उन्हें आकर्षक लगती थी। ऐसे दुःखभरे दृश्य को देखकर उनके पति बड़े जोर में हँसे थे जब कि जुलिये की पतली, नुकीली काली भौहे एकाएक चढ़ गई थी। धीरे-धीरे वह यह सोचने लगी थी कि आत्मा की भव्यता और मानवीय करुणा इस तरुण पुरोहित के अतिरिक्त और कहीं नहीं मिल सकती। इन गुणों से उदार हृदयों में जो सहानुभूति और प्रशंसा जागती है, वह सब वह उस युवक के प्रति अनुभव करती थी।

पेरिस में जुलिये के प्रति मा० द रेनाल के व्यवहार का स्वरूप बहुत शीघ्र ही स्पष्ट हो जाता किन्तु पेरिस में प्रेम उपन्यासों से उपजता है।

ऐसे दो या चार उपन्यासों में अथवा किसी गीत की एक-दो कड़ियों में इस युवक शिक्षक और उसकी लजीली मालकिन को अपने परस्पर सम्बन्ध का अर्थ स्पष्ट मिल जाता। इन उपन्यासों में उन्हें एक नाटक की बनी-बनाई भूमिका अथवा अनुकरण के लिए एक आदर्श तैयार मिलता और थोड़ी-बहुत देर बाद अवश्य जुलिये का गर्व उसे इस आदर्श के पीछे चलने को बाध्य करता चाहे उसमें जुलिये को प्रसन्नता न होती अथवा सम्भवतः कुछ हिचक ही होती।

आवेरो अथवा पिरने के किसी छोटे-से नगर में जलवायु के प्रबल उत्ताप के कारण छोटी से छोटी घटना भी निर्णायक बन जाती। किन्तु हमारे उदासी-भरे प्रदेश में एक निर्धन और महत्वाकांक्षी नवयुवक की, जो अपने सूक्ष्म स्वभाव के कारण केवल धन द्वारा ही प्राप्त वस्तुओं की आवश्यकता अनुभव करने लगता है, नित्य ही किसी वास्तविक शीलवती तीस वर्षीय महिला से भेट होती रहती है जो सदा अपने बाल-बच्चों के ध्यान में डूबी रहती है और जिसे उपन्यासों के अनुकरण करने का कोई अवकाश नहीं। यहाँ हर वस्तु धीमी गति से चलती है। राजधानी से दूर इन प्रदेशों में हर चीज धीरे-धीरे होती है—यहाँ हर वस्तु स्वाभाविक रूप में ही सम्भव है।

बहुत बार युवक शिक्षक की निर्धनता की बात सोचकर मा० द रेनाल की आँखों में आँसू आ जाते थे। एक दिन अचानक ही जुलिये ने उन्हें सचमुच रोते देख लिया।

“क्यों मैडम, आप किसी बात से दुःखी हैं?”

“नहीं भाई”, उन्होंने उत्तर दिया। “बच्चों को बुला लीजिये। हम लोग घूमने चलेगे।”

उन्होंने उसकी बाह का सहारा लिया और उससे ऐसी चिपकी रही कि जुलिये को कुछ अजीब भी लगा। आज पहली बार ही उन्होंने उसे इतनी आत्मीयता से संबोधन किया था। घूमना समाप्त होते-होते तक जुलिये ने देखा कि उनका चेहरा लज्जा से गहरा लाल हो गया है। वह

और भी धीरे चलने लगी थी ।

“आपसे किसी ने कहा ही होगा”, उन्होंने उसकी ओर देखे बिना ही कहा, “कि बजासो मे मेरी एक मौसी रहती है जो बहुत धनी हैं । मैं उनकी एकमात्र उत्तराधिकारिणी हूँ । वह हमेशा मुझे कुछ न कुछ उपहार भेजती ही रहती है .. मेरे बेटे आजकल बहुत प्रगति कर रहे हैं.....इतनी प्रगति कर रहे हैं कि मुझे बड़ा आश्चर्य होता है” .. मैं कितनी कृतज्ञ हूँ आपकी इसके लिए .. मेरी इस कृतज्ञता के प्रमाण-स्वरूप कुछ उपहार आप मुझसे स्वीकार कर ले तो बड़ी कृपा हो । अपने कपड़ों के लिए कुछ लेने में आपको आपत्ति तो न होगी । किन्तु ... ”उन्होंने लज्जा से और भी लाल पड़ते हुए कहा । फिर वह चुप हो गई ।

“जी ?” जुलिये ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उनकी ओर देखा ।

उन्होंने धरती की ओर देखते हुए ही उत्तर दिया, “इस विषय में मेरे पति से कोई चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है ।”

“मैडम, मैं गरीब का बेटा भले ही हूँ, पर नीच नहीं हूँ”, जुलिये ने उत्तर दिया । वह रुककर और सीधा तनकर खड़ा हो गया था । उसकी आँखें क्रोध से जल उठी थी । “इस बात पर गायद आपने काफी विचार नहीं किया । यदि म० द रेनाल से अपनी आमदनी के सम्बन्ध में कुछ भी छिपाने लगू तो मैं पुशामदी चाकर से भी तुच्छ हो जाऊँगा ।”

मा० द रेनाल के काटो तो खून नहीं । वह अवाक् हो गयी ।

जुलिये कहता गया, “जब से मैं इस घर में आया हूँ, श्रीमान मेयर महोदय ने पाच बार ३६ फ्रैंक मुझे दिये हैं । मैं अपने हिसाब की काफी म० द रेनाल को अथवा दुनिया में किसी को भी दिवाने को तैयार हूँ, यहाँ तक कि म० वालनो को भी जो मुझसे घृणा करते हैं ।”

इस विस्फोट के बाद मा० द रेनाल अप्रतिभ कापती रह गयी और फिर भ्रमण के अन्त तक दोनों में से किसी को बातचीत प्रारम्भ करने के लिए कोई बहाना न सूझ सका ।

जुलिये के अभिमानी हृदय के लिए मा० द रेनाल के प्रति किसी प्रकार की प्रेम-भावना का अनुभव करना अधिकाधिक असम्भव होता जा रहा था। जहाँ तक उनका सवाल था, उसकी ऐसी डॉट-डपट से उनके मन में उसके प्रति और भी अधिक श्रद्धा और सम्मान बढ़ गया था। उसका जो अपमान अनजाने ही उनके द्वारा हो गया था, उसका प्रायश्चित्त करने के लिए उन्होंने अपने अत्यन्त गहरे स्नेह-भाव को ऐसा नये रूप में प्रकट किया जिससे पूरे सप्ताह भर वह बहुत ही प्रसन्न रही। किसी हद तक जुलिये का क्रोध भी उससे शांत हुआ किन्तु कोई व्यक्तिगत रुझान दिखा सकने की स्थिति से वह अभी बहुत दूर था। देखा न ! उसने मन ही मन कहा। धनी लोग ही ऐसा कर सकते हैं। पहले अपमान करेंगे और फिर सोचेंगे कि कुछ न कुछ ढोंग रचने से सब ठीक हो सकता है। अपने समस्त निश्चय के बावजूद मा० द रेनाल का हृदय इतना भग हुआ और अभी तक इतना भोला था कि वह अपने पति को जुलिये से अपने प्रस्ताव और उसके ठुकरा देने के विषय में बताये बिना न रह सकी।

“क्या !” मा० द रेनाल ने बहुत ही क्रुद्ध होकर कहा, “एक नौकर की यह हरकत तुम सहन कैसे कर सकी !”

मा० द रेनाल ने उनके ‘नौकर’ शब्द के व्यवहार पर आपत्ति की तो उन्होंने आगे कहा, “तुम नहीं जानती कि स्वर्गीय प्रिंस द कोदे ने अपने दरबारियों का अपनी पत्नी से परिचय कराते हुए क्या कहा था ? उन्होंने कहा था, ‘ऐसे सारे लोग हमारे नौकर होने हैं।’ एक बार मैंने तुम्हें बजावाल के सस्मरणों से कुछ अश पढ़कर सुनाये थे जिसमें इस विषय की सम्पूर्ण जानकारी मिल जाती है कि किस को कितना सम्मान देना चाहिए। जो व्यक्ति कुलीन परिवार का नहीं, और तुम्हारे घर में रहता तथा वेतन पाता है, वह तुम्हारा नौकर ही है। मैं जुलिये से इस विषय में बात कर लूँगा और उसे सौ फ्रैंक दे दूँगा।”

“जैसा चाहो। कम से कम नौकरो के सामने ऐसा न करो तो

अच्छा है”, मा० द रेनाल ने काँपते हुए कहा ।

“हाँ, ठीक है । कहीं वे ईर्ष्या करने लगे तो उचित न होगा” उनके पति ने जाते-जाते कहा । मन ही मन वह सोच रहे थे कि रकम कुछ छोटी नहीं है ।

दुख से लगभग सज्ञाशून्य होकर मा० द रेनाल एक कुर्सी में घप में बैठ गयी । अब ये जुलिये का और भी अपमान करेगे, और यह सब मेरे ही कारण । अपने पति के व्यवहार से उन्हें बड़ा सदमा-सा पहुँचा था । अपने हाथों में मुँह छिपाकर उन्होंने मन ही मन निश्चय किया कि अब कभी अपने मन की बात उनसे न कहूँगी ।

उसके बाद जब जुलिये से फिर उनकी भेट हुई तो वह सिर से पैर तक काँप रही थी । उनका कण्ठ ऐसा रुँध गया था कि एक शब्द तक मुख से नहीं निकल रहा था । अपनी इस उलझन में उन्होंने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये और उन्हें झकझोरने लगी ।

“अच्छा देखिये, आप मेरे पति से प्रसन्न तो है ?” उन्होंने आखिरकार कहा ।

“नहीं, क्यों होऊँगा ?” जुलिये ने कड़वी मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया । “उन्होंने मुझे सौ फ्रैंक दिये हैं ।”

मा० द रेनाल ने कुछ असमजस में उसकी ओर देखा । “मुझे अपनी बाँह का सहारा दीजिये”, आखिरकार उन्होंने कहा । उनकी आवाज़ में एक ऐसे साहस का स्वर था जो जुलिये ने पहले कभी न सुना था ।

मार्ग में वह एक पुस्तक की दूकान में साहसपूर्वक घुस गई, यद्यपि उसका मालिक मशहूर उदारपथी था । वहाँ उन्होंने दस लुई के मूल्य की पुस्तकें पसन्द करके अपने बेटों को दी और उन्हें आदेश दिया कि तीनों अपनी-अपनी पुस्तकें पर अपना नाम दूकान से निकलने से पहले ही लिख लें । मा० द रेनाल जुलिये को पहुँचाये हुए दुःख का इस प्रकार साहसपूर्वक प्रायश्चित्त कर लेने से प्रसन्न थी । उबर इस

बीच जुलिये दूकान के अन्दर इतनी सारी पुस्तके देखकर विस्मय से अवाक् था। आज से पहले उसने ऐसे सासारिक स्थानों में प्रवेश करने का कभी साहस न किया था। उसका दिल बहुत जोर से धड़क रहा था। इसलिए मा० द रेनाल के भावों का अनुमान तो दूर, इस समय वह इस विचार में डूबा हुआ था कि इनमें से कुछेक किताबें धर्मशास्त्र का साधारण विद्यार्थी किस प्रकार अपने लिये जुटा सकता है। कुछ देर बाद उसे अपनी इच्छा पूरी करने का एक उपाय सूझा। थोड़ी चतुराई से समझाने-बुझाने पर मा० द रेनाल को इस बात के लिए तैयार किया जा सकता है कि उसके किसी बालक के निबन्ध का विषय प्रान्त के प्रसिद्ध पुरुषों की जीवनी रखा जाय।

महीने भर के परिश्रम के बाद जुलिये को सफलता मिलती दिखाई दी। यही नहीं, कुछ समय बाद मेयर महोदय से बात करते-करते उनके सामने उसने इससे भी कहीं अधिक कठिन प्रस्ताव रख दिया जिसका अर्थ था एक उदारपथी पुस्तकालय का सदस्य बनकर उसको आर्थिक सहायता देना। मा० द रेनाल इस बात से तो सहमत थे कि उनके सबसे बड़े बेटे को सैनिक शिक्षालय में जिन पुस्तकों के नाम वार्त्तालाप में सुनने को मिलेंगे, उनसे प्रत्यक्ष परिचय होना उत्तम है। किन्तु जुलिये ने देखा कि मेयर इससे अधिक आगे बढ़ने को तैयार नहीं है। उसे सन्देह हुआ कि इसके पीछे कोई न कोई छिपा हुआ कारण है, किन्तु वह उसका अनुमान न कर सका।

एक दिन उसने मा० द रेनाल से कहा, “मैंने सोचा है कि रेनाल जैसे प्रतिष्ठित कुलीन व्यक्ति का नाम एक टुटपू जिया पुस्तक-विक्रेता के रजिस्टर में होना बहुत अनुचित होगा।” सुनकर मा० द रेनाल का चेहरा खिल उठा। जुलिये ने और भी विनम्र स्वर में आगे कहा, “और यदि धर्मशास्त्र के एक गरीब विद्यार्थी का नाम पुस्तकें उधार देने वाले विक्रेता के रजिस्टर में निकल आया तो यह उसके हित में भी बुरा होगा। उदारपथियों को तब मेरे ऊपर यह दोषारोपण करने का अवसर

मिल जायगा कि मैं गन्दी पुस्तकें पढ़ता हूँ और कौन जानता है कि वे ऐसी अनुचित पुस्तकों के शीर्षक भी मेरे नाम के साथ न छाप दें।” किन्तु जुलिये असल बात से बहक रहा था। उसने देखा कि मेयर फिर कुछ बेचैन और परेशान नज़र आने लगे हैं। वह चुप हो गया। पर मन ही मन उसने कहा कि अब तो आ गया काबू में।

कुछ दिनों बाद म० द रेनाल के सबसे बड़े बेटे ने उन्हीं की उपस्थिति में जुलिये से एक पुस्तक के बारे में कुछ पूछा, जिसका विज्ञापन एक स्थानीय जैकोबिन पत्र ‘कोतिद्येन’ में निकला था। युवक शिक्षक ने कहा, “श्रीमान्, मेरा एक सुझाव है जिससे जैकोबिन पत्रियों को प्रसन्न होने का कोई कारण भी न मिले और साथ ही मुझे अदोल्फ के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए आवश्यक सामग्री भी प्राप्त हो जाय। यदि उचित समझे तो आप अपने किसी बहुत ही अदना नौकर का नाम पुस्तक-विक्रेता के यहाँ सदस्यों में लिखवा दें।

“विचार तो बुरा नहीं है”, म० द रेनाल ने स्पष्ट ही अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा।

“पर इस नौकर को भली भाँति समझा दीजियेगा कि वह कोई उपन्यास न लाये। एक बार ऐसी खतरनाक पुस्तकें घर में आईं तो उनसे नौकरानियों के बल्कि स्वयं नौकरों के बिगड़ने की आशंका है।” जुलिये ने गम्भीर और लगभग विषण्ण भाव से आगे कहा। कुछ लोगों के लिए बहु-इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति में सफलता होने पर ऐसे भाव बहुत ही स्वाभाविक हो जाते हैं।

“राजनीतिक-प्रचारात्मक साहित्य की बात तो आप भूल ही गये”, म० द रेनाल ने जोड़ा। उनके बच्चों के शिक्षक ने जो होशियारी का रास्ता निकाला था, उसके प्रति अपनी प्रशंसा के भाव को छिपाने के लिए उनके स्वर में एक प्रकार का भारी-भरकमपन आ गया था।

जुलिये का जीवन इस भाँति ऐसी ही छोटी-मोटी सौदेबाजियों में चल रहा था और इन्हीं की सफलता में उसका मन इतना उलझा रहता

था कि अपने प्रति मा० द रेनाल के विशेष प्रीति-भाव को वह देख ही न पाता था, जिसे यदि वह चाहता तो उनके हृदय में से सहज ही पढ़ सकता था ।

मेयर के घर में उसकी मानसिक अवस्था एक बार फिर वैसी ही हो गई जैसी पिछले जीवन में सदा रहती आई थी । अपने घर की भाँति ही यहाँ भी जिन लोगों के साथ वह रहता था, उनके प्रति उसके मन में तीव्र घृणा थी और साथ ही वे भी उससे घृणा करते थे । प्रत्येक दिन वह उपजिलाधीश म० वालनो तथा परिवार के अन्य मित्रों की बातें सुनता । वे लोग जिस प्रकार अपनी आँखों के आगे होने वाली नई से नई घटनाओं का वर्णन करते, उससे जुलिये के आगे स्पष्ट हो जाता कि उनके विचार यथार्थ से कितने दूर हैं ।

केवल वही चीज़ उसे प्रशंसा-योग्य लगती जिसकी उसके आस-पास के लोग बुराई करते हों । उसके भीतर के भाव सदा यही रहते : कैसे गवार है, कैसे मूर्ख है ! और मजेदार बात यह थी कि अपने समस्त अभिमान के बावजूद प्रायः वह यह भी न समझ पाता था कि वे लोग बात किस विषय पर कर रहे हैं ।

अपने सारे जीवन में खुलकर बातें उसने बूढ़े फौजी डाक्टर को छोड़कर किसी से नहीं की थी । उसके जो भी थोड़े-बहुत विचार थे, वे बोनापार्ट की इटली की लड़ाइयों तथा चिकित्सा सम्बन्धी प्रश्नों के विषय में थे । उसके युवक-मुलभ साहस को अधिक से अधिक कष्टदायक चीर-फाड़ के विस्तृत वर्णनों में बड़ा सन्तोष मिलता । वह मन ही मन कहता कि मैं तो चू तक न करता ।

पहली बार जब मा० द रेनाल ने उससे अपने बच्चों के अतिरिक्त किसी अन्य विषय पर बातचीत करने का प्रयत्न किया तो वह डाक्टरी चीर-फाड़ के बारे में कुछ कहने लगा । उनका मुख उतर गया और वह उससे चुप हो जाने का अनुरोध करने लगी ।

ऐसी बातों को छोड़कर जुलिये और कुछ जानता ही न था । इस-

लिये निरन्तर मा० द रेनाल के साथ रहने पर भी यदि कभी वे दोनों अकेले मिल जाते तो एक अजीब-सा मौन उनके बीच छा जाता। ड्राइंग रूम में उसका व्यवहार चाहे जितना विनम्र होने पर भी प्रत्येक आगंतुक से एक प्रकार की बौद्धिक श्रेष्ठता का भाव जुलिये की आँखों में मा० द रेनाल को सदा दिखाई पड़ता। यदि वह कभी पल भर के लिए उसके साथ अकेली पड़ जाती तो उसके प्रत्यक्ष सकोच पर उनका ध्यान गये बिना न रहता। इससे वह बेचैन हो जाती क्योंकि अपने नारी-सुलभ सहज ज्ञान से वह यह अनुभव करती थी कि इस सकोच के पीछे किसी सुकुमार भावना का लेशमात्र भी नहीं है।

भद्र समाज के सम्बन्ध में जुलिये के मन में जो भी विचार थे, वे बड़े फौजी डाक्टर के वर्णनो से प्राप्त किये हुए थे। उनके कारण किसी स्त्री से मिलने पर चुप्पी छा जाती, तो जुलिये को बड़ा अपमानित-सा अनुभव होता मानो वह चुप्पी उसका अपना ही कोई विशेष दोष हो। यह अनुभव किसी व्यक्तिगत घनिष्ठ सम्भाषण में सौ गुना त्रासदायक हो उठता था। किसी स्त्री से अकेले में भेट होने पर पुरुष को क्या कहना चाहिए, इस विषय में उसकी कल्पना बहुत ही रोमांटिक और एकदम बेसिर पैर की धारणाओं से ठसाठस भरी हुई थी। उनके कारण घबरा-हट में सदा उसे सर्वथा अनुपयुक्त विचार ही सूझते। उसका मन कल्पना-लोक में उन्मुक्त विचरता रहता, किन्तु तो भी वह उस चुप्पी को न तोड़ पाता और यह उसे बहुत ही अपमानजनक लगता। इसीलिए मा० द रेनाल और बच्चो के साथ घूमने जाने पर उसके चेहरे का कठोर भाव उसके अपने तीखे आन्तरिक त्रास से और भी सघन हो जाता।

उसे अपने ऊपर बड़ी तीव्र वितृष्णा होने लगी थी। यदि वह दुर्भाग्य-वश किसी प्रकार जबरदस्ती कुछ कहता भी तो उसके मुँह से अधिक से अधिक हास्यास्पद बात ही निकलती। उसका सन्ताप इसलिए और भी बढ़ जाता कि वह अपने इस बेतुकेपन को समझता था और उसे बहुत ही बड़ा-चढ़ाकर देखता था। किन्तु जो वह नहीं देख पाता था, वे थे

स्वयं उसकी अपनी आँखों के भाव । उसकी आँखें इतनी सुन्दर थी और उनमें एक ऐसा ज्वलन्त व्यक्तित्व झलकता था जो कभी-कभी, चतुर अभिनेताओं की भाँति, सर्वथा अर्थहीन बातों को भी एक अत्यन्त सुखद अर्थ प्रदान कर देता था । मा० द रेनाल ने अनुभव किया था कि अकेले होने पर वह तब तक कभी कोई सुनने-योग्य अच्छी बात न कह पाता था जब तक किसी अप्रत्याशित घटना के कारण वह अपने आपको भूल न जाय और सुन्दर प्रशंसात्मक बातें कहने का विचार न छोड़ दे । उनके घर मिलने आने वाले लोगों में नये और मौलिक विचारों की इतनी कमी रहती थी कि वह जुलिये की बुद्धि की आकस्मिक चमक का सदा हँसकर स्वागत करती थी ।

नैपोलियन के पतन के बाद से प्रान्तों में सौन्दर्य-पूजा अथवा रसिकता का प्रदर्शन एकदम वर्जित माना जाने लगा था । हर व्यक्ति को डर था कि कहीं अपनी नौकरी से न निकाल दिया जाय । दुष्ट लोगों को जेस्विट दल का समर्थन प्राप्त था और पाखण्ड का शिक्षित समाज में भी बेहद बोल-बाला था । उकताहट और नीरसता के भाव पहले से दुगुने थे और खेती तथा पढ़ाई के अतिरिक्त कोई आनन्द के साधन न बचे थे ।

मा० द रेनाल एक धार्मिक और धनी मौसी की उत्तराधिकारिणी थी और एक कुलीन परिवार के व्यक्ति के साथ सोलह वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हो गया था । इसलिए अपने समूचे जीवन में उन्हें प्रेम जैसी वस्तु का कोई अनुभव कभी न हुआ था । बस सुयोग्य पुरोहित म० शेला से इस विषय में एक बार उनकी बात हुई थी क्योंकि वह उन के धर्मगुरु थे जो उनके पाप-स्वीकार के भी श्रोता थे । उन्होंने म० वालनो के प्रयत्नों की चर्चा करते हुए प्रेम का ऐसा भीषण चित्र उनके आगे खींचा था कि उस शब्द का जघन्य चरित्रहीनता और लम्पटता के अतिरिक्त अन्य कोई अर्थ वह न समझती थी । जो थोड़े-बहुत उपन्यास संयोगवश प्राप्त हो जाने पर उन्होंने पढ़े थे, उनमें चित्रित प्रेम-सम्बन्ध

को वह अपवादस्वरूप अथवा मानवी प्रकृति के सर्वथा विरुद्ध मानती थी । इस अज्ञान के कारण ही मा० द रेनाल जुलिये के विषय में निरन्तर सोचते रहने पर भी पूर्णतः सुखी थी और इस बात से अपने आपको अपराधी मानने का तनिक भी कोई कारण अनुभव न करती थी ।

छोटी-मोटी घटनाएं

मा० द रेनाल के स्वभाव की मधुरता में, जिसका सारा श्रेय उनकी अपनी विचारधारा और वर्तमान आनन्दावस्था को था, अपनी नौकरानी एलिजा की बात सोचने पर हल्की-सी चंचलता आ जाती थी। इस नव-युवती को अचानक ही कहीं से कुछ धन प्राप्त हो गया। उसके बाद वह मा० शेला के पास गई और उनके आगे अपना सब मनोभाव प्रगट करते हुए स्वीकार कर लिया कि वह जुलिये से विवाह करना चाहती है। पुरोहित अपने मित्र के इस सौभाग्य-सवाद से बड़े प्रसन्न हुए। किन्तु जब जुलिये ने दृढतापूर्वक यह घोषणा कर दी कि वह एलिजा के प्रस्ताव को स्वीकार करने की कल्पना भी नहीं कर सकता तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ।

“अपने हृदय की गतिविधि पर भली भाँति ध्यान दो, बेटा”, क्यूरे ने कुछ तेवर चढ़ाते हुए कहा। “यदि तुम अपने कर्तव्य के कारण ऐसे सौभाग्यपूर्ण प्रस्ताव को ठुकरा रहे हो तो मैं तुम्हें बधाई देता हूँ। मैं छप्पन वर्ष में वेरियेर के गिरजाघर का पुरोहित हूँ। तो भा लगता है कि मेरी जीविका मुझ से अब छिनने ही वाली है। इससे मुझे दुःख है किन्तु तो भी मेरे पास आठ सौ लिवरे की अलग आमदनी मौजूद है। ये सब निजी बातें मैं तुम्हें इसीलिए बता रहा हूँ कि तुम्हारे मन में पुरोहित के घघे के बारे में कोई भ्रम न बना रह जाय। यदि तुम अधिकार-प्राप्त व्यक्तियों के खशामदी बनने का विचार कर रहे हो तो तुम्हारी आत्मा

को नरक के सिवाय और कहीं ठौर नहीं। उसमें तुम्हारी सासारिक उन्नति भले ही हो जाय किन्तु तुम्हें ऐसे कार्य करने पड़ेंगे जिनमें गरीब और मोहताज लोगों को हानि पहुँचेगी। तुम्हें सरकारी अफसरों की, मेयर की और संक्षेप में हर व्यक्ति की खुशामद करनी पड़ेगी और अपने आपको उनकी वामनाओं का दास बनाना पड़ेगा। इस प्रकार के व्यवहार को दुनिया चाहे अच्छी शिक्षा का प्रमाण भले ही माने, और यह भी सम्भव है कि साधारण व्यक्ति को यह आत्म-कल्याण के विपरीत न लगे, किन्तु पुरोहित के धर्म में मनुष्य को इस लोक और परलोक दोनों में से किसी एक की सफलता को चुनना पड़ता है, बीच का कोई रास्ता नहीं। जाओ बेटा, इस बात पर भली भाँति विचार करना और तीन दिन के भीतर मुझे अपना निश्चित उत्तर दे जाना। यह सोचकर मुझे दुख हो रहा है कि तुम्हारी विचारधारा के किसी गढ़रे दबे हुए अन्तराल में एक ऐसी सुलगती हुई ज्वाला है जो एक पुरोहित के लिए आवश्यक समय तथा सासारिक लाभ के प्रति पूर्ण विरक्तता की ओर इंगित नहीं करती। जहाँ तक तुम्हारी बुद्धि का प्रश्न है, मुझे तुम्हारे भविष्य के विषय में बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं, पर एक बात मुझे अवश्य कहनी है कि यदि तुमने पुरोहित का काम अपनाया तो मैं तुम्हारे परलोक की बात सोचकर काँप उठता हूँ।” यह बात कहते-कहते उस भले पुरोहित की आँखों में आँसू भर आये।

इस बात से मन में उठने वाले भावावेग के लिए जूलिये को लज्जा अनुभव हुई। जीवन में पहली बार उसे लगा कि कोई उसे स्नेह करता है। हर्ष से उसकी आँखें भर आयी और अपने आँसुओं को छिपाने के लिए वह बेरियर के ऊपर फँसे हुए घने जंगलों में चला गया।

आखिरकार वह अपने आपसे भी पूछने लगा कि मेरी ऐसी अवस्था होने का कारण सचमुच क्या है। मुझे लगता है कि मैं इस भले पुरोहित के लिए सौ बार अपना जीवन न्योछावर कर सकता हूँ यद्यपि उसने अभी-अभी यह सिद्ध कर दिया है कि मैं निरा मूर्ख हूँ। वह ऐसे

व्यक्ति है जिन्हें मैं कभी दुःख न देना चाहूँगा, पर वह समझ गये हैं कि मैं वास्तव में क्या हूँ। जिस छिगी हुई आग का उन्होंने उल्लेख किया, वह दुनिया में किसी न किसी प्रकार सफल होने की मेरी योजना के अतिरिक्त और क्या है। जिस समय मैं पचास लुई प्रति वर्ष के लालच का त्याग करके यह कल्पना कर रहा था कि मेरी धार्मिकता और मेरी सच्ची कर्तव्य-परायणता के सम्बन्ध में उनकी बहुत ही अच्छी धारणा होगी, उसी समय उन्होंने यह कहा कि वह मुझे पुरोहित बनने के योग्य नहीं समझते। जुलिये सोचने लगा कि मैं भविष्य में अपने चरित्र के उन्हीं गुणों पर निर्भर रहूँगा जिनकी मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ। यह मुझे कौन बता सकता था कि कभी मुझे आँसुओं से भी आनन्द मिलेगा अथवा मैं ऐसे व्यवित के प्रति आकर्षित हो सकूँगा जो मुझे मूर्ख से अधिक कुछ नहीं समझता ?

तीन दिन बीतते-बीतते जुलिये को एक ऐसा बहाना सूझ गया जो पहले दिन ही उसके मन में आ जाना चाहिए था। यह बहाना भूठा अपवाद मात्र था। किन्तु उससे क्या होता है ? उसने क्यूरे के आगे अपने मन का पाप स्वीकार करते हुए बहुत सकोच के साथ यह कहा कि शुरू में इस विवाह के लिए तैयार न होने का कारण ऐसा था जिसे बताना अनुचित होता क्योंकि उससे किसी तीसरे व्यक्ति को क्षति पहुँचने की सम्भावना थी। जुलिये का यह कथन एलिजा के चरित्र पर लगभग सन्देह करने के बराबर था। म० शेला ने अनुभव किया कि यह बात कहते समय जुलिये के व्यवहार में एक ऐसे सासारिक उत्साह का-सा भाव था जो पुरोहित बनने के इच्छुक नवयुवक के लिए बहुत शोभन न जान पड़ता था।

उन्होंने उससे फिर कहा, “बेटे, वृत्तिहीन पादरी बनने के बजाय एक प्रतिष्ठित और शिक्षित किसान बनना अधिक श्रेयस्कर है।”

जहाँ तक शब्दों का प्रश्न था, जुलिये ने पादरी के इस प्रयत्न का भी बहुत अच्छा उत्तर दिया। उसने अपने उत्तर में ऐसी ही शब्दावली

सुख और स्याह

का प्रयोग किया जो धर्मशास्त्र के किसी उत्साही विद्यार्थी को करना चाहिए। किन्तु उसे कहते समय उसके स्वर से तथा उसकी आँखों की अस्वाभाविक चमक से म० शेला कुछ चौंक-से गये।

हमे जुलिये के भविष्य को अन्धकारपूर्ण बताने की आवश्यकता नहीं। वह अपने अनुभव से, और ठीक ही, धूर्तता और कपट की भाषा सीख रहा था। उसकी उम्र के लड़के के लिए यह कोई बहुत बुरी बात भी नहीं। जहाँ तक उसके व्यवहार और उसकी भाव-भंगिमा इत्यादि का प्रश्न है, वह अभी तक देहाती लोगो में रहता आया था। इस काल के उत्कृष्ट नमूने देखने का उसे अभी अवसर ही न मिला था। जीवन में जैसे ही उसे इन दुनियादारी लोगो के सम्पर्क में आने का अवसर मिला, उसकी भाव-भंगिमाएँ भी उसकी भाषा के अनुरूप प्रशसनीय हो गई थी।

मा० द रेनाल को इस बात से बड़ा आश्चर्य था कि उनकी नौकरानी इतना धन पा जाने के बाद भी सुखी नहीं है। उन्होंने देखा कि वह बार-बार ब्यूरे के पास जाती है और वहाँ से आँखों में आँसू भरे लौटती है। अन्त में एलिजा ने अपनी मालकिन से भी विवाह की समस्या के बारे में जिक्र किया।

सुनते ही उन्हें एकाएक लगने लगा कि वह बीमार हो गयी है। एक प्रकार के ज्वरग्रस्त व्यक्ति की-सी उत्तेजना के कारण उन्हें नींद न आती। वह केवल ऐसे ही क्षणों में कुछ जीवन्त रहती जब उनकी नौकरानी अथवा जुलिये उनकी आँखों के सामने होते। वह इन दोनों की गृहस्थी और उसके सुख के अतिरिक्त और कोई बात सोच ही न पाती थी। उनकी कल्पना में यह बात बड़े विशद रंग में चित्रित हो उठी थी कि पचास लुई प्रति वर्ष की आमदनी पर इन लोगो को कितनी गरीबी से दिन बिताने पड़ेगे। जुलिये शायद ब्रे में वकील हो जाय। यह जगह वेरियेर से केवल छ. मील की दूरी पर ही थी, जहाँ पर ज़िलाधिकारी भी रहा करता था। तब तो कभी-कभी उनकी भेंट उससे हो सका

करेगी ।

उन्हे सचमुच यह विश्वास हो चला था कि वह पागल हो जायेगी । उन्होंने अपने पति से यह बात कह भी दी और अन्त मे सचमुच बीमार पड गयी । उस दिन शाम को जब एलिजा उनकी देखभाल मे लगी थी तो उन्होंने देखा कि वह रो रही है । उस समय वह एलिजा के प्रति बडे क्षोभ का अनुभव कर रही थी और कुछ ही देर पहले उसे डाँट भी चुकी थी । उसे रोते देख उन्होंने उससे क्षमा माँगी पर एलिजा के आँसू दुगुनी तेजी से गिरने लगे । वह बोली कि यदि मालकिन की आज्ञा मिल जाय तो वह उन्हे अपना सारा दु ख सुना दे ।

“हाँ, हाँ, बताओ”, उन्होंने कहा ।

“मालकिन, सच बात यह है कि उसने मुझसे विवाह करने से इनकार कर दिया है । कुछ दुष्ट लोगो ने मेरे बारे मे उससे न जाने क्या-क्या कह दिया है और उसने उन पर विश्वास भी कर लिया है ।”

“किसने इनकार कर दिया है ?” मा० द रेनाल ने जैसे साँस रोक कर पूछा ।

“और किसने, म० जुलिये ने, मालकिन ।” एलिजा ने सिसकते हुए उत्तर दिया । “पुरोहित बाबा भी इस बारे मे उसकी राय बदलने मे सफल न हो सके । पादरी बाबा सोचते है कि एक भली शीलव्रती लडकी से विवाह करने मे उसे इस कारण आपत्ति नही होनी चाहिए कि वह कही नौकरानी का काम करती थी । क्योंकि आखिरकार म० जुलिये के पिता भी तो बढई ही है । और मालकिन के यहाँ काम मिलने के पहले वह भी किस तरह अपनी रोजी कमाते थे ?” मा० द रेनाल ने आगे कुछ भी नही सुना । हर्षातिरेक के कारण वह लगभग सारी सुध-बुध गँवा बैठी थी । वह बार-बार उससे पूछने लगी कि क्या जुलिये ने सचमुच एकदम नाही कर दी है और इस बात की कोई सम्भावना नही कि वह अपना मत बदल सके ।

अन्त मे उन्होंने एलिजा से कहा, “मैं भी एक बार कोशिश करूँगी ।

मैं स्वयं मा० जुलिये से बात करूँगी ।”

अगले दिन दोपहर के भोजन के बाद मा० द रेनाल ने अपने प्रतिद्वन्द्वी के पक्ष में पैरवी करने और घण्टे भर तक एलिजा तथा उसकी सम्पत्ति को बार-बार ठुकराये जाने के वचन सुनने का सौभाग्य-लाभ किया ।

धीरे-धीरे जुलिये ने बधे-बधाये जवाब देने छोड़ दिये और वह मा० द रेनाल के समझदारी भरे तर्कों का उत्तर बुद्धिमानी और जोश से देने लगा । इतने सारे निराशा भरे दिनों के बाद हर्ष का जो ज्वार मा० द रेनाल अपने समूचे व्यक्तित्व के भीतर उमड़ता हुआ अनुभव कर रही थी, उसको न सह सकने के कारण वे एकाएक मूर्च्छित हो गयी । जब उन्हें होश आया और कुछ प्रकृतिस्थ हुई तो उन्होंने सबको कमरे से बाहर भेज दिया । उनके विस्मय का कोई ठिकाना न था । क्या मैं जुलिये से प्रेम करने लगी हूँ ? आखिरकार उन्होंने मन ही मन अपने प्रापसे यह प्रश्न किया ।

यह आविष्कार यदि किसी अन्य अवसर पर होता तो वह उन्हें पश्चत्ताप और तीव्र मानसिक यन्त्रणा के सागर में डुबा देता । इस समय वह उन्हें किमी ऐसे विचित्र दृश्य की भाँति जान पड़ा जिसकी ओर से वह अब तक उदासीन रही हो । पिछले दिनों की यन्त्रणा के कारण उनका हृदय इतना वलान्त हो गया था कि अब किसी आवेश की कोई क्षमता उनमें न बची थी ।

उन्होंने कुछ काम करने का प्रयत्न किया । किन्तु शीघ्र ही उन्हें गहरी नीद आ गई । जागने पर वह इतनी आशक्ति न हुई जितनी होना चाहिए था । परिस्थिति के अधियारे पक्ष को देख सकने के कारण वह प्रसन्न थी । स्वभाव से ही सीधी और भोली होने के कारण इस भली महिला ने कभी इस बात का प्रयत्न नहीं किया था कि भावनाओं के किसी नये रूप अथवा दुःख की किसी नई सीमा से किसी प्रकार का भावावेग प्राप्त करे । जुलिये के आने के पहले वह पेरिस से दूर रहने

वाली एक भली पत्नी और माँ के उायुक्त अनगिनती कर्तव्यों में ही डूबी रहती थी। मन की भावाकुलता को वह ठीक उसी प्रकार देखती थी जैसे हम लाटरी को देखते हैं—अनिवार्य निराशा और केवल मूर्खों द्वारा वाँछित सुख के रूप में।

भोजन की घण्टी बजी। बच्चों को भीतर लेकर आते हुए जुलिये की आवाज़ सुनकर मा० द रेनाल का मुख गहरा लाल हो उठा। प्रेम में पड़ने के बाद से वह थोड़ी-सी चतुर हो गई थी। इसलिये अपने मुख की लाली के लिए उन्होंने भारी सिर-दर्द का बहाना किया।

“इस मामले में तुम सब स्त्रियाँ एक-सी हो”, मा० द रेनाल ने अट्टहास करते हुए कहा। “छोटी-छोटी नन्ही मशीनों की भाँति, जिन्हें निरन्तर मरम्मत की आवश्यकता होती है।”

मा० द रेनाल इस प्रकार के परिहास की अभ्यस्त होने पर भी उनके स्वर से सिहर उठी। विषय को बदलने के लिए उन्होंने जुलिये की ओर देखा। यदि वह ससार का सबसे कुरूप व्यक्ति होता तो भी इस क्षण वह उन्हें भला ही लगता।

जैसे ही वसन्त के सुहावने दिन आये, मा० द रेनाल अपने रहन-सहन को राजदरबार के अनुरूप ढालने और देखने के लिए, वेर्जि नामक एक गाँव में जाकर रहने लगे जो गान्त्रियेल के दुखपूर्ण प्रसंग के लिए प्रसिद्ध हो चुका था। वहाँ के गौथिक गिरजाघर के दर्शनीय घुसाव-शेषों से थोड़ी ही दूरी पर एक पुराना दुर्ग था जिसके मालिक मा० द रेनाल थे। इस दुर्ग में चार मीनारे थी और त्विलरी उद्यान की भाँति बना हुआ एक बगीचा था। बगीचे में बहुत-सी फूलों की क्यारियाँ बनी हुई थी और उसमें आने-जाने के रास्तों के दोनों ओर चैस्टनट के वृक्ष थे जिन्हें वर्ष में दो बार छाँटा जाता था। पास ही एक भ्रमण का मैदान था जिसके चारों ओर सेब के वृक्ष लगे हुए थे। बगीचे के दूसरे किनारे की ओर नौ या दस वालनट के वृक्ष खड़े थे जिनके बड़े-बड़े पत्तों से भरी बालियाँ लगभग अस्सी फीट ऊँची रही होगी।

म० द रेनाल जब भी अपनी पत्नी से इन वृक्षों की प्रशंसा सुनते तो कहते, “इनमें से हर पेड़ के लिए मुझे कम से कम आधे एकड़ की फसल का नुकसान होता है। इनकी छाया में गेहूँ तो पैदा हो ही नहीं सकता।”

इस बार यह दृश्य मा० द रेनाल को ऐसा लगा मानो पहली बार देख रही हो। इसीलिए उनकी प्रशंसा भी भावातिरेकपूर्ण थी। अपने हृदय की भावना के कारण वह बहुत सक्रिय और उत्साहित अनुभव करने लगी थी। वेर्जि में आने के बाद अगले दिन ही म० द रेनाल तो अपने मेयर पद के कार्य से शहर चले गये। पर मा० द रेनाल ने अपने निजी खर्च पर कुछ मजदूर काम पर लगाये। जुलिये ने उन्हें यह सुझाया था कि बगीचे के चारों ओर ऊँचे-ऊँचे वालनट वृक्षों के नीचे से एक छोटा-सा लाल मिट्टी का रास्ता बना लिया जाय ताकि बच्चे वहाँ सवेरे घूमने जा सकें और उनके जूते ओस से भीगे नहीं। योजना बनने के चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रारम्भ हो कर पूरी भी हो गई। मा० द रेनाल सारे दिन मजदूरों का निर्देशन करने में जुलिये की सहायता करके बड़ी प्रसन्न होती रही।

जब मेयर शहर से वापस लौटे तो वह रास्ते को पूरा बना हुआ देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुए। उनके आगमन से मा० द रेनाल को भी आश्चर्य हुआ जो उनके अस्तित्व को ही भूल बैठी थी। अगले दो महीने तक वह कुछ अप्रसन्नता भाव से ही इस बात की चर्चा करते रहे कि ऐसा बड़ा परिवर्तन इस भौति और उनकी सजाह लिये बिना ही कर डाला गया। सतोष इतना ही था कि यह काम मा० द रेनाल ने अपने निजी खर्च से करवाया था।

मा० द रेनाल अपना समय अधिकतर बच्चों के साथ बगीचे में तितलियाँ पकड़ने के प्रयत्न में बिताती थी। उन्होंने पारदर्शी जाली के बड़े-बड़े जाल जैसे बना लिये थे जिनमें वह अभागी तितलियों को पकड़ करती थी। उन्होंने जुलिये से उनका एक लम्बा-चौड़ा, भारी-भरकम

लैटिन नाम भी सीख लिया था। उन्होंने बजासो से इस विषय पर गोदार का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ मगवा लिया था जिसमे से जुलिये उन्हें तितलियो के विचित्र स्वभाव के बारे में तरह-तरह की बातें बताया करता था। जुलिये ने उनके लिए पट्टे का एक डिब्बा-जैसा बना दिया था जिसमे इन तितलियो को निर्ममतापूर्ण पिन के ऊपर लगाकर रख दिया जाता था।

आखिरकार अब मा० द रेनाल और जुलिये को बातचीत के लिए कुछ विषय मिल गये थे। जुलिये को अब मौन जन्य भीषण त्रास का भय न था। वे अब निरन्तर और बड़े उत्साह के साथ किन्तु सदा ही बहुत निर्दोष विषयों पर बातचीत करते रहते। व्यस्तता और प्रसन्नता से भरपूर यह सक्रिय जीवन एलिजा के सिवाय सबके लिए रुचिकर था। उसके ऊपर काम का भार बहुत बढ़ गया था। वह मन ही मन सोचती कि कार्नीवाल के समय जब वेरियेर में नृत्य-समारोह होता है तब भी मालकिन अपने वस्त्रों के विषय में इतना सोच-विचार नहीं करती थी। आजकल तो वह अपने कपड़े दिन में दो-तीन बार बदलती है।

किसी व्यक्ति की भी निरी प्रशंसा हमारा उद्देश्य नहीं है। इस लिए हम यह बात अस्वीकार नहीं करेंगे कि मा० द रेनाल के शरीर की त्वचा अपूर्व थी और वह अपने वस्त्र ऐसे बनवाती थी जिससे उनकी बाहे और गर्दन तथा कंधे बहुत कुछ खुले रह सके। उनका शरीर बहुत सुष्ठु और सुडौल था और इस प्रकार के वस्त्र उन पर बहुत फबते थे। “इतनी सुन्दर तो पहले आप कभी नहीं दिखाई पड़ी”, वेरियेर से भोजन के लिए वेर्जि आनेवाले उनके मित्र उनसे कहा करते।

विचित्र बात यह है, यद्यपि हम शायद इस पर विश्वास न करना चाहे, कि मा० द रेनाल के इन सब प्रयत्नों के पीछे कोई विशेष उद्देश्य न था। इसमें उन्हें एक प्रकार का आनन्द मिलता और जुलिये तथा बच्चों के साथ तितलियो का पीछा करने से जो भी समय बचता, उसे एलिजा के साथ अपने लिए वस्त्र बनवाने में लगा देती। वेरियेर इस बीच वह केवल एक बार और वह भी मुलू से आये हुए नए ग्रीष्मकालीन

गाउन खरीदने के विचार से गयी ।

वहाँ से वेजि वह एक अन्य युवती के साथ लौटी जो रिश्ते में उनकी कुछ लगी भी थी । अपने विवाह के बाद से मा० द रेनाल धीरे-धीरे इन मा० देविल के साथ, जो कन्वेंट में उनकी सहपाठिनी थी, बहुत घनिष्ठ हो गई थी ।

मा० देविल को अपनी इस दूर की बहन के अनेक विचित्र विचारों में हँसने की बहुत सामग्री मिलती । “मुझे तो यह बात कभी भी न सूझती”, वह कहती । मा० द रेनाल जब अपने पति के साथ होती तब ये विचित्र-विचित्र कल्पनाएँ—जो पेरिस में बड़ी भारी वाक्-चातुरी में गिनी जाती

निरी मूर्खता जान पड़ती जिनसे उन्हें बड़ा सकोच होता था । किन्तु मा० देविल की उपस्थिति से उनको बड़ा साहस मिला । प्रारम्भ में तो अपने विचार प्रगट करने में उन्हें बड़ी लज्जा-सी अनुभव होती थी । पर बहुत दिनों तक साथ रहते-रहते मा० द रेनाल की बुद्धि प्रखर हो उठी । सबेरे का लम्बा समय पलक मारने ही बीत जाता था तथा दोनों सखियाँ अत्यन्त ही प्रसन्न बनी रहती थी । किन्तु इस बार चतुर मा० देविल ने अपनी सखी को बहुत ही कम प्रसन्न और सुखी पाया ।

जुलिये तो देहात में आकर बिल्कुल वच्चो जैसा हो गया था और तितलियों के पीछे दौड़ने में वह भी उतना ही प्रसन्न रहता था जितने उसके नन्हे छात्र । पिछले दिनों उसने बड़े अकुश, चतुराई तथा जोड़-तोड़ का जीवन बिताया था । यहाँ वह अकेला और दूसरे लोगों की नज़रों से दूर था । मा० द रेनाल से तो वह स्वभाव से ही तनिक भी न डरता था । इसलिए यहाँ आकर उसने ससार के सुन्दरतम पर्वतों के बीच जीवन्त होने के आनन्द में, जिसे उसकी अवस्था के लोग इतनी तीव्रता से अनुभव करते हैं, अपने आपको पूरी तरह बह जाने दिया ।

मा० देविल के आते ही जुलिये को लगा कि उसका कोई बंधु आ पहुँचा है । उसने तुरन्त ही उन्हें बड़े-बड़े वालनट के वृक्षों के नीचे से बनाये गये नए रास्ते के छोर से दिखाई पड़ने वाले दृश्यों को दिखाया ।

वास्तव में वे स्विट्जरलैंड और इटली की भीलों के सुन्दरतम दृश्यों से भी यदि श्रेष्ठ नहीं तो उनके बराबर अवश्य थे। कुछ ही फीट बाद शुरू होने वाले ढाल के ऊपर चढ़ते-चढ़ते ही ओक वृक्षों के जंगलों से घिरी हुई बड़ी-बड़ी चट्टानें आ जाती हैं जो आगे इतनी दूर तक चली गई हैं कि नदी के ऊपर लटकती-सी दिखाई पड़ती हैं। जुलिये इन दिनों बहुत उन्मुक्त और आनन्दमग्न-सा था, बल्कि अपने कल्पना-महल का राजा था। वह दोनों सखियों को पानी में लगभग गिरती हुई-सी इन चट्टानों की चोटी पर ले गया। वे भी ऐसा भव्य दृश्य देखकर विस्मय से विभोर हो उठी। मा० देविल ने कहा, “मेरे लिए तो यह मोजार्ट के संगीत के समान है।”

पहले जब कभी जुलिये देहात में रहा तो अपने भाइयों की ईर्ष्या और चिड़चिड़े अत्याचारी पिता की उपस्थिति के कारण कभी उसका आनन्द न उठा सका था। वेर्जि में कोई अप्रिय स्मृतियाँ त्रास देने के लिए नहीं थी, जीवन में पहली बार यहाँ उसका कोई शत्रु नहीं था। म० द रेनाल प्रायः शहर चले जाते। तब वह पढ़ा करता। शीघ्र ही रात को और तब भी उलटे हुए फूलदान के नीचे अपना लैम्प छिपाकर रखने की सावधानी के साथ पढ़ने के बजाय अब वह पढ़ता-पढ़ता ही सो जाता। दिन में भी बच्चों की पढ़ाई के बीच अवकाश मिलता तो वह अपनी उस प्रिय पुस्तक के साथ चट्टानों के बीच जा बैठता, जो उसके लिए आचरण की एकमात्र संहिता और उसके भावाकुल सपनों का विषय थी उसके पृष्ठों में उसे एक साथ ही सुख, भाव-विभोरता और निराशा के क्षणों में सान्त्वना प्राप्त होती।

स्त्रियों के विषय में नैपोलियन के कुछेक कथनों से और साथ ही उसके राज्यकाल में लोकप्रिय कुछ उपन्यासों के गुण-दोषों के सम्बन्ध में चर्चा से जुलिये के मन में एकदम पहली बार कुछ ऐसे विचार आये जो उसकी आयु के नौजवानों के मन में बहुत पहले ही आ चुकते हैं।

फिर कड़ी गरमी के दिन आ पहुँचे। अब उन्होंने घर के पास ही

एक बड़े भारी नीबू के पेड़ के नीचे सन्ध्या बिताने का अभ्यास डाल लिया। वहाँ सचमुच बहुत अन्धकार-सा रहता था। एक दिन शाम को जुलिये महिलाओं की उपस्थिति में अपनी वाक्पटुता से प्रसन्न होता हुआ बड़े उत्साह से बातचीत कर रहा था। तभी जोश में बातचीत करते-करते बगीचे की रंगी हुई लकड़ी की एक कुर्सी पर मा० द रेनाल के हाथ से उसका हाथ छू गया।

मा० द रेनाल ने अपना हाथ जल्दी से हटा लिया, किन्तु जुलिये को अपना हाथ वहाँ से न हटाने का भाव दिखाना अपना कर्तव्य लगा। कर्तव्य पूरा करने के भाव और असफल होने पर हास्यास्पद अथवा हीन अनुभव करने की चेतना के कारण उसके हृदय में आनन्द का लेशमात्र भी न बचा।

देहात में एक साँझ

अगले दिन सबेरे मा० द रेनाल से भेट होने पर जुलिये ने विचित्र दृष्टि से उनकी ओर देखा । वह उन्हें ऐसे भाँपने की कोशिश कर रहा था जैसे किसी शत्रू की शक्ति का अनुमान लगा रहा हो । उसकी आँखों के भाव पिछले दिनों की तुलना में इतने भिन्न थे कि मा० द रेनाल अन्यमनस्क हो उठी । उन्होंने तो उसके प्रति स्नेह भाव ही दिखाया था, पर वह क्रुद्ध था, वह अपनी आँखें उसकी ओर से न हटा सकी ।

मा० देर्विल की उपस्थिति से जुलिये को बातचीत कम करने और अपने विचारों को मन ही मन मथते रहने का अधिक अवसर मिला । दिन भर वह अपनी साहस देनेवाली अपूर्व पुस्तक को पढ़कर हड़ता प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता । उस दिन उसने बच्चों को और भी कम पढ़ाया । फिर जब मा० द रेनाल की उपस्थिति के कारण उसके विचार अपने आत्म-सम्मान की रक्षा के विचार पर केन्द्रित हो गये तो आज शाम को उनका हाथ न छोड़ने का उसने निश्चय कर लिया ।

धीरे-धीरे सूरज डूबा और वह क्षण आ पहुँचा । जुलिये का हृदय अजीब तरह से धड़क रहा था । रात हो गई और बड़ी अँधियारी थी । इससे उसने ऐसी प्रसन्नता का अनुभव किया मानो कोई बड़ा बोझ उसके सीने से हट गया हो । आसमान घने काले बादलों से लदा हुआ था और लगता था कोई तूफान आनेवाला है । दोनों महिलाएँ उस दिन बड़ी देर तक टहलती रही—बल्कि उस दिन उन दोनों का हर कार्य जुलिये को

बड़ा विचित्र लगा। वे दोनों मौसम के आनन्द में बिल्कुल डूब गई थी जो कुछ सुकुमार और सूक्ष्म प्रवृत्ति के लोगो के लिए प्रेम के आनन्द को और भी बड़ा देता है।

आखिरकार सब लोग आकर बैठे। मा० द रेनाल जुलिये के पास बैठी थी और मा० देविल अपनी सखी की बगल में। जुलिये अपने प्रस्तावित कार्य में उलझे होने के कारण चुप था। बातचीत जम नहीं रही थी।

अपने पहले द्वन्द्व-युद्ध के समय भी क्या मैं ऐसे ही काँपूँगा और इतना ही दुखी अनुभव करूँगा? जुलिये ने मन ही मन सोचा। उसे अपने तथा दूसरो के ऊपर इतना अधिक अविश्वास था कि वह अपने मन की अवस्था से अपरिचित न रह सका। ऐसे मानसिक त्रास के क्षणों में कोई भी सकट उसे श्रेयस्कर जान पड़ता। वह बार-बार किसी न किसी काम से मा० द रेनाल के उठकर भीतर चले जाने की आशा करता। मन पर ऐसे भारी सयम के दबाव के कारण उसकी आवाज लड़खड़ा उठी थी। शीघ्र ही मा० द रेनाल की आवाज भी काँपने लगी, यद्यपि जुलिये का ध्यान उस ओर न था। इस समय उसके मन में कर्तव्य और सकोच के बीच ऐसा भीषण द्वन्द्व छिड़ा हुआ था कि अपने से बाहर किसी भी बात पर ध्यान देना उसके लिए सम्भव न था।

घर की घड़ी ने पौने दस का घण्टा बजाया, पर वह अब भी कुछ करने का साहस न जुटा पाया था। अपनी इस कायरता से खिन्न होकर जुलिये ने मन ही मन कहा, दस का घण्टा बजते ही मैं या तो वह कार्य कर डालूँगा जिसका मैं आज दिन भर मन ही मन निश्चय करता रहा हूँ या मैं ऊपर अपने कमरे में जाकर अपने मस्तिष्क को उड़ा दूँगा।

व्यग्रतापूर्ण प्रतीक्षा के कुछेक अन्तिम क्षणों के पश्चात्, जिनमें जुलिये भावावेग की अतिशयता के कारण अपना आपा खो बैठा था, घड़ी ने ठीक उसके सिर के ऊपर दस का घण्टा बजाया। घण्टे की प्रत्येक घातक चोट उसके सीने के भीतर पड़ती और वह ऐसे काँप उठता जैसे

उसके शरीर पर आघात लग रहा हो ।

आखिरकार जब दस का घण्टा अभी गूँज ही रहा था, उसने अपना हाथ बढ़ाकर मा० द रेनाल का हाथ पकड़ लिया जिसे उन्होंने तुरन्त ही खींच लिया । बिना भली-भाँति सोचे-समझे जुलिये ने दूसरी बार फिर हाथ पकड़ा । स्वयं बहुत विचलित होने पर भी उस हाथ के बर्फीले टप्पेपन से वह चौंक गया । वह उसे बहुत जोर-जोर से दबाने लगा । मा० द रेनाल ने एक बार फिर हाथ खींचने का प्रयत्न किया पर अन्त में वह यो ही रहा आया ।

जुलिये का हृदय आनन्द से उमड़ रहा था, मा० द रेनाल के प्रति प्रेम के कारण नहीं, बल्कि त्रास की उस भीषण अवस्था का अन्त होने के कारण । मा० देर्विल को कोई सन्देह न हो, इस विचार से उसे बातचीत शुरू करने के लिए बाध्य होना पड़ा । उस समय उसका कण्ठ-स्वर मधुर और सुदृढ़ था । इसके विपरीत मा० द रेनाल के स्वर की तीव्र भावाकुलता से उनकी सखी ने समझा कि वह कुछ अस्वस्थ है और इसलिए भीतर चलने का प्रस्ताव किया । जुलिये को इस प्रस्ताव से आशका हुई । उसने सोचा कि यदि ये ड्राइंग रूम में चली गई तो मेरी फिर वही अवस्था हो जायगी जिसमें सारा दिन बीता है । यह हाथ अभी इतने कम समय तक मेरे हाथ में रहा है कि इसे लाभ या जीत नहीं माना जा सकता ।

मा० देर्विल ने ड्राइंग रूम में चलने की बात दोहरायी तो जुलिये ने अपने हाथ में पड़े हुए हाथ को और भी कस कर पकड़ लिया । मा० द रेनाल कुर्सी से उठते-उठते फिर बैठ गई और बड़े क्षीण से स्वर में बोली, “तबीयत ठीक तो नहीं है पर यहाँ की खुली हवा बहुत अच्छी लग रही है ।”

ये शब्द सुनकर जुलिये के आनन्द की कोई सीमा न रही । वह बातचीत करने लगा और सब बहाने और अहंकार भूल गया । इस समय उसकी बात सुनने वाली दोनों महिलाओं को वह बहुत ही आकर्षक

व्यक्ति जान पड़ा। तो भी उसकी इस सद्यःप्राप्त वाक्-पटुता के पीछे साहस की हलकी-सी कमी अभी मौजूद थी। उसे मा० देर्विल के भीतर चले जाने का बड़ा भारी डर लगा हुआ था क्योंकि हवा इतने जोर से चल रही थी मानो तूफान आने वाला हो। तब वह मा० द रेनाल के साथ अकेला ही रह जाएगा। वह अपने भीतर एक प्रकार के ऐसे दिशाहीन साहस का अनुभव तो कर रहा था जो कुछ न कुछ कर बैठने के लिए पर्याप्त होता है, पर उनसे छोटी से छोटी बात कहना भी उस समय उसे अपनी सामर्थ्य के बाहर लग रहा था। शब्द चाहे जितने भीठे हो पर यदि उन्होंने झिड़क दिया तो पराजय उसकी अवश्य हो जायगी और जो लाभ अभी-अभी उसने प्राप्त किया था, वह पूरी तरह उससे छिन जायगा।

सौभाग्यवश उस दिन उसकी बातचीत के उत्साहपूर्ण ओजस्वी स्वर ने मा० देर्विल को बड़ा प्रभावित कर दिया था। वे साधारणतः उसे थोड़ा नीरस समझती थी और उसके व्यवहार में बालको जैसी अच-कचाहट अनुभव करती थी। मा० द रेनाल तो अपना हाथ जुलियों की मुट्ठी में होने के कारण और कुछ सोच ही न पा रही थी; यही बहुत था कि वह जीवित थी। उस ऊँचे विशाल नीबू के वृक्ष के बारे में यह किम्बदन्ती थी कि साहसी चार्ल्स ने उसे वहाँ लगाया था, उसके नीचे बीतने वाले ये घटे उनके लिए बड़े सुख के क्षण थे। वह हर्ष के अतिरेक में डूब नीबू के घने झुरमुटे में हवा की कराह को तथा निचली पत्तियों पर गिरती हुई इक्की-दुक्की मेह की बूंदों के शब्द को सुनती रहीं।

जुलियों ने एक बात पर ध्यान नहीं दिया जिससे उसे कुछ आश्वासन मिलता। हवा से उन लोगो के पैरों के पास एक फूलदान उलट गया था। मा० द रेनाल जब उसे उठाने के लिए अपनी सखी की सहायता करने उठी तो उन्हें अपना हाथ खींच लेना पड़ा। किन्तु बैठते ही उन्होंने अपना हाथ फिर इतनी आसानी से जुलियों को पकड़ा दिया मानो यह कोई पहले से निश्चित बात हो।

आधी रात बीते देर हो चुकी थी; आखिरकार उन लोगो को बगीचे से उठकर रात भर के लिए विदा लेनी पड़ी। मा० द रेनाल प्रेम के उस सुख में पूरी तरह डूब गई थी। उन्हें ऐसी बातों का इतना कम अनुभव था कि इसे लेकर उनके मन में कोई ग्लानि का भाव न उत्पन्न हुआ, बल्कि सुष के कारण उन्हें नीद न आई। किन्तु जुलिये बिल्कुल घोड़े बेचकर सोया। सारा दिन हृदय के भीतर भीरता और अपमान के बीच चलने वाले संघर्ष से वह पूरी तरह क्लान्त हो गया था।

सबेरे पाँच बजे उसकी आँख खुली। उस समय उसके मन में मा० द रेनाल का ध्यान तक न था। उन्हें इस बात का पता लगता तो कैसी तीव्र निराशा उन्हें होती। जुलिये के मन में केवल एक ही विचार था कि उसने अपना 'कर्तव्य', 'वीरतापूर्ण कर्तव्य' पूरा कर डाला है। इस विचार से उसका मन आनन्द से भरपूर था। अपने कमरे को भीतर से बन्द कर के और एक सम्पूर्णतः नई प्रसन्नता के साथ वह अपने प्रिय नायक की वीरता के विवरण पढ़ने में डूब गया।

दोपहर के भोजन की घण्टी बजी तो उस समय तक नैपोलियन की सेना के बुलेटिन पढ़ते-पढ़ते वह पिछली रात अपनी विजय की बात पूरी तरह भूल चुका था। नीचे ड्राइंग रूम की ओर जाते-जाते उसने बड़े हल-भाव से मन ही मन सोचा कि अब इन महिला से कह देना चाहिए कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।

किन्तु उन भावसंकुल आँखों की बजाय उसका सामना मा० द रेनाल की कठोर मुद्रा से हुआ जो केवल दो घण्टे पहले ही बेरियेर से लौटे थे। उन्होंने इस बात पर अपने असन्तोष को छिपाया नहीं कि सबेरे इतनी देर तक बच्चों की चिन्ता किये बिना ही जुलिये किसी और काम में व्यस्त था। यह महापुरुष जब क्रुद्ध होते और अपने क्रोध को प्रगट करना आवश्यक समझते तो उनका रूप बहुत ही वीभत्स हो जाता था।

पति का हर तीखा कड़वा शब्द मा० द रेनाल के हृदय में तीर-सा

बुभा । जहाँ तक जुलिये का प्रश्न है, वह तो भावातिरेक में इतना डूबा हुआ था, पिछले कुछेक घण्टों से अपनी आँखों के आगे होनेवाली बड़ी-बड़ी घटनाओं में इतना खोया हुआ था कि म० द रेनाल के कठोर शब्दों पर उसका ध्यान ही नहीं जा सका था । अन्त में उसने बड़े सक्षिप्त भाव से उत्तर दिया : “मेरी तबीयत ठीक नहीं थी ।”

उसके उत्तर के स्वर से तो वेरियेय के मेयर की अपेक्षा कहीं कम क्रुद्ध व्यक्ति भी भडक उठता । पल भर को उन्होंने महसूस किया कि उसे इसी क्षण जवाब दे दे । बस यही सोचकर उन्होंने सयम किया कि काम-काज के मामले में कभी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए ।

तुरन्त ही उनके मन में विचार आया कि इस मूर्ख नौजवान ने उनके यहाँ काम करके थोड़ी-सी ख्याति अर्जित कर ली है । निकालते ही कही वह वालनो ही उसे रखले अथवा वह शायद एलिजा से विवाह ही कर ले । जो भी हो, हर हालत में वह यही समझेगा कि कैसा बेवकूफ बनाया ।

इन सब समझदारी के विचारों के बावजूद म० द रेनाल की अप्रसन्नता उनकी गाली-गुफ्ता में तो प्रगट हुई ही जिससे धीरे-धीरे जुलिये की खीज बढ़ती गई । म० द रेनाल तो जैसे आँसुओं में घुली जा रही थी । भोजन खतम होते न होते उन्होंने जुलिये से घूमने चलने का प्रस्ताव किया । वह बड़े घनिष्ठ भाव से उसके हाथ का सहारा लिये हुए चलती रही, पर उनकी सारी बातों के उत्तर में जुलिये ने सिर्फ इतना ही कहा, “सब अमीर लोग ऐसे ही होते हैं ।”

म० द रेनाल भी उनके बहुत समीप ही चल रहे थे और उनकी उपस्थिति से जुलिये का क्रोध और भी भडक उठा था । एकाएक उसने देखा कि म० द रेनाल उसकी बाँह पर एक बहुत ही विशेष भाव से झुकी हुई हैं । उनके इस काम से वह एकाएक चौक पड़ा । उसने कुछ भटके के साथ उन्हें दूर धकेल दिया और अपनी बाँह छुड़ा ली ।

सौभाग्यवश म० द रेनाल ने उसकी यह नई धृष्टता नहीं देखी जिस

पर केवल मा० देविल का ही ध्यान गया था। मा० द रेनाल की तो आँखें आँसुओं से भर आई थी। म० द रेनाल इस समय उस छोटे किसान लडके को पत्थर मारकर खदेड़ने के काम में लगे हुए थे जो अनधिकार रूप से वहाँ घुस आया था और बगीचे के एक कोने को पार करके निकलने की कोशिश कर रहा था।

“म० जुलिये”, मा० देविल ने जल्दी से कहा, “भगवान के लिए कुछ तो अपने आप पर काबू रखिये। गुस्सा सब को आता है।”

जुलिये ने ऐसी भावहीन दृष्टि से उनकी ओर देखा जिसमें तीव्रतम घृणा प्रगट होती थी। उस दृष्टि से मा० देविल बड़ी चकित हुई, यदि वह उसका सही भाव भी समझ पाती तो शायद कहीं अधिक चकित होती। उन्हें उस दृष्टि में एक बड़े भयंकर प्रतिशोध की धु धली-सी आशा के चिह्न दिखाई पड़ते। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रोन्सप्येर जैसे व्यक्ति अपमान के ऐसे क्षणों द्वारा ही बनते हैं।

“तुम्हारा यह जुलिये तो बड़ा उद्दण्ड है। मुझे तो उससे डर लगता है।” मा० देविल ने अपनी सखी के कान में कहा।

सखी ने उत्तर दिया, “उसका नाराज होना भी ठीक है। उसके आने के बाद से बच्चों ने इतनी उन्नति की है कि अगर एक दिन सबेरे उसने न भी पढ़ाया तो इसमें क्या बुराई हुई? पुरुष बड़े कठोर होते हैं, यह तो तुम भी मानोगी।”

जीवन में पहली बार मा० द रेनाल के मन में अपने पति से कुछ बदला लेने की इच्छा हुई। जुलिये के हृदय में अमीरों के प्रति उमड़ती हुई घृणा बड़ी तीव्रता से फूटने वाली थी कि सौभाग्यवश उसी समय म० द रेनाल माली को बुलाकर उस रास्ते को झाड़ियों द्वारा बन्द करने का आदेश देने में लग गए और ठहर गए। बाकी भ्रमण में अपने प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार के किसी प्रदर्शन के उत्तर में जुलिये एक भी शब्द न बोला। म० द रेनाल के जाते ही दोनों सखियों ने कहा कि वे थक गई हैं और दोनों ने उसकी एक-एक बाँह का सहारा ले लिया।

जुलिये के चेहरे की उद्धत विवर्णता और दुर्विनीत रक्षता उसके दोनो ओर चलने वाली महिलाओ के भाव की तुलना मे बड़ी विचित्र लग रही थी । उन दोनो के गाल क्लेश से लाल हो उठे थे और उनके मुख पर एक प्रकार की व्यग्रता के भाव थे । जुलिये के हृदय मे इस समय इन दोनो स्त्रियो और उनके सब सुकुमार भावो के लिए केवल घृणा ही उमड रही थी ।

क्या ! अपनी पढाई खतम करने के लिए मेरे पास पाँच सौ फ्रैंक भी नही है ! आह ! नही तो सब मिजाज ठीक कर देता । वह मन ही मन सोच रहा था ।

ऐसे कठोर विचारो मे डूबे रहने के कारण दोनो सखियों के स्नेह-पूर्ण शब्दो का जो थोडा-बहुत अर्थ उसकी समझ मे आया, उससे वह और भी कुपित ही हुआ । उसे लगा कि वे अर्थशून्य, मूर्खतापूर्ण, असमर्थताजन्य—सक्षेप मे स्त्रियोचित ही हैं ।

मा० द रेनाल बातचीत जारी रखने के उद्देश्य से ही कुछ न कुछ कहे जा रही थी । उन्होने बताया कि उनके पति बेरियेर से अभी एक किसान से मकई का भूसा खरीदने के लिए लौटे हैं । इस इलाके में मकई के भूसे को गदो मे भरा जाता है ।

मा० द रेनाल ने आगे कहा . “अब वह हमारे साथ घूमने के लिए न आ सकेगे । उन्हें माली और नौकरो को साथ लेकर घर के सब गद्दे भरवाने हैं । आज सवेरे उन्होने पहली मंजिल के सब गद्दे भरवा दिये । अब इस समय दूसरी मंजिल पर काम हो रहा है ।”

जुलिये के चेहरे का रंग उड़ गया । उसने अजीब दृष्टि से मा० द रेनाल की ओर देखा और कुछ चाल बढाकर उन्हे एक तरफ खींच लिया । मा० देर्विल ने भी उन्हे रोका नही ।

“मेरी जान बचाइये”, उसने मा० द रेनाल से कहा । “आप ही इस समय मेरी सहायता कर सकती है क्योंकि आप तो जानती ही है कि मा० द रेनाल के निजी नौकर मेरे कट्टर दुश्मन हैं । मैंडम, आपसे मैं कुछ

न छिपाऊँगा । मैंने एक तस्वीर अपने पलंग के गद्दे में छिपा रखी है ।”

ये शब्द सुनते ही मा० द रेनाल का चेहरा उतर गया ।

“मैडम, इस समय केवल आप ही मेरे सोने के कमरे में जा सकती हैं । खिडकी के पाम वाले कोने पर गद्दे में हाथ डालियेगा, मगर सुनिये, कोई देखने न पाये । वहाँ आपको छोटा-सा चमकदार काला डिब्बा मिलेगा ।”

“उसमें तस्वीर है ?” मा० द रेनाल ने पूछा । भावावेग से वह सीधी खडी नहीं हो पा रही थी ।

‘मैडम, मैं आपसे एक और दया चाहता हूँ । मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप भी इस तस्वीर को न देखें । उसमें मेरा एक रहस्य छिपा है ।”

“रहस्य ।” मा० द रेनाल ने अत्यन्त क्षीण स्वर में दोहराया ।

उनका लालन-पालन धन का घमण्ड करने वाले और केवल रुपये-पैसे की बात सोचने वाले लोगो के बीच ही होने पर भी प्रेम ने उनके हृदय में उदारता के लिए स्थान बना दिया था । निर्मम रूप से आहत होने पर भी विशुद्ध आत्मोत्सर्ग के स्वर में उन्होंने इस काम को पूरा करने के लिए सारे आवश्यक प्रश्न जुलियें से पूछ लिए ।

“छोटा-सा काला और बहुत चमकदार डिब्बा ही है न ?” जाते-जाते उन्होंने पूछा ।

“हाँ मैडम”, जुलिये ने ऐसे रुखे स्वर में उत्तर दिया जो विपत्ति के समय पुरुषों में स्वाभाविक हो जाता है ।

भवन की दूसरी मञ्जिल की ओर जाते-जाते मा० द रेनाल का मुख इतना पीला हो गया था मानो कोई अभियुक्त फाँसी के तख्ते की ओर जा रहा हो । उनकी यातना बढ़ाने के लिए उसी समय उन्हें यह भी लगा जैसे वह अचेत होने वाली है, किन्तु जुलियें की सहायता के विचार ने उन्हें शक्ति दी । उन्होंने मन ही मन कहा कि वह बक्स किसी न किसी तरह पाना ही होगा और जल्दी-जल्दी अपने कदम बढ़ाये ।

ऊपर पहुँच कर उन्होंने सुना कि उनके पति अपने निजी नौकर से

ठीक जुलिये के कमरे में ही बातें कर रहे हैं। सौभाग्यवश वह तभी बच्चों के कमरे में चले गये। मा० द रेनाल ने इतनी जोर से अपना हाथ गद्दे के नीचे डाला कि उनकी उंगली छिल गई। स्वभाव से ही वह इस प्रकार की पीड़ा से बहुत विचलित हो जाती थी। किन्तु इस समय उन्हें इसका कोई ध्यान न आया क्योंकि ठीक उसी क्षण उनके हाथ में डिब्बे की चिकनी चमकीली सतह का स्पर्श हुआ। वह उसे उठाकर झट से बाहर निकल आयी।

अभी तक उनके मन में एकमात्र भाव यह था कि कहीं उनके पति न देख ले। किन्तु इस भय से मुक्त होते ही डिब्बे को अपने हाथ में देखकर उनकी ऐसी अवस्था हो आई मानो अभी-अभी मूर्च्छित हो जायेगी। वह सोचने लगी, तो जुलिये किसी और से प्रेम करता है और मैं यहाँ उस स्त्री का चित्र हाथ में लिए बैठी हूँ।

कमरे के बाहर की ड्योढ़ी में एक कुर्सी पर बैठी हुई मा० द रेनाल ईर्ष्या की सारी यातनाएँ अनुभव कर रही थी। किन्तु इस समय भी अनुभव के नितान्त अभाव ने उनकी सहायता की, विस्मय ने उनके दुःख को हल्का कर दिया। जुलिये भीतर आया और धन्यवाद का एक शब्द भी कहे बिना, बल्कि कुछ भी बोले बिना ही, उसने झपट कर डिब्बा छीन लिया और अपने कमरे में चला गया, जहाँ उसने डिब्बे को जला डाला। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह बिल्कुल त्रस्त था। वास्तव में वह उस विपत्ति को भी, जो अभी-अभी उसके सिर से टली थी, अनावश्यक रूप से बढ़ा-चढ़ाकर देख रहा था।

उसने अपने सिर को झटका देते हुए मन ही मन सोचा यदि नैपोलियन का चित्र ऐसे आदमी के कमरे में छिपा हुआ मिल जाता जिसने उस शैतान से इतनी घृणा करने का ऐलान कर रखा हो, और वह भी मा० द रेनाल को जो नैपोलियन के इतने घोर कट्टर विरोधी हैं और मुझ से इतने नाराज हैं, तो क्या होता? और मूर्खता की चरम सीमा यह थी कि चित्र के पीछे सफेद पट्टे पर मैंने अपने हाथ से कुछ पंक्तियाँ भी

लिख रक्खी थी। बल्कि इन समस्त उद्गारों के नीचे तारीखें भी पड़ी थी जिनमें से कुछेक तो दो-एक दिन पहले की ही थी। क्षण भर में मेरी सारी प्रतिष्ठा धूल में मिल जाती। डिब्बे को जलता देखकर वह यही सोचता बैठा रहा। मेरी प्रतिष्ठा ही तो मेरी सारी पूँजी है, मेरा सारा जीवन है—यद्यपि हे भगवान, कैसा जीवन है !

एक घण्टे बाद थकान और आत्म-ग्लानि ने उसके हृदय को बहुत ही कोमल कर दिया। जब उसकी मा० द रेनाल से भेट हुई तो उसने उनका हाथ लेकर उसे ऐसी निश्छलता से चूमा जैसा उसने पहले कभी न किया था। पल भर को उनका मुख हर्ष से लाल हो गया किन्तु उसी क्षण उन्होंने अपने ईर्ष्याजन्य क्रोध में जुलिये को अपने से दूर हटा दिया। जुलिये अपने सद्यःआहत अभिमान के कारण हतबुद्धि सा रह गया। म० द रेनाल में उसे केवल एक धनी महिला ही दिखायी पड़ी।

उसने तिरस्कार के भाव से उनका हाथ छोड़ दिया और दूसरी ओर चला गया। वह सोच में डूबा हुआ बाग में जाकर टहलता रहा और शीघ्र ही एक तीखी कड़वी मुस्कान उसके होठों पर छा गई। मैं यहाँ ऐसे मजे से टहल रहा हूँ मानो अपने समय का मैं आप मालिक हूँ। बच्चों की कोई चिन्ता नहीं करता। म० द रेनाल को अब अपनी अपमानजनक बातों के लिए यथेष्ट कारण मिल जायगा।

इन विचारों से आक्रान्त होकर वह जल्दी से बच्चों के कमरे की तरफ चल दिया। सबसे छोटे बालक से उसे बहुत स्नेह था। उसे थोड़ा-सा दुलार करके उसकी त्रासदायक पीड़ा कुछ हल्की हुई। जुलिये सोचने लगा कि ये नन्हे बालक अभी मुझसे घृणा नहीं करते। किन्तु शीघ्र ही वह अपनी पीड़ा इस भाँति कम हो जाने के लिए अपनी भर्त्सना करने लगा मानो यह भी कोई बड़ी भारी कमजोरी हो। उसने मन ही मन कहा कि ये बच्चे मेरे साथ वैसा ही स्नेह का व्यवहार करते हैं जैसे वह कल ही आये हुए छोटे पिल्ले के साथ करते होंगे।

उच्च हृदय और क्षुद्र सम्पत्ति

म० द रेनाल एक के बाद एक कमरा देखते हुए अन्त में फिर बच्चों के कमरे में आये। उनके साथ और नौकर भी थे जो गद्दे उठाकर ले जा रहे थे। उनके अचानक प्रवेश से जुलिये का रहा-सहा समय भी जाता रहा। विवरण और सदा से अधिक क्षुब्ध भाव से वह झपट कर उनके सामने पहुँचा। म० द रेनाल एकदम निश्चल खड़े थे और अपने नौकरो की ओर देख रहे थे।

“महोदय”, जुलिये ने कहा, “क्या आप सोचते हैं कि मेरे सिवाय किसी अन्य शिक्षक के हाथों आपके बच्चे इतनी उन्नति करते? यदि नहीं” म० द रेनाल को उत्तर का अवसर दिये बिना ही वह आगे कहता गया, “तो फिर आपको यह शिकायत कैसे हुई कि मैं उनकी उपेक्षा करता हूँ?”

म० द रेनाल पल भर के लिए भयभीत हो गए। फिर अपने आपको सम्हालते हुए इस किसान युवक के विचित्र स्वर से उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि अवश्य ही कोई अधिक लाभदायक प्रस्ताव मिलने के कारण यह हमें छोड़कर जाना चाहता है।

जुलिये का क्रोध बोलने के साथ-साथ बढ़ता जा रहा था। उसने कहा, “मैं आपकी सहायता के बिना भी जीवित रह सकता हूँ, महोदय!”

“आपको इतना परेशान देखकर मुझे बड़ा दुःख है”, म० द रेनाल ने कुछ-कुछ हकलाते हुए कहा। नौकर कोई दस फीट की दूरी पर

बिस्तर ठीक करने में लगे हुए थे ।

“मैं यह माँग नहीं कर रहा हूँ, महोदय”, जुलिये ने क्रोध से आपा खोते हुए कहा । “ज़रा अपनी कही हुई उन लज्जाजनक बातों को याद कीजिए, और वह भी महिलाओं के सामने !”

जुलिये की माँग म० द रेनाल की स्पष्ट समझ में आ गयी और उनका मन दो परस्पर विरोधी विचारों के संघर्ष में खिंचने लगा । जुलिये ने क्रोध से लगभग विक्षिप्त होकर कह दिया था “मैं जानता हूँ, महोदय, कि आपका घर छोड़ने के बाद मुझे कहाँ जाना होगा ।”

यह सुनते ही जुलिये के म० वालनो के घर प्रतिष्ठित होने का चित्र म० द रेनाल की आँखों के आगे नाच गया । उन्होंने एक लम्बी साँस लेते हुए कुछ ऐसी मुद्रा से, मानो किसी डाक्टर को अत्यन्त कष्टदायक चीर-फाड़ के लिए बुलाया जा रहा हो, कहा : “अच्छी बात है, तो आप जो चाहते हैं वही मिलेगा । परसों पहली तारीख है । उस दिन से आपका वेतन पचास फ्रैंक प्रति मास हो जायगा ।”

जुलिये एकदम अवाक् स्तम्भित रह गया । उसे बड़े जोर से हँसने की इच्छा हुई । उसका सारा क्रोध हवा में उड़ चुका था । वह सोचने लगा कि अभी तक मैं इस दुष्ट से यथोचित घृणा नहीं कर पाया हूँ । निस्सन्देह एक अच्छे मन के लिए इससे बड़ी क्षमा-याचना और कोई नहीं हो सकती ।

बच्चे मुँह फाड़े इस दृश्य को देख रहे थे । वे तुरन्त दौड़कर बगीचे में अपनी माँ से कहने जा पहुँचे कि म० जुलिये बहुत नाराज़ है, पर अब उनको पचास फ्रैंक वेतन मिलने वाला है । अभ्यासवश जुलिये भी उनके पीछे-पीछे चला गया । जाते समय उसने म० द रेनाल पर, जो बहुत ही दुःखी भाव से वहाँ खड़े थे, एक नज़र भी नहीं डाली ।

मेयर सोच रहे थे कि म० वालनो के कारण मुझे १६० फ्रैंक की चपत पड़ गई । सचमुच अब उनसे अनाथाश्रम के ठेके के सम्बन्ध में दो ठूक बात कर लेना ज़रूरी हो गया है । पल भर बाद जुलिये फिर

मेयर के सामने मौजूद था। वह बोला, “मुझे म० शेला से एक धार्मिक विषय में परामर्श लेना है। मैं आपको यह सूचित करने आया हूँ कि मैं कुछेक घण्टे के लिए अनुपस्थित रहूँगा।”

“अरे भाई जुलिये”, म० द रेनाल ने बनावटी हँसी हँसते हुए कहा “चाहो तो दिन भर की या एक दिन की और भी, छुट्टी ले लो। वेरियेर जाने के लिए माली का घोड़ा लेते जाना।”

म० द रेनाल मन ही मन सोचने लगे कि अब वालनो को जवाब देने जा रहा है। यह ठीक है कि अभी कोई वचन नहीं दिया है, पर नौजवान आदमी का गुस्सा अपने आप उत्तर जाय यही ठीक है।

जुलिये जल्दी ही चल पड़ा और वेर्जि से वेरियेर के रास्ते में पड़ने वाले घने जंगल की ओर बढ़ गया। वह म० शेला के घर पर बहुत जल्दी नहीं पहुँचना चाहता था। इस बार कोई झूठा ढोंग भरा आडम्बर रचने की इच्छा भी उसकी नहीं थी। इसके विपरीत वह अपने हृदय को स्पष्ट रूप से देखने और मन को उद्वेलित करने वाले अपने सारे भावों को एक बार समझ लेने की आवश्यकता अनुभव कर रहा था।

जैसे ही जंगल में पहुँचकर उसने अपने आपको दूसरे लोगों की नजरों से दूर तथा अकेला अनुभव किया, वह मन ही मन कह उठा कि मैंने एक रण में विजय प्राप्त की है। सचमुच रण में विजय पाई है, यह विचार आते ही सारी परिस्थिति उसे कहीं अधिक सुहावनी लगने लगी और उसके मन की शान्ति बहुत कुछ लौट आई। वह सोचने लगा तो अब मेरा बेटन पचास फ्रैंक हो गया है। म० द रेनाल सचमुच ही बहुत डरे होंगे, पर किस कारण ?

जिस सौभाग्यवान और प्रभावशाली व्यक्ति के विरुद्ध एक घण्टे पहले उसका हृदय क्रोध से उबल रहा था, उसे भयभीत करने वाले कारणों को सोचते-सोचते उसका मन पूरी तरह शान्त हो गया। पल भर के लिए उसका ध्यान अपने चारों ओर के जंगल की मनोरमता

की ओर लौट आया । बहुत दिनों पहले बड़े-बड़े नगे पत्थर पहाड़ से लुढ़क कर जंगल के बीच आ पड़े थे । चट्टानों जैसे ही ऊँचे लम्बे बीच-वृक्ष अपनी छाया से उस स्थान को अत्यन्त अपूर्व अम्लानता प्रदान कर रहे थे जहाँ केवल तीन फीट दूर पर ही धूप की तेजी के कारण ठहरना असम्भव हो जाता ।

जुलिये पल भर इन बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच साँस लेने के लिए रुका और फिर आगे बढ़ने लगा । शीघ्र ही एक पतली घु घली पगडंडी पर चलकर वह एक बड़ी भारी चट्टान के ऊपर जा पहुँचा जहाँ किसी दूसरे व्यक्ति के आने की कोई सम्भावना न थी । इस भौतिक एकान्त की परिस्थिति से उसके मुख पर एक मुस्कान आ गई । ऐसी ही परिस्थिति वह अपने नैतिक क्षेत्र में प्राप्त करने को व्यग्र था । इन ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की निर्मल हवा ने उसके हृदय को एक प्रकार की शांति से, बल्कि आनन्द से भर दिया । बेरियेर का मेयर उसकी दृष्टि में अब भी ससार के सभी धनी और पदोन्मत्त व्यक्तियों का प्रतिनिधि था । किन्तु जुलिये को लगा कि हाल ही में जिम घृणा के भाव ने उसे इस प्रकार झकझोर दिया था, उसकी अभिव्यक्ति की सारी तीव्रता के बावजूद उसमें कोई व्यक्तिगत बात नहीं थी । यदि म० द रेनाल से उसका मिलन बन्द हो जाय तो सप्ताह भर में ही वह उन्हें, उनके विशाल भवन को, उनके गढ़ों, उनके बच्चों और उनकी सारी गृहस्थी को एकदम भूल जायगा । वह सोचने लगा कि न जाने कैसे मैं उन्हें इतना भारी त्याग करने को बाध्य कर सका । क्या साल भर में पचास क्राउन से भी अधिक ! और उसके पल भर पहले ही मैं उस भयानक सकट से निकला था । एक ही दिन में दो-दो बार विजय ! दूसरी विजय में योग्यता का प्रश्न नहीं—पर यह जानना जरूरी है कि यह हुआ क्यों और कैसे । शायद कल का समय ऐसी नीरस शोध के लिए पर्याप्त होगा ।

उस बड़ी भारी चट्टान के ऊपर खड़े होकर जुलिये ने अगस्त के सूरज की किरणों से प्रज्वलित आकाश को देखा । चट्टान के नीचे

वनस्थली में पक्षी चहचहा रहे थे; उनके थमते ही चारों ओर गहन
 स्तब्धता छा गई। उसके चरणों के तले मीलों तक घरती फैली थी।
 बीच-बीच में उसकी दृष्टि एक बाज पर पड़ जाती जो उसके सिर से
 ऊपर ऊँची चट्टानों से उड़कर चुपचाप बड़े-बड़े चक्कर काट रहा था।
 जुलिये की दृष्टि यन्त्रवत् उस शिकारी पक्षी का अनुसरण कर रही थी।
 उसकी सशक्त किन्तु अक्षुब्ध गतिविधि उसे बड़ी अद्भुत जान पड़ी;
 उस शान्ति से, उस परम एकान्त से उसे बड़ी ईर्ष्या हुई।

नैपोलियन की नियति ऐसी ही थी—क्या एक दिन उसकी भी ऐसी
 ही होगी ?

एक शाम

किन्तु जुलिये को बेरियेर में शकल दिखाना तो आवश्यक ही था ।
क्यूरे के घर से निकलते समय सयोगवश उसकी भेट मा० वालनो से हो
गई जिन्हें उसने शीघ्रतापूर्वक अपनी वेतन वृद्धि की बात सुना दी ।

वेर्जि लौटने पर जुलिये शाम को अन्धेरा होने तक बगीचे में नहीं
गया । दिन भर जिन प्रबल भावावेगों के थपेड़े उसने सहें थे, उनसे उसका
मन पूरी तरह क्लान्त था । महिलाओं को याद करके वह सोचने लगा
कि उनसे मैं क्या कहूँगा । उसके लिए यह बात समझना कठिन था कि
उसकी वर्तमान मानसिक स्थिति उन छोटी-मोटी बातों को ग्रहण करने
के लिए सर्वथा अनुकूल है जिनमें साधारणतः स्त्रियों की दिलचस्पी हुआ
करती है । प्रायः जुलिये की बातें मा० देविल और उनकी सखी तक को
दुर्बोध जान पड़ती थी तथा इसी प्रकार वह भी उनकी बातें आधी-आधी
ही समझ पाता था । यह प्रभाव उस तीव्रता का, बल्कि उन प्रबल
भावावेगों की गरिमा का था जो इस महत्वाकांक्षी नवयुवक के मन को
निरन्तर झकझोरती रहती थी । ऐसे असाधारण व्यक्तित्व के लिए हर
रोज ही मौसम तूफानी रहता था ।

उस दिन शाम को बगीचे में आने पर जुलिये उन दोनों सुन्दर
युवतियों के विचारों में रुचि लेने के लिए सर्वथा तत्पर था । वे भी बड़ी
अधीरता से उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं । वह अपने सदा के स्थान
पर मा० दे रेनाल की बगल में बैठ गया । जल्दी ही अंधेरा घिर आया

और उसने उस गोरे हाथ को पकड़ना चाहा जो बहुत देर से पास की एक कुर्सी की पीठ पर रक्खा था। पर जैसे ही उसने हाथ छुआ उसे लगा कि कुछ सकोच के बाद उसे थोड़े-से क्षोभ के भाव से खींच लिया गया है। जुलिये इसके लिए तैयार था कि बात को वहीं छोड़ दे और हँसी-खुशी बातचीत करता रहे, पर अभी सने म० द रेनाल के आने की आहट सुनी।

उस दिन सबेरे की अपमानजनक बातें अभी तक जुलिये के कानों में गूँज रही थी। वह सोचने लगा कि धन-दौलत से ऊपर तक लदे हुए इस व्यक्ति के प्रति अपने अनादर के भाव को प्रगट करने का इससे अच्छा उपाय और क्या होगा कि मैं उसकी पत्नी का हाथ स्वयं उसकी ही उपस्थिति में पकड़ लूँ। हाँ, यही करूँगा—मैं, जिसके साथ ऐसा तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया गया है।

उस क्षण से उसकी सारी शान्ति, जो वैसे ही उसके स्वभाव के विशेष अनुकूल न थी, पूरी तरह जाती रही। किसी प्रकार मा० द रेनाल का हाथ पकड़ने की व्यग्रतापूर्ण इच्छा के अतिरिक्त और कुछ भी सोचना उसके लिए असम्भव हो गया।

म० द रेनाल बड़े क्रुद्ध भाव से राजनीति की बातें कर रहे थे। वेरियेर के दो-तीन अन्य उद्योगपति, निश्चित रूप से उनसे अधिक धनी हुए जा रहे थे और चुनाव में उनका म० द रेनाल के विरुद्ध खड़े होने का इरादा था। मा० देविल उनकी बातचीत सुन रही थी। जुलिये ने इस बातचीत से चिढ़कर अपनी कुर्सी मा० द रेनाल के और समीप खिसका ली। अँधेरे में उसकी गतिविधि किसी को दिखाई भी न पड़ी। फिर उसने उस खुली हुई सुन्दर बाह के बहुत समीप अपना हाथ रख दिया। वह बहुत उत्तेजित हो उठा था। और उसका मन उसके बस में नहीं था। उसने अपने गाल उस सुडौल बाँह के एकदम समीप रख दिए और उसे अपने होठों से छूने का भी प्रयत्न करने लगा।

मा० द रेनाल काँप उठी। उनके पति केवल चार फीट की दूरी पर

बैठे थे । उन्होंने जल्दी से अपना हाथ जुलिये को दे दिया और साथ ही उसे अपने पास से थोड़ी दूर भी खिसका दिया । जिस समय म० द रेनाल अचानक ही अमीर बन जाने वाले छोटे लोगो की, तथा विशेष-कर जैकोबिन पथियो की तीव्र निन्दा कर रहे थे, उस समय जुलिये अपने हाथ में पड़े हाथ को उत्कट चुम्बनो से भरे दे रहा था, कम से कम मा० द रेनाल को ऐसा ही लगा था । यद्यपि उस बेचारी महिला को उसी दिन इस बात का प्रमाण मिला था कि जिस व्यक्ति की वह इस तरह से अनजान में ही पूजा करने लगी है, वह किसी और से प्रेम करता है । जुलिये की अनुपस्थिति में वह बहुत ही दुःखी थी और इसने उन्हें बहुत कुछ सोचने को बाध्य कर दिया था ।

क्यों । वह मन ही मन सोचने लगी । क्या मैं, उससे प्रेम करने लगी हूँ ? उसके लिए प्रेम का अनुभव कर सकती हूँ ? क्या मैं विवाहित होकर भी प्रेम में पड़ सकती हूँ ? किन्तु तो भी मैंने अपने पति के लिए कभी ऐसा अज्ञात अपरिचित आवेग अनुभव नहीं किया जैसा आजकल करती हूँ, जिसके कारण जुलिये को पल भर के लिए भी भूलना असम्भव हो उठा है । कुल मिलाकर वह बालक ही तो है जो मुझे आदर की दृष्टि से देखता है । अवश्य ही यह मेरी क्षणिक मूर्खता मात्र है । मेरे पति के लिए इसका क्या महत्व कि इस नौजवान के प्रति मेरे मन में कैसे भाव हैं ? म० द रेनाल तो जुलिये के साथ मेरी जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाने वाली बातें सुनकर उकता ही जायेंगे । वह स्वयं तो केवल अपने व्यवसाय के बारे में ही सोचते रहते हैं । मैं तो उनकी कोई चीज उनसे छीन कर जुलिये को नहीं दे रही हूँ ।

आज तक सर्वथा अपरिचित भावावेग से विचलित होने वाले भोले मन की निर्मलता को कलकित करने के लिए कोई पाखंड इस विचार-धारा में न था । यदि वह अपने आपको धोखा दे भी रही थी तो पूरी तरह अनजान में ही । किन्तु साथ ही उनके भीतर कोई शील वृत्ति जाग उठी थी । वह ऐसी ही मानसिक उथल-पुथल में डूबी हुई थी कि

जुलिये बगीचे में आया। उन्होंने उसे बात करते और उसी समय अपने पास बैठ जाते देखा। उनका हृदय मानो उस अभूतपूर्व सुख से पूरी तरह अभिभूत हो उठा जिसने पिछले पन्द्रह दिन से उन्हें मन्त्रमुग्ध की अपेक्षा चकित अधिक कर रखा था। हर चीज उन्हें विस्मित करती। तो भी एक-दो पल बाद ही उन्होंने अपने आपसे कहा : क्या जुलिये की उपस्थिति मात्र ही उसके तमाम दोषों को भुला देने के लिए काफी है ? एकाएक उन्हें भय महसूस हुआ और उसी क्षण उन्होंने अपना हाथ खींच लिया।

ऐसे लालसा भरे चम्बन उन्होंने जीवन में पहले कभी नहीं पाये थे। इस कारण वह यह भी भूल गई कि वह शायद किसी अन्य स्त्री से प्रेम करता है। कुछ ही समय में उसके किसी अपराध की बात उनके मन में बाकी न रही। सन्देहजन्य पीडा से छुटकारा पाकर और एक प्रकार के कल्पनातीत सुख के अनुभव से उनके हृदय में प्रेम के प्रबल भावातिरेक की, अनियन्त्रित असगत आनन्द की धारा-सी उमड़ आई।

वह सध्या वेरियर के मेयर के अतिरिक्त सब के लिए बड़ी आनन्ददायक रही। केवल वही अपने लालची उद्योगपतियों की बात को न भूल सके। जुलिये का ध्यान अब अपनी अज्ञात महत्वाकांक्षाओं की खोज में अथवा अत्यन्त ही दुःसाध्य योजनाओं को पूरा करने में न रहा। अपने जीवन में पहली बार उसने सुन्दरता के आकर्षण का अनुभव किया। वह ऐसे अस्पष्ट स्वप्नों में खो गया जो उसके स्वभाव के लिए अपरिचित ही थे। अपनी अपूर्व सुन्दरता से आनन्द देने वाले हाथ को हलके-हलके दबाते हुए वह अर्द्धचेतन-सी अवस्था में रात की धीमी बयार के कारण खड़खड़ाती हुई नीबू की पत्तियों का स्वर और दू नदी के किनारे बने हुए कारखानों के कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनता रहा।

किन्तु उसके मन का यह भाव आनन्द का था, अनुराग का नहीं। अपने कमरे में पहुँचकर उसके विचार केवल एक प्रकार के आनन्द पर केन्द्रित हो गये और वह अपनी प्रिय पुस्तक उठाकर पढ़ने लगा। बीस

बरस की आयु मे पहुँचकर आदमी के मन मे बाहरी दुनिया और उसको प्रभावित करने के विचार अन्य प्रत्येक वस्तु से अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं ।

किन्तु शीघ्र ही उसने किताब उठाकर रख दी । नैपोलियन के विजय-अभियान के बारे मे सोचते-सोचते उसे अपनी सफलताओ मे भी कुछेक नई बातें दीखने लगी थी । उसने मन ही मन कहा कि हाँ मैंने भी तो एक लड़ाई जीती है । मुझे अपनी इस सफलता का लाभ उठाना चाहिए और पीछे हटते हुए इस घमण्डी आदमी के दर्प को चूर कर देना चाहिए । यही है सच्ची नैपोलियन-पथी रण-नीति । इस समय तीन दिन की छुट्टी लेकर फूँके से मिलने जाना ठीक होगा । यदि इसने छुट्टी देने से इकार किया तो जरा धमकाते ही फिर मान जायगा ।

मा० द रेनाल को पल भर भी नींद नहीं आई । उनका मन बार-बार उस अभूतपूर्व सुख की ओर चला जाता था जो उन्हें अपने हाथ के ऊपर जुलिये के जलते हुए चुम्बनो से प्राप्त हुआ था । उन्हें लगता था कि उस क्षण के पहले वह कभी जीवित ही नहीं रही थी ।

एकाएक वह भयानक शब्द—व्यभिचार—उनके मन मे कौब गया । प्रेम के शारीरिक पक्ष के विषय मे निम्नतम कोटि के दुराचार से सम्बन्धित घृणिततम विचार उनकी कल्पना मे सजीव हो उठे जिनके कारण उनके मन में बनी हुई जुलिये की दिव्य, निर्मल और सुकुमार छवि तथा उसे उससे प्रेम करने के परमानन्द के भाव कलकित होते हुए जान पड़े । अचानक ही भविष्य के रंग बड़े भयानक लगने लगे । अपना एक अत्यन्त ही घृणास्पद चित्र उनकी आँखों के आगे खिंच गया । यह बहुत ही त्रासदायक क्षण था । उनकी आत्मा सर्वथा अपरिचित प्रदेशों मे जा भटकी थी । पहले दिन शाम को उन्होंने ऐसे सुख का अनुभव किया था जो उनके लिए बिल्कुल नया था । अब वह अचानक ही एक मर्मन्तिक पीड़ा में डूब गई । उनको कल्पना भी न थी कि इतना निर्मम कष्ट भी सहा जाता है । उसके कारण उनकी अवस्था विक्षिप्त-सी हो गई ।

पल भर के लिए उनके मन में विचार आया कि जाकर अपने पति से अपने प्रेम की बात कह दे। कम से कम जुलिये का नाम तो वह अपने होठों पर ला सकेगी। सौभाग्यवश तभी उन्हें अपनी एक चाची की दी हुई शिक्षा याद आई। बहुत दिन पहले विवाह के पूर्व उन्होंने समझाया था कि पति तो स्वामी होता है। उसे अपनी सारी बात बताना कितना विपत्तिजनक कार्य है। यह सोचकर और कष्ट के सहन न कर सकने के कारण वह अपने हाथ मलने लगी।

अपनी परिस्थिति के परस्पर-विरोधी और कष्टदायक चित्रों के कारण उनका मन अनिश्चित भाव से इधर से उधर भटकने लगा। कभी उन्हें प्रेम खो बैठने का भय लगता तो कभी अपने पाप की भयानक कल्पना उन्हें पीड़ा देती। उन्हें लगता मानो अगले दिन सबेरे ही वेरियेर के चौराहे पर उन्हें अपने साथे पर पट्टा लगाकर खड़ा होना पड़ेगा जिससे शहर के सब लोग उनके व्यभिचार की कहानी अपनी आँखों पढ़ सकें।

मा० द रेनाल को जीवन का तनिक भी अनुभव न था। वह पूरी तरह जाग्रत होती तो दोनों बातों के बीच—भगवान की दृष्टि में अपराधी होने और खुले आम सार्वजनिक तिरस्कार के भयानक प्रदर्शन का कष्ट सहन करने के बीच—किसी अन्तर को न पहचान पाती।

जब कभी भी व्यभिचार के भयकर विचार तथा उनकी दृष्टि में उससे सम्बन्धित समस्त लाछनों से उन्हें थोड़ा-बहुत छुटकारा मिलता और वह पहले की भाँति ही निश्चल भाव से जुलिये के सम्पर्क के मधुर आनन्द की कल्पना करने लगती तो जुलिये के किसी अन्य स्त्री से प्रेम करने की कल्पना से वह भयभीत और कातर हो उठती। उन्हें अभी तक याद था कि उस स्त्री का चित्र नष्ट हो जाने अथवा उसके दूसरे के हाथों में पड़ने के कारण उसका अपमान होने की सम्भावना से जुलिये का चेहरा कैसा उतर गया था। उन्होंने पहली बार उसके साधारणतः शान्त और भव्य चेहरे पर भय की छाया देखी थी। उसने उनके प्रति

अथवा उनके बच्चों के प्रति कभी ऐसा भावावेग प्रदर्शित नहीं किया था। अन्य समस्त व्यथा के ऊपर इस व्यथा ने उनके लिए ऐसे प्रबलतम दुःख का रूप धारण कर लिया जो मानवात्मा के लिए लगभग असहनीय है। अनजाने ही मा० द रेनाल के मुख से एक चीख निकल गई जिससे उनकी नौकरानी भी चौक पड़ी। उन्होंने एकाएक अपने पलंग के पास कुछ रोशनी देखी और उसमें एलिजा को पहचान लिया।

“क्या तुम्ही हो जिसे वह प्यार करता है?” अपनी विक्षिप्त अवस्था में वह चीखकर बोली।

नौकरानी अपनी मालकिन की ऐसी अवस्था देखकर इतनी चकित थी कि सौभाग्यवश इस विचित्र प्रश्न की ओर उसका ध्यान नहीं गया। मा० द रेनाल को एकाएक अपनी असावधानी का ध्यान हुआ। वह बोली, “कुछ बुखार जैसा लग रहा है और सिर भी भारी है। तुम मेरे पास ही ठहरो।”

इस आत्म-नियन्त्रण की आवश्यकता ने उन्हें पूरी तरह जगा दिया जिससे उनका दुःख भी कुछ कम हुआ। अर्द्धनिद्रित अवस्था ने जिस विवेक को ढँक लिया था, वह फिर जाग उठा। अपनी नौकरानी की पैनी दृष्टि से बचने के लिए उन्होंने उसे अखबार पढ़कर सुनाने का आदेश दिया। वह एक लम्बा-सा लेख पढ़कर सुनाने लगी और एलिजा के एक-स्वर कण्ठ को सुनते-सुनते मा० द रेनाल ने इस बात का निश्चय कर डाला कि अगली बार जुलिये से भेंट होने पर वह उसके साथ एकदम विरक्तिपूर्ण व्यवहार करेगी।

एक यात्रा

अगले दिन सबेरे पाँच बजे, मा० द रेनाल के आने से पहले ही, जुलिये ने तीन दिन की छट्टी ले ली। पर तभी आशा के विपरीत उसे लगा कि वह उनसे मिलने को उत्सुक है। उसका मन उनके सुन्दर हाथ की स्मृतियों से भरा हुआ था। वह नीचे बाग में बहुत देर तक उनकी प्रतीक्षा करता रहा। जुलिये को यदि सचमुच उनसे प्रेम होता तो वह अवश्य देख लेता कि वह पहली मजिल के अधखुले किवाड़ों के पीछे दरवाज़े के काँचों से माथा लगाये खड़ी उसी की ओर ताक रही हैं। आखिरकार अपने सारे निश्चयों के बावजूद उन्होंने बाग में आना ही तय किया। इस समय उनके मुख पर सदा के पीलेपन के बजाय बड़ी भारी चमक थी। यह भी स्पष्ट था कि सीधे-सच्चे स्वभाव की वह महिला बड़े कष्ट में है। एक सभ्रम बल्कि क्रोध के भाव ने उनके मुख की स्वाभाविक गहरी शान्ति को नष्ट कर दिया था। उनके मुख के इसी भाव के कारण वह सदा जीवन की सभी क्षुद्र चिन्ताओं से बहुत दूर लगा करती थी। इसी भाव के कारण उनका वह अपूर्व मुख इतना लावण्यपूर्ण जान पड़ता था।

जुलिये उनसे मिलने के लिए उत्सुकतापूर्वक आगे बढ़ आया। जल्दी से ओढ़े हुए शाल के नीचे से दीखती हुई उनकी सुन्दर बाहेँ उसके मन को मुग्ध कर रही थी। पिछली रात के आन्तरिक संघर्ष के कारण उनका मुख और भी अधिक संवेदनशील हो उठा था और सबेरे की स्वच्छ

हवा से उसके वर्णों की अतृप्ति सुन्दरता और भी बढ़ गयी थी । इस सलज्ज, हृदयस्पर्शी और साथ ही निम्न वर्गों में अप्राप्य विचारों से परिपूर्ण सौंदर्य से जुलिये के आगे मानो उनके अन्तर की सर्वथा नयी ही भाँकी खुल गई । उसकी उत्सुक चकित आँखें पूरी तरह उस लावण्य से अभिभूत हो उठी । उसे इस बात का तनिक भी ध्यान न रहा कि उसका स्वागत मैत्रीपूर्ण होगा या नहीं । इसलिए उनके मुख के तीव्र विरक्ति के भाव से जुलिये को और भी अधिक विस्मय हुआ । उसे यह भी जान पड़ा मानो उसे अपनी मर्यादा के भीतर रहने की चेतावनी दी जा रही हो ।

आनन्दभरी मुस्कान उसके होठों पर ही विलीन हो गई । वह समाज में, विशेष कर एक धनी और सभ्रान्त महिला की दृष्टि में, अपनी स्थिति की बात सोचने लगा । पल भर में उसके मुख पर एक उद्धत तिरस्कार और अपने प्रति क्रोध के अतिरिक्त और कोई भाव न बचा । वह इस बात से मन ही मन क्षुब्ध हो उठा कि ऐसे अपमानजनक स्वागत के लिए ही उसने अपने जाने में एक घन्टे से अधिक का विलम्ब किया था ।

वह मन ही मन कहने लगा कि केवल मूर्ख व्यक्ति ही दूसरे लोगों से क्रुद्ध होता है । पत्थर अपने भार के कारण ही नीचे गिरता है । क्या मैं सदा बच्चा ही बना रहूँगा ? मुझे कब यह समझ आयेगी कि ऐसे लोगों को अपनी आत्मा का उतना ही अंश बेचना चाहिए जो उनके धन के उपयुक्त हो ।

यदि मैं उनके और स्वयं अपने भी सम्मान का इच्छुक हूँ तो मुझे दिखा देना पड़ेगा कि उनके धन के बदले में अपनी गरीबी का सौदा करने के बावजूद मेरी आत्मा उनके दर्प की पहुँच से हज़ारों मील आगे है, इतने उच्च स्तर पर है जहाँ उनकी क्षुद्र कृपा अथवा तिरस्कार का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ सकता ।

तरुण शिक्षक के मन में जिस समय ये सब भाव एक साथ उमड़े

आ रहे थे उस समय उनके चंचल मुख पर धीरे-धीरे एक प्रबल और आहत अपमान का भाव जमता जा रहा था। मा० द रेनाल यह देख कर बहुत ही व्याकुल हो उठी। अभिवादन के समय की उदासीनता के बजाय अब उनके मुख पर अनुराग छलक आया जो जुलिये के मुख के भाव में आकस्मिक परिवर्तन से और भी प्रबल हो उठा। सबेरे भेट होने पर परस्पर स्वास्थ्य अथवा मौसम-सम्बन्धी अर्थहीन शब्दावली एक साथ ही दोनों के होठों पर सूख गई। किसी प्रकार के भावावेग से आक्रान्त न होने के कारण जुलिये सहज ही यह प्रकट कर सका कि उनके साथ उसका कोई मित्रता का नाता नहीं। अपनी छोटी-सी यात्रा के विषय में कुछ भी कहे बिना ही वह अभिवादन करके वहाँ से चला गया।

वह उसे जाते देखती रही। कल रात तक ही उसकी आँखों में कितना स्नेह था। उनमें इस समय इतनी तीव्र रोषपूर्ण घृणा को देख कर, उनका मन व्याकुल हो उठा था। तभी उनका सबसे बड़ा पुत्र बगीचे के दूसरी ओर से दौड़ता हुआ आया और उनके गले में बाहें डालकर बोला, “हमारी छुट्टी हो गई। म० जुलिये कही बाहर जा रहे हैं।”

ये शब्द सुनते ही जैसे उनके हृदय को मृत्यु की हिम-जडता ने जकड़ लिया। सदाचार की प्रेरणा के कारण वह व्यथित हो ही चुकी थी, अब दुर्बलता ने उन्हें और भी अधिक व्यथित कर दिया।

उनका मन परिस्थिति के इस नये रूप से पूरी तरह आक्रान्त हो उठा। पिछली भयानक रात में जितने विवेकपूर्ण निश्चय उन्होंने किये थे उन सबसे वह बहुत दूर बह आयी। इस समय प्रश्न हृदयहारी प्रेमी के प्रतिरोध का नहीं, बल्कि उसे सदा के लिए गवाँ बैठने का था।

दोपहर को भोजन के समय उन्हें आना ही पड़ा। उनकी यातना को बढ़ाने के लिए मादाम देविल और म० द रेनाल ने जुलिये के सिवाय अन्य कोई बात ही नहीं की। बेरियेर के मेयर को यह लगा था कि

जिस दृढ़ता के साथ उसने छूट्टी माँगी उसमें कुछ असाधारण बात अवश्य थी।

वह सोच रहे थे कि नि सन्देह इस किसान युवक को किसी न किसी से नया प्रस्ताव अवश्य मिला है। पर वह वालनो हो चाहे कोई और, उसे छ सौ फ्रैंक सालाना की चपत जरूर लगेगी। कल वेरियेर ने जुलिये ने सोचने के लिए तीन दिन का समय माँगा होगा और आज सबेरे मुझे पक्का उत्तर देने से बचने के लिए यह महाशय पहाड़ों की सैर को चल दिये है। ऐसे अदना से मजदूर का घमण्ड तो देखो ! उसकी ठसक भी सहन करनी पड़ती है। कैसा जमाना आ गया है !

मा० द रेनाल सोच रही थी कि मेरे पति तो यह समझते नहीं कि उन्होंने जुलिये को कितना गहरा आघात पहुँचाया है, बस सोचते हैं कि वह हमें छोड़कर जा रहा है। पर मैं क्या करूँ ? ओफ ! अब कुछ नहीं हो सकता !

मा० देविल के प्रश्नों से बचने और जी भरकर रो सनने के लिए वह सिर में भयकर दर्द का बहाना करके अपने कमरे में चली गई।

“औरतो को बस यही काम है।” मा० द रेनाल ने कहा। “इन पेचीदा मशीनों में कुछ न कुछ सदा ही बिगड़ा रहता है।” और वह अपनी बात पर आप ही हँसते रहे।

इधर मा० द रेनाल अपने कमरे में ऐसी तीव्र आसक्तिजन्य निर्मम यातना में बेचैन थी, जिसमें वह सयोगवश उलझ गई थी। उधर जुलिये सुन्दरतम पहाड़ी दृश्यों के बीच से आनन्दपूर्वक अपने रास्ते चला जा रहा था। उसे वेर्जि के उत्तर की बड़ी पहाड़ी श्रृंखला को पार करना था। उसका रास्ता विस्तृत फँले हुए बीच-वृक्षों के जंगलो से धीरे-धीरे ऊपर उठकर दू नदी की घाटी के उत्तर में फँले हुए ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के ढलान पर अनगिनती टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डियों से भरा था। शीघ्र ही उसे दक्षिण में नदी की घेरने वाली कम ऊँची पहाड़ियों के पार सुदूर बोजोले और बरगन्डी के उपजाऊ मैदान देखने लगे। यह महत्वाकांक्षी युवक इस

सौन्दर्य के प्रति अपनी सारी उदासीनता के बावजूद ऐसे विस्तृत और भव्य दृश्य को देखने के लिए बीच-बीच में रुक जाता था ।

आखिरकार वह बड़े पहाड़ की चोटी पर आ पहुँचा । वहीं से एक छोटे रास्ते से उसे उस घाटी में पहुँचना था जहाँ इमारती लकड़ी का व्यापारी उसका युवक मित्र फूँके रहता था । जुलिये को उससे अथवा किसी और से मिलने की कोई जल्दी न थी । विशाल पर्वत की चोटी पर पड़ी हुई नंगी शिलाओं के पीछे शिकारी पक्षी की भाँति छिपकर वह दूर से आने वाले किसी भी व्यक्ति को देख सकता था ।

एक सीधी-सी चट्टान के ढाल पर उसे एक छोटी गुफा-सी दीखी, और वह वही जाकर आराम से बैठ गया । वहाँ पहुँचकर उसकी आँखें एक प्रकार के आनन्द से उज्ज्वल हो उठी, और वह मन ही मन कहने लगा कि यहाँ कोई मुझे हानि पहुँचाने नहीं आ सकता । एकाएक उसके मन में अपने विचारों को लिख डालने की बड़ी तीव्र इच्छा हुई । यह ऐसा कार्य था जो और कहीं निर्द्वन्द्व भाव से नहीं हो सकता था । एक चौकोर-से पत्थर को उसने डेक्स बनाया और उसकी कलम चल निकली । अपने आस-पास की अन्य किसी वस्तु की ओर उसकी दृष्टि न थी । आखिरकार उसने देखा कि बोजोले के सुदूर पहाड़ों के पीछे सूरज डूबने लगा है ।

वह सोचने लगा कि क्यों न रात यही बिताई जाय । मेरे पास थोड़ी-सी रोटी भी है—और मैं स्वतन्त्र हूँ । इस विलक्षण शब्द को इतने धीमे से सुनकर भी उसकी आत्मा ऊपर उठ गई । अपने मित्र फूँके के साथ भी ढोंग रचने की आदत के कारण वह कभी पूरी तरह स्वतन्त्र न हो पाता था । अपने हाथों पर सिर को टिकाए जुलिये उस गुफा में बैठा रहा । स्वाधीन होने के आनन्द और अनगिनती कल्पनाओं ने उसके मन को अपूर्व उत्साह से भर दिया था । अपने जीवन में ऐसे सुख का अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था ।

जुलिये खोया-सा प्रदोष बेला की अन्तिम किरणों को धीरे-धीरे

बुझते देखता रहा। उस सीमाहीन अन्धकार में वह उन अनगिनती वस्तुओं की कल्पना में डूब गया जो एक बार पेरिस पहुँचने पर उसे मिल सकती थी। वह सोचता था वहाँ सबसे पहले तो उसे एक स्त्री मिलेगी जो प्रान्तों में आज तक दीखी हुई सभी स्त्रियों से कहीं अधिक सुन्दर और कहीं अधिक उदात्तमना होगी। जैसे वह तीव्र उत्कटता के साथ उससे प्रेम करेगा वैसे ही वह भी करेगी। यदि कभी वह उससे अलग भी होगा तो केवल और अधिक गौरव प्राप्त करके और भी गम्भीर प्रेम का अधिकार प्राप्त करने के लिए ही।

यदि हम थोड़ी देर के लिए यह मान भी ले कि पेरिस के समाज की अप्रिय वास्तविकता में पला हुआ कोई युवक जुलिये की भाँति ही कल्पनाविलासी हो सकता है, तो भी इस स्थल पर पहुँचकर उसके सुन-हले सपनों का ससार व्यग के हिम-स्पर्श से अवश्य टूट जाता, बड़े-बड़े करतब और उनको पूरा करने की आशा शून्य में विलीन हो जाती और उनके स्थान पर केवल इस कठोर सत्य की याद मन में रह जाती : “अपनी प्रेयसी को छोड़ कर जाने वाला व्यक्ति, आह ! अपने साथ दिन में कम से कम दो-तीन बार विश्वासघात का सकट अवश्य मोल लेता है।” किन्तु इस किसान युवक को अपने तथा वीरता के बड़े से बड़े कार्य के बीच अवसर के अभाव के अतिरिक्त अन्य कोई बाधा न दिखाई पड़ी।

किन्तु अब धीरे-धीरे दिन के उजाले की जगह रात का सघन अन्धकार घिर आया था। अपने मित्र फूके के घर पहुँचने के लिए अभी उसे कई मील रास्ता तै करना था। उस छोटी-सी गुफा से चलने के पहले जलियें ने आग जलाकर सावधानी के साथ अपने लिखे हुए सारे कागज जला दिये। रात को एक बजे जब उसने अपने मित्र के मकान पर पहुँच कर दरवाजा खटखटाया तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ। फूके उस समय अपना हिसाब-किताब करने में लगा था। वह एक लम्बे कद, बेडौल-से शरीर, भारी किन्तु नुकीली तीक्ष्ण मुखाकृति, और बहुत लम्बी नाक

चाला नौजवान था, किन्तु उसके डरावने रूप के पीछे बहुत करुणा छिपी थी ।

“अचानक इस बे-वक्त कैसे ? क्या म० द रेनाल से कोई झगड़ा हो गया ?”

जुलिये ने थोड़े-बहुत आवश्यक परिवर्तनों के साथ पिछले दिन की घटना सुना दी ।

“यहाँ मेरे साथ रहो”, फूके ने कहा । “तुम तो म० द रेनाल, उपजिलाधीश म० मोजिरो और पादरी म० शेला को जानते हो और उनके स्वभाव से भली भाँति परिचित हो । ठेके हासिल करने में तुमसे मुझे बहुत मदद मिल सकती है । गणित भी तुम्हारी मुझसे अच्छी ही है । तुम मेरे बही-खाते सम्हाल सकते हो । मेरे इस व्यापार में पैसा बहुत है पर सारा काम अकेले करना असम्भव है । साथ ही अगर किसी को साभेदार बनाऊँ तो बड़ा डर लगा रहता है कि कहीं वह आदमी बेईमान न निकले । इसीलिए मैं बहुत से अच्छे-अच्छे फायदे के कामों से भी हाथ नहीं लगाता । महीना भर भी नहीं हुआ जब मैंने सेतामा में मिशो को छः हजार फ्रैंक का फायदा करवा दिया, यद्यपि उस दिन वह मुझे छः बरस बाद अचानक ही पौतालिए के एक नीलाम में मिला था । क्यों न वे छः हजार फ्रैंक तुम कमाते ? कम से कम तीन हजार तो तुम्हारे हो ही सकते थे । अगर तुम उस दिन मेरे साथ होते तो वह माल मैं जरूर खरीद लेता । तो कहो, मेरे साथ साभा करने को तैयार हो न ?”

इस प्रस्ताव से जुलिये का मिजाज बिगड़ गया । उसके घरती-आसमान के सपनों में इससे बहुत व्याघात पड़ा । फूके अकेला रहता था इसलिए होमर के वीरो की भाँति दोनों मित्रों ने स्वयं पकाकर भोजन किया । खाते समय फूके निरन्तर अपने मुनाफे का हिसाब बता कर यह सिद्ध करने का प्रयत्न करता रहा कि उसके लकड़ी के व्यापार में कैसे-कैसे फायदे हैं । फूके जुलिये के चरित्र और उसकी बुद्धि के विषय में पूरी तरह आश्वस्त था ।

जब आखिरकार जुलिये को चीड की दीवारो से घिरे अपने छोटे-से कमरे मे एकान्त मिला तो वह सोचने लगा : यह सच है कि यहाँ रहकर मैं दो-चार हजार फ्रैंक की आमदनी कर सकता हूँ और फिर लौटकर सैनिक अथवा पुरोहित मे से जिसका भी धधा फ्रांस मे अधिक फैशनेबिल समझा जाता हो उसे अपना सकता हूँ । यहाँ रहकर जो थोड़ी-बहुत जमा-पूजी इकट्ठी हो जायगी उससे खाने की चिन्ता से भी छुटकारा मिल सकेगा ! पहाड मे अकेले रहकर मैं उन सब विषयो मे अपने अज्ञान को भी दूर कर सकूँगा जिनमे दुनियादार आदमी इतनी दिलचस्पी लेते है । पर लगता है कि फ्रुके ने व्याह करने का इरादा बिलकुल छोड दिया है जो बार-बार कहता है कि अकेले रहना कितना कष्टदायक है । इसी-लिए वह ऐसे आदमी को साभीदार बनाने के लिए तैयार है जिसके पास व्यापार मे लगाने को कोई पैसा नही । शायद वह सोचता है कि इस तरह उसे जिन्दगी-भर के लिए कोई संगी मिल जाय ।

क्या मैं अपने मित्र को भी धोखा दू ? जुलिये कुछ खिन्न भाव से बडबडा उठा । ढोंग और भाईचारे की भावना का सर्वथा अभाव उसमे स्वभाव से ही था । किन्तु इस समय अपने को इतना प्यार करने वाले व्यक्ति के प्रति हृदयहीनता बरतने की बात वह न सोच सका ।

एकाएक जुलिये प्रसन्न हो उठा । उसे अपने मित्र के प्रस्ताव को अस्वीकार करने का उपयुक्त कारण सूझ गया था । क्या ! मैं अपने जीवन के सात-आठ बरस इस बुरी तरह बरबाद कर दूँ । तब तक तो मेरी उम्र अट्ठाईस की हो जायगी ! उस उम्र तक तो बोनापार्ट अपना बडे से बडा काम पूरा भी कर चुका था । मान लो कि इमारती लकड़ी के हर नीलाम के चक्कर काट कर और कुछ घूर्त लोगो से अपना काम निकाल कर मैंने कुछ रुपया इकट्ठा कर भी लिया । मगर कौन कह सकता है कि तब तक मेरे भीतर वह पवित्र अग्नि प्रज्वलित बनी रहेगी जिससे इन्सान दुनिया मे नाम पैदा करता है ?

अगले दिन सबेरे जुलिये ने फूके को बड़े शान्त भाव से अपना सुचिन्तित उत्तर सुना दिया कि पुरोहित बनने के निश्चय के कारण यह प्रस्ताव स्वीकार करना उसके लिए सम्भव नहीं। फूके ने तो सारी बात पक्की ही समझ ली थी, इसलिए जुलिये का उत्तर सुनकर उसके विस्मय का कोई ठिकाना न रहा।

उसने कई बार जुलिये से कहा, “पर तुमने यह भी सोचा है कि मैं तो तुम्हें अपना सांभालदार बनाने को तैयार हूँ। या तुम चाहो तो चार हजार फ्रैंक वार्षिक दे सकता हूँ? उस पर भी तुम म० द रेनाल के पास वापिस जाना चाहते हो जो तुम्हें अपने पैरो तले की धूल से अधिक सम्मान नहीं देते। पूरे दो सौ लुई मुट्ठी में होने पर फिर तुम्हें पुरोहित बनने से कौन रोक लेगा? यही नहीं, जिले भर में तुम्हें सबसे बढिया मकान दिलवा दूँगा।” फूके ने अपने स्वर को कुछ धीमा करके हुए कहा, “मैं म०—, म०—, और म०—को जलाऊ लकड़ी पहुँचाता हूँ, जिसमें बढिया से बढिया ओक की लकड़ी होती है पर वे मुझे कीमत देते हैं मामूली चीड़ की। यह सब खर्च बड़े काम आता है।”

मगर जुलिये की समझ में यह बात न आई। अन्त में फूके, यह समझ कर कि इसके दिमाग में कोई खराबी है, चुप हो गया। तीसरे दिन बहुत सबेरे ही जुलिये अपने मित्र से बिदा लेकर बड़े पहाड़ की चट्टानों में दिन बिताने के लिए चल पड़ा। उसे अपनी छोटी-सी गुफा फिर मिल गई, मगर इस बार पहले की सी शान्ति उसके मन में नहीं थी जो उसके मित्र के प्रस्ताव ने छीन ली थी। वह इस समय हरक्वूलिस की भाँति भले और बुरे के बीच तो नहीं पर दो अन्य छोरों के बीच झूल रहा था। एक ओर अच्छी-भली आमदनी और आराम के साथ साधारण दुनियादारी की जिन्दगी थी और दूसरी ओर जीवन के अनगिनती सुनहले स्वप्न थे। वह सोचने लगा कि जान पड़ता है, मुझमें वास्तविक चारित्रिक दृढता की कमी है। मैं शायद उस धातु का बना

हुआ नहीं हूँ जिसके महापुरुष होते हैं। नहीं तो मुझे यह भय ही क्यों होता कि आठ बरस तक रोटी कमाने के चक्कर में पड़कर मेरे भीतर की वह पवित्र ज्वाला बुझ जायगी जिसके द्वारा बड़े-बड़े कार्य पूरे किये जाते हैं।

: १३ :

खुले काम वाले मोज़े

वेर्जि के पुराने गिरजाघर के सुन्दर भग्नावशेषों पर दृष्टि पड़ते ही जुलिये को लगा कि पिछले दो दिनों में मा० द रेनाल की याद उसे एक बार भी नहीं आई। उस दिन जाते समय इस स्त्री ने मुझे यह दिखाना चाहा था कि वह मुझसे कितनी ऊँची है। निस्सन्देह वह यह प्रगट करना चाहती थी कि पहले दिन अपना हाथ मुझे पकड़ लेने दिया इसका उसे खेद है। जो भी हो, वह हाथ है कितना सुन्दर ! कितना आकर्षण, कितनी उत्कृष्ट गरिमा है उस स्त्री की मुख-मुद्रा में !

फूके के व्यापार में पैसा कमा सकने की सम्भावना ने जुलिये के चिन्तन को थोड़ी सहजता प्रदान की। चिड़चिड़ेपन के कारण अथवा दुनिया की नज़रों में अपनी गरीबी और हीनावस्था की तीखी चेतना के कारण अब उसके विचार इतने अधिक न बहकते थे। उसे लगता था मानो अब वह किसी ऊँचे स्थान पर खड़ा हो जहाँ से गरीबी और अमीरी के दोनों छोरों को वह समान भाव से देख सकता है। यह नहीं कि अपनी स्थिति की वह कोई दार्शनिक व्याख्या करने लगा था। किन्तु अब उसकी दृष्टि इतनी अवश्य सुलभ गयी थी कि इस छोटी-सी यात्रा के बाद वह अपने आप को एक भिन्न व्यक्ति अनुभव करे।

मा० द रेनाल ने जब उससे यात्रा का हाल पूछा तो उसे लगा कि वह बहुत ही विचलित हैं।

फूके के साथ जुलिये की तरह-तरह की बातें हुई थी। किसी समय

फूके ने भी अपनी विवाह की योजना बनाई थी और वह कई एक दुखद प्रेम-सम्बन्धों का अनुभव कर चुका था । दोनों मित्रों ने इस विषय पर भी अपने-अपने मन का परस्पर आदान-प्रदान किया था । फूके को प्रारम्भ में अपने प्रेम में बड़ा सुख मिला था किन्तु शीघ्र ही उसे पता चला कि अपनी प्रेयसी का कृपापात्र वह अकेला ही नहीं है । इन सब बातों से जुलिये को बड़ा विस्मय हुआ था और साथ ही उसने बहुत-सी नई बातें सीखी भी थी । अपने मन की कल्पनाओं और आशकाओं में डूबे रहने के कारण पहले ऐसी किसी बात पर उसका ध्यान ही न जाता था जिससे उसे कोई अन्तर्दृष्टि प्राप्त होती । उसकी अनुपस्थिति में मा० द रेनाल भोंति-भोंति की असहनीय यातनाओं से त्रस्त रही थी । वह सचमुच अस्वस्थ थी ।

मा० देविल जुलिये को आते देखकर बोली, “अब देखो, तुम्हारी तबियत ठीक नहीं । इस हालत में बाहर बाग में न निकलना । बाहर की नम हवा से तुम्हारी तबियत और भी खराब हो जायगी ।”

मा० देविल को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ था कि उनकी सखी ने, जिसे उसके पति अत्यन्त ही सादे वस्त्र पहनने के लिए डाँटा करते थे, अभी-अभी अपने लिए हाल ही में पेरिस से आये हुए कुछ खुले काम वाले मौजे और कुछ सुन्दर से छोटे-छोटे स्लीपर खरीद लिये थे । पिछले तीन दिनों से मा० द रेनाल एक बारीक और बहुत सुन्दर कपड़े का गाउन तैयार करवाने में एलिजा के साथ इतनी व्यस्त थी कि और किसी बात की उन्हें सुधि ही न थी । यह गाउन कुछ ही देर पहले तैयार हो पाया था । मा० द रेनाल ने उसे तुरन्त पहन लिया ।

मा० देविल को अब और कोई सन्देह न रहा । अपनी सखी के रोग के विशिष्ट लक्षणों को पहचान वह मन ही मन बोली : बेचारी प्रेम में पड़ गयी है !

वह मा० द रेनाल को जुलिये से बातचीत करते देखने लगी । उनके मुख पर कभी पीलापन छा जाता तो कभी वह लज्जा से लाल हो

उठता । जब वह तरुण शिक्षक की आँखों में आँखें गड़ाकर उसकी ओर देखती तो उनके मन की उद्विग्नता स्पष्ट झलक आती थी । मा० द रेनाल प्रत्येक क्षण यह अपेक्षा कर रही थी कि वह उनके यहाँ ठहरने न ठहरने की बात साफ-साफ बता देगा । उधर जुलिये का इस विषय में कुछ भी कहने का कोई विचार ही न था ; यह विचार तो उसके मन में ही न आया था । तीव्र अन्तर्द्वन्द्व के बाद अन्त में मा० द रेनाल ने मन के सारे आवेग को स्पष्ट प्रकट कर देने वाले कपित स्वर में उससे पूछा, “क्या आप अपने इन छात्रों को छोड़कर कहीं और काम लेने का विचार कर रहे हैं ?”

उनके स्वर की द्विधा और दृष्टि की तरलता जुलिये से छिपी न रही । वह मन ही मन कह उठा कि यह स्त्री मुझे प्यार तो करती है, पर इस क्षणिक दुर्बलता से उसके अहंकार को चोट पहुँचती है, इसलिए उसके दूर होने और मेरे न जाने का विश्वास दृढ़ होते ही उसका घमण्ड फिर लौट आएगा । अपनी पारस्परिक स्थिति के सम्बन्ध में यह विचार जुलिये के मन में पल भर में बिजली की भाँति कौंध गया । उसने अटकते हुए उत्तर दिया, “बच्चे इतने हँसमुख और ऐसे सभ्रात हैं कि उन्हें छोड़कर जाने में मुझे बड़ा दुःख होगा । किन्तु शायद इसकी आवश्यकता पड़ जाय । आदमी का अपने प्रति भी तो कर्तव्य होता है ।”

“ऐसे सभ्रात” कहते-कहते (यह शब्दावली उसने हाल ही में सीखी थी) जुलिये के मन में तीव्र वितृष्णा का भाव भर आया । वह सोचने लगा कि इस स्त्री की दृष्टि में कम से कम मैं तो सभ्रात नही हूँ ।

मा० द रेनाल उसकी बुद्धि और रूप के प्रति आदर और प्रशंसा के भाव से उसकी बात सुन रही थी । उसके कथन में छोड़कर चले जाने की निहित सम्भावना से उनका हृदय व्यथित हो उठा । जुलिये की अनुपस्थिति में उनके जितने मित्र बेरियर से वेर्जि-भोजन के लिए आये थे, उन सभी में उन्हें इस बात के लिए बचाई देने की होड़-सी लगी रही

थी कि उनके पति ने कितना बढ़िया आदमी ढूँढ कर निकाला है। यह नहीं कि उन्हें बच्चों की उन्नति का कुछ ख्याल था। जुलिये को लैटिन भाषा में बाइबिल कठस्थ होने से ही वेरियेर-निवामियो के मन में आदर का ऐसा ज्वार उमड़ा था जो शायद सौ बरस तक न दूर होता।

जुलिये कभी किसी से बात न करता था, इसलिए उसे इन सब बातों का कुछ पता न था। यदि मा० द रेनाल तनिक भी अपने काबू में होती तो वह उसे इस प्रतिष्ठा के लिए बधाई देती। इस भाँति एक बार जुलिये के आत्मसम्मान की तुष्टि होने पर वह उनके साथ मधुर और प्रीतिकर व्यवहार करने लगता, विशेषकर इसलिए भी कि उसे उनकी नई पोशाक बड़ी लुभावनी लगी थी।

मा० द रेनाल ने अपने सुन्दर फाक तथा जुलिये से उसकी प्रशंसा से प्रसन्न हो कर बाग में टहलने का प्रयत्न किया। किन्तु शीघ्र ही उन्हें लगा कि वह टहलने लायक स्थिति में नहीं हैं। उन्होंने अपने सगी की बाँह का सहारा लिया किन्तु इससे अधिक शक्ति मिलने की बजाय उनकी रही-सही शक्ति भी जाती रही।

रात घिर आई थी। बैठते ही जुलिये ने अपने पुरानी सुत्रिधा का उपयोग करके उनकी सुन्दर बाँह को अपने होठों से छू कर उनका हाथ अपने हाथों में थाम लिया। वह फूँके के अपनी प्रेमिकाओं के साथ साहस-पूर्ण व्यवहार की बात सोच रहा था, मा० द रेनाल के विषय में नहीं। 'सभ्रात' शब्द की याद करके अब भी उसका दिल भारी हो जाता था। मा० द रेनाल ने भी उसका हाथ दबाया किन्तु इससे उसे कोई प्रसन्नता न मिली। उस दिन शाम को मा० द रेनाल ने अपने जिन मनोभावों को इस भाँति स्पष्ट प्रकट किया था उनके लिए गर्व, अथवा कम से कम कृतज्ञता, अनुभव करने की बात तो दूर, उनके सौन्दर्य, लावण्य और उनकी निर्व्याज अम्लानता का उसके ऊपर कोई प्रभाव ही नहीं पड़ा था। हृदय की निर्मलता और हर प्रकार की घृणित वासना का अभाव निस्सन्देह यौवन को अधिक स्थायी बना देता है। अधिकांश सुन्दर स्त्रियो

के चेहरे का भाव ही पहले वृद्ध होता है ।

जुलिये उस दिन समूची शाम कुछ खिन्न-सा रहा । अब तक उसका क्रोध केवल भाग्य और समाज के प्रति था, किन्तु जब से फूँके ने उसके सामने अनुचित उपाय से धनी हो जाने का प्रस्ताव रखा था, उसे अपने ही ऊपर क्षोभ हो रहा था । यद्यपि वह बीच-बीच में एकाध शब्द महिलाओं से कह देता था, पर वास्तव में वह अपने विचारों में ही खोया हुआ था और इसी अवस्था में उसने एकदम अनजाने ही मा० द रेनाल का हाथ छोड़ दिया । उसके इस कार्य से वह महिला बेचारी लगभग विक्षिप्त हो उठी । इस घटना में उन्हें अपने भाग्य का संकेत दिखाई पड़ा ।

यदि उन्हें जुलिये के प्रेम का पक्का विश्वास होता तो अपने शीघ्र से उन्हें उसका सामना करने का बल मिलता । किन्तु उसे सदा के लिए खो बैठने के भय से काँप कर, अपने आवेग के कारण वह इतनी विवश हो गई कि उन्होंने स्वयं जुलिये का हाथ थाम लिया जो उसने कुछ आत्म-विस्मृत-सी अवस्था में एक कुर्सी पर पड़ा रहने दिया था । मा० द रेनाल के कार्य ने इस महत्वाकांक्षी युवक की विचारमग्नता भंग कर दी । उसकी इच्छा हुई कि इस समय वे सब घमण्डी कुलीन लोग यहाँ मौजूद होते जो भोजन के वक्त ऐसी अनुकम्पा-भरी मुस्कान के साथ उसे बच्चों के साथ मेज़ के दूसरे छोर पर बैठे देख रहे थे । उसने सोचा कि यह स्त्री अब मुझमें घृणा नहीं कर सकती, इसलिए अब मुझे उसके सौंदर्य के प्रति मुग्ध होना चाहिए । अब उसका प्रेमी बनना स्वयं अपने प्रति कर्तव्य है । ऐसा विचार आज से पहले, जब तक वह अपने मित्र की प्रेम-लीलाओं से परिचित न हुआ था, उसके मन में कभी न आ सकता था ।

उसके इस आकस्मिक निश्चय ने बड़ा सुखद विषय-परिवर्तन उत्पन्न कर दिया । वह सोचने लगा कि इनमें से कम से कम एक स्त्री तो मुझे मिलनी ही चाहिए । उसे लगा कि वह स्वयं मा० देविल से प्रेम करना अधिक पसन्द करता । यह नहीं कि वह उसे अधिक आकर्षक लगती थी बल्कि इसलिए कि वह उसे सदा से एक विद्वान् शिक्षक के रूप में ही

जानती थी, मा० द रेनाल की भाँति बगल में फटी हुई जाकेट दबाए फिरने वाले गवई बढई के रूप में नहीं। किन्तु मा० द रेनाल के मन में उसका सबसे सुन्दर चित्र वही था जब वह एक नौजवान मजदूर के रूप में लज्जा से लाल मुख लिये घर के दरवाजे पर असमजस में खड़ा था और उसे घटी बजाने का साहस न हो रहा था।

समूची स्थिति पर विचार करने के बाद जुलिये ने सोचा कि उसे मा० देविल को जीतने का विचार नहीं करना चाहिए, क्योंकि उसके प्रति मा० द रेनाल के रुझान को वह शायद जानती है। इस भाँति दूसरी महिला की ओर ध्यान देने को बाध्य होकर जुलिये सोचने लगा कि इस स्त्री के चरित्र के विषय में मैं क्या जानता हूँ? केवल इतना ही तो कि जाने के पहले जब मैंने उसका हाथ पकड़ा था तो उसने खींच लिया था, आज जब मैंने अपना हाथ खींचा तो वह स्वयं उसे थाम कर दबा रही है। आज तक उसने मेरे प्रति जितनी भी घृणा अनुभव की है उसका बदला चुकाने का यह बहुत उत्तम अवसर है। भगवान जाने उसके कितने प्रेमी हो चुके हैं। मुझ पर वह शायद इसीलिए कृपा कर रही है कि हमारे लिए मिलना सहज है।

हाय ! अधिक सभ्य होने का यही परिणाम होता है। बीस बरस की उम्र में एक युवक का हृदय तनिक-सी शिक्षा पाते ही उस सहज उदासीनता से हजार मील दूर हो जाता है जिसके बिना प्रेम प्रायः नीरस-तम कर्तव्य से अधिक कुछ नहीं बचता।

जुलिये अपने ओछे अह में मन ही मन तर्क करता रहा कि इस स्त्री के ऊपर सफलता प्राप्त करना मेरा परम कर्तव्य है, क्योंकि मेरे दुनिया में सफलता प्राप्त कर लेने पर कोई मेरे शिक्षक के कार्य की तुच्छता का जिक्र करेगा तो मैं यह कह सकूँगा कि प्रेम के कारण मैंने यह कार्य स्वीकार किया था।

एक बार फिर जुलिये ने अपना हाथ मा० द रेनाल के हाथ में से खींच लिया और फिर स्वयं ही उसे थाम कर दबाया। मध्य रात्रि के

समीप जब वे लोग ड्राइंग रूम में वापिस जाने लगे तो मा० द रेनाल ने चुपके से उसके कान में कहा . “क्या तुम सचमुच हमें छोड़कर जा रहे हो ?”

जुलिये ने लम्बी साँस लेकर उत्तर दिया . “सचमुच मेरा चला जाना ही ठीक है, क्योंकि मैं तुम्हें इतना अधिक प्यार करने लगा हूँ। यह पाप है..... और एक तरुण पुरोहित के लिए पाप भी कैसा !”

मा० द रेनाल इतनी आत्म-विसुध होकर उसकी बाहों पर झुक आयी कि उन्हें अपने गाल पर जुलिये के मुख की उष्णता अनुभव होने लगी ।

इन दोनों व्यक्तियों की रात बिल्कुल ही भिन्न प्रकार से बीती । मा० द रेनाल बड़ी ही उच्छ्वसित अवस्था में थी और उच्चतम नैतिक कोटि के आनन्द में विभोर हो उठी थी । यौवन के प्रारम्भ में जब कोई चंचल लड़की प्रेम में पड़ती है तो वह उसमें होने वाले व्याघातों की अभ्यस्त हो जाती है , आवेग के उपयुक्त अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते नवीनता का आकर्षण नहीं बचता । मा० द रेनाल ने कभी कोई उपन्यास तक न पढ़ा था, इसलिए इस आनन्द का हर रूप उनके लिए नया था । उनकी प्रसन्नता किसी उदासी-भरे सत्य से मलिन नहीं होती थी, भविष्य की काली छायाओं से भी नहीं । उन्हें लगता था कि दस साल बाद भी उनका सुख इस क्षण जैसा ही बना रहेगा । मा० द रेनाल के समक्ष किये हुए शील और सच्चरित्रता के वचन का ध्यान कुछ दिन पहले तक उन्हें बहुत विचलित किया करता था । अब वह उन्हें व्यर्थ ही लगता । ऐसे विचारों को अब वह किसी धृष्ट अतिथि की भाँति अपने से दूर कर देती थी । मा० द रेनाल ने मन ही मन निश्चय किया कि मैं जुलिये को कोई अन्य स्वतन्त्रता न लेने दूँगी । भविष्य में भी हम पिछले महीने भर की भाँति ही रहे आयेगे । वह बस केवल मित्र ही रहेगा ।

: १४ :

कैचियां

फूके के प्रस्ताव ने जुलिये की सारी खुशी छीन ली थी । वह कोई भी निश्चय करने में अपने को असमर्थ पा रहा था ।

हाय ! उसने ठण्डी सास भरी । शायद मुझमें चारित्रिक दृढ़ता की कमी है—मैं नैपोलियन का बड़ा ही अयोग्य सैनिक सिद्ध होता । किन्तु गृह-स्वामिनी के साथ इस छोटे-से षड्यंत्र से कुछ तो जी हलका होगा ।

सौभाग्यवश इस स्थिति में भी उसके हृदय के घनिष्ठतम भावों तथा उसके स्वर की चंचलता के बीच बहुत कम सामंजस्य था । मा० द रेनाल को वह सुन्दर फाक पहने देखकर उसे भय हुआ । उसे लगा जैसे पेरिस वहाँ आ पहुँचा । उसका अहंकार इस बात की आज्ञा न देता था कि वह कोई बात दैवयोग पर अथवा तात्कालिक सूझ पर छोड़ दे । फूके से सुने हुए गोपन अनुभवों के आधार पर तथा बाइबिल में पढ़े हुए प्रेम-सम्बन्धी ज्ञान के सहारे उसने एक बड़ी विस्तृत योजना बना डाली । ऊपर से स्वीकार न करने पर भी वह मन ही मन बहुत उत्तेजित था, इसीलिए उसने अपनी योजना को लिख कर रख लिया ।

अगले दिन उसे मा० द रेनाल पल भर के लिए ड्राइंग रूम में अकेली मिली ।

“क्या तुम्हारा जुलिये के अतिरिक्त कोई दूसरा नाम नहीं ?” उन्होंने जुलिये से पूछा ।

हमारे नायक को एक ऐसे प्रीतिकर प्रश्न का कोई उत्तर न सूझा ।

उसकी योजना मे ऐसी परिस्थिति सोची ही नहीं गई थी । और यदि उसने योजना बनाने की मूर्खता न की होती तो उसकी प्रखर बुद्धि उसका अच्छा साथ देती—बल्कि आकस्मिक होने के कारण उसका उत्तर कही अधिक सजीव होता ।

पर अब उसने कोई फूहड़-सा उत्तर दिया, और उससे भी कही अधिक फूहड़ वह अपने आपको मानता रहा । मा० द रेनाल ने तुरन्त ही उसे इस बात के लिए क्षमा कर दिया । उन्होंने इस फूहड़पन का कारण उसकी लुभावनी सरलता को ही समझा, यद्यपि उनकी दृष्टि से वास्तव मे सरलता का भाव ही इस व्यक्ति मे नहीं था जिसे सब लोग इतना प्रतिभावान मानते थे ।

मा० देविल कभी-कभी अपनी सखी से कहा करती थी, “तुम्हारे उस नौजवान शिक्षक से मुझे भय होता है । लगता है मानो हर बात को निरन्तर अपने मन मे जाचता रहता हो तथा कोई काम बिना किसी उद्देश्य के न करता हो । मुझे तो वह बड़ा कपटी जान पड़ता है ।”

मा० द रेनाल को उत्तर न देपाने के कारण जुलिये मन ही मन बड़ा अपमानित अनुभव करता रहा । वह सोचने लगा कि मेरे जैसे व्यक्ति को अपनी असफलता का बदला अवश्य लेना चाहिये । इसलिए एक कमरे से दूसरे मे जाते समय एकान्त का लाभ उठाकर मा० द रेनाल को चूम लेना उसने अपना कर्तव्य समझा ।

इससे अधिक अदूरदर्शिता तथा दोनो के ही लिए अधिक अरुचिकर कार्य की कल्पना कठिन थी । दोनो मे से कोई इसके लिए पहले से तैयार न था । केवल सौभाग्यवश ही किसी ने उन्हें देखा नहीं । मा० द रेनाल ने तो सोचा कि उसका दिमाग खराब हो गया है । वह भयभीत हो उठी और इससे भी अधिक विक्षुब्ध हो गई । उसके इस मूर्खतापूर्ण कार्य से उन्हें म० वालनो की याद आ गई ।

वह सोचने लगी कि उसके साथ अकेली पडने पर कैसी बीतेगी ।

प्रेम के प्रच्छन्न होते ही उनका शील जाग्रत हो उठा और उन्होंने

अपने बच्चों को हर समय अपने साथ ही रखने का निश्चय किया ।

जुलिये का सारा दिन बड़ी खिन्नता में बीता । वह सारे समय अपनी योजना को पूरा करने के अकुशल प्रयत्न करता रहा । जब भी वह मा० द रेनाल की ओर देखता तो अपनी दृष्टि से ही कुछ न कुछ मनोभाव प्रकट करने का प्रयत्न करता । साथ ही वह इतना मूर्ख भी न था कि अपने आकर्षक लगने तथा इससे भी अधिक मा० द रेनाल को रिझाने के प्रयत्नों की असफलता को न समझ सके ।

उसको इस भाँति विचित्र रूप में एक साथ सकोची तथा इतना साहसिक देखकर मा० द रेनाल के विस्मय का ठिकाना न था । वह सोचने लगी कि शायद यह प्रेम में पड़े हुए विद्वान् व्यक्ति की लज्जा-शीलता है । यह सोचकर एकाएक उन्हें अत्यन्त अकथनीय प्रसन्नता हुई । बहुत सम्भव है कि वह स्त्री उससे कभी प्रेम ही न करती हो ।

दोपहर को भोजन के बाद मा० द रेनाल ड्राइंग रूम में आयी । म० मोजिरो उनसे मिलने आये थे । वहाँ बैठकर वह फर्श से थोड़े ऊपर उठे हुए एक पर्दे पर कढ़ाई का काम करने लगी । मा० देविल उनके बगल में ही बैठी थी । तभी ऐसे दिन-दहाड़े हमारे नायक महोदय ने अपना जूता आगे बढ़ाकर मा० द रेनाल के सुन्दर पैर को स्पर्श करना ठीक समझा । उसी समय म० मोजिरो की दृष्टि भी उनके पेरिस से आए हुए सुन्दर स्लिपरो और रेशमी मोजों की ओर आकर्षित हुई ।

मा० द रेनाल को काटो तो खून नहीं । उन्होंने अपनी कैची, ऊन का गोला और सलाइयाँ अपने हाथ से गिरा दी जिससे जुलिये का कार्य ऐसा जान पड़े मानो वह फर्श पर गिरती हुई कैची को पकड़ने का ही कोई फूहड़ प्रयत्न कर रहा हो । भाग्यवश कैची इंग्लैंड में शेफील्ड के इस्पात की बनी हुई थी, इसलिये गिरते ही टूट गई । मा० द रेनाल इस स्थिति का लाभ उठाकर बड़ा खेद प्रकट करने लगी कि यदि जुलिये अधिक समीप होता तो कैची को गिरकर टूटने से बचा लेता ।

वह बोली, “आपने तो मुझसे पहले ही कैची को गिरते देख लिया

था, पर उसे पकड़ने की बजाय जोश में मेरे ऊपर ही लात चलाना शुरू कर दिया ।”

उनके इन शब्दों से म० मोजिरो तो धोखा खा गये पर मा० देविल नहीं । उन्होंने सोचा कि इस सुन्दर नौजवान के रग-ढग बड़े अजीब हैं । प्रान्तीय राजधानी में शिक्षा-दीक्षा के बारे में जो धारणाएँ आदमी की बनती हैं उनके कारण ऐसी भूल नहीं हो सकती । मा० द रेनाल ने पल भर का अवसर पाकर जुलिये से कहा, “मेरी आज्ञा है कि आपको सावधानी बरतनी चाहिए ।”

जुलिये को अपनी भयंकर भूल समझ में तो आ गई किन्तु इसमें वह और भी चिढ़ गया । वह बहुत देर तक सोचता रहा कि ‘मेरी आज्ञा है’ इन शब्दों का बुरा माने अथवा नहीं । वह सोचने लगा कि जहाँ तक उनके बच्चों की शिक्षा का सम्बन्ध है, वह मुझे आज्ञा दे सकती हैं । किन्तु प्रेम में तो बराबरी का दर्जा होता है । बराबरी के बिना प्रेम सम्भव नहीं—और उसका मन समानता की तलाश में बहक गया । उसने मन ही मन कोरनेय की वह पत्ति दोहराई जो कुछ दिन पहले उसने मा० देविल से सीखी थी :

प्रेम समानता की सृष्टि करता है, उसके पीछे नहीं दौड़ता ।

साहसिक प्रेमी की भाँति व्यवहार करने की हठधर्मी के कारण जुलिये, जिसे अभी तक एक भी प्रेमिका का अनुभव न था, सारे दिन नितान्त मूर्ख की भाँति व्यवहार करता रहा । उसे केवल एक ही बात समझदारी की सूझी । अपने आप से और मा० द रेनाल से रुष्ट होने के कारण वह सन्ध्या को बगीचे के अँधेरे में उनके पास बैठने की कल्पना से ही भयभीत था । वह म० द रेनाल से पुरोहित महोदय से मिलने का बहाना करके भोजन के बाद ही घर से बाहर चला गया और उस दिन रात को देर तक नहीं लौटा ।

वेरियेर में जुलिये को म० शेला अपना घर बदलते हुए मिले । आखिरकार उनकी नौकरी छिन गई थी और उनकी जगह म० मास्लो

आने वाले थे। क्यूरे की मदद करते-करते जुलिये तुरन्त फूके को यह लिखने के लिए व्यग्र हो उठा कि यद्यपि पहले चर्च की नौकरी के विचार से उसने उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था, किन्तु अभी-अभी उसने ऐसा अन्याय देखा है कि शायद कुल मिलाकर चर्च की नौकरी न लेना ही उचित होगा। जुलिये बाद में अपने आप को इस चतुराई के लिए बधाई देता रहा कि उसने पुरोहित की नौकरी छिन्नने के अवसर का लाभ उठाकर अपने लिए एक नया मार्ग तैयार कर लिया था। यदि उसके देश में बीरता की बजाय सावधानी और हाथ-पैर बचाकर चलने की प्रवृत्ति का ही बोलबाला रहे तो वह व्यवसाय के क्षेत्र को अपना सकता है।

: १५ :

मुर्गे की बाँग

जिस दूरदर्शिता का जुलिये को इतना गर्व था वह सचमुच उसके पास होती तो अपने वेरियर यात्रा के प्रभाव के लिए वह अगले दिन सबेरे अपने आपको बधाई देता। अनुपस्थिति के कारण उसकी सब भूले क्षमा हो चुकी थी। उस दिन फिर वह कुछ चिढ़ा हुआ-सा ही था। शाम होते-होते एक अत्यन्त ही मूर्खतापूर्ण विचार उसके मन में आया जिसे उसने अपनी अपूर्व दुस्साहसिकता के साथ मा० द रेनाल को बता भी दिया।

“वे लोग नित्य की भाँति बगीचे में जाकर बैठे ही थे कि जुलिये ने पर्याप्त अँधेरा होने की प्रतीक्षा किये बिना ही मा० द रेनाल के कान के पास अपना मुख ले जाकर और उनकी स्थिति को अत्यन्त सन्देहजनक बनाने का खतरा उठाकर उनसे कह दिया : “मैडम, आज रात को दो बजे मैं आपके कमरे में आऊँगा। आपसे मुझे कुछ ज़रूरी बात करनी है।”

जुलिये स्वयं ही काँप रहा था कि कहीं उसकी यह बात स्वीकार न हो जाय। प्रेमी का यह कर्तव्य अब उसके मन पर बड़ा भारी बो बन उठा था और यदि वह अपनी सहज प्रवृत्ति के अनुसार कार्य कर पाता तो वह बहुत दिनों के लिए अपने कमरे में चला जाता और उन महिलाओं की सूरत भी कभी न देखता। उसे लगा कि अपनी कल की अति-चतुराई से उसने पिछले दिन की सारी सुन्दर सम्भावनाओं पर पानी फेर लिया है। अब उसे सूझता न था कि सहायता के लिए कौन-

से देवी-देवता को याद करे ।

जुलिये की इस धृष्टतापूर्ण साहसिक घोषणा का उत्तर मा० द रेनाल ने जिस रोष के साथ दिया वह सच्चा था और उसमें तनिक भी अत्युक्ति नहीं थी । बल्कि जुलिये को लगा कि उनके सक्षिप्त-से उत्तर में घृणा की भी हल्की-सी ध्वनि थी । उस धीमे से उत्तर में केवल इतने-से शब्द थे, “तुम्हें शर्म नहीं आती ।”

बच्चों से कुछ कहने का बहाना बनाकर जुलिये कुछ देर बाद वहाँ से उठकर चला आया । लौटने पर वह मा० द रेनाल से बहुत दूर मा० देर्विल के पास जाकर बैठा ताकि उनका हाथ थाम सकने की कोई सम्भावना ही न रहे । बातचीत गभीर विषयों पर छिड़ गई जिसमें जुलिये ने अच्छी योग्यता का परिचय दिया । बीच-बीच में अवश्य ही वह चुप हो जाता था और अपनी योजना पूरी करने के लिए अपना दिमाग कुरेदने लगता था । वह किसी ऐसी चाल की तलाश में था जिससे मा० द रेनाल बाध्य होकर अपने प्रेम के वे सब असदिग्ध लक्षण फिर से प्रकट करने लगे जिनके कारण केवल तीन दिन पहले ही उसे उनके अपनी होने का विश्वास होने लगा था ।

अपनी योजना को ऐसी निराशाजनक स्थिति में पाकर जुलिये बहुत ही बेचैन हो उठा था, किन्तु सफलता कही अधिक त्रासदायक सिद्ध होती । उस दिन रात को जब वे लोग बाग से उठे तो अपनी नैराश्यपूर्ण मानसिक स्थिति के कारण जुलिये को विश्वास हो चुका था कि मा० देर्विल तो मुझे तिरस्कार की दृष्टि से देखती ही है, पर शायद मा० द रेनाल का भाव भी इससे कोई विशेष अच्छा नहीं है ।

अत्यन्त क्षुब्ध और अपमानित अनुभव करने के कारण जुलिये को नींद नहीं आई । उसका मन इस विचार से कोसों दूर था कि अपनी सब योजनाएँ और इरादे त्यागकर मा० द रेनाल के साथ एक बालक की भाँति प्रत्येक दिन प्राप्त होने वाली प्रसन्नता से सतुष्ट होकर रह जाये ।

चतुराई भरी तरकीबें सोचते-सोचते और पल भर बाद ही उनकी निष्फलता पहचानते-पहचानते वह क्लान्त हो उठा। संक्षेप में दुर्ग के बाहर वाली घड़ी में जब दो का घन्टा बजा तो वह अत्यन्त ही दुःखी अनुभव कर रहा था।

घड़ी के घंटों ने उसे ऐसे ही जगा दिया जैसे मुर्गों की बाँग ने संत पीटर को जगाया होगा। उसे लगा कि उसकी कठोरतम परीक्षा का क्षण आ पहुँचा है। अपने उद्धत प्रस्ताव को मुँह से निकालने के बाद से उसने अभी तक पल भर भी उस पर ध्यान न दिया था—उसका ऐसा निरुत्साह-जनक स्वागत हुआ था।

उसने बिस्तर से निकलते-निकलते सोचा : मैंने कहा था दो बजे तुम्हारे कमरे में आऊँगा। मैं भले ही एक किसान के बेटे की भाँति अनुभवहीन और अशिष्ट होऊँ—मा० देर्विल ने यह स्पष्ट करने में कोई कसर न छोड़ी थी—किन्तु कम से कम दुर्बल मैं नहीं बनूँगा।

जुलिये का अपने साहस से प्रसन्न होना उचित ही था; इतना समय पहले कभी उसने नहीं बरता था। दरवाजा खोलते-खोलते उसे लगा जैसे उसके पैर लड़खड़ा रहे हों और उसे दीवार का सहारा लेना पड़ा।

उसने अपने जूते उतार दिये। चुपके-चुपके मा० द रेनाल के कमरे के द्वार से कान लगाकर सुनने का प्रयत्न किया। उनके खर्राटों की आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी। इस आवाज़ से उसका कण्ठ कुछ बढ़ ही गया। अब तो उसके पास मा० द रेनाल के कमरे में न जाने का कोई कारण ही न बचा। किन्तु क्या, हे भगवान ! वहाँ जाकर वह करेगा क्या ? उसके मन में कोई योजना न थी, और यदि होती भी तो इस उत्तेजित अवस्था में उसे कार्यान्वित करना असम्भव होता।

इस क्षण उसकी यातना मृत्युदण्ड के लिए जाने वाले व्यक्ति से हज़ार गुनी अधिक थी। किन्तु अन्त में वह मा० द रेनाल के कमरे की ओर जाने वाले छोटे से बरामदे में मुड़ गया। काँपते हुए हाथों से उसने दरवाज़ा खोला जिसमें बहुत शोर हुआ।

कमरे में प्रकाश था। मैनटलपीस के नीचे एक लैंप जल रहा था। इस नये सकट की तो उसने कल्पना भी न की थी। उसे कमरे में घुसते देखकर मा० द रेनाल अपने बिस्तर से उछल कर उठ आई। “दुष्ट”। उन्होंने तीव्र स्वर में कहा। पल भर के लिए सब कुछ गड़बड़ा गया। जुलिये अपनी निरर्थक योजनाएँ भूल गया और उसका स्वाभाविक रूप लौट आया। उसे लगा कि ऐसी अनुपम सुन्दरी को प्रसन्न न कर सकने से बड़ा दुर्भाग्य कोई दूसरा न होगा। उनकी समस्त भर्त्सनाओं का उत्तर उसने उनके पैरों के समीप बैठकर और उनके घुटनों को अपनी दोनों बांहों में बाँध कर दिया। उनकी अत्यन्त तीखी बातों को सुनकर अन्त में उसकी आँखों में आँसू भर आये।

कई घण्टे के बाद जब जुलिये मा० द रेनाल के कमरे से बाहर निकला तो, यदि उपन्यासों की भाषा में कहे, उसकी कोई अभिलाषा बाकी न बची थी। जिस प्रेम को वह जाग्रत कर सका था, तथा उनके लुभावने सौन्दर्य ने जो अप्रत्याशित प्रभाव उसके मन पर डाला था, उसके प्रति जुलिये के मन में बड़ा कृतज्ञता का भाव था। उसने ऐसी विजय प्राप्त की थी जिसे वह अपने आप केवल अपनी ही अकुशल चतुराई द्वारा कभी न पा सकता था।

किन्तु साथ ही आनन्द के अनन्य तथा मधुरतम क्षणों में भी उसके विचित्र अहंकार ने उसे चैन न लेने दिया। तब भी उसकी यही लालसा थी कि वह अपनी इच्छानुसार स्त्रियों को वश में कर लेने वाले व्यक्ति के रूप में दिखाई पड़े। इसलिए जो कुछ अपने आप ही इतना मोहक था उसे वह नष्ट करने का अनवरत प्रयत्न करता रहा। जो भाव उसने जाग्रत किये थे और जो पश्चात्ताप उनके उत्कट हर्षोन्माद को तीव्रतर बना रहा था उसकी ओर ध्यान देने की बजाय वह अपने प्रति कर्तव्य के विचार को ही निरन्तर अपने आगे रखता रहा। उसे भय था कि अपने निश्चिन् आदर्श से इधर-उधर हटते ही कही बाद में उसे बुरी तरह पछताना न पड़े और वह अपनी ही आँखों में सदा के लिए

हास्यास्पद न हो जाय । एक शब्द में जिस कारण जुलिये अपने आपको श्रेष्ठतर अनुभव कर रहा था ठीक वही उसके सामने मौजूद आनन्द के उपभोग में बाधक था । वह उस षोडस-वर्षीया किशोरी की भाँति था जो नाच के लिए जाते समय अपने गालों के लुभावने गुलाबी रंग पर लाली लगाने की मूर्खता करती है ।

मा० द रेनाल जुलिये को एकाएक वहाँ देखकर पहले तो बहुत ही भयभीत हुई पर शीघ्र ही उनके मन को तरह-तरह की निर्मम आशकाओं ने घेर लिया । जुलिये के आँसुओं तथा हताश भाव ने उन्हें बहुत विचलित कर दिया था । यहाँ तक कि जब वे उसे सर्वस्व समर्पण कर चुकी तब एकाएक वास्तविक क्षोभ में उन्होंने पहले तो उसे दूर ढकेल दिया और फिर पल भर बाद ही स्वयं उसकी बाहों में जा गिरी । इस आचरण में कोई योजना न थी । उन्हें विश्वास हो गया था कि अब उनके उद्धार की कोई आशा नहीं । इसलिए जुलिये के ऊपर उत्कटतम आलिंगन बरसा कर नरक के भयानक दृश्य से अपनी आँखें मूँद लेना चाहती थी । संक्षेप में, बस यदि हमारे नायक में उपभोग की क्षमता होती तो उसके सुख में कोई कमी न थी, जिस नारी को उसने अभी बशीभूत किया था उसके प्रबलतम प्रतिदान की भी नहीं । उनके मन में जो हर्षोन्माद उनकी इच्छा के विरुद्ध ही जाग्रत हो रहा था वह जुलिये के प्रस्थान से भी चुका नहीं और न वह पश्चात्ताप ही मिटा जो उनकी आत्मा के टुकड़े-टुकड़े किये डाल रहा था ।

हे भगवान् ! क्या सुखी होना, किसी का प्रेम प्राप्त करना, इससे अधिक कुछ नहीं है ? अपने कमरे में लौटने पर यही भाव सबसे पहले जुलिये के मन में आया । वह विस्मय और तीव्र उत्तेजना की उसी अवस्था में था जो मनुष्य की चिर-इच्छित वस्तु की प्राप्ति पर होती है । तब लालसा के निरन्तर अभ्यस्त हृदय में कोई लालसा तो नहीं बचती, पर तब तक कोई स्मृतियाँ भी नहीं होती । परेड से लौटे हुए सिपाही की भाँति जुलिये अपने आचरण की छोटी से छोटी बात की

प्रत्यालोचना में डूब गया । क्या मैंने अपने प्रति कर्तव्य में कोई कमी दिखाई है ? अपना पार्ट मैंने भली भाँति अदा किया अथवा नहीं ?

और पार्ट भी कौन-सा ! स्त्रियों को वशीभूत करने में सिद्धहस्त व्यक्ति का !

: १६ : दूसरे दिन

जुलिये के अहंकार के लिए सौभाग्यवश मा० द रेनाल इतनी अधिक व्याकुल और विस्मित थी कि एक क्षण में ही उनके सब कुछ हो जाने वाले उस व्यक्ति की मूर्खता को वह न देख सकी ।

सबेरे पौ फटते देख जब उन्होंने उससे जाने के लिए कहा तो अचानक उनके मुँह से निकल पड़ा, “हे भगवात् ! मेरे पति ने कोई आवाज भी सुन ली होगी तो मेरा सर्वनाश निश्चित है ।”

“क्या तुम्हें पछतावा है ?” जुलिये ने पूछा । कुछ प्रचलित वाक्य सोचने का अवसर मिला तो उसे यही सूझा ।

“आह ! इस क्षण तो बहुत है । पर तुमसे परिचय होने का कोई पछतावा मुझे नहीं ।”

जुलिये को अपनी प्रतिष्ठा के अनुकूल यही लगा कि वह दिन दहाड़े और कोई सावधानी बरते बिना ही अपने कमरे को लौटे ।

अनुभवी दिखाई पड़ने के मूर्खतापूर्ण विचार के कारण वह अपने छोटे से छोटे कार्य को निरन्तर सोच-समझ कर करता था । इसका केवल एक ही लाभ हुआ—जब दोपहर को भोजन के समय मा० द रेनाल से उसकी फिर भेट हुई तो उसका व्यवहार सयम और दूरदर्शिता का अपूर्व उदाहरण था ।

जहाँ तक मा० द रेनाल का प्रश्न था, जुलिये की ओर देखते ही उनका मुख लज्जा से गहरा लाल हो जाता था और साथ ही उसकी

ओर देखे बिना उन्हे मिनिट भर भी चैन न पडता था। वह अपनी बेचैनी के बारे में सजग हो उठी जो उसे छिपाने के प्रयत्न में और भी बढ़ती जा रही थी। जुलिये ने केवल एक बार दृष्टि उठाकर उनकी ओर देखा। किन्तु जब उसने दोबारा उनकी ओर न देखा तो वह सशक हो उठी। सोचने लगी क्या यह सम्भव है कि अब उसे मुझसे प्रेम नहीं। उसके लिए मेरी उम्र अधिक है। आह! मैं उससे दस बरस बड़ी हूँ।

भोजन के कमरे से बाग में जाते समय उन्होंने जुलिये का हाथ दबाया। प्रेम के ऐसे अनोखे प्रदर्शन से चकित होकर जुलिये बड़ी भावाविष्ट दृष्टि से उनकी ओर देखने लगा। सबेरे भोजन के समय वह बहुत ही आकर्षक लग रही थी और अपनी आँखें लगातार नीची ही रखने पर भी वह उनके सौन्दर्य के विभिन्न पक्षों के विषय में ही निरंतर सोचता रहा था। उनकी इस स्नेह-भरी दृष्टि से मा० द रेनाल को कुछ सात्वना मिली। इससे उनकी सारी व्यग्रता तो न मिटी पर अपने पति को लेकर मन में उठने वाला पश्चात्ताप लगभग पूरी तरह दूर हो गया।

दोपहर को भोजन के समय उनके पति का ध्यान तो किसी बात पर नहीं गया, किन्तु मा० देविल को लगा कि जैसे उनकी सखी अब फिसलने ही वाली हो। उस रोज दिन भर एक मित्र के नाते अपने साहसपूर्ण और तीखे वचनों से हर तरह के इग्न द्वारा वह यह प्रकट करती रही कि मा० द रेनाल कैसे भयकर गढ़े की ओर बढ़ी जा रही है।

उधर मा० द रेनाल जुलिये के साथ एकांत में मिलने के लिए तड़प रही थी। वह उससे पूछना चाहती थी कि उसे अब भी उनसे प्रेम है या नहीं। साधारणतः उनके स्वभाव की मधुरता कभी कम न होती थी किन्तु उस दिन कई बार उनकी सखी को यह लगते-लगते बचा कि वह उनकी राह में बाधा बन रही है।

उस दिन शाम को बाग में मा० देविल जान-बूझकर मा० द रेनाल

और जुलिये के बीच में बैठी । इसलिए मा० द रेनाल जो जुलिये का हाथ दबाने और होठों से लगाने की मधुर कल्पना में दिन भर विभोर रही थी, जुलिये से एक शब्द भी न कह सकी ।

इस निराशा ने उनकी उत्तेजना को और भी बढ़ा दिया । एक बात का उन्हें बड़ा भारी पछतावा था । पिछली रात जुलिये को अपने कमरे में आने के लिए बुरी तरह डाँटने के कारण उन्हें भय था कि कहीं आज वह आये ही नहीं । वह उस दिन बाग़से जल्दी ही उठकर अपने कमरे में चली गयी, किन्तु अपनी अधीरता को न दबा सकने के कारण जुलिये के दरवाजे पर कान लगाकर सुनने लगी । व्यग्रता और लालसा में बेचैन होने पर भी उन्हें उसके कमरे में प्रवेश करने का साहस न हुआ । अपना यह कार्य उन्हें बहुत ही अपमानजनक लग रहा था ।

सारे नौकर अभी सोने नहीं गये थे । इसलिए समझदारी ने उन्हें अपने कमरे में लौट आने के लिए लाचार किया । दो घंटे की प्रतीक्षा उन्हें दो शताब्दी की यत्राणा जैसी जान पड़ी ।

किन्तु जुलिये तो अपने कर्तव्य को अन्त तक पूरा करने पर उताव्र था । वह कोई काम बाकी छोड़ने को तैयार न था । जैसे ही एक का घंटा बजा वह चुपचाप अपने कमरे से निकला और गृह-स्वामी के सो जाने का पक्का पता लगाकर मा० द रेनाल के कमरे में जा पहुँचा । आज उसे अपनी प्रेयसी के सम्पर्क में अधिक सुख मिला क्योंकि आज कर्तव्य की चेतना इतनी प्रबल थी और उसके दोनों आँख-कान देखने और सुनने के लिए उत्सुक थे ।

अपनी आयु के विषय में मा० द रेनाल की बात सुनकर जुलिये को कुछ आश्वासन मिला । वह कहने लगी, “आह ! मैं तुमसे दस बरस बड़ी हूँ । तुम मुझे कैसे प्यार कर सकते हो ?” यह बात उन्होंने लगभग व्यर्थ ही कई बार कही, क्योंकि इस विचार से वह बहुत सन्नत थी । जुलिये उनकी इस व्याकुलता का कारण तो न समझ सका पर उसकी वास्तविकता अवश्य उसे अनुभव हुई । इस कारण हास्यास्पद दिखाई

पडने का भय उसके मन से लगभग जाता रहा ।

यह मूर्खतापूर्ण धारणा भी उसके मन से निकल गई कि अपने कुल की दरिद्रता के कारण वह निम्न कोटि का प्रेमी माना जाता होगा । जिस हृद तक जुलिये के हर्षातिरेक से उसकी प्रेयसी की कातरता कम होने लगी उसी हृद तक उनका आनन्द और सुख भी तथा उसके साथ ही साथ अपने प्रेमी के विषय में कुछ सोचने की उनकी क्षमता भी लौटने लगी । सौभाग्यवश इस अवसर पर जुलिये के व्यवहार में वैसी कोई रूखी आत्मसजगता नहीं थी जिसके कारण पिछली रात को उनके मिलन में विजय तो थी, आनन्द नहीं । यदि उन्हें जुलिये के व्यवहार में तनिक भी बनावट के चिह्न दीख पड़ते तो इस कष्टदायक ज्ञान से उनका सारा सुख ही सदा के लिए नष्ट हो जाता, क्योंकि यह उन्हें दोनों की आयु के अन्तर का ही दुःखद दुष्परिणाम जान पड़ता । क्योंकि यद्यपि मा० द रेनाल ने कभी प्रेम-सम्बन्धी सिद्धान्तों पर कोई विचार नहीं किया था तो भी प्रान्तों में प्रेम की चर्चा छिड़ने पर सम्पत्ति के बाद आयु के अंतर को लेकर ही लोग सदा अपनी बुद्धि की चतुराई दिखाया करते हैं ।

कुछ ही दिनों में जुलिये का समस्त आयु-सुलभ उबलता हुआ जोश लौट आया और वह पूरी तरह प्रेम में सराबोर हो उठा । उसने मन ही मन स्वीकार किया कि वह अपूर्व स्नेहमयी है, और उनका-सा लावण्य तो दुर्लभ ही है ।

अपने कर्तव्य-पालन के विचार को तो अब वह लगभग भूल ही गया । मुक्त भावातिरेक के एक क्षण में उसने अपनी सारी आशकाएँ तथा भय उनके आगे प्रकट कर दिये । इस आत्मप्रकटीकरण से उनकी भाव-विह्वलता और भी प्रबल हो गई । आनन्दातिरेक में मा० द रेनाल सोचती कि मेरा जैसा सौभाग्य किसका होगा ! तभी उन्होंने उस चित्र के बारे में भी पूछ लिया जिसने उन्हें इतना व्याकुल किया था । जुलिये ने सौगन्ध खाकर कहा कि वह चित्र तो एक पुरुष का था ।

जब मा० द रेनाल इतनी प्रकृतिस्थ हुई कि कुछ सोच सके तो

केवल एक आश्चर्य का भाव ही उनके मन में व्याप्त था। क्या सचमुच इतना सुख होता है ? मैं कैसे अभी तक उसके अस्तित्व से भी अनभिज्ञ रही ? आह ! यदि कहीं दस बरस पहले जुलिये से मेरा परिचय हुआ होता ! उस समय तो मैं सुन्दरी मानी ही जा सकती थी ।

जुलिये का मन ऐसे सब विचारों से कोसों दूर था। उसका प्रेम अभी तक महत्वाकांक्षा का ही दूसरा रूप था। इस प्रेम का केवल यही आनन्द उसके लिए था कि उस जैसे दरिद्र, दुखी और सब लोगों की घृणा के पात्रव्यवित को ऐसी सुन्दरी स्त्री प्राप्त है। उसके प्रेम सम्बन्धी क्रिया-कलाप, प्रेयसी के लावण्य को देखकर उसके हर्षोन्माद से अत मे मा० द रेनाल को आयु के अन्तर के विषय में आश्वासन हो गया। यदि उन्हें थोड़ा सा भी वह व्यावहारिक ज्ञान होता जो दुनिया के अधिकांश सभ्य देशों में तीस बरस की स्त्री को बहुत पहले ही प्राप्त हो चुकता है, तो वह इस प्रेम की अवधि के लिए अवश्य चिंतित होती, जो केवल विस्मय और सन्तुष्ट आत्मश्लाघा की भावनाओं पर आधारित था।

ऐसे भी क्षण होते थे जब जुलिये अपनी सारी 'महत्वाकांक्षाएँ भूल कर मा० द रेनाल की टोपियो, उनके वस्त्रों तक की प्रशंसा उच्छ्वसित भाव से करने लगता था। उनकी सुरभि को पीने में तो वह कभी थकता ही न था। कभी-कभी वह उनकी शीशे वाली आलमारी खोलता और उसके भीतर व्यवस्थित रूप से रक्खी प्रत्येक वस्तु की सुन्दरता को सराहता हुआ देर तक खड़ा रह जाता। उसकी प्रेयसी उसका सहारा लेकर उसकी ओर निहारती रहती, किन्तु वह स्वयं साधारणतः विवाह के अवसर पर किसी दुलहिन के उपयुक्त उन सब गहनों तथा अन्य सुन्दर वस्तुओं को ताकता रहता।

इस व्यक्ति से मेरा विवाह भी हो सकता था। कभी-कभी मा० द रेनाल सोचने लगती। कैसा उत्साही और ज्वलन्त व्यक्तित्व है ! उसके साथ जीवन कितना रोमांचकर होता !

जहाँ तक जुलिये का प्रश्न है वह नारी के शस्त्रागार के इन भयकर आयुधों के इतने समीप पहले कभी नहीं आया था। वह सोचता कि पेरिस में भी इससे सुन्दर कुछ नहीं हो सकता। ऐसे क्षणों में उसे अपने सुख में कोई बाधा नहीं दीखती थी। अपनी मुग्धता की सचाई और अपने प्यार से अपनी प्रेमिका के आनन्दातिरेक—इन दोनों बातों के मिलने से वह प्रायः उन निरर्थक सिद्धान्तों को भूल जाता था जिनके कारण मिलन के प्रारम्भिक क्षणों में वह इतना रूखा और लगभग हास्यास्पद हो उठा था। ऐसे बहुत से क्षण आते जब अपने सारे ढोंग को छोड़ इस महान नारी के आगे अपना हृदय खोलकर रख देना बहुत ही मधुर लगता, जो उसके अनगिनती छोटे-मोटे लोकाचारों के अज्ञान को देखकर और भी मुग्ध हो जाती थी। जुलिये को लगता कि उसकी प्रेयसी के सामाजिक स्तर ने उसको भी ऊँचा उठा दिया है।

स्वयं मा० द रेनाल को इस प्रतिभाशाली नवयुवक को, जिसकी भावी उन्नति का सबको विश्वास था, अनगिनती छोटी-छोटी बातें सिखाने में बहुत ही सात्विक आनन्द मिलता। यहाँ तक कि उपजिलाधीश और मा० वालनो तक उसकी प्रशंसा करने को मजबूर थे। मा० द रेनाल को वे लोग अपने इस कार्य के कारण कुछ मूर्ख जान पड़ते। किन्तु मा० देविल के विचार इससे बहुत भिन्न थे। उन्हें जो कुछ अनुमान हो रहा था उससे वह बहुत खिन्न थी। उन्हें लगता था कि उनकी सखी का सिर फिर गया है। उसे भी उनकी समझदारी की सलाह अब अप्रिय लगने लगी थी। इसलिए एक दिन वह बिना कुछ कारण बताये ही वेजि से चली गई और वास्तव में किसी ने उनसे कारण पूछा भी नहीं। मा० द रेनाल ने अवश्य इस पर थोड़े से आँसू बहाये पर शीघ्र ही उनको अपना आनन्द कुछ बढ़ा हुआ ही लगा क्योंकि सखी के चले जाने से अब उनके लिए सारा दिन अपने प्रेमी के साथ बिताना सम्भव हो गया था।

जुलिये ने अपनी प्रेयसी के मधुर ससर्ग को और भी तत्परता से

स्वीकार किया, क्योंकि जब भी वह देर तक अकेला रह जाता तो फूके का अभागा प्रस्ताव उसके मन को चंचल करने लगता। प्रेम करने का उसके जीवन में यह पहला ही अवसर था और इससे पहले उसे भी किसी ने प्यार न किया था। इसलिए इस नए जीवन के प्रारम्भ में ऐसे भी क्षण आये थे जब वह अपने मन को खोल देने के आनन्द से अभिभूत हो उठता था। ऐसे क्षणों में उसकी इच्छा होती कि मा० द रेनाल को अपनी वह महत्वाकांक्षा भी बता दे जो अब तक उसके जीवन की प्रमुख प्रेरणा रही थी। उसकी यह भी इच्छा होती कि फूके के प्रस्ताव में उसके मन में जो विचित्र प्रलोभन सा उत्पन्न कर दिया था उसके विषय में उनकी सलाह ले। किन्तु एक छोटी-सी घटना ने ऐसी निश्छलता असम्भव बना दी।

1

मेयर के प्रधान सहायक

एक दिन शाम को जुलिये उद्यान-कुँज के दूसरे छोर पर सब विघ्न-बाधाओं से दूर अपनी प्रेयसी के पास सपनों में खोया बैठा था। वह सोच रहा था कि ऐसे मधुर क्षण क्या सदा रहेंगे ? उसका मन पूरी तरह अपनी आजीविका का साधन निश्चित करने की कठिनाइयों में उलझा हुआ था, और उसे जीवन की इस सधि-बेला पर बड़ा क्षोभ हो रहा था, जिसमें अल्प साधनों वाले नौजवानों के लिए शैशव समाप्त होकर यौवन के दुःखद प्रारम्भिक दिन शुरू हो जाते हैं।

“आह !” वह जोर से बोल उठा, “नैपोलियन निश्चय ही फ्रांस के तरुणों के लिए देवदूत की भाँति था। अब कौन उसकी जगह लेगा ? अब उसके बिना मेरे जैसे, अथवा मुझसे कुछ अधिक साधन-सम्पन्न, उन अभागों युवकों का कैसे काम चलेगा जिनके पास अच्छी शिक्षा के लायक तो थोड़े-से पैसे हैं; पर इतने नहीं हैं कि सेना की भरती के लिए अपनी जगह धन देकर किसी दूसरे को तैयार कर सकें अथवा किसी अन्य व्यवसाय में सफल हो सकें ! हम कुछ भी करें,” उसने लम्बी सास लेते हुए कहा, “इस दुर्भाग्य की स्मृति हमें कभी सुखी न होने देगी !”

एकाएक उसने देखा कि मा० द रेनाल के माथे पर बल पड़ गए हैं। उनके चेहरे पर रूखी अवहेलना का भाव था। ऐसे विचार तो नौकर-चाकरो के ही उपयुक्त हैं। सम्पन्नता में लालन-पालन होने के कारण वह स्वभावतः ही जुलिये को अपनी ही भाँति समझती थी। वह

उससे अपने प्राणों से हजार गुना अधिक प्रेम करती थी और घन में उनकी तनिक भी दिलचस्पी न थी ।

जुलिये उनके विचारों को तो न समझ सका किन्तु उनके माथे के तेवरों से वह फिर धरती पर आ टिका । उसने बड़े आत्म-समय से काम लिया और आगे की बात कुछ इस ढंग से कही जिससे घास पर अपने इतने समीप बैठी इस सभ्रात महिला को यह लगे मानो वे पिछले वाक्य उसके अपने न थे, बल्कि हाल में अपने व्यापारी मित्र के यहाँ सुने हुए अधार्मिक लोगों के तर्कों के उद्धरण मात्र थे ।

“ठीक है, पर ऐसे लोगों से कोई सम्पर्क नहीं रखना चाहिए,” मा० द रेनाल ने कहा । प्रगाढ़ प्रेम के स्थान पर जो रूखेपन का भाव अचानक उनके चेहरे पर उदित हो गया था वह अभी मिटा न था ।

उनके रोष ने, बल्कि उसकी असावधानी पर उनकी खिन्नता ने, जुलिये को बहाये लिये जाने वाले मिथ्या स्वप्ना में पहला धक्का दिया । वह सोचने लगा कि यह कृपालु और मधुर है, मेरे लिए इनके मन में बहुत स्नेह भी है, किन्तु इनका पालन शत्रु के घर में हुआ है । इस तरह के लोग अनिवार्य रूप से उन तेजस्वी लोगों से डरते हैं जिनके पास अच्छी शिक्षा पाने के बाद कोई कार्य शुरू करने लायक धन नहीं होता । यदि हम लोगों को इन कुलीनों के साथ समान शस्त्रों से लड़ने का अवसर मिल जाय तो इनका क्या होगा ? उदाहरण के लिए, यदि मैं वेरियर का मेयर होता और मा० द रेनाल के समान ही सदाशयी और ईमानदार होता, तो मैं कितनी जल्दी मा० मास्लो तथा मा० वालनो जैसे लोगों और उनके सारे भ्रष्टाचरणों का अन्त कर देता । वेरियर में तुरन्त न्याय की विजय हो जाती । उनकी कार्य-कुशलता से मेरे मार्ग में कोई बाधा न पड़ती । वे तो किसी काम को गोलमाल किये बिना कर ही न पाते ।

उस दिन जुलिये का सुख स्थायित्व के बहुत ही समीप आ पहुँचा था । किन्तु हमारा नायक ईमानदार होने का साहस न कर सका । उसने यदि सघर्ष के मार्ग पर पैर रखा था तो उसमें कूद पड़ने का साहस उसे

उसी समय और वही दिखाना चाहिये था। मा० द रेनाल जुलिये की बात से कुछ चौक-सी गई थी, क्योंकि उनके सभी परिचित सदा यह कहते रहते थे कि निम्न वर्गों के शिक्षा-प्राप्त युवकों के कारण रोब्सप्येर के वापिस लौटने की संभावना विशेष रूप से बढ़ती जा रही है। वह बहुत देर तक जुलिये से खिची-खिची-सी रही। जुलिये को उनका यह व्यवहार विशेष रूप से तीखा लगा। किन्तु वास्तव में उसकी बातों से उत्पन्न होने वाले क्षोभ के साथ-साथ ही उनके मन में यह भय भी जाग उठा था कि कहीं उन्होंने उससे कोई बहुत ही अप्रिय बात न कह दी हो। इस अर्न्तद्वन्द्व से उनका मन त्रास से भर उठा। यह त्रास उनके उस मुख पर स्पष्ट झलक आया जो अप्रीतिकर लोगों से दूर होने पर तथा प्रसन्नता के क्षणों में इतना निश्छल और पवित्र लगता था।

जुलिये को अपने सपनों में डूबे रहने का अब और साहम न बचा। मन कुछ शान्त होने और प्रेम का ज्वार तनिक हलका होने पर अब उसे अनुभव होता था कि उसका मा० द रेनाल के कमरे में जाना बुद्धि-मानी नहीं है। यह अधिक उपयुक्त होगा कि वही उसके कमरे में आया करे। उन्हें यदि कोई नौकर-चाकर इधर-उधर जाते देख भी ले तो उसके बीसियों कारण बताये जा सकते हैं।

किन्तु इस व्यवस्था में भी कुछेक अड़चने थीं। जुलिये फूके से कुछ ऐसी किताबें ले आया था जिन्हें वह धर्मशास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते कभी-कभी पुस्तक-विक्रेता से न ले सकता था। उन्हें वह रात को ही खोलने का साहस कर पाता था। विशेषकर दो दिन पूर्व की घटना के पहले रात को इन पुस्तकों को पढ़ते समय किसी भी ऐसे व्यक्ति का आना उसे अच्छा न लगता था जिससे उसके पढ़ने में बाधा पड़े।

अब उसे इन पुस्तकों का एक नया ही अर्थ मिला जिसके लिए वह मा० द रेनाल का आभारी था। उनसे वह अनगिनती छोटी-छोटी बातों के बारे में तरह-तरह के सवाल पूछता रहता था। इन सब विषयों में इतना अज्ञान, अत्यन्त उच्च धराने के अतिरिक्त अन्य किसी युवक के

लिए, चाहे उसे अपनी स्वाभाविक बुद्धि पर कितना ही भरोसा ब्यो न हो, बहुत ही घातक सिद्ध हो सकता था ।

प्रेम की यह शिक्षा, और वह भी एक कम पढी-लिखी स्त्री द्वारा, जुलिये के लिए वरदान की भाँति थी, क्योंकि इससे उसे आज के समाज की प्रत्यक्ष भाँकी मिल सकी । ऐसे वर्णानो से जुलिये का मन इस दिशा में भ्रान्त होने से बच गया कि किसी जमाने में, दो हजार वर्ष अथवा साठ वर्ष पहले, वाल्तेर और लुई चौदहवें के युग में, वह समाज कैसा था । अपनी आँखों के आगे से एक पर्दा-सा हटते देखकर उसके हर्ष का ठिकाना न था, आखिरकार वेरियेर में चलने वाली अनगिनती बातों का रहस्य उसकी समझ में आने लगा ।

उसे पता चला कि बजासो में जिलाधीश के कार्यालय में पिछले दो वर्षों से तरह-तरह की कपटपूर्ण दलबदियाँ चल रही हैं, जिनके पीछे पेरिस के बहुत-से प्रमुख व्यक्तियों के पत्रों का हाथ है । सवाल यह था कि म० द म्वारो को, जो जिले भर में सबसे कट्टर धर्म-समर्थक थे, वेरियेर के मेयर का प्रधान सहायक नियुक्त किया जाय अथवा नहीं । उनका मुख्य प्रतिद्वन्द्वी एक बहुत ही धनी कारखानेदार था जिसे द्वितीय सहायक के सर्वथा महत्वहीन पद पर बिठाने की कोशिशें हो रही थी ।

जुलिये ने म० द रेनाल के घर में भोजन के लिए आने वाले उच्च वर्गीय लोगों के वार्तालाप में जो बेशुमार अस्पष्ट सकेत-से सुने थे, उन का अर्थ अब उसकी समझ में आ गया । यह सुविधाप्राप्त मंडली मेयर के सहायक का चुनाव करने में बेहद व्यस्त थी, यद्यपि बाकी नगर-वासियों को, विशेषकर उदारपथियों को, ऐसी सभावना की हवा तक न लगी थी । यह सवाल इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो उठा था कि वेरियेर की हाई स्ट्रीट के अब सार्वजनिक राजमार्ग हो जाने के कारण उसका पूर्वी हिस्सा कोई नौ फीट या इससे भी अधिक पीछे हटाया जाने वाला था ।

इस सड़क पर म० म्वारो के तीन मकान थे जो सड़क को पीछे

हटाने में गिराए जाते । इसलिए यदि वह सहायक मेयर बन जाते और फिर मा० द रेनाल के द्वारा सभा के लिए चुने जाने पर मेयर होते तो यह संभव था इस और किसी का ध्यान ही न जाय और सड़क पर आगे को निकले हुए मकानों में छोटी-मोटी हेर-फेर के बाद उन्हें सौ बरस तक और भी वैसे ही रहने दिया जाय । मा० म्वारो की सर्वविदित धर्म-परायणता तथा ईमानदारी के बावजूद उनसे निबटना आसान होता क्यों कि उनका परिवार बड़ा था । जिन मकानों को गिराया जाना था उनमें से नौ बेरियर के सम्भ्रात लोगों के थे ।

जुलिये को यह साजिश फोतन्वा के युद्ध के इतिहास से भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण जान पड़ी । फोतन्वा का नाम उसने पहले-पहल फूके द्वारा भेजी हुई एक किताब में पढ़ा था । जुलिये को याद पड़ा कि पाँच बरस पहले जब उसने शाम को मा० शेला के घर जाना शुरू किया था तो उसे कितनी ही बातें बड़ी आश्चर्यजनक लगा करती थी । किन्तु विवेक और विनम्रता धर्मशास्त्र के विद्यार्थी के लिए सबसे आवश्यक गुण समझे जाते हैं, इसलिए वह कभी कोई प्रश्न न पूछ पाया था ।

एक दिन मा० द रेनाल जुलिये के शत्रु अपने पति के निजी नौकर को कुछ आदेश दे रही थी ।

“किन्तु मैडम, आज तो महीने का अन्तिम शुक्रवार है,” नौकर ने बड़े विचित्र से भाव से उत्तर दिया ।

“अच्छी बात है, तो तुम जा सकते हो”, मा० द रेनाल ने कहा ।

“अच्छा !” जुलिये ने कहा, “तो वह उस गिरजाघर में जा रहा है जो अभी हाल में फिर से प्रतिष्ठित हुआ है । पर ये लोग वास्तव में वहाँ करते क्या है ? यह एक ऐसा रहस्य है जिसे मैं कभी नहीं समझ पाया ।”

“वह एक बड़ी अच्छी सस्था है पर बहुत विचित्र भी है,” मा० द रेनाल ने उत्तर दिया । “उसमें स्त्रियों को नहीं आने दिया जाता और जहाँ तक मैं जानती हूँ, वहाँ हर व्यक्ति परस्पर घनिष्ठता का व्यवहार

करता है। उदाहरण के लिए, यह नौकर वहाँ म० वालनो से मिले और उनसे घनिष्ठ मित्र के रूप में संबोधन करे तो वह व्यक्ति, जो इतना घमडी और इतना मूर्ख है, उसे वैसे ही शब्दों में उत्तर देगा। यदि तुम सचमुच उस स्थान के बारे में जानने को उत्सुक हो तो मैं म० मोजिरो और म० वालनो से विस्तार से पूछ कर बताऊँगी। हम लोग हर नौकर पीछे बीस फ्रैंक देते हैं, और यह केवल इसलिए कि वे लोग एक दिन हमारा गला न काटे।”

समय तीव्र गति से बीतता गया। अपनी प्रेयसी के लावण्य की स्मृति जुलिये के मन को महत्वाकांक्षा की काली छायाओं से मुक्त रखती थी। वे दोनों परस्पर-विरोधी दलों के थे। इस कारण उदासी भरे तथा गम्भीर विषयों पर उनसे कुछ न कहने की आवश्यकता ने अनजान में ही उसके ऊपर उनके आधिपत्य को और उस सुख को बढ़ा दिया जिसके लिए जुलिये उनका ऋणी था।

कभी-कभी जब बुद्धिमान बालको की उपस्थिति से बाध्य होकर उन्हें अपना वार्तालाप सयत और आवेगहीन भाषा तक सीमित रखना पड़ता था, तो जुलिये रसमग्न आँखों से उनकी ओर ताकता हुआ दुनिया के कारबार के विषय में उनकी बातें सुनता रहता था। प्रायः सड़के बनाने अथवा रसद का ठेका प्राप्त करने के सिलसिले में किसी घूर्ततापूर्ण धोखाधड़ी का किस्सा सुनाते-सुनाते मा० द रेनाल का मन कहीं दूसरी ओर भटक जाता, और जुलिये उन्हें झिड़कता कि वह उसके साथ भी अपने बच्चों के जैसा ही व्यवहार कर रही हैं। क्योंकि ऐसे भी दिन होते जब वह अपने आपको इस भुलावे में डाले रहती कि उसे वह अपने बच्चे की भाँति प्यार करती हैं।

उस क्षण वह उसके तरह-तरह के ऐसे हजारों निश्छल प्रश्नों का उत्तर देती जिन्हें अच्छे परिवार का पन्द्रह बरस का बालक भी भली-भाँति जानता है, पर दूसरे ही क्षण अपने प्रेमी के रूप में उसके प्रति अपना आदर प्रकट करने लगती। कभी-कभी वह उसकी प्रतिभा से भी आश्चर्य

हो उठती थी। प्रत्येक दिन उन्हें इस युवक पुरोहित में भावी महा-पुरुष का दर्शन अधिक स्पष्ट होता जाता। कभी वह उसकी पोप के रूप में कल्पना करती, कभी फ्रांस के प्रधान मंत्री रिशाल्य के रूप में। वह उससे कहती, “बया मैं तुम्हारे पूरे गौरव को देखने के लिए जीवित भी रहूँगी ? इस समय एक महापुरुष तुरन्त ही चाहिये। राज्य और चर्च दोनों को उसकी बड़ी आवश्यकता है।”

राजा का आगमन

तीन सितम्बर को रात में दस बजे हाई स्ट्रीट पर एक घुड़सवार सैनिक के आने से सारा बेरियर नींद से जाग उठा। सैनिक यह समाचार लाया था कि—के महाराज आगामी रविवार को वहाँ आने वाले हैं। उस दिन मंगलवार था। जिलाधीश ने इस बात की अनुमति, बल्कि कहना चाहिए आज्ञा, दे दी कि उस अवसर पर राजा को सैनिक सलामी देने के लिए एक सम्मानित सैनिक टुकड़ी तैयार की जाय। वैभव और उत्सव का अधिक से अधिक प्रदर्शन करने की आवश्यकता थी। तुरन्त एक हरकारा वेजि भेजा गया। म० द रेनाल उसी रात का बेरियर लौट आए और उन्होंने देखा कि सारे शहर में धूम मची हुई है। हर आदमी अपने आपको महत्वपूर्ण समझता था। जिन लोगों के पास अवकाश अधिक था उन्होंने राजा के नगर-प्रवेश को देखने के लिए घरों के छज्जे किराए पर ले लिये।

पर सैनिक टुकड़ी का नेतृत्व कौन करे? म० द रेनाल ने तुरन्त यह सोचा कि हटायी जाने वाली जायदाद के हित में यह बहुत आवश्यक है कि यह नेतृत्व म० म्वारो करे। इससे उन्हें डिप्टी मेयर का पद पाने में सुविधा होगी। म० म्वारो की धर्म-परायणता के विषय में तो किसी को संदेश न था, वह तो बिल्कुल बेजोड़ थी—पर अपने छत्तीस बरस के जीवन में आज तक कभी वह घोड़े पर न चढ़े थे। वह हर प्रकार से भीरु व्यक्ति थे, जिन्हें घोड़े से गिरने तथा हास्यास्पद

दिखाई पडने की सभावना से एक सी घबराहट होती थी ।

उस दिन सबेरे पाँच का घटा बजते ही मेयर ने उन्हें बुला भेजा ।

“देखिये”, उन्होंने कहा, “मैं यह मान कर आपसे सलाह ले रहा हूँ कि नगर के सब भले आदमी जिस पद पर आपको देखना चाहते हैं उस पर आप नियुक्त हो ही चुके हैं । इस अभागे शहर में कारखाने बढ़ रहे हैं, उदारपथी लोग लखपती होकर अधिकार प्राप्त करने का स्वप्न देखने लगे हैं । वे किसी भी अस्त्र का उपयोग करने से न चूकेगे । हमें राजा के तथा समूची राजतन्त्रात्मक व्यवस्था के हितों का, और सबसे अधिक पूजनीय चर्च के हितों का, ध्यान रखना है । आप ही बताइये कि सैनिक सलामी की टुकड़ी का संचालन किसको सौंपा जाय ?”

घोड़ों से बेहद डर लगने के बावजूद मा० म्वारो ने अन्त में इस सम्मान को शहीद की भाँति स्वीकार कर लिया । “मैं अवसर के उपयुक्त व्यवहार करने से पीछे न हटूँगा,” उन्होंने मेयर से कहा । अब इस बात के लिए बहुत कम समय बचा था कि सात साल पहले वेरियर में होकर राज-परिवार के किसी व्यक्ति के निकलने के अवसर पर काम आने वाली वदियों को नया रूप दिया जा सके ।

सात बजे मा० द रेनाल जुलिये और बच्चों के साथ वेर्जि से आ पहुँची । आते ही उन्होंने देखा कि उनका ड्राइंग रूम उदारदली महिलाओं से भरा हुआ है और वे उदारपथियों और राजपथियों की एकता पर व्याख्यान भाड़ रही हैं । वे सब उनसे यह प्रार्थना करने आई थी कि वह अपने पति से कहकर उनके पुरुषवर्ग को सम्मानित सेना में स्थान दिलवा दे । उनमें से एक बोली कि यदि मेरे पति को न लिया गया तो दुख के कारण उनका दिवाला निकल जायगा । मा० द रेनाल ने इन सब लोगों को बहुत जल्दी ही बिदा कर दिया । वह बहुत ही विचारग्रस्त दिखाई पड़ रही थी ।

जुलिये को इस बात से आश्चर्य तथा उससे भी अधिक क्रोध था

कि अपनी परेशानी के कारण को वह ऐसा रहस्य क्यों बना रही है। वह कटु भाव से सोचने लगा कि उनसे और आशा ही क्या हो सकती थी। अपने घर में महाराज का स्वागत करने की खुशी में प्रेम दब गया है। यह सब धूमधाम और दौड़धूप उन्हें बड़ी प्रिय है। इन सब बड़ी-बड़ी बातों से छुट्टी मिलने ही फिर मुझे प्यार करने लगेगी। आश्चर्य की बात यह थी कि इस कारण जुलिये के मन में उनके लिए और भी प्यार उमड़ रहा था।

फर्नीचर तथा सजावट वालों ने उनके मकान पर धावा बोलना शुरू कर दिया था। वह बहुत देर तक मा० द रेनाल से कुछ बात करने का अवसर ढूँढ़ता रहा पर कोई सफलता न मिली। आखिरकार वह उसे अपने ही कमरे से निकलती हुई मिली। उनके हाथ में उसी का एक कोट था। वहाँ उस समय और कोई न था और जुलिये उनसे बात करने के लिए बहुत उत्सुक था। पर उन्होंने उसकी कोई बात न सुनी और जल्दी से चली गई। वह सोचने लगा कि ऐसी स्त्री से प्रेम करना घोर मूर्खता है। महत्वाकांक्षा ने उसे भी अपने पति की भाँति ही पागल कर दिया है।

पर वास्तव में वह इससे भी अधिक पागल थी। उनके मन में बड़ी इच्छा थी कि किसी तरह, चाहे एक दिन के लिए ही सही, जुलिये अपने काले कपड़े छोड़कर कोई अन्य वस्त्र पहने। पर जुलिये की अप्रसन्नता के डर में वह कभी उससे इसका जिक्र न करती थी। उन्होंने बड़ी चालाकी से, जो उनकी जैसी सीधी-सरल स्त्री के लिए बड़े आश्चर्य की बात थी, पहले तो म० म्वारो को और फिर म० मोजिरो को जुलिये को सम्मानित सेना में नियुक्त करने के लिए राजी कर लिया था। इस नियुक्ति के लिए पाँच-छ और भी नौजवान उम्मीदवार थे जो बड़े सम्पन्न कारखानेदारों के बेटे थे और उनमें से दो तो अपनी धर्म-परायणता के लिए भी प्रसिद्ध थे। किन्तु मा० द रेनाल ने उन सबको छोड़कर जुलिये को नियुक्त करा लिया था।

म० वालनो अपनी गाड़ी नगर की अनन्य सुन्दरी को देकर अपने उत्तम नार्मन घोड़ों के लिए प्रशंसा प्राप्त करने की योजना बना रहे थे । पर वह भी एक घोड़ा जुलिये को, जिससे वह सबसे अधिक अप्रसन्न थे, देने को तैयार हो गए । किन्तु सम्मानित सेना के हर व्यक्ति के पास कर्नल के चाँदी के बने हुए स्कंधालकारों से युक्त सुन्दर नीला कोट था तो अपना ही था या किसी से उसने उधार ले लिया था । सात बरस पहले इन कोटों का प्रदर्शन बड़ा प्रभावशाली सिद्ध हुआ था । म० द रेनाल चाहती थी कि जुलिये के लिए एक नया कोट बनवाया जाय किन्तु समय बहुत कम था और केवल चार दिन में ही किसी को बजासो भेजकर वर्दी को तलवार टोरी आदि से, सक्षों में सम्मानित सैनिक के लिए आवश्यक प्रत्येक वस्तु से, सुसज्जित करवाना था । आश्चर्य की बात यह थी कि वह जुलिये के कपड़े वेरियेर में नहीं बनवाना चाहती थी । वह उसे और समूचे शहर को आश्चर्यचकित कर देना चाहती थी ।

सम्मानित सेना तथा जनमत के लिए आवश्यक सारी बातें तय हो जाने पर मेयर ने अब एक विशाल धार्मिक समारोह के आयोजन पर ध्यान दिया । महाराज वेरियेर से गुजरते समय से क्लेमों की प्रतिद्ध अस्थियों के दर्शन के लिए जाना चाहते थे जो नगर से कोई तीन मील की दूरी पर ब्रेन-ओ में प्रतिष्ठित थी । यह आवश्यक था कि इस अवसर पर बहुत से पुरोहित इकट्ठे हो सकें । पर इसका इन्तजाम बड़ा कठिन था क्योंकि म० मासलों म० शेला की सहायता लेने को किसी तरह राजी न थे । दूसरी ओर मार्कि द ला मोल, जिनके पूर्वज बहुत दिनों से इस प्रान्त के राज्यपाल होते आये थे और जो स्वयं राजा के साथ आने वाले थे, म० शेला को पिछ्छने तीस साल से जानते थे । यह अनिवार्य था कि वह वेरियेर में आते ही म० शेला के समाचार पूछें और कोई सन्देह होने पर स्वयं जाकर उन्हें उस छोटे से मकान में से ढूँढ निकालें जिसमें वह अपने अधिकांश अनुयायियों के साथ जाकर रहने

लगे थे । यह तो मुँह पर तमाचे की भाँति लगता ।

“यदि म० शेला मेरे पुरोहितों के साथ आये तो मेरी यहाँ भी बदनामी होगी और बजासो में भी । जानसेनपथी ! हे भगवान् !” म० मासलो ने कहा ।

म० द रेनाल ने उत्तर दिया, “आप चाहे जो कुछ कहें, मैं ऐसा कोई काम नहीं कर सकता जिससे वेरियेर की नगरपरिषद् को म० द ला मोल की भिड़की खानी पड़े । आप उन्हें जानने नहीं । दरबार में होने पर तो उनके विचार सयत और सुलभ रहते हैं । किन्तु यहाँ प्रान्तों में उनकी जबान बड़ी तीखी हो जाती है और उन्हें हर चीज का मजाक उड़ाने और लोगों को परेशान करने में बड़ा मजा आता है । वह बस मनोरंजन के लिए ही हमें उदारपथियों की दृष्टि में हास्यास्पद बनाने से न चूकेंगे ।”

तीन दिन के सोच-विचार के बाद, शनिवार की रात को जाकर, फादर मासलो के अभिमान ने मेयर की आशकाओं के आगे घुटने टेक दिये । म० शेला को बड़े मीठे-मीठे शब्दों में एक पत्र लिखा गया और उनमें अनुरोध किया गया कि वृद्धावस्था तथा अशक्तता होने हुए भी यदि संभव हो तो वे ब्रेल-ओ की अस्थियों के समारोह में पधारने का कष्ट करें । म० शेला ने अपने सहायक के रूप में जुलिये के लिए भी निमंत्रण की माग की । उनकी यह माँग स्वीकार करली गई ।

इतवार को बहुत सबेरे ही आसपास के पहाड़ी इलाकों से हजारों किसान वेरियेर की सड़कों में इकट्ठे होने लगे । सूरज पूरी तेज़ी से चमक रहा था । आखिरकार तीन बजे के लगभग भीड़ में हलचल मची, वेरियेर से कुछ मील दूर एक पहाड़ी के ऊपर एक बड़ी भारी आग जलती हुई दिखाई पड़ने लगी थी जो इस बात की सूचक थी कि महाराज इलाके में प्रवेश कर चुके हैं । तुरन्त ही घंटियाँ बजने लगी और इस महान् घटना की खुशी में नगर की एक पुरानी स्पेनिश तोर फिर से गोले दागने लगी । शहर की आधी आबादी छतों पर चढ़ गई थी । स्त्रियाँ सारी छज्जों पर थी । सम्मानित सेना एक पंक्ति में आगे बढ़ने लगी ।

सुख और स्याह

चारो ओर उनकी भडकीली वर्दियों की प्रशंसा हो रही थी। हर व्यक्ति उनमें अपने किसी न किसी सम्बन्धी अथवा मित्र को पहचान रहा था। म० म्वारो के हाथ हर क्षण अपनी जीन पकड़ने के लिए तैयार दिखाई पड़ते थे और उनकी इस भयभीत मुद्रा पर लोग हँस रहे थे।

किन्तु एक बात ने बाकी सब बातों को नगण्य कर दिया। नवी पक्ति में पहला सवार एक दुबला-पतला और बहुत ही सुन्दर नवयुवक था जिसे प्रारम्भ में तो कोई पहचान न सका पर शीघ्र ही कुछ लोगों के मुँह से रोष की चीख निकली और कुछ चकित होकर चुप हो गए। सनसनी सब तरफ थी। लोगों ने पहचान लिया कि म० वालनो के नार्मन घोड़े पर चढ़ा हुआ यह नवयुवक और कोई नहीं, बर्डई का बेटा सोरेल है।

सब लोग, विशेषकर उदारपथी, मेयर के ऊपर बरस पड़े। क्या! यह पुरोहित के कपड़े पहनने वाला मजदूर छोकरा उनके बेटों को पड़ाता है, इसीलिए उनकी यह हिम्मत कि अमुक-अमुक धनी कारखानेदारों को छोड़कर उसे सम्मानित सेना में नियुक्त कर दे। एक महाजन की बीवी बोली, “सब लोगों को मिलकर इस घमडी कमीने छोकरे की अकल ठिकाने लगानी चाहिए।” “छोकरा बड़ा धूर्त है, और तलवार भी बाँधता है”, महिला की पड़ोसिन ने उत्तर दिया। “ऐसा दगाबाज़ है कि लोगों पर हाथ छोड़ बैठे तो भी कोई ताज्जुब नहीं।”

अभिजात वर्ग के लोगों के विचार और भी खतरनाक थे। महिलाएँ आश्चर्य प्रकट कर रही थी कि ऐसी भारी रुचिहीनता के पीछे केवल मेयर का ही हाथ है अथवा किसी और का। साधारणतः लोग यह मानते थे कि मेयर को नीच कुल वालों से घृणा है।

जिस समय लोग जुलिये को लेकर तरह-तरह की चर्चाएँ कर रहे थे उस समय स्वयं जुलिये की खुशी का कोई ठिकाना ही न था। वह स्वभाव से ही साहसी और हिम्मत वाला था, और इस पहाड़ी शहर के अन्य नवयुवकों की अपेक्षा कहीं अधिक विश्वास के साथ घोड़े पर बैठा

हुआ था। स्त्रियों की दृष्टि से वह समझ रहा था कि सब उसी के बारे में चर्चा कर रही है।

उसकी बर्दी पर लगे हुए पदसूचक अलंकार नए होने के कारण और भी अधिक चमक रहे थे। हर मिनट उसका घोड़ा पिछली टांगों पर खड़ा हो जाता। उसकी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। जिस समय प्राचीन चहारदीवारी के नीचे पहुँचने पर एक छोटी-सी तोप की आवाज के कारण उसका घोड़ा पक्ति से बाहर निकल आया तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। सौभाग्य से वह गिरा नहीं और उस क्षण से अपने आपको एक वीर योद्धा अनुभव करने लगा, मानो वह अब शत्रु के तोपखाने पर आक्रमण का नेतृत्व करने वाला नैपोलियन की सेना का विशेष अफसर हो।

एक और व्यक्ति की प्रसन्नता इससे भी अधिक थी। मा० द रेनाल ने सबसे पहले तो टाउनहॉल की खिड़कियों से उसे निकलते हुए देखा और फिर अपनी गाड़ी में बैठकर जल्दी-जल्दी लम्बा रास्ता काट कर ठीक उस जगह आ पहुँची थी जहाँ उसका घोड़ा चौंक कर पक्ति से बाहर निकला था। यह दृश्य देखकर एक पल को तो वह भय से काँप उठी थी। अन्त में नगर के एक दूसरे दरवाजे से अपनी गाड़ी को सरपट दौड़ा कर वह उस रास्ते में भी पहुँच गई जहाँ से होकर महाराज निकलने वाले थे और धूल के उमड़ते हुए बादलों के बीच सम्मानित सेना के बीस कदम पीछे-पीछे चलती रही।

महाराज के सामने मेयर के भाषण के समय दस हजार किसान कठो ने जोर से कहा, “महाराज की जय हो !” एक घंटे भर पीछे सारे भाषण सुनने के बाद जब महाराज नगर में प्रवेश करने लगे तो छोटी सी तोप एक बार फिर से दनादन गोले दागने लगी। इसके फलस्वरूप एक दुर्घटना हो गई—गोलदाजों के साथ नहीं, वे तो लीपजॉग और मोमिरा में अपनी कुशलता का परिचय दे चुके थे। दुर्घटना म० म्वारो के साथ हुई, जिनके घोड़े ने उन्हें राजपथ के एक, और केवल एकमात्र,

कीचड के गढे के ऊपर सम्पूर्णत तथा भली भाँति स्थापित कर दिया था। इससे बड़ी सनसनी मची क्योंकि महाराज की गाड़ी निकलने के पहले वहाँ से उनका उद्धार आवश्यक था।

नए गिरजाघर के सामने महाराज अपनी गाड़ी से नीचे उतरे। गिरजाघर उस दिन तरह-तरह की लाल लटकनों से सजाया गया था। महाराज को भोजन के बाद फिर अपनी गाड़ी में बैठकर से क्लेमाँ के प्रसिद्ध अस्थि-अवशेषों की समाधिपर पूजा करने जाना था। वह मुश्किल से गिरजाघर के समीप पहुँचे होंगे कि जुलिये घोड़ा दौड़ाता हुआ म० द रेनाल के घर जा पहुँचा।

वहाँ उसने अपने सुन्दर आसमानी रंग के कोट, सैनिक पद-चिह्न और तलवार को उतार दिया। उन्हें रखते-रखने उसके मुँह से एक लम्बी साँस निकली। फिर उसने अपना मामूली काला सूट पहना और घोड़े पर सवार होकर शीघ्र ही ब्रे-ल-ओ जा पहुँचा, जो एक बड़ी भव्य पहाड़ी के शिखर पर बना था। जुलिये सोचने लगा कि उत्साह ने मानो किसानों की सख्या को और भी बढ़ा दिया है। बेरियर में वैसे ही चलने की जगह नहीं, किन्तु आज इस प्राचीन गिरजाघर के पास दस हजार से भी अधिक किसान इकट्ठे हैं।

गणतन्त्रीय पार्टी की लूट-मार से गिरजाघर आधा टूट-फूट गया था, किन्तु राजतंत्र की फिर से स्थापना के समय से उसमें बहुत कुछ मरम्मत हो चुकी थी और अब वहाँ दैवी चमत्कार होने की बात कही जाती थी। जुलिये ने शीघ्र ही फादर शेला को ढूँढ लिया। उन्होंने पुरोहित के वस्त्र इत्यादि देते समय उसे बहुत डाँटा। जुलिये वस्त्र पहिन कर तुरन्त म० शेला के पीछे चला जो उस समय आगद के तरुण बिशप से भेट करने जा रहे थे। ये सज्जन मार्कि द ला मोल के भतीजे थे जिनकी नियुक्ति हाल ही में इस स्थान पर हुई थी और जिन्हें महाराज को अस्थि-अवशेष दिखाने का भार सौंपा गया था। किन्तु बिशप का कोई पता ही न था।

सब पादरी अधीर हो रहे थे । वे उस प्राचीन गिरजाघर के अधेरे गौथिक बिहार में अपने प्रधान के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे । कोई पौन घंटे तक बिशप के तरण होने के लिए दुःख प्रगट करने के बाद यह उचित समझा गया कि अध्यक्ष महोदय उनको ढूँढ कर यह चेतावनी दे दें कि महाराज आने ही वाले हैं और अब सबको इकट्ठे हो जाना चाहिए । म० शेला को उनकी वृद्धावस्था के कारण अध्यक्ष चुना गया था । उन्होंने अपनी अप्रसन्नता के बावजूद जुलिये को अपने साथ आने का आदेश दिया । जुलिये पुरोहिती वस्त्रों में बड़ा सुन्दर लग रहा था । अन्य पादरियों की ही भाँति उसने अपने सुन्दर घुँघराले बालों को किसी न किसी उपाय से एकदम सीधा कर रखा था, यद्यपि असावधानी के कारण सम्मानित सैनिक वाली एड़ उसके पैरों में बँधी रह गयी थी जो चोगे के नीचे से कभी-कभी दिखाई पड़ जाती थी । म० शेला इस बात से और भी अधिक अप्रसन्न हो उठे ।

बिशप के निवास-कक्ष के समीप पहुँचने पर चमचमाती हुई वर्दी-धारी लम्ब-नङ्ग सेवकों ने बड़ी कठिनाई से इस वृद्ध पुरोहित को यह सूचना देने की कृपा की कि बिशप महोदय किसी से नहीं मिलेंगे । जब म० शेला ने उन्हें यह बताने का प्रयत्न किया कि ब्रे-ल-ओ के महान् धर्म सभ के अध्यक्ष होने के नाते उन्हें बिशप महोदय से किसी भी समय मिलने का अधिकार प्राप्त है, तो वे सब सेवक हँसने लगे । सेवकों की इस घृष्टता से जुलिये को बड़ा क्रोध आया । उसने स्वयं दम प्राचीन गिरजा-घर की तमाम कोठरियों में जाकर दरवाजे खडखडाने का निश्चय किया । उसके खडखडाने से एक छोटा-सा दरवाजा खुला । उसने भीतर प्रवेश करके पाया कि वह एक छोटी-सी कोठरी में आ पहुँचा है और उसके चारों ओर गले में जजीरे डाले और काले वस्त्र पहने बिशप महोदय के बहुत से सेवक इकट्ठे हैं ।

उसकी जल्दी देखकर इन लोगों ने सोचा कि उसे स्वयं बिशप ने भेजा होगा, इसलिये उन्होंने उसे जाने दिया । कुछ कदम आगे चलकर

वह गौथिक शैली में बने हुए एक विशाल तथा बहुत ही अँधेरे-से कमरे में जा पहुँचा, जिसकी दीवारों पर चारों ओर ओक के काले तख्ते जड़े हुए थे। एक के अतिरिक्त बाकी खिड़कियों पर नुकीली मेहराबों तक ईंटे चुन दी गई थी। यह चुनाई भद्दी, प्राचीन लकड़ी के काम की भव्यता की तुलना में बहुत ही भद्दी, लग रही थी। इस बड़े भारी हॉल की दो लम्बी दीवारों पर सुन्दर काठ-खुदाई का काम हो रहा था, जिसमें विभिन्न रंगों की लकड़ी पर से जॉन के आलोक-दर्शन की समस्त रहस्य-कथाएँ अंकित थीं।

इस उदास भव्यता में, यद्यपि वह ईंटों और सफेद चूने के कारण कुछ कुरूप हो गई थी, जुलिये को बहुत ही प्रभावित किया। वह वहाँ निश्चल और निम्नबद्ध खड़ा रह गया। हाल के दूसरे छोर पर, धूप के प्रवेश के लिए एकमात्र खिड़की के पास, उसे आबनूस में जड़ा हुआ एक दर्पण दिखाई पड़ा। दर्पण से कोई तीन फीट की दूरी पर बैंगनी रंग का पुरोहिता कैसक और रेशमी बेल के किनारे वाला सर्पलाइस पहने, किन्तु एकदम नगे सिर, एक नवयुवक खड़ा था। यह दर्पण इस स्थान में एकदम अजीब लग रहा था और निःसन्देह वहाँ नगर से लाया गया था।

जुलिये को लगा कि युवक कुछ क्रुद्ध दिखाई पड़ रहा है। अपना दाहिना हाथ उठाये हुए वह दर्पण के सामने बड़ी गम्भीरतापूर्वक आशीर्वाद की मुद्राएँ बना रहा था। जुलिये सोचने लगा कि इस सब का क्या अर्थ है? क्या यह तरुण पुरोहित कोई प्रारम्भिक विधियाँ पूरी कर रहा है? शायद वह बिशप का सचिव है। . . . और वह भी उन अनुचरों की भाँति घृष्ट होगा। हे भगवान् ! किन्तु मेरा बिगड़ता ही क्या है ! प्रयत्न ही कर देखूँ !

वह आगे बढ़ा और धीरे-धीरे समूचे हॉल को, उस एकमात्र खिड़की को अपने दृष्टि-पथ में रखकर, पार करने लगा। उसकी दृष्टि उस व्यक्ति के ऊपर जमी हुई थी जो पल भर विश्राम किये बिना धीरे-धीरे किन्तु

निरन्तर आशीर्वाद की मुद्राएँ बनाता जा रहा था ।

जैसे-जैसे जुलिये समीप पहुँचा, उसे उस चेहरे का क्रुद्ध भाव अधिकाधिक स्पष्टता के साथ दिखाई पड़ने लगा । उसके बेल लगे हुए सर्पलाइस की बहुमूल्यता ने अनजाने ही उसे विशाल दर्पण से कुछ कदम पहले ही एकदम रोक दिया ।

आखिरकार उसे लगा कि मुझे कुछ तो कहना ही चाहिये । किन्तु उस हाल की सुन्दरता ने उसे बहुत प्रभावित किया था और कठोर वचन सुनने की प्रत्याशा से वह पहले से ही कुछ अप्रस्तुत-सा अनुभव कर रहा था ।

युवक ने दर्पण में उसकी आकृति देखी और उसकी ओर घूमा । एकाएक उसके चेहरे का क्रुद्ध भाव विलीन हो गया और उसने यथा-सम्भव कोमल स्वर में जुलिये से कहा : “अच्छा बताइये, अब तो ठीक है न ?”

जुलिये चुपचाप खड़ा था । जैसे ही युवक उसकी ओर घूमा उसने उस के वक्ष पर लगा हुआ क्रास देख लिया था । तो यही है आगद के तरुण बिशप ! कितनी कम उम्र है इनकी, जुलिये सोचने लगा । अधिक-से-अधिक मुझसे सात-आठ साल बड़े होंगे । . . . और उसे अपने पैरो में बँधी हुई एड की याद करके लज्जा अनुभव होने लगी ।

“महामान्यवर,” उसने कुछ सवुचित भाव से कहा, “मुझे सघ के अध्यक्ष न० शेला ने भेजा है ।”

“हा-हा ! मैंने उनकी बहुत बड़ाई सुनी है,” बिशप ने ऐसे दिनम्र स्वर में उत्तर दिया कि जुलिये और भी मन्त्रमुग्ध-सा रह गया । “पर आप मुझे क्षमा कीजिये । मैंने आपको वह व्यक्ति समझा था जो मेरा मकुट लानेवाला था । पेरिस में रखने की अमावधानी के कारण वह ऊपर की ग्यार से बुरी तरह से टूट गया था । वह बहुत ही अशोभन दिखाई पड़ेगा,” तरुण बिशप ने कुछ उदासी से कहा, “और मैं अभी उसी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ !”

“यदि श्रीमान् अनुमति दे तो मैं जाकर मुकुट ले आऊँ ।”

जुलिये की सुन्दर आँखों का सदा की भाँति ही प्रभाव पड़ा ।

“अवश्य जाकर ले आइये,” बिशप ने अपूर्व विनम्र स्वर में उत्तर दिया । “सचमुच मुझे मुकुट तुरन्त चाहिये । सघ के महानुभावों को इस प्रकार प्रतीक्षा कराने का मुझे सचमुच बहुत ही दुःख है ।”

हाल के बीचोबीच पहुँचकर जुलिये ने पीछे मुड़कर देखा । बिशप ने फिर आशीर्वाद की मुद्रा का अभ्यास शुरू कर दिया था । इसका क्या अर्थ होगा ? जुलिये आश्चर्य से सोचने लगा । निस्सन्देह यह कोई धार्मिक विधि होगी जिसे समारोह के पहले करना आवश्यक होता है ।

अनुचरों की कोठरी में पहुँचकर उसने मुकुट उनके हाथों में देखा । जुलिये की अधिकारपूर्ण मुद्रा को देखकर उन लोगों की अनिच्छापूर्वक बिशप का मुकुट उसे दे दिया ।

इस भाँति मुकुट ले जाने में जुलिये को एक प्रकार के गौरव का अनुभव हुआ । हॉल में पहुँचकर वह बड़े आदर के साथ मुकुट को लेकर धीमे-धीमे चलने लगा । बिशप उस समय दर्पण के आगे बैठे हुये थे, पर बीच-बीच में अपने थके हुये दाहिने हाथ को आशीर्वाद की मुद्रा में उठाते जाते थे ।

जुलिये ने मुकुट पहिनने में उनकी सहायता की । मुकुट पहिन कर बिशप ने एक बार सिर को झटका दिया ।

“आह ! अब न गिरेगा,” उन्होंने जुलिये से प्रसन्न भाव से कहा । “अब आप थोड़ी देर हटकर खड़े होने की कृपा कीजियेगा ।”

बिशप शीघ्रतापूर्वक हॉल के बीचोबीच चले गये और फिर सधी हुई चाल से दर्पण की ओर वापिस आये । उनके चेहरे पर त्रास का भाव फिर लौट आया था और वह फिर से गम्भीरतापूर्वक आशीर्वाद की मुद्राएँ बनाने लगे थे ।

जुलिये चकित-सा निश्चल खड़ा था । उसे इस सब का अभिप्राय जानने की बड़ी तीव्र इच्छा हो रही थी, किन्तु साहस न होता था ।

एकाएक बिशप रुक गये और उसकी ओर देखते हुए अचानक ही कुछ हलके से भाव से कहने लगे “क्या ख्याल है आपका मेरे मुकुट के बारे में ? ठीक है न ?”

“ठीक है, श्रीमान् ।”

“कुछ पीछे को अधिक नहीं है ? ऐसा हुआ तो बड़ा भद्दा दिखाई पड़ेगा । पर साथ ही अफसर की टोपी की भाँति उसे एकदम आँखों के ऊपर तक भी न होना चाहिए ।”

“मुझे तो सचमुच बिलकुल ठीक दिखाई पड़ रहा है ।”

“हमारे महाराज बहुत ही दयोवृद्ध और निस्सन्देह अत्यन्त ही गभीर पुरोहितों के अभ्यर्त हैं । मैं नहीं चाहता कि मैं, विशेष कर अपनी आयु के कारण, कम गम्भीर दिखाई पड़ूँ ।”

बिशप फिर इधर-उधर टहलने और आशीर्वाद की मुद्राएँ बनाने लगे

जुलिये को अचानक ही सारी स्थिति, समझ में आ गयी । स्पष्ट ही यह आशीर्वाद देने का अभ्यास कर रहे हैं ।

कुछ पलों बाद उन्होंने कहा, “मैं अब तैयार हूँ । जाइये और अध्यक्ष तथा सभ के अन्य पुरोहितों को चेतावनी दे दीजिये ।”

शीघ्र ही म० शेला तथा अन्य दयोवृद्ध पुरोहित एक भव्य खुदाई के काम वाली दीवार में से होकर, जिसकी ओर जुलिये का ध्यान न था, भीतर आये, किन्तु इस बार वह अपने उचित स्थान पर सबसे पीछे था और द्वार के भीतर एक साथ घुसते हुए पुरोहितों के सिर के ऊपर से उसे बिशप की हल्की-सी झाँकी दिखाई पड़ सकी ।

बिशप ने धीरे-धीरे हॉल पार किया । जब वह ड्योडी पर पहुँचे तो अन्य पुरोहित पक्तिबद्ध हो गये । क्षण भर की अव्यवस्था के बाद पक्ति एक स्तुति पढ़ती हुई आगे बढ़ी । बिशप म० शेला तथा एक अन्य अत्यन्त ही वृद्ध पुरोहित के बीच सबसे पीछे थे । जुलिये भी म० शेला के सहायक के रूप में बिशप के एकदम पीछे ही था । वे लोग ब्रे-ल-ओ

के गिरजाघर के लम्बे बरामदों को पार करके, जो बाहर खुली हुई चम-चमाती हुई धूप के बावजूद अधकार और सीलन से भरे हुए थे, विहार के द्वार मडप तक जा पहुँचे। जुलिये ऐसे भव्य समारोह को देखकर विस्मय और प्रसन्नता से अवाक् था। बिशप की अल्पवयस्कता को देख कर फिर से जाग्रत होने वाली उसकी महत्वाकांक्षा के और उनकी भावना की सुकुमारता तथा विनम्रता के बीच जुलिये का हृदय वशीभूत करने के लिए होड़-मी चलने लगी। यह विनम्रता म० द रेनाल के अच्छे-से अच्छे व्यवहार से भी एकदम भिन्न थी। जुलिये सोचने लगा कि समाज के उच्चतम स्तर के जितने समीप आओ उतना ही ऐसा सुन्दर व्यवहार अधिकाधिक मिलता है।

गिरजाघर में उन्होंने बगल के दरवाजे से प्रवेश किया। एकाएक कान के परदे फाड़ देने वाला शोर उसकी छत में गूँज उठा। जुलिये को लगा कि वह जैसे अभी तुरन्त भरभरा कर गिर पड़ेगी। वास्तव में यह उस छोटी-सी तोप के गोलों की आवाज थी जो आठ घोड़ों की गाड़ी पर अभी-अभी पहुँची थी और आने के साथ ही लीपजीगी गोलन्दाजों ने उस से मिनट में पाँच की रफतार से गोले छोड़ने शुरू कर दिये थे, मानो सामने जर्मन सैनिक पक्ति बाँधे खड़े हों।

पर इस शोर का जुलिये के ऊपर अब कोई प्रभाव न पड़ा। इस समय वह नैपोलियन अथवा सैनिक गौरव के स्वप्न नहीं देख रहा था। इतनी कम उम्र और आगद के बिशप ? वह यही सोच रहा था। पर यह आगद कहाँ है ? और इससे धन कितना मिलता होगा ? शायद दो या तीन हजार फ्रैंक प्रतिवर्ष ?

बिशप महोदय के अनुचर एक बड़ा भारी राजसी चढ़ोवा लेकर प्राट हुए। म० शेला एक खम्भा पकड़े हुए थे। पर वास्तव में उसे जुलिये ने साध रखा था। बिशप उसके नीचे आकर खड़े हो गये। वह अब सचमुच वृद्ध दिखाई पड़ने लगे थे। हमारे नायक के विस्मय का कोई ठिकाना न था। आदमी में चतुरता हो तो क्या नहीं कर सकता,

वह सोचने लगा ।

आखिरकार महाराज ने प्रवेश किया । जुलिये को उन्हें बहुत समीप में देखने का सौभाग्य मिला । बिशप ने एक बड़ा स्निग्ध-सा भाषण दिया, साथ ही वह अपने स्वर में हल्का-सा घबराहट का भाव लाना भी नहीं भूले, जिससे महाराजा को बड़ी प्रसन्नता हुई । हम यहाँ ब्रे-ल-ओ के उस समारोह का वर्णन अधिक नहीं करेंगे जिससे एक पखवाड़े तक उस प्रदेश के सारे अखबार भरे रहते थे । बिशप के भाषण से जुलिये को पता चला कि महाराज साहसिक चार्ल्स के वंशधर हैं ।

बाद में जुलिये को इस समारोह में होने वाले खर्च के हिसाब की जाँच करने का भार मिला । म० द ला मोल ने अपने भतीजे को बिशप तो बनवा ही दिया था, अब वे सारा खर्च भी स्वयं उठाने को तैयार थे । केवल ब्रे-ल-ओ के समारोह में ही तीन हजार आठ सौ फ्रैंक खर्च हुए थे ।

बिशप के भाषण के बाद महाराज ने उत्तर दिया । महाराज चदोवे के नीचे आकर खड़े हुए और फिर वेदी के समीप एक गद्दी पर बड़े भक्तिभाव से झुक गये । जुलिये म० शेला के पैरो के पास बैठा था, मानो रोम की सिस्टर्ड चैपल में किसी कार्डिनल के समीप बैठा हुआ कोई उनका अग्ररक्षक हो । चारों तरफ सुगंध की लहरे-सी उमड़ रही थी । बन्दूको और तोपों से अनगिनती गोले छूट रहे थे । किसान हर्ष और धार्मिक उत्सव से उन्मत्त थे । ऐसा एक दिन जॅकोबिन समाचार पत्रों के सौ अंकों के काम पर पानी फेर देता है ।

जुलिये प्रार्थना में पूरी तरह डूबे हुए महाराज से कोई छ फीट दूर होगा । उसकी पहली बार एक छोटे-से व्यक्ति पर दृष्टि पड़ी जिसके मुख पर प्रखरता और बुद्धिमानी का भाव था और जो किसी प्रकार की सजावट से रहित कोट पहने हुए था, किन्तु उसके इस सादे कोट के ऊपर एक आसमानी रंग का फीता था । वह अन्य समस्त सरदारों से, जिनके कोटों पर ऐसा खचाखच जरी का काम हो रहा था कि जुलिये के शब्दों में कपड़ा दिखाई तक न पड़ता था, महाराज के सबसे अधिक समीप था ।

कुछ ही देर बाद जुलिये को पता चला कि यही म० द ला मोल है । उसे उनका व्यवहार गर्वोद्धत जान पडा । वह सोचने लगा कि यह मार्कि उतने विनम्र न होंगे जितने ये सुन्दर छोटे-से बिशप महोदय है । आह, धार्मिक क्षेत्र में आकर व्यक्ति कितना विनम्र और बुद्धिमान हो जाता है । किन्तु महाराज तो अस्थि-अवशेष देखने आये है । पर यहाँ तो कोई अस्थि-अवशेष दिखाई नहीं पडते । कहा होगा से क्लेमाँ ?

पास ही बैठे एक तरुण पुरोहित ने उसे बताया कि वे पूज्य अस्थियाँ भवन में ऊपर की मजिल में समाधि-कक्ष में रखी है । किसी शासनारूढ राजा के पधारने पर नियम यह है कि चर्च के निचले पदाधिकारी बिशप के साथ नहीं जाते, किन्तु, ज्यो ही बिशप समाधि-कक्ष की ओर बढ़े उन्होंने म० शेला को बुला लिया । जुलिये भी साहस करके उन्हीं के पीछे-पीछे चल पडा ।

बहुत-सी सीढियाँ चढ़ने के बाद वे लोग एक अत्यन्त ही छोटे-से द्वार के सामने जा पहुँचे । द्वार की चौखट गौथिक शैली की थी और उसके ऊपर भारी सोने का काम ऐसे चमचमा रहा था मानो एक दिन पहले ही बना हो । इस द्वार के सामने वेरियेर के उच्चतम परिवारों की चौबीस युवतियाँ घुटनों के बल बैठी थी । द्वार खोलने के बाद स्वयं बिशप भी उन तरुणियों के बीच ही, जो सब की सब बहुत ही सुन्दर थी, घुटनों के बल बैठ गये । जिस समय बिशप जोर से प्रार्थना कर रहा था तो ऐसा जान पडता था कि उसके बेल से सुसज्जित सुन्दर वस्त्रों, आकर्षक विनम्र व्यवहार तथा सलोने तरुण मुख के प्रति इन युवतियों का आकर्षण किसी भाँति मिटता ही न था । हमारे युवक के मन में जो कुछ थोड़ी-बहुत विचारशक्ति थी वह भी इस दृश्य को देखकर जाती रही । तभी अचानक द्वार खुल गया । छोटी-सी चंपल मानो आलोक से प्रज्वलित हो उठी । वेदी के ऊपर आठ-आठ की पक्ति में रखी हुई अनगिनत मोमबत्तियाँ फूलों के गुच्छों के बीच सजी हुई दिखाई पड रही थी । श्रेष्ठतम धूप की मधुर गन्ध उस पवित्र स्थान के द्वार से उमडती-सी

चली आ रही थी। इस नई पुती छोटी-सी चैपल की छत बहुत ऊँचा थी। बैठी हुई युवतियाँ अपनी विस्मय की चीख को न रोक सकी। उस स्थान पर उन चौबीस युवतियों, दो पुरोहितों और जुलिये को छोड़कर किसी को नहीं आने दिया गया। शीघ्र ही महाराज आ पहुँचे, उनके पीछे केवल म० द ला मोल और प्रधान दरबारी थे। स्वयं अग्ररक्षक शस्त्राभिवान की मुद्रा में बाहर ही खड़े रहे थे।

महाराज प्रार्थना की चौकी पर बैठ गये। उसी समय जुलिये को, जो उस सुनहले चौखट से सटा बैठा था, एक युवती की नगी बाँह के बीच से एक तरुण रोमन सैनिक के वेश में से क्लेमाँ की मूर्ति वेदी के नीचे ढकी हुई दिखाई पड़ी। उनके गले पर एक बड़ा-सा घाव था, जिस से रक्त बहता हुआ जान पड़ता था। कलाकार ने अपनी कला का अपूर्व प्रदर्शन किया था। अधबुली अलसाई सी आँखें शोभा से परिपूर्ण थी, आधे भिचे हुए, किन्तु प्रार्थनारत उनके सुन्दर मुख पर रेखे फूट रही थी। जुलिये के समीप बैठी हुई युवती की आँखों से इस दृश्य को देख कर आँसू निकल पड़े। एक आँसू जुलिये के हाथ पर भी गिरा।

क्षण भर गहनतम निस्तब्धता में प्रार्थना करने के बाद, जो केवल तीस मील के घेरे में प्रत्येक गाँव में बजने वाली सुद्धर घंटियों में ही भग होती थी, आगद के बिशप ने महाराज से कुछ बोलने की अनुमति माँगी। उन्होंने एक छोटा-सा अत्यन्त हृदयस्पर्शी भाषण दिया जिसके शब्द अपनी सहजता के कारण ही और भी मार्मिक थे।

“यीशु-भक्त युवतियों, यह कभी न भूलियेगा,” उन्होंने कहा “कि आपने अभी-अभी संसार के एक महानतम सम्राट् को सर्वशक्तिमान और भयकर ईश्वर के एक सेवक के सामने घुटने टेकते देखा है। ईश्वर के ये सेवक यद्यपि दुर्बल होते हैं और इस संसार में उन्हें यातना देकर समाप्त ही कर दिया जाता है, जैसे कि आपके आगे से क्लेमाँ के घाव से अभी तक बहते हुए रक्त से प्रगट होगा। किन्तु वे स्वर्ग में पहुँचकर विजयी होते हैं। यीशु-भक्त देवियों, क्या आप इस दिवस को सदा स्मरण

रखकर ईश्वर-विमुख व्यक्ति को घृणा का पात्र न मानती रहेगी ? क्या आप उस महान् और भयकर किन्तु तो भी इतने दयालु ईश्वर के प्रति सदा अनुरक्त न रहेगी ?” इन शब्दों के साथ बिशप बड़ी अधिकारपूर्ण मुद्रा से खड़े हो गये ।

“क्या आप मुझे इस बात का वचन देती है ?” उन्होंने एक प्रेरणा-प्राप्त व्यक्ति की भाँति बाँहे फैलाए हुए पूछा ।

“हम वचन देती है,” युवतियों ने आँखों में आँसू भरकर कहा ।

“उस महा भयानक ईश्वर के नाम पर मैं आपका वचन स्वीकार करता हूँ,” बिशप ने गहरे गूँजते हुए स्वरों में कहा । समारोह समाप्त हुआ ।

स्वयं महाराजा की आँखों में आँसू थे । बहुत देर में जुलिये को इतना पूछने लायक आत्मसंयम प्राप्त हुआ कि बर्गण्डी के ड्यूक फिलिप द्वारा रोम से भेजी गई इस सत की अस्थियाँ किस स्थान में रखी गई हैं । उसे बताया गया कि वे उस सुन्दर मोम की मूर्ति के भीतर ही छिपी हुई हैं ।

महाराज ने कृपा करके उन युवतियों को, जो उनके साथ चैपल में उपस्थित थी, इस बात की आज्ञा दे दी कि वे एक लाल फीता धारण करें जिसके ऊपर निम्नलिखित शब्द कहे हुये थे : ‘ईश्वर-विमुख के प्रति घृणा भगवान के प्रति निरन्तर भक्ति ।’

म० द ला मोल ने किसानों में दस हजार शराब की बोतलें बाँट देने की आज्ञा दे दी । उस दिन रात को वेरियेर में उदारपथियों ने राज-पथियों की तुलना में सौ गुनी अधिक रोशनी अपने घरों में करने में कोई आपत्ति अनुभव नहीं की । नगर से विदा लेने के पूर्व महाराज म० म्वारो के घर भी पधारे ।

विचार ही में दुःख है

म० द ला मोल जिस कमरे में ठहरे थे उसका असबाब यथास्थान रखने में मदद करते समय जुलिये को एक चार तह मुड़ा हुआ कागज का टुकड़ा हाथ लगा। पहले पृष्ठ पर नीचे की ओर उसे ये शब्द दिखाई पड़े : 'नाना उपाधि विभूषित, महामान्यवर मार्कि द ला मोल की सेवा में' इत्यादि-इत्यादि।

वह किसी अत्यन्त ही फूहड़, रसोइयो के-से अक्षरों में लिखा हुआ एक आवेदन-पत्र था, जो इस प्रकार था :

“मान्यवर मार्कि महोदय,

मैं जीवन भर धार्मिक सिद्धान्तों को मानने वाला व्यक्ति रहा हूँ। मैं सन् '६३ के स्मरणीय घेरे के समय गोलाबारी के भीतर ल्यो में था। मैं अपने स्थानीय गिरजाघर में हर रविवार को प्रार्थना में सम्मिलित होता हूँ। मैंने अपने ईस्टर-सम्बन्धी कर्तव्यों को पूरा करने में कभी कोई भूल नहीं की है। मेरा रसोइया—क्रान्ति से पहले मेरे यहाँ बहुत से नौकर थे—प्रत्येक शुक्रवार को मछली पकाता है। बेरियर में मुझे सभी सम्मान की दृष्टि से देखते हैं और मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि यह सम्मान उपयुक्त ही है। जुलूसों में मेरा स्थान क्यूरे महोदय तथा मेयर महोदय के पास चढ़ोवे के नीचे होता है। महत्वपूर्ण अवसरों पर मैं अपनी खरीदी हुई एक बड़ी मोमबत्ती लेकर चलता हूँ। आपको इस सबके लिखित प्रमाण पेरिस के राजकीय कोष में मिलेंगे। मैं मान्यवर

मार्कि महोदय से यह निवेदन करना चाहता हू कि मुझे वेरियेर मे नीलामघर का भार सौपा जाय । यह स्थान शीघ्र ही रिक्त होने की सम्भावना है, क्योंकि जो व्यक्ति इस समय इस स्थान पर नियुक्त है, वह बहुत ही बीमार है और इसके अतिरिक्त वह चुनावो मे गलत दल को बोट देता है, इत्यादि-इत्यादि ।

ह० (द शोले)”

इस आवेदन-पत्र के एक किनारे पर म० स्वारो के हाथ की एक टिप्पणी थी, जिसकी पहली पक्ति इस प्रकार थी : “कल मुझे इसी अत्यन्त योग्य व्यक्ति के विषय मे आपसे कुछ निवेदन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, इत्यादि-इत्यादि ।”

जुलिये सोचने लगा कि यह मूर्ख शोले भी मुझा रहा है कि मुझे कौन-सा रास्ता अपनाना चाहिये ।

वेरियेर मे महाराज के आगमन के एक सप्ताह के भीतर ही महाराज, बिशप, मार्कि द ला मोल, दस हजार शराब की बोतले और घोड़े से लुढ़क पडने वाले म० स्वारो—जो किसी सम्मान-प्राप्ति की आशा मे महीने भर से घर से न निकले थे—आदि विषयो पर होने वाले अनगिनती हास्यास्पद वाद-विवादो, मनगढन्त कहानियों और अनगिनती झूठे किस्सो का कोई चिह्न न बचा । केवल एक बात ही बराबर अब भी कही जा रही थी कि बढई के बेटे जुलिये सोरेल को सम्मानित सेना मे इस प्रकार जबर्दस्ती घुसा लेना एकदम अनुचित था । छपे हुए कपडे के कारखानेदारो की बाते जो सबेरे, दोपहर और रात को काफी मे बैठ कर समानता का उपदेश भाडा करते थे, अब सुनने योग्य थी । वह घमण्डी और दूसरो को हीन समझने वाली मा० द रेनाल ही इस अक्षम्य घटना की जड मे थी और क्यों ? उस नये जवान पादरी सोरेल की सुन्दर आँखो और गुलाबी गालो से सब कुछ प्रकट है ।

वैर्जि लौटने के थोडे ही समय बाद सबसे छोटे लडके स्तानिस्लास जाँबिये को बुझार आ गया । मा० द रेनाल को तुरन्त ही दारुण पश्चा-

ताप ने जकड़ लिया। पहली बार उन्होंने अपने प्रेम के लिये स्वयं को अपराधी पाया मानो किसी दैवी चमत्कार से अचानक ही उन्हें अपने पाप का अनुभव हो गया हो। वह स्वभाव से ही बहुत धार्मिक थी, किन्तु अभी तक उनके मन में यह विचार ही न आया था कि भगवान् की दृष्टि में उनका पाप कितना बड़ा है।

बहुत दिनों पहले कान्वेन्ट में पढ़ते समय भगवान् के प्रति उनकी बड़ी गहरी लगन थी। अब इन परिस्थितियों में उन्हें उसका भय अनुभव हुआ। उनके भय में कोई बुद्धिसंगत बात न थी, इसलिये जो आन्तरिक संघर्ष उनके हृदय के टुकड़े किये हुए था वह और भी भयकर था। जुलिये ने देखा कि समझाने के प्रयत्न से उनके मन को सान्त्वना मिलने के बजाय वह और भी क्षुब्ध हो उठती हैं। ऐसे तर्कों में उन्हें शैतान की आवाज सुनाई पड़ती थी। स्वयं जुलिये को स्तानिस्लास से बहुत प्रेम था। इसलिये उसकी बीमारी के विषय में, जो जल्दी ही बहुत बढ़ गई, उनसे बातचीत करने का उसे अधिकार था। बीमारी के बढ़ते ही मा० द रेनाल का अनवरत पश्चात्ताप इतना बढ़ गया कि उनके लिये नींद भी दूभर हो उठी। अब वह अपना भीषण क्रुद्ध मौन तोड़ती ही न थी। यदि वह मुँह खोलती तो मनुष्य और भगवान् के आगे अपने अपराधों को स्वीकार करने के अतिरिक्त और कुछ न कर पाती। “मैं तुमसे भीख माँगता हूँ,” अकेले में मिलते ही जुलिये उनसे कहता, “कि किसी से कुछ कहना मत। अपनी इस पीड़ा का एकमात्र भागी मुझे ही रहने दो। यदि तुम्हें अब भी मुझसे प्यार हो तो किसी से कुछ मत कहो। तुम्हारी किसी बात से स्तानिस्लास का ज्वर नहीं मिटेगा।”

किन्तु उसके सान्त्वना-भरे शब्दों का कोई प्रभाव न पड़ा। वह नहीं जानता था कि मा० द रेनाल के मन में यह विचार जोर पकड़ गया है कि ईर्षालु ईश्वर के क्रोध को शान्त करने के लिये उन्हें या तो जुलिये से घृणा करनी होगी या अपने बेटे को मरते देखना होगा। यह चेतना कि वह अपने प्रेमी से घृणा नहीं कर सकेगी, उन्हें इतना दुःखी कर

रही थी ।

“तुम मेरे पास से चले जाओ,” उन्होंने एक दिन उससे कहा “ईश्वर के नाम पर इस घर को छोड़ दो । तुम्हारी उपस्थिति से ही मेरे बेटे की मृत्यु हो रही है । भगवान् मुझे दण्ड दे रहा है,” उन्होंने बहुत ही धीमे से कहा । “और वह न्यायी है । उसके न्याय के लिये ही मैं उसकी पूजा करती हूँ । मेरा पाप भयकर है किन्तु तो भी मैं बिना पश्चात्ताप के जीवित रही । यह इस बात का पहला चिह्न था कि भगवान् ने मुझे त्याग दिया है । मैं तो दोहरे दंड के योग्य हूँ ।”

जुलिये बहुत विचलित हो उठा । इसमें न तो उसको कोई ढोंग दिखाई पड़ा और न किसी प्रकार का अतिरजन । वह सोचने लगा कि इन्हे यह लग रहा है कि मुझे प्यार करने से इनके बेटे की मृत्यु हो जायेगी । किन्तु तो भी बेचारी मुझे अपने बेटे से अधिक प्यार करती है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनके पश्चात्ताप की असलियत यही है जो उन्हें तिल-तिल कर मार रहा है । इसमें भावना की कितनी भव्यता है । पर ऐसा प्रेम मैं किसी के हृदय में कैसे उत्पन्न कर सका—मैं जो इतना गरीब हूँ, इतना अशिक्षित हूँ, इतना अज्ञानी हूँ और कभी-कभी इतना अशिष्टपूर्ण व्यवहार करता हूँ ?

एक रात बच्चे का ज्वर बड़ी तीव्र अवस्था में था । लगभग दो बजे सबेरे म० द रेनाल बच्चे को देखने आये । बच्चा ज्वर में तड़प रहा था और अपने पिता को न पहचान सका । एकाएक मा० द रेनाल अपने पति के पैरों पर गिर पड़ी । जुलिये ने देखा कि वह अब उनसे सारी बात कहकर सदा के लिए अपना सर्वनाश ही करने वाली है । दुर्भाग्यवश म० द रेनाल उनके इन विचित्र व्यवहार से अप्रसन्न हो गये ।

“नमस्कार ! मैं अब जा रहा हूँ,” जाने के लिये मुडते-मुडते उन्होंने कहा ।

“नहीं, नहीं ! मेरी बात सुनो !” उनकी पत्नी ने उनके सामने घुटनों के बल बैठे हुए उन्हें रोकते-रोकते कहा । “तुम्हें सारी सचाई

जाननी ही चाहिये । अपने बेटे को मैं ही मारे डाल रही हूँ । मैंने ही उसे जीवन दिया था और अब मैं ही लिये ले रही हूँ । भगवान् मुझे दण्ड दे रहे हैं । भगवान् की दृष्टि में मैं हत्या की अपराधिनी हूँ । मेरा सर्वनाश और अपमान होना जरूरी है—हो सकता है मेरे बलिदान से भगवान् सन्तुष्ट हो जाये ।”

यदि म० द रेनाल कुछ कल्पनाशील व्यक्ति होते तो उस दिन उन्हें सब कुछ पता चल जाता । “बे-सिर-पैर के खयाल !” अपने पैरो को बाहो में जकड़ती हुई पत्नी को हटाकर जाते-जाते उन्होंने कहा । “सब बे-सिर-पैर के खयाल हैं, और कुछ नहीं ।” उन्होंने आगे जोड़ा, “जुलिये, देखो सबेरा होते ही डाक्टर को बुला लेना ।” और वह सोने के लिये वापस चले गये । म० द रेनाल अर्ध-मूर्च्छित सी अवस्था में वही घुटनों के बल बैठी रह गई । जुलिये ने सहारा देने की कोशिश की तो उन्होंने उसे बुरी तरह दूर धकेल दिया । जुलिये अवाक् खड़ा रह गया ।

तो इसी का नाम है व्यभिचार ! वह मन ही मन कह उठा—क्या यह सम्भव है कि यह धोखेबाज पुरोहित—सच कहते हो ? क्या यह सम्भव है कि जो लोग स्वयं इतने पाप करते हैं, उन्हें पाप का सच्चा सिद्धान्त जानने का अधिकार मिला हुआ हो ? कैसा हास्यास्पद विचार है !... .

म० द रेनाल के अपने कमरे को लौट जाने के बाद कोई बीस मिनट तक जुलिये अपनी प्रेयसी को निश्चल और लगभग अचेत पड़े देखता रहा । उनका सिर बच्चे के छोटे-से पलंग पर टिका था । उच्चतम स्वभाव वाली यह नारी उससे परिचय होने के कारण ही आज इतनी यातना की गहराइयों में पड़ी हुई है । समय तीव्र गति से बीता चला जा रहा था । मैं किस भाँति इनकी सहायता कर सकता हूँ ? कोई न कोई निश्चय मुझे करना ही होगा । केवल मेरे ही हिताहित का प्रश्न अब नहीं बचा । लोगो और उनके मूर्खतापूर्ण निन्दा-अपवाद की मुझे कोई परवाह नहीं किन्तु इनके लिये मैं क्या करूँ ? इन्हें छोड़कर चला जाऊँ ?

पर तब यह इस भीषणतम पीड़ा सहने के लिये अकेली रह जायेंगी । यह पति नाम की जो निर्जीव मशीन उनके पास है, उससे तो सहायता के स्थान पर बाधा ही अधिक मिलती है । वह इनसे कोई कठोर बात कह बैठेगा, क्योंकि वह एक कुत्सित स्वभाव वाला क्रूर व्यक्ति है । यह कही पागल न हो जाये, कही खिडकी के बाहर न कूद पड़े . . .

यदि मैं इन्हे छोड़कर चला गया, यदि मैंने इनके ऊपर अभी नज़र न रखी, तो यह सब कुछ उसे बता देगी । कौन जानता है कि इनकी सारी जायदाद मिलने की आशा के बावजूद वह इनके नाम से कही कोई अपवाद न फैला दे । हे भगवान् ! हो सकता है कि यह उस धिनौने जगली फादर मास्लो को भी सब बता दे जो इस छ वर्ष के बच्चे की बीमारी के बहाने से घर से हटने का नाम नहीं लेता । इसमें भी जरूर कोई चाल है । अपने दुख में यह उस आदमी की असलियत भूल जाती है—केवल पुजारी ही इन्हे दिखाई पड़ता है ।

“तुम्हे जाना ही पड़ेगा जुलिये”, अचानक मा० द रेनाल ने आँखें खोलते हुये कहा ।

“तुम्हारी सहायता हो तो मैं हजार बार अपनी जान भी देने को तैयार हूँ,” जुलिये ने उत्तर दिया । “तुम्हारे लिए इतना अधिक प्रेम मैंने पहले कभी नहीं अनुभव किया था । या यो कहना चाहिये इस क्षण से मैं तुम्हारे योग्य ही तुम्हारी पूजा करने लगा हूँ । तुमसे पृथक् दूर जाकर मेरी क्या हालत होगी ? खासकर यह जानने के बाद कि तुम्हारे दुख का कारण मैं ही हूँ । मेरे दुख की बात छोड़ो । मैं चला जाऊँगा—हाँ, मैं चला जाऊँगा । पर मेरे चले जाने के बाद, यदि मैं यहाँ तुम्हारी देखभाल करने के लिए तथा तुम्हारे पति और तुम्हारे बीच निरन्तर पड़ने के लिए न रहा तो तुम सब कुछ उनको बता दोगी और अपना सर्वनाश कर लोगी । जरा यह बात भी सोचो कि वह बड़ी दुर्दशापूर्वक तुम्हें इस घर से निकाल देगा । सारे बेरियर में, समूचे बजासो में इस बात की चर्चा होगी । सब लोग तुम्हारे विरुद्ध हो जायेंगे । इसकी लज्जा से

तुम कभी सिर न उठा सकोगी...।”

“यही तो मैं चाहती हूँ।” वह चौक पड़ी और खड़ी हो गई।
“मुझे कष्ट सहना होगा। वही उचित है।”

“पर उस भयानक अपवाद से म० द रेनाल भी बरबाद हो जायेंगे।”

“पर अपने को इस भाँति पतित करके ही, कीचड़ में गिराकर ही, शायद मैं अपने बेटे को बचा सकूँ। ऐसा अपमान, और वह भी सबकी दृष्टि में, एक प्रकार का सार्वजनिक दण्ड ही है। जहाँ तक मेरा दुर्बल हृदय समझ सका है, क्या भगवान् के सामने मेरा यही सबसे बड़ा बलिदान नहीं होगा?... सम्भव है कि इस लज्जा के कारण वह मेरे ऊपर कृपा करे और मेरा बेटा मुझे लौटा दे। मुझे इससे बड़ा और कष्ट-दायक दूसरा कोई बलिदान बताओ, मैं तुरन्त उसे करने को तैयार हूँ।”

“मुझे भी तो दंड मिलना चाहिए। मैं भी तो अपराधी हूँ। क्या तुम्हें यह स्वीकार होगा कि मैं ट्रेंपथी मठ में जाकर बन्द हो जाऊँ? उस जीवन की कठोरता शायद तुम्हारे भगवान् को सन्तुष्ट कर सके। हे ईश्वर! स्तानिस्लास की बीमारी मेरे ऊपर क्यों नहीं आ जाती!...”

“ओहो, तुम भी उसे प्यार करते हो।” मा० द रेनाल चौककर बोली और उठकर जूलिये की बाहों में जा गिरी। फिर दूसरे ही क्षण भयभीत भाव से उसे दूर धकेल दिया।

फिर वह अपने घुटनों के बल बैठ गयी। “मुझे तुम पर विश्वास है, तुम पर विश्वास है।” वह कहती रही। “ओह मेरे एकमात्र मित्र! क्यों नहीं तुम ही स्तानिस्लास के पिता हुए! तब तो बेटे से अधिक तुम्हें प्यार करना इतना भीषण पाप न होता।”

“क्या मुझे इस बात की अनुमति दोगी कि मैं यहाँ रहूँ और अब से तुम्हें भाई की भाँति प्यार करूँ? यही एक बुद्धिसंगत प्रायश्चित्त जान पड़ता है। उससे शायद परम पिता का क्रोध भी शान्त हो सके।”

“पर मेरा क्या होगा?” वह चीखकर बोली, “मेरा क्या होगा? क्या मैं तुम्हें भाई की भाँति प्यार कर सकती हूँ? क्या इस तरह प्यार

करना मेरी सामर्थ्य की बात है ?”

जुलिये के आँसू आ गये। “तुम जो कहोगी वही करूँगा, प्रियतमे,” वह उनके पैरों पर गिरते हुए बोला। “हाँ, तुम जो भी आज्ञा दोगी उसे मान लूँगा। मेरे लिए अब यही एकमात्र उपाय बचा है। मेरा मन जैसे अन्धा हो गया है। कोई रास्ता नहीं सूझता। तुम्हें छोड़ कर जाता हूँ तो तुम अपने पति को सब कुछ बना दोगी—स्वयं अपनी और उनकी दोनों की बरबादी करोगी। ऐसी बदनामी के बाद वह कभी डिप्टी न चुने जा सकेगा। यदि ठहरता हूँ तो तुम मुझे अपने बेटे की मृत्यु का कारण समझोगी और शोक से प्राण दे दोगी। क्या तुम मेरे चले जाने के परिणाम की परीक्षा करना चाहती हो? यदि तुम चाहो तो मैं एक सप्ताह के लिए तुम से अलग होकर अपने दोनों के दोष का दंड स्वयं भेलने को तैयार हूँ, तुम जहाँ कहोगी वही जाकर—उदाहरण के लिए ब्रेन-ओ के गिरजाघर में—सप्ताह बिताने को तैयार हूँ। पर मेरी सौगन्ध खाओ कि मेरी अनुपस्थिति में तुम अपने पति को कुछ न बताओगी। समझ लो कि यदि तुमने कुछ भी कहा तो मेरा लौटना न होगा।”

उन्होंने जुलिये को यह वचन दे दिया और वह चला गया, किन्तु दो दिन बाद ही उन्होंने उसे फिर बुला भेजा।

“तुम्हारे लौटने तक अपनी सौगन्ध की रक्षा करना मेरे लिए असम्भव है। यदि तुम यहाँ अपनी आँखों के आगे मुझे रोकते न रहे तो मैं अपने पति से सब कुछ कह बैठूँगी। अपने घृणित जीवन का एक-एक घन्टा मुझे दिन के बराबर लम्बा जान पड़ता है।”

आखिरकार उस माँ के ऊपर विधाता की कहरणा हुई। धीरे-धीरे स्तानिस्लास का जीवन सकट से निकल आया। किन्तु दुःख का श्रीगणेश तो हो चुका था; विवेक ने उन्हें अपने पाप की मात्रा के प्रति सजग कर दिया था और अब उनके लिए शान्ति से रह सकना असम्भव था। वह अब भी पश्चात्ताप से, और ऐसे पश्चात्ताप से जो इतने निश्छल

हृदय के लिए स्वाभाविक था, दुखी हो उठती थी। उनका जीवन स्वर्ग और नर्क दोनों ही था—नरक, जब जुलिये उनकी आँखों से ओझल होता, और स्वर्ग, जब वह उसके पैरों पर पड़ी होती।

“अब मैं अपने आपको अधिक नहीं बहका सकती,” वह जिन क्षणों में उसके प्रेम के आगे आत्म-समर्पण करने का साहस कर पाती तभी उससे कहती, “मैं अब इतनी गिर चुकी हूँ कि उद्धार की कोई आशा नहीं। तुम जवान हो। मैंने तुम्हें बहकाया और तुम फँस गये। भगवान् तुम्हें क्षमा कर सकते हैं। पर मेरे लिए कोई आशा नहीं। इसको मैं एक बड़े पक्के प्रमाण से जानती हूँ। मुझे डर लगने लगा है। नरक को सामने देखकर कौन भयभीत न होगा? पर सब कहने-सुनने के बाद मुझे कोई पछतावा नहीं है। सम्भव होने पर मैं नये सिरे से फिर यही पाप करती। बस भगवान्, मुझे यहाँ इसी जन्म में मेरे बच्चों के द्वारा मुझे दण्ड न मिले, तो मैं समझूँगी मैंने भर पाया।” कभी कभी वह कह उठती, “पर तुम जुलिये, कम से कम तुम तो सुखी हो? प्रियतम, तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हें काफी प्यार करती हूँ?”

जहाँ तक जुलिये का प्रश्न था, त्याग के ऊपर आधारित प्रेम की आवश्यकता उसके लिए इतनी अधिक थी कि सदेह अथवा आह्वन अपमान इस प्रतिक्षण नवीन होने वाले इनने विभ्रान्त और इतने महान् त्याग के आगे ठहर न पाता था। वह तो मा० द रेनाल की पूजा करने लगा था। यह सोचना व्यर्थ है कि वह कुलीन घराने की है और मैं मजदूर का बेटा हूँ। मुख्य बात यह है कि वह मुझे प्यार करती हैं। वह मुझे प्रेमी की भूमिका पूरी करने वाले अनुचर के रूप में नहीं देखती। एक बार यह भय दूर होने के बाद जुलिये प्रेम की समस्त हर्षोन्मत्तता और उसकी घातक निश्चितता में डूब गया।

जब कभी भी मा० द रेनाल उसे अपने प्रेम में सदेह करते हुए पाती तो कहती, “जो थोड़े-बहुत दिन हमारे पास साथ-साथ बिताने को बाकी बचे हैं उनमें तो कम से कम मैं तुम्हें सुखी बना सकूँगी! हमें जल्दी

करनी चाहिए... शायद कल ही मैं तुम्हारी न रहूँ । यदि विधाता मेरे बच्चों के द्वारा मुझ पर प्रहार करे तो केवल तुम्हीं से प्रेम करने के लिए जीवित रहने का, अथवा इस सत्य से आखे मूँद लेने का कि मेरे पाप के कारण ही उनके प्राण गये, प्रयत्न करना सब व्यर्थ होगा । ऐसे आघात के बाद मैं जीवित न रह सकूँगी । चाहूँगी तो भी नहीं । मैं पागल हो जाऊँगी । आह ! यदि मैं तुम्हारा पाप अपने ऊपर ले सकती, ठीक वैसे ही जैसे तुमने उदारतापूर्वक स्तानिस्लास के ज्वर को अपने ऊपर लेना चाहा था ।”

जुलिये और उसकी प्रेयसी को एक करने वाले भाव का स्वरूप इस तीव्र नैतिक सकट के कारण एकदम बदल गया । जुलिये का प्रेम अब केवल उनके सौन्दर्य का आकर्षण और स्वामित्व का गर्व मात्र न था । इस समय से उनके सुख में एक बड़ी उच्चता आ गई थी, उन दोनों को जलाने वाली ज्वाला अब अधिक तीव्र थी, उनके भावातिरेक में अब नम्रता की परिपूर्णता थी । दुनिया को शायद उनका सुख और भी बड़ा जान पड़ता किन्तु उन्हें अपने प्रेम में प्रारम्भिक दिनों की सी, जब मा० द रेनाल का एकमात्र भय यह था कि जुलिये कहीं उन्हें कम प्यार न करने लगे, मधुर शान्ति, उन्मुक्त आनन्द अथवा सहज प्रसन्नता नहीं मिलती थी, बल्कि कभी कभी तो उन्हें यह सुख अपराध जैसा जान पड़ता था ।

चरम सुख और ऊपर से देखने में परम शांति के क्षणों में भी मा० द रेनाल विह्वल भाव से जुलिये का हाथ कसकर जकड़ लेती और कहती “हे भगवान् ! मुझे अपने सामने नरक दिखाई पड़ रहा है ! कैसी भीषण यातनाएँ हैं ! किन्तु मैं हूँ उनके योग्य ही ।” और वह और भी कसकर बाँध लेती, उससे ऐसे लिपट जाती जैसे बेल दीवार से लिपटी रहती है ।

जुलिये इस क्षुब्ध आत्मा को शान्त करने का व्यर्थ प्रयत्न करता रहता । वह उसका हाथ पकड़कर उसे चुम्बन से भर देती, फिर किसी

गहरे सोच में डूबकर कह उठती, “नरक भी मेरे लिये कसूर की वस्तु होगी, कम से कम इस धरती पर तो कुछ दिन उसके साथ शान्तिपूर्वक बिता सकती, किन्तु नरक यही, इसी जगह, इसी दुनिया में... मेरे बच्चों की मृत्यु के रूप में..... बहुत सम्भव है कि इस मूल्य पर मेरा पाप क्षमा कर दिया जाय.....” हे सर्वशक्तिमान ईश्वर ! क्षमा के लिये ऐसा मूल्य मुझसे न ले । इन बेचारे बालकों ने तेरा कोई अपराध नहीं किया है । केवल मैं ही दोषी हूँ . . मैं ऐसे व्यक्ति को प्यार करती हूँ जो मेरा पति नहीं है ।”

फिर जुलिये देखता कि वह धीरे-धीरे ऊपर से शान्त हो गई है । वह अपने आपको काबू में करने का प्रयत्न करती—अपने प्रिय के जीवन को विषाक्त करने की उनकी कोई इच्छा नहीं । कभी प्रेम, कभी पाश्चात्ताप और कभी आनन्द के बीच दिन बिजली की तरह निकलने लगे । जुलिये का सोचने का अभ्यास ही जाता रहा ।

एलिजा अपने किसी कानूनी काम के सिलसिले में बेरियर गई थी । वहाँ उसे पता चला कि म० वालनो जुलिये के ऊपर भरे हुए बैठे हैं । वह स्वयं भी शिक्षक से घृणा करने लगी थी, इसलिये उसके विषय में बहुत कुछ इस व्यक्ति से कहती-सुनती रती ।

“सच-सच बताऊँ तो आप मुझे नौकरी से निकलवा देंगे,” उसने एक दिन म० वालनो से कहा, “आप मालिक लोग सब मौका पड़ने पर एक हो जाते हैं..... हम बेचारे नौकरो के मुँह से कुछ बात निकल जाय तो हमें कभी क्षमा नहीं मिलती..... ।”

म० वालनो की अधीर उत्सुकता ने चतुराई से इस भूमिका को छोटा कर दिया और फिर उन्हें कुछ ऐसी बातें पता चली जिनसे उनके अभिमान को बड़ी भारी ठेस पहुँची ।

यह स्त्री जो ज़िले में सबसे अधिक प्रसिद्ध है, जिसे उन्होंने छः वर्ष से इतनी तरह से प्रसन्न करने के प्रयत्न किये हैं पर जो दुर्भाग्यवश इतनी घमण्डी है कि बार-बार अपने तिरस्कार से हर व्यक्ति की उपस्थिति

और जानकारी मे उन्हें लज्जित और अपमानित करती रही है—इसी स्त्री ने एक शिक्षक वेशधारी मजदूर को अपना प्रेमी बनाना स्वीकार किया । अनाथाश्रम के सचालक महोदय के पीडन और अपमान मे यह जानकर और भी कोई कसर न रही कि इस प्रेमी की मा० द रेनाल पूजा करती है । “म० जुलिये ने तो” नौकरानी ने लम्बी सास लेते हुए कहा, “उन्हे अपने वश मे करने का कोई प्रयत्न ही नहीं किया । मालकिन के मामले मे भी वह सदा की भाँति दूर-दूर ही रहते थे ।”

एलिजा को इसका यकीन देहात मे पहुँचकर ही हुआ, यद्यपि उसका विचार था कि मामला बहुत पहले से चल रहा है । “इसमे कोई शक नहीं कि इसी कारण”, उसने प्रतिहिंसा के भाव से कहा, “कुछ दिन पहले म० जुलिये ने मुझसे विवाह करने से इन्कार किया था । और मेरी मूर्खता देखिये, कि मैं पहुँची मा० द रेनाल के पास और उन्हे सब बात बताकर शिक्षक से अपनी सिफारिश करने के लिये कहने लगी ।”

उसी दिन शाम को म० द रेनाल को अपने दैनिक अखबार के साथ नौकर से एक लम्बा गुमनाम पत्र मिला, जिसमे उन्हे उनके घर मे जो कुछ हो रहा था, उसका विस्तृत हाल बताया गया था । जुलिये ने देखा कि हलके आसमानी रंग के कागज पर लिखे हुए इस पत्र को पढ़कर उनका चेहरा फक हो गया और वह उसे बड़ी तीव्र दृष्टि से देख रहे हैं । उस दिन सारी शाम मेयर की उत्तेजना दूर न हुई । जुलिये ने बर्गण्डी के सबसे कुलीन परिवारों की वशावलियाँ माँगकर उन्हे प्रसन्न करने का प्रयत्न भी किया, पर सब व्यर्थ हुआ ।

गुमनाम पत्र

आधी रात के समय ड्राइंग रूम से चलने के पहले किसी तरह अवसर निकालकर जुलिये ने अपनी प्रेयसी से कहा, “आज रात हम लोग न मिले तो अच्छा है, तुम्हारे पति को कुछ सन्देह हो रहा है। मैं सौगन्ध खाकर कह सकता हूँ कि जो लम्बी चिट्ठी पढ़कर वह आगे भर रहे थे वह कोई गुमनाम पत्र है।”

सौभाग्यवश जुलिये ने अपने कमरे में पहुँचकर भीतर से ताला बन्द कर लिया, क्योंकि मा० द रेनाल के मन में यह पागलपन का विचार आया कि यह चेतावनी केवल उनसे न मिलने का बहाना भर है। वह होश-हवास पूरी तरह खो बैठी थी और नियत समय पर जुलिये के कमरे के दरवाजे पर आ गयी। जुलिये ने बरामदे में आहट सुनते ही तुरन्त अपनी रोशनी बुझा दी। कोई उसका दरवाजा खोलने का प्रयत्न कर रहा था—मा० द रेनाल अथवा उनके ईर्षालु पति ?

अगले दिन सबेरे रसोइन, जो जुलिये से बड़ी प्रसन्न थी, उसके पास एक किताब लाई, जिसके मुखपृष्ठ पर इटैलियन भाषा में लिखा था . ‘पृष्ठ एक सौ बीस पर देखो !’ इस लापरवाही पर जुलिये एक बार काँप उठा। पृष्ठ एक सौ बीस खोलते ही उस पर नत्थी किया हुआ एक पत्र उसे मिला, जो जल्दी में लिखा गया था और आँसुओं से भीगा हुआ था। उसमें शब्दों का प्रयोग ठीक-ठीक होने पर भी उनका खिलावट पर ध्यान न दिया गया था। साधारणतः मा० द रेनाल इन

विषय मे बड़ी सजग थी। यह छोटी सी बात जुलिये के मर्म को छू गई और वह इस भीषण अदूरदर्शिता को आधा भूल गया। पत्र इस प्रकार था :

“तो तुम मुझसे आज रात को मिलना नहीं चाहते ? ऐसे भी क्षण आते हैं जब मैं विश्वास करने लगती हूँ कि मैंने तुम्हारे हृदय को अभी तक गहराई मे नहीं पढा। कभी-कभी जैसे तुम मुझे देखने लगते हो उससे मैं डर जाती हूँ। मुझे तुमसे भय लगता है। हे भगवान् ! क्या इसका यह अर्थ है कि तुमने मुझे कभी प्यार नहीं किया ? यदि यह सच है तो यही उत्तम होगा कि मेरे पति इस प्रेम की बात जान जाये और मुझे सदा के लिये अपने बच्चों से अलग कहीं देहात मे वन्दिनी बनाकर रख दे। शायद भगवान् की भी यही मर्जी है। मैं तो जल्दी ही मर जाऊँगी—पर तुम एक राक्षस बनोगे।

“तुम मुझे प्यार नहीं करते ? क्या मैंने तुम्हे अपनी मूर्खता से, अपने पछतावों से उबा दिया है ? तुम मुझे बरबाद करना चाहते हो ? मैं तुम्हे एक आसान साधन दिये देती हूँ। जाओ, इस पत्र को बेरियर मे हर व्यक्ति को दिखा दो अथवा केवल वालनो को ही दिखा दो। उसे बता देना कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। पर नहीं—ऐसी झूठी बात मत कहना। यह कहना कि मैं तुम्हारी पूजा करती हूँ, कि मेरे लिये जीवन उसी दिन शुरू हुआ जब मैंने तुम्हे देखा, कि अपने यौवन के पागल से पागल क्षणों मे भी मैंने ऐसे सुख की कल्पना नहीं की थी जिसके लिये मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ, कि मैंने अपना जीवन तुम्हारे लिये बलिदान कर दिया है और अपनी आत्मा भी तुम्हारे लिये बलिदान कर रही हूँ। तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे लिये इससे कहीं ज्यादा बलिदान करती हूँ।

“पर ऐसा आदमी क्या समझेगा कि बलिदान क्या चीज है ? उससे कहना—केवल उसे त्रास देने के लिये ही कहना कि मैं सब कुविचारी आदमियों की उपेक्षा करती हूँ। मेरे लिए इस ससार मे अब

केवल एक ही प्रकार का दुःख बचा है—और वह है कि मुझे जीवन रखने वाला व्यक्ति मेरी ओर से आँखें फेर ले। यदि मेरा जीवन चुक जाता, यदि मैं उसे बलि चढ़ा सकती, यदि मुझे अपने बच्चों के लिये भय न रहता तो मैं कितनी सुखी रह पाती !

“प्रियतम, इस बात में कोई सन्देह नहीं कि कोई गुमनाम पत्र आया है तो वह उसी घृणित प्राणी ने भेजा होगा जो पिछले छः वर्षों से मेरे पीछे पड़ा है, जो अपनी कर्कश आवाज़ में अपनी घुड़सवारी की कहानियाँ तथा अपनी वीरता के, और अपनी सारी विशेषताओं के अत-हीन वर्णन मुझे सुनाता रहा है।

“क्या सचमुच ही कोई गुमनाम पत्र आया है ? निर्दयी, मैं तुम से इसी बारे में बात करना चाहती थी। पर नहीं, तुमने बुद्धिमानी का काम किया है। शायद अन्तिम बार ही तुम्हें अपनी बाहों में भरकर मैं इस विषय में उतने शान्त और निस्संग भाव से विचार न कर पाती जितना अब अकेले रहकर कर रही हूँ। अब से हमारे सुख के क्षण इतनी आसानी से नहीं आ सकेंगे। क्या उससे तुम दुःखी होगे ? हाँ, शायद जब तुम्हें म० फूके से कोई दिलचस्प किताब न मिले ! मैंने अपना उत्सर्ग कर दिया है। चाहे कोई गुमनाम पत्र आये अथवा न आये, कल मैं अपने पति से कह दूँगी कि मुझे भी ऐसा एक पत्र मिला है, और अब हमें तुम्हें निकालने का कोई आसान-सा रास्ता ढूँढना चाहिए और किसी भी बहाने तुम्हें तुरन्त वापस भेज देना चाहिए।

“आह, प्रिय, हमें पन्द्रह दिन के लिये या शायद महीने भर के लिये बिछुड़ना पड़ेगा ! हा, यह सही है कि तुम भी मेरे समान ही दुःखी रहोगे, किन्तु इस गुमनाम पत्र के प्रभाव से अपनी रक्षा करने का मेरे पास यही एक उपाय है। मेरे पति को यह पहली बार ऐसा पत्र नहीं मिला है और न मेरे विषय में ही यह पहला है। ओह ! पहले इन पत्रों को देखकर मुझे कितनी हँसी आया करती थी !

“मेरे व्यवहार का एकमात्र उद्देश्य यह होगा कि अपने पति को

इस पत्र के म० वालना द्वारा लिखे होने का विश्वास दिला हूँ । यदि तुम्हे इस घर से जाना पड़े तो वेरियेर छोड़कर न चल देना । मैं ऐसा प्रबन्ध करूँगी कि मेरे पति पन्द्रह दिन वही रहा करे, कम से कम वहाँ के सारे मूर्खों के आगे यह सिद्ध करने के लिये ही कि उनके और मेरे बीच कोई मनमुटाव नहीं है । वेरियेर पहुँचकर तुम हर व्यक्ति के साथ, उदारपथियो तक के साथ, मित्रता कर लेना । मैं जानती हूँ कि उनकी सब महिलाएँ तुमसे मिलने के लिये बड़ी उत्सुक होगी ।

“तुम म० वालनो से कोई कहा-सुनी न करना, और न जैसा तुमने एक दिन कहा था, उनके कान ही काटना, बल्कि इसके विपरीत उनसे यथासम्भव मीठा व्यवहार करना । यह बात सारे वेरियेर में फैलाना जरूरी है कि अब तुम वालनो अथवा किसी दूसरे के यहाँ बच्चों की शिक्षा का भार लेने वाले हो ।

“यह बात मेरे पति कभी न होने दगे और मान लो उन्हें इसके लिये तैयार भी होना पड़ा तो कम से कम तुम वेरियेर में तो रहोगे और मैं कभी-कभी तुमसे मिल सकूँगी । मेरे बच्चे भी तुमसे इतने हिल गये हैं, वे भी तुमसे मिल सकेंगे । हे भगवाद् ! मुझे लगता है कि मेरे बच्चे तुम्हे प्यार करते हैं, इसलिये मैं उन्हें और भी अधिक प्यार करने लगी हूँ । इस बात का मुझे कैसा पश्चात्ताप है ! न जाने इस सबका कहाँ अन्त होगा ? पर मैं बहक रही हूँ ।जो हो, तुम तो समझते ही हो कि तुम्हारा व्यवहार कैसा होना चाहिये । विनम्र बनना, शिष्ट बनना और उन फूहड़ व्यक्तियों के प्रति कोई घृणा न दिखाना—मैं तुम्हारे पैरो पडकर भीख माँगती हूँ, वे लोग ही हमारे भाग्य का निपटारा करेंगे । इस बात में क्षण भर के लिये भी सन्देह न करना कि मेरे पति का तुम्हारे प्रति व्यवहार वही होगा जो जनमत चाहेगा ।

“जो गुमनाम पत्र मुझे चाहिये उसे तैयार करने का जिम्मा तुम्हारा है । तुम्हे दो वस्तुओं की जरूरत पड़ेगी, एक धीरज और दूसरी कैची । मैं एक हलका आसमानी रंग का कागज भेज रही हूँ जो मुझे म०

बालनो से मिला था । इसके ऊपर तुम गुमनाम पत्र के शब्द किसी किताब से काटकर चिपका देना । तुम्हारे कमरे की तलाशी होने की सभावना है, इस लिये जिस किताब को इस काम में लाओ उसे जला डालना । यदि तुम्हें आवश्यक शब्द तैयार न मिले तो धीरज के साथ एक-एक अक्षर मिलाकर तैयार कर देना । तुम्हारी परेशानी बचाने के लिए मैंने गुमनाम पत्र बहुत छोटा-सा बनाया है । ओफ ! यदि अब तुम मुझे प्यार नहीं करते, जैसा कि मुझे भय होता है, तो मेरा यह पत्र तुम्हें कितना लम्बा लगेगा !”

गुमनाम पत्र इस प्रकार था :

“मैंडम,

मैं आपकी सब करतूतें जानता हूँ, साथ ही उन्हें रोकना जिन लोगों के हित में है उन्हें भी इसकी सूचना दे दी गई है । मेरे साथ यदि आपकी तनिक भी मित्रता बाकी हो तो मेरी यह सलाह है कि आप इस किसान छोकरे से सारे सम्बन्ध तोड़ लें । यदि आपने ऐसा करने की बुद्धिमानी की तो आपके पति समझेंगे कि उन्हें जो चेतावनी मिली थी वह झूठी थी और हम भी उनको इस भ्रम में रहने देंगे । भूलिये मत कि मैं आप का भेद जानता हूँ । अभागी स्त्री, कुछ तो भय करना चाहिये । अब से आपको मेरे साथ ठीक व्यवहार करना पड़ेगा ।”

जुलिये मा० द रेनाल का पत्र आगे पढ़ने लगा ।

“जैसे ही तुम इस पत्र के शब्दों को चिपकाना खत्म कर चुको (तुमने उसमें म० द बालनो के बातचीत करने का ढग पहचान लिया न?), तुम तुरन्त घर से निकल पड़ना । मैं तुमसे आकर मिलूँगी—मैं गाँव तक जाऊँगी और बहुत ही परेशान-सी वापस लौटूँगी । सचमुच ही मैं वैसा ही अनुभव भी कर रही हूँगी । भगवान् ! मैं भी कैसी जोखिम उठा रही हूँ और यह सब तुम्हारे इस अनुमान के कारण कि कोई गुमनाम पत्र आया है । अन्त में बहुत ही पीड़ित भाव से मैं यह कहकर अपने पति को वह पत्र दे दूँगी कि कोई अपरिचित व्यक्ति इसे मुझे दे गया है । तुम स्वयं

सुर्ख और स्याह

१७५

बच्चो के साथ घूमने चले जाना और भोजन के समय तक वापस न लौटना ।

“हमारे घर के कबूतरखाने की चोटी पहाडियों के ऊपर से दिखाई पड़ती है । यदि यह मेरी चाल ठीक बैठी तो मैं वहाँ एक सफेद रूमाल लटका दूँगी । अन्यथा वहाँ कुछ न होगा । ओ अकृतज्ञ व्यक्ति, क्या तुम्हारा हृदय इसका कोई उपाय न सुझा सकेगा कि घूमने के लिए निकलने के पहले तुम मुझे बता सको कि मुझे प्यार करते हो ? जो भी हो, एक बात का तुम विश्वास रखना- स्थायी रूप से बिछड़ने के बाद मैं एक दिन भी जीवित न रहूँगी । आह ! दुष्ट माँ !—इन शब्दों का का, प्यारे जुलिये, मेरे लिये कोई अर्थ नहीं बचा है । मैं उन्हें अनुभव ही नहीं करती — इस क्षण तुम्हारे सिवाय मैं कुछ और सोच ही नहीं सकती । ये शब्द मैंने केवल इसीलिये लिखे कि तुम मुझे डाँटो नहीं । आज जब तुम्हें खो बैठने की सम्भावना दिखाई पड़ रही है तो बहाना बनाने से क्या लाभ ? सच ! मेरा हृदय चाहे तुम्हें भयकर ही दिखाई पड़े पर अपने आराध्य से मैं झूठ क्यों बोलूँ ! मैं अपने जीवन में पहले ही बहुत कुछ धोखेबाजी कर चुकी हूँ । तो फिर ठीक है । यदि तुम मुझे अब प्यार नहीं करते तो मैं तुम्हें दोष न दूँगी । अपने इस पत्र को पढ़ने का अब समय नहीं है । तुम्हारे वक्ष की छाया में अभी-अभी जो सुख के दिन मैंने बिताये हैं उनके लिये प्राण भी देने पड़ें तो भी कुछ नहीं । तुम जानते हो कि मुझे उनका और भी बड़ा मूल्य चुकाना पड़ेगा ।”

: २१ :

स्वामी से गुप्त चर्चा

घण्टे भर तक जुलिये बच्चो की भाँति खुशी-खुशी शब्दों को काट-काट कर चिपकाता रहा। जैसे ही वह अपने कमरे से निकला कि उसकी बच्चो और उनकी माँ से भेट हो गई। मा० द रेनाल ने उसके हाथ से पत्र ऐसी सहजता के साथ ले लिया कि वह उनकी निश्चलता पर पल भर को काप उठा।

“गौद सूख गया होगा ?” उन्होंने उससे पूछा।

क्या यह स्त्री पश्चात्ताप से इतनी पागल हो गई है ? वह सोचने लगा।

इस क्षण उसके मन में कौन-सी योजनाएँ हैं ? अपने अभिमान के कारण वह पूछ तो न सका, पर शायद वह कभी उसे इतनी आकर्षक न लगी थी।

“यदि यह प्रयत्न असफल हुआ,” उन्होंने उसी अविचलित शान्त भाव से कहा, “तो मेरा सर्वस्व छिन जायगा। मैं तुम्हें यह एक डिब्बा दे रही हूँ। इसे ले जाकर कहीं पहाड़ों में छिपा देना। एक दिन शायद यही मेरा एकमात्र सम्बल रह जाय।”

उन्होंने उसे सोने और कुछ जवाहरातों से भरा हुआ एक लाल चमड़े का ऐसा डिब्बा दिया जिसमें प्रायः काँच रखा जाता है।

“अब जाओ,” उन्होंने कहा।

उन्होंने बच्चों को प्यार किया, छोटे को दो बार चूमा। जुलिये वहाँ

निश्चल खड़ा रहा । फिर वह द्रुतगति से उसकी ओर एक बार भी देखे बिना चली गयी ।

पत्र खोलने के क्षण से म० द रेनाल की यातना का ठिकाना न था । सन् १८१६ के बाद से, जब एक बार द्वन्द्व-युद्ध की नौबत आ पहुची थी, वह कभी इतने कष्टदायक रूप में उत्तेजित न हुए थे । बल्कि शायद गोली लगने की सम्भावना से भी वह इतने सन्न न हुए होते । वह ऊपर से नीचे तक पत्र को देखते रहे । क्या यह किसी स्त्री के हाथ की लिखावट नहीं है ? उन्होंने सोचा । यदि है तो किस स्त्री ने लिखा होगा ? उन्होंने मन ही मन वेरियेर की सभी परिचित स्त्रियों के नाम दोहराये पर उनमें से किसी पर भी विश्वास जमा नहीं सके । क्या किसी पुरुष ने यह पत्र बोलकर लिखाया होगा ? कौन है यह पुरुष ? यहाँ भी वही अनिश्चय था । उनके अधिकांश परिचित उनसे ईर्ष्या करते थे, बल्कि निस्सन्देह घृणा करते थे । अपनी पत्नी से पूछूँ, उन्होंने आराम-कुर्सी से उठते हुए अभ्यासवश कहा ।

हे भगवान् ! ठीक से खड़े होने के बाद ही वह चौक उठे । अपने माथे को पीटते हुए कहने लगे कि उस पर ही तो सबसे कम विश्वास करना चाहिये । वही तो इस समय मेरी सबसे बड़ी शत्रु है । क्रोध से उनकी आँखों में आँसू आ गये ।

प्रान्तों में हृदय की कठोरता को बुद्धिमानी समझा जाता है । उसके उचित मुआवजे के रूप में म० द रेनाल को जिन दो व्यक्तियों से इस क्षण सबसे अधिक भय था वे उनके दो घनिष्ठतम मित्र ही थे ।

वह सोचने लगे कि इनके अतिरिक्त ऐसे दस-बारह आदमी और भी होंगे जो शायद मेरे मित्र हों । एक-एक करके उन्होंने उन सबके बारे में सोचा और मन ही मन तौल कर देखते रहे कि उनमें से प्रत्येक से उन्हें कितनी सात्वना मिल सकेगी । ओफ ! उनमें से तो प्रत्येक ही मेरी इस भीषण दुरावस्था से परम सन्तोष का अनुभव करेगा । वास्तव में यह बात निराधार न थी कि लोग उनसे ईर्ष्या करते थे । नगर के अपने

विशाल भवन के अतिरिक्त, जिसे—के महाराज ने उसमें शयन करके सदा के लिए सम्मानित कर दिया था, उन्होंने अपने वेर्जि के मकान को भी सचमुच बहुत ही उत्तम स्थान बना लिया था। इस वैभव के विचार ने पल भर के लिये उन्हें सात्वना दी। यह सच है कि यह दुर्ग दस-बारह मील से दिखाई पड़ता है, जब कि पड़ोस के अन्य सब मकान अथवा भावी दुर्ग फीके-फीके और पुराने-से दिखाई पड़ते हैं।

अपने मित्रों में केवल गिरजाधर के व्यवस्थापक की सहानुभूति और आँसुओं का उन्हें पक्का विश्वास था किन्तु वह व्यक्ति एकदम बुद्धू था जो हर बात पर आँसू बहाने लगता था। किन्तु केवल यह व्यक्ति ही उनका एकमात्र अवलम्ब था।

इस यातना से बड़ा दुःख और क्या हो सकता है? और ऐसा अकेलापन भी कहाँ होगा? वह क्रोध में चीख उठे। क्या सच ही इस बदनसीबी में सल ह देने वाला कोई मित्र नहीं, उस वास्तव में दयनीय व्यक्ति ने मन ही मन सोचा। मेरी तो बुद्धि नष्ट हुई जा रही है, मैं जानता हूँ। ओह फाल्कोज ! आह दुःख, उनके मुँह से निकल पड़ा। ये उनके बचपन के दो मित्रों के नाम थे, जिनसे उन्होंने अपने घमण्डपूर्ण व्यवहार से १८१४ में ही भगडा कर लिया था।

उनके कुलीन होने के कारण म० द रेनाल यह चाहते थे कि बचपन से जिस बराबरी का व्यवहार उनके साथ होता आया था वह अब न रहे। उनमें से एक फाल्कोज तो बहुत बुद्धिमान और साहसी व्यक्ति था। वह वेरियेर में एक अखबारों की दुकान का मालिक था और बाद में प्रान्तीय राजधानी में प्रेस खरीद कर अपना अखबार भी निकालने लगा था। किसी कारण धर्म-सघ ने उसको बरबाद करने की ठानी तो उसके अखबार की निन्दा की गई और उसके प्रेस का लाइसेंस छीन लिया गया। इन दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में उसने दस वर्ष में पहली बार म० द रेनाल को एक पत्र लिखने का साहस किया। वेरियेर के मेयर ने उसे प्राचीन रोमन नागरिक की भाँति यह उत्तर देना अपना कर्तव्य समझा।

“यदि बादशाह के प्रधान मंत्री सलाह लेने का सम्मान मुझे देते तो मैं उनसे यही कहता कि ‘प्रान्त के सब प्रेस वालों को निर्दयतापूर्वक बरबाद कर दिया जाय और छापने के काम को भी तम्बाकू की भाँति ही एकाधिकार में ले लिया जाये’ ।” अपने घनिष्ठ मित्र को ऐसा पत्र लिखने की याद करके, जिसकी उस समय बेरियेर में चारों ओर बड़ी प्रशंसा हुई थी, म० द रेनाल बड़े खिन्न हुए । कौन जानता था कि यह सब धन-दौलत और पदवी-उपाधियों के रहते हुए भी एक दिन वह पत्र लिखने का मुझे खेद होगा ? क्रोध की ऐसी ही भावनाओं के बीच, जो कभी स्वयं अपने प्रति होती और कभी अपने चारों ओर के व्यवित्तियों के प्रति, म० द रेनाल ने बड़े कष्ट से रात काटी । सौभाग्यवश अपनी पत्नी को छिपकर देखने की बात उन्हें न सूझी ।

लुइज की उपस्थिति का मैं अभ्यस्त हो चुका हूँ, उन्होंने मन ही मन कहा । वह मेरी सब परेशानियों जानती है । यदि कल मुझे फिर से विवाह करना पड़े तो मैं उसकी जगह किसी दूसरे की कल्पना न कर सकूँगा । फिर उन्हें यह सोचकर सतोष मिला कि उनकी पत्नी निर्दोष है । इस विचार के लिए किसी दृढ़ निश्चय की आवश्यकता न थी और अधिक अनुकूल लगता था । आज तक कितनी पत्नियों के विरुद्ध ऐसी बातें नहीं उड़ाई गईं ।

पर हे भगवान् ! वह अचानक कह उठे । और कमरे में इधर से उधर उत्तेजित भाव से टहलने लगे । यह कैसे सम्भव है कि वह अपने प्रेमी के साथ मुझे मूर्ख बनाती रहे, मानो मेरा कोई महत्व ही नहीं, जैसे मैं कोई निकम्मा आवारा व्यक्ति होऊँ । लोगो ने शार्मिये के बारे में क्या-क्या नहीं कहा था । इतनी बुरी तरह से धोखा खाने वाला पति तो और किसी ज़िले में नहीं हुआ । उसका नाम लेते ही क्या आज भी हर आदमी के होठों पर मुस्कराहट नहीं आ जाती ? बेचारा अच्छा वकील है पर उसकी भाषण देने की क्षमता को कौन पूछता है ? लोग कहते हैं, ‘ओहो ! शार्मिये ? बनारस वाला शार्मिये,’—इस

भाँति उसे उसी व्यक्ति के नाम से याद करते हैं जो उसकी बदनामी का कारण है ।

भगवान् की दया से मेरी कोई बेटी नहीं है, म० द रेनाल कभी-कभी सोचने लगते । इसलिए मैं माँ को जो दण्ड देना चाहता हूँ उससे मेरे बच्चों के भविष्य को कोई हानि नहीं पहुँचेगी । मैं इस किसान के छोकरे और अपनी पत्नी को अचानक ही चुपचाप पकड़ लूँगा और दोनों को मार डालूँगा । ऐसी हालत में मेरी कहानी के दुःखपूर्ण रूप के कारण शायद हास्यास्पद बनने की संभावना कम हो जाय । इस कल्पना से उनको कुछ प्रसन्नता मिली और वह विस्तारपूर्वक इसकी सारी संभावनाओं को सोचते रहे । दण्ड सहिता मेरी ओर है ही और जो भी हो, धर्म-संघ में तथा जूरियो में मेरे मित्र मेरा साथ देंगे । वह अपने शिकार के छुरे की जाँच करने लगे । था तो वह बहुत तेज़, पर रक्त का ध्यान आते ही वह भयभीत हो उठे ।

मैं इस बेशर्म शिक्षक को भ्रमस्त करके निकाल बाहर क्यों न करूँ ? पर इससे बेरियर में और सारे ज़िले में कैसी बदनामी हो जायेगी ! फाल्कोज के अखबार को दण्ड मिलने और उसके प्रधान सम्पादक के जेल से निकलने के बाद मैंने उसे एक और काम से भी निकलवाया था जिसमें कोई छ सौ फ्रैंक की आमदनी थी । सुना है कि वह अभाग लेखक बजासो में मौजूद है । वह इतनी चतुराई से मेरी ऐसी बदनामी कर सकता है कि मैं कभी उस पर मुकदमा भी न चला सकूँ । मुकदमा ! • वह बेशर्म शैतान तरह-तरह से यह इंगित करने की कोशिश करेगा कि उसकी बात सच ही है । भले खानदान के आदमी से सब नीच लोग घृणा करते हैं । उन भयंकर पेरिस के अखबारों में भी मेरा नाम निकलेगा । हे ईश्वर ! कैसा सकट है ! प्राचीन रेनाल परिवार के नाम पर कीचड़ उछलते और उसकी हँसी उड़ाये जाते देखना होगा । • कभी मैं यात्रा करूँ तो नाम बदल कर जाना पड़ेगा । • हे ईश्वर ! जिस नाम से मेरी सारी प्रतिष्ठा और शक्ति है उसी को छोड़

कैसी भयकर दुर्गति !

यदि मैं अपनी पत्नी को मारूँ नहीं, बल्कि मुँह काला करके घर से निकाल दूँ, तो बजासो में उसकी चाची है। वह उसे तुरन्त अपनी सारी जायदाद दे देगी और वह तुरन्त जुलिये के साथ पेरिस चलती बनेगी। वेरियेर में सब लोगो को इसका पता चल जायेगा और वे मुझे बहुत ही मूर्ख ममझेंगे।

लैप की फीकी पडनी हुई रोशनी से इस दुखी व्यक्ति को चेतना हुई कि सबेरा होने वाला है। वह ताजी हवा पाने के लिये बाग में निकल आये। इस समय वह यह निश्चय कर चुके थे कि इस बात को लेकर कोई हल्ला न मचाया जाय, विशेषकर इसलिए कि ऐसे कार्य से उनके वेरियेर के मित्रगण बहुत प्रसन्न होते।

बाग में थोड़ी दूर टहलने से उनका मन थोड़ा शान्त हुआ। नहीं, अपनी पत्नी को नहीं निकालूँगा। वह मेरे लिए बड़ी काम की है। सचमुच अपनी पत्नी के बिना घर की कल्पना-मात्र से वह सिहर उठे। उनकी एकमात्र रिश्तेदार मार्किज द—कर्कश स्वभाव की मूर्ख वृद्धा थी।

एकाएक उनके दिमाग में बहुत ही समझदारी की बात आई पर उसे पूरा करने के लिये चरित्र की जितनी दृढ़ता की आवश्यकता थी, वह उस बेचारे आदमी में न थी। उन्होंने सोचा कि यदि मैंने अपनी पत्नी को अपने साथ रखा तो मैं जानता हूँ कि क्रोध के आवेश में एक न एक दिन उसे इस बात के लिये डाँट बैदूँगा। अभिमानिनी तो वह है ही, तुरन्त हमारा सम्बन्ध-विच्छेद हो जायेगा। और यह सब उनकी चाची की जायदाद मिलने से पहले ही हो चुकेगा। लोग तब मेरे ऊपर कितना हँसेंगे। मेरी पत्नी अपने बच्चों को प्यार करती है, इसलिये अत में सारी जायदाद उन्हीं को मिलेगी। जहाँ तक मेरा खयाल है, मैं बस वेरियेर में लोगो की चर्चा का पात्र बन जाऊँगा। लोग कहेंगे, “क्या ? अरे वह तो अपनी पत्नी से भी बदला न ले सका।” क्या यही उचित

नहीं है कि मैं सन्देह से ही सन्तोष करूँ और सचाई जानने की कोशिश ही न करूँ। पर इस तरह तो मेरे हाथ बँध जायेंगे और मैं उसे बाद में किसी तरह में डाँट भी न सकूँगा।

पल भर बाद ही म० द रेनाल को फिर एक बार आहत अभिमान ने जकड़ लिया और वह दिमाग कुरेद-कुरेद कर ऐसी प्रत्येक तरकीब को याद करने की कोशिश करने लगे जो उन्होंने कौसिनो अथवा वेरियर में पुरुषों के क्लब में सुनी थी। वहाँ प्रायः ही कोई न कोई चतुर बानूनी व्यक्ति बिलियर्ड का खेल रोककर किसी न किसी धोखा खाने वाले पति का मजाक उड़ाता ही रहता था। इस समय ऐसा हँसी-मजाक उन्हें निर्मम जान पड़ा।

हे ईश्वर ! इससे तो मेरी पत्नी मर क्यों न गई, वह सोचने लगे। फिर मुझे हँसी का कोई डर न रहता। इसमें तो मैं विधुर ही अच्छा था। छ महीने के लिये पेरिस जाकर अच्छे से अच्छे लोगों के बीच समय बिता सकता था।

विधुर होने की इस कल्पना से उन्हें क्षण भर ही सुख मिला। उसके बाद तुरन्त ही उनका दिमाग इस आरोप की सचाई जानने के साधनों की ओर चला गया। जब रात को सब सो जायें तब जुलिये के द्वार के आगे कोई पतली-सी चीज़ क्यों न फैला दी जाय। अगले दिन सबेरे उजेला होने पर वह पैरो के चिह्न साफ़ देख जायेंगे।

पर इससे क्या होगा ? एकाएक वह क्रोध में चीख पड़े। वह कुतिया एलिजा देख लेगी और शीघ्र ही सारी दुनिया को पता लग जायेगा कि मैं ईषालु हूँ।

कौसिनो में सुनी हुई एक अन्य कहानी में एक पति ने अपने दुर्भाग्य का पक्का पता अपनी पत्नी और उसके प्रेमी के दरवाजे पर मोम द्वारा एक बाल का टुकड़ा चिपका कर लगाया था। घण्टों असमजस में पड़े रहने के बाद सचाई खोजने की यह तरकीब ही उन्हें सबसे अच्छी जान पड़ी और वह उसे काम में लाने का उपाय ही सोच रहे थे कि बाग में

एक मोड़ पर उन्हें अपनी पत्नी दीख पड़ी जिसकी मृत्यु की कामना वह कर रहे थे ।

वह गाँव के गिरजाघर में प्रार्थना सुनने गई थी । और वही से लौट रही थी । कहा जाता था कि यह मौजूदा छोटा-सा गिरजाघर किसी जमाने में वेर्जि के जागीरदार के दुर्ग की चैपल थी । बहुत-से लोग इसे सदिग्ध समझते थे, पर मा० द रेनाल का इसमें पक्का विश्वास था । गिरजाघर जाने का इरादा करते समय एक विचार उनके मन में चक्कर काट रहा था । उनकी आँखों के सामने बार-बार एक अजीब-सा चित्र खिंच जाता कि उनके पति ने बहाना बनाया है कि शिकार खेलते-खेलते गलती से जुलिये मारा गया है और बाद में शाम को उन्हें उसका हृदय खाने के लिये दिया गया है ।

वह मन ही मन कहने लगी कि मेरा भाग्य इस बात पर निर्भर है कि मेरी बात सुनते समय उनके मन में क्या विचार आते हैं । इन पंद्रह मिनटों के बाद शायद फिर मुझे उनसे बात करने का अवसर ही न मिले । वह उन बुद्धिमान लोगों में से नहीं है जो विवेक से चलते हैं । इसलिये मैं अपनी छोटी-सी बुद्धि से भी यह समझ सकती हूँ कि वह क्या करेंगे और क्या कहेंगे । वह हम दोनों के भाग्य का निपटारा करेंगे । यही उनके हाथ में भी है । किन्तु वह बहुत ही विचित्र और सनकी आदमी हैं । क्रोध से अन्धे होने पर उन्हें आँखों के सामने की चीज दिखाई नहीं पड़ती । अब मेरा भाग्य उनके विचारों को किसी ओर मोड़ सकने की चतुराई पर ही निर्भर है । हे ईश्वर ! इस समय मुझे बहुत सूझ-बूझ और तीव्र बुद्धि की जरूरत है । पर ये मुझे कहाँ मिलेगी ?

किन्तु जब बाग में पहुँचकर उन्होंने थोड़ी दूरी पर अपने पति को देखा तो मानो किसी जादू से उनका सारा आत्मसंयम लौट आया । उनके बिखरे हुये बालों और अस्तव्यस्त कपड़ों से स्पष्ट था कि वह रात भर सोये नहीं हैं । मा० द रेनाल ने आगे बढ़कर उन्हें वह पत्र दे दिया जिसकी मोहर टूटी हुई थी । वह पत्र खोले बिना ही अपनी पत्नी को

बड़ी विक्षिप्त सी दृष्टि से देखते रहे ।

“जरा इस घिनौनी चीज पर नज़र तो डालो ।” मा० द रेनाल ने अपने पति से कहा । “बक्कील के बाग के पास से निकलते समय एक कुरूप-सा व्यक्ति मुझे यह दे गया । वह कहता था कि तुम्हें जानता है और किसी कारण तुम्हारा बहुत कृतज्ञ है । अब एक बात तुम्हें मेरी खातिर जरूर ही करनी पड़ेगी कि म० जुलिये को फौरन कुछ भी सोचे-विचारे बिना अपने घर वापस भेज दो ।” मा० द रेनाल ने सारी बात समय से कुछ पहले ही, किन्तु बहुत जल्दी-जल्दी कह डाली ताकि उसे कहने की डरावनी सम्भावना से मुक्ति मिल जाय ।

उसे मुनकर उनके पति को जो हर्ष हुआ उसे देख वह रोमांचित हो उठी । जिस तरह से वह उनकी ओर ताक रहे थे उससे यह स्पष्ट था कि जुलिये का अनुमान सही है । इस दुर्भाग्य के ऊपर शोक करने के बजाय उन्होंने मन ही मन कहा ‘कैसी प्रतिभा है । परिस्थिति को समझने में कैसी अपूर्व चतुराई है । और वह भी इतने कम अनुभवी नौजवान के लिये । धीरे-धीरे वह कहाँ नहीं पहुँच सकता ? अफसोस है कि उस सफलता में वह मुझे भूल जायेगा ।’

अपने आराध्य के प्रति इस हल्की-सी प्रशंसा की भावना से उनका आत्मसमय पूरी तरह लौट आया । उन्होंने अपनी इस योजना के लिये अपने आपको बधाई दी । एक अत्यन्त ही गुप्त मधुर हर्ष से उन्होंने मन ही मन कहा कि मैंने अपने आपको जुलिये के अयोग्य सिद्ध नहीं किया ।

कुछ कह बैठने के भय से एक शब्द भी बोले बिना म० द० रेनाल इस दूसरे गुमनाम पत्र को पढ़ने लगे । पाठक को याद ही होगा कि वह हलके आसमानी रंग के कागज़ पर छपे हुये शब्दों को चिपकाकर तैयार किया गया था । म० द रेनाल थक कर चूर थे और वह सोचने लगे कि अवश्य ही कोई मुझे हर प्रकार से मूर्ख बनाने की कोशिश कर रहा है ।

इस स्त्री के कारण सदा कोई न कोई अपमान सहना पड़ता है ! वह उन्हें बहुत ही भद्दी गालियाँ देने वाले थे कि बजासो की जायदाद का

ध्यान करके अपने आपको रोक लिया। पर किसी न किसी से उसका बदला लेने का भाव उन्हें खाये जा रहा था। उन्होंने दूसरे पत्र को मसल डाला और इधर से उधर टहलने लगे। उन्हें लग रहा था कि अपनी पत्नी के सामने से दूर हो जाये किन्तु थोड़ी ही देर बाद वह बहुत शान्त होकर उनके पास लौट आये।

“हमें जुलिये को निकालने का ही निश्चय करना होगा।” उन्होंने अपने पति से मीधे-सीधे कहा। “आखिरकार वह एक मजदूर का बेटा ही तो है। चाहो तो उसे कुछ मुआवजा दे देना। इसके अलावा वह लडका होशियार है और कहीं न कहीं उसे नौकरी मिल ही जायेगी—जैसे म० वालनो अथवा म० मोजिरो के यहाँ। इन दोनों ही के बच्चे हैं। इस तरह उसका कोई नुकसान भी न होगा।”

“ठीक मूर्ख औरतो की तरह से तुम बातें कर रही हो।” म० द रेनाल ने बड़ी डरावनी आवाज में कहा। “औरतो से अक्ल की उम्मीद ही बेकार है। किसी बुद्धिमानी की बात पर कभी तुम लोगो का ध्यान ही नहीं जाता, पता कैसे हो? तुम लोगो के मनमौजी खाली दिमागो में तितलियों के पीछे भागने के सिवाय और काम ही क्या है? यह हमारा दुर्भाग्य है कि तुम लोगो को अपने परिवार में रखना ही पड़ता है...।”

मा० द रेनाल कुछ न बोली और वह बहुत देर तक बड़बड़ाते रहे और, जैसा इधर के लोग कहते हैं, अपने क्रोध को हजम करते रहे।

“महाशय” अन्त में वह बोली, “मैं उस स्त्री की हैसियत से बोल रही हूँ जिसके सम्मान पर आघात पहुँचा है, अर्थात् उसकी सबसे मूल्यवान् वस्तु पर प्रहार हुआ है।”

इस कष्टदायक वार्तालाप के ऊपर ही जुलिये के साथ एक ही घर में रहने की सम्भावना निर्भर थी, किन्तु सारे वार्तालाप में मा० द रेनाल वैसी ही स्थिर रही। वह क्रोध में अन्धे पति को सुझाने के लिये सबसे उपयुक्त विचार खोज रही थी। उनकी सारी अपमानजनक बातों से

वह विचलित नहीं हुई थी — जैसे वे उन्होंने सुनी ही न थी। उस समय वह केवल जुलिये की ही बात सोच रही थी। उन्हें केवल यही आशंका थी कि क्या वह मुझसे प्रसन्न होगा ?

अन्त में वह बोली “संभव है कि यह किसान युवक जिसे हमने तरह-तरह की मेहरबानियों और उपहारों से लाद दिया है, निर्दोष हो, किन्तु उसके कारण मेरा बड़ा खुल्लमखुल्ला अपमान हुआ है। इस घिनौने कागज को पढ़ते ही मैंने निश्चय कर लिया था कि या तो वह इस घर में नहीं रहेगा या मैं न रहूँगी।”

“क्या तुम इस बात का हल्ला मचाकर अपनी और मेरी दोनों की बदनामी कराना चाहती हो ? इससे बेरियर के लोगों में अच्छी सनसनी मचेगी।”

“यह तो ठीक है। जो समृद्धि की अवस्था तुम्हारी और तुम्हारे परिवार की और तुम्हारे सुचारु प्रशासन द्वारा इस नगर की हुई है, उसके कारण लोग तुमसे ईर्ष्या करते हैं। अच्छा, तो ठीक है। मैं जुलिये से कहूँगी कि एक महीने की छुट्टी लेकर वह अपने उस कारबारी दोस्त के पास चला जाय जो उसका बड़ा सच्चा हिनैषी भी है।”

“कृपा करके आप कुछ न कीजिये”, मा० द रेनाल ने बहुत शांत स्वर में उत्तर दिया। “सबसे पहले मैं यह चाहता हूँ कि तुम उससे कुछ बात न करो। तुम गुप्ति में कभी न कभी कोई ऐसी बात उससे कह दोगी कि वह मुझसे चिढ़ जायेगा। जानती तो हो कि कितना तुनकमिजाज है।”

“इस लड़के में कोई संभव नहीं है”, मा० द रेनाल बोली। “वह विद्वान् हो सकता है। यह तो तुम्हीं अच्छी तरह संभव सकते हो। पर भीतर से वह ठेठ किसान है। जहाँ तक मेरा सवाल है, जब से उसने एलिजा से विवाह करना अस्वीकार किया, मैंने उसके बारे में सोचना ही छोड़ दिया। इससे उसके लिये निश्चित आमदनी का

साधन पक्का हो जाता । पर उसने केवल इसलिये विवाह करना नामज़ूर कर दिया कि एलिजा कभी-कभी चुपचाप म० वालनो से मिलने जाया करती थी ।”

“क्या !” म० द रेनाल ने कुछ अतिरजित से ढग से अपनी भौहे चढाते हुये कहा । “क्या जुलिये ने तुम्हे यह बताया था ?”

“नही, ठीक इसी भांति नहीं । मुझसे तो वह सदा चर्च की नौकरी की ही बात करता था । ऐसे साधारण लोगो के लिये सबसे पहला कर्तव्य रोटी कमाने का ही है । पर उसने मेरे आगे बहुत साफ-साफ यह जाहिर किया कि एलिजा की गुपचुप मुलाकाते उससे छिपी न थी ।”

“पर मैं स्वयं उनके विषय मे कुछ नहीं जानता ।” म० द रेनाल ने फिर एक बार बहुत क्रुद्ध भाव से अपने शब्दो पर जोर देते हुये कहा । “मेरे घर मे ऐसी-ऐसी बातें होती रहती हैं और मुझे कुछ पता तक नहीं चलता । क्यों ? एलिजा और वालनो के बीच कोई गोलमाल है ?”

“यह तो बहुत पुरानी बात हो गयी”, मा० द रेनाल ने कहा । “शायद कोई खास गोलमाल नहीं हुआ । यह उन दिनों की बात है जब आपके परम मित्र वालनो साहब वेरियर के लोगो के यह सोचने से अप्रसन्न न होते कि एक छोटा-सा सुन्दर प्रेम-सम्बन्ध—निस्सदेह पूर्णत आदर्शवादी—उनके और मेरे बीच बढ रहा है ।”

“एक बार मैं भी ऐसी ही कुछ बात सोचने लगा था”, एक के बाद एक नये सत्य का आविष्कार करने के साथ-साथ अपने माथे पर घूँसे मारते हुए म० द रेनाल ने क्रुद्ध स्वर मे कहा । “और तुमने भी मुझे इस विषय मे कुछ नहीं बताया ?”

“सिर्फ इसी कारण कि सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब का अहंकार कुछ बढ गया है । दो मित्रो के बीच अनबन कराना क्या आवश्यक था ? हम लोगो की मित्र-मडली मे ऐसी कौन-सी स्त्री है जिसे उन्होने थोडे-बहुत

चतुराई भरे, बल्कि शायद थोड़े-बहुत स्त्रियों को रिझाने वाली बातों से भरे हुए पत्र न लिखे हो ?”

“तो वह तुम्हें भी लिखता है ?”

“अक्सर लिखते हैं ।”

“मुझे ये पत्र तुरन्त दिखाओ । मेरा आदेश है ।” म० द रेनाल एकदम तनकर खड़े हो गये ।

“हरगिज नहीं”, मा० द रेनाल ने उदासीनता की सीमा छूने वाली मृदुलता से उत्तर दिया । “कभी जब तुम्हारा दिमाग ठंडा होगा तब दिखा दूंगी ।”

नहीं, अभी फौरन ।” म० द रेनाल ने चीखकर कहा । इस समय वह क्रोध से विक्षिप्त थे, किन्तु साथ ही पिछले बारह घण्टों में इतने प्रसन्न भी नहीं हुए थे ।

“तुम सौगन्ध खाओ”, मा० द रेनाल ने बहुत गंभीरतापूर्वक कहा, “अनाथाश्रम के सचालक से इन पत्रों को लेकर भागडा नहीं करोगे ।”

“भागडा हो या न हो । अनाथाश्रम तो मैं उससे छीन ही सकता हूँ, पर” उन्होंने क्रोध से विक्षिप्त स्वर में कहा, “मैं ये पत्र तुरन्त चाहता हूँ । ... कहाँ हैं ?”

“मेरी मेज़ की दराज़ में । पर मैं तुम्हें चाबी कभी नहीं दूँगी ।”

“मैं तोड़कर खोल लूँगा”, उन्होंने कहा और अपनी पत्नी के कमरे की ओर झपटते हुए चले गये ।

एक लोहे की छड़ से उन्होंने सचमुच उस खुदाई के काम वाली मूल्यवान मुन्दर मेज़ को तोड़कर खोल डाला । इस मेज़ के ऊपर पहले कभी वह कोई छोटा-सा धब्बा भी देखते तो अपने कोट के किनारे से पोछ दिया करते थे ।

इस बीच मा० द रेनाल ने दौड़कर कबूतरखाने तक पहुँचने के लिए १२६ सीडियाँ पार की और खिडकी की एक छड़ में एक सफेद रुमाल बाँध दिया । पहाड़ के विशाल जंगल की ओर आँसू भरी आँखों

से ताकते-ताकते उन्हें लगा कि उनसे सुखी स्त्री कोई दूसरी नहीं है। उन्होंने मन ही मन कहा कि निस्सन्देह जुलिये वही कही किसी पेड़ के नीचे इस सुखद सकेत को देखने के लिये प्रतीक्षा कर रहा होगा। देर तक वह कान लगाये सुनती रही। फिर चिड़ियों के सगीत और टिड्डो की एक-सी झंकार को बुरा-भला कह उठी। यह शोर न होता तो ऊँची-ऊँची चट्टानों के पास से आती हुई हर्ष की एक पुकार उन्हें अवश्य सुनाई पड़ जाती। वह ललचाई दृष्टि से उस गहरी हरियाली के दूर तक फैले ढलाव की ओर ताकती रही जो पेड़ों की चोटियों के कारण बन गया था और घास के मैदान जैसा चिकना दीख पड़ता था। उन्होंने मन ही मन एक गहरे और कोमल भाव से प्रेरित होकर कहा कि उसमें कोई बुद्धि क्यों नहीं है? क्यों नहीं वह किसी सकेत द्वारा मुझे यह बता देता कि उसका आनन्द भी मेरे बराबर ही है? कबूतरखाने से वह तब तक नीचे नहीं आयी जब तक उन्हें यह भय न लगने लगा कि कहीं उनके पति उन्हें खोजते हुए वहीं न आ पहुँचे।

मा० द रेनाल ने उन्हें भयकर क्रोध की अवस्था में पाया। वह म० वालनो की शांतिदायक शब्दावली को पढ़े जा रहे थे जो शायद इतने भाव-विवृत ढंग से पढ़ने के उपयुक्त न थी।

थोड़ा-सा अवसर पाकर मा० द रेनाल ने कहा, “मुझे फिर भी यही बात ठीक लगती है कि जुलिये को कहीं दूर भेज दिया जाय। लैटिन वह चाहे जितनी जानता हो, कुल मिलाकर वह बड़ा उद्दण्ड और नासमझ किसान ही है। अपनी शिष्टता दिखाने के लिए वह नित नये अनगल और रचिहीन शब्दों में मेरी प्रशंसा करता रहता है जो शायद वह किसी न किसी उपन्यास से पढ़कर याद करता होगा।”

“पर वह तो उपन्यास कभी पढ़ता ही नहीं,” म० द रेनाल ने आश्चर्य से कहा। “मैंने तो इस बात का पक्का पता लगा लिया था। तुम समझती हो मैं हर बात में अन्धा रहता हूँ और मुझे पता ही नहीं चलता कि घर में क्या हो रहा है?”

“पर यदि वे सब हास्यास्पद प्रशंसासूचक वाक्य वह कही पढ़ता नहीं है तो खुद बनाता होगा जो और भी बुरा है। उसने अवश्य ही कभी वेरियर मे मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया होगा। और शायद एलिजा के मामले भी उसी स्वर में बातचीत की होगी, जो लगभग म० वालनो के मामले कहने के बराबर ही है।”

अहा ! म० द रेनाल ने मेज के ऊपर जोर से धूँसा मारते हुए चीख कर कहा। उनके घूँसे की चोट से मेज और कमरा दोनों काँप उठे। “छपा हुआ गुमनाम पत्र और वालनो के पत्र सब एक ही तरह के कागज पर थे।”

आखिरकार ! मा० द रेनाल ने सोचा। उन्होंने इस खोज से अवाक् हो जाने का अभिनय किया और एक भी शब्द अधिक कहने का साहस न पाकर ड्राइंग रूम के दूसरे कोने में एक दीवान पर जा बैठी।

उस क्षण से लड़ाई में विजय हो चुकी थी। गुमनाम पत्र के कल्पित लेखक के साथ दो शब्द कहने के लिए चल पड़ने से म० द रेनाल को रोकने में उन्हें बड़ी कठिनाई हुई।

“तुम यह क्यों नहीं सोचते,” उन्होंने कहा, “कि पर्याप्त प्रमाण के बिना म० वालनो से भगडा करना बड़ी भारी भूल होगी ? लोग तुमसे ईर्ष्या करते हैं। पर इसका कारण क्या है ? कारण है तुम्हारी सारी योग्यता, तुम्हारा कुशल प्रशासन, तुम्हारा सुसज्जित घर, मेरी शादी का दहेज, और इन सबसे भी अधिक वह जायदाद जो हम लोगो को मेरी चाची से मिलने वाली है, यद्यपि उसका महत्व बहुत ही बढ़ा-चढ़ा कर रक्खा जाता है। इन सब बातों ने ही तुम्हें वेरियर में सर्व-प्रमुख व्यक्ति बना दिया है।”

“मेरे खानदान को तो तुम भूली ही जा रही हो।” म० द रेनाल ने थोड़ा-सा मुस्कराते हुए कहा।

“तुम प्रान्त के सबसे विख्यात व्यक्तियों में से हो,” मा० द रेनाल ने जल्दी से उत्तर में कहा। “यदि महाराज को खानदान के हिसाब से

उचित सम्मान देने की स्वतन्त्रता होती तो निस्सन्देह तुम्हारा स्थान राजसभा आदि में होता। पर तुम ऐसी अपूर्व स्थिति में होकर भी ईर्षालु लोगो को बाते गढ़ने का मौका देना चाहते हो ?”

उन्होंने आगे कहा, “म० बालनो से इस पत्र का जिक्र करना बेरियर में बल्कि वजासो और सारे प्रान्त में यह ढिंढोरा पीटने के बराबर होगा कि इस मामूली नौजवान ने, जिसे शायद कुछ जल्दी में एक रैना परिवार के भीतर स्थान मिल गया था, उस सुविधा के दुरुपयोग का मार्ग निकाल लिया है। मान लो जो पत्र तुमने अभी पढ़े हैं उनसे यह सिद्ध हो सके कि मैं भी म० बालनो से प्रेम करती थी, तब तो तुम्हें मुझे मार डालना चाहिये। तब तो मैं सौ बार इसके योग्य हूँ। पर उस हालत में भी तुम्हें उनके प्रति कोई क्रोध नहीं दिखाना चाहिये। जरा सोचो, हमारे सारे पड़ोसी तुमसे बदला लेने के लिए किसी बहाने की ताक में ही बैठे हैं। १८१६ में तुमने कुछ गिरफ्तारियाँ करवाई थी। उनमें कोई एक आदमी उसकी छत पर जा छिपा था”

“मैं केवल यही सोच सकता हूँ कि तुम्हारे मन में मेरे लिए न तो कोई स्नेह है न आदर।” ऐसी स्मृति से उत्पन्न होने वाली भारी कड़वाहट के साथ म० द रेनाल ने चीखकर कहा। “और तो भी मुझे सम्मानित नहीं किया गया”

“मैं यही सोच रही हूँ,” मा० द रेनाल ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, “मैं तुमसे अधिक धनी रहूँगी। बारह वर्ष से मैं तुम्हारी सगिनी भी रही हूँ। इन सब कारणों से मुझे तुम्हारे मामलो में कुछ कहने का अधिकार तो मिलना चाहिए। विशेषकर आज जो घटना हुई है उसके विषय में तो मिलना ही चाहिये। यदि तुम म० जुलिये को मुझसे अधिक आवश्यक समझते हो,” उन्होंने अपनी अप्रसन्नता छिपाये बिना ही आगे कहा, “तो मैं जाकर अपनी चाची के साथ रहने को तैयार हूँ।”

ये शब्द बहुत सोच-समझकर चुने गये थे। उनकी विनम्रता के पीछे हठता स्पष्ट थी। उनसे म० द रेनाल का निश्चय पूरा हो गया, यद्यपि

प्रान्तों के अभ्यास के अनुसार वह बहुत देर तक कुछ न कुछ कहते और अपनी सारी दलीलो को बार-बार दोहराते रहे। आखिरकार दो घण्टे तक बेकार बडबड करने के बाद उस व्यक्ति की शक्ति चुर गई जो सारी रात क्रोध के दौरों से तड़पता रहा था। उन्होंने म० वालनो, जुलिये और एलिजा के साथ अपने व्यवहार के विषय में निश्चय कर लिया।

इस बड़े भारी दृश्य में एक दो-बार म० द रेनाल को इस व्यक्ति पर तरस भी आया जो सचमुच दुखी था और जो पिछले बारह वर्षों से उनका बन्धु और सगी था। किन्तु सच्चा प्रेम बड़ा स्वार्थी होता है। साथ ही प्रत्येक क्षण उन्हें यह आशा थी कि वह अपने गुमनाम पत्र की बात छोड़ेंगे। पर उसका जिक्र उन्होंने नहीं किया। अपनी पूरी सुरक्षा के लिए मा० द रेनाल यह जानना आवश्यक समझती थी कि इस व्यक्ति को क्या-क्या सुझाया गया है। उनका सारा भाग्य इसी व्यक्ति पर निर्भर था, क्योंकि प्रान्तों में जनमत पति के साथ होता है। शिकायत करने वाले पति को केवल हँसी का पात्र समझा जाता है। दूसरी ओर पत्नी को यदि पति कोई धन न दे तो उसकी हैसियत पद्रह स० रोजाना पाने वाली मजदूरिन की सी हो जाती है और उस पर भी दयालु से दयालु व्यक्तियों को उसे काम देने में सकोच होता है।

एक तुर्क के हरम में रहने वाली स्त्री को हर हालत में अपने पति को प्यार करना पड़ता है। वह सर्व-शक्तिमान होता है। कोई छोटी-मोटी चतुराई अथवा तिकड़म उसके अधिकार को कम नहीं कर सकती। उसके स्वामी का प्रतिशोध भयकर रक्तरजित किन्तु सैनिकोचित उदात्तापूर्ण होता है—छुरे का एक वार और सब समाप्त। किन्तु जब उन्नीसवीं शताब्दी का पति अपनी पत्नी पर प्रहार करता है तो वह सार्वजनिक तिरस्कार के सामाजिक अस्त्र का सहारा लेता है। वह प्रत्येक ड्राइंग रूम के द्वार को उसके लिए बन्द कर देता है।

घर लौटने पर मा० द रेनाल को अचानक किसी बड़े तीव्र सकट का-सा अनुभव हुआ। अपना कमरा उन्हें जिस बुरी हालत में मिला

उससे वह घबडा उठी । उनके सारे बक्सो के ताले तोडकर खोल डाले गये थे । लकड़ी के फर्श के कई टुकड़े उखड़े पड़े थे । इन्हे मेरे ऊपर कोई तरस नहीं होता ! उन्होंने मन ही मन कहा । यह रगीन लकड़ी का फर्श इन्हे कितना पसन्द था और उसकी क्या दशा कर दी है । स्वयं उनका बेटा भी उस पर जूते पटने आ जाता था तो क्रोध से लाल हो उठते थे । अब उसे सदा के लिए एकदम बरबाद कर दिया । यह तोड-फोड़ देखकर अपनी सहज सफलता के कारण होने वाली ग्लानि उनके मन से एकदम दूर हो गई ।

भोजन की घण्टी बजने के कुछ ही क्षण पहले जुलिये बच्चो के साथ वापस लौटा । भोजन समाप्त होने के पहले और नौकरो के जाने के बाद मा० द रेनाल ने उससे बड़ी ख्वाई से कहा : “आप वैरियर मे दो सप्ताह बिताना चाहते थे न ? म० द रेनाल आपको छुट्टी देने को तैयार हैं । आप जब चाहे जा सकते हैं । किन्तु ऐसा इन्तजाम करके जाइये कि बच्चो का समय नष्ट न हो । उनकी कापियाँ हर रोज आपके पास ठीक करने के लिए भेज दी जायेगी ।”

“मैं एक सप्ताह से अधिक आपको नहीं देना चाहता,” म० द रेनाल ने बहुत ही तीखी आवाज मे कहा ।

जुलिये को उनके चेहरे पर एक अत्यन्त ही पीडा-ग्रस्त व्यक्ति की यातना स्पष्ट लिखी दिखाई दी ।

“अभी तक उनका मन पक्का नहीं हुआ है ,” जब वह और उसकी प्रेयसी पल भर के लिए ड्राइंग रूम मे अकेले रह गये तो उसने कहा । मा० द रेनाल ने सक्षेप मे सबेरे से अब तक की घटनाओ का हाल बताया ।

“विस्तार से सब रात को बताऊँगी”, वह हँसते हुए बोली ।

स्त्री की कुटिलता । जुलिये सोचने लगा । हम पुरुषो को धोखा देने मे उन्हे कैसा आनन्द मिलता है । कैसी सहज प्रवृत्ति से उसके लिए प्रेरित होती है ? “प्रेम ने तुम्हे एक साथ ही स्पष्टदर्शी और अन्धा बना

दिया है,” उसने हल्की-सी रुखाई के साथ कहा। “तुम्हारा आज का व्यवहार कमाल था। पर क्या आज रात को मिलना बुद्धिमानी होगी? यह घर दुश्मनो से भरा पड़ा है। ज़रा सोचो, एलिजा मुझसे कितनी नफरत करती है।”

“यह नफरत बहुत कुछ मेरे प्रति तुम्हारी उदासीनता के समान ही है।”

“उदासीन ही सही, पर फिर भी जिस सकट में मैंने तुम्हें डाल दिया है उससे तो बचाना ही है। यदि संयोगवश म० द रेनाल ने एलिजा से बात की तो उसके एक ही शब्द से सब कुछ पता चल जायेगा। क्या अजब है कि वह हथियारबन्द होकर मेरे कमरे के पास ही कहीं छिपे रहे? . . .”

“क्या! इतनी भी हिम्मत नहीं!” मा० द रेनाल ने अभिजात-वर्गीय स्त्री के दर्प-भरे तिरस्कार के स्वर में कहा।

“अपने साहस पर बहस करके मैं अपने आपको नीचे न गिराऊँगा,” जुलिये ने नीरस स्वर में कहा। “वह बड़ा जघन्य काम है। दुनिया मेरे कार्यों से उसकी जाच करेगी। किन्तु,” उसने उनका हाथ पकड़ते हुए आगे कहा, “तुम कल्पना भी नहीं कर सकती कि मैं तुमसे कितना प्रेम करता हूँ और इस निर्मम विदाई के पहले तुम से पल भर बात करके मैं कितना प्रसन्न हूँ।”

१८३० के मनुष्य और उनके आचार-विचार

जुलिये मुश्किल से बेरियेर पहुँचा होगा कि वह मा० द रेनाल के प्रति अपने अन्याय के लिये अपनी भर्त्सना करने लगा। यदि दुर्बलता के कारण वह मा० द रेनाल के साथ अपना अभिनय सफलतापूर्वक न कर पाती तो मैं उसे मूर्ख समझकर उससे घृणा भी करता। किन्तु उसने तो कूटनीतिज्ञ की तरह से स्थिति को सम्हाला और इधर मैं उस व्यक्ति के साथ सहानुभूति दिखा रहा हूँ जिसे उसने पराजित किया है और जो मेरा भी शत्रु ही है। इसमें एक जघन्य प्रकार का ओछापन है... मेरे अभिमान को शायद इस कारण ठोकर लगी है कि मा० द रेनाल पुरुष हैं। मैं भी कितना बड़ा गधा हूँ।

जीलिका छिन जाने और घर से निकाल दिये जाने के बाद मा० शेला को जगह देने की पास-पड़ोसियों के उदारपणियों से परस्पर होड़-सी मच गई थी। पर उन्होंने कोई भी जगह लेना स्वीकार न किया था। अब जहाँ वह जाकर रहने लगे थे वहाँ सारे कमरे उनकी किताबों से ही भर गये थे। जुलिये जाकर अपने पिता के कारखाने से एक दर्जन चीड़ के तख्ते ले आया जिन्हें वह अपने कंधे पर रखकर हाई स्ट्रीट से निकला जिसमें बेरियेर के लोग यह समझे कि वह कितना सच्चा पुरोहित है। अपने एक पुराने साथी से कुछ औजार लेकर शीघ्र ही उसने एक आलमारी-सी बना दी और उसमें मा० शेला की किताबें सजा दी।

“मैं सोचता था कि इस दुनिया के भूठे घमण्ड ने तुम्हें भी भ्रष्ट कर दिया है,” बूढ़े पुरोहित ने आँखों में प्रसन्नता के आँसू भर कर कहा। “पर इस काम से तुम्हारी उस सम्मानित सेना की भडकीली वर्दी पहनने की बचपनभरी मूर्खता का ठीक-ठीक प्रायश्चित्त हो जाता है जिसके कारण इतने लोग तुम्हारे शत्रु हो गये।”

म० द रेनाल ने जुलिये को अपने घर ठहरने का आदेश दिया था। किसी को इस बात का सन्देह तक न था कि क्या हुआ है। अपने आने के तीसरे ही दिन जुलिये ने देखा और कोई नहीं, स्वयं म० मोजिरोँ उसके कमरे में ऊपर चले आ रहे हैं। किन्तु दो घण्टे तक लोगो की दुष्टता, सार्वजनिक सम्पत्ति के उपयोग की जिम्मेदारी पाने वाले व्यक्तियों में ईमानदारी की कमी, तथा फ्रांस के ऊपर आने वाले सकट के विषय में नीरस बकवास और लम्बे-चौड़े विलाप सुनने के बाद अन्त में जुलिये को उनके आगमन का सही-सही उद्देश्य हल्का-सा दिखाई पड़ा।

वे लोग कमरे से उठकर सीढियों की देहली पर पहुँच गये थे और अर्ध-अपदस्थ शिक्षक किसी खुशनसीब जिले के भावी अधिकारी को समुचित सम्मान के साथ द्वार तक पहुँचाने जा ही रहा था कि उन महोदय ने वृषा करके जुलिये की कुशलक्षेम में दिलचस्पी दिखाई और पैसे इत्यादि के बारे में उसके समय की प्रशंसा करने लगे। अन्त में म० मोजिरो ने जुलिये को अत्यन्त ही गुरुजनोचित ढंग से हृदय से लगाते हुए उससे कहा कि उसे म० द रेनाल की नौकरी छोड़कर एक सरकारी अफसर के घर में काम ले लेना चाहिये। उनके यहाँ भी बच्चे हैं जिन्हें शिक्षा की आवश्यकता है और जो राजा फिलिप की भोंति भगवान को इसलिए धन्यवाद नहीं देते कि उसने उन्हें ये बच्चे प्रदान किये, बल्कि इसलिए देते हैं कि उन्हें ऐसे स्थान में जन्म दिया जहाँ जुलिये जैसा व्यक्ति रहता है। उनके शिक्षक को आठ सौ फ्रैंक का वेतन मिलेगा जो माहवारी नहीं—शरीफआदमियों के यहाँ कभी यह रिवाज नहीं होता—बल्कि तिमाही हिसाब से और सदा पेशगी दिया जायेगा।

जुलिये पिछले डेढ़ घण्टे से उकताया हुआ-सा किसी बोलने के अवसर की ताक में था। उसने इस मौके को हाथ से न जाने दिया। उसका उत्तर सर्वगुणसम्पन्न था और घात में यथासम्भव लम्बा भी। कोई भी बात स्पष्ट कहे बिना ही उसमें हर बात कह दी गई थी। उसमें एक साथ ही म० द रेनाल के, तथा वेरियेर के लोगो के प्रति गहरी श्रद्धा और यशस्वी अफसर महोदय के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई थी। इस व्यक्ति को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस लड़ाई में उनसे भी अधिक बारीकी है। जुलिये से निश्चित उत्तर पाने का उनका कोई प्रयत्न सफल न हुआ। जुलिये को इस बात से बड़ा मजा आया और अपनी क्षमता के उपयोग का अवसर पाकर उसने अपना समूचा उत्तर फिर से एक बार दूसरे ही शब्दों में दोहरा डाला। शायद किसी ओजस्वी वक्तृता देने वाले मन्त्री ने भी, और ससद के अन्तिम समय में भी, जब अवसर का उपयोग करने की इच्छा से सदस्यगण जागते दिखाई पड़ते हैं, इतनी कम बात इतने अधिक शब्दों में न कही होगी।

म० मोजिरो के घर से बाहर पैर रखते ही जुलिये बेतहाशा हँस पड़ा। अपनी जेस्विट-पन्थी वाक्पटुता का लाभ उठाने के उद्देश्य से उसने एक सात पृष्ठों के पत्र में म० द रेनाल को विस्तार से सारी बातें लिखी और नम्रतापूर्वक उनकी सलाह माँगी। जुलिये सोचने लगा कि इस शैतान ने मुझे उस व्यक्ति का नाम क्यों नहीं बताया जिसने यह प्रस्ताव भेजा है। अवश्य ही वह म० वालनो होंगे जो मेरे यहाँ वेरियेर में आकर रहने को अपने गुमनाम पत्र का प्रभाव समझते हैं।

पत्र भेजने के बाद जुलिये म० शेला की सलाह लेने के लिए चल पड़ा। वह वैसे ही प्रसन्न था जैसे शरद् ऋतु में किसी दिन सबेरे छ बजे किसी शिकारी को बहुत-सा शिकार हाथ लग जाय। पुरोहित के निवास-स्थान पर पहुँचने के पहले ही भगवान् ने मानो उसे हर्ष का एक और अवसर प्रदान करने के लिए रास्ते में म० वालनो को भी भेज दिया। जुलिये ने उनसे यह बात छिपाने का कोई प्रयत्न नहीं किया कि उसका हृदय दो

दिशाओं की ओर खिंच रहा है। उसके जैसे गरीब युवक को तो वास्तव में उसी धन्धे में प्रवृत्त होना चाहिये जिसकी प्रेरणा भगवान् ने उसके हृदय में दी। किन्तु इस अधम ससार में रोजगार ही सब कुछ नहीं है। भगवान् के इस उद्धान में योग्यतापूर्वक कार्य करने के लिए, और इतने सारे विद्वान् सह-श्रमिकों के सर्वथा अयोग्य न सिद्ध होने के लिए शिक्षा आवश्यक वस्तु है। उतना ही आवश्यक है वजासो के मठ में दो अत्यन्त मूल्यवान् वर्ष बिताना। इसके लिये पैसा बचाना सर्वथा आवश्यक होता जा रहा है जो स्पष्ट ही माहवार मिलने और खर्च हो जाने वाले सौ फ्रैंक वेतन की तुलना में तिमाही मिलने वाले आठ सौ फ्रैंक वेतन द्वारा कही अधिक सम्भव है। दूसरी ओर भगवान् ने उसको रेनाल परिवार के बालकों की देखभाल का काम सौंपा है और इससे भी अधिक उन लोगों के प्रति उसके हृदय में विशेष स्नेह की प्रेरणा दी है। इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि उनकी शिक्षा को छोड़कर किसी दूसरे व्यक्ति के बालकों का भार सम्हालना अनुचित है ?

इस प्रकार की वक्तृता में जुलिये को इतनी कुशलता प्राप्त हो गई थी कि अन्त में अपने शब्दों से वह स्वयं ऊब उठा। घर लौटने पर उसे म० वालनो का एक वर्दीधारी नौकर अपनी प्रतीक्षा करता हुआ मिला जो सारे शहर में उसे ढूँढ़ आया था। वह उसी रात को भोजन का निमन्त्रण लेकर आया था।

जुलिये पहले कभी इस व्यक्ति के घर नहीं गया था। कुछ ही दिन पहले तक वह दिन-रात यही सोचता रहता था कि कैसे उसकी जी भर कर ऐसी मरम्मत की जाय कि अदालत में कोई मुकदमा भी न चल सके। निमन्त्रण से प्रगट था कि भोजन एक बजे है, किन्तु जुलिये ने यह अधिक सम्मानजनक समझा कि सुपरिन्टेन्डेन्ट मजिस्ट्रेट के अध्यक्षता में साढ़े बारह बजे ही जा पहुँचे। उसने म० वालनो को बहुत-सी फाइलों द्वारा अपने महत्व का प्रदर्शन करते हुए पाया। उनके घने काले गलमुच्छों का, सिर के सघन बालों और ऊपर बेलुकी-सी बैठी हुई टोपी का बड़े

भारी पाइप और गढाई के काम वाली चट्टियो का, सीने पर लटकी हुई मोटी-मोटी सोने की जजीरो का, अथवा अपने आप को स्त्रियो को रिझाने वाला समझने वाले प्रान्तीय व्यवसायी के सारे ताम-झाम का जुलिये के ऊपर कोई प्रभाव न पडा। वह अब भी उनकी मरम्मत करने की बात ही अधिक सोच रहा था।

उसने मा० वालनो से परिचय के सम्मान की प्रार्थना की, किन्तु वह उस समय कपडे पहनने मे व्यस्त थी इसलिए मिल न सकती थी। मुआवजे के तौर पर उसने सुपरिन्टेन्डेन्ट महोदय को कपडे पहनते देखने का सौभाग्य-लाभ किया। उसके बाद ये लोग मा० वालनो के कमरे मे पहुँचे, जहा उन्होने आँखो मे आँसू भरकर अपने बच्चो से उसका परिचय कराया। वह वेरियेर की प्रमुख महिलाओ मे से थी। उनका मुख पुरुषो की तरह से भारी और कठोर था जिस पर इस महान् अवसर के सम्मान मे उन्होने लाली भी मली थी। उन्होने मातृ-सुलभ करुणा का सम्पूर्ण प्रदर्शन प्रस्तुत किया।

जुलिये को मा० देनाल की याद आ गई। अपने सदेही स्वभाव के कारण उसे केवल तुलना मे विपरीत दिखाई पडने वाली स्मृतिया ही छूती थी, किन्तु उन स्मृतियो से वह इतना गहरा प्रभावित हुआ कि उसके आँसू आ गये। सुपरिन्टेन्डेन्ट महोदय का घर देखकर यह मन स्थिति और भी तीव्र हो गई। उसे समूचा स्थान दिखाया गया। उसमें प्रत्येक वस्तु नई और प्रचुर मात्रा मे थी, हर फर्नीचर के दाम भी उसे बताये गये। किन्तु तो भी जुलिये को वह समस्त एक प्रकार से कुत्सित लगा, ऐसा जिसमे चुराए हुए धन की दुर्गन्ध आती हो। वहाँ प्रत्येक व्यक्ति, स्वयं नौकर तक, मानो धृणा से बचने के लिए साहसिक चेहरा धारण किए हुए जान पडते थे।

चुंगी के इस्पेक्टर, आबकारी के अफसर और पुलिस के प्रधान तथा दो या तीन अन्य सरकारी अफसर अपनी-अपनी पत्नियो के साथ पधारे।

दिया गया। जुलिये पहले से ही इस सबके प्रति बड़ा विरक्त-सा अनुभव कर रहा था। उसे एकाएक लगा जैसे भोजन-गृह की दीवार के उस पार कुछ अभागे आदमी बन्दी हो, और उन्हीं के भोजन के राशन को छीनकर यह रुचिहीन विलासिता की सामग्री उसकी आँखों में चकाचौंध करने के उद्देश्य से इकट्ठी की गई हो।

वह सोचने लगा कि वे लोग शायद इस क्षण भूखे होंगे। उसका गला एकदम सूख उठा, उसके लिए कुछ भी खाना कठिन हो गया और बोलना तो लगभग असम्भव हो गया। दस-पन्द्रह मिनट के भीतर ही हालत और भी बिगड़ गई। बीच-बीच में उन्हें किसी कैदी के किसी लोकप्रिय किन्तु कुछ अश्लील गीत की कड़ी सुनाई पड़ जाती थी। एकाएक म० वालनो ने अपने नौकर की ओर देखा। नौकर बाहर चला गया। और उसके बाद गीत फिर सुनाई न पड़ा।

उसी समय एक नौकर जुलिये को हरे गिलास में शराब दे रहा था। म० वालनो इस बात की ओर उसका ध्यान दिलाना न भूली थी कि बाजार में इस शराब की एक बोतल का दाम नौ फ्रैंक है। अपना गिलास हाथ में लिए हुए जुलिये ने म० वालनो से कहा, “लगता है उन लोगों ने वह गन्दा गीत बन्द कर दिया।”

“जरूर। मैंने चुप करवा दिया कम्बख्तों को।” म० वालनो ने बड़े उल्लासपूर्ण भाव से उत्तर दिया।

इन शब्दों को सहन करना जुलिये के लिए कठिन हो गया। अपनी वर्तमान स्थिति के अनुरूप आचरण उसे आ गया था, पर मनोवृत्ति अभी वैसी न हुई थी। ढोंग रचने का काफी अभ्यास होने के बावजूद उसे लगा कि एक बड़ा आँसू उसके गालों पर लुढ़का चला आ रहा है।

उसने आँसू को हरे गिलास के पीछे छिपाने की कोशिश की, पर उस बढ़िया शराब की साथ न्याय करना उसके लिये एकदम असम्भव हो गया। ‘उसे गाने से भी रोक दिया गया’, वह लगातार मन ही मन दोहराता रहा। हे भगवान्, तू यह सब कैसे सहन

करता है ।

भाग्यवश किसी ने उसके असभ्रात भावावेग पर ध्यान न दिया । चु गी के इस्पेक्टर साहब ने एक राजपथी गाना शुरू कर दिया था । गीत की मजेदार टेक को सब लोग समवेत स्वर में गा रहे थे ।

उसे सुनते-सुनते जुलिये की आत्मा उससे कह उठी : यह देखो, ऐसी ही है वह धिनौनी दौलत जो तुम्हें मिलेगी—और वह तुम्हें इन शर्तों और ऐसी सगति से अलग न मिलेगी । सम्भव है कि तुम्हें बीस हजार फ्रैंक की कोई नौकरी मिल जाय, पर तब अपने पेट में व्यजन ढूँसते समय तुम्हें किसी अभागे कैदी को गाने से रोकना होगा, उसके तुच्छ-से राशन से चोरी करके तुम बड़ी-बड़ी दावतें दोगे और तुम्हारी दावत के समय वह और भी दुखी होगा । ओह नैपोलियन, तुम्हारे जमाने में युद्ध की जोखिम उठाकर सौभाग्य के शिखर पर चढ़ना कितना मधुर था । किन्तु बेचारे गरीब के दुख को ऐसे कमीनेपन से बढ़ाना ।

यहां मैं यह अवश्य कहूँगा कि इस स्वगत चिन्तन में जुलिये की जो दुर्बलता प्रगट होती है, उसके विषय में मेरी राय कुछ हल्की पड़ी । वह तो उन ऊपर से विनम्र लगने वाले षडयन्त्रकारियों का योग्य सहकर्मी सिद्ध होगा जो हल्की-सी खरोच के लिये भी दुख प्रगट किये बिना ही किसी महात् देश के आचरण और अभ्यास को बदलने की कामना करते हैं ।

जुलिये को बड़ी तीव्रता से अपने पार्ट का स्मरण हुआ । ऐसे महत्वपूर्ण लोगों के साथ भोजन में वह केवल आँख मूँदकर चुपचाप स्वप्न देखने के लिये निमन्त्रित नहीं किया गया था ।

छपे हुए कपड़े के एक अवकाशप्राप्त कारखानेदार ने, जो बजासो की और उजेस की अकादमियों का सदस्य था, मेज की दूसरी ओर से उससे पूछा कि उसके बाइबिल के अपूर्व अध्ययन के बारे में जो कुछ कहा जाता है क्या वह सच है ।

तुरन्त ही चारों ओर गहन शान्ति छा गई । मानो किसी जादू से

बाइबिल की एक नई प्रति दो अकादमियों के विद्वान् सदस्य के हाथों में आ पहुँची। जुलिये के उत्तर देने पर कही से लैटिन का आधा वाक्य पड़ा गया, जिसे सुनते ही जुलिये आगे सुनाने लगा। उसकी स्मृति निर्दोष थी और उसके इस करतब की भोजन के समाप्ति-काल के अनुकूल ही बड़े जोर-शोर से प्रशंसा की गई। जुलिये ने महिलाओं के चमकते हुए चेहरे की ओर नजर डाली। उनमें से कई देखने में बुरी न थी। चुँगी के संगीत-प्रेमी इन्स्पेक्टर की पत्नी पर उसका ध्यान गया।

“मैं सचमुच लज्जित हूँ”, उसने उन महिलाओं की ओर देखते हुए कहा, “इन महिलाओं के सामने लैटिन में इतनी देर तक बोलता रहा। यदि म० रोबिनो” (अकादमी के सदस्य-महोदय का यही नाम था) “कोई लैटिन का वाक्य पढ़कर सुनाये तो मैं तुरन्त उनका अनुवाद करने का प्रयत्न करूँगा।” शक्ति की इन दूसरी परीक्षा के बाद उसके गौरव का कोई ठिकाना न रहा।

उपस्थित लोगो में कई एक धनी उदारपथी भी थे जो छात्रवृत्ति के योग्य बच्चों के सुखी पिता थे और जो उनी कारण पिछले धार्मिक समारोह के बाद से अचानक अपना मत बदल चुके थे। इस चतुर राजनीतिक चाल के बावजूद म० द रेनाल कभी उन्हें अपने घर पर निमन्त्रित करने को तैयार न हुए। इसलिये ये महानुभाव जुलिये को केवल उसके नाम से और महाराज के आगमन के दिन उसे छोड़े पर बैठे देखकर ही जानते थे। इस समय उसकी प्रशंसा सबसे अधिक उन्होंने ही की। जुलिये सोचने लगा कि कब ये मूर्ख लोग बाइबिल की इस तमाम शब्दावली से थकेगे जिसका एक भी शब्द ये नहीं समझने? किन्तु इसके विपरीत उस शैली की विचित्रता से ही उनका मनोरंजन हो रहा था और वे हँस रहे थे। किन्तु जुलिये थक गया।

छ बजने पर वह गभीरतापूर्वक खड़ा हो गया और लिग्बोरि के नये धर्मशास्त्र विषयक ग्रन्थ का जिक्र करके कहा कि उसका एक अध्याय

उसे अगले दिन याद करके म० शेला को सुनाना है। उसने मधुर शिष्ट स्वर में आगे कहा, “क्योंकि मेरा काम ही दूसरो से उनके पाठ कहलवाना और अपना पाठ दोहराना है।”

सब लोग बहुत हँसे। सभी ने उसकी प्रशंसा की। बेरियेर में इस तरह की वाक्-चातुरी ठीक जँचती है। जुलिये खड़ा हो गया, शिष्टता के विरुद्ध होने पर भी बाकी सब लोग भी खड़े हो गये—ऐसा ही होता है प्रतिभा का चमत्कार। मा० वालनो ने उसे पंद्रह मिनट तक और रोक लिया। उमे बच्चो का धर्मशास्त्र का पाठ सुनना पड़ा। उन्होंने अजीब-अजीब भूले की जिन्हें केवल जुलिये ही समझ सका। पर उसने कुछ न कहा। धर्म के प्रारम्भिक सिद्धान्तों का भी कैसा अज्ञान है। वह सोचने लगा। आखिरकार उसने मा० वालनो का झुककर अभिवादन किया और सोचने लगा कि अब छुट्टी मिल जायेगी। पर उसे ला फोतेन की एक कथा और सुननी पड़ी।

“यह लेखक वास्तव में बहुत ही अनैतिक है”, जुलिये ने मा० वालनो से कहा। “उसकी म० जाँ शुआर के बारे में एक कथा है जिसमें उसने हर श्रद्धास्पद वस्तु का मजाक उड़ाया है। सभी अच्छे आलोचकों ने उसकी दमके लिये निन्दा की है।”

चलने के पहले जुलिये को भोजन के चार-पाँच निमंत्रण मिले।

“यह नौजवान तुम्हारे जिले का गौरव है”, सब मेहमानों ने एक स्वर से कहा। वे तो यहाँ तक कहने लगे कि उसे पेरिस में अध्ययन करने के लिये सार्वजनिक कोष से सालाना अनुदान मिलना चाहिये।

जिस समय भोजन-गृह इस योजना से गुँज रहा था, जुलिये चुपचाप गाड़ी के प्रवेश-द्वार की ओर खिसक गया। ओफ। सुअर। गन्दे सुअर कहीं के। उसने बहुत ही धीमे-धीमे तीन-चार बार कहा और खुली हवा में सतोष की साँस ली।

म० द रेनाल के घर में सारी शिष्टता के पीछे तिरस्कारभरी मुस्कान और श्रेष्ठता के भाव से उसे सदा चिढ़ होती रहती थी। आज वही

इस क्षण सम्पूर्णतः एक प्रकार के आभिजात्य का अनुभव कर रहा था । उस तीव्र अन्तर को अनुभव न करना उसके लिये असंभव था । जाते-जाते वह सोचने लगा कि यदि थोड़ी देर के लिये बेचारे गरीब कंदियो से चुराये हुए धन का और उन्हें गाने से रोकने का सवाल छोड़ भी दिया जाय, तो भी म० द रेनाल के लिये क्या यह संभव है कि वह अपने मेहमानों को शराब की प्रत्येक बोतल का दाम बतलाये ? और एक यह म० वालनो है जो 'तुम्हारा घर' या 'तुम्हारी जायदाद' के बिना अपनी पत्नी से अपने घर-जायदाद तथा अन्य संपत्ति का जिक्र तक नहीं कर सकते ।

भोजन के समय इन्हीं महिला ने, जो संपत्ति के अधिकार के प्रति इतनी सजग थी, अपने एक नौकर को इसलिए बुरी तरह डाँटा था क्योंकि उसने एक शराब का गिलास तोड़कर उनका सेट बिगाड़ दिया था । नौकर ने भी डाँट कर उत्तर बहुत ही गुस्ताखी के साथ दिया था ।

कैसे-कैसे लोग इकट्ठे थे ! जुलिये सोचने लगा । अपने चोरी के माल में से आधा भी वे मुझे देने को तैयार हो जायें, तो भी मैं उनके साथ न रहना चाहूँगा । एक न एक दिन सच्ची बात मेरे मुँह में निकल जायेगी, उन्हें देखकर जो हिकारत का भाव मेरे मन में आता है उसे रोकना बहुत कठिन होगा ।

तो भी म० द रेनाल के आदेश की रक्षा के लिये वह इस तरह के कई निमंत्रणों में सम्मिलित हुआ । जुलिये की लोकप्रियता का कोई ठिकाना न था । उसका सम्मानित सेना की वर्दी पहनने का अपराध क्षमा कर दिया गया, या शायद उसका यह असावधानी का कार्य ही उसकी सफलता का वास्तविक कारण था । शीघ्र ही वेरियेर में इसके सिवाय और कोई चर्चा ही न रही कि देखे इस विद्वान् नौजवान को कौन अपने यहाँ रखता है—म० द रेनाल अथवा अनाथालय के सुपरिन्टेन्डेंट ।

म० मास्लो को मिलाकर इन तीन व्यक्तियों ने ही बहुत वर्षों से

नगर को त्रस्त कर रखा था। मेयर से लोग ईर्ष्या करते थे, उदारपथी उनसे नाराज थे। पर कुल मिलाकर वह ऊँचे खानदान के होने से ऊँची जगह के योग्य समझे जाते थे। पर म० वालनो के पिता ने तो उनके लिये छः सौ फ्रैंक सालाना की आमदनी भी न छोड़ी थी। बचपन में वह गन्दा-सा हरे रंग का कोट पहने घूमा करते थे। उस समय सभी को उन पर बड़ा तरस आता था। आज उनके पास नार्मन घोड़े, सोने की जजीरे, पेरिस से आने वाले कपड़े और हर तरह की धन-दौलत मौजूद थी जिसके लिए लोग उनसे ईर्ष्या करते थे।

यह दुनिया जुलिये के लिये एकदम नई थी। इसके उमड़ते हुए सैलाब में जुलिये को एक ईमानदार आदमी भी मिला। वह एक गणितज्ञ था जिसका नाम था ग्रे और जो जौकोबिनपथी समझा जाता था। जुलिये ने यह निश्चय कर लिया था कि जिस बात को वह गलत समझता है उसे कभी अपने मुँह से न कहेगा। इसलिए म० ग्रे के बारे में वह सन्देह प्रगट करने से अधिक कुछ न कह सका।

वेर्जि से उसके पास बच्चों के अभ्यास की कापियो के मोटे-मोटे पुलिंदे आते थे। उसको अपने पिता से मिलते रहने का भी आदेश था और इस अरुचिकर आवश्यकता को भी वह पूरा करता रहता था। संक्षेप में उसकी प्रतिष्ठा लगभग फिर से स्थापित होने को ही थी कि एक दिन सबेरे अपने आँखों के ऊपर किसी के दो हाथों को अनुभव करके उसकी नींद खुली।

यह मा० द रेनाल थी जो अपने बच्चों के साथ शहर आई थी। किन्तु बच्चों को एक पालतू खरगोश के साथ नीचे छोड़ जल्दी से एक बार में चार-चार सीढियाँ चढ़कर वह आगे-आगे ऊपर जुलिये के कमरे में आ पहुँची। निस्संदेह यह बहुत ही आनन्द का क्षण था, पर बहुत ही संक्षिप्त। जब तक बच्चे अपने खरगोश को लेकर अपने मित्र को दिखाने के लिये ऊपर पहुँचे तब तक मा० द रेनाल वहाँ से गायब हो चुकी थी।

जुलिये ने उन सबका, खरगोश तक का, बड़ा हार्दिक स्वागत किया। उसे लगा जैसे अपना परिवार उसे फिर से वापस मिल गया हो, उसे अनुभव हुआ कि वह उन बच्चों को प्यार करता है और उनसे गपशप करना कितना सुखद है। उनके कोमल स्वर और उनके व्यवहार की सहज शिष्टता से वह जैसे विस्मित-सा हो गया। उसे इस बात की आवश्यकता महसूस हुई कि वे बेरियेर के वातावरण में व्यवहार की जिन अशिष्टताओं और जिन अप्रतीतिकर विचारों ने उसे घेर लिया था उन सबको अपने मन से एकदम निकाल दे। जिन लोगों के यहाँ वह दावतो में जाता था वे अपने यहाँ बचे हुए पकवानों के बारे में ऐसी भेद की बातें बताया करते थे जो उन्हीं को गिराती थी और सुनने वालों को ग्लानि से भर देती थी।

“तुम अच्छे खानदान वालों को सचमुच खर्च करने का अधिकार है,” उसने मा० द रेनाल से कहा और अपनी सब दावतों की कहानी सुनाई।

“तो आजकल तुम्हारा ही फैशन है !” जुलिये के आगमन की सभावना में मा० वालनो द्वारा प्रत्येक बार मुख पर लाली मलने की कल्पना से जी खोलकर हँसते हुए वह बोली। “जरूर वह तुम्हारे हृदय की ताक में हैं।”

दोपहर का भोजन बड़ी प्रसन्नता से बीता। बच्चों की उपस्थिति यद्यपि देखने से एक प्रकार की बाधा थी तो भी उससे साधारण आनन्द और बढ़ा ही। बेचारे बालकों की तो समझ में न आ रहा था कि जुलिये से फिर मिलने पर अपनी प्रसन्नता को किस प्रकार प्रगट करें।

नौकरो ने उन्हें बता ही दिया था कि उसे मा० वालनो के बच्चों को पढ़ाने के लिये दो सौ फ्रैंक अधिक वेतन का लालच दिया जा रहा है। भोजन के बीच ही में स्तानिस्लास-जॉविये ने, जो अपनी हाल की बीमारी के कारण अभी दुर्बल ही था, एकाएक अपनी माँ से पूछा कि उसके खाने-पीने के चाँदी के बर्तन कितने दामों के होंगे।

“यह क्यों पूछ रहे हो ?”

“मैं चाहता हूँ कि उन्हें बेचकर पैसे म० जुलिये को दे दूँ, जिससे वह हमें छोड़कर न जाये।”

स्नेह से जुलिये के आँसू आ गये। उसने स्तानिस्लास को छाती से लगा लिया और उसे अपने घुटनों पर बिठाकर समझाने लगा। उसकी माँ की आँखों में भी आँसू भरे हुए थे। मा० द रेनाल इतनी प्रसन्न थी कि वह अपने बच्चों को बार-बार चूमने लगी। ऐसा करने में उन्हें थोड़ा-सा जुलिये का भी सहारा लेना पड़ता था।

अचानक ही दरवाजा खुला और म० द रेनाल प्रगट हो गये थे। उनका मुख और उसके ऊपर कठोर अप्रसन्नता का भाव उस सहज आनन्द के वातावरण से, जिसे उनकी उपस्थिति ने नष्ट कर दिया था, विचित्र रूप में भिन्न था। मा० द रेनाल का चेहरा उतर गया। उन्हें लगा कि वह कोई बात अस्वीकार न कर सकेगी। जुलिये जोर-जोर से म० द रेनाल को स्तानिस्लास की चाँदी के बर्तन बेचने की बात बताने लगा। उसको विश्वास था कि कहानी का स्वागत न होगा।

सबसे पहले तो म० द रेनाल की भौंहे चढ़ गई जो चाँदी का नाम लेने मात्र से सदा उनके साथ होता था। वह कहा करते थे कि ‘इस धातु का जिक्र सदा मेरे लिये किसी न किसी खर्व की भूमिका बनता रहा है।’ पर यहाँ तो पैसे के मामले के अतिरिक्त भी कुछ था, कुछ ऐसी बात थी जिससे उनका सन्देह बढता था। अपनी अनुपस्थिति में अपने परिवार की इतनी प्रसन्नता ऐसे व्यक्ति को कभी भली न लग सकती थी जो ऐसे अजीब मिथ्याभिमान का शिकार था।

उनकी पत्नी उन्हें गर्व के साथ बताने ली कि जुलिये किस प्रकार चतुराई के साथ सुन्दर ढंग से बच्चों को समझाता है। पर वह बीच ही में बात काट कर बोले, “हाँ, हाँ। मैं जानता हूँ, मुझे वह अपने बच्चों की दृष्टि में घृणित दिखाने का प्रयत्न करता रहता है। उसके लिये यह बहुत ही आसान है कि मेरी तुलना में वह सौ गुना अधिक

अच्छा दिखाई पड़े । आखिरकार मैं तो उनका अभिभावक और स्वामी हूँ । इस देश में हर वस्तु विधिसम्मत अधिकार को बुरा सिद्ध करती जान पड़ती है । बेचारा फ्रांस ।”

म० द रेनाल अपने पति के अभिवादन में निहित प्रत्येक ध्वनि की परीक्षा करने के लिये न रुक सकी । उन्हें अभी-अभी जुलिये के साथ समूचा दिन बिता सकने की हल्की-सी सम्भावना दीख पड़ी थी । उन्हें शहर से बहुत सी चीज़ें खरीदनी थी इसलिए उन्होंने घोषणा कर दी कि वह दोपहर का भोजन किसी जलपानगृह में करने का पूरा निश्चय कर चुकी हैं, उनके पति चाहे जो कहे वह अपनी योजना पर अटल रहेगी । बच्चे तो जलपानगृह का नाम सुनते ही उछल पड़े थे ।

म० द रेनाल अपनी पत्नी को पहली ही दुकान में छोड़कर कुछ लोगो से मिलने चले गये । वापस लौटे तो वह सबेरे से भी अधिक चिढ़े हुए थे । उन्हें विश्वास हो गया था कि सारा शहर केवल जुलिये और उनके बार में ही चर्चा कर रहा है, यद्यपि वास्तव में अभी तक किसी ने भी विपरीत अथवा सन्देहजनक बात का संकेत न दिया था । मेयर से जो बातें कही गई थी वे केवल इस प्रश्न को लेकर थी कि जुलिये छ सौ फ्रैंक पर उनके साथ रहेगा अथवा अनाथाश्रम के सुपरिन्टेन्डेन्ट के आठ सौ स्वीकार करके उनके यहाँ चला जायेगा ।

सुपरिन्टेन्डेन्ट महोदय ने भेट होने पर म० द रेनाल के साथ बड़ा रूखा व्यवहार किया । इस व्यवहार के पीछे भी बड़ी चालें थी । वास्तव में प्रान्तों में शायद ही कोई काम बिना विचारे किया जाता हो । क्योंकि वहाँ लोग इतना कम भावावेग अनुभव करते हैं कि भावनाएँ सतह के नीचे दबी रहती हैं ।

म० वालनो, पेरिस से तीन सौ मील दूर की शब्दावली में, एक मनमौजी असंस्कृत व्यक्ति थे । यानी वह इस तरह के आदमी थे जो स्वभाव से ही निर्लज्ज और अशिष्ट होते हैं । १८१५ के बाद से उनके जीवन की सफलताओं ने इन स्वाभाविक प्रवृत्तियों को और भी प्रबल

कर दिया था । एक प्रकार से वह म० द रेनाल की अवीनता में बेरियर का शासन चलाते थे । पर वह स्वयं बहुत सक्रिय थे, किसी चीज़ से लज्जित न होते थे, हर व्यक्ति के काम में टाँग अड्डाते थे, हमेशा तैयार रहते थे, लिखते थे, पढ़ते थे । कोई डाँट देता तो ध्यान न देते थे और अपने निजी महत्व का कोई दावा न करते थे । इन सब कारणों से धार्मिक लोगो की दृष्टि में उनकी प्रतिष्ठा मेयर के बराबर ही हो गई थी । एक प्रकार से म० वालनो ज़िले के बनियो से कहते 'अपने बीच से दो सबसे मूर्ख आदमी चुनकर मुझे बताओ,' वकीलो से कहते . 'तुममें दो सबसे अधिक बुद्धू कौन से हैं ?' स्वास्थ्य अधिकारी से कहते . 'दो एक दम अधिकचरे डाक्टर बताओ ।' इस भाँति जब उन्होंने हर धर्मे के सबसे निर्लज्ज व्यक्ति इकट्ठे कर लिये तो उनसे कहने लगे, "आओ, अब हम लोग मिलकर शासन चलायें ।"

इन लोगो के व्यवहार से म० द रेनाल अवाक् रह जाते थे । पर म० वालनो की मोटी चमड़ी वाली शिष्टता किसी बात का बुरा न मानती थी, जब तरण फादर मास्लो ने सरेआम उन्हें झूठा कहा तब भी नहीं । पर अपनी तमाम सफलता के बावजूद म० वालनो को भी इस बात की आवश्यकता पड़ती थी कि छोटे-मोटे अशिष्टता के कार्यों द्वारा इन कठोर सत्यो के विरुद्ध अपने आप को सुरक्षित करते रहे । म० आप्पेर के आगमन से उत्पन्न होने वाली आशंकाओं ने उनकी कार्रवाइयो को दूना-चौगुना कर दिया था । वह तीन यात्राएँ बजासों की कर चुके थे । हर डाक से वह बहुत-सी चिट्ठियाँ लिखते, कुछ पत्र वह उन अज्ञात व्यक्तियों के हाथों भेजते जो अँधेरा होने पर उनसे मिलने आया करते थे । सम्भवत बूढ़े पादरी म० शेला को नौकरी से निकाल कर उन्होंने भूल की थी, क्योंकि उस द्वेषपूर्ण काम से बहुत से धार्मिक व्यक्ति उन्हें बहुत ही दुष्ट आदमी समझने लगे थे । साथ ही इस सेवा ने उन्हें पूरी तरह से प्रधान विकार म० फिलेर के चंगुल में फसा दिया था जो उन्हें अजीब-अजीब काम करने के लिये सौंपते थे ।

जिस समय उन्होंने गुमनाम पत्र लिखने का इरादा किया, उस समय अपनी कूटनीति के फलस्वरूप उनकी यही स्थिति थी। परेशानी बढ़ाने के लिये उनकी पत्नी ने शान के कारण यह घोषणा कर दी कि वह जुलिये को अपने यहाँ रखना चाहती हैं।

म० वालनो समझते थे कि इस स्थिति में अपने पुराने सहयोगी म० द रेनाल से अब स्थायी भगड़ा अनिवार्य है। म० द रेनाल उन्हें डाढ़े। इस बात की उन्हें अधिक चिन्ता न थी, किन्तु वह कहीं बजासो अथवा पेरिस लिख देगे तो तुरन्त ही कोई मंत्री का भतीजा वेरियर में आ घमकेगा और अनाथाश्रम का भार सम्हाल लेगा। इसलिये जुलिये वाली दावत में कई उदारपथियों को भी उन्होंने बुलाया था। मेयर के विरुद्ध उन्हें इन्हीं लोगो का सहारा था पर यदि कहीं बीच में चुनाव आ पड़े तो मुश्किल हो जाती। स्पष्ट था कि गलत पार्टी को बोट देकर अनाथाश्रम का काम हाथ में रखना असम्भव होगा। इन सब चतुराइयों और चाल-बाजियों की कहानी मा० द रेनाल भली भाँति समझती थी जो उन्होंने एक दुकान से दूसरी पर जाते-जाते जुलिये को सुना दी थी। इस प्रकार वे लोग क्रमशः 'कूर द ला फिदेलिते' पर आ पहुँचे जहाँ उन्होंने उतनी ही शान्ति से कुछ घंटे बिताये जैसे वेर्जि में बिताया करते थे।

म० वालनो अपने पुराने सरक्षक के साथ स्थायी भगड़ा टालने की पूरी कोशिश कर रहे थे। उस दिन उनकी तरकीब सफल तो हुई पर उससे मेयर का क्रोध और भी बढ़ गया। जिस समय मेयर ने जलपानगृह में प्रवेश किया उस समय उनकी मानसिक स्थिति बहुत ही दयनीय थी। वैसे के लोभ के कारण उत्पन्न होने वाली ओछी से ओछी और लज्जाजनक भावनाओं तथा मिथ्याभिमान के बीच संघर्ष ने उन्हें चूर-चूर कर दिया था। दूसरी ओर उनके बच्चों की प्रसन्नता और आनन्द का कोई ठिकाना न था। इस विसंगति ने उनके क्रोध की रही-सही कसर भी पूरी कर दी।

“तुम लोगो को देखकर तो लगता है कि मेरे परिवार को भी मेरी

उपस्थिति पसन्द नहीं ।” उन्होंने भीतर आते-आते कहा । उनकी आवाज का स्वर रोबीला था ।

इस बात के उत्तर में उनकी पत्नी उन्हें अलग ले जाकर जुलिये को नौकरी से छुड़ा देने की आवश्यकता समझाने लगी । अभी-अभी जिस सुख का अनुभव वह करके चुकी थी उसने उन्हें बड़ी सहजता और मन की शक्ति प्रदान की थी । अपनी जिस योजना पर वह पिछले पन्द्रह दिन से विचार कर रही थी, उसे कार्यान्वित करने के लिये इसी शक्ति की आवश्यकता थी ।

वेरियेर के मेयर बेचारे और भी अधिक उद्विग्न थे कि शहर के लोग उनके पैसे के लालच के कारण उनकी खुल्लमखुल्ला हँसी उड़ा रहे हैं । म० बालनो की उदारता डाकुओं की भाँति मुक्तहस्त थी और पिछले दिनों विभिन्न धार्मिक आयोजनों में जो चन्दा इकट्ठा किया गया था उसमें उन्होंने जी खोलकर दान दिया था । चन्दा उगाने वालों के रजिस्ट्रो में म० द रेनाल का नाम वेरियेर के ज़मींदारों की सूची में प्रायः सबसे नीचे रहता था, क्योंकि ये नाम दान की रकम के हिसाब से लिखे जाते थे । म० द रेनाल के यह कहने से भी कोई लाभ न था कि वह कोई मुनाफा नहीं कमाते । धार्मिक सस्थाओं के लोग ऐसी बातों को हँसी का विषय मानने के अभ्यस्त नहीं हैं ।

: २३ :

पद की चिन्ता ।

किन्तु आइये इसछोटे-से आदमी को उसकी छोटी-छोटी चिन्ताओं के बीच छोड़ दे । उसे तो एक अनुचर-वृत्ति वाले आदमी की ज़रूरत थी, उसने एक प्रतिभावान व्यक्ति को क्यों अपने यहाँ रक्खा ? वह लोगो का चुनाव करना नहीं जानता ? उन्नीसवीं शताब्दी में जब कोई उच्च परिवार का प्रभावशाली व्यक्ति प्रतिभाशाली व्यक्ति से मिलता है तो साधारणतः या उसे मृत्यु-दण्ड, देश-निकाले अथवा कैद की सज़ा दिला देता है । उसका इस तरह से अपमान करता है कि वह दुःख के कारण स्वयं ही मर जाय । किन्तु संयोगवश इस मामले में परेशानी प्रतिभाशाली व्यक्ति को नहीं है ।

फ्रांस के छोटे-छोटे नगरों अथवा न्यूयार्क की भाँति मतदान द्वारा सत्ता पाने वाली सरकार का बड़ा भारी दुर्भाग्य यह है कि वे यह नहीं भूल सकते कि म० द रेनाल जैसे व्यक्ति भी संसार में जीवित हैं । बीस हजार की आबादी वाले शहर में ऐसे लोग ही जनमत का निर्माण करते हैं और वैधानिक शासन वाले देशों में जनमत बड़ी भयानक वस्तु है । एक उदार तथा उच्च हृदय वाला व्यक्ति यदि आपसे सौ-दो-सौ मील दूर न रहता होता तो आपका मित्र ही होता । पर अब वह आपको अपने शहर के जनमत के आधार पर नापता है जो संयोग से उच्च और धनी परिवार में पैदा होने वाले और अत्यन्त ही साधारण मूर्ख व्यक्तियों द्वारा बनता है । अपने सहजीवियों से श्रेष्ठ दिखाई पड़ने वाले व्यक्ति की खैर नहीं ।

भोजन के बाद ही सारा परिवार फिर वेर्जि के लिए चल पड़ा, किन्तु दो दिन बाद ही जुलिये ने फिर उन्हें वेरियेर में देखा। उन लोगो को आये एक घण्टा भी न बीता होगा कि यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि मा० द रेनाल उससे कोई बात छिपा रही है। जब भी वह उन लोगो के बीच जा पहुँचता तो वह अपने पति से वार्तालाप बन्द कर देती और ऐसा लगता वह चाहती है कि वह वहाँ से चला जाय। जुलिये ने एक से अधिक बार इस चेतावनी की प्रतीक्षा न की, वह भी रूखा और विरक्त हो गया। यह बात मा० द रेनाल की नजर में भी पड़ी पर उन्होंने इस विषय में कोई बातचीत न चलाई।

इन्हें कोई दूसरा प्रेमी मिल गया है, जुलिये ने सोचा। कल तक ही वह मेरी थी। कितना स्नेहपूर्ण व्यवहार कर रही थी। पर यह इन सब बड़े घर की स्त्रियो का ढोंग है। वे उन राजाओ की भाँति हैं जो उस मन्त्री के साथ अधिक से अधिक कृपा और आदर का व्यवहार करते हैं जिसे घर पहुँचकर काम से निकाले जाने का पत्र मिलने वाला हो।

जुलिये ने एक बात पर ध्यान दिया कि उसकी उपस्थिति से रुक जाने वाले इन वार्तालापो में वेरियेर के एक बड़े भारी सरकारी मकान का जिक्र बराबर आता था, जो नगर के सबसे अच्छे हिस्से में एक गिरजाघर के सामने बना था। मकान पुराना था, पर बहुत ही बड़ा था और उसमें बहुत से कमरे थे। किन्तु इस मकान में और नये प्रेमी में क्या सामान्य बात हो सकती है? जुलिये आश्चर्य से सोचने लगा। अपने दुःख में वह फ्रेसिस प्रथम की उन सुन्दर पक्तियो को बार-बार दोहराता रहा जो उसे इस समय ठीक इसी लिए और भी नई जान पड़ रही थी क्योंकि मा० द रेनाल ने ही वे महीने भर पहले उसे सिखाई थी। उस समय कितनी सौगन्धो ने, कितने स्नेहालिंगनो ने इन पक्तियो को मिथ्या सिद्ध किया था?

स्त्री के दिल का कोई ठिकाना नहीं।

मूर्ख, समझ से काम ले, उसका विश्वास न कर !

म० द रेनाल कुछ जल्दी में बजासो चले गये । इस यात्रा का निश्चय दो घंटे के भीतर ही हुआ था और वह बहुत परेशान दिखाई पड़ रहे थे । लौटने पर उन्होंने भूरे कागज में लिपटा हुआ एक बड़ा भारी बडल मेज़ पर पटक दिया ।

“लो, यह वाहियात काम खत्म हुआ,” उन्होंने अपनी पत्नी से कहा । एक घण्टे बाद जुलिये ने पोस्टर लगाने वाले को इस बड़े पैकेट को ले जाते हुए देखा और वह बड़ी उत्सुकता के साथ उसके पीछे-पीछे चला । वह सोचने लगा कि बड़े मोड़ पर मुझे इस रहस्य का पता चल जायेगा ।

वह बड़ी अधीरता के साथ पोस्टर लगाने वाले के पीछे खड़ा होकर प्रतीक्षा करने लगा जो पोस्टर के पीछे अपने बड़े ब्रुश से लेही लगा रहा था । पोस्टर चिपकते ही जुलिये ने पढ़ा कि उस पर एक ग्राम नीलाम का विज्ञापन है । नीलाम उसी घर का होने वाला था जिसका जिक्र म० द रेनाल और उनकी पत्नी के बीच वार्तालाप में जुलिये ने कई बार सुना था । यह घोषणा की गई थी कि अगले दिन दो बजे टाउनहॉल के सभा भवन में तीसरी सोमवत्ती बुझने ही पड़ा लिख दिया जायगा ।

जुलिये को बहुत निराशा हुई । उसे लगा कि वक्त बहुत कम दिया जा रहा है । इतने जल्दी सब खरीदारों को पता ही कैसे चल सकेगा । साथ ही इस पोस्टर के ऊपर पन्द्रह दिन पहले की तारीख पड़ी हुई थी । उसने पोस्टर को नगर के तीन अलग-अलग हिस्सों में ऊपर से नीचे तक पढ़ा, पर कुछ अधिक न समझ सका ।

फिर वह उस मकान को देखने पहुँचा । उसका रक्षक सका ध्यान उसकी ओर न किया गया था, किसी पड़ोसी से रहस्य भरे स्वर में कह रहा था : “फायदा क्या है । बक्त बरबाद करना है । म० मास्को ने वादा कर दिया है कि वह तीन सौ फ्रैंक में ले लेंगे । और क्योंकि मेयर ने इसे रोकना चाहा तो प्रधान विचार म० द फिलेर ने उन्हें बिशप के महल में बुला भेजा ।” एकाएक जुलिये को देखकर दोनों मित्र बहुत

संकुचित हो गये और फिर एक शब्द भी न बोले ।

नीलाम के समय जुलिये भी वहाँ मौजूद था । कुछ अँधेरे से कमरे में बड़ी भीड़ थी । पर प्रत्येक व्यक्ति अपने पड़ोसियों को बड़े विचित्र ढंग से ऊपर से नीचे तक देख रहा था । सारी आँखें एक मेज पर गड़ी हुई थी, जहाँ जुलिये ने देखा कि तीन जली हुई मोमबत्तियाँ एक तश्तरी में रक्खी हैं । नीलाम करने वाला पुकार रहा था “तीन सौ फ्रैंक, सज्जनो !”

“तीन सौ फ्रैंक ! यह तो बड़ी ज्यादाती है,” एक आदमी ने बड़े धीरे से अपने पड़ोसी से कहा । जुलिये उनके बीच में खड़ा था । “आठ सौ से कम का माल नहीं है । मैं बोली बढ़ाता हूँ ।”

“तुम बस अपने सिर मुसीबत मोल लोगे । म० मास्लो और म० वालनो को अपने खिलाफ करके तुम्हें बड़ा लाभ होगा, बिशप, भयानक प्रधान विकार तथा उनकी बाकी मंडली का तो कहना ही क्या ।”

“तीन सौ बीस फ्रैंक ।” दूसरे ने पुकार कर कहा ।

“मूर्ख, गधे !” उसके पड़ोसी ने उत्तर दिया । “मेयर का एक जासूस ठीक तुम्हारे बगल में खड़ा है ।” उसने जुलिये की ओर इशारा करते हुए जोड़ा । बात किसने कही यह देखने के लिए जुलिये जल्दी से मुड़ा, पर फ्रांस-कोते के इन निवासियों में से कोई भी उसकी ओर न देख रहा था । उनके आत्मसंयम से जुलिये का संयम भी लौट आया । इसी समय आखिरी मोमबत्ती भी बुझ गई । और नीलाम करने वाला अपनी खिंचती हुई-सी आवाज में पुकार उठा : “मकान को अगले नौ वर्ष के लिए जिलाधीश के दफ्तर के बड़े बाबू म० द से-जिरो के नाम तीन सौ तीस फ्रैंक में कर दिया गया ।”

मेयर के जाते ही लोग टीका-टिप्पणी करने लगे । एक ने कहा : “तीस फ्रैंक गुजो की मूर्खता के कारण और लग गये ।” “पर म० द से-जिरो वह गुजो से वसूल कर लेगे ।” “कैसी शर्म की बात है ।” जुलिये की बाई और खड़े एक व्यक्ति ने कहा, “मैं खुद इस मकान में एक कारखाना खोलने के लिए आठ सौ फ्रैंक देने को तैयार हूँ । और

सुर्ख और स्याह

फिर भी मेरे लिये यह सौदा अच्छा ही होता ।”

“इस बातचीत से क्या फायदा ?” एक उदारपथी नौजवान कारखानेदार ने जवाब दिया । “क्या म० द सें-जिरो धर्म-संघ के सदस्य नहीं हैं ? क्या उनके चारों बच्चों को छात्रवृत्तियाँ नहीं मिलती ? बेचारा ! बेरियेर के कम्यून को उनके वेतन में पाँच सौ फ्रैंक और मिलाने पड़ते हैं ।”

“और ज़रा सोचो कि मेयर इसको रोक न सके ।” तीसरे आदमी ने कहा । “वह भी कम नहीं है, पर वह लोगो की जायदाद इस तरह नहीं हड़पते ।”

“हड़पते नहीं हैं ?” एक अन्य व्यक्ति बोला । “नहीं, नहीं ! ऐसे कामो का पैसा एक जगह इकट्ठा होता है और वहाँ में साल के आखीर में सब लोग अपना-अपना हिस्सा बँटा लेते हैं । पर यहाँ तो यह सोरेल खड़ा है । चलो चले ।”

जुलियें बड़े बुरे मिजाज में घर लौटा और देखा कि मा० द रेनाल बहुत उदास हैं । “तुम नीलाम से आ रहे हो ?” उन्होंने उससे पूछा ।

“जी हाँ, आ तो रहा हूँ । और वहाँ मुझे श्रीनाम् मेयर महोदय के जासूस समझे जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ !”

“मेरी बात सुनते तो उन्हें शहर से बाहर चले जाना चाहिये था ।”

इसी समय म० द रेनाल ने बहुत क्षुब्ध मुद्रा में प्रवेश किया । भोजन भी चुपचाप ही समाप्त हुआ । मा० द रेनाल ने जुलियें को बच्चों के साथ वेजि चलने का आदेश दिया । यात्रा बड़ी उदास बीती, मा० द रेनाल अपने पति को सान्त्वना देने का प्रयत्न करती रही ।

“इन बातों की तो तुम्हें अब आदत डाल लेनी चाहिये,” उन्होंने कहा ।

शाम को वे लोग चुपचाप अँगोठी के पास बैठे रहे । आग में चटकती हुई लकड़ी की आवाज़ के सिवाय और कोई शब्द न था । वह ऐसा उदासी का क्षण था जो सुखी से सुखी और घनिष्ठ परिवार में भी कभी-कभी आ जाता है ।

सुख और स्याह

२१७

अचानक एक बालक आनन्द से चीख पडा : ‘घण्टी बजी ! कोई घंटी बजा रहा है !’

मेयर जोर से बोले, “यदि यह म० द से-जिरो मुझे धन्यवाद देकर परेशान करने आये है तो मैं उन्हें कुछ सुनाये बिना न रहूँगा । कोई हद है ! उन्हें तो उस आदमी वालनो का कृतज्ञ होना चाहिए । मेरी तो सिर्फ बदनामी ही हुई । यदि उन अखबार वाले जैकोबिन शैतानो को इस बात का पता चल जाय और वे मुझे उसी थैली का चट्टा-बट्टा बताएँ तो मेरे पास कहने का है ही क्या ?” उसी समय बड़े-बड़े काले गलमुच्छो वाले एक सुन्दर से व्यक्ति ने नौरुर के पीछे-पीछे कमरे में प्रवेश किया ।

“मेयर महोदय, मैं जरोनिमो हूँ । मैं यह एक पत्र नेपिल्स में राजदूत के सचिव शवालिये द बोवेजि से लाया हूँ, जो उन्होंने मुझे चलते समय दिया था । यह कोई नौ दिन पहले की बात है, सिनोर जरोनिमो ने मा० द रेनाल की ओर देखते हुए प्रसन्नतापूर्वक कहा, “मैडम, आपके भाई और मेरे परम मित्र सिनोर द बोवेजि ने कहा है कि आप इटैलियन भी बोलती हैं ।”

इस नेपिल्स-निवासी की प्रसन्न मुद्रा ने उस उदास सन्ध्या को बहुत ही आनन्दपूर्ण बना दिया । मा० द रेनाल उससे कुछ भोजन करने के लिए बहुत अनुरोध कर रही थी । जुलिये को जो जासूस शब्द उस दिन दो बार सुनने को मिला था, उसे भुलाने के लिए उन्होंने सारे घर में बड़ी धूमधाम-सी मचा दी ।

सिनोर जरोनिमो विख्यात गायक थे और बहुत ही शिष्ट तथा हँसमुख व्यक्ति थे । ये ऐसे दो गुण थे जो अब फ्रांस में एक साथ कठिनाई से पाये जाते हैं । भोजन के बाद उन्होंने मा० द रेनाल के साथ एक गीत गाया और बहुत-सी मजेदार कहानियाँ सुनाई । रात को एक बजे भी जब बच्चो से सोने के लिए कहा गया तो वे तैयार न हुए ।

“बस एक कहानी और,” सबसे बड़े लडके ने कहा ।

“यह मेरी अपनी कहानी है,” सिनोर जरोनिमो ने उत्तर दिया ।

“आठ वर्ष पहले मैं भी आपकी ही तरह नेपिल्स में पढ़ता था—मेरा मतलब है कि आपकी ही उम्र का था, किन्तु वेरियर के सुन्दर नगर के विख्यात मेयर के बेटे होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त न था।” यह बात सुनकर म० द रेनाल ने एक लम्बी सास ली और अपनी पत्नी की ओर देखा।

“सिनोर जिगारेली,” नौजवान गायक अपने बोलने के इटैलियन ढंग को और भी अतिरजित करके बच्चों को जी खोलकर हँसाते हुए कहने लगा, “बड़े ही कड़े शिक्षक थे। स्कूल में कोई उन्हें पसन्द नहीं करता था। पर वह सदा यह चाहते कि लोग ऐसा व्यवहार करे मानो वे उन्हें बहुत अच्छे लगते हैं। मैं प्रायः बाहर आया करता था। मैं सैन कार्लिनो थियेटर भी जाता, जहाँ देवताओं के योग्य सगीत मुझे सुनने को मिलता था। पर हे भगवान् ! पता नहीं कि कैसे टिकट के लिए आठ सौ सू इकट्ठे कर पाता था ? आठ सौ सू बहुत होते हैं,” उसने बच्चों की ओर देखते हुए कहा जो जोर-जोर से हँस रहे थे।

“सैन कार्लिनो थियेटर के मैनेजर सिनोर गियोवैन्नोव ने मुझे गाते हुए सुन लिया। मैं उस समय तेरह वर्ष का था। वह कहने लगे, ‘यह बालक तो बड़ी निधि है’।”

“यहाँ कुछ गाओगे मेरे नौजवान दोस्त ?” उन्होंने मुझ से पूछा।

“मुझे क्या मिलेगा ?”

“४० दुकाट हर महीने।” उन्होंने कहा। यह १६० फ्रैंक के बराबर हुआ। मैंने तो सोचा कि मेरे लिए स्वर्ण के द्वार खुल गये।

मैंने गियोवैन्नोव से कहा, “पर जिगारेली जैसे कठोर आदमी से मुझे छुट्टी कैसे मिलेगी ?”

“वह मेरे ऊपर छोड़ दो। सिनोर गियोवैन्नोव मुझ से बोले, ‘सबसे पहले तो एक छोटी-सी बात प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने की है।’”

मैंने दस्तखत कर दिये। उसने मुझे तीन दुकाट दिये। मैंने इतना पैसा पहले कभी देखा भी नहीं था। फिर उन्होंने मुझे बताया कि क्या करना चाहिये।

“अगले दिन सबेरे मैंने भयकर सिनोर जिंगारेली से भेट करने की आज्ञा माँगी। उनका बूढ़ा नौकर मुझे भीतर ले गया। “क्या बात है?” जिंगारेली ने पूछा। मैंने कहा, “गुरु जी, मुझे अपने बुरे आचरण के लिये बहुत दुःख है। मैं अब कभी रेलिंग के ऊपर चढ़कर स्कूल से बाहर न जाया करूँगा। अब मैं मेहनत भी दुगनी करूँगा।”

“यदि मुझे इतनी सुन्दर भारी आवाज के बरबाद होने का भय न होता तो मैं तुम्हें बन्द कर देता, शैतान लडके, और पंद्रह दिन तक रोटी और पानी के सिवाय कुछ न देता।”

“गुरु जी,” मैंने उत्तर दिया, “मैं अब सारे स्कूल के लिये आदर्श बनूँगा। पर मैं एक कृपा चाहता हूँ। अगर कोई आकर मेरे स्कूल के बाहर कहीं गाने के लिये अनुमति माँगे तो कृपा करके वह स्वीकार न कीजियेगा। बताइये, बताइये, यह कृपा करेगे न?”

“कौन मूर्ख तुम्हारे जैसे निकम्मे लडके के लिये आकर यह कहने वाला है? क्या तुम मेरी हँसी उड़ाना चाहते हो? अच्छा अब चलते बनो, भागो यहाँ से।” उन्होंने कहा, “नहीं तो बताये देता हूँ कि सूखी रोटी पर तुम्हें बन्द कर दूँगा।”

एक घण्टे बाद सिनोर गियोवैन्नोव सचालक महोदय से मिलने आये, और उनसे कहा, “मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि जरोनिमो को छूट्टी देकर मुझे कुछ धन कमा लेने दीजिये। उसे मेरे थियेटर में गाने की आज्ञा दीजिये तो इन्हीं जाडो में मैं अपनी बेटी का विवाह कर सकूँगा।”

“उसके जैसे दुष्ट लडके का आप क्या करेगे?” जिंगारेली ने कहा। “मैं आज्ञा नहीं दूँगा। वह आपको नहीं मिलेगा। इसके अलावा मैं अगर तैयार भी हो जाऊँ तो वह कभी स्कूल छोड़कर नहीं जायेगा। उसने अभी-अभी मेरे आगे नहीं जाने की सौगन्ध खाई है।”

“अगर सवाल सिर्फ उसके चाहने न चाहने का है,” गियोवैन्नोव ने अपनी जेब से प्रतिज्ञापत्र निकालते हुये गम्भीरतापूर्वक कहा, “तो यह

देखिये । यह रहे उसके हस्ताक्षर ।”

यह देखकर जिगारेली क्रोध से उबलने लगा । उसने अपनी घण्टी को जोर से पकड़ कर खीचा और क्रोध से विक्षिप्त स्वर में चिल्लाकर कहा : “देखो, ज़रोनिमो को फौरन स्कूल से निकाल बाहर करो ।” इस तरह मैं स्कूल से निकाला गया, पर मेरा हँसी के मारे बुरा हाल था । उसी दिन रात को मैंने मोल्टीप्लिको का गीत गाया । गीत में पुंवनैलो विवाह करना चाहता है, वह अपनी उँगलियों पर अपने घर के लिए आवश्यक चीजों को गिनता है और हर बार उसका हिसाब गड़बड़ हो जाता है ।”

“अरे, वह गीत हमें सुनाइयेगा नहीं ?” मा० द रेनाल ने कहा । ज़रोनिमो ने गीत सुना दिया और सब लोगों के पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गये । सिनोर ज़रोनिमो दो बजे तक नहीं सोये । अगले दिन सबरे उन्होंने सारे परिवार को अपने मनोहर व्यवहार, हँसमुख स्वभाव और विनीत आचरण से प्रसन्न करके विदा ली । मस्यु और मादाम द रेनाल ने उन्हें फ्रांस के राजदरबार के लिये आवश्यक परिचय पत्र दे दिये ।

तो धोखा-धड़ी जहाँ देखो वही है, जुलिये सोचने लगा । यह सिनोर ज़रोनिमो साठ हजार फ्रैंक पारिश्रमिक लेकर लन्दन जा रहे हैं । सेन कार्लिनो के मैनेजर की कुशल बुद्धि के बिना उनकी सुन्दर आवाज़ का कम से कम दस साल तक न तो किसी को पता चलता और न उसकी प्रशंसा होती . . . । सचमुच रेनाल बनने के बजाय ज़रोनिमो बनना कहीं अच्छा है । समाज उसे इतना सम्मान नहीं देता, पर उसे ऐसे काम भी नहीं करने पड़ते जैसे आज मुझे करने पड़े । उसकी जिन्दगी भी मौज की है ।

एक बात से जुलिये कुछ चकित-सा था । बेरियेर में उसने अकेलेपन में जो समय बिताया था उसमें वह सुखी अनुभव करता रहा था । दावतों को छोड़कर और कहीं उसे उदासी अथवा अरुचि का अनुभव नहीं हुआ था । उस निर्जन घर में क्या वह निर्विघ्न अबाध रूप में लिखने, पढ़ने और सोचने में सफल नहीं हुआ था ? और वह भी एक ओछे

सुख और स्याह

२२१

मस्तिष्क की गतिविधि का अध्ययन करने की, और साथ-साथ उसे मिथ्या शब्दों तथा कार्यों द्वारा धोखा देते रहने की, निर्मम आवश्यकता के कारण प्रत्येक मिनट अपने गौरव के स्वप्नों से घसीटे गये बिना ही ।

क्या तब सुख इतना समीप है ? वह सोचने लगा ऐसे जीवन में खर्च बहुत कम है । मैं चाहू तो एलिजा से विवाह कर सकता हूँ या फूके का साभेदार बन सकता हूँ । पर जो धात्री अभी-अभी पहाड़ की चोटी पर चढ़ने पर वहाँ बैठने में विश्राम के आनन्द का अनुभव करता है, वह यदि वही सदा विश्राम करने के लिये बाध्य हो तो क्या सुखी हो सकेगा ?

मा० द रेनाल के मन की ऐसी दशा थी कि वह बड़े भयंकर विचारों से भरा रहता । अपने निश्चय के बावजूद उन्होंने जुलिये को पट्टे के सम्बन्ध में सारी कहानी बता दी थी । क्या अब उसके कारण मैं अपना प्राण भूल जाया करूँगी ? वह सोचने लगी । अपने पति का जीवन किसी सकट में दिखाई पड़ने पर वह उन्हें बचाने के लिये निस्सकोच अपने प्राण का बलिदान कर देती । वह ऐसी उच्चमना और रोमान्टिक स्वभाव की स्त्री थी जिनके लिये सभावना होने पर भी उदारता के कार्य को न करने से लगभग उतना ही पश्चात्ताप होता था जितना कोई अपराध करके ! किन्तु तो भी ऐसे भीषण यातनापूर्ण दिन भी आते थे जब वह अपने मन से इस चित्र को निकाल नहीं पाती थी कि यदि किसी प्रकार से वह विधवा हो जाये और जुलिये से विवाह कर सके तो कितना अपूर्व सुख प्राप्त हो ।

जुलिये उनके बेटों को उनके पिता की अपेक्षा कहीं अधिक प्यार करता था और वे भी उसकी समुचित कठोरता के बावजूद उसके भक्त थे । मा० द रेनाल भली भाँति जानती थी कि यदि उन्होंने जुलिये से विवाह किया तो उन्हें वेर्जि और उसके उन प्रिय छाया-कुँजों को छोड़ कर जाना पड़ेगा । वह तब पेरिस में रहने और बच्चों को इस भाँति शिक्षा देने की कल्पना करने लगती कि सब लोग चकित रह जायें । उनके बच्चे, वह स्वयं और जुलिये सभी तब पूरी तरह सुखी हो सकते ।

विवाह का, अथवा उन्नीसवीं शताब्दी ने जो कुछ उसे बना दिया है उसका, परिणाम विचित्र है । जहाँ कहीं विवाह के पहले प्रेम होता भी है, वहाँ विवाहित जीवन की उकताहट से अनिवार्य रूप से प्रेम की हत्या हो जाती है । साथ ही साथ, जैसा कि एक दार्शनिक ने कहा है, इस उकताहट के कारण शीघ्र ही रखे और कठोर स्वभाव की स्त्री को छोड़कर बाकी उन तमाम धनी व्यक्तियों में जिन्हें काम करना आवश्यक नहीं है, प्रत्येक प्रकार के शान्तिपूर्ण आनन्द के लिये अरुचि उत्पन्न हो जाती है और प्रेमलीला की ओर रुझान पैदा हो जाता है ।

इस दार्शनिक दृष्टि से मुझे मा० द रेनाल को क्षमा करने की इच्छा होती है, पर वेरियर में कोई उन्हें क्षमा न करता था और यद्यपि उन्हें इस बात का कोई सन्देह तक न था पर समूचे शहर को उनके इस बदनामी-भरे प्रेम-काण्ड से अधिक अन्य किसी बात में दिलचस्पी न थी । इस महत्वपूर्ण विषय के कारण लोग उस बार की शरद ऋतु में सदा की अपेक्षा कम उबे थे ।

शरद ऋतु और शीतकाल का कुछ भाग जल्दी ही बीत गया । उन लोगों को वेर्जि के जंगलों को छोड़कर आना पड़ा । वेरियर के सर्वोच्च समाज के लोगों ने जब यह देखा कि उनकी निन्दा का मा० द रेनाल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है तो वह कुपित हो उठे । सप्ताह भर के भीतर ही वे गम्भीर लोग, जो अपनी गम्भीरता के कारण ऐसे काम करने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं, बड़े ही सयत शब्दों के द्वारा मा० द रेनाल के मन में निर्मम से निर्मम सन्देह उपजाने लगे ।

मा० वालनो हर कदम बड़ी सावधानी से रख रहे थे । उन्होंने एलिजा को एक दिन एक सम्मानित तथा उच्च परिवार में, जहाँ पाँच स्त्रियाँ थी, नौकरी दिला दी । एलिजा कहती थी कि इस ढर से कि कही जाडों में उसे कोई काम ही न मिले, वह मेयर के यहाँ की अपेक्षा दो-तिहाई वेतन में ही इस स्थान पर काम करने को तैयार हो गई थी । अचानक इस युवती को एक उत्तम विचार सूझा और उसने अपने भूतपूर्व

पादरी म० शेला के और साथ ही नये पादरी के आगे भी, अपना 'पाप' स्वीकार कर लिया। इस भाँति उन दोनों को ही जुलिये के प्रेम-काण्ड का विस्तार से पता चल गया।

जिस दिन जुलिये वेरियेर पहुँचा उस दिन सबेरे छ बजे ही फादर शेला ने उसे बुला भेजा। उन्होंने कहा, "मैं तुमसे केवल कह ही नहीं रहा हूँ, बल्कि भीख माँग रहा हूँ, और यदि आवश्यक हो तो तुम्हें आदेश दे रहा हूँ, कि अब कुछ न बोलो। तुम्हें तीन दिन के भीतर या तो बजासो के मठ में अथवा अपने मित्र फूके के पास, जो अभी तक तुम्हारे लिये बहुत अच्छा प्रबन्ध करने को तैयार है, जाना ही पड़ेगा। मैंने सब इन्तजाम कर लिया है और सारी व्यवस्था ठीक है। पर वेरियेर तुमको छोड़ना ही पड़ेगा। एक वर्ष तक यहाँ आना भी न होगा।"

जुलिये ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सोच रहा था कि मोशिये शेला आखिरकार मेरे पिता तो है नहीं, वह मेरे लिये जो इतने चिन्तित हो रहे हैं, इसका बुरा मानूँ या नहीं।

"कल इसी समय," उसने आखिरकार पुरोहित से कहा, "मैं आपसे फिर मिलने की अनुमति चाहता हूँ।"

म० शेला इतने कठोर निश्चय द्वारा आसानी से ऐसे अल्पवयस्क व्यक्ति को काबू में कर लेने की बात सोच रहे थे। उन्होंने उससे बहुत कुछ कहा सुना। वह अपने मुख के भाव तथा ऊपरी व्यवहार में पूरी तरह विनम्र बने रहे पर तो भी जुलिये ने अपना मुँह नहीं खोला।

आखिरकार पुरोहित से छूट्टी पाकर वह मा० द रेनाल को सावधान करने के लिये तेज़ी से घर पहुँचा। वह स्वयं ही बहुत हताशा की स्थिति में थी। उनके पति अभी-अभी उनसे कुछ साफ-साफ बातें कर चुके थे। अपने चरित्र की स्वाभाविक दुर्बलता के कारण तथा बजासो की जायदाद के बल पर उन्होंने मा० द रेनाल को बिल्कुल निर्दोष मानने का निश्चय तो कर लिया था। पर उन्होंने यह भी बतलाया था कि वेरियेर में जनमत की कैसी विचित्र हालत है। अद्वय

ही जनमत गलत है, ईर्षालु लोगो ने उसे गलत रास्ते पर लगा दिया है। पर आखिर आदमी कर ही क्या सकता है ?

एक क्षण के लिये मा० द रेनाल यह सोचने लगी कि जुलिये यदि म० वालनो का प्रस्ताव स्वीकार कर ले तो वेरियेर में ही रह सकता है। अब वह साल भर पहले की-सी लजीली और सरल स्त्री न थी। दुर्निवार भावावेग और पश्चात्ताप ने उन्हे बहुत कुछ सिखा दिया था। पर शीघ्र ही अपने पति की बात सुनते-सुनते उन्हे मन ही मन यह निश्चय करना ही पड़ा कि अब कम से कम थोड़े समय के लिये तो वियोग अनिवार्य हो गया है।

वह सोचने लगी कि मुझमें अलग होकर जुलिये फिर उन महत्वाकांक्षाओं के स्वप्नों में डूब जायेगा जो एक निर्धन व्यक्ति के लिये इतने स्वाभाविक होते हैं। और मैं ? हे भगवान् ! मैं तो इतनी धनी हूँ ! जहाँ तक मेरे सुख का प्रश्न है, मेरी सारी धन-दौलत बेकार है। मुझे वद भूल जायेगा। उसके जैसे प्यारे व्यक्ति को अवश्य ही कोई न कोई प्यार करने लगेगा और फिर बदले में वह भी प्रेम करेगा। आह, अभागी स्त्री ! .. पर मेरे शिकायत करने का कौनसा कारण है ? भगवान् न्याय ही करता है। मैं पाप में बच न सकी, इसीलिये भगवान् ने मेरी समझ छीन ली। बस मुझे एलिजा को पैसे देकर अपनी ओर कर लेना चाहिए था, यह काम तो तनिक भी कठिन न था। पर मैंने इस बात पर पल भर भी ध्यान न दिया। प्यार के पागल स्वप्नों में ही डूबी रही। और अब मेरा कोई निस्तार नहीं।

मा० द रेनाल को अपने चने जाने का भयकर समाचार सुनाते-सुनाते एक बात जुलिये को अनुभव हुई—उन्होंने कोई स्वार्थपूर्ण आपत्ति इस विषय में न उठाई। वह स्पष्ट ही अपने आंसुओं को रोकने का प्रयत्न कर रही थी।

“इस समय हम लोगों को दृढ़ता की ही सबसे अधिक आवश्यकता है।” उन्होंने जुलिये के बालों की एक लट काटकर रख ली। बोलीं, “नहीं

जानती मैं क्या करूँगी, पर मुझे वचन दो कि यदि मैं मर जाऊँ तो मेरे बच्चों को कभी न भूलोगे। तुम चाहे दूर रहो या कहीं पास में हो, उन्हें भले और सम्माननीय व्यक्ति बनाने का यत्न करना। यदि फिर से क्रांति हुई तो सब सभ्रात कुलीन लोगों की हत्या होगी। जिस किसान की छत पर हत्या हो गई थी उसके कारण शायद इन बच्चों के पिता को यह देश छोड़कर जाना पड़े। तुम मेरे परिवार की देखभाल करना। लाओ, मुझे अपना हाथ दो। विदा प्रियतम ! ये अब हमारे अन्तिम क्षण हैं। एक बार यह महान् बलिदान पूरा हो जाने पर मुझे आशा है कि अपनी प्रतिष्ठा के विषय में सोचने का माहस मुझे मिल सकेगा।”

जुलिये को तीव्र हताशा की उम्मीद थी। विदाई की इस सरलता से वह विचलित हो उठा।

“नहीं। मैं तुम्हारा उस तरह से विदा देना स्वीकार न करूँगा। मैं चला जाऊँगा—लोग चाहते हैं कि मैं चला जाऊँ, तुम स्वयं भी यही चाहती हो। पर जाने के तीन दिन बाद ही मैं रात में आकर तुमसे मिलूँगा।”

मा० द रेनाल को तो जैसे नई जिन्दगी मिली। तो जुलिये सचमुच मुझे प्यार करता है, क्योंकि उसने अपने आप ही मुझसे फिर मिलने की बात सोची ! उनके भीषण अवसाद ने एकाएक बदल कर ऐसी आनन्दानुभूति का रूप ले लिया जैसी उन्होंने जीवन में पहले कभी अनुभव नहीं की थी। हर काम उनके लिये अब आसान हो गया। अपने प्रेमी से फिर मिल सकने की निश्चित सम्भावना ने इन अन्तिम क्षणों की हृदय-विदारक यातना को दूर कर दिया। उस क्षण से मा० द रेनाल के व्यवहार और उनके चेहरे पर उसकी बाह्य अभिव्यक्ति, दोनों ही में उच्चता, दृढ़ता और सम्पूर्ण सहजता आ गई।

कुछ ही देर बाद मा० द रेनाल क्रोध से उबलते हुए अन्दर आये। अन्त में उन्होंने अपनी पत्नी से उस गुमनाम पत्र का जिक्र किया जो उन्हें दो महीने पहले मिला था।

“मैं इस पत्र को कैसिंगो ले जाऊँगा और वहाँ हर व्यक्ति को दिखाऊँगा। यह उस बेईमान वालनो ने भेजा है जिसे मैंने भिखमगो की हालत से उठाकर वेरियेर के धनी से धनी व्यक्तियों की पात में बिठाया है। मैं पहले उसे खुले आम शर्मिन्दा करके फिर उसके साथ द्वन्द्व-युद्ध भी करूँगा। यह सचमुच बहुत ज्यादाती है।”

हे भगवान् ! सम्भव है कि मैं विधवा ही हो जाऊँ, मा० द रेनाल सोचने लगी। उसी क्षण उनके मन में यह विचार आया कि इस द्वन्द्व-युद्ध को मैं ही रोक सकती हूँ। यदि मैंने नहीं रोका तो मेरे ऊपर अपने पति की हत्या का अपराध चढ़ेगा।

अपने पति के मिथ्याभिमान को इतनी अधिक चतुराई से उन्होंने पहले कभी नहीं सहलाया था। दो घण्टे के भीतर ही वह उन्हें यह समझाने में सफल हो गई—और वह भी उन्हीं की खोजी हुई बातों के आधार पर—कि उन्हें म० वालनो के प्रति और भी अधिक मित्रता दर्शानी चाहिये और एलिजा को भी फिर अपने यहाँ नौकरी दे देनी चाहिये। मा० द रेनाल के लिये यह बड़े साहस की बात थी कि उन्होंने उस स्त्री से फिर मिलने का निश्चय किया जो उनके सारे दुर्भाग्य का कारण थी। पर यह विचार उन्हें जुलिये से प्राप्त हुआ था।

आखिरकार दो-तीन बार सही रास्ते सुभाये जाने के बाद, मा० द रेनाल को यह बात स्वयं अपने आप सूझ गई—जो आधिक दृष्टि से उनके लिये बहुत ही कष्टदायक थी—कि समूचे वेरियेर को उत्तेजित करने वाली इस चर्चा और गोलमाल के बीच यदि जुलिये को म० वालनो के बच्चों का शिक्षक बनकर वहाँ रहना पड़ा तो इससे बड़ी दुर्भाग्य की बात कोई दूसरी नहीं होगी। जुलिये के हित में तो स्पष्ट ही यही था कि वह सुपरिन्टेन्डेन्ट के प्रस्ताव को स्वीकार कर ले। दूसरी ओर म० द रेनाल की प्रतिष्ठा के लिये यह महत्त्वपूर्ण था कि जुलिये वेरियेर छोड़कर बजासो अथवा दिजो के किसी शिक्षामठ में भर्ती हो जाय। पर इसके लिये उसे कैसे तैयार किया जाय और वहाँ पहुँच कर उसकी आजीविका

कैसे चले ?

आर्थिक क्षति की तात्कालिक सम्भावना देखकर म० द रेनाल अपनी पत्नी से भी कहीं अधिक हताशा के गर्त में जा गिरे। जहाँ तक म० द रेनाल का सवाल था इस वार्तालाप ने उनकी अवस्था ऐसे व्यक्ति की सी कर दी थी जिसने जीवन से उकताकर धतूरा खा लिया हो। वह मानो किसी स्प्रिंग द्वारा चलता हुआ जान पड़ता है और किसी चीज में उसकी रुचि नहीं दिखाई देती। ऐसी ही अवस्था में लुई चौदहवें ने कहा था “जब मैं राजा था।” कैसी अद्भुत उक्ति है।

अगले दिन सबेरे बहुत तड़के ही म० द रेनाल को एक और गुमनाम पत्र मिला। यह बहुत ही गाली-गलौज की भाषा में लिखा था। हर पंक्ति में भद्दी से भद्दी शब्दावली में उनकी स्थिति का उल्लेख था। यह किसी ईर्षालु अवीनस्थ व्यक्ति का काम था। इस पत्र से फिर उनके मन में म० वालनो से युद्ध करने का विचार उठा। शीघ्र ही उनके साहस ने उन्हें कुछ न कुछ कर डालने के लिये प्रेरित किया। वह अकेले ही घर से निकले। एक शस्त्र-विक्रेता की दुकान पर पहुँचकर उन्होंने कुछ पिस्तौलें खरीदी और उन्हें भरवा लिया।

अपने पति के मन के निस्संग आक्रोश ने म० द रेनाल को भयभीत कर दिया। विधवा होने के जिम भयकर विचार को उन्होंने इतनी कठिनाई से मन से निकाला था, वह एक बार फिर सिर उठाने लगा। उन्होंने अपने पति के साथ अपने आपको एक कमरे में बन्द कर लिया। घण्टे भर तक वह उनसे बातचीत करती रही पर कोई लाभ न हुआ। इस नये गुमनाम पत्र ने उनके निश्चय को पक्का कर दिया था। अन्त में उन्होंने म० वालनो के कान गरम करने के लिये आवश्यक साहस को इस निश्चय का रूप दिलवाया कि वह एक वर्ष के लिये जुलिये को छ. सौ फ्रैंक दे दे। म० द रेनाल उस दिन को हजार बार गालियाँ देते हुए, जब उन्हें अपने घर में शिक्षक रखने का शौक चरगिया था, गुमनाम पत्र को भूल गये।

उन्हे एक विचार से थोड़ी सात्वना मिली जो उन्होंने अपनी पत्नी को नहीं बताया था। थोड़ी-सी चतुराई के द्वारा और इस नौजवान के रोमान्टिक विचारों को देखते हुए उन्हें आशा थी कि वह उसे और भी छोटी रकम द्वारा ही म० वालनो के प्रस्ताव को ठुकराने के लिये तैयार कर लेगे।

मा० द रेनाल को जुलिये को यह बात समझाने में कहीं अधिक कठिनाई हुई कि यदि वह उनके पति की सुविधा के लिये मुपरिन्टेन्डेंट की आठ सौ फ्रैंक की नौकरी छोड़ना है, तो उनमें किसी प्रकार का मुआवजा स्वीकार करने में कोई लज्जा की बात नहीं।

“किन्तु,” जुलिये ने हठपूर्वक कहा, “मेरे मन में तो इस नौकरी को स्वीकार करने का पल भर के लिये भी कोई विचार नहीं था। तुमने मुझे संस्कृत जीवन का अभ्यस्त बना दिया है। उस तरह के लोगों की फूहड़ संस्कारहीनता में तो मेरा दम घुट जायेगा।”

किन्तु निर्भय आवश्यकता के तीव्र प्रहार ने जुलिये को घुटने टेकने के लिये लाचार कर दिया। अपने आत्माभिमान के कारण उसके मन में मेयर द्वारा प्रस्तावित रकम को कर्ज के रूप में स्वीकार करने और पाँच वर्ष के भीतर मूद समेत चुका देने का एक रुक्का लिख देने का विचार आया।

मा० द रेनाल ने कई हजार फ्रैंक पहाड़ों की एक गुफा में छिपाकर रख छोड़े थे। उन्होंने डरते-डरते जुलिये में उन्हें ले जाने का प्रस्ताव किया। पर वह जानती थी कि इसे रोषपूर्वक अस्वीकार कर दिया जायेगा।

“क्या तुम चाहती हो,” जुलिये ने कहा, “तुम्हारे इस प्रेम की स्मृति मुझे सदा गहित लगती रहे?”

आखिरकार जुलिये वेरियर से चल पड़ा। जब म० द रेनाल का कुछ धन स्वीकार करने का क्षण आया तो जुलिये को यह त्याग बहुत ही बड़ा जान पड़ा। उसने साफ इन्कार कर दिया, जिससे म० द रेनाल

को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने आँखों में आँसू भरकर उसे गले से लगा लिया। जुलिये ने उनसे प्रमाण-पत्र माँगा तो उत्साह में उसकी प्रशंसा करने योग्य कोई शब्द ही उन्हें न सूझ सके। हमारे नायक ने पाँच लुई बचा रखे थे और इतना ही उसका फूके से माँगने का इरादा था।

उसका मन बहुत विचलित हो उठा किन्तु वेरियेर से, जहाँ वह पीछे इतना अधिक स्नेह छोड़ आया था, दो-तीन मील जाने के बाद ही उसके मन में बजासो जैसी राजधानी और बड़े भारी सैनिक केन्द्र को देखने की प्रसन्नता के अतिरिक्त और कोई विचार बाकी न रहा।

इन तीनों दिनों के छोटे-से वियोग में मा० द रेनाल प्रेम के एक निर्ममताम छल की शिकार रही। जीवन बस सहनीय भर था, उनके और चरम दुःख के बीच जुलिये से उनकी आगामी अन्तिम भेंट मौजूद थी। वह उससे मिलने के घण्टे, यहाँ तक कि मिनट, गिनकर समय काट रही थी। आखिरकार तीसरे दिन रात उन्होंने दूर से ही उसका पहले से निश्चित सकेत सुना। अनगिनती खतरों को पार करके जुलिये उनके सामने मौजूद था।

उस क्षण से केवल एक विचार ही उनके मन में था—यह अन्तिम मिलन है। अपने प्रेमी की उत्कटता का प्रतिदान देने के बजाय उनकी अवस्था एक निर्जीव शव जैसी थी। बलपूर्वक यह कहने का प्रयत्न करने पर कि 'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ', उनके मुँह से शब्द कुछ इस ढंग से निकलते जिनसे बिल्कुल विपरीत भाव ही प्रगट होता। अनन्त बिछोह के निर्मम विचार को वह किसी प्रकार अपने मन से दूर न कर पाती थी। अपने सदेही स्वभाव के कारण जुलिये को पल भर तो यह लगा कि वह उसे भूल चुकी है। यह बात जब उसने तीखे शब्दों में कही तो उत्तर में बड़े-बड़े आँसू उनकी आँखों से लुडक पड़े और लगभग विक्षिप्त भाव से उन्होंने उसका हाथ पकड़ लिया।

“पर तुम ही बताओ मैं कैसे तुम्हारी बात का विश्वास करूँ ?” अपनी प्रेयसी के भावहीन प्रतिवादों के उत्तर में जुलिये ने कहा, “तुम

मा० देविल अथवा किसी परिचित के प्रति भी इससे सौ गुना वास्तविक स्नेह दिखाती ।”

मा० रेनाल भय और शोक से सुन्न हो गई थी । उनके मुँह से केवल यही निकला “मुझसे दुखी और कोई न होगा” अच्छा होता मैं मर जाती लगता है मेरा हृदय जमता जा रहा है...” इससे अधिक लम्बा उत्तर वह उसे न पा सका ।

सबेरा होने के साथ-साथ जब उसका प्रस्थान आवश्यक हो गया तो मा० रेनाल के आँसू एकदम थम गये । निश्चय और उसके चुम्बनों का प्रतिदान दिये बिना वह चुपचाप उसे एक रस्ती खिडकी में बाँधते देखती रही । जुलिये की इस बात का भी उन पर कोई प्रभाव न हुआ “अब तो तुम्हारा मनचाहा हो गया । अब से तुम्हें किसी पछतावे की जरूरत न पड़ेगी । बच्चों की तनिक-जी भी बीमारी से उनकी मृत्यु का भय अब तुम्हें न सतायेगा ।” उन्होंने ठण्डे स्वर में उतर दिया, “मुझे बहुत दुःख है कि तुम स्तानिस्लास को अन्तिम बार प्यार भी न कर पाये ।

बाद में इस जीवित शव के आलिंगनों में उत्कटता के अभाव ने जुलिये के मन पर बहुत गहरा प्रभाव डाला । बहुत देर तक वह और कुछ सोच ही न सका । उसका हृदय बुरी तरह आहत था । पहाड़ियों में पहुँचने के पहने वह बार-बार मुड़कर वेरियेर के गिरजाघर के शिखर को देखता रहा ।

प्रांतीय राजधानी

आखिरकार सुदूर पहाड़ी की चोटी से काली दीवारों की झलक दिखाई पड़ी। यही बजासो का दुर्ग था। जुलिये ने एक आह भरते हुए कहा कि यदि मैं इस नगर में इसकी रक्षा के लिये नियुक्त टुकड़ी का लैफ्टीनेन्ट बनने के लिये प्रवेश कर रहा होता तो स्थिति कितनी भिन्न होती? बजासो न केवल फ्रांस के सुन्दरतम नगरों में से है, उसमें उदारमना और बुद्धिमान लोगों की भी कमी नहीं। किन्तु जुलिये एक सीधा-सादा किसान था और प्रसिद्ध लोगों तक पहुँचने का उसके पास कोई साधन न था। उसे फूँके से एक सादा-सा सूट मिल गया था जिसे उसने नगर के बाहर पुल पर ही पहन लिया। उसका मन १६७४ के घेरे की कहानी से भरा था और वह शिक्षा-मठ में बन्द हो जाने के पहले नगर की प्राचीरों और दुर्ग को एक नज़र देख लेना चाहता था। दो-तीन बार वह सतरी द्वारा गिरफ्तार होते-होते बचा, क्योंकि वह उन क्षेत्रों में प्रवेश करने लगता था जहाँ बीस या पन्द्रह फ्रैंक सालाना की रकम प्राप्त करने के उद्देश्य से सेना विभाग ने जनता का प्रवेश निषिद्ध कर रखा था। कई घण्टे तक दीवारों की ऊँचाई, खाइयों की गहराई और तोप का भयंकर रूप उसके ध्यान को आकृष्ट किये रहा। तभी वह प्राचीरों के किनारे एक सार्वजनिक मार्ग पर किसी बड़े भारी काफ़े के सामने से गुज़रा। वह विस्मय से अवाक् था। दो बड़े-से दरवाज़ों के ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखे हुए काफ़े के नाम को पढ़ना बेकार था—

उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही न हो रहा था ।

आखिरकार अपने सकोच को दूर करके उसने भीतर प्रवेश करने का साहस किया । भीतर का हॉल कोई तीस या चालीस फीट लम्बा था जिसकी छत कोई बीस फीट चौड़ी होगी । उस दिन हर वस्तु उसे जादू की सी जान पड़ी ।

दो जगह विलियर्ड का खेल चल रहा था । वेंटर पुकार-पुकार कर हार-जीत बता रहे थे । खेलने वाले दर्शकों की भीड़ के बीच विलियर्ड की मेज के चारों ओर दौड़ रहे थे, हर व्यक्ति के मुख से उमड़ते हुए तम्बाकू के धुएँ की बाढ़-सी उन्हें नीले-नीले बादलों में लपेटे ले रही थी । लोगों के ऊँच कद, गोल कन्धे, भारी-भरकम चाल, बड़ी-बड़ी मूँछें और लम्बे फ्राक-कोट जुलिये का ध्यान बरबस अपनी ओर खींच रहे थे । प्राचीन बजासों के ये कुलीन वशधर चीखे बिना बात न करते थे और दुर्घर्ष योद्धाओं की मुद्रा बनाये हुए थे । जुलिये मन ही मन उन पर मुग्ध होकर बजासों जैसी बड़ी राजधानी की विशालता और शान के ऊपर विचार करता हुआ निश्चल खड़ा था । उसे किसी प्रकार इतना साहस न हो रहा था कि विलियर्ड की हार-जीत पुकारते समय इतने निस्संग दिखाई पड़ने वाले उन महानुभावों से अपने लिये एक काफी लाने की बात कहे ।

किन्तु काफी की नौकरानी की दृष्टि देहात के इस सभ्रात नौजवान के सुन्दर मुख पर पड़ चुकी थी जो अपनी बगल में एक बडल दबाये अँगोठी से तीन फीट की दूरी पर खड़ा महाराज की एक सुन्दर सफेद प्लास्टर की मूर्ति की ओर एकटक देख रहा था । फ्राक-कोट की इस लम्बे कद की युवती का बदन बड़ा सुडौल था और वह काफी की प्रतिष्ठा के अनुकूल ही वस्त्र पहने हुए थी । उसने दो बार इनती धीमी आवाज़ में कि केवल जुलिये ही सुन सके दोहराया, “कहिये ! फरमाइये !” जुलिये की दृष्टि उन दो बड़ी नीली और बहुत ही पिघलती हुई आँखों से मिली और उसे लगा कि यह शब्द उसी से कहे गये थे ।

वह तेजी से काउन्टर और सुन्दर लडकी की ओर बढ़ा मानो किसी शत्रु का सामना करने के लिए जा रहा हो। किन्तु इस महत्वपूर्ण पैतरे में उसका बडल छूटकर गिर पड़ा।

हम रे प्रान्त वालो को देखकर पेरिस के स्कूली लडको के हृदय में कितनी दया न उमड़ती होगी जो पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही इतने रोब के साथ काफी में प्रवेश करना जानते हैं। किन्तु इन लडको की पन्द्रह वर्ष की अवस्था में इतनी अच्छी शैली होने हुए भी अठारह में पहुँचते-पहुँचते वे बहुत ही पुढ़ू लगने लगते हैं। प्रान्तों में पाई जाने वाली स्वाभाविक लज्जाशीलता को कभी-कभी दूर किया जा सकता है और तब उनसे सकल्प की दृढ़ता प्राप्त होती है। जुलिये ग्रना सकोब दूर होने में साहम पाकर उस सुन्दरी युवती की ओर बढ़ा जिनसे उससे बातचीत करने की कृपा की थी और सोचने लगा कि अपने सब-मव बात कह देनी चाहिये।

“मैडम, मैं अपने जीवन में पहली बार अभी-अभी बजासो आया हूँ। मुझे कुछ नाश्ते और एक कप काफी की जरूरत है। पैसा तो मैं दूँगा ही।”

युवती तनिक मुस्कराई और फिर लज्जा से लाज हो उठी। उसे भय था कि इस सुन्दर युवक को कही विलियर्ड खेलने वालो के व्यग्रपूर्ण और हँसी-मजाक के शब्द न सुनने पड़े। फिर वह भयभीत होकर यहाँ नहीं आयेगा।

“यहाँ मेरे समीप ही बैठ जाइये”, उसने जुलिये से कहा और कमरे में आगे को निकले हुए लकड़ी के बड़े भारी काउन्टर से दिखाई न पडने वाली एक सगमरमर के मेज की ओर इशारा किया।

युवती काउन्टर पर झुक गई और इस भाँति अपने सुन्दर सुडौन अंगों को दर्शाती रही। जुलिये का ध्यान भी इस ओर गया और उसके विचारों ने एक नया ही मोड़ लिया। सुन्दर नौकरानी ने एक खाली प्याला, चीनी और कुछ नाश्ता उसके सामने रक्खा और एक बेडर को

काफी लाने के लिये कहकर वहीं अटकी रही। वह यह भली भाँति जानती थी कि वेटर के आने ही जुलिये के साथ उसकी गुप्त बातचीत समाप्त हो जायेगी।

जुलिये सोच में गहरा डूबा हुआ इस चक्कल सुफेशिनी सुन्दरी की तुलना अपनी उन स्मृतियों से करता रहा जो उसे परेशान किया करती थी। अपने निछले प्रेम-प्रसंग का ध्यान करते ही उसका सारा सकोच दूर हो गया। सुन्दर युवती के पाँव कुन मिनट भर का समय था; वह जुलिये की आँखों का अर्थ पहचान गई।

“इन पाइसों के धुर्र से आपको खाँसी आने लगी है। कल आठ बजे के पहले यहाँ नाश्ते के लिए आइये। उस समय मैं सदा ही अकेली होती हूँ।”

“आपका नाम क्या है?” जुलिये ने सुवद सकोचभरी आकर्षक मस्कान के साथ कहा।

“अमादा बिने।”

“क्या आप मुझे घण्टे भर के भीतर अपने लिये एक छोटी-सी पार्सल भेजने की अनुमति देगी?”

सुन्दरी अमादा पल भर सोचने लगी।

“मेरे ऊपर नज़र रखी जाती है। आपकी बात से मेरे मुसीबत में पड़ने का डर है। तो भी मैं अपना पता एक कार्ड पर लिख देती हूँ जिसे आप अपनी पार्सल पर लगा दीजियेगा। भेजने में डरिये मत।”

“मेरा नाम है जुलिये सोरेल,” उसने कहा। “बजासो में न मेरा कोई रिश्तेदार है न मित्र।”

“ओहो, समझ गई,” उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा। “आप कानून पढ़ने आये हैं?”

“अफसोस! नहीं,” जुलिये ने उत्तर दिया। “मैं शिक्षा-मठ में जा रहा हूँ।”

अमादा के मुख पर तीव्र निराशा के बादल छा गये। उसने एक

वेटर को बुलाया। अब उसे इस बात का साहस हो आया था। वेटर ने जुलिये की ओर देखे बिना ही उसके लिए काफी ढाल दी।

अमादा काउन्टर पर पैसा ले रही थी। जुलिये को उससे बात कर सकने के साहस पर गौरव का अनुभव हुआ। उधर एक विलियर्ड की मेज पर कोई झगडा शुरू हो गया। खिलाडियों द्वारा एक-दूसरे पर झूठ बोलने के आरोप की चीख-पुकार के बड़े कमरे में गूँजने से ऐसा शोर मच गया कि जुलिये चकित रह गया। अमादा सपनों में खोई दृष्टि नीचे किये हुए थी।

“आप यदि चाहे,” जुलिये ने अचानक साहस के साथ उससे कहा, “तो मैं कहूँगा कि आपका चचेरा भाई हूँ।”

इस अधिकारपूर्ण स्वर से अमादा प्रसन्न हुई। यह यो ही कोई व्यक्ति नहीं है, वह सोचने लगी। उसने जुलिये की ओर देखे बिना ही जल्दी से कहा “मैं स्वयं दिजो के पास जालिस की हूँ। कहिये कि आप भी जालिस के हैं और मेरी माँ के चचेरे भाई हैं?”

“अवश्य।”

“गर्मी के दिनों में हर वृहस्पतिवार को सबेरे पांच बजे मठ के छात्र इस काफी के पास से निकलते हैं।”

“यदि आपको मेरी याद रहे तो मेरे निकलने के समय अपने हाथों में फूलों का गुच्छा लिये रहियेगा।”

अमादा विस्मय से उसकी ओर देखने लगी। उसकी दृष्टि ने जुलिये के साहस को और भी उकसा दिया। तो भी यह कहते-कहते उसका मुँह लज्जा से लाल हो उठा “लगता है मैं बहुत ही बुरी तरह आपके प्रेम में पड़ गया हूँ।”

“कृपा करके थोड़ा धीमे-धीमे बोलिये,” युवती बोली।

जुलिये ने बेर्जिस में पढ़े हुए किसी एक पुराने उपन्यास के कुछ वाक्य याद करने की शोशिश की। उसकी स्मरण-शक्ति ने उसका साथ दिया। पिछले दस मिनट से वह अमादा से उस उपन्यास के उद्धरणों में ही

बार्ते कर रहा था । वह आनन्द में विभोर थी । वह स्वयं अपने साहस-पूर्ण प्रेमालाप से प्रसन्न हो रहा था कि अचानक फ्रांस-कोते की इस सुन्दरी के मुख पर हिम जैसी जड़ता का भाव छा गया । उसका कोई एक प्रेमी काफी के द्वार से अभी-अभी प्रवेश कर रहा था ।

वह सीटी बजाता हुआ काउन्टर तक आया और जुलिये को धूरने लगा । जुलिये की कल्पना सदा दो छोरों की ओर चलती थी । इसलिये इस समय द्वन्द्व-युद्ध के सिवाय और कोई विचार उसे न सूझा । उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया और वह अपनी टोपी उतार कर तथा आत्म-विश्वास का भाव धारण करके अपने प्रतिद्वन्दी को गौर से देखने लगा । प्रतिद्वन्दी का सिर गिलास में ब्राडी ढालने के कारण थोड़ा झुका हुआ था । इस बीच अमादा ने आँखों ही द्वारा जुलिये को अपनी नज़र नीची कर लेने का आदेश दिया । उसने युवती की बात मान ली और दो मिनट तक वह जहाँ का तहाँ निश्चल खड़ा रहा । उसका चेहरा फक था और वह दृढ़तापूर्वक यही सोच रहा था कि अब क्या होने वाला है । उस समय वह सचमुच बहुत सुन्दर लग रहा था ।

प्रतिद्वन्दी जुलिये की आँखों से चकित हो गया था । उसने अपना ब्राण्डी का गिलास एक घूँट में समाप्त किया, एक-दो बात अमादा से कही, और अपने दोनों हाथ बड़े भारी ओवरकोट की जेबों में ठूँसे जुलिये की ओर देखता तथा सीटी बजाता हुआ विलियर्ड की मेज़ की ओर चला गया । जुलिये क्रोध से तड़प कर उछल पड़ा, पर उसकी समझ में न आया कि वह कैसे बदला ले । उसने अपना छोटा-सा बडल रख दिया और फक्कड़पन के भाव से विलियर्ड की मेज़ की ओर चला ।

उसकी अधिक दूरदर्शी आत्मा व्यर्थ ही यह कहती रह गई कि यदि बजासों में आते-आते ही तुम द्वन्द्व-युद्ध लड़ोगे तो चर्च में तुम्हारा प्रवेश तो समाप्त ही है । होता है तो हो जाय, उसने सोचा । कोई यह तो नहीं कहेगा कि मैंने कोई अपमान बर्दास्त किया ।

उसके साहस की ओर अमादा का भी ध्यान गया, उसके सीधे सच्चे

व्यवहार से यह बहुत ही भिन्न था। पल भर में ही वह ओवरकोट वाले लम्बे युवक से उसे कही अच्छा लग उठा। वह खड़ी होकर किसी सड़क चलने वाले को अपनी आँखों से अनुसरण करती हुई जल्दी से जुलिये और विलियर्ड की मेज के बीच पहुँच गई।

“इन सज्जन को इस तरह घूर कर न देखिये, यह मेरी बहन के पति हैं।”

“मुझे इससे क्या मतलब ? वह मुझे घूर रहा था।”

“क्या आप मुझे क्ले ॥ पहुँचाना चाहते हैं ? उसने आपकी ओर देखा अवश्य है, हो सकता है कि वह आप से बात भी करे। मैंने उससे कह दिया है आप मेरी माँ के रिश्तेदार हैं और अभी-अभी जालिस से आये हैं। वह भी फ्रांसकोते का है और बर्गन्डी की सड़क पर डोल से आगे कभी नहीं गया। इसलिए उससे आप चाहे जो कह सकते हैं, किसी बात का भय नहीं है।”

जुलिये अभी तक हिचक रहा था। काफे की नौकरानी होने से अमादा का झूठ का कोष बड़ा सम्पन्न था, उसने तुरन्त कहा, “निस्संदेह उसने आपकी ओर घूर कर देखा था पर उसी समय वह मुझ से पूछ रहा था कि आप कौन हैं ? उसका सबके साथ ही ऐसा अकस्मिक व्यवहार है। उसका उद्देश्य आपका अपमान करना नहीं था।”

जुलिये की आँखें तथाकथित भांगनी-पति को खोजने लगी। वह दूर वाली मेज पर किसी खेल का टिकट खरीद रहा था। जुलिये ने उसे ऊँची आवाज में कहते सुना, “मेरी बारी है !” वह अमादा के पास से झपट कर विलियर्ड की मेज की ओर बढ़ा। अमादा ने उसकी बाँह पकड़ ली। “आओ, पहले मेरे पैसे तो दे दो,” वह बोली।

जाओ। नहीं तो मुझे तुम फिर अच्छे न लगोगे—वैसे मुझे तुम बहुत ही अच्छे लगे हो।”

जुलिये सचमुच बाहर चला आया, पर बहुत ही धीरे-धीरे वह मन ही मन कह रहा था कि क्या उस उजड़ आदमी की खबर लेना मेरा कर्तव्य नहीं है? इस अनिश्चय में वह घंटे भर तक काफ़े के बाहर प्राचीर के नीचे वाली सड़क पर खड़ा उस आदमी के निकलने की राह देखता रहा। जब वह नहीं आया तो जुलिये चल दिया।

बजासो में आये उसे कुछ ही घंटे हुए थे, और इसी बीच वह अपने एक आत्मसमर्पण पर विजय पा चुका था। बूढ़े सैनिक सर्जन ने अपनी गठिया के बावजूद उसे थोड़ी-बहुत तरावार चलाने की भी शिक्षा दी थी। अपने क्रोध को कार्यान्वित करने के लिए जुलिये के पास बस कुल यही जमा-पूँजी थी। किन्तु यदि उसे कान पर घूँसा लगाने के अतिरिक्त किसी अन्य उपाय से अपना क्रोध प्रकट करना आता अथवा वह यह दावा सकता कि मारपीट होने पर उसका बड़े डीलडौल वाला प्रतिद्वन्द्वी उसकी मरम्मत करके वही पटक देगा या नहीं तो उसे कोई परेशानी न होती।

जुलिये सोचने लगा कि सरक्षक अथवा घन से हीन मेरे जैसे गरीब आदमी के लिये शिक्षा-मठ और जेल के बीच कोई विशेष अन्तर नहीं है। मुझे अपने ये कपड़े किसी सराय में उतार कर अपना काला सूट पहन लेना चाहिये। यदि मैं किसी समय मठ से घंटे दो घंटे के लिये निकल सका तो अपने इन वस्त्रों को पहन कर फिर माद० अमादा से मिल सकूँगा। ये सब तर्क बहुत ठीक थे, पर बहुत-सी सरायों के सामने से निकलने पर भी किसी में प्रवेश करने का साहस वह न कर सका।

आखिरकार जब वह दूसरी बार ऐम्बेसैडर होटल के सामने से निकला तो उसकी व्यग्र आँखें एक भारी-भरकम और गहरे रंगवाली मोटी स्त्री की आँखों से मिली जो अभी काफी तरुण थी और बहुत हँसमुख तथा प्रसन्न दिखाई पड़ती थी। वह उसके पास पहुँचा और उसे अपनी कहानी सुना दी।

सुर्ख और स्याह

२३६

“अवश्य, अवश्य, मेरे सुन्दर-से छोटे पुरोहित महोदय ।” सराय की मालकिन ने कहा । ‘मैं आपके कपड़ों की देख-भाल करूँगी और अक्सर ब्रुश से उनकी धूल झाड़ दिया करूँगी । इन दिनों में अच्छे कपड़े के कोट को ऐसे ही छोड़ना ठीक नहीं ।’ वह चाबी लेकर उसे एक कमरे में ले गई और जो कुछ वह छोड़े जा रहा था उसे एक कागज पर लिख लेने को कहा ।

“भगवान् भला करे । इस वेग में आप बहुत सुन्दर दिखाई पड़ते हैं । म० सौरेल,” उसके नीचे उतर कर रसोईघर में आने पर मोटी स्त्री उससे बोली, ‘और हालांकि सब लोग पचास सू देते हैं, पर मैं आपसे बीस ही लूँगी, क्योंकि आपमें ज्यादा लेना ठीक नहीं ।’

“मेरे पास बीस लुई हैं,” जुलिये ने कुछ गौरव के साथ कहा ।

“ओह, भगवान् के लिये जरा धीरे-धीरे बोलिये ।” भली मकान-मालकिन ने कुछ डर के स्वर में कहा । “बजासो में बड़े ठग हैं । वे पलक मारते ही सब चुरा ले जायेंगे । और देखिये, किसी काफे में मत जाइयेगा । सब गुंडों से वही भरे रहते हैं ।”

“सचमुच ?” जुलिये ने कहा । इस संवाद से वह कुछ सोच में पड़ गया था ।

“मेरे घर को छोड़कर और कहीं न जाइये । यहाँ आपको, मैं कह देती हूँ, सच्ची मित्रता भी मिलेगी और बीस सू में अच्छा भोजन भी । मैं समझती हूँ कि यह कोई कम बात नहीं है । अब चलिये, मेज पर बैठिये । मैं स्वयं आपको खाना परोसती हूँ ।”

“इस समय मुझसे कुछ न खाया जायेगा,” जुलिये ने कहा, “मैं बहुत उत्तेजित हूँ और आपके घर से मैं सीधा शिक्षा-मठ जा रहा हूँ ।”

उस भली स्त्री ने उसकी जेबों को भोजन से भरे बिना उसे वहाँ से न जाने दिया । आखिरकार जुलिये अपने भयावने गन्तव्य की ओर चल पड़ा । मकान मालकिन ने दरवाजे पर खड़े होकर उसे ठीक-ठीक रास्ता बता दिया ।

शिखा-मठ

बहुत दूर से उसे सुनहला लोहे का कास दरवाजे के ऊपर दिखाई पड़ गया। वह उसी ओर धीरे-धीरे चला। उसे लगता था कि उसके घुटने जवाब दिये दे रहे हैं। तो धरती पर साक्षात् नरक यही है, वह सोचने लगा, जहाँ से मैं कभी न निकल सकूँगा ! अन्त में निश्चय करके उसने घण्टी बजाई। घण्टी की आवाज ऐसी गूँज उठी मानो किसी उजड़े घर में बज रही हो।

कोई दस मिनट बीतने पर काले कपड़े पहने हुए एक पीले-से चेहरे वाला व्यक्ति उसे अन्दर ले जाने के लिए आया। इस दरबान का चेहरा अजीब साँचे में ढला हुआ था। उसकी आँखों की बाहर निकली हुई हरी-हरी पुतलियाँ बिल्ली की पुतलियों की भाँति गोल थी, भौंहों की कठोर रेखा से लगता था कि वह किसी प्रकृति के करुण भाव के सर्वथा अयोग्य है; उसके पतले होठ बाहर निकले हुए दाँतों पर अर्धवृत्ताकार फैल गये थे। कोई अपराध का चिह्न उसके मुख पर न था, परन्तु ऐसी एक सवेदनहीनता थी, जिससे अल्प-व्यस्क लोगो को इतना भय लगता है। जल्दी से एक निगाह में जो मात्र भाव उस लम्बे दामिक मुख पर जुलियें हल्का-सा देख सका, वह ऐसी प्रत्येक बात के लिये तीव्र घृणा का था जिसका स्वर्ग से कोई सम्बन्ध न हो।

जुलियें ने यत्नपूर्वक अपनी दृष्टि उठाई और अपने हृदय की बड़कनों के साथ-साथ काँपती हुई आवाज में कहा कि मैं शिक्षा के प्रधान म०

पिरार से मिलना चाहता हूँ। एक शब्द भी बोले बिना उस व्यक्ति ने पीछे आने का संकेत किया। एक चौड़े जीने से चढ़कर वे दुमजिले पर पहुँचे। जीने की रेलिंग लकड़ी की थी और बीच से झुकी हुई सीढ़ी दीवार के सामने की ओर इतनी टेढ़ी थी कि लगता था मानो अभी गिर पड़ेगी। थोड़ी-सी कठिनाई के बाद एक छोटा-सा दरवाजा खुला। उसके ऊपर काले रंग से पुता हुआ एक बड़ा-सा क्रॉस लगा हुआ था। दरबान उसे एक नीची छत वाले कमरे में ले गया जिसकी सफेद पुती हुई दीवारों पर दो बड़ी-बड़ी तस्वीरें लगी थी जो अधिक पुरानी होने के कारण काली पड़ गई थी। वहाँ जुलिये को अकेला छोड़ दिया गया। उसके निरुत्साह का ठिकाना न था। उसका हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था, इस समय यदि उसे रोने का साहस हो सकता तो बड़ी प्रसन्नता होती। घर में मौत का-सा सन्नाटा छाया हुआ था।

कोई पन्द्रह मिनट बीतने के बाद डरावने चेहरे वाला दरबान कमरे के दूसरे छोर पर एक दरवाजे में से प्रगट हुआ और कुछ बोलने की कृपा किये बिना ही उसे आगे आने का आदेश दिया। अब उसने एक इससे भी बड़े कमरे में प्रवेश किया। रोशनी का ठीक-ठीक प्रबन्ध इसमें भी न था। इसकी भी दीवारें सफेद पुती हुई थी पर उसमें कोई फर्नीचर नहीं था। केवल दरवाजे के पास एक कोने में जुलिये ने चलते-चलते एक लकड़ी का पलंग, दो तिनके की सीट वाली दो कुर्सियाँ और एक बिना गद्दी वाली लकड़ी की आराम-कुर्सी देखी।

कमरे के ठीक दूसरे छोर पर छोटी-सी खिड़की के समीप, जिसके काँचों पर पीला रंग पुता था और जिस पर गन्दी हालत में एक दो फूलदान सुशोभित थे, उसने फटे हुए कौसक में मेज पर बैठे एक व्यक्ति को देखा। वह कुछ क्रुद्ध जान पड़ता था और एक-एक करके कागज के छोटे-छोटे टुकड़े उटाता जाता था तथा प्रत्येक के ऊपर एक दो शब्द लिखकर क्रम से अपनी मेज पर लगाता जाता था। जुलिये की उस परिस्थिति पर उसने कोई ध्यान न दिया। वह कमरे के बीचोबीच

निश्चल-सा खड़ा रह गया। दरवान उसे वही छोड़कर पीछे का दरवाजा बन्द करता हुआ बाहर चला गया था।

इस तरह दस मिनट बीत गये। फटे कपड़ों वाला व्यक्ति अब भी लिखे जा रहा था। जुलिये के मन में आतंक और उत्तेजना ऐसी थी कि लगता था अभी-अभी फर्श पर गिर पड़ेगा। कोई दार्शनिक शायद गलती से कहता “सुन्दरता को प्यार करने के लिये बने हुए स्वभाव पर कुरूपता का ऐसा ही तीखा प्रभाव पड़ता है।”

आखिरकार लिखने वाले आदमी ने अपना सिर उठाया। जुलिये की नजर पल भर बाद इस पर पड़ी और जब उसने उस डरावनी दृष्टि को अपनी ओर उन्मुख देखा तो मानो उस दृश्य से आहत होकर वही निश्चल खड़ा रह गया। जुलिये की घबराई हुई आँखें मुश्किल से इतना ही पहचान सकी कि कोई लम्बा छोटा-सा मुख है जिस पर माथे को छोड़कर सब जगह लाल दाग है, तथा माथे के ऊपर मौत का-सा पीला-पन है। लाल गालों और सफेद माथे के बीच दो ऐसी छोटी-छोटी काली आँखें उसकी ओर ताक रही थी जो शायद बड़े से बड़े हिम्मत वाले के हृदय में भय का संचार करने के लिये पर्याप्त थी। वह लम्बा-चौड़ा माथा भवर जैसे काले बालों की मोटी लटों में जड़ा हुआ था।

“पास आओगे या नहीं?” आखिरकार उस आदमी ने अधीरता-पूर्वक कहा।

जुलिये डगमगाता हुआ आगे बढ़ा और अन्त में कागज के टुकड़ों से भरी हुई उस छोटी-सी मेज से कोई तीन फीट दूर किसी तरह जाकर खड़ा हो गया। उसका चेहरा ऐसा पीला पड़ गया था जैसा पहले शायद कभी न हुआ हो और उसे भय था कि कहीं अभी न गिर पड़े।

“और पास,” उस आदमी ने कहा।

जुलिये और आगे बढ़ा। उसके हाथ ऐसे आगे फैले हुए थे मानो वह कोई सतारा खोज रहा हो।

“तुम्हारा नाम?”

“जुलिये सोरेल ।”

“तुम बहुत देर से आये,” उससे कहा गया । और वह भयानक दृष्टि फिर उसके ऊपर जम गयी ।

जुलिये उस दृष्टि को सहन न कर सका और मानो अपने आपको सम्हालने के लिये हाथ फैलाता हुआ धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ा । उस आदमी ने घण्टी बजाई । जुलिये की केवल देखने की तथा हिलने-डुलने की शक्ति ही नष्ट हुई थी, उसने आते हुए पैरो की चाप सुनी ।

उमे उठाकर एक छोटी-सी आराम-कुर्सी में बिठा दिया गया । उसने इस डरावने आदमी को दरबान से यह कहते हुए सुना, “जाहिर है कि यह मिर्गी के दौरों से गिरा था । और क्या चाहिये ।”

जब जुलिये की आँखें खुली तो लाल मुख वाला व्यक्ति फिर लिखने लगा था, दरबान जा चुका था । मुझे बहादुर बनना चाहिये, हमारे नायक ने मन ही मन कहा । सबसे बड़ी बात यह है कि अपने भावों को छिपाना चाहिये । उसे बड़ी जोर की मतली-सी आने लगी थी । ऐसी भयंकर बात हो गयी तो भगवान जाने ये लोग मेरे बारे में क्या सोचें ? आखिरकार उस आदमी ने लिखना बन्द करके जुलिये पर नजर डालते हुए कहा, “क्या तुम अब इतनी ठीक हालत में हो कि मेरे सवाल का जवाब दे सको ?”

“हा महोदय,” जुलिये ने क्षीण-सी आवाज में उत्तर दिया ।

“ओहो ! कैसे सौभाग्य की बात है ।”

उस व्यक्ति के कण्ठ काले थे । वह खड़ा होकर अपनी मेज की दराज में बड़ी अधीरता से कोई चिट्ठी ढूँढने लगा । दराज खुलने के साथ ची-ची बोल उठी । पत्र पाने के बाद वह धीरे-धीरे बैठ गया, और जुलिये बची-खुची जान भी छीन लेने वाली दृष्टि से उसे देखते हुए बोला : “म० शेला ने तुम्हारी सिफारिश की है । वह उस क्षेत्र के सब से अच्छे पुरोहित थे । अगर कोई ईमानदार आदमी होता है तो वह है तथा पिछले तीस वर्ष से मेरे मित्र हैं ।”

“ओहो, तो म० पिरार से वातचीत का सौभाग्य मुझे मिल रहा है ?” जुलिये ने बहुत ही क्षीण आवाज में कहा ।

“जाहिर है,” प्रधान ने क्रुद्ध भाव से उसकी ओर देखते हुए कहा ।

उसकी छोटी-छोटी, आँखों की चमक और भी तीखी हुई और उसके मुख के दोनों छोर एक विचित्र भाव से हिले । वह कुछ ऐसा भाव था कि मानो कोई बाघ अपने शिकार को खाने के पहले उस आनन्द की कल्पना से प्रसन्न हो रहा हो ।

“शेला का पत्र छोटा-सा है,” उसने मानो अपने आप में ही कहा ।

“आजकल थोड़ा लिखना ही बड़ा कठिन है ।”

यह पत्र को जोर से पढ़ने लगा । म० शेला ने लिखा था “आपके पास जुलिये सोरेल को भेज रहा हूँ, जिसका मैंने कोई बीस वर्ष पहले धार्मिक सस्कार किया था । वह एक बूढ़े का बेटा है जो धनी है पर उसे कुछ नहीं देता । जुलिये हमारे प्रभु के उद्धान का उल्लेखनीय मेवक सिद्ध होगा । उसमें स्मरणशक्ति अथवा बुद्धि की कमी नहीं है और वह विचारशील भी है । पर प्रश्न यही है कि क्या अन्त तक वह इसी कार्य को अपनाये रहेगा ? क्या वह इसके प्रति सच्चा है ?”

“सच्चा ।” फादर पिरार ने विस्मय के भाव में जुलिये की ओर देखते हुए दोहराया, किन्तु उनके मुख का भाव अब पहले की अपेक्षा मानवीय भावना से कम शून्य था । “सच्चा ।” उन्होंने अपनी आवाज को धीमी करने हुए फिर कहा और पत्र आगे पढ़ने लगे ।

“मैं जुलिये सोरेल के लिये आपसे एक छात्रवृत्ति चाहता हूँ । अबश्य ही परीक्षा में वह उपयुक्त निकलेगा । मैंने उसे थोड़ा-सा, और वह भी बोसुआरनो और फ्ल्यूरी जैसे पुराने ढंग के भले लोगों का, धर्मशास्त्र पढ़ाया है । यदि यह बालक आपको योग्य न जान पड़े तो उसे मेरे पास वापस भेज दीजिये । अनाथाश्रम के सुपरिन्टेन्डेन्ट, जिन्हें आप भली-भाँति जानते हैं, उसे अपने बच्चों को पढ़ाने के लिये आठ सौ फ्रैंक देने को तैयार हैं । भगवान् की कृपा से मेरे मन में अब शान्ति है । उस भयंकर आघात का

अब मैं अभ्यस्त हो चला हूँ ।”

फादर पिरार ने हस्ताक्षर पढते-पढते अपना स्वर धीमा कर लिया और “शेला” शब्द को एक ठडी सास के साथ कहा ।

“वह शान्ति से है,” उन्होंने कहा । “उनके गुण सचमुच इस पुरस्कार के उपयुक्त हैं । यदि अवसर आ पड़े तो भगवान् मुझे भी ऐसी ही शान्ति प्रदान करें ।” ऊपर की ओर देखते हुए उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया । इस पवित्र चिह्न को देखकर जलिये के मन में वह भयकर आतंक कुछ कम हुआ, जिसने इस घर में प्रवेश करने के क्षण से ही उसकी नस-नस को जडीभूत कर रखा था ।

“यहाँ इस पवित्रतम आजीविका के लिये तीन सौ बीस विद्यार्थी हैं,” आखिरकार फादर पिरार ने एक ऐसे स्वर में कहा जो कठोर था पर करुणाहीन नहीं । “उनमें से कोई सात या आठ फादर शेला जैसे व्यक्तियों की सिफारिशों से आये हैं । इस भाँति तुम तीन सौ इक्कीस में से नवे होगे । किन्तु मेरे संरक्षण का मर्थ पक्षपात अथवा किसी प्रकार का असयम नहीं, बल्कि तुम्हारी अधिक चिन्ता और तुम्हारे दुर्गुणों के प्रति अधिक कठोरता ही होगा । जाओ, और वह दरवाजा बन्द कर दो ।” जुलिये ने चलने का प्रयत्न किया और वह गिरा नहीं । उसने देखा कि जिस दरवाजे से वह भीतर गया था उसके पास ही एक खिडकी है जिसमें से बाहर मैदान का दृश्य दिखाई देता है । वह पेड़ों की ओर ताकने लगा । उन्हें देखकर उसका जी कुछ हलका हुआ । उसको लगा मानो कोई पुराने मित्र दीख गये ।”

“क्या तुम लैटिन बोल सकते हो ?” उसके लौटने पर फादर पिरार ने पूछा ।

“जी हाँ, अति उत्तम फादर,” जुलिये ने उत्तर दिया । उसकी चेतना थोड़ी-थोड़ी लौट रही थी । अवश्य ही पिछले डेढ़ घण्टे में उसे फादर पिरार से कम उत्तम कोई दूसरा व्यक्ति न लगा था ।

वार्तालाप लैटिन में चलता रहा । पुरोहित की आँखों का भाव

अधिकाधिक कोमल होने लगा, जुलिये का आत्मसंयम भी लौट रहा था। वह सोचने लगा कि भलाई के इन बाहरी चिह्नों से प्रभावित हो जाना मेरी कितनी बड़ी कमजोरी है। शायद यह आदमी भी म० मास्लो की भाँति ही पक्का शैतान निकलेगा। जुलिये ने अपना सारा धन अपने जूते में छिपा रखने के लिए अपने आपको बधाई दी।

फादर पिरार ने धर्मशास्त्र में जुलिये की परीक्षा ली और उसके विस्तृत ज्ञान से चकित हुए। पवित्र धर्म-ग्रन्थों के विषय में प्रश्न पूछने पर तो उनका आश्चर्य और भी बढ़ा। किन्तु जब वह धर्म-गुरुओं के ग्रन्थों में प्रतिपादित सिद्धान्तों पर आये तो उन्होंने देखा कि जुलिये को सेंट जेरोम, से नोगुस्तिन, से बोनावातुर, से बाज़िल, के नाम तक पता न थे।

फादर पिरार सोचने लगे कि इसमें प्रोटेस्टेन्ट पथ के लिए घातका भुकाव, मौजूद है जिसके लिए मैं हमेशा शेला की आलोचना करता रहा हूँ। एक लम्बी परीक्षा के बाद जुलिये को अनुभव हुआ कि फादर पिरार की कठोरता केवल ऊपरी ही है और सचमुच यदि शिक्षा-मठ के प्रधान ने पिछले पंद्रह वर्षों से अपने छात्रों के साथ कठोरतापूर्वक व्यवहार करने का नियम न बना रखा होता तो वह इस समय अवश्य जुलिये को छात्रों से लगा लेते। उसके उत्तरों में ऐसी दृष्टि-तीक्ष्णता, ऐसी सूक्ष्मता और ऐसी सुस्पष्ट बुद्धि के प्रमाण मिलते थे।

उन्होंने मन ही मन कहा कि इसका मस्तिष्क तो विवेकी और साहसिक है, किन्तु शरीर दुर्बल है।

“क्या तुम अक्सर इस भाँति गिर पड़ते हो?” उन्होंने जुलिये से फ्रेंच में पूछा।

“मेरे जीवन में यह पहला ही अवसर है।” जुलिये ने बच्चों की तरह लज्जा से लाल होने हुए कहा। “दरबान के चेद्रे को देखकर मैं बुरी तरह हार गया था।”

फादर पिरार करीब-करीब मुस्करा उठे। “यही है दुनिया के झूठे बड़प्पन और अभिमान का प्रभाव। तुम हँसते हुए चेद्रे देवने के अम्प्यस्त

हो जो वास्तव में ऐसे थियेटर के समान है जिनमें भूठ का अभिनय होता रहता है। सत्य बड़ी कठोर वस्तु है। पर क्या हम नीचे रहने वालों का यह कर्तव्य नहीं कि स्वयं कठोर बनें ? तुम्हें अपनी आत्मा में इस एक बुराई के प्रति—बाहर की भूठी सुन्दरता के प्रति अत्यधिक मोह के प्रति—बहुत सजग होना चाहिए।

“यदि तुम्हारी शिफारिश,” फादर पिरार ने बड़ी प्रसन्नता के साथ फिर से लैटिन भाषा में बोलते हुए कहा, “मैं फिर कहता हूँ कि यदि तुम्हारी शिफारिश फादर शेला जैसे व्यक्ति ने न की होती तो मैं तुमसे इस दुनिया की भूठी भाषा में बातचीत करता जिसके तुम बहुत अभ्यस्त जान पड़ते हो। ऐसी छात्रवृत्ति का मिलना जिसमें तुम्हारे सारे खर्च शामिल हो, बहुत ही कठिन वस्तु है। किन्तु छप्पन वर्ष तक धर्म-कार्य में लीन रहने के बाद भी यदि फादर शेला शिक्षा-मठ में एक छात्रवृत्ति भी न दिलवा सके तो फिर उनकी योग्यता का क्या पुरस्कार होगा ?”

इतना कहने के बाद फादर पिरार ने जुलिये को कभी किसी गुप्त सभा अथवा सभ में उनकी अनुमति के बिना शामिल न होने का आदेश दिया।

“मैं अपने सम्मान की सौगन्ध खाकर वचन देता हूँ,” जुलिये ने एक सुसंस्कृत व्यक्ति के उन्मुक्त उत्साह से कहा।

शिक्षा-मठ के प्रधान पहली बार मुस्कराये। बोले, “यह शब्दावली यहाँ नहीं चल सकती। उसमें बहुत कुछ दुनियादार लोगों के उस भूठे सम्मान की ध्वनि है जिसके कारण वे ऐसी-ऐसी भूलें और प्रायः अपराध तक कर बैठते हैं। तुम्हारी मेरे प्रति आज्ञाकारिता परम पवित्र पोप के आदेश के कारण है। मैं तुम्हारा धार्मिक उच्चाधिकारी हूँ। मेरे प्यारे बेटे, इस स्थान पर सुनना ही आज्ञा मानना है। तुम्हारे पास कितना धन है ?”

(अब मतलब की बात आई ! जुलिये ने सोचा। “मेरे प्यारे बेटे” का रहस्य यही है)।

“पैतीस ग्रैंक, फादर।”

“इम धन का तुम जो भी प्रयोग करो उसको सावधानी से लिखते जाना। तुम्हें मुझको इसका हिसाब देना होगा।

यह कष्टदायक बैठक तीन घण्टे तक चली। जुलिये ने दरबान को बुलाया।

“जुलिये सोरेल को १०३ न० कोठरी में पहुँचा दो।” फादर पिरार ने उम आदमी से कहा। यह बड़ी भारी कृपा की बात थी कि जुलिये को अकेला कमरा दिया जा रहा था। “उन्का बक्स वहाँ पहुँचा दो,” उन्होंने आगे कहा।

जुलिये ने दृष्टि नीची करते ही अपना बक्स अपने सामने रक्खा पहचान लिया। तीन घण्टे तक वह उसे देखकर भी यह अनुभव नहीं कर पाया था कि वह उसी का है।

कोठरी न० १०३ आठ फुट लम्बी और आठ फुट चौड़ी और मकान की सबसे ऊपर की मजिल पर थी। जुलिये ने देखा कि उसमें से नगर की प्राचीरे दिखाई पड़ती हैं और उनके पार वह सुन्दर मैदान हैं जिन्हें दू नदी ने नगर से काट दिया था।

कितना सुन्दर दृश्य है! जुलिये कह उठा। पर इन शब्दों को कहते-कहते उसके मन में वे भाव न थे जो इन शब्दों से प्रगट होते थे।

बजासो आने के बाद से इस थोड़े से समय में उसने जैसे-जैसे तीव्र अनुभव किये हैं, उनसे उसकी शक्ति पूरी तरह चुक गई थी। वह अपने कमरे की एकमात्र काठ की कुर्सी पर खिड़की के पास बैठ गया और उसे गहरी नीद आ गई। उसने न तो भोजन की घण्टी सुनी न सन्ध्या-प्रार्थना की। किसी दूसरे को भी उसकी याद नहीं आयी। जब अगले दिन सबेरे सूरज की पहली किरण के साथ वह जागा तो उसने अपने आपको फर्श पर पड़ा हुआ पाया।

: २६ :

दुनिया

उसने जल्दी अपने कपड़ों पर ब्रुश फेरा और नीचे पहुँचा। उमे देर हो गई थी, जिसके लिये एक सहायक शिक्षक ने उसे बुरी तरह डाँटा। बहाना बनाने की कोशिश के बजाय जूलिये बाँहे क्रॉस की मुद्रा में रखकर और बड़े पश्चात्ताप के स्वर में बोला, “फादर, मैंने पाप किया, मैं दोष स्वीकार करता हूँ।”

इस प्रथम उपस्थिति का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। जानकार विद्यार्थियों ने देखा इस व्यक्ति की अपने धन्धे की जानकारी मामूली बातों से कहीं अधिक है। जूलिये ने पाया कि वह सबकी उत्सुकता का केन्द्र बना हुआ है किन्तु लोगों को उसके पास से मौन और सयम के अतिरिक्त और कुछ न मिला। आचरण के जो नियम उसने अपने लिये बनाये थे उनके अनुसार अपने तीन सौ बीस सहपाठियों को वह अपना शत्रु समझता था। और उसकी दृष्टि में सबसे बड़े शत्रु थे फादर पिरार।

कुछ दिन बाद जूलिये को अपने पाप-स्वीकार के कोई व्यक्ति चुन लेने के लिए एक सूची दी गई। हे भगवान् ! ये लोग मुझे समझते क्या है ? वह सोचने लगा। क्या वे सोचते हैं कि मैं कुछ जानता ही नहीं ? उसने फादर पिरार को ही चुना।

किन्तु यह अनजान में ही एक बड़ा निर्णायकारी निश्चय हो गया था। एक अल्पवयस्क विद्यार्थी ने, जो पहले दिन से ही अपने को जूलिये

का मित्र कहने लगा था, उसे बताया कि यदि उसने उप-प्रधान म० कास्तानेद को चुना होता तो शायद अधिक बुद्धिमानी होती ।

छोटे विद्यार्थी ने झुककर उसके कान में कहा, "फादर कास्तानेद म० पिरार के शत्रु हैं, जिनके जानसेनपथी होने का सन्देह किया जाता है ।"

अपने आपको बहुत सावधान समझने पर भी हमारे नायक के शुरू-शुरू के सारे काम इसी भाँति बहुत ही गलत हुए । उसमें प्रबल आत्मविश्वास था जो उसके जैसे कल्पना-प्रधान व्यक्ति के लिये स्वाभाविक ही था । उसके कारण बहक कर उसने इच्छा को ही कार्य समझ लिया और अपने आपको ढोंग रचने में बहुत चतुर समझ बैठा । उसकी मूर्खता इतनी बड़ गई कि वह दुर्बल व्यक्तियों की इस कला में अपनी सफलता के लिये अपनी निन्दा कर उठा ।

अफमोस ! मेरा एकमात्र अस्त्र यही है ! उसने मन ही मन कहा । किसी दूसरे युग में मैं अपनी आजीविका ऐसे कार्यों द्वारा अर्जित करता जो शत्रु की आँखों के आगे होते हैं और अपना महत्व अपने आप प्रगट कर देते हैं ।

कोई नौ-दस विद्यार्थियों को से थेरेसा अथवा से फ्रॉमीस स्वप्न दर्शन दिया करने थे, इसलिए उन्हें बड़ा विशिष्ट समझा जाता था । किन्तु यह एक बड़ा रहस्य माना जाता था जिसे उनके मित्र सदा छिपाये रखते थे । सन्तों का दर्शन प्राप्त करने वाले ये बेचारे नौजवान स्वयं लगभग सदा एक चिकित्सालय में रहा करते थे । कोई सौ के लगभग ऐसे थे जिनमें स्वस्थ निष्ठा और अटूट परिश्रम दोनों पाये जाते थे । ये इतना परिश्रम करते कि बीमार पड़ जाते, पर तो भी कुछ अधिक न सीख पाते थे । दो या तीन ऐसे थे जो अपनी वास्तविक प्रतिभा के कारण सबसे अलग दिखाई पड़ते थे । इन्हीं में एक शाज़ेल नाम का विद्यार्थी भी था । किन्तु न तो जुलियों को वे सब अच्छे लगते थे और न जुलियें उन्हें ।

सुख और स्याह

२५१

तीन सौ बीस विद्यार्थियों में से बाकी केवल ऐसे गँवार लोग थे, जो दिन भर रटे जाने वाले लैटिन शब्दों को ठीक से समझ भी न पाते। लगभग सभी किसानों के बेटे थे। जो मिट्टी खोदने के बजाय मुट्ठी भर लैटिन शब्द पढ़कर रोजी कमाना अधिक पसन्द करते थे। यह सब देखने के बाद ही जुलिये को शुरू के कुछ दिनों में ही शीघ्र सफलता प्राप्त करने का विश्वास हो गया था। वह सोचता था कि प्रत्येक व्यवसाय में ही बुद्धिमान लोगों की आवश्यकता होती है, क्योंकि आखिरकार काम तो पूरा करना ही पड़ता है। नैपोलियन के अधीन मैं एक सार्जेंट बनता। इन भावी पुरोहितों के बीच मैं प्रधान विकार बनूँगा।

वह यह भी सोचता कि ये बेचारे बचपन से ही मेहनत करने को लाचार रहे और यहाँ आने के पहले तो खट्टा दूध और काली रोटी खाकर गुजारा करते आये हैं। अपने घरों में उन्हें साल में पाँच-छ बार से अधिक गोشت खाने को न मिलता होगा। युद्ध को विश्राम का समय समझने वाले रोमन सैनिकों की भाँति ये असंस्कृत किसान शिक्षा-मठ में मिलने वाली सुविधाओं पर ही मुग्ध हैं।

उनकी वुभी हुई-सी आँखों में जुलिये को भोजन के बाद शारीरिक क्षुधा की तृप्ति अथवा भोजन के पहले शारीरिक सुख की आशा के अतिरिक्त और कोई भाव कभी न दीख पड़ता था। जुलिये को अपनी प्रतिभा का सिक्का ऐस ही लोगों के बीच जमाना था। किन्तु जो बात जुलिये न जानता था, और जो किसी ने उसे बताई भी न थी, वह यह थी कि धर्म-सिद्धान्त, चर्च का इतिहास आदि विषयों में प्रथम स्थान प्राप्त करना उनकी आँखों में मिथ्या गौरव के पाप के अतिरिक्त कुछ न था।

वाल्तेर के दिनों से ही फ्राँस की चर्च ने यह समझ लिया था कि उसकी प्रधान शत्रु पुस्तकें ही हैं। उनकी दृष्टि में हृदय का समर्पण ही सब कुछ था। जब अध्ययन में सफल होना पवित्र कर्तव्य

होने पर भी सन्देहजनक माना जाता था ! यह ठीक भी था क्योंकि श्रेष्ठ बुद्धि वाले व्यक्ति को नया रास्ता पकड़ने से कौन रोक सकता है ? लडखड़ाती हुई चर्च पोप को ही अपना मुक्तिदाता मानकर उससे चिपकी हुई है । केवल पोप ही आत्म-दर्शन के प्रयत्नों का गला घोट सकता है और अपने पवित्र वैभव तथा समारोहों द्वारा सासारिक स्त्री-पुरुषों के रक्षण और क्लान्त मन को प्रभावित कर सकता है ।

जुलिये को ये सब सत्य आधे-आधे समझ में आते थे जिन्हें मठ में बोला जाने वाला प्रत्येक शब्द मिथ्या प्रमाणित करता रहता था । इसलिए उसे तीव्र अवसाद ने घेर लिया । अपने कठोर परिश्रम करके शीघ्र ही पुरोहित के लिये उपयोगी ऐसी बहुत सारी बातें सीख ली जो उसकी दृष्टि में झूठी थी और जिनमें उसकी कोई रुचि नहीं थी ।

तो क्या मुझे सारी दुनिया ने भुना दिया है ? वह सोचने लगा । वह यह नहीं जानता था कि फादर पिरार ने उसके नाम से आये हुए दो-एक पत्रों को फाड़कर फेंक दिया था । इन पत्रों पर दिव्यों की डाक मोहर थी और उनमें भाषा के अपूर्व समय के बावजूद एक अत्यन्त प्रबल भावावेग छलकता दीखता था । ऐसा लगता था मानो प्रेम के साथ-साथ गहरा पश्चात्ताप भी मौजूद हो । फादर पिरार ने सोचा कि चलो अच्छा ही है, इस नौजवान ने कम से कम किसी आध्यात्मिक स्त्री से तो प्रेम नहीं किया ।

एक दिन फादर पिरार ने ऐसा ही एक पत्र खोला तो वह आँसुओं से भीगा जान पड़ा । पत्र बहुत ही करुण था ।

“ईश्वर ने आखिरकार मेरे ऊपर कृपा की है कि मैं अपने पाप के स्वामी से नहीं—वह तो सदा मेरे लिये ससार में सबसे प्रिय ही रहेगा—बल्कि स्वयं पाप से धृष्ट कर सकूँ । प्रियतम, मैंने अपना बलिदान पूरा कर दिया है—तुम देख ही सकोगे कि आँसुओं के बिना नहीं । जिन लोगों के प्रति मेरा कर्तव्य है और जिनमें तुम्हें भी इतना प्रेम है, उसकी मुक्ति कामना की विजय हुई । वह न्यायपूर्ण किन्तु भयंकर ईश्वर अब

माता के अपराधों के लिये बच्चों का बदनाम न लेगा। विदा, जुलिये—
लोगों से अपने व्यवहार में सदा न्याय का पालन करना।”

पत्र का अन्त पढ़ने में न आता था। उसमें पता दिजो का था, यद्यपि यह आशा भी प्रगट की गई थी कि जुलिये कभी उसका उत्तर न देगा, अथवा ऐसा उत्तर देगा जिसे सदाचार के मार्ग पर लौटी हुई स्त्री बिना लज्जित हुए पढ़ सके।

शिक्षा-मठ में भोजन का ठेकेदार सेन्टीम प्रति व्यक्ति के हिसाब से खाना देना था जो कोई बहुत अच्छा न था। इस कारण जुलिये के विषाद का प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर भी पड़ने लगा। तभी एक दिन सबेरे अचानक फूके उसके कमरे में आ धमका।

“राम राम करके भीतर पहुँचा हूँ”, उसने कहा। “सच कहता हूँ बस तुम्हीं से मिलने के लिए कम से कम पाँच बार बजासो आ चुका हूँ, पर हर बार मुझे दरवाजा बन्द मिला। तब मैंने मठ के आगे एक आदमी को तैनात किया। पर तुम कभी बाहर क्यों नहीं जाते?”

“अपनी शक्ति की परीक्षा कर रहा हूँ।”

“तुम बहुत ही बदले हुए लग रहे हो। चलो किसी तरह तुमसे भेट तो हुई। यह भी पाँच-पाँच फ्रैंक के दो सुन्दर चाँदी के सिक्कों की कृपा है। अब सोचता हूँ मैं कितना मूर्ख हूँ कि पहली ही बार उन्हें प्रस्तुत क्यों न किया।”

दोनों मित्रों के बीच वार्तालाप समाप्त ही न होता था। पर फूके के एक प्रश्न से जुलिये के चेहरे के रंग बदल गया। “अच्छा, तुमने भी कुछ सुना? तुम्हारे छात्रों की माँ तो बहुत ही धार्मिक हो गई हैं।” उसने बड़ी लापरवाही से यह बात कही थी और अनजाने में ही एक भाव-प्रवण व्यक्ति के सबसे प्रिय स्थल पर प्रबल आघात कर दिया था।

उसने आगे कहा, “सच कहता हूँ दोस्त, वह बहुत ही अधिक धार्मिक हो गई हैं। सुना है आजकल वह तीर्थ-यात्रा के लिये जाने लगी है। पर म० मास्लो के लिए इतने दिनों से फादर शेला के ऊपर जासूसी करने

के बाद भी यह बड़ी लज्जा की बात है कि मादाम द रेनाल उनसे कोई सरोकार नहीं रखती। अपने पाप स्वीकार करने के लिए वह या तो दिज्जो जाती है या बजासो।”

“बजासो आती है ?” जुलिये ने कहा और उसका रोम-रोम लज्जा से लाल हो उठा।

“हा अक्सर.....” फूके ने कुछ प्रश्नसूचक दृष्टि से उत्तर दिया।

“तुम्हारे पास ‘कोस्तितुस्योनेल’ पत्रिका की कोई प्रतियाँ हैं ?” हठात् जुलिये ने कहा।

“क्या कहा तुमने ?” फूके ने पूछा।

“पूछ रहा हूँ कि तुम्हारे पास ‘कोस्तितुस्योनेल’ की प्रतियाँ हैं ?—यहाँ एक प्रति के तीस सू देने पड़ते हैं।”

“क्या ? यहाँ भी उदारपथी है ? शिक्षा-मठ में भी ? बेचारा फ्रांस !” फादर मास्लो की पाखण्डपूर्ण मीठी आवाज की नकल करते हुए फूके ने कहा।

हमारे नायक पर इस भेट का बड़ा गहरा असर पड़ा होता। किन्तु अगले ही दिन वेरियेर के एक छोटे-से लडके के एक वाक्य से उसे एक बड़ी महत्वपूर्ण बात का पता चला। शिक्षा-मठ में आने के बाद से जुलिये अपने आचरण में एक के बाद एक गलत कदम उठाता आया था। वह बड़ी कड़वाहट के साथ अपने ऊपर हँसा।

वास्तव में वह जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों को तो बड़ी चतुराई से करता था किन्तु छोटी-छोटी बातों पर ध्यान न देता था। मठ में चतुर लोग केवल छोटी-छोटी बातों पर ही ध्यान देते हैं। परिणामस्वरूप उस के सब सहपाठी उसे स्वतन्त्र विचार वाला मानने लगे थे। बहुत सारे छोटे-छोटे कार्यों ने यह बात प्रगट कर दी थी।

उनकी दृष्टि में सबसे बड़ा और घृणित अपराध तो यह था कि अधिकारियों तथा गुरुजनों का अन्धानुकरण करने के बजाय वह स्वयं विचार करना और अपने लिए स्वयं निर्णय करना अधिक पसंद करत

था। फादर पिरार से उसे कोई सहायता न मिल सकी थी। पाप-स्वीकार के समय के अतिरिक्त उन्होंने उससे कभी एक शब्द भी न कहा था और वहाँ भी वह कुछ कहने के बजाय सुनते ही अधिक थे। यदि उसने फादर कास्तानेद को चुना होता तो परिस्थिति बहुत ही भिन्न हुई होती।

जैसे ही जुलिये को अपनी इस मूर्खता का पता चला, उसकी उकताहट भाग गई। वह इस क्षति की पूरी मात्रा जानने का यत्न करने लगा और इस उद्देश्य से उसने अपने उस दर्पपूर्ण तथा हठी मौन को थोड़ा-सा ढीला किया जिसके द्वारा वह अपने सहपाठियों को अपने से दूर रक्खा करता था। इससे उन्हें अपना बदला लेने का अवसर मिल गया। उसके मैत्री करने के प्रयत्नों का ऐसे तिरस्कार से स्वागत किया गया जो लगभग खिल्ली उड़ाने के बराबर था। उसे अनुभव हुआ कि शिक्षा-मठ में आने के बाद से, विशेष कर मनोरंजन के समय में, ऐसा एक भी घण्टा न बीता होगा जिसमें उन्होंने उसके पक्ष अथवा विपक्ष में कोई न कोई निष्कर्ष न निकाला हो, जब या तो उनके शत्रुओं की संख्या न बढ़ी हो अथवा सचमुच भले अथवा कम असंस्कृत विद्यार्थी की सद्भावना उसे न प्राप्त हुई हो। इसलिए जिस क्षति को उसे पूरा करना था वह बड़ी भारी थी और काम अत्यन्त ही कष्टसाध्य था। अब से जुलिये सावधान रहने लगा। अब उसे अपना एक नया ही रूप लोगों के मन में जमाना था।

उदाहरण के लिए, अपनी आँखों के नियन्त्रण में उसे बड़ी कठिनाई होती थी। यह अकारण ही नहीं है कि ऐसे स्थानों में आँखें सदा नीचे ही रक्खी जाती हैं। जुलिये सोचने लगा कि मैं वेरियेर में हर चीज़ मानकर चला करता था। सोचता था कि जीवन का उपभोग कर रहा हूँ, पर वास्तव में जीवन के लिए तैयारी भर कर रहा था। अब यहाँ मैं यथार्थ ससार में हूँ, और जब तक मैं अपना कर्तव्य पूरा नहीं करता तब तक इसी प्रकार चारों ओर शत्रुओं से घिरा रहूँगा। प्रत्येक मिनट ढोंग बनाये रखना कितना अधिक कठिन है! उसके हरक्युलिस के प्रयत्न

भी फीके पड़ जाते हैं। आधुनिक युद्ध का हरक्युलिस सिक्सटस पचम जैसा व्यक्ति होगा जिसकी विनम्रता पन्द्रह वर्षों तक लगातार ऐसे चालीस कार्डिनलो को धोखा देती रही जो उसके यौवन काल में उसे एक घमण्डी और अनियन्त्रित युवक के रूप में जान चुके थे।

तो यहाँ विद्वत्ता का कोई मूल्य नहीं। उमने घृणा और खेद के साथ मन ही मन कहा। धर्मशास्त्र, चर्च का इतिहास इत्यादि विषयों के ज्ञान में उन्नति का केवल ऊपरी महत्व है। इन विषयों पर कही जाने वाली प्रत्येक बात मेरे जैसे मूर्खों को फसाने के लिए है। अफमोस ! मेरी एकमात्र विशेषता मेरी इतनी शीघ्र उन्नति में, इस बकवास को सच मान लेने की योग्यता में ही थी। क्या ये लोग सचमुच इस बकवास का सही मूल्य समझते हैं ? क्या वे मेरी भाँति इसके विषय में निर्णय करते हैं ? और मैं बुद्ध की भाँति इसका घमण्ड करता रहा। अपने वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त करने का केवल एक ही लाभ हुआ है कि मैंने बहुत से जानो दुश्मन पैदा कर लिये हैं। शाजेल मुझमें ज्यादा अच्छा विद्यार्थी है पर वह अपने निबन्ध में एक-दो ऐसी भूलें कर डालता है कि उसका नाम सूची में पाँचवाँ होता है। यदि वह कभी प्रथम आता भी है तो कुछ लापरवाही के कारण ही। ओफ ! म० पिरार का इस विषय में एक शब्द, केवल एक ही शब्द, मेरे लिए कितना उपयोगी होता !

जिस क्षण से जुलिये को अपनी गलती का पता चला, वह सारा लम्बा-चौड़ा भजन, पूजा-पाठ, जिससे उसका जी इस बुरी तरह ऊबता था, उसके लिए बहुत ही रोचक और आकर्षक कार्य बन गया। अपने बारे में गम्भीरतापूर्वक विचार करने और उससे भी अधिक अपनी क्षमताओं को बढ़ा-चढ़ाकर न देखने का निश्चय करने के बाद जुलिये ने अन्य छात्रों की भाँति तुरन्त ही अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को महत्वपूर्ण कार्यों से, दूसरे शब्दों में सच्चे ईसाई होने का प्रमाण देने वाले कार्यों से, भर डालने की चेष्टा नहीं की। शिक्षामठों में तो उबला हुआ अण्डा भी इस प्रकार खाया जाता है जिससे धार्मिक जीवन की प्रगति सूचित होती है।

सबसे पहले तो जुलिये ने वह स्थिति प्राप्त करने का प्रयत्न किया जिसमें तरुण छात्र के आचरण से अपने हाथ-पैर-आँखे चलाने के ढंग से, यद्यपि सासारिक वस्तुओं से अनुराग प्रगट नहीं होता, तो भी अभी ऐसा कोई चिह्न इनमें नहीं पाया जाता जिनसे दूसरी दुनिया के अथवा इस दुनिया की निस्सारता के विचारों में पूरी तरह डूबा रहना प्रगट हो।

जुलिये को निरन्तर बरामदे की दीवारों पर कोयले से लिखे ऐसे वाक्य दिखाई पड़ते 'अनंत काल तक परमानंद अथवा नरक में उबलते हुए तेल की चिरतनता के सामने साठ वर्ष की परीक्षा क्या चीज है ?' अब वह ऐसी बातों को घृणा की दृष्टि से न देखता था, वह समझ गया था कि इन चीजों को उसे निरन्तर अपनी आँखों के सामने रखना चाहिये। वह मन ही मन कहता कि जीवन भर मैं और करूँगा क्या ? धर्म-प्राण व्यक्तियों को स्वर्ग की सीढ़ी ही तो बेचूँगा ! ऐसा स्थान उन को दृष्टिगोचर किस प्रकार होगा ? मेरे और साधारण व्यक्ति के बाह्य रूप में अन्तर के द्वारा ही।

कई महीने तक लगातार प्रयत्न करने के बाद भी जुलिये के विचारशील दिखाई पड़ने में कमी न आ सकी। न तो उसकी आँखों की गतिविधि से और न उसके मुख से सम्पूर्ण श्रद्धा का वैसा भाव प्रगट होता था जो हर वस्तु में विश्वास करने और बलिदान की सीमा तक हर वस्तु का समर्थन करने को तत्पर हो। यह देखकर जुलिये क्षुब्ध हो उठा था कि इस तरह के काम में फूहड़ से फूहड़ और असंस्कृत से असंस्कृत किसान भी उसे परास्त कर देता है। उनके विचारशील न लगने के तो बहुत ही उपयुक्त कारण थे।

किसी भी बात का विश्वास करने और उसे सहन करने के लिए तीव्र और उत्कट अन्ध-श्रद्धा का भाव धारण करने के लिए उसने कोई भी कष्ट उठा न रखा। इटली के मठों में ऐसा मुख प्रायः देखा जाता है और हमारे जैसे साधारण लोगों के लिए वेसिनो ने अपने धार्मिक चित्रों में उसके उत्कृष्ट नमूने छोड़े हैं। बड़े-बड़े समारोहों के अवसर पर छात्रों

को सासेज तथा गोभी का अचार खाने को मिलता था। भोजन के समय जुलिये के पड़ सी देखते कि वह ऐसी उत्तम वस्तुओं में कोई आनन्द नहीं लेता। यह उसका बड़ा अपराध था। उसके सहपाठियों को इसमें अत्यन्त मूर्खतापूर्ण ढोंग के घृणित लक्षण जान पड़े। “जरा उस घमण्डी को देखो,” वे लोग कहते, “ऐसा बन रहा है मानो उसे ये व्यजन अच्छे ही नहीं लगते। सासेज और गोभी का अचार। शरम भी नहीं आती। बड़ा आदमी बनता है। शैतान का प्यारा।”

जुलिये इन सब बातों से अत्यन्त ही निरुत्साहित होकर कभी-कभी कह उठता, मेरे इन सहपाठी किसान युवकों के लिए उनका अज्ञान ही उनकी सबसे बड़ी शक्ति है। अपने साथ जितने सारे सासारिक विचार लेकर मैं मठ में आया, और जिन्हे लाख कोशिश करने पर वे मेरे मुख पर पड़ ही लेते हैं, उनसे इन लोगों को छुड़ाने के लिए किसी शिक्षक को परिश्रम नहीं करना पड़ता।

शिक्षामठ में आने वाले गँवार से गँवार किसान को वह ऐसे ध्यान से देखता मानो उससे ईर्ष्या कर रहा हो। जिस समय जाकेट उतार कर उन्हें काला कैसक पहनाया जाता तो उस समय उनकी सारी शिक्षा घन के प्रति अगाध और असीम श्रद्धा तक ही सीमित होती।

वाल्तेर की कहानियों के नायकों की भाँति ऐसे दयात्रों के लिए सारा सुख सचमुच अच्छे भोजन में ही होता है। जुलिये ने देखा कि उनमें से प्रत्येक के मन में उत्तम वस्त्र पहनने वाले के प्रति जन्मजात आदर का भाव है। इसीलिए हमारी अदालतों में पदानुसार होने वाले न्याय की कद्र ये लोग जानते हैं। वे प्रायः एक दूसरे से कटा करते हैं ‘कि इन बड़े लोगों के साथ कानूनी लड़ाई लड़ने में किसी को क्या लाभ हो सकता है?’ ऐसी हालत में सबसे धनी व्यक्ति अर्थात् सरकार के लिये उनके आदर का तो फिर अनुमान किया ही जा सकता है। फ्रांस-कोटे के इन किसानों की नज़र में ज़िलाधीश के नाम के उल्लेख मात्र पर सम्मानपूर्वक न मुस्करा पड़ना दुस्साहसिकता का ही दूसरा नाम है और गरीब

आदमी को दुस्साहसिकता का दण्ड तुरन्त रोटी छिनने के द्वारा मिलता है ।

प्रारम्भ मे एक प्रकार की घृणा से जुलिये का दम घुटता था, अब उसका हृदय करुणा से भर गया था । ऐसा प्राय होता था कि उसके सहपाठियों के पिता जाडे के दिनो मे शाम को घर लौटने पर रोटी आलू आदि कुछ न पाते थे । जुलिये सोचता था कि ऐसी हालत मे इसमे आश्चर्य की बात ही क्या है कि उन्हे सबसे सुखी व्यक्ति वही लगे जिसे भर पेट भोजन मिलता हो या जिसके पास उत्तम वस्त्र हो ? मेरे साथियो का धन्धा निश्चित है, अर्थात् धार्मिक सिद्धान्तो मे वे इस प्रकार के सुख की उत्तम भोजन और शीतकाल के लिये एक गरम सूट के सुख की निरतरता देखते है ।

जुलिये ने एक छात्र को अपने मित्र से कहते सुना : “सिक्सटस पचम भी तो गडरिया था, फिर उसकी भाँति मै क्यो नही पोप बन सकता ?”

मित्र ने उत्तर दिया “पोप केवल इटली वाले ही बनते हैं । पर नि सन्देह हम लोगो मे से प्रधान विकार कैनन और बिशप के पद के लिये तो लोग चुने ही जायेगे । शालो के बिशप ठठेरे के पुत्र हैं, मेरे पिता भी ठठेरे हैं ।”

एक दिन धर्म-शास्त्र की कक्षा मे से बीच ही मे म० पिरार ने जुलिये को बुला भेजा । बेचारे को उस शारीरिक और नैतिक वातावरण से भाग सकने के कारण बडी प्रसन्नता हुई ।

जुलिये को अध्यक्ष से वैसा ही स्वागत मिला जिससे शिक्षा-मठ मे प्रवेश करने के पहले दिन वह इतना भयभीत हो गया था ।

“कृपा करके यह बताइये कि इस ताश के पत्ते पर क्या लिखा है ?” उन्होंने जुलिये की ओर ऐसे देखते हुए कहा कि उसे लगा मानो वह धरती में गढ़ जायेया ।

जुलिये ने पढा : “अमांदा बिने, काफे द ला जिराफ, आठ बजे से

पहले । कहना कि जोलिस से आये हों और मेरी माँ के चचेरे भाई हो ।” जुलिये को अपने सकट की भयकरता का अनुमान हुआ । फादर कास्तानेद की खुफिया पुलिस ने यह पता उसके पास से चुरा लिया था ।

“जिस दिन मैं यहाँ आया मैं काँप रहा था,” उसने फादर पिरार के माथे की ओर देखते हुए उत्तर दिया क्योंकि उनकी डरावनी आँखों का सामना करने का साहस उसमें न था । “म० शेला ने मुझसे कहा था कि यह स्थान हर प्रकार की भूठी निन्दा और ईर्ष्या का गढ़ है, अपने सहपाठी पर जासूसी करने और उसके विरुद्ध खबरें देने को यहाँ प्रोत्साहन दिया जाता है । भगवान की यही मर्जी है कि तरुण पुरोहित जीवन को यथार्थ रूप में देखकर इस ससार और उसके झूठे गौरव के प्रति घृणा से प्रेरित हो ।”

“अच्छा, तो तुम अपनी यह वक्तूता की कला मेरे ऊपर भी आजमाओगे ?” फादर पिरार ने क्रोध से उबलते हुए कहा । “शैतान कहीं के ।”

“वेरिये मे,” जुलिये ने नीरस स्वर में कहा, “मेरे भाइयों को मुझ से ईर्ष्या करने का कोई कारण मिल जाता था तो वे मुझे पीटते थे ।”

“जो मैं पूछता हूँ उसका जवाब दो, जो पूछता हूँ उसका !” फादर पिरार ने लगभग आपे से बाहर होते हुए कहा ।

तनिक भी भयभीत हुए बिना जुलिये ने अपनी कहानी शुरू की ।

“जिस दिन मैं बजासो आया तो दोपहर के लगभग मुझे भूख लगी और मैं एक काफे में गया । मेरा हृदय ऐसी अपवित्र जगह के लिये घृणा से भरपूर था, पर मैंने सोचा कि सराय की अपेक्षा यहाँ मुझे भोजन में कम पैसा देना पड़ेगा । मुझे अनुभवहीन देखकर एक महिला को जो मालकिन जान पड़ती थी, मेरे ऊपर तरस आया । उन्होंने मुझ से कहा, ‘बजासो बदमाशों का अड्डा है । मुझे आपके लिये भय होता है । यदि कोई मुसीबत आ पड़े तो मेरे ऊपर भरोसा कीजियेगा । मेरे घर पर आठ बजे से पहले सूचना भेजियेगा । यदि मठ के दरबान आपका सदेशा

लेने से इन्कार करे तो कहियेगा आप जालिस मे पैदा हुए है और मेरी माँ के चचेरे भाई है ' ”

“तुम्हारी इस बकवास की सचाई की जाँच की जायेगी,” फादर पिरार ने कहा । उनके लिये अपने स्थान पर बैठे रहना कठिन हो गया और वे उठकर इधर-उधर टहलने लगे । ‘अपने कमरे मे वापस जाओ ।’

जुलिये के साथ-साथ एक पुरोहित उसके कमरे तक गया । जुलिये ने अपनी कोठरी मे जाकर भीतर से किवाड बन्द कर लिये, फिर वह अपने उस सन्दूक को देखने लगा जिसके तल मे उसने यह कार्ड छिपा रखा था । सन्दूक से कोई चीज गायब तो न थी, पर सब इधर-उधर हो गई थी । चाबी तो वह सदा अपने साथ रखता था । जुलिये सोचने लगा कि अच्छी तकदीर थी जो अपनी मूर्खता के जमाने मे भी मै कभी बाहर न गया । म० कास्तानेद तो प्राय मुझे जाने की छुट्टी दिया करते थे । उनकी कृपा का रहस्य अब समझ मे आता है । मै शायद यह बेवकूफी कर बैठता कि कपडे बदल कर सुन्दरी अमादा से मिलने चला जाता । फिर तो बरबादी मे कोई कसर ही न रहती । जब ये लोग इस प्रकार जानकारी प्राप्त करने की ओर से निराश हो गये तो उन्होंने मेरे विरुद्ध शिकायत कर दी ।

दो घण्टे बाद अध्यक्ष ने उसे फिर बुलाया । उन्होंने अब कुछ कम कठोर स्वर मे उससे कहा, “तुम मुझ से झूठ तो न बोले, पर इस पते को अपने पास रखना ऐसी गलती है जिसकी गम्भीरता तुम नहीं समझ सकते । अभाग लडके ! दस वर्ष बाद भी इसका तुम्हारे विरुद्ध उपयोग किया जा सकता है ।”

जीवन का प्रथम अनुभव

आशा है पाठक इस बात के लिये मुझे क्षमा करेंगे कि जुलिये के इस काल के जीवन का वर्णन बहुत विस्तार से नहीं दिया जा रहा है। इसका यह अर्थ नहीं कि उसके विषय में हमारी जानकारी कम है, बल्कि असलियत इसके ठीक विपरीत ही है। किन्तु शिक्षामठ में जो कुछ उसने देखा उसका रंग शायद इतना गहरा है कि जिन हल्के रंगों का चित्रण हम इन पृष्ठों में करते आये हैं वह उसके अनुरूप न हो। हमारे समकालीन लोग जब कुछ चीजों से दुखी होते हैं तो उन्हें सिहरे बिना याद तक नहीं कर पाते, जिससे हर प्रकार का आनन्द, यहाँ तक कि कहानी पढ़ने का आनन्द भी, नष्ट हो जाता है।

जुलिये अपने बनावटी व्यवहार के प्रयत्नों में अधिक सफल न हो सका था। बीच-बीच में उसे निराशा बल्कि सर्वथा निरुत्साह का अनुभव होता। लगता कि वह असफल है और असफल भी उस अत्यन्त ही निकम्मे व्यवसाय में। बाहर से हल्की-सी सहायता भी उसे नया साहस देने के लिये पर्याप्त होती क्योंकि बाधाएँ बहुत बड़ी न थीं। पर वह अटलांटिक महासागर में टूटे हुए जहाज की भाँति एकदम अकेला था।

वह सोचता कि यदि मैं सफल भी हो गया तो मुझे सारा जीवन इस बुरी सगत में ही बिताना पड़ेगा। इन पेटू लोगों के साथ जिनके सिर में भोजन के समय ग्रामलेट निगलने के अतिरिक्त और कोई विचार ही नहीं आता, अथवा फादर कास्तानेद जैसे लोगों के साथ जिनके लिये

कोई अपराध असंभव नहीं ! इन लोगों को अधिकार अवश्य मिलेगा ।
पर हे भगवान् ! किस कीमत पर !

मैं हर जगह पढ़ता हूँ कि मनुष्य का सकल्प बड़ी शक्तिशाली चीज है, पर क्या वह ऐसी निराशा को जीतने में समर्थ है ? महापुरुषों का काम आसान था । सकट चाहे जितना भयंकर हो उन्हें उसमें सौन्दर्य तो मिलता था; मेरे चारों ओर की इस कुत्सा को मेरे सिवाय और कौन समझ सकता है !

यह उसके जीवन का सबसे सकटपूर्ण क्षण था । बजासो में स्थित उत्तम रेजीमेंटों में से किसी में भी भर्ती होना कितना आसान है ! या वह लैटिन का शिक्षक ही हो जाता है उसे निर्वाह के लिये बहुत अधिक न चाहिये । पर तब उसके आगे कोई निश्चित उद्देश्य न रहता, उसकी कल्पना को प्रेरणा देने वाला कोई भविष्य न रहता । वह तो मौत के बराबर होता । उसके एक उदासी भरे दिन का विस्तृत विवरण सुनिये ।

मान लीजिये एक दिन सबेरे उसने सोचा कि दूसरे किसानों से भिन्न होने के लिये मैं प्रायः अपने आपको बर्बाद देता रहता हूँ । इतने दिनों के अनुभव से मैं यह समझ चुका हूँ कि भिन्नता घृणा को जन्म देती है । यह महान् सत्य उसको अपनी एक बड़ी भारी असफलता से प्राप्त हुआ था ।

एक बार समूचे सप्ताह तक परिश्रम करके उसने एक प्रतिष्ठित छात्र से मैत्री स्थापित की । वह उसके साथ सहन में टहलता हुआ चुपचाप उसकी जी उबा देने वाली बकवास को सुन रहा था । एकाएक मौसम में तूफान के चिल्ला नजर आये और बिजली कड़कने लगी । यह देखते ही धार्मिक विद्यार्थी ने बड़ी उजड़ता से उसे एक तरफ ढकेलते हुये कहा, “देखो सुनो, दुनिया में हर एक आदमी अपनी चिन्ता करता है । मैं बिजली से मरना नहीं चाहता । वाल्टेर की भाँति तुम्हारे जैसे नास्तिक के ऊपर भी भगवान् बिजली गिरा सकता है ।”

क्रोध से उसके दाँत भिच गये और वह खुनी हुई आँखों से बिजली से

आ लोकिन आकाश को देखने लगा। जुलिये का हृदय चीख उठा। तूफान में सोने की चेष्टा करूँ तो मैं अवश्य ही उससे उपयुक्त हूँ ! एक और रिरियाते ढोंगी को जीतने के लिये आगे बढ़ो !

चर्च के इतिहास पर फादर कास्तानेद की कक्षा की घन्टी बजी। इन किसान युवकों को, जो अपने पिताओं के कठोर परिश्रम और दरिद्रता से इतने भयभीत थे, उस दिन पुरोहित ने यह सिखाया कि सरकार के पास, जिसे वे इतना भयानक समझते थे, कोई अपनी वास्तविक अथवा न्यायोचित शक्ति नहीं। जो कुछ है भी वह उसे धरती पर भगवान के प्रतिनिधि द्वारा सौंपी हुई है।

“अपने जीवन की पवित्रता और अपनी आज्ञाकारिता द्वारा पोष की स्नेहमयी करुणा के योग्य बनो। ‘उसके हाथ में छड़ के समान’ बन कर तुम्हें ऐसा गौरवशाली स्थान प्राप्त होगा, जहाँ से तुम्हें बधनहीन चरम अधिकार मिल सकेगा। वह ऐसी अभेद्य स्थिति है जिसके लिये एक तिहाई धन सरकार देती है और बाकी दो तिहाई तुम्हारे उपदेशों से शिक्षित होने वाले भक्तगण।”

व्याख्यान के बाद बाहर आते समय उसने देखा कि म० कास्तानेद सहन में रुककर अपने चारों ओर घेरा बनाये खड़े हुए विद्यार्थियों से बातचीत कर रहे हैं। वह कह रहे थे, “यह बात बिल्कुल सही है कि पुरोहित का मूल्य स्वयं उसकी योग्यता के अनुसार ही होता है। मैंने स्वयं ‘पहाड़ी इलाकों में ऐसे स्थान देखे हैं जिनमें ऊपरी आमदनी नगरों की अपेक्षा कहीं अधिक है। अडे, मक्खन तथा अन्य अनगिनती सुखद वस्तुओं को छोड़ भी दें तो भी पैसा कम नहीं। और उन सब इलाकों में धर्माधिकारी अनिवार्य रूप से सर्वप्रमुख व्यक्ति होता है। ऐसा कोई उत्तम भोज नहीं जिसमें वह निमन्त्रित न होता हो और जहाँ उसका जी खोलकर आदर-सत्कार न किया जाता हो।”

म० कास्तानेद के कमरे के बाहर जाते ही विद्यार्थी अलग-अलग मडलियों में बैठ गये। जुलिये को उनमें से किसी में शामिल न किया

गया। वह नक्कू सा अकेला रह गया। उसने देखा कि प्रत्येक मडली में एक छात्र सिक्का हवा में उछाल रहा है, अगर उसने चित्त या पट ठीक बता दिया तो उसके साथी यह नतीजा निकालते थे कि उसे जल्दी ही कोई अच्छी आमदनी वाला इनाका मिल जायेगा।

उसके बाद किस्से-कहानियों का दौर चला। किसी नौजवान पुरोहित ने, जिसे नियुक्त हुए मुश्किल से साल भर हुआ होगा, बूढ़े क्योरे की नौक-रानी को कोई पालतू खरगोश भेंट में दे दिया। इससे उसे क्योरे के साथ जाकर रहने का अवसर मिल गया और फिर कुछ ही दिनों बाद क्योरे की मृत्यु होने पर वह उसका स्थान प्राप्त करके आनन्द में रहने लगा। एक दूसरे पुरोहित ने किसी बूढ़े पगु क्योरे के भोजन के समय नित्य उपस्थित होकर और उसकी सहायता करके एक अत्यन्त समृद्ध मडली में स्थान प्राप्त कर लिया था। हर व्यवसाय के अन्य सभी नौजवानों की भौति शिक्षामठ के छात्र भी ऐसी प्रत्येक छोटी से छोटी परतनि में भी असाधारण और कलना को उत्तेजित करने वाली परिस्थिति के प्रभाव को बढा-चढाकर देखते थे।

मुझे ऐसी बातचीत के प्रभाव से दूर रहना चाहिये, जुलिये ने सोचा। विद्यार्थी यदि सासेज अथवा आराम की जिन्दगी के विषय में बातचीत न करते तो फिर धार्मिक सिद्धान्तों के अन्य सासारिक पक्षों को लेकर, जैसे बिशप और जिलाधिकारी, मेयर तथा स्थानीय पुरोहित के बीच झगड़ों को लेकर बहस छिड़ जाती। जुलिये ने देखा कि एक दूसरे ईश्वर का विचार रूप धारण कर रहा है, ऐसे ईश्वर का जो पहले की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली और भयोत्पादक है। यह दूसरा ईश्वर पोप था। छात्रों को जब विश्वास हो जाता कि फादर पिरार उनकी बातें न सुन रहे होंगे, तो वे साँस रोककर आपस में कहते कि यदि पोप फ्रांस के प्रत्येक जिलाधीश और प्रत्येक मेयर की नियुक्ति का कष्ट नहीं करते तो इसका कारण यही है कि उन्होंने यह काम फ्रांस के बादशाह को ही चर्च का ज्येष्ठतम पुत्र घोषित करके सौंप दिया है।

इन्ही दिनों जुलिये को म० द मेस्त्र के पोप-सम्बन्धी ग्रन्थ का लाभ उठाकर कुछ आदर प्राप्त करने का विचार सूझा । निस्सन्देह उसने अपने सहपाठियों को अपने ज्ञान से चकित कर दिया, पर वह और भी दुर्भाग्य की बात हुई । स्वयं उनके मतामत को उनसे अधिक योग्यता-पूर्वक प्रस्तुत कर सकने के कारण उसने उन्हें रुष्ट कर दिया । फादर शेला ने अपनी ही भाति जुलिये के मामले में भी बड़ी नासमझी में काम लिया था । उन्होंने उसे इस बात का तो अभ्यस्त कर दिया था कि किसी विषय पर सही-सही विचार करे और अर्थशून्य शब्द-मात्र से सन्तुष्ट न हो जाय । किन्तु उन्होंने उसे यह न बताया था कि कम प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति के लिए ऐसी आदत अपराध है, क्योंकि कुशलतापूर्वक तर्क कर सकने की क्षमता से लोग रुष्ट होते हैं ।

इसलिये जुलिये की वाक्-क्षमता को एक नया अपराध गिना गया । उसके सहपाठियों ने बहुत सोच-विचार के बाद केवल एक विशेषण में उसके कारण अनुभव होने वाले सारे कष्ट को केन्द्रित कर डाला । उन्होंने उसका नाम, विशेषकर उम्र शैतानी तर्कबुद्धि के कारण जिसका उसको इतना घमण्ड था, मार्टिन लूथर रक्खा ।

बहुत-से छात्रों का रंग उजला था और वे देखने में जुलिये की अपेक्षा अधिक सुन्दर थे । किन्तु उसके हाथ गोरे थे और उसे सफाई की कुछ ऐसी आदतें थीं जिन्हें वह छिपा नहीं पाता था । जिस मनहूस और नीरस स्थान में भाग्य ने उसे ला पटक़ा था वहाँ यह बात किसी प्रकार भी अच्छी न समझी जाती थी । वे बच्चों के बेटे स्वयं कभी न नहाते थे और कहते थे कि उसका चाल-चलन ठीक नहीं है ।

हमें भय है कि हम पाठक को अपने नायक की अनगिनती मुसीबतों के वर्णन से थका न दें । उदाहरण के लिए उसके एक जोशीले सहपाठी ने उससे लड़ने की ठानी । फलस्वरूप उसे इस बात के लिए लाचार होना पड़ा कि एक लोहे का कम्पास सदा साथ रखे और अपनी भाव-भंगिमा द्वारा

यह प्रगट करता रहे कि अवसर पड़ने पर वह उसका उपयोग भी करेगा ।
एक गुप्तचर जितनी आसानी से शब्दों की सूचना दे सकता है वैसे भाव-
भंगिमा की नहीं ।

जुलूस

जुलिये बेकार ही विनम्र और बुद्धू दिखाई पड़ने की कोशिश करता रहा। वह किसी को प्रसन्न न कर सका। वह था ही इतना भिन्न। वह मन ही मन सोचता कि यहाँ के सारे शिक्षक तो बड़ी ही प्रखर बुद्धि वाले लोग हैं और बीसियों लोगों में से छाँटकर चुने गये हैं। फिर उन्हें मेरी यह विनम्रता क्यों नहीं अच्छी लगती? केवल एक व्यक्ति उसकी विश्वासशील दिखाई पड़ने की प्रवृत्ति का कुछ आवश्यकता से अधिक लाभ उठाता जान पड़ता था। वह था फादर शा-ब्रनर, जिनके जिम्मे गिरजाघर में धार्मिक समारोहों का काम सुपुर्द था। वह पिछले पन्द्रह वर्षों से पद-वृद्धि की आशा में इस काम को करते आते थे। साथ ही वह शिक्षा-मठ में धार्मिक व्याख्यान कला की शिक्षा देने भी आते थे।

अपनी अदूरदर्शिता के दिनों में जूलिये प्रायः ही इस विषय में कक्षा में प्रथम आया करता था। फादर शा ने इस बहाने उससे मित्रता प्रगट करना शुरू किया। और व्याख्यान समाप्त होने पर जब वे बाहर आते तो उसका हाथ पकड़ कर बाग़ में एक-दो चक्कर लगाया करते थे।

इनके मन में क्या है? जूलिये मन ही मन सोचता। उसे इस बात से बड़ा ताज्जुब होता था कि वह पुरोहित घण्टों तक उसके साथ गिरजाघर के वस्त्रों इत्यादि के सम्बन्ध में बातें करते रहते थे। गिरजाघर में अस्थायिकालीन वस्त्रों के अतिरिक्त मोटा जड़े हुए सत्रह विशेष पूजा के वस्त्र थे। उन्हें राष्ट्रपति की विधवा मादाम द स्वात्रे से बड़ी आशाएँ

थी। इन महिला की अवस्था नब्बे वर्ष की थी और वह कम से कम पिछले सत्तर वर्ष से अपने विवाह के समय के उत्तम लियो रेशम के तथा जरी के काम वाले गाउन सावधानी से रखे हुई थी।

“जरा कल्पना करो,” फादर शा चलते-चलते एकाएक रुककर और अपनी आँखें जोर से खोलकर कह उठते, “जो वस्त्र अपने आप सीधे खड़े रहते हैं उनगे कितना सोना होगा। बजासो में यह आम तौर पर विश्वास किया जाता है कि मादाम द रुबाप्रे की बसीयत से गिरजाघर के कोष में बड़े समारोहों के उपयुक्त पाँच-छ जोड़े विशेष वस्त्रों के अतिरिक्त दस जोड़े पूजा के वस्त्रों की भी वृद्धि हो जायेगी। फादर शा आवाज़ को धीमी करके आगे कहते, “मैं तो बिल्कुल यह कहता हूँ कि शायद मादाम द रुबाप्रे आठ सुन्दर चाँदी के दीपस्तम्भ भी गिरजाघर को दे जायेगी। कहा जाता है कि इन दीपस्तम्भों को बर्गन्डी के ड्यूक साहसिक चार्ल्स ने इटली में खरीदा था जिनके एक प्रिय मित्र मादाम द रुबाप्रे के पूर्वज थे।”

जुलिये सोचता कि पुराने कपड़ों की इस लम्बी-चौड़ी गाथा सुनाने में इस आदमी का आखिर मतलब क्या है? युगों से वह चालाकी से कोई मतलब की बात कहने की कोशिश कर रहा है, पर अभी तक उसका कोई नामोनिशान नहीं। उसे अवश्य ही मुझ पर तनिक भी विश्वास नहीं। वह दूसरों की अपेक्षा अधिक धूर्त है। अन्य लोगों का भेद एक पखवाड़े के अन्दर आसानी से पता चल जाता है। ठीक समय गया। यह आदमी अपनी महत्वाकांक्षा के कारण पन्द्रह वर्ष से दुःख उठा रहा है।

एक दिन शाम का कक्षा के बीच में ही से जुलिये को फादर पिरार ने बुलाया और कहा, “कल कोर्पस क्रॉस्टी का भोज है। फादर शा-बर्नार चाहते हैं कि तुम गिरजाघर सजाने में उनकी सहायता कर दो। जाओ, और जो वे कहे करो।” फादर पिरार ने उसे वापस बुलाकर करुणा भरी दृष्टि से देखते हुए कहा, “यह मैं तुम्हारे ऊपर छोड़े देता हूँ कि

तुम इस अवसर का लाभ उठाकर नगर में सैर करने हो या नहीं ।”

‘मेरे छिपे हुए शत्रु हैं,’ जुलिये ने उत्तर दिया ।

अगले दिन बहुत सबेरे ही जुलिये गिरजाघर के लिये चल पड़ा । रास्ते भर उसने अपनी आँखें धरती पर जमाये रखी । सड़कों को देख कर और शहर की धूमधाम और हलचल को अनुभव करके उसका मन कुछ हरा हो गया । हर जगह लो । जुलूस के लिये अपने मकानों के अग्र भाग को सजा रहे थे । इस समय शिक्षा-मठ में बिताया हुआ सारा समय उसे एक क्षण से अधिक न जान पड़ा । वह बेजि की बात सोच रहा था और यह भी कि शायद सुन्दरी आमादा जिने से भेंट हो जाये । उसका काफ़े बहुत दूर न था । थोड़ी दूर से उसने फादर शा-बर्नार् को अपने प्रिय गिरजाघर की सीढियों पर देखा । वह तगड़े बदन, दमकते हुए चेहरे और स्पष्ट मुद्रा वाले व्यक्ति थे । उस दिन वह बहुत ही प्रसन्न थे ।

‘मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था बेटे,’ जुलिये के दिग्वाई पड़ते ही उन्होंने कहा । ‘अच्छा हुआ तुम आ गये । आज का काम लम्बा भी है और परिश्रम का भी । चलो, हम लोग अपना पहला कलेवा करके अपने आपको तैयार कर लें । दूसरा दस बजे होगा ।’

‘मैं इस बात के लिए बहुत चिन्तित हूँ, श्रीमान कि मुझे एक क्षण के लिए भी अकेला न छोड़ा जाय,’ जुलिये ने गम्भीरतापूर्वक कहा । और फिर सिर के ऊपर घड़ी की ओर इशारा करते हुए बोला, ‘कृपा करके यह देखे कि मैं यहाँ पाच बजने में एक मिनट पर आ पहुँचा हूँ ।’

‘ओहो ! तो तुम शिक्षा-मठ के उन छोटे-छोटे दुष्ट लोगों से डरते हो ! उनकी बात सोचना मूर्खता है,’ फादर शा ने कहा । ‘दोनों ओर बाड़ में काँटे होने से क्या सड़क कम सुन्दर हो जाती है ? पथिक काँटों को ढाल पर सूखने के लिए छोड़कर अपने मार्ग पर बढ़ते ही जाते हैं । पर चलो आओ, काम पर लगें । चलो, काम पर लगे ।’

फादर शा की यह बात ठाक थी कि काम बड़ी मेहनत का है । एक दिन पहले ही गिरजाघर में बड़ा भारी अन्त्येष्टि समारोह होकर चुका

था, इसलिये पहले से कोई तैयारी न हो पायी थी। अब उन्हें एक दिन के केवल सवेरे के समय में ही सारे गौथिक खबो को और पूजा-गृह के मार्ग तक मध्य भाग को कोई तीस फीट की ऊँचाई तक एक लाल कपड़े से ढँकना था। बिशप ने पेरिस से डाकगाड़ी द्वारा चार सजाने वाले भेजे थे। पर ये महानुभाव हर काम तो अपने आप कर नहीं सकते थे और वजासो के सहयोगियों को प्रोत्साहित करने के बजाय उन पर हँसकर उनके काम को और भी बिगाड़े दे रहे थे।

जुलिये ने देखा कि उसे स्वयं सीढ़ी पर चढ़ना होगा। उस समय उसके बदन की फुर्ती बड़ी काम आई। स्थानीय सजाने वालों के काम के निर्देशन का भार उसने अपने ऊपर ले लिया। फादर शा उसे एक सीढ़ी से दूसरी पर फुदकते देखकर बड़े प्रसन्न हुए।

जब सारे खम्भे बूटीदार कपड़े से ढँक गये तो फिर ऊँची वेदी के बड़े भारी मंडप की चोटी पर बड़े-बड़े पत्थरों के गुच्छे लगाने का काम वाकी रह गया। वहाँ आठ ऊँचे-ऊँचे इटली के सगमरमर के मरोड़े हुए से खम्भे लकड़ी के सुनहरी काम वाले शानदार छत्र के भार को सम्हाले थे, किन्तु इस चँदोवे के बीचोबीच पहुँचने के लिए एक पुरानी लकड़ी की कार्निस पर चलकर जाना जरूरी था जो जमीन से चालीस फीट की ऊँचाई पर थी और जो सम्भवतः कीड़ों द्वारा खाई हुई थी।

इस ऊँचाई ने पेरिस के सजाने वालों की उफनती हुई हँसी पर ठंडा पानी डाल दिया था। वे बस नीचे खड़े-खड़े उसकी ओर ताकते थे। उसके बारे में बहुत-कुछ कहते-सुनते भी थे पर चढ़ना शुरू न करते थे। जुलिये ने पत्थरों का एक गुच्छा छीना और तेजी से सीढ़ियों पर चढ़ गया और चँदोवे के बीचोबीच पहुँचकर मुकुट के रूप में पत्थरों को बड़ी सुन्दरता से सजा दिया।

उसके सीढ़ियों के नीचे उतरते ही फादर शा-बर्नार् ने उसे अपनी बाँहों में भर लिया। “बहुत उत्तम !” उस भले पुरोहित ने उच्छ्वसित भाव से कहा, “मैं बिशप महोदय से इसकी चर्चा करूँगा।”

दस बजे का भोजन बहुत ही आनन्ददायक रहा। फादर झा ने अपने गिरजाघर को इतना सुन्दर सजा हुआ कभी न देखा था।

उन्होंने जुलिये से कहा, “प्यारे बेटे, मेरी माँ इस पूजनीय गिरजाघर में कुर्सियाँ भाड़े पर दिया करती थी। इसलिये एक प्रकार से इस बड़े भारी भवन में ही मेरा पालन-पोषण हुआ है। रोब्सन-योर के आतंक-राज ने हमें बरबाद कर दिया। मैं उस समय केवल आठ ही वर्ष का था, तो भी मैं पूजाओं में चुपके से पुरोहित की सहायता किया करता था और पूजा के दिन मुझे भोजन मिला करता था। पूजा के वस्त्रों की तह करके रखने में मेरे बराबर कोई होशियार न था। मैं उनके गोटे के काम को कभी मुडकर फटने न देता था। जब से नैपोलियन ने धार्मिक पूजा होने की फिर से अनुमति दी, तभी से मैं इस प्राचीन भवन में हर कार्य के संचालन का आनन्द उठाता रहा हूँ। वर्ष में पाँच बार मेरी आँखें इस सुन्दर सजावट को देखती आई हैं। पर आज जैसा सुन्दर कभी नहीं सजाया गया—बूटेदार कपड़ा न तो इतनी सुन्दरता के साथ लटकाया गया और न खम्भों पर इस भाँति लपेटा गया।”

आज यह मुझे अपना भेद जरूर बता देगा, जुलिये ने सोचा। आज यह आने हृदय की बात कहने की मन स्थिति में है। पर उस व्यक्ति ने इतने उत्तेजित होने पर भी कोई अनुचित बात न कही। जुलिये सोचने लगा कि इस आदमी ने कठोर परिश्रम किया है, वह प्रसन्न है और शराब की एक बूँद तक उसने न छुई है। कैसा अद्भुत व्यक्ति है! मेरे लिये आदर्श! उसे तो पदक मिलना चाहिये! (यह शब्दावली उसने बड़े सैनिक सर्जन से सीख ली थी)।

गिरजाघर की घण्टियाँ बजी तो जुलिये के मन में विचार आया कि वह भी पुरोहित के वस्त्र पहन कर बिशप के पीछे राजसी जुलूस में चले। “पर चोर, बेटे चोर!” फादर झा ने कहा। “उनकी बात तो तुमने सोची ही नहीं। जुलूस गिरजाघर से जायेगा; पर तुम और मैं वहाँ रखवाली करेंगे। खम्भों के चारों ओर लिपटी हुई सुन्दर झालर

एकदम सच्चे सोने की है बेटे”, फादर शा ने उसके कान में बहुत ही उत्तेजित स्वर में कहा, “और तनिक भी मिलावट नहीं। तुम्हें मैं उत्तरी हिस्से में निगरानी के लिए रखूंगा और देखो, छोड़कर कहीं मत जाना। मैं दक्षिण की तरफ रहूंगा। पाप-स्वीकार करने वालों पर खास तौर से नजर रखना, वही पर चोरो की भेदिया औरतें नज़र बचने की ताक में रहती हैं।”

उनकी बात खत्म होने के साथ-साथ घड़ी ने पौने बारह की घण्टी बजाई। उसी समय गिरजाघर का बड़ा घण्टा भी बज उठा। वह देर तक बजता रहा और उसकी गहरी गूँजती हुई गम्भीर आवाज़ ने जुलियों की कल्पनाशक्ति को जाग्रत करके उसे घरती से ऊपर उठा दिया। से जोन की पोशाक पहने हुए छोटे-छोटे बच्चों द्वारा वेदी के आगे बिखेरी हुई गुलाब की पछुडियो तथा धूप-बत्ती की गन्ध ने उसके भावातिरेक को और भी तीव्र कर दिया।

इस घण्टे की गहन गम्भीर आवाज़ से जुलियों के मन में पचास सेतीम की मजदूरी पर काम करने वालों और शायद पद्म या बीस धर्म-प्राण पूजा करने वालों के अतिरिक्त अन्य कोई विचार नहीं पैदा होना चाहिए था। उसे घण्टे के रस्से और लकड़ी के ढाँचे की टूट-फूट का और उससे उत्पन्न होने वाले खतरों का, जो हर दो सौ वर्ष में एक बार अवश्य नीचे ढह पड़ता है, ध्यान आना चाहिये था। उसे इस बात पर विचार करना चाहिए था कि किस प्रकार इन घण्टा बजाने वालों की मजदूरी कम करके चर्च के समृद्ध साधनों से कोई कृपा या सुविधा उन्हें अधिक दी जाय।

ऐसे सब बुद्धिमानी के विचारों के बजाय जुलियों की आत्मा घण्टे के समृद्ध मद स्वर पर ऊपर उठकर कल्पना के अनगिनती लोको में विचरने लगी थी। वह कभी न तो अच्छा पुरोहित बन सकेगा और न अच्छा

प्रशासक । इस प्रकार भावावेश में डूबने वाले लोग अधिक से अधिक केवल कलाकार ही बन सकते हैं ।

इस जगह जुलिये का अहंकार साफ-साफ प्रगट हो जाता है । उसके कोई पचास सहपाठी पुरोहितों के प्रति सार्वजनिक धृष्टता और प्रत्येक भाडी के पीछे घात लगाये बैठे जेकोबिनवाद की जानकारी के फलस्वरूप जीवन यथार्थता में परिचित होने के कारण गिरजाघर के विशाल घण्टे की आवाज सुनकर घन्टा बजाने वालों की मजदूरी के अतिरिक्त और कोई बात न सोचते । वे एक गरिष्ठतज्ञ की-सी सूक्ष्मता से इस प्रदन पर विचार करते कि घण्टे बजाने वालों को जितना पैसा दिया जाता है, उसे देखते हुए जनता के मन में उत्पन्न होने वाला भावावेश समुचित है अथवा नहीं । यदि जुलिये गिरजाघर के सासारिक हितों का ध्यान करता तो उसकी कल्पना भी इसी ओर जाती कि किस प्रकार भवन की व्यवस्था में चालीस फ्रैंक की बचत की जाय और पच्चीस सेन्तीम बचाने के अवसर को किस प्रकार हाथ से निकल जाने दिया जाये ।

इस बीच जुलिये उस चमचमाती हुई धूप में बजासों की सड़को पर चला जा रहा था । बीच-बीच में वह नगर के प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा एक-दूसरे की होड में बनाई गई चमकदार वेदियों के सामने ठहरता । इधर गिरजाघर में गहन निस्तब्धता छाई हुई थी । उसके भीतर हल्के-से अँधेरे और सुखद शीतलता का साम्राज्य था ; हवा अभी भी फूलों और धूपबत्ती की गन्ध से महक रही थी ।

गिरजाघर के लम्बे गलियारों की शीतलता, मौन और नितान्त निर्जनता ने जुलिये के विचारों को और भी मधुर बना दिया । उसे फादर शा द्वारा व्याघात होने का भी डर न था, क्योंकि वह गिरजाघर के दूसरे भाग में व्यस्त थे । उसकी आत्मा को घेरे रहने वाला सासारिक खोल हट गया था और वह उत्तरी गलियारों में धीरे-धीरे इधर-उधर टहल कर निगरानी कर रहा था । इस बात से उसे और भी अधिक शांति थी कि पाप-स्वीकारकर्ताओं में कुछेक धार्मिक स्त्रियों के अतिरिक्त

और कोई न था । उसकी आँखें अध-भाव से चारों ओर ताक रही थी ।

तभी दो सुसज्जित वस्त्रों वाली महिलाओं को देखकर उसकी तन्त्रा टूटी । उनमें से एक पाप-स्वीकार की मुद्रा में झुकी हुई थी और दूसरी उसके पास ही पूजा की चौकी पर । वह उनकी ओर बिना कुछ देखे ताकने लगा । किन्तु साथ ही, चाहे अपने कर्तव्य की स्पष्ट चेतना के कारण हो अथवा इन महिलाओं के सरल सुसंस्कृत शैली के वस्त्रों से प्रभावित होने के कारण हो, उसका ध्यान इस बात पर भी गया कि पाप-स्वीकार कक्ष में कोई पुरोहित नहीं है । वह सोचने लगा कि यह सम्भ्रान्त महिलाएँ यदि भक्त हैं तो किसी वेदी के सामने क्यों नहीं बैठी हैं, या उच्च वर्ग की होने पर भी किसी एक बालकनी में सामने की सीटों पर क्यों नहीं जा बैठी । वह पोशाक कितनी सुन्दर कटी हुई है । लटकती हुई वह कितनी सुन्दर लग रही है । उन्हें देखने के प्रयत्न में उसने अपनी चाल धीमी कर दी ।

इस गम्भीर मौन को जुलिये के पैरों की चाप ने भग कर दिया । उसे सुनकर पाप-स्वीकार की मुद्रा में झुकी हुई स्त्री ने अपना सिर थोड़ा-सा घुमाया । अचानक उसके मुख से एक जोर की चीख निकली और वह मूर्छित हो गई । मूर्छित होने के साथ ही वह महिला पीछे की ओर गिरी, उसकी सखी जो पास ही थी, झपटकर उसकी सहायता के लिए आई । उसी क्षण जुलिये की पीछे की ओर गिरने वाली महिला के कन्धों पर दृष्टि गई । उन पर बड़े-बड़े सच्चे मोतियों की एक माला पड़ी थी जिससे वह बहुत परिचित था । जिस समय उसने मादाम द रेनाल के बालों को पहचाना तो उसके मन की अवस्था क्या हुई ! वही तो हैं ! उनके सिर को सहारा देकर गिरने से बचाने वाली महिला मा० देर्विल थी । कुछ खोया-सा जुलिये आगे को झपटा, यदि वह सहारा न देता तो मादाम द रेनाल अपने साथ अपनी सखी को भी गिरा लेती । उनका माथा और एकदम भावहीन पीला चेहरा उसके कन्धे से आ टिका । उसने मादाम देर्विल की सहायता से उस सुन्दर मस्तक को बेत की

गद्दीवाली कुर्सी पर टिका दिया और स्वयं घुटनो के बल बैठ गया ।

अब मादाम देर्विल ने मुड़कर उसे देखा और पहचान लिया ।
“चले जाइये, महाशय, चले जाइये ।” उन्होंने उससे तीव्रतम क्रोध के स्वर में कहा । “यह बहुत ही आवश्यक है कि वह आपको फिर न देखने पाये । आपको देखते ही उनका इतना भयभीत हो उठना अनिवार्य है—आपके आने के पहले वह कितनी सुखी थी । आपका आचरण निकृष्ट है । तुरन्त चले जाइये । यदि आप में थोड़ी-सी भी भलमनसी है तो यहाँ से हट जाइये ।”

ये शब्द ऐसे अधिकार के भाव से कहे गये थे और इस क्षण जुलियें इतना दुर्बल अनुभव कर रहा था कि वह वहाँ से हटकर चला आया । मादाम देर्विल के बारे में वह सोचने लगा कि यह तो सदा ही मुझमें घृणा करती रही है ।

उसी क्षण जुलूस के सबसे आगे वाले पुरोहितों की प्रार्थना का आनुनासिक स्वर गिरजाघर में गूँज उठा । वे लोग लौट आये थे । फादर शा-बर्नार ने जुलिये को कई बार पुकारा, पर उसे सुनाई न पड़ा ।

अन्त में पुरोहित स्वयं खम्भे के पीछे आये जहाँ जुलियें अर्घ-मूर्छित-सी अवस्था में खड़ा था ।

“तुम कुछ बीमार लग रहे हो, बेटे”, फादर शा ने उसे इतना पीला और चलने में लगभग असमर्थ देखकर कहा । “तुमने आज बड़ी मेहनत की है ।” पुरोहित ने उसे अपनी बाँहों का सहारा दिया । “आओ, इस छोटी-सी चौकी पर बैठ जाओ जो पवित्र जल देने वाले के लिए रक्खी गयी है । तुम मेरे पीछे छिपे रहना ।” वे लोग बड़े पश्चिमी द्वार के पास खड़े थे । “शांत हो जाओ, बिशप महोदय के आने में अभी पूरे पंद्रह मिनट बाकी है । थोड़ा हिम्मत से काम लो, जब वह इधर से निकलेगे तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, क्योंकि अपनी उम्र के बावजूद मुझ में जोश और ताकत दोनों हैं ।”

पर जब बिशप उधर से निकले तो जुलियें इतना काँप रहा था कि

फादर शा ने उनसे उसका परिचय कराने का विचार छोड़ दिया ।

अधिक दुःखी होने की बात नहीं है,” उन्होंने कहा । “फिर कोई अवसर निकालेगे ।”

उस दिन उन्होंने कोई दस पौंड मोमबत्तियाँ शिक्षा-मठ के गिरजाघर को भेजी । उनका कहना था कि जुलिये ने मोमबत्तियों को बुझाने में जो सावधानी और तत्परता दिखाई उसके कारण ही यह बचत हुई है । इससे अधिक असत्य बात दूसरी न हो सकती थी । बेचारा लड़का स्वयं ही एकदम बुझा हुआ था । मादाम द रेनाल को देखने के बाद से उसके मन में एक भी विचार तक न आया था ।

आगे की ओर पहला कदम

गिरजाघर की इस घटना ने जुलिये को जिस विचार-मगता की गहराइयों में डुबा दिया था, उनसे वह अभी पूरी तरह निकल भी न पाया था कि एक दिन सबेरे कठोर फादर पिरार ने उसे बुला भेजा।

“फादर दश-बर्नार्ड ने मुझे एक पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने तुम्हारी बहुत बड़ाई की है। मैं तुम्हारे साधारण आचरण से काफी सन्तुष्ट हूँ। पर तो भी तुम बहुत ही लापरवाह और जल्दबाज़ हो। अब तक यह भी प्रगट है कि तुम्हारे हृदय में करुणा और साहस भी है। जहाँ तक बुद्धि का प्रश्न है, वह तुम्हारे पास औसत से ज्यादा है। कुल मिलाकर मुझे तुम्हारे भीतर ऐसी चिंगारी दिखाई पड़ती है जिसे बुझने नहीं देना चाहिये।

“पंद्रह वर्ष के परिश्रम के बाद मुझे अब यह स्थान छोड़ना पड़ेगा। मेरा यह अपराध है कि मैंने इस शिक्षा-मठ के निवासियों को धार्मिक विश्वास की स्वतन्त्रता दे रखी है और अपने पाप-स्वीकार में जिस गुप्त सस्था का तुमने उल्लेख किया था उसका न तो मैंने समर्थन किया न उसके कार्य में बाधा डाली है। जाने के पहले मैं तुम्हारे लिये कुछ कर जाना चाहता हूँ। यदि तुम्हारे पास वह अमादा बिल का पत्र न मिला होता तो मैं दो महीने पहले ही कुछ करता, क्योंकि तुम योग्य हो। मैं तुम्हें पुराने और नये टैस्टामेंट का सहायक शिक्षक बना रहा हूँ।”

कृतज्ञता के भाव से प्रेरित होकर जुलिये के मन में सचमुच यह

विचार आया कि घुटनों के बल बैठकर भगवान् को धन्यवाद दे, पर उसने एक अधिक सच्ची प्रेरणा के अनुसार कार्य किया। उसने आगे बढ़कर फादर पिरार का हाथ थाम लिया और उसे अपने होठों से लगा लिया।

“तुम क्या सोच रहे हो ?” अध्यक्ष ने क्रुद्ध भाव से कहा। किन्तु जुलिये की आँखें उसके कार्य से भी अधिक मुखर थीं।

फादर पिरार विस्मित भाव से उसकी ओर देखने लगे। उनकी अवस्था उस व्यक्ति की सी थी जो वर्षों से उच्च भावनाओं को देखने का अभ्यस्त हो चुका हो। इस स्नेह-प्रदर्शन ने उन्हें विचलित कर दिया, उनका गला रुँध गया।

“हाँ बेटे, सचमुच मुझे तुमसे स्नेह हो गया है। भगवान् जानता है कि यह मेरी इच्छा के विरुद्ध ही है। मुझे तो न्यायी होना चाहिये और मेरे मन में किसी के प्रति घृणा अथवा स्नेह का भाव न आना चाहिये। तुम्हारा जीवन बहुत कष्ट में बीतेगा। मुझे तुम्हारे भीतर ऐसी चीज दिखाई पड़ती है जो साधारण लोगों को रुष्ट करती है। ईर्ष्या और निन्दा तुम्हारे पीछे पड़ी रहेगी। भाग्य तुम्हें जहाँ भी ले जाये, तुम्हारे सहयोगी तुमसे घृणा किये बिना न रहेंगे। यदि वे प्रेम का बहाना भी करे तो यह केवल और भी सफलता से धोखा देने के लिए ही होगा। इसका केवल एक ही उपाय है—केवल परमात्मा से सहायता की याचना करो, जिसने तुम्हें अहंकार के दण्ड-स्वरूप ही घृणा किये जाने का भाग्य दिया है। अपने आचरण को निर्दोष बनाना... तुम्हारे लिये मैं केवल यही उपचार देख सकता हूँ। यदि सत्य में तुम्हारी निष्ठा अटूट बनी रही तो कभी न कभी तुम्हारे शत्रु अवश्य पराजित होंगे।”

जुलिये ने बहुत दिनों से ऐसा स्नेहपूर्ण कठ-स्वर न सुना था, इसलिये 'उसकी कमजोरी को क्षमा कर देना चाहिये—उसके आँसू बह निकले। अध्यक्ष ने अपनी बाँहें उसकी ओर फैला दी। यह क्षण दोनों के लिये ही बहुत मधुर था।

जुलिये के हर्ष का ठिकाना न था। यह उसकी पहली पदवृद्धि थी; उसके लाभ बहुत थे। इन लाभों को वही समझ सकता है जिमने महीनो पल भर एकान्त के बिना अधिक से अधिक अप्रिय और अधिकांशतः असहनीय लोगों के घनिष्ठ सम्पर्क में बिताये हो। उनकी चीख-पुकार किसी भी कोमल वृत्ति वाले व्यक्ति को विक्षिप्त करने के लिये पर्याप्त थी। ये अच्छे-भले खाते-पीते किसान यह समझ ही न पाते थे कि अपने उमड़ते हुए हर्ष को कैसे अपने भीतर रक्खें। जब तक वे अपने फेफड़ों की शक्ति भर न चीख लेते तब तक उन्हें यह हर्ष अधूरा ही लगता था।

जुलिये अब अन्य लोगों से एक घण्टे बाद अकेला अथवा लगभग अकेला ही भोजन करता था। उसे बाग की एक चाबी भी मिल गई थी और वहां एकांत में टहलना सम्भव हो गया था।

यह देखकर उसे बड़ा अचरज हुआ कि अब उससे कम घृणा की जाती है। उसने तो सोचा था कि उनकी घृणा अब और भी बढ़ जायेगी। उसकी यह भीतरी इच्छा कि उससे कोई एक शब्द भी न बोले, इतनी स्पष्ट थी कि इसी कारण बहुत लोग उसके शत्रु हो गये थे। पर अब यह किसी निरर्थक घमण्ड का चिह्न न मानी जाती थी। उसके उजड़्ड सहपाठी अब इसे उसकी प्रतिष्ठा के अनुकूल ही मानते थे। विशेषकर उसके अल्पवयस्क साधियों में तो, जो अब उसके छात्र हो गये थे और जिनके साथ वह बहुत ही शिष्टता का व्यवहार करता था, यह घृणा विशेष रूप से कम हो गई थी। धीरे-धीरे कुछ लोग तो उसका पक्ष भी लेने लगे, उसे मार्टिन लूथर कहना बुरा समझा जाने लगा।

किन्तु उसके मित्रों अथवा शत्रुओं का नाम लेने से क्या लाभ? ऐसी बातें कुत्सित हैं, बल्कि सच होने के कारण अधिक कुत्सित हैं। किन्तु जनता के आचरण के शिक्षक यही लोग हैं तथा उनके बिना उसकी क्या अवस्था होगी? क्या अखबार कभी भी पुरोहित का स्थान ले सकते हैं?

जुलिये की इस पदवृद्धि के बाद से शिक्षा-मठ के अध्यक्ष अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति के बिना कभी कोई शब्द उससे न कहते। यह आचरण गुरु और छात्र दोनों के ही हित में समझदारी का काम था, किन्तु साथ ही यह शक्ति की परीक्षा भी थी। पिरार एक कठोर जानसेन-पथी थे और उनका यह एक निश्चित सिद्धान्त था कि यदि कोई व्यक्ति आपको योग्य जान पड़े तो उसकी इच्छाओं के तथा उसके समस्त कार्यों के रास्ते में बाधाएँ प्रस्तुत करनी चाहिये। यदि उसकी योग्यता वास्तविक है तो वह इन बाधाओं से बच निकलने का मार्ग आसानी से ढूँढ़ निकालेगा।

यह शिकार का मौसम था। फूके ने शिक्षा-मठ में एक सुअर और एक बारहसिंघा ऐसे भेजा मानो वह उसका कोई रिश्तेदार हो। ये मरे हुए पशु रसोईघर के रास्ते में रख दिये गये, जहाँ भोज के लिये जाने वाले सब छात्र उन्हें देखते थे। इस उपहार को लेकर लोगों के मन में बड़ा कौतूहल हुआ। मरा हुआ होने पर भी सुअर से छोटे छात्रों को भय लगता था। वे हाथ बढ़ाकर उसके दाँत छूकर देखते। सप्ताह भर तक किसी ने दूसरे विषय पर बात न की।

इस उपहार ने जुलिये को समाज के सम्माननीय अंश का सदस्य बनाकर ईर्ष्या पर घातक प्रहार किया। अब जुलिये के चारों ओर धन का आलोक था और वह श्रेष्ठतर व्यक्ति बन गया था। शाजेल तथा अन्य महत्वपूर्ण विद्यार्थी उसके प्रति मैत्री-भाव दर्शाने लगे। बल्कि उनका बहुत कुछ शिकायत का-सा भाव था कि अपने धनी परिवार के होने की बात जुलिये ने उन्हें पहले से क्यों न बतायी और इस भाँति उनसे धन के असम्मान का अपराध करवा दिया।

उन्हीं दिनों फौजी भर्ती शुरू हुई जिससे शिक्षा-मठ के विद्यार्थी के नाते जुलिये मुक्त था। इस परिस्थिति से वह बहुत अधिक विवर्लित हुआ। वह सोचने लगा कि यह क्षण हमेशा के लिए हाथ से निकला जा रहा है। बीस वर्ष पहले मेरे लिये एक वीर का जीवन इस क्षण से

शुरू होता ।

एक दिन वह शिक्षा-मठ के बाग में अकेला टहल रहा था कि उसने कुछ राज-मिस्त्रियों को बातें करने सुना ।

“अब तो मुझे जाना ही पड़ेगा ।” एक ने कहा । “नर्स भर्ती का हुक्म हुआ है ।”

“‘उसके’ राज में मजदूर भी अफसर क्या बल्कि जनरल तक हो सकते थे ... ऐमा हुआ भी था ।”

“अब जरा जाकर देखो । अब तो भिखमंगो को छोड़कर कोई भर्ती नहीं होता । जिसके पास जरा भी पैसा है वह मजे में घर बैठा है ।”

“गरीब-गरीब ही रहता है, समझे ।”

“अच्छा, क्या यह सच है कि वह मर गया ?” तीसरे मिस्त्री ने कहा ।

“बड़े लोग ही यह कहते हैं । वे सब ‘उससे’ डरने लगे ।”

“उन दिनों की बात ही और थी । उसके जमाने में काम की कँसी तरक्की हुई । जरा सोचो कि उसके अपने मार्शल ने ही उसके साथ बुराई की । यह दगा नहीं तो और क्या है ।”

इस वार्तालाप से जुलिये को थोड़ा-सा सतोष मिला । उसने आगे चलते-चलते मन ही मन दोहराया

“वही एक राजा साधारण जनता को याद है ।”

परीक्षा का समय आ पहुँचा । जुलिये ने अत्यधिक निपुणता के साथ उत्तर दिये । उसने देखा कि शाज़ेल भी अपनी सारी विद्वत्ता प्रगट करने का प्रयत्न कर रहा है ।

पहले दिन सुप्रसिद्ध प्रधान विकार म० द फिलेर द्वारा नियुक्त परीक्षक इस बात से बड़े चिन्तित हुए कि उन्हें फादरपिरार के प्रिय शिष्य जुलिये सोरेल को हर विषय में प्रथम अथवा द्वितीय स्थान देना पड़ा । शिक्षा-मठ में इस बात पर शर्तें बड़ी जाने लगी कि सारी परीक्षा में जुलिये को पहला स्थान मिलेगा, जिसके फलस्वरूप उसे बिशप महोदय के साथ भोजन

करने का सौभाग्य भी प्राप्त होगा ।

किन्तु धर्म-गुरुओं से सम्बन्धित परीक्षा के दिन एक कठोर परीक्षक ने जुलिये से से जेरोम और सिसरो के विषय में प्रश्न पूछने के बाद होरेस वर्जिल तथा अन्य धर्मद्वेषी लेखकों की चर्चा छोड़ दी । अपने सहपाठियों के अनजाने में ही जुलिये ने इन लेखकों की बहुत सी रचनाएँ कठस्थ कर रखी थी । अपनी सफलता से फूलकर वह यह भूल गया कि वह कहाँ बैठा है और शिक्षक के बारबार अनुरोध करने पर उसने होरेस की बहुत सी कविताएँ सुना दी और उनका सुन्दर अर्थ भी बताया । बीस मिनट तक उसे इस भोंति बुलवाने के बाद परीक्षक ने अचानक अपना स्वर बदला और ऐसी धर्म-द्वेषी बातों पर इतना समय नष्ट करने और ऐसे निरर्थक तथा घातक विचार प्राप्त करने के लिये उसे बुरी तरह डाँटा ।

“आप ठीक कहते हैं, महोदय, मैंने बहुत ही मूर्खतापूर्ण कार्य किया है” जुलिये ने विनम्रतापूर्वक स्वीकार किया । वह समझ गया कि मैं चाल में फँस गया हूँ ।

परीक्षक की इस तिकड़म को शिक्षा-मठ में सभी ने अनुचित कहा । किन्तु फादर फिलेर को जुलिये को एक सौ अट्ठानवेवाँ स्थान देने में कोई सकोच नहीं हुआ । उस धूर्त व्यक्ति ने बड़ी चतुराई से बजासो के धर्म-सच का जाल तैयार किया था और उसकी सरकारी रिपोर्टों से न्यायाधीश, जिला-अधिकारी, बल्कि सेना के सारे अफसर तक काँपते थे, उसे इस प्रकार अपने जानसेनपथी शत्रु पिरार को वलेश पहुँचाकर बड़ी प्रसन्नता हुई ।

पिछले दस वर्षों से वह उनसे शिक्षा-मठ छीनने का निरन्तर प्रयत्न करता आया था । फादर पिरार स्वयं ही उन्हीं सिद्धान्तों का अनुसरण करते थे जो उन्होंने जुलिये को बताये थे । वे ईमानदार थे, धार्मिक थे, षड्यन्त्र से अनभिज्ञ थे और कर्तव्य-परायण थे । किन्तु भगवान् ने अपने क्रोध में उन्हें धृष्टता से रुष्ट होने वाला और तीव्रतापूर्वक घृणा करने वाला स्वभाव दिया था । ऐसा तेजस्वी स्वभाव उन भयंकर अपमानों

पर शात न रह सकता था। यदि उन्हें यह विश्वास न होता कि विधाता ने उन्हें जिस स्थान पर भेजा है वहाँ वे उपयोगी हो सकने हैं, तो वह अभी तक सौ बार अपना त्यागपत्र दे चुके होते। व मन ही मन कहा करने थे कि यहाँ रहकर मैं जेस्वीटवाद और मूर्तिपूजा की वृद्धि को रोक रहा हूँ।

परीक्षा के दिनों में उन्होंने कोई दो महीने में जुलिये में बान तक न की थी। किन्तु जब परीक्षा फल के सरकारी घोषणा-पत्र में उन्होंने अपने ऐसे छात्र के नाम के आगे एक सौ अट्ठानवे की संख्या लिखी देखी जिसे वे अपनी सस्था का गौरव मानते थे, तो वे एक सप्ताह तक बीमार पड़े रहे। इस कठोर व्यक्ति को सतोष केवल इसी बात का था कि उन्होंने अपनी देख-भाल की सारी शक्ति जुलिये के ऊपर केन्द्रित कर दी। उन्हें इससे भी बड़ी प्रसन्नता हुई कि जुलिये के मन में न तो क्रोध था, न बदला लेने की योजना और न निराशा।

कुछ सप्ताह बाद जुलिये को अचानक एक पत्र मिला। उस पर पेरिस की मोहर थी, जिसे देखकर वह चौंक पड़ा। वह सोचने लगा कि आखिरकार मादाम द रेनाल को अपने वचनों की याद आई। किसी व्यक्ति ने, पॉल सोरेल के हस्ताक्षर से और आने आपको उसका रिश्तेदार बताने हुए, उसके नाम पाँच सौ फ्रैंक की हुण्डो भेजी थी। पत्र में आगे यह भी लिखा था कि यदि जुलिये सर्वश्रेष्ठ लैटिन लेखकों का अध्ययन करता रहा और अपने अध्ययन में सफलतापूर्वक उन्नति करता रहा, तो यह रकम उसे हर वर्ष भेजी जाया करेगी।

अवश्य उन्हींने भेजा है, इस तरह की कृपा वही कर सकती हैं। इस बात से बहुत ही विचलित होकर जुलिये ने सोचा। वह मुझे सांत्वना देना चाहती हैं—पर एक स्नेह का शब्द क्यों नहीं लिख भेजतीं ?

पर वह भ्रम में था। मादाम द रेनाल, मादाम देविल का कहना मानकर पूरी तरह अपने गहरे पश्चात्ताप में डूबी हुई थीं। अपने सारे सकल्यों के बावजूद वह प्रायः उस असाधारण व्यक्ति के बारे में सोचा

करती थी जिसने उनके जीवन में ऐसी उलट-पुलट कर दी थी। पर उसे लिखने की बात वह कभी न सोच सकती थी।

यदि हम शिक्षा-मठ की भाषा का प्रयोग करें तो हम इन पाँच सौ फ्रैंक की प्राप्ति को एक चमत्कार मान सकते हैं और कह सकते हैं कि वे स्वयं म० द फ़िलेर के पास से आये थे जिनके माध्यम से भगवान् यह कृपा जुलिये के ऊपर कर रहे थे।

ऐसी किवदन्ती है कि म० द फ़िलेर बारह वर्ष पहले एक बहुत छोटे-से थैले में अपनी समूची संपत्ति बन्द किये बजासो आये थे। इस समय उनकी गिनती ज़िले के सबसे धनी ज़मींदारों में होती थी। अपने इस उत्तरोत्तर समृद्धि के जीवन में उन्होंने एक ऐसी जायदाद का भी आधा हिस्सा खरीदा था जिसका दूसरा आधा म० द ला मोल को किसी वसीयत से मिला था। इस सिलसिले में इन दोनों प्रभावशाली व्यक्तियों के बीच बड़ी भारी मुकदमेबाजी हुई। पेरिस में अपनी सारी प्रतिष्ठा और राजदरबार में महत्वपूर्ण स्थान के बावजूद मार्कि द ला मोल ने यह अनुभव किया कि ज़िलाधीशों तक को बनाने-बिगाड़ने वाले प्रधान विकार के साथ झगडा करना विपत्तिजनक है, पर फिर उन्हें भी कुछ जिद हो गयी। उन्होंने यह भी सोचा कि न्याय तो मेरी ही ओर है—क्या कहने हैं न्याय के ! सच पूछा जाय तो ऐसा कौन-सा न्यायाधीश है जिसे अपने किसी बेटे या भतीजे को समाज में आगे नहीं बढ़ाना है ?

आप लोगों में से अन्धे से अन्धे व्यक्ति की आँखें खोलने के लिये मैं यह बता देना चाहता हूँ कि अपने अनुकूल निर्णय प्राप्त करने के एक सप्ताह के भीतर ही फादर फ़िलेर बिशप की गाड़ी में बैठकर स्वयं अपने वकील के लिये सम्मानित सेना का पदक लेकर पहुँचे थे। म० द ला मोल अपने विपक्ष के इस रवैये से कुछ चौंके और अपने वकील को मात खाते देखकर उन्होंने म० शेला से परामर्श किया। म० पिरार का नाम उन्होंने ही मार्कि को बताया था।

हमारी कथा के प्रारम्भ के समय म० पिरार के साथ मार्कि के

सम्बन्ध कई वर्ष पुराने हो चुके थे। फादर पिरार ने अपनी समूची स्वभावगत तीव्रता इस मामले पर लगा दी। वकीलो से मिलकर, मुकदमे का अध्ययन करके और मार्कि के पक्ष को न्यायपूर्ण पाकर वह उनके वकील की भाँति ही सर्वशक्तिमान विकार के विरुद्ध खुल्लमखुल्ला मैदान में उतर आये। प्रधान विकार इस अदना जानसेनपथी की घृष्टता से बड़े क्रुद्ध हुए।

“जरा इन दरबारी सामंतों को तो देखो जो इतने शक्तिशाली होने का दावा करते हैं !” म० द फिलेर अपने घनिष्ठ मित्रों से कहते। “म० द ला मोल ने अपने बजासों के प्रतिनिधि को कोई छोटा-सा सम्मान-पदक भी नहीं भेजा और अब उसकी नौकरी छिन गई तो भी पत्ता भी नहीं हिला। लोगों के पत्रों से मुझे पता चला है कि यह जमींदार महोदय हर सप्ताह शाही मोहर के सरक्षक के डाइंग रूम में, वह चाहे कोई भी हो, अपना नीला फीता लगाये हाजरी देते हैं !” फादर पिरार के सारे परिश्रम के बावजूद, और न्यायमन्त्री तथा उनके अफसरों के साथ बहुत अच्छे सम्बन्ध होने पर भी, छ साल की दौड़-धूप के बाद म० द ला मोल केवल इतना कर पाये कि मुकदमा पूरी तरह से हारने से बाल-बाल बचे।

पर इस मामले को दोनों ने बड़ा जी लगाकर चलाया था। उस सिलसिले में फादर पिरार के साथ निरन्तर होने वाले पत्र-व्यवहार के कारण अन्त में मार्कि को पुरोहित की विशेष प्रकार की बुद्धि अच्छी लगने लगी। दोनों को सामाजिक स्थिति में पर्याप्त अन्तर होने पर भी धीरे-धीरे उनके पत्रों का स्वर अधिकाधिक मित्रतापूर्ण होता गया। पुरोहित मार्कि को लिखते कि किस प्रकार निरन्तर तरह-तरह के अपमान द्वारा उन्हें अपना त्याग-पत्र देने के लिये बाध्य किया जा रहा है। जुलिये के विरुद्ध जो गन्दी चाल चली गई उससे क्रुद्ध होकर उन्होंने मार्कि को उसकी कहानी भी लिखी।

बहुत धनी होने पर भी मार्कि द ला मोल तनिक भी कंजूस न थे। इतने दिनों की जान-पहचान होने पर भी वह फादर पिरार को इस

मुकदमे के सम्बन्ध में होने वाले डाक-खर्च के पैसे तक स्वीकार करने के लिये भी कभी राजी न कर सके थे। इसलिये पुरोहित के प्रिय शिष्य को पाँच सौ फ्रैंक भेजने का विचार मन में आते ही वह उछल पड़े।

इस धन के साथ जो पत्र भेजा गया था उसे म० द ला मोल ने स्वयं अपने हाथ से लिखने का कष्ट किया था। इससे पुरोहित के बारे में वह और भी सोचने लगे थे।

एक दिन पुरोहित को एक छोटा-सा पत्र मिला, जिसमें एक बहुत जरूरी काम से तुरन्त बजासो के बाहर एक सराय में पहुँचने का आमन्त्रण था। वहाँ उनकी म० द ला मोल के एक प्रबन्धक से भेंट हुई।

“मार्कि महोदय के आदेश से मैं उनकी गाड़ी आपके लिये लाया हूँ,” उस व्यक्ति ने कहा। “उन्हे आशा है कि इस पत्र को पढ़ने के बाद आप चार-पाँच दिन के भीतर ही पेरिस के लिये चल सकेंगे। समय हो तो मैं इस बीच जाकर फ्रांस-कोटे में मालिक की जमींदारी का निरीक्षण कर आऊँगा। उसके बाद जब आप कहेंगे हम लोग पेरिस के लिये चल पड़ेंगे।”

पत्र बहुत ही संक्षिप्त था। उसमें लिखा था

“प्रिय महोदय, इन सब प्रान्तीय चिन्ताओं को फाड़-फटकार कर दूर कीजिये और यहाँ पेरिस में आकर शांति की साँस लीजिये। मैं अपनी गाड़ी आपके पास भेज रहा हूँ जिसे चार दिन तक आपके निर्णय की प्रतीक्षा का आदेश है। मैं स्वयं मंगलवार तक पेरिस में आपका इन्तज़ार करूँगा। आप अपने मुँह से हाँ भर कह दीजिये और मैं पेरिस के पास-पड़ोस में ही उत्तम से उत्तम स्थान आपके लिये ठीक कर दूँगा। आपके भावी इलाके के सबसे धनी निवासी ने आपको कभी देखा नहीं है, पर वह आपका इतना भक्त है कि आपको यकीन न होगा। वह व्यक्ति है मार्कि द ला मोल।”

फादर पिरार शत्रुओं से भरे हुए इस शिक्षा-मठ को, जिसमें उन्होंने पिछले पंद्रह वर्षों में अपना सर्वस्व लगा दिया था, कितना प्रेम करते थे,

इसका उन्हें भी अनुमान न था। म० द ला मोल का पत्र उनके लिये एक अत्यन्त ही कष्टदायक किन्तु आवश्यक आपरेशन के लिये किसी सर्जन के आकस्मिक आगमन के समान था। यहाँ से उनका निकाला जाना तो निश्चित ही था। उन्होंने मार्कि के प्रबन्धक से तीन दिन के भीतर मिलने की व्यवस्था कर ली।

अगले अड़तालीस घण्टों में वह बड़े ही अनिश्चय में डूबे रहे। अन्त में उन्होंने एक पत्र म० द ला मोल के लिए लिखा और फिर एक बिशप के लिये। यह पत्र कुछ लम्बा तो जरूर था पर वह धार्मिक शैली का एक उत्कृष्ट नमूना था। उसमें प्रयुक्त शब्दावली से अधिक निर्दोष अथवा अधिक वास्तविक आदरपूर्ण शब्दावली ढूँढना कठिन होता तो भी इस पत्र में, जिससे म० द फ़िलेर को अपने सरक्षक के आगे घण्टे दो घण्टे के लिये बड़ी परेशानी होने की संभावना थी, वे सब शिकायतें और छोटी-छोटी अपमानजनक घटनाएँ प्रस्तुत कर दी गयी थी। जिन्हें छः वर्ष तक सहन करने के बाद अब उनके कारण फादर पिरार यह स्थान छोड़ने को बाध्य हो रहे थे। यहाँ तक कि उनको लकड़ी चुराई जाने, उनके कुत्ते को जहर दे देने जैसी छोटी-छोटी बातें भी गिना दी गई थी।

पत्र समाप्त करने के बाद उन्होंने जुलिये को जगाने के लिये भेजा जो शाम को आठ बजे से ही अन्य सब छात्रों की भाँति सो चुका था।

“जानते हो बिशप का महल कहाँ है ?” उन्होंने उससे सर्वोत्तम प्राचीन लैटिन में पूछा। “यह पत्र बिशप महोदय के पास ले जाओ। यह छिपाना बेकार है कि मैं तुम्हें भेडियो के बीच भेज रहा हूँ। अपनी आँखों और कानों को खुला रखना; पर खबरदार, अपने उत्तरों में कोई झूठ बात न कहना। साथ ही यह भी याद रहे कि तुम से प्रश्न करने वाले सम्भवतः तुम्हें नुकसान पहुँचा कर प्रसन्न हों। मुझे बहुत खुशी है बेटे, कि मेरे जाने से पहले यह अनुभव तुम्हारे लिये सुलभ हो रहा है, क्योंकि अब यह तो न छिपाऊँगा कि तुम्हारे हाथ मैं अपना त्याग-पत्र

भेज रहा हूँ ।”

जुलिये निश्चल खड़ा रह गया । फादर पिरार से उसे बहुत प्रेम था । समझदारी की आवाज ने बेकार ही उसे चेतावनी दी कि इस व्यक्ति के जाते ही यहाँ का जेस्विट-पथी-गुट तुम्हारी नौकरी छीन लेगा और शायद तुम्हें निकाल बाहर भी करे ।

पर अपने बारे में वह सोच ही न रहा था । उसकी उलझन इस कारण थी कि वह अपने मन की बात बहुत शिष्टता के साथ कहने के लिये शब्द खोज रहा था और उसका दिमाग काम न करता था ।

“तो फिर तुम क्या जा नहीं रहे हो ?”

“जी, मैंने लोगों के मुँह से सुना है कि अपने इतने दिनों के कार्य में आपने कुछ बचाया नहीं । मेरे पास सौ फ्रैंक हैं” जुलिये ने कुछ सकुचित भाव से कहा, पर उसके आँसुओं ने उसे आगे कुछ न कहने दिया ।

“इसका भी ध्यान रखना जायेगा,” भूतपूर्व अध्यक्ष ने रुखे स्वर में कहा । “जाओ, बिशप के यहाँ जाओ । देर हो रही है ।”

उस दिन शाम को सयोगवश म० द फिलेर स्वयं बिशप के ड्राइंग रूम में तैनात थे । बिशप महोदय ज़िलाधीश के साथ भोजन कर रहे थे । जुलिये ने पत्र स्वयं म० द फिलेर के ही हाथों में दिया यद्यपि वह उन्हें पहचानता न था ।

उन्हें बिशप के नाम के पत्र को बेघड़क खोलते देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । शीघ्र ही प्रधान विकार के सुन्दर चेहरे पर पहले तो तीव्र सन्तोष-मिश्रित विस्मय का भाव प्रगट हुआ और फिर वह पहले से भी अधिक गम्भीर हो गया । उनके पत्र पढ़ते समय जुलिये उनके चेहरे की सुन्दरता से आकर्षित होकर उसका अध्ययन करता रहा । उनकी मुखाकृति के कुछ अंशों में यदि अत्यधिक चतुरता स्पष्ट प्रगट न होती तो उनका चेहरा कहीं अधिक गम्भीर दिखाई पड़ता । अब उस सुन्दर चेहरे के स्वामी यदि पल भर के लिए भी असावधान होते तो उससे कपट का भाव प्रगट हुए बिना न रहता । उनकी बहुत प्रमुख-सी

नाक एकदम सीधी रेखा में बाहर को निकली हुई थी और उसके कारण बगल से देखने पर उनकी आकृति एकदम एक लोमड़ी जैसी जान पड़ती थी। इस समय उनके सुरुचिपूर्ण वस्त्र जुलिये को बहुत अच्छे लगे जो उसने पहले कभी किसी पुरोहित को पहने नहीं देखा था।

यह उसे बहुत बाद में पता चला कि आबे द फिलेर की विशेष योग्यता किस बात में थी। वह अपने बिशप को प्रसन्न करना जानते थे जो पेरिस की जिन्दगी के लिये सर्वथा उपयुक्त, खुशमिजाज, बड़े व्यक्ति थे और अपने बजासो-निवास को देश-निकाला समझते थे। बिशप की आँखें बहुत खराब थी और उन्हें मछली खाने का बड़ा शौक था। म० द फिलेर बिशप महोदय की मेज पर परोसी जाने वाली हर मछली के काँटे निकाल दिया करते थे।

जुलिये चपचाप आबे को दूसरी बार पत्र पढ़ते देखता रहा। तभी एकाएक दरवाजा खुला और बहुत सुन्दर वर्दी पहने एक नौकर जल्दी से वहाँ से निकल गया। जुलिये मुश्किल से दरवाजे की ओर घूम ही पाया होगा कि उसने एक छोटे कद के वृद्ध व्यक्ति को बिशपोचित क्रास धारण किये हुए देखा। उसने उन्हें घुटनों के बल बैठकर प्रणाम किया। बिशप ने स्निग्ध मुस्कान से उसकी ओर देखा और आगे चले गये। सुन्दर आबे उनके पीछे-पीछे चले और जुलिये ड्राइंग रूम के पवित्र ठाट-बाट को इत्मीनान से देखकर चकित होने के लिए अकेला रह गया।

बजासो के बिशप की अवस्था कोई पैंसठ वर्ष की होगी। दीर्घकालीन विदेश-निवास की कठिनाइयों से उनकी आत्मा तप तो बहुत चुकी थी, परन्तु अभी बुझी न थी। उन्हें इस बात की तनिक भी चिन्ता न थी कि अगले दस वर्ष के भीतर क्या होगा।

“अभी-अभी मैंने शिक्षा-मठ के किसी विद्यार्थी को देखा जो बड़ा प्रखर और मेधावी लग रहा था। वह कौन है?” बिशप ने पूछा। “क्या मेरे नियमों के अनुसार उसे इस समय तक सो न जाना चाहिये?”

“यह तो पूरी तरह जागा हुआ है, मैं विश्वास दिलाता हूँ श्रीमान् !

वह एक बढिया समाचार लेकर आया है—आपके ज़िले के एकमात्र बचे हुए जानसेनपयी के त्यागपत्र का। उन भयंकर फादर पिरार को भी आखिरकार इशारा पहचानना आ गया।”

“जो हो।” बिशप ने हँसते हुए कहा, “मुझे विश्वास है कि उस जैसा आदमी तुम्हें और न मिलेगा। मैं उसकी बहुत कद्र करता हूँ। इसीलिए मैं कल उसे अपने साथ भोजन के लिये बुला रहा हूँ।”

प्रधान विकार ने फादर पिरार के उत्तराधिकारी के विषय में एक-दो शब्द कहने का प्रयत्न किया पर बिशप महोदय इस समय काम-काज की बातों के लिये तैयार न थे। उन्होंने कहा, “किसी दूसरे की नियुक्ति के पहले जरा यह तो पता चले कि यह क्यों छोड़ रहे हैं। उस विद्यार्थी को मेरे पास बुलाओ—बच्चों के मुँह में सच्चाई निवास करती है।”

जुलिये की पुकार हुई। वह सोचने लगा कि अब दो परीक्षकों से सामना होगा। इतना साहस उसने पहले कभी न अनुभव किया था।

जिस समय उसने प्रवेश किया, उस समय दो सेवक, जो स्वयं म० वालनो से अधिक सुन्दर वस्त्र पहने हुये थे, बिशप महोदय के कपड़े उतार रहे थे। बिशप महोदय ने सोचा म० पिरार की चर्चा चलाने के पहले जुलिये से उसकी पढाई-लिखाई के बारे में कुछ पूछना चाहिये। धर्म-सिद्धान्त सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर सुनकर वह चकित रह गये। शीघ्र ही वह वाइमय पर आये और वजिल होरेस आदि की चर्चा करने लगे। जुलिये ने सोचा कि इन्ही नामों ने मुझे १९८वाँ स्थान दिलाया था। इससे अधिक अब मेरा कोई क्या बिगाड़ेगा—क्यों न जो जानता हूँ उसे कहूँ। बिशप महोदय स्वयं वाइमय के अच्छे ज्ञाना थे। वे जुलिये की जानकारी से बहुत प्रसन्न हुए।

जिलाधीश के भोजन के समय किसी विख्यात युवती ने मारि माक्सलेन के ऊपर एक कविता सुनाई थी। इसलिए बिशप साहित्यिक चर्चा के लिये तैयार ही बैठे थे और वह फादर पिरार तथा काम-काज की अन्य बातें भूलकर जुलिये के साथ यह चर्चा करने लगे कि होरेस

अमीर था या गरीब । बिशप ने स्वयं उसकी कई कविताएँ सुनाईं पर कभी-कभी जब उनकी स्मृति धोखा दे जाती तो जुलिये बहुत ही विनम्र भाव से समूची कविता को शुरू से अंत तक सुना देता था । इस बात से बिशप बहुत प्रभावित हुए कि जुलिये की आवाज़ कभी बातचीत के स्वर से इधर-उधर न बहकती थी । वह लैटिन की बीस या तीस पक्तियाँ ऐसे दुहरा जाता मानो शिक्षा-मठ में होने वाली घटनाओं के बारे में बातचीत कर रहा हो । वर्जिल और सिसरो के बारे में भी विस्तार से बातचीत हुई । अंत में बिशप इस तरफ़ छात्र की प्रशंसा का लोभ सवरण न कर सके ।

“इससे अधिक उपयुक्तता के साथ अध्ययन शायद ही कोई और कर सके,” उन्होंने कहा ।

“श्रीमान्,” जुलिये ने कहा, “आपके शिक्षा-मठ में आपकी इस प्रशंसा के उपयुक्त एक सौ सत्तानवे व्यक्ति मौजूद हैं ।”

“यह कैसे ?” बिशप ने इस सख्या से चकित होकर पूछा ।

“मैंने श्रीमान् से जो कुछ निवेदन किया है उसके समर्थन में सरकारी प्रमाण प्रस्तुत कर सकता हूँ । शिक्षा-मठ की वार्षिक परीक्षा में मुझे ठीक उन्ही विषयों पर उत्तर देने के कारण १८९वां स्थान मिला था जिनके लिये आपने मेरी प्रशंसा करने की कृपा की ।”

“ओह ! तो तुम ही हो फादर पिरार के प्रिय शिष्य ।” बिशप ने म० द फ़िलेर पर एक नज़र डालकर हँसते हुये कहा । “यह तो मुझे पहले ही समझ लेना चाहिये था । पर युद्ध में हर काम न्यायपूर्ण होता है ! क्या यह सच नहीं है, मेरे नौजवान दोस्त,” उन्होंने जुलिये से कहा, “कि तुम्हें नींद से उठाकर यहाँ भेजा गया है ?”

“जी श्रीमान् ! मैं केवल एक बार शिक्षा-मठ से बाहर अकेला गया हूँ, और वह कोर्पस क्रिस्टी के अवसर पर गिरजाघर को सजाने में फादर शा-बर्नार की सहायता के लिये गया था ।”

“बहुत उत्तम,” बिशप ने कहा । “क्या, चन्दोवे के ऊपर परों के

गुच्छे रखने का साहस दिखाने वाले भी तुम्हीं थे ? उससे हर वर्ष मेरा हृदय कॉपता है, मुझे सदा भय रहता है कि वे कहीं किसी आदमी की बलि न ले लें। तुम बहुत उन्नति करोगे, मेरे नौजवान दोस्त ! पर मैं नहीं चाहता कि पेट की चिन्ता मे तुम्हारा प्रतिभापूर्ण जीवन यो ही समाप्त हो जाय ।”

बिशप के आदेश पर बिस्कुट और मलागा शराब लाई गई। जिसके साथ न्याय जुलिये ने भी किया और उससे भी अधिक आबे द फिलेर ने, जो जानते थे कि लोगो को जी भरकर भोजन कराना बिशप को अच्छा लगता है।

दिन से ऐसे अत से बिशप अधिकाधिक प्रसन्न हो रहे थे। कुछ देर के लिये उन्होंने चर्च के इतिहास की चर्चा छोड़ दी। पर जुलिये को उस विषय मे अनभिज्ञ पाकर वह कोन्सतान्टिन युगीन सम्राटो के नैतिक आचरण की बात करने लगे। मूर्ति-पूजा-युग के अन्तिम दिनों मे भी उसी प्रकार सन्देह और अशान्ति पाई जाती थी जैसे उन्नीसवीं शताब्दी मे दुखी और क्लान्त व्यक्तियों को खिन्न करती रहती है।

बिशप ने देखा कि जुलिये टैसीटस का नाम तक नहीं जानता। उन्हें जुलिये के इस स्पष्ट उत्तर से बड़ा आश्चर्य हुआ कि शिक्षा-मठ के पुस्तकालय मे इस लेखक की कोई भी पुस्तक नहीं है।

“यह तो बड़ा अच्छा हुआ,” बिशप ने उत्साहित होकर कहा। “तुम ने मुझे एक कठिनाई से उभार लिया है। पिछले दस मिनट से मैं यही सोच रहा हू कि तुम्हारे कारण मुझे आज जो आनन्द मिला है, और वह भी सचमुच बहुत ही अप्रत्याशित रूप मे, उसके लिये तुम्हे कैसे धन्यवाद दूँ। अपने शिक्षा-मठ मे मैंने ऐसे सुपठित विद्यार्थी की आशा न की थी। मैं तुम्हे टैसीटस की रचनाएँ भेट करना चाहता हूँ, यद्यपि ऐसा उपहार सर्वथा नियमानुकूल नहीं है।”

बिशप ने सुन्दर जिल्द वाले आठ ग्रन्थ मगवाये और पहले खण्ड के मुख्य-पृष्ठ पर स्वयं अपने हाथो से लैटिन मे जुलिये सोरेल के नाम भेट

भी लिख दिया। बिशप को अपनी लैटिन भाषा के ज्ञान पर बड़ा गर्व था। अन्त में उन्होंने समूचे वार्तालाप से सर्वथा भिन्न और अत्यन्त ही गम्भीर स्वर में उससे कहा : “यदि तुमने अपना आचरण ठीक रक्खा तो, नौजवान, एक दिन तुम्हें मेरे क्षेत्र में अच्छी-से-अच्छी आजीविका मिल सकेगी जो मेरे महल से दो-तीन सौ मील से अधिक दूर न होगी। पर तुम्हें अपना चाल-चलन ठीक करना पड़ेगा।”

रात के बारह बजते-बजते जुलिये बहुत ही विस्मय की अवस्था में अपनी पुस्तको से लदा-फँदा महल से चला। बिशप महोदय ने फादर पिरार के विषय में उससे एक शब्द भी न कहा था। उनके अत्यन्त ही शिष्ट व्यवहार से जुलिये को सबसे अधिक आश्चर्य हुआ था। ऐसे स्वाभाविक सभ्रम के साथ-साथ इतनी नागरता की उसने कल्पना भी न की थी। कुछ अधीरता के साथ प्रतीक्षा करने हुए फादर पिरार से फिर भेंट होने पर यह अन्तर उसको और भी तीव्रता से अनुभव हुआ।

“क्या कहा उन लोगो ने ?” उसके तनिक समीप आते ही आबे ने जोर से चिल्लाकर पूछा। बिशप ने जो कुछ कहा था उसको लैटिन में अनुवाद करके बताने में जुलिये कुछ धबरा उठा। यह देखकर भूतपूर्व अध्यक्ष ने अपने साधारण कठोर स्वर में अत्यधिक कर्कश भाव से कहा, “फ्रेंच में ही कहो और तनिक भी घटाये-बढ़ाये बिना बिशप के शब्द ही मुझे बताओ।”

वह टैसीटस के सुन्दर ग्रन्थों के पन्ने पलटने लगे। ऊपर से लगा कि उनके सुनहरे किनारों को देखकर वह चौंक उठे हैं। एक बिशप द्वारा किसी नौजवान छात्र के लिये यह बड़ी विचित्र-पी भेंट है, है न ?” उन्होंने कहा।

बहुत विस्तार से सारा हाल सुनने के बाद जब उन्होंने अपने प्रिय शिक्षक को अपने कमरे में वापिस लौटने की आज्ञा दी तो उस समय दो बजे थे।

“टैसीटस का पहला खण्ड, जिसमें बिशप ने अपने हाथों से समर्पण

लिखा है, मेरे पास छोड़ जाओ,” उन्होंने उससे कहा। “लैटिन की यह अकेली एक पक्ति मेरे जाने के बाद से तुम्हारे लिये इस घर में विद्युत वाहक का-सा काम करेगी। क्योंकि, बेटे, मेरे उत्तराधिकारी उस क्रुद्ध बाघ का सा व्यवहार करेंगे जो देखते ही किसी को फाड़ खाने के लिये तैयार हो।”

अगले दिन सबेरे जुलिये ने देखा कि उसके साथी बड़े ही अजीब ढंग से उससे बात कर रहे हैं। इस बात से वह और भी आत्मस्थ हो गया। वह सोचने लगा कि यह फादर पिरार के त्याग-पत्र का प्रभाव है। मठ में प्रत्येक व्यक्ति यह बात जानता है और मैं उनका प्रिय शिष्य समझा जाता हूँ। इस व्यवहार के पीछे अवश्य कोई न कोई अपमान-जनक बात होगी, किन्तु वह कोई ऐसी बात न पा सका। इसके विपरीत उसे जो भी मिलता उसकी आँखों में कही घृणा न दिखाई पड़ती थी। अन्त में एक बहुत ही अल्पवयस्क छात्र ने उससे हँसते हुए कहा “टैसीटस की सम्पूर्ण रचनाएँ !”

इन शब्दों को सुनकर सारे विद्यार्थी, मानो एक-दूसरे से होड़ करते हुए, बिशप महोदय से ऐसा अपूर्व उपहार पाने के लिये ही नहीं बल्कि दो घण्टे तक उनसे वार्तालाप करने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिये जुलिये को बघाई देने लगे। उस विषय में छोटी से छाटी बात तक का लोगो को पता था। उस क्षण से ईर्ष्या सदा के लिये समाप्त हो गई। हर व्यक्ति बहुत ही दयनीय ढंग से उसकी खुशामद करने लगा। फादर कास्तानेद, जिन्होंने एक दिन पहले ही उसके साथ बहुत बुरी तरह व्यवहार किया था, आकर उसकी बाँह पकड़ कर बातें करने लगे और उसे भोजन के लिये निमन्त्रित कर दिया। अपने चरित्र की एक घातक विशेषता के कारण इन अशिष्ट लोगो के उजड़ूपन से जुलिये को बहुत कष्ट पहुँचा। अब उनकी खुशामद से आनन्द के बजाय उसे वितृष्णा हुई।

दोपहर के लगभग फादर पिरार ने अपने विद्यार्थियों से विदा ली।

किन्तु उनका अन्तिम भाषण भी यथावत् कठोर ही था। उन्होंने कहा : “आप लोग सासारिक सम्मान चाहते हैं, हर प्रकार की सामाजिक सुविधा, अधिकार, न्याय और व्यवस्था की उपेक्षा और सब लोगो से अशिष्टतापूर्ण व्यवहार करना चाहते हैं ? अथवा आप परम मुक्ति की कामना करते हैं ? आप मे से अल्प से अल्प बुद्धिवाला व्यक्ति भी यदि आँखें खोले तो इन दोनो रास्तो के बीच अन्तर पहिचान सकता है।”

उनके जाते ही कुछ भक्तगण गिरजाघर मे प्रार्थना करने चले गये। शिक्षा-मठ मे किसी ने भूतपूर्व अध्यक्ष के भाषण पर विशेष ध्यान न दिया। “वह निकाले जाने के कारण बहुत झुंझलाये हुए हैं,” सब तरफ लोम यही कह रहे थे। एक भी छात्र ऐसा सरल हृदय न था जो ऐसी नौकरी से इच्छापूर्वक त्यागपत्र देने की बात मे विश्वास करता जिसमे बड़े-बड़े ठेकेदारो से इतने सम्पर्क का अवसर मिलता था।

फादर पिरार बजासो की सबसे बढिया सराय मे ठहरे और काम-काज के बहाने से, जो वास्तव मे था नही, दो दिन वही रुके रहे। बिशप ने उन्हे भोजन के लिये बुलाया था जिसमें प्रधान विकार की स्त्रीभ से आनन्द लेने के लिये उन्होने फादर पिरार को अपने उत्तम से उत्तम रूप मे प्रगट होने का अवसर दिया। भोजन अभी समाप्त भी नही हुआ था कि पेरिस से यह विचित्र समाचार मिला कि फादर पिरार पेरिस से कोई बारह मील की दूरी पर एक सुन्दर स्थान मे नियुक्त हो गये हैं। बिशप ने उन्हे सच्चे दिल से बधाई दी। इस सब मामले में उन्हे ईमानदारी की झलक ही दिखाई दी जिससे उनकी प्रसन्नता बढ गई और आबे की योग्यता के विषय मे उनकी राय और भी उत्तम हो गई। उन्होने फादर पिरार को लैटिन में एक बहुत ही अच्छा प्रमाणपत्र भी दिया और जब आबे द फिलेर ने कुछ आपत्ति करने का साहस किया तो उन्हे आदेश देकर चुप कर दिया।

शाम को बिशप यह अपूर्व समाचार लेकर मार्कि द स्वांप्रे के घर गये। बजासो के उच्च समाज के लिये यह बड़े आश्चर्य की बात थी।

हर आदमी फादर पिरार की इस उन्नति के विषय में तरह-तरह की अटकलें लगा रहा था। लोग यहाँ तक कहने लगे थे कि वह अब बस बिशप होने ही वाले हैं। सूक्ष्मदर्शी लोग यह विश्वास करने लगे थे कि म० द ला मोल मंत्री नियुक्त हो गये हैं। उस दिन बहुत लोग आबे द फिलेर के रौब दिखाने पर मुस्करा उठे थे।

अगले दिन सबेरे फादर पिरार के पीछे सड़को पर एक भीड़-सी जमा हो गई। दुकानदार अपनी-अपनी दुकानों से उठकर दरवाजों पर उनसे मिलने आते। पहली बार उनका विनम्रतापूर्वक स्वागत हुआ। उस कठोर जानसेनपत्नी को इन सब बातों को देखकर बहुत ही क्रोध हुआ। म० द ला मोल के लिये जो वकील उन्होंने चुने थे उनके साथ देर तक परामर्श करके वह पेरिस के लिये चल पड़े।

उनके दो-तीन पुराने सहपाठी गाड़ी तक उन्हें पहुँचाने आये और उस पर बने हुए शस्त्र-चिह्न की प्रशंसा करते रहे। फादर पिरार भूर्खतावश उनसे यह कह बैठे कि पन्द्रह वर्ष तक शिक्षा-मठ का अध्ययन रहने के बाद मैं केवल पाँच सौ फ्रैंक लेकर बजासो से जा रहा हूँ। इन मित्रों ने आँखों में आँसू भरकर उन्हें हृदय से लगाया, पर बाद में एक-दूसरे से कहने लगे, “भला आदमी यह झूठ न बोलता तो क्या होता !”

धन के प्रेम में अन्धे लोगों के लिए यह समझना असम्भव है कि फादर पिरार अपनी आन्तरिक सच्चाई के कारण ही छः वर्ष तक मारि आलाको, जेस्विटपथियों और बिशप के साथ सघर्ष में टिके रह सके थे।

महत्वाकांक्षी व्यक्ति

मार्कि द ला मोल द्वारा फादर पिरार के स्वागत में वे सब छोटी-छोटी जमीदाराना बातें नहीं जो ऊपर से बड़ी विनम्रतापूर्ण दिखाई पड़ने पर भी समझदार व्यक्ति के लिये इतनी अगहनीय होती हैं। उनमें समय भी नष्ट होता है और मार्कि इस समय राज-काज के बड़े-बड़े मामलों में इतने उलझे हुए थे कि इसके लिये उनके पास समय नहीं था। पिछले छ महीनों से वह महाराज और राष्ट्र को एक ऐसा मन्त्रिमंडल स्वीकार करने के लिये तैयार करने का प्रयत्न कर रहे थे जो कृतज्ञ होकर उन्हें ध्युक बना सके।

पिछले कई वर्षों से मार्कि अपने बजासो के वकील से फास-कोति वाले मुकदमों के सम्बन्ध में साफ-साफ रिपोर्ट की माँग कर रहे थे। पर यह प्रसिद्ध वकील महोदय स्वयं ही ठीक से मामले को नहीं समझते थे, तो उन्हें कैसे समझाते? फादर पिरार ने जो एक छोटा-सा कागज उनके सामने रखा उससे सब बात साफ-साफ प्रगट हो गई।

पाँच मिनट के भीतर ही सारी परम्परागत शिष्टता की बातें तथा व्यक्तिगत कुशल-क्षेम आदि सम्बन्धी प्रश्न समाप्त करके मार्कि ने कहा, “देखिये, अपनी इन तमाम तथाकथित सुविधाजनक परिस्थितियों में मुझे दो छोटी-छोटी बातों के लिये समय नहीं मिलता जो सचमुच बहुत महत्वपूर्ण हैं। ये बातें हैं मेरे परिवार के और स्वयं अपने मामले। मैं अपने खानदान की धन-संपत्ति के विषय में बहुत ध्यान रखता हूँ

और मैं उनको बहुत कुछ बढा भी सका हूँ। मैं अपने आनन्द और मनोरजन का भी ध्यान रखता हूँ और यह सबसे महत्वपूर्ण चीज है—कम से कम मेरी नजरो में”, फादर पिरार की आँखों में एक विस्मय का भाव देखकर उन्होंने जोड़ा। पर्याप्त सहज-बुद्धि होने पर भी फादर पिरार को एक बूढ़े आदमी द्वारा अपने मनोरजन और आनन्द की ऐसी खुल्लमखुल्ला चर्चा से आश्चर्य हुआ।

“निस्सन्देह पेरिस में भी परिश्रमी लोग हैं”, मार्कि ने आगे कहा, “पर वे केवल पाँचवी मजिल के ऊपर अकेले टँगे हुए हैं। जैसे ही किसी आदमी से उनका परिचय होता है, वे तुरन्त दूसरी मजिल पर एक फ्लेट चुनते हैं और उसकी पत्नी दावत का दिन चुनती है। फलस्वरूप न तो कुछ काम-काज होता है और न समाज में आगे बढ़ने के अलावा अन्य किसी बात का प्रयत्न। काम चलाने लायक धन मिलते ही सबसे पहले उनकी नजर इसी बात पर जाती है।

“मेरे मुकदमों के लिए, और वास्तव में अलग से प्रत्येक मुकदमे के लिये, मेरे ऐसे वकील हैं जो सचमुच परिश्रम करके अपने आपको मारे डाल रहे हैं। उनमें से एक तो परसो ही तपेदिक से मरे हैं। किन्तु जहाँ तक मेरे साधारण काम का सवाल है, क्या आप मेरा विश्वास करेंगे कि पिछले तीन वर्षों से मैंने ऐसे आदमी की खोज करना तक छोड़ दिया है जो मेरे पत्र लिखने के साथ-साथ इस बात पर भी गम्भीरतापूर्वक विचार करने की कृपा करें कि वह आखिर कर क्या रहा है? यह सब एक प्रकार की भूमिका ही समझिये।

“मेरे मन में आपके लिये बहुत इज्जत है और यद्यपि आज पहली बार आपसे भेंट हो रही है, तो भी मुझे यह कहने की हिम्मत है कि आप मुझे अच्छे लगते हैं। क्या आप आठ हजार फ्रैंक अथवा इससे दुगुने वेतन पर मेरा सैक्रेटरी बनना पसन्द करेंगे? मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि तब भी मुझे लाभ ही होगा। और इस बात का मैं प्रबन्ध कर दूँगा कि यदि ऐसा दिन आ जाय कि हम दोनों एक-दूसरे

को न निभा सके तो आपकी वर्तमान नियुक्ति आपके लिये खुली रहे।”

फादर पिरार ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, किन्तु वार्तालाप के अन्त होते-होते तक मार्कि की बहुत ही वास्तविक कठिनाई को देखकर उनके मन में एक विचार आया।

“मैं एक गरीब नौजवान को शिक्षा-मठ में छोड़ आया हूँ। यदि मैं भूल नहीं करता हूँ तो वहाँ उसे बहुत कष्ट मिलने वाला है। यदि वह सीधा-सादा साधू होता तो अब तक अकेली कोठरी में रहने का दण्ड पा गया होता। अभी तक यह नौजवान लैटिन और धर्मशास्त्र के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता, पर यह सम्भव नहीं है कि एक दिन धर्मोपदेशक अथवा आध्यात्मिक परामर्शदाता के रूप में वह बहुत योग्यता का प्रदर्शन करे। यह तो मैं नहीं जानता कि वह कैसा निकजेगा, पर उसके भीतर पवित्र अग्नि अवश्य है और वह दूर तक पहुँचेगी। यदि कोई ऐसा बिशप हमारे यहाँ होता जो आपकी तरह सोचता-विचारता होता तो मैं उसे उनके सुपुर्न कर देता।”

“यह नौजवान कैसे परिवार का है?”

“वह उधर पहाड़ी इलाके के किसी बडई का बेटा माना जाता है, पर मुझे लगता है कि वह किसी अमीर आदमी की अवैध सन्तान है। उसके पास एक दिन किसी छद्म-नाम से पाँच सौ फ्रैंक की हुडी भी आई थी।”

“ओहो! आपका मतलब जुलिये सोरेल से है।” मार्कि ने कहा।

“आप उसका नाम कैसे जानते हैं?” फादर पिरार ने आश्चर्य से पूछा। इस प्रश्न से उनका चेहरा लाल हो उठा था। मार्कि ने यह दिखाते हुए कि मानो इस प्रश्न से उन्हें कुछ सकोच हो रहा है, उत्तर दिया, “यह बात मैं आपको नहीं बताऊँगा।”

“जो हो”, फादर पिरार ने कहा, “आप उसे अपना सेक्रेटरी बना सकते हैं। वह उत्साही भी है और समझदार भी। संक्षेप में इस प्रयोग की परीक्षा की जा सकती है।”

“क्यों नहीं ?” मार्कि ने कहा । “पर वह कहीं ऐसा तो न निकलेगा कि जिलाधीश अथवा किसी अन्ध व्यक्ति से घूस लेकर मेरे ऊपर जासूसी करने लगे ? मेरी एकमात्र आपत्ति यही है ।”

फादर पिरार के इस विषय में बहुत कुछ आश्वासन देने के बाद मार्कि ने एक हजार फ्रैंक का एक नोट निकाला और कहा . “यह जुलिये सोरेल को उसके यात्रा-खर्च के लिये भेज दीजिये और उसे फौरन बुला लीजिये ।”

“यह समझना आसान है कि आप पेरिसवासी हैं”, फादर पिरार ने कहा । “आपको पता नहीं कि हम बेचारे प्रान्तों के निवासियों को, विशेषकर उन पुरोहितों को जिनसे जेस्विटपथी प्रसन्न नहीं है, कितना अत्याचार सहना पड़ता है । वे लोग जुलिये सोरेल को आने न देंगे; एक से एक बढिया बहाना बनाता वे लोग खूब जानते हैं; कहेंगे कि वह बीमार है, अथवा चिट्ठी ही डाक में खो जायेगी, इत्यादि इत्यादि ।”

“अच्छी बात है, एक दिन मैं मन्त्री महोदय से बिशप के लिये एक चिट्ठी ले लूंगा”, मार्कि ने कहा ।

“एक बात की चेतावनी देना तो मैं भूल ही गया”, आबे ने कहा । “यह नौजवान गरीब घराने में पैदा होने पर भी बड़ा स्वाभिमानी है । उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने से लाभ न होगा, बल्कि यह उसे और भी बुद्धू बना देगा ।”

“यह तो मुझे बहुत पसन्द है” मार्कि ने कहा । “मैं उसे अपने बेटे का साथी बना दूँगा—ठीक होगा न ?”

कुछ दिनों बाद जुलिये को एक अपरिचित लिखावट में शालों की डाक-मोहर का एक पत्र मिला । उसमें बजासो के एक व्यापारी के नाम हुडी थी और तुरन्त पेरिस में उपस्थित होने का आदेश दिया गया था । पत्र के ऊपर कोई बनावटी नाम था । जुलिये उसे खोलते ही चौंक उठा, तेरहवें शब्द के ऊपर स्याही की एक बूँद गिरी हुई थी । फादर पिरार के साथ यही तो सकेत निश्चित हुआ था ।

एक घण्टे के भीतर ही जुलिये की फिर बिशप के महल में बुलाहट हुई जहाँ उसका बहुत ही स्नेह से स्वागत किया गया। होरेस के उद्धारण के बीच में बिशप महोदय ने उसकी बहुत प्रशंसा करते हुए कहा कि पेरिस में बड़ा उच्च अवसर उसे मिलने वाला है। इन सब बातों के लिये अपनी कृतज्ञता प्रगट करने के बाद जुलिये को कुछ और अधिक स्पष्ट जानकारी की आवश्यकता थी। पर वह कुछ न कह सका, क्योंकि उसे तो कुछ पता ही न था। बिशप महोदय उसके ऊपर बड़े दयालु रहे। महल के एक किसी छोटे घर्माधिकारी ने मेयर के नाम एक पत्र लिखा जो स्वयं अपने हाथ से हस्ताक्षर करके एक पासपोर्ट लेकर तुरन्त आया जिस पर यात्री के नाम का स्थान खाली छोड़ दिया गया था।

उस दिन आधी रात के पहले ही जुलिये फूके के घर पर मौजूद था। वह दूरदर्शी व्यक्ति अपने मित्र के इस भविष्य से प्रसन्न होने से अधिक विस्मित था।

“इस सबका नतीजा यह होने वाला है”, उदारपथी फूके ने कहा, “कि तुम्हें कोई ऐसी सरकारी नौकरी मिलेगी जिसमें कोई न कोई अनुचित काम करने को तुम्हें लाचार होना पड़ेगा और फिर अखबार तुम्हारी मरम्मत करेंगे। तुम्हारे लज्जाजनक स्थिति में होने के समाचार मेरे पास भी पहुँचेंगे। देख लो, पैसे के लिहाज से भी जमे हुए लकड़ी के कारोबार में सौ लुई कमाना सरकारी नौकरी के पाँच हजार फ्रैंक से ज्यादा अच्छा है, फिर वह नौकरी चाहे सोलोमन बादशाह की ही क्यों न हो। “अपने कारबार में आदमी अपना मालिक आप होता है।”

जुलिये को इस सलाह में एक प्रतिष्ठित देहाती-निवासी व्यक्ति के सकुचित विचारों के अतिरिक्त और कुछ न दीखा। इतने दिनों बाद उसे महान् घटनाओं के केन्द्र में उपस्थित होने का अवसर मिला था। पेरिस को वह बुद्धिमान्, एक-दूसरे के विरुद्ध चारों चलने वाले, पूरी तरह डोयी, किन्तु बजासों और आन्द के बिशप की भांति शिष्ट व्यक्तियों

का नगर मानता था। वहाँ पहुँचने की प्रसन्नता ने हर बात को उसकी आँखों के आगे से ओझल कर दिया था। उसने अपने मित्र से कहा कि फादर पिरार के पत्र के कारण अब उसके आगे कोई रास्ता ही न रह गया है।

अगले दिन बारह बजे के लगभग वह वेरियेर पहुँचा। उस समय उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न था और उसे मादाम दे रेनाल से फिर मिलने की आशा थी।

सबसे पहले वह अपने अभिभावक फादर शेला से मिलने गया जहाँ उसका बड़ी कठोरता से स्वागत हुआ।

“तो तुम्हारा विचार है कि तुम किसी बात के लिये मेरे कृतज्ञ हो?” म० शेला ने उसके अभिवादन का उत्तर दिये बिना ही कहा। “तुम मेरे साथ भोजन करो। इस बीच कोई व्यक्ति जाकर तुम्हारे लिये घोड़ा किराये पर तय कर देगा और उसके बाद तुम्हें किसी से मिले बिना ही वेरियेर से रवाना हो जाना पड़ेगा।”

“आपके वचन मेरे लिए आज्ञा के समान हैं”, जुलिये ने शिक्षा-मठ के विद्यार्थी के स्वर में उत्तर दिया। और उन लोगो ने धर्म-शास्त्र और वाङ्मय के अतिरिक्त किसी विषय पर बात न की।

घोड़े पर वह तीन मील तक गया। उसके बाद वह चुपके से एक जंगल में घुस गया। दिन बीतने पर उसने घोड़ा वापस भेज दिया और बाद में एक किसान के घर में पहुँचकर उसे एक सीढ़ी बेचने तथा थोड़ी दूर तक सीढ़ी को ले चलने के लिये तैयार कर लिया।

वेरियेर के ‘कूर द ला फिदेलिते’ के समीप एक जंगल के पास किसान उससे विदा लेते हुए मन ही मन कहने लगा, “या तो यह कोई सेना से भगोड़ा होगा या कोई चोरी का सामान ले जाने वाला। पर उसमें नुकसान ही क्या है? मुझे तो सीढ़ी की अच्छी कीमत मिल गई। और यह भी नहीं कि मैंने जिन्दगी में कोई ऐसा काम किया न हो।”

रात बड़ी अँधेरी थी। कोई एक बजे सबेरे के लगभग जुलिये ने

सीढ़ी सहित बेरियर में प्रवेश किया। वह तुरन्त ही उतरकर नदी की धार में जा पहुँचा, जो म० द रेनाल के सुन्दर बगीचे में से कोई दस फीट की गहराई से जाती है और जिसके चारों ओर दीवार-सी बनी हुई है। सीढ़ी की सहायता में जुलिये आसानी से ऊपर चढ़ गया। रखवाली करने वाले कुत्ते कहाँ होंगे, वह सोचने लगा। सारा सवाल यही है। तभी कुत्ते भौंक उठे और उसकी ओर झपटने हुए आये, पर उसके धीमे से सीटी बजाते ही वे द्रुम हिलाते हुए उसके पास खड़े हो गये।

फिर वह एक के बाद एक वीथि को आसानी से पार करता हुआ, यद्यपि लोहे के सब दरवाजे बन्द थे, ठीक मादाम द रेनाल के शयनकक्ष की खिड़की के नीचे जा पहुँचा। यह खिड़की बगीचे की तरफ और धरती से करीब नौ-दस फीट की ऊँचाई पर थी। खिड़की के दरवाजों में छोटा-सा पान के आकार का छेद था जिसे जुलिये भली भाँति जानता था। यह देखकर जुलिये बहुत चिन्तित हुआ कि उस छेद में से भीतर की कोई रोगनी नहीं आ रही थी।

हे भगवान् ! उसने मन ही मन कहा। इसका मतलब है कि मादाम द रेनाल आज रात को इस कमरे में नहीं हैं। और कहाँ सोई होगी ? है तो सब लोग बेरियर में ही, क्योंकि कुत्ते यही हैं, पर यदि इस अँवरे कमरे में म० द रेनाल अथवा किसी अजनबी से भेंट हो गई तो बड़ी मुसीबत हो जायेगी।

ऐसी अवस्था में लौटना ही बुद्धिमानी की बात होती पर इस सम्भावना से ही जुलिये विचलित हो उठा। अगर कोई अजनबी हुआ तो मैं सिर पर पैर रखकर भाग निकलूँगा और सीढ़ी यही छोड़ दूँगा। पर अगर वह स्वयं यही हुई तो मेरा कैसा स्वागत होगा ? पश्चात्ताप और तीव्र धर्म-भक्ति ने आजकल उनके मन को घेर लिया है, इसमें तो कोई सन्देह नहीं। किन्तु उन्हें कुछ तो मेरी याद है ही, क्योंकि हान ही में उन्होंने मुझे एक पत्र लिखा था। इस दलील ने उसका निश्चय पक्का कर दिया।

कॉपते हुए हृदय से, किन्तु साथ ही उनसे मिलने अथवा मर जाने के दृढ़ निश्चय से, उसने मुट्ठी भर ककड दरवाजे के ऊपर फेंके, पर कोई उत्तर नहीं। उसने सीढ़ी खिडकी के किनारे टिका दी और दरवाजे को अपने हाथ से पहले हल्के-हल्के और बाद में कुछ अधिक जोर से थपथपाने लगा। उसे लगा कि चाहे जितना अन्धेरा हो गोली का निशाना तो मुझे कोई बना ही सकता है। पर इस विचार के साथ ही यह पागलपन का कार्य उसके लिए साहस का प्रश्न बन गया।

यह कमरा आज अवश्य खाली है, वह सोचने लगा, अन्यथा इसमें सोने वाला व्यक्ति अब तक अवश्य जाग गया होता। अब इतनी सावधानी की कोई आवश्यकता नहीं, अब तो बस इतना ही ध्यान आवश्यक है कि दूसरे कमरे में सोये हुए लोग न जाग पड़ें।

वह नीचे उतरा, अपनी सीढ़ी एक किवाड़ के सहारे रख फिर चढ़ा और अपना हाथ पान की शक्ल वाले छेद में डाल दिया। सौभाग्यवश जल्दी ही उसका हाथ उस तार पर पहुँच गया जिससे दरवाजा अटका हुआ था। उसने तार को जोर से खींचा। यह देखकर उसकी खुशी का कोई ठिकाना न था कि कुण्डी खुल गई। उसने थोड़ा-सा दरवाजा खोल कर अपना सिर भीतर किया और दो-तीन बार धीमी आवाज में दोहराया : “मित्र हूँ।”

वह कान लगाकर सुनने लगा। कमरे की गहन निस्तब्धता किसी चीज़ से भी भग न हुई, किन्तु अँगोठी में आघात उलटा हुआ कोई दिया भी तो न था। यह तो अच्छा चिह्न नहीं।

गोली के निशाने से होशियार ! पल भर को वह सोचने लगा। फिर उसने अपनी उँगलियों से खिडकी पर थपथपाया, कोई उत्तर नहीं। वह और भी जोर से थपथपाने लगा। शीशे को तोड़ना पड़ा तो भी मैं न मानूँगा, वह सोचने लगा। बहुत जोर से खटखटाते हुए एकाएक उसे लगा कि कमरे के अन्धकार में कोई सफेद छाया सी चल रही है। आखिरकार—अब इसमें कोई सन्देह नहीं रहा था—उसने एक छाया को बहुत ही धीरे-

धीरे अपनी ओर बढ़ते हुए देखा। जिस काँच में से वह भाँक रहा था उसी से सटे हुए एक गाल के ऊपर अचानक उसकी नज़र पड़ी।

वह चौक पड़ा और थोड़ा-सा पीछे हट गया। पर रात इतनी अँधेरी थी कि इनने पास से भी वह मादाम द रेनाल को न पहचान सका। उसे लगा कि अभी-अभी कोई भय से चीख उठेगा। जहाँ सीढ़ी रक्खी हुई थी वही कुत्ते के हल्के-से गुरगुराने की आवाज़ भी उसे सुनाई पड़ी। “मैं हूँ, मित्र,” उसने काफ़ी जोर से दोहराया। कोई उत्तर नहीं। सफेद छाया गायब हो गई थी। “दया करो, मुझे अन्दर आने दो। तुम से बहुत आवश्यक बातें करनी हैं। मैं बहुत ही दुखी हूँ।” उसने ऐसे खटखटाया मानो काँच तोड़ देगा।

हल्की-सी तीखी आवाज़ सुनाई पड़ी और खिड़की की कुण्डी खुल गयी। उसने किवाड़ का एक पल्ला पीछे को हटाया और कमरे में कूद पड़ा। सफेद छाया पीछे हट गई। उसने छाया की बाहे पकड़ ली, कोई स्त्री ही थी। उसके सारे साहसपूर्ण विचार पल भर में गायब हो गये। सचमुच ही वह हुई तो क्या कहेगी। एक हल्की-सी चीख से जब उसे विश्वास हुआ कि मादाम द रेनाल ही हैं तो उसके मन की कैसी अवस्था थी।

उसने उन्हें अपनी बाहों में भर लिया। वह काँप रही थी और बड़ी कठिनाई से उसे अपने से दूर धकेल सकी।

“अभागे आदमी! तुम क्या कर रहे हो?” वह चीखकर बोलीं।

भावावेश से रुँधे हुए कपित गले से शब्द कठिनाई से निकल रहे थे। जुलिये को लगा कि उनके स्वर का रोष सच्चा है।

“मैं चौदह महीने के निर्भय ब्रियोग के बाद तुमसे मिलने आया हूँ।”

“फौरन इस कमरे से निकल जाओ और मुझे छोड़ दो। आह! म० शेला, आपने मुझे क्यों उंसे लिखने से रोका। मैं इस भयंकर स्थिति से बच जाती।” उन्होंने सचमुच अमाधारण बल से उसे पीछे धकेल

दिया। “मुझे अपने अपराध का पश्चात्ताप है,” भाव-विह्वलता से फटती हुई आवाज में उन्होंने कहा। “भगवान् ने कृपा करके मुझे क्षमा कर दिया है। तुम इस कमरे से निकल जाओ, फौरन।”

“चौदह महीने की यातना के बाद अब तुमसे बात किये बिना मैं नहीं जाऊँगा। मुझे बताओ कि इतने दिनों तुम क्या करती रही? ओफ! मैंने तुम्हें इतना प्यार तो किया ही है कि ये सब बातें मुझे बता सको। मैं सब कुछ जानना चाहता हूँ।”

उसकी आवाज में अधिकार के स्वर से मादाम देरेनाल अपनी इच्छा के विपरीत भी विवश हो उठी। छूटने के सारे प्रयत्नों के बावजूद जुलिये अभी तक उन्हें दृढ़तापूर्वक अपने आलिंगन में बाँधे था, अब उसने अपनी बांहें कुछ ढीली कर दी। इस बात से मादाम दे रेनाल थोड़ी-सी आश्चर्यचकित हुई।

“मैं सीढ़ी को ऊपर खींच लेता हूँ”, जुलिये ने कहा। कोई नौकर शोर से जागकर गश्ती देने निकले भी तो उसे कुछ पता न चले।”

“ओफ! यह न करो,” उन्होंने वास्तविक क्रोध में कहा, “बल्कि इसके बजाय इस कमरे से चले जाओ। मैं इन्सान की क्या परवाह करती हूँ? पर भगवान् तो इस दृश्य को देख रहा है। वही मुझे इसकी सजा देगा। तुम उस भावना का नीचतापूर्ण लाभ उठा रहे हो जो किसी समय मेरे मन में तुम्हारे लिये थी, पर आज नहीं। आप मेरी बात सुन रहे हैं, म० जुलिये?” पर वह धीरे-धीरे सीढ़ी ऊपर खींच रहा था जिससे कोई शोर न हो।

“क्या तुम्हारे पति आजकल यही हैं?” उसने कहा। उसका इरादा उन्हें चिढ़ाने का नहीं था बल्कि पुराने अभ्यासवश अनजाने ही उसके मुँह से ये शब्द निकले।

“कृपा करके मुझसे इस तरह बात न करो, नहीं तो मैं अभी अपने पति को बुला लूँगी, उसका जो भी परिणाम हो। तुम्हें यहाँ से एकदम व भ्रम देने का अपराध तो मैं कर ही चुकी हूँ। मुझे तुम्हारे ऊपर

तरस आता है”, उन्होंने उसके अभिमान पर चोट करने का प्रयत्न करते हुए कहा। वह जानती थी कि इससे वह बहुत जल्दी आहत होता है।

स्नेहपूर्ण शब्दों के ऐसे पूर्ण परित्याग से, इतने मुकुमार बन्धनों को, जिन पर उसे अब भी भरोसा था, इस भाँति तोड़ने से जुलियें के प्रेम की उत्कट विह्वलना मूर्च्छा की सीमा तक जा पहुँची।

“क्या ! क्या यह सम्भव है कि तुम अब मुझे प्यार नहीं करनी ?” उसने ऐसे आतनीय स्वर में कहा जिसे सुनकर विचलित न होना कठिन था। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। जुलिये फूट-फूटकर रोने लगा था। सचमुच उसके भीतर बोलने की शक्ति तक न बची थी।

तो जो एकमात्र व्यक्ति मुझे प्यार करता था उसने भी दम भाँति एकदम भुला दिया है। वह सोचने लगा। अब और जीवित रहने में लाभ ही क्या है ? किसी पुरुष से सामना होने का भय दूर होने ही उसका सारा माहस खत्म हो चुका था। प्रेम के सिवाय अन्य प्रत्येक वस्तु उसके हृदय में निकल चुकी थी।

वह बहुत देर तक चुपचाप रोता रहा। उसने उनका हाथ पकड़ लिया, उन्होंने हाथ खींचना चाहा, किन्तु कई बार प्रयत्न करने के बाद फिर उसे जुलिये के हाथों में ही रहने दिया। अँधेरा बहुत गहरा था। वे दोनों धीरे-धीरे जाकर पलंग पर बैठ गये।

चौदह महीने पहले स्थिति कितनी भिन्न थी। जुलिये सोचने लगा। उसके आँसू और भी तेजी से गिरने लगे। अनुपस्थिति इसी भाँति अनिवार्य रूप से समस्त मानवीय भावनाओं को नष्ट कर देती है।

“कम से कम इतना बताने की कृपा तो करो कि तुम्हें हुआ क्या है”, उनके मौन से सकुचित होकर जुलियें ने आखिरकार कहा। उसका गला आँसुओं से रुँधा जाता था।

“इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं,” मादाम द रेनाल ने कड़ी आवाज में, जिसमें कठोरता और जुलियें के ऊपर दोषारोपण की ध्वनि थी,

उत्तर दिया, “कि तुम्हारे जाने के पहले मेरे अनुचित चाल-चलन की बात शहर में फैल चुकी थी। तुम्हारे व्यवहार में कितनी लापरवाही थी ! कुछ दिनों बाद जब मैं बहुत ही निराश हो चुकी थी तो वह भले आदमी फादर शेला मुझसे मिलने आये। बहुत देर तक वे मुझसे पाप-स्वीकार कराने का वृथा प्रयत्न करते रहे। एक दिन उन्हें मुझे दिव्यो के गिरजाघर में, जहाँ मेरा प्रथम धार्मिक सस्कार हुआ था, ले चलने का विचार सूझा। वहाँ उन्होंने ही बात चलाने का साहस किया ” आँसुओं से मादाम द रेनाल का कण्ठ रुँध गया। “कैसा लज्जा का क्षण था वह ! मैंने सब कुछ स्वीकार कर लिया। इस स्नेहालु व्यक्ति ने इतनी कृपा की कि अपना क्षोभ प्रगट करके मेरी यातना और न बढ़ाई। उन दिनों मैं प्रतिदिन तुम्हारे लिये पत्र लिखा करती थी जिन्हें भेजने का साहस मुझे न होता था। मैं उन्हें होशियारी से छिपाकर रखती और जब भी बहुत दुःखी होती तो अपने कमरे को भीतर से बन्द करके उन्हें बार-बार पढ़ती थी।

“अन्त में फादर शेला ने मुझे इस बात के लिये तैयार कर लिया कि उन पत्रों को मैं उनके सरक्षण में रख दूँ । एक या दो जो अधिक समझदारी से लिखे गये थे वे तुम्हें भेजे ही जा चुके थे। तुमने तो मुझे कोई जवाब तक नहीं दिया।”

“पर शिक्षा-मठ में तो मुझे तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला—कभी नहीं, सौगन्ध खाता हूँ !”

“हे भगवान् ! उन्हें बीच में किसने चुराया होगा ?”

“तुम इस बात से मेरे दुःख का अनुमान लगा सकती हो—कि गिरजाघर में उस दिन तुम्हें देखने के पहले मैं यह तक न जानता था कि तुम जीवित भी हो अथवा नहीं।”

“जो हो भगवान् ने कृपा करके मुझे यह पहचानने की समझ दी कि मैंने भगवान् के प्रति, अपने बच्चों के प्रति और अपने पति के प्रति कैसा पाप किया है। यद्यपि यह ठीक है कि मेरे पति ने मुझे कभी इतना

प्यार नहीं किया जितना उन दिनों मैं समझती थी कि तुम करते हो....”

जुलिये ने बिना कुछ सोचे-समझे एकदम बेबस होकर उन्हें हृदय से लगा लिया। किन्तु मादाम द रेनाल ने उसे पीछे धकेला और काफ़ी दृढ़ता के साथ आगे कहती गई, “मेरे योग्य मित्र म० शेला ने मुझे समझाया कि विवाह द्वारा मैं म० द रेनाल को अपना सारा प्रेम, वे सब भावनाएँ समर्पित करने का वचन दे चुकी हूँ, जिन्हें मैं विवाह के समय जानती तक न थी और तुम्हारे साथ उस घातक सम्बन्ध के पहले जिनका मैंने कभी पहले अनुभव तक न किया था। ... अपने उन सर्वाधिक प्रिय पत्रों का परित्याग कर देने के बाद मेरा जीवन यदि सुख से नहीं तो कम से कम बहुत कुछ शांति से कट रहा है। उसमें बाधा न डालो। मेरे मित्र बनो..... तुमसे बड़ा मित्र मेरा दूसरा नहीं।” जुलिये ने उनके हाथ को चुम्बनो से भर दिया, उन्होंने अनुभव किया कि वह अभी भी रो रहा है।

“रोओ मत,” उन्होंने कहा, “इससे मुझे बहुत कष्ट होता है... अब तुम बताओ कि तुम क्या करते रहे।” जुलिये के मुँह से कोई शब्द न निकला। “मैं जानना चाहती हूँ कि शिक्षा-मठ में तुम्हारा जीवन कैसा था,” उन्होंने दोहराया। “और फिर तुम यहाँ से चले जाओ।”

बिना सोचे-समझे कि वह क्या कह रहा है, जुलिये उन्हें वे तमाम अनगिनती साजिशों और ईर्ष्या की कहानियाँ सुनाने लगा जिन पर उसे शुरू-शुरू में सामना करना पड़ा था। फिर उसने अपने सहायक शिक्षक होने के बाद से अधिक शांतिपूर्ण जीवन की बात कही।

“ठीक उसी समय,” उसने आगे कहा, “उस लम्बे मौन के बाद, निस्सन्देह जिसका उद्देश्य मुझे यह अनुभव कराना था कि तुम मुझे प्यार नहीं करती और मेरी ओर से उदासीन हो गयी हो.....” मादाम द रेनाल ने उसके दोनों हाथ अपने हाथों में दबाये। “ठीक उसी समय तुमने मुझे पाच सौ फ्रैंक भेजे थे।”

“मैंने तो कभी नहीं भेजे,” मादाम द रेनाल ने कहा।

“चिट्ठी पर पेरिस की मोहर थी और सब सन्देह बचाने के लिये पॉल सोरेल के हस्ताक्षर थे।”

इस बात पर उस चिट्ठी के भेजने वाले के सम्बन्ध में थोड़ी-सी चर्चा होती रही। मानसिक दृष्टि से परिस्थिति धीरे-धीरे बदल गई। अनजाने में ही मादाम द रेनाल और जुलिये के स्वर की कृत्रिमता कम हो गई थी और उनका वह घनिष्ठ स्नेह-भाव फिर से लौट आया था। अंधेरा इतना गहन था कि वे एक-दूसरे को देख न पाते थे, किन्तु उनकी आवाज सब कुछ कह रही थी। जुलिये ने अपनी प्रेयसी की कमर में बाँह डाल दी यद्यपि इससे उनके फिर भडक उठने की आशंका बहुत थी। उन्होंने जुलिये की बाह को हटाना चाहा पर उसी समय अपनी कहानी के किसी रोचक प्रसंग को छेड़कर उसने उनका ध्यान चतुराई से बँटा दिया। उसकी बाहे मानो भूली हुई सी उसी स्थान पर पड़ी रही।

पाच सौ फ्रेक वाले पत्र के सम्बन्ध में बहुत सारी अटकलें लगाने के बाद जुलिये अपनी कहानी आगे सुनाने लगा। धीरे-धीरे उसका आत्मनियंत्रण फिर से लौट रहा था। पर अपने विगत जीवन की चर्चा में इस क्षण उसकी तनिक भी रुचि न थी। उसका समूचा ध्यान इसी बात पर केन्द्रित था कि इस भेट का अंत क्या होगा। बीच-बीच में उसे तीखे स्वर में ‘यहाँ से चले जाओ!’ भी सुनाई पड़ता रहता था।

यदि मुझे आज निकाल दिया गया तो कैसी लज्जा की बात होगी उसने मन ही मन कहा। इसका ज़हर मेरे सारे जीवन को विषाक्त कर देगा। वह कभी मुझे पत्र न लिखेगी। भगवान् जाने मैं इस तरफ फिर कब लौटूँगा। उस क्षण से जुलिये के मन में जो थोड़ी-बहुत आध्यात्मिकता थी वह भी निकल गई। वह उसी कमरे में बैठा हुआ था जहाँ उसे इतना सुख मिला था। जिस स्त्री की वह पूजा करता था वह इस क्षण उसके समीप और लगभग उसके आलिंगन में थी। उस गहन अधकार में भी कुछ पलों से उसे लग रहा था कि वह रो रही हैं। तीव्रता से उठते-गिरते वक्ष से उनकी सिसकियाँ स्पष्ट थी। ऐसे

ममय मे भी वह अभागा व्यक्ति लगभग उसी प्रकार भावहीन, निस्मग और रुखा होकर जोड़-तोड़ मे लग गया जैसे वह शिक्षा-मठ के अहाते मे अपने अधिक प्रबल सहपाठियो के किसी निर्मम परिहाम के बाद लग जाया करता था ।

जुलिये वेरियेर छोडने के बाद से अपनी कहानी को गढ़कर दुखभरी बनाकर सुनाने लगा । उसकी बात सुनकर मादाम द रेनाल कुछ सोच मे डूब गयी । एक वर्ष बीत गया, और इस बात का कोई भी चिह्न न था । किसी को इसका स्मरण है । मैं स्वय ही उसे भूली जा रही थी । तो भी उसके मन मे एकमात्र विचार वेर्जि के सुखद दिनो का ही था । उनकी सिसकिया और भी बढ गई । जुलिये ने देखा कि उसकी कहानी सफल हुई है । यह समझकर कि अब आखिरी दाँव खेलने का मौका आ गया है उसने अचानक ही पेरिस के पत्र का जिक्र कर दिया ।

“मैं अब बिशप से भी विदा ले आया हूँ ।”

“क्या ! तुम अब बजासो नही लौट रहे हो ?” हम लोगो को सदा के लिये छोडकर जा रहे हो ?”

“हाँ” जुलिये ने दृढतापूर्वक उत्तर दिया । “हाँ, मैं इस स्थान से सदा के लिये नाता तोड़ रहा हूँ । यहा तो उम व्यक्ति ने भी मुझे मुला दिया जिससे मैंने जीवन मे सबसे अधिक प्यार किया था । अब मैं इस स्थान का कभी मुँह भी न देखूँगा । मैं पेरिस जा रहा हूँ ।”

“पेरिस जा रहे हो ।” मादाम द रेनाल ने कुछ जोर से भावाविष्ट स्वर मे कहा । आँसुओ से उनका कंठ रुँध गया था जिससे उनकी तीव्र यातना स्पष्ट प्रकट थी । जुलिये को ऐसे ही प्रोत्साहन की आवश्यकता थी । वह ऐसा काम करने वाला था जो उसके सर्वथा प्रतिकूल पड़ता । कुछ दिखाई न पड सकने के कारण इस चीख के पहले वह यह न जान सका था कि उसके शब्दो का क्या प्रभाव हुआ है । अब उसके मन मे कोई हिचक न रही, भविष्य में पछताने के भय से उसका पूरा आत्म-नियन्त्रण फिर से लौट आया था । उसने खडे होते हुए रुके स्वर में

कहा “हाँ मैडम ! मैं आपको सदा के लिये छोड़कर जा रहा हूँ । भगवान् आपको सुखी रखे —नमस्कार ।” वह खिड़की की तरफ बढ़ा और उसे खोलने भी लगा । तभी मादाम द रेनाल झपट कर उसकी बाहो में जा गिरी ।

इस भाँति तीन घण्टे के वार्तालाप के बाद जुलिये को वह वस्तु प्राप्त हो सकी जिसकी पहले दो घण्टों में उसे इतनी उत्कटता के साथ लालसा थी । यदि मादाम द रेनाल का प्यार पहले जाग पाता और पश्चात्ताप को कुछ पहले भूल सकी होती तो वह क्षण चरम सुख का होता । किन्तु इस भाँति चतुराई द्वारा प्राप्त करने से वह केवल आनन्द बनकर रह गया । जुलिये अपनी प्रेयसी के समस्त आग्रह के बावजूद रोशनी जलाने का पक्का निश्चय कर चुका था ।

“तो क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें देखे बिना ही चला जाऊँ ?” उसने कहा । “उन सुन्दर आँखों में झलकने वाला प्रेम क्या मुझ से हमेशा के लिये छिन गया ? इस सुन्दर हाथ का गौरापन अनदेखा ही रहेगा ? तनिक सोचो, मैं सम्भवतः तुम से बहुत लम्बे समय के लिये अलग हो रहा हूँ ।”

इस विचार से मादाम द रेनाल के आँसू निकल आये और वह उसे किसी बात के लिये मना न कर सकी । किन्तु बेरियेर के पूरब में पहाड़ियों पर फर वृक्षों के पीछे सुबह की लाली फूटने लगी थी । जुलिये प्रेम और सुख में अपने होश-हवास खो बैठा था । इसलिये उसने विदा लेने के बजाय मादाम द रेनाल से अनुरोध किया कि वह उसे दिन भर अपने कमरे में ही छिपाये रखे और वह अगले दिन रात को जाये ।”

“क्यों नहीं ?” उन्होंने कहा, “इस घातक पुनरावृत्ति ने मेरा सारा आत्म-सम्मान छीन लिया है और मुझे सदा के लिये दुःखी बना दिया है ।” उन्होंने उसे अपनी बाहो में भर लिया और बोली, “मेरे पति का व्यवहार मेरे साथ अब वैसा न रहा—उन्हें कुछ न कुछ सन्देह अवश्य है । उन्हें यकीन है कि इस मामले में मैंने उन्हें धोखा दिया है । इसलिये

वह मुझ से सदा रुष्ट रहते हैं। यदि उन्होंने हल्का-सा भी शब्द सुन लिया तो मेरा मर्वनाश निश्चित है। वह मुझ अभागिन पापिन को घर में निकाल देंगे।”

“आह ! यह तो फादर शेला की शब्दावली है।” जुलिये ने कहा। “मेरे शिक्षा-मठ जाने के पहले तुम मुझ से ऐसी बातें नहीं करती थी। तब तुम मुझे प्यार करती थी।”

जिस आत्मसंयम से जुलिये ने ये शब्द कहे, उसका पुरस्कार भी उसे मिला। उसने देखा कि उसकी प्रेयसी अचानक घर में अपने पति की उपस्थिति से उत्पन्न होने वाला जोखिम की बात बिल्कुल भूल गई। इस समय उन्हें उससे भी बड़ी जोखिम यह जान पड़ी कि जुलिये को उनके प्रेम में सदेह हो। दिन का प्रकाश बढ़ता ही जा रहा था और कमरे को आलोकित कर रहा था। वह लावण्यमयी नारी कुछ ही घण्टों पहले पूर्णतः परमात्मा के भय और कर्तव्य-परायणता से आक्रान्त थी। इस समय वह फिर एक बार उसकी बाहों में और लगभग उसके चरणों में पड़ी थी। एक वर्ष की अविच्छिन्न पति-परायणता द्वारा शुद्ध निश्चय भी उसके साहस के आगे टिक न सके थे। जुलिये ने आज तक केवल इसी नारी को प्यार किया था और आज उसे इस भाँति अपने समक्ष पाकर उसके अभिमान को अपूर्व सन्तोष और तृप्ति का अनुभव हुआ।

थोड़े ही देर में घर में से और आवाज़ें आने लगी और मादाम द रेनाल एक ऐसी बात से चिन्तित हो उठी जिस पर उन्होंने विचार ही न किया था।

“वह दुष्ट एलिजा अभी इस कमरे में आती होगी;” उन्होंने अपने प्रेमी से कहा। “इस बड़ी भारी सीढ़ी का क्या किया जाय ? इसे कहाँ छिपाएँ ? अच्छा ठीक है, मैं इसे ऊपर छत पर ले जाकर रख दूँगी।” उन्होंने अचानक एक प्रकार की शिशु-सुलभ उत्सुकता से कहा।

“पर तुम्हें नौकर के कमरे में होकर जाना पड़ेगा,” जुलिये ने विस्मय से कहा।

“मैं सीढ़ी को बरामदे में रखकर नौकर को बुला लूँगी और उसे किसी काम से भेज दूँगी ।”

“अगर उसने बरामदे में निकलते समय सीढ़ी को देख लिया तो उससे क्या कहोगी, यह तो सोच लो ।”

“हाँ, प्रिय,” मादाम द रेनाल ने उसे प्यार करते हुए कहा । “और देखो, यदि मेरे पीछे एलिजा कमरे में आ जाय तो जल्दी से पलंग के नीचे छिप जाना ।”

जुलिये को इस आकस्मिक उत्साह से कुछ आश्चर्य हुआ । वह सोचने लगा कि वास्तविक ठोस विपत्ति की सम्भावना ने उन्हें निश्चिन्त बना दिया है, क्योंकि वह अपना पश्चात्ताप भूल गयी है । सचमुच कितनी श्रेष्ठ स्त्री है ! आह, इस हृदय के ऊपर राज्य करना भी कितना महान् है ! जुलिये मन्त्र-मुग्ध हो उठा ।

मादाम द रेनाल ने सीढ़ी उठाई । स्पष्ट ही वह उनके लिये बहुत भारी थी । जुलिये उनकी मदद के लिये आगे बढ़ा । वह उनके उस सुन्दर शरीर को प्रशंसा भरी दृष्टि से देख रहा था जो देखने में तनिक भी सशक्त न लगता था । तभी अचानक उन्होंने अकेले ही सीढ़ी उठा ली और उसे ऐंसे ले चली मानो कोई कुर्सी ले जा रही हो । उसे जल्दी से बरामदे में दीवार के सहारे रख कर उन्होंने नौकर को बुलाया और उसे कपड़े पहनने का समय देने के लिये ऊपर कबूतरखाने की तरफ चली गई ।

जब वह पाँच मिनट बाद बरामदे में वापिस आई तो सीढ़ी वहा नहीं थी । कहा गई ? यदि जुलिये घर में मौजूद न होता तो इस सकट से वह तनिक भी न घबराती । पर अब यदि उनके पति ने सीढ़ी को देख लिया तो ! इस घटना के तो बड़े डरावने परिणाम हो सकते हैं । वह सारे घर में ऊपर-नीचे दौड़कर देखती फिरी, पर अन्त में सीढ़ी उन्हें छत पर मिली जहाँ नौकर ने उसे छिपा दिया था । यह परिस्थिति अजीब थी, कुछ दिन पहले वह इससे भयभीत हो उठती ।

चौबीस घण्टे बाद जुलिये के चले जाने पर क्या होगा, इससे क्या ? तब क्या प्रत्येक वस्तु ही त्रास और पश्चात्तापदायक न बन उठेगी ? उनके मन में धुँधला-सा विचार था कि अब अपना जीवन समाप्त कर देना चाहिये । पर उससे भी क्या होना ? एक निर्मम वियोग के बाद वह मिला है । मैं तो सोचने लगी थी कि अब कभी भेंट न होगी । पर एक बार फिर मैं उसे देख रही हूँ । और मेरे पास पहुंचने के लिये उसने क्या-क्या नहीं किया है ।

सीढ़ी की घटना सुनाने के बाद उन्होंने जुलिये से पूछा, “यदि नौकर मेरे पति को बता दे कि उसे सीढ़ी यहाँ मिली थी, तो मैं उनसे क्या कहूँगी ?” वह पल भर सोचने लगी ।

“जिस किसान ने तुम्हें सीढ़ी बेची है उसका पता लगाने में उन्हें चौबीस घण्टे तो लगेंगे ही ।” फिर वह जुलिये की बाहों में बँध गई और उसे एक उत्कट आलिङ्गन में भर लिया । “आह ! यदि ऐसे ही मौत आ जाती !” उसके मुख को चुम्बनों से भरते हुये उन्होंने कहा । दमरे ही क्षण हँसकर बोली, “पर तुम्हें मैं मूखो न मरने दूँगी ।”

“अच्छा आओ, पहले मैं तुम्हें मादाम देविल के कमरे में दिखा दूँ । उस पर सदा ताला पड़ा रहता है,” उन्होंने कहा और बरामदे के छोर पर जाकर देखने लगी कि कोई आ तो नहीं रहा है । जुलिये दौड़कर उस कमरे में चला चर्चा । “देखो, अगर कोई दरवाजा खटखटाये भी तो तुम न खोलना,” उन्होंने उसे बन्द करके ताला लगाते हुए कहा । वैसे भी शायद बच्चे ही एक दूसरे का खेल में खोजते हुए भले ही आयें ।

“उन्हें बगीचे में खिड़की के नीचे ले आना ताकि मैं भी देख सकूँ,” जुलिये ने कहा, “और उनसे बातचीत भी करना ।”

“हाँ, हाँ, जरूर,” जाते-जाते मादाम दे रेनाल ने कहा ।

वह जल्दी ही सतरे, बिस्कुट और मलाया शराब की बोतल लेकर लौटी । रोटी वह चुराकर न खा सकी ।

“तुम्हारे पति क्या कर रहे हैं ?” जुलिये ने पूछा ।

“वह कुछ किसानों से बैनामे लिखा रहे हैं।”

आठ बज चुके थे और घर में बहुत धूमधाम होने लगी थी। यदि वह दिखाई न पड़ी तो लोग उनको हर जगह ढूँढ़ने निकलेगे। वह लाचार होकर उसके पास से चली गई। पर जल्दी ही वापस लौटी और सावधानी के विपरीत उसके लिये एक प्याला काफी भी लेती आई। वह इस भय से काँप रही थी कि कहीं वह भूखो न मर जाये। कलेबे के बाद वह बच्चों को उस कमरे की खिड़की के नीचे ले आई। वे अब पहले से लम्बे दीख रहे थे, पर या तो वे देखने में पहले से कम सुन्दर और छोटे लगने लगे थे या सम्भवतः उसके विचारों में ही परिवर्तन हो गया था। मादाम द रेनाल उनसे जुलिये के बारे में ही बातचीत करने लगी। सबसे पहले बड़े बालक के उत्तर से अपने पिछले शिक्षक के लिये मंत्री और दुःख भूलकता था, किन्तु छोटे दोनों उसे लगभग भूल गये थे।

उस दिन सबेरे म० द रेनाल कहीं बाहर नहीं गये। वह निरन्तर घर में ही ऊपर-नीचे आते-जाते तथा किसानों से आलू के सौदे करते रहे। भोजन के समय तक मादाम द रेनाल को अपने बन्दी के लिये एक क्षण का भी समय न मिल सका। भोजन की घण्टी बजने के बाद मादाम द रेनाल को उसके लिये एक प्लेट गरम शोरवा लाने की सूझी। जिस समय वह चुपके-चुपके और बहुत सावधानी से प्लेट लिये हुए उसके कमरे के पास आ रही थीं तो उनका उसी नौकर से सामना हो गया जिसने सबेरे सीढ़ी छिपाई थी। वह भी बरामदे में बहुत ही चुपचाप चल रहा था जैसे कोई आवाज सुन रहा हो। सम्भवतः जुलिये जोर-जोर से कमरे में टहल रहा होगा। नौकर थोड़ा-सा सकपकाकर चला गया। मादाम द रेनाल साहस के साथ जुलिये के कमरे में चली गई। इस घटना की बात सुनकर वह काँप उठा।

“तुम्हें भय लगता है?” वह बोली। “ज़हाँ तक मेरा सवाल है। मैं तो पलक झपकाये बिना बड़े से बड़े सकल का सामना करने को तैयार हूँ। मुझे केवल एक ही भय है। तुम्हारे जाने के बाद जब मैं अकेली रह

जाऊगी तब क्या होगा ?” और वह जल्दी से चली गई ।

आह ! जुलिये भावाभिभूत होकर सोचता रहा कि इस महान् नारी को केवल पश्चात्ताप का ही सबसे बड़ा भय है ।

आखिरकार सन्ध्या हुई । म० द रेनाल कैसिनो चले गये । मादाम द रेनाल ने सिर में बहुत दर्द होने का बहाना बना दिया । वह जल्दी ही बिस्तर पर जाकर पड़ रही और एलिजा को छुट्टी दे दी । कुछ देर बाद उठकर उन्होने जुलिये को कमरे में बुला लिया ।

वह सचमुच ही भूख से अधमरा हो रहा था । मादाम द रेनाल भंडारघर से उसके लिये कुछ रोटी लाने चली गई । जुलिये ने एक जोर की चीख सुनी । मादाम द रेनाल ने लौटकर बताया कि जैसे ही वह अँधेरे में भंडारघर में पहुँची और रोटी की आलमारी खोलने लगी तो उनके हाथ से किसी स्त्री के हाथ का स्पर्श हुआ । वह एलिजा थी, जिसकी चीख जुलिये ने अभी-अभी सुनी थी ।

“वह वहाँ क्या कर रही थी ?”

“शायद मिठाई चुरा रही थी या सम्भवतः हमारे ऊपर जासूसी कर रही हो,” मादाम द रेनाल ने एकदम लापरवाही से उत्तर दिया । “पर तकदीर से मुझे कुछ मिठाई और रोटी मिल गई ।”

“यहाँ तुमने क्या छिपा रक्खा है ?” जुलिये ने उनकी जेबों की और इशारा करते हुए कहा ।

मादाम द रेनाल बिल्कुल ही भूल चुकी थी कि भोजन के समय से ही उनमें रोटी भरी हुई थी ।

जुलिये ने उत्सुकतापूर्वक, बड़ी उत्कटता के साथ उन्हें अपनी बाहों में कस लिया । इतनी सुन्दर वह उसे कभी न लगी थी । वह भाव-मग्न होकर सोच रहा था कि शायद पेरिस में भी मुझे इससे अधिक उत्तम स्वभाव की स्त्री न मिलेगी । उनके व्यवहार में ऐसी प्रेमाभिव्यक्ति की अनम्यस्त नारी का सहज सकोच प्रगट था; साथ ही उसमें वह सच्चा साहस भी स्पष्ट था जो केवल किसी अन्य तथा अत्यधिक भयकर सकट

से भयभीत व्यक्ति में ही होता है ।

जुलिये अभी बड़ी तृप्ति से भोजन कर ही रहा था और उसकी प्रेयसी उसके अल्प भोजन के विषय में उसका मजाक उड़ा रही थी कि कमरे का दरवाजा एकाएक बड़ी जोर से भडभडा उठा । म० द रेनाल आ पहुँचे थे ।

तुमने दरवाजा भीतर से बन्द क्यों कर रखा है ? उन्होंने बाहर से जोर से कहा । जुलिये मुश्किल से सोफे के नीचे खिसकने का समय पा सका ।

“क्या ! तुमने अभी तक कपड़े नहीं बदले,” म० द रेनाल न प्रवेश करते हुए कहा, “यहाँ भोजन कर रही हो और भीतर से दरवाजा बन्द कर रखा है ।”

और कोई अवसर होता तो म० द रेनाल के इन शब्दों से मादाम द रेनाल बहुत परेशान हो उठती । पर इस समय वह जानती थी कि तनिक-सा झुकते ही उनके पति को जुलिये दीख जायेगा । म० द रेनाल सोफे के ठीक सामने उसी कुर्सी पर बैठ गये जिम पर पल भर पहिले जुलिये बैठा था ।

मादाम द रेनाल का सिर दर्द का बहाना हर बात के लिए पर्याप्त था । म० द रेनाल उन्हें कैसिनो में अपने विलियर्ड में जीतने की लम्बी दास्तान सुनाने लगे । तभी मादाम द रेनाल की तीन फीट दूर एक कुर्सी पर रखी जुलिये की टोपी पर नज़र पड़ी । तनिक भी धबराये बिना वह अपने कपड़े उतारने लगी और ठीक मौके पर पति के पीछे जाकर अपने वस्त्र उस कुर्सी के ऊपर डाल दिये ।

आखिरकार म० द रेनाल चले गये । वह जुलिये से अपने शिक्षा-मठ के जीवन की कहानी फिर से दोहराने का अनुरोध करने लगी । “कल मैं तुम्हारी बात ठीक से सुन नहीं रही थी—उस समय तो मैं तुम्हें यहाँ से निकाल देने के लिए अपने आपको समझा-बुझा रही थी ।” आज तो वह असावधानी की मूर्ति बनी हुई थीं । वे लोग बड़ी

जोर-जोर से बाते कर रहे थे । सबेरे दो बजे के लगभग दरवाजे पर बड़ी जोर की खटखट हुई । म० द रेनाल फिर आये थे ।

“जल्दी दरवाजा खोलो और मुझे अन्दर आने दो,” उन्होंने कहा ।
“घर मे चोर घुसे है । से-जियाँ को आज सबेरे एक सीढ़ी मिली थी ।”

“अब अन्त आगया,” मादाम द रेनाल ने जुलिये से चिपककर कहा
“वह हम दोनों को मारने आ रहे है, उन्हें चोरो की बात का विश्वास नहीं । मैं तुम्हारी बाहो मे ही मरूँगी और जीवन की अपेक्षा मेरी मौत अधिक सुखी होगी ।” उनके पति क्रुद्ध हो रहे थे पर उन्हें कोई उत्तर न दिया । जुलिये को उन्होंने कडे उत्कट आलिंगन मे बाँध रक्खा था ।

“स्तानिस्लास की मा को तो बचाना होगा,” जुलिये ने आदेशपूर्ण स्वर मे कहा । “मैं वस्त्र बदलने के कमरे की खिडकी मे सहन में उतर कर बगीचे मे भाग जाऊँगा । कुत्ते मुझे पहचानते है । मेरे कपडो का बडल बनाकर जितनी जल्दी हो सके तुम बगीचे मे फेंक देना । इस बीच उन्हें दरवाजा तोडने दो और देखो कोई बात स्वीकार न करना, मेरी आज्ञा है । निश्चित होने की अपेक्षा उनका सन्देह करने रहना कही अच्छा है ।”

“कूदने से तुम्हारी जान न बचेगी,” उनका एकमात्र उत्तर और एकमात्र चिंता केवल यही थी ।

वह उसके साथ-साथ वस्त्र बदलने के कमरे मे आई, और फिर उसके कपडो को भी छिपा दिया । अन्त मे जब उन्होंने दरवाजा खोला तो उनके पति क्रोध से उबल रहे थे । एक शब्द भी कहे बिना उन्होंने कमरे मे चारो ओर नजर डाली, फिर वस्त्र बदलने के कमरे को देख कर चले गये । जुलिये के कपडे नीचे डाल दिये गये जिन्हें लेकर वह जल्दी से बगीचे के नीचे की ओर दू नदी की दिशा में भाग निकला । दौडते-दौडते उसने गोली की सनसनाहट और कही से बन्दूक चलने की आवाज सुनी ।

यह म० द रेनाल नहीं है, वह सोचने लगा । उनको ऐसा निशाना

लगाना नहीं आता। कुत्ते चुपचाप उसके साथ-साथ दौड़ रहे थे। दूसरी गोली ने एक कुत्ते का पंजा तोड़ दिया, और वह बड़े दर्दनाक ढंग से चिल्लाने लगा। जुलिये वीथि की दीवार कूद गया और कोई पचास कदम तक उसके नीचे-नीचे छिपकर दौड़ता रहा और फिर दूसरी दिशा में तेजी से भागा। उसने परस्पर पुकारती हुई आवाजे सुनी और साफ-साफ अपने शत्रु म० द रेनाल के निजी नौकर को गोली चलाते हुए देखा। उसी समय एक किसान भी दौड़ आया और अन्धा होकर बगीचे के दूसरी ओर दनादन गोलियाँ छोड़ने लगा। किन्तु जुलिये अब तक नदी के किनारे पहुँच चुका था। अब उसने अपने कपड़े पहिन लिये। घन्टे भर बाद वह वेरियेर से तीन मील दूर जिनेवा की सड़क पर था। वह सोच रहा था कि यदि किसी को कोई सन्देह भी हुआ तो पेरिस की सड़क पर मेरी तलाश करेगा।

दूसरा खण्ड

देहाती जीवन के आनन्द

“आप निस्सन्देह पेरिस मेल की प्रतीक्षा कर रहे हैं ?” जिस सराय में जुलिये कुछ नाश्ते के लिये ठहरा था उसके मालिक ने पूछा ।

“आज या कल—मुझे कोई विशेष जन्दी नहीं है,” जुलिये ने उत्तर दिया ।

उदासीनता के इस प्रदर्शन के बीच ही डाक ले जाने वाली घोड़ा-गाड़ी आ पहुँची । उसमें दो आदमियों के लिये जगह खाली थी ।

“अरे, फात्कोज तुम ।” एक जिनेवागामी यात्री ने जुलिये के साथ-साथ ही सवार होने वाले एक अन्य यात्री से कहा ।

“मैं मोचता था,” फात्कोज ने कहा, “कि तुम तो लियो के पास-पड़ोस में ही रोन नदी के किनारे सुन्दर घाटी में बस गये हो ।”

“क्या कहने है बसने के । मैं तो भाग रहा हूँ ।”

“सचमुच । भाग रहे हो ? तुम, से-जीरो, इतने शरीफ दिखाई पड़ने वाले, तुमने भी कोई अपराध कर डाला ?” फात्कोज ने हँसते हुये कहा ।

“बस, यही समझो । मैं प्रान्तों की इस गन्दगी से भाग रहा हूँ । तुम तो जानते ही हो कि मुझे शीतल जंगल और शान्त खेत अच्छे लगते हैं—तुम तो अक्सर मेरे ऊपर रोमांटिक होने का आरोप लगाते रहे हो । मैं अपनी जिन्दगी में राजनीति का नाम तक न लेना चाहता था । और अब राजनीति ही मुझे यहाँ से भगाये दे रही है ।”

सुर्ख और स्याह

“पर तुम्हारी पार्टी कौन-सी है ?”

“कोई नहीं—यही तो मुसीबत है। मेरी राजनीति का निचोड़ यह है मुझे सगीत से प्रेम है, चित्रों से प्रेम है, बढिया पुस्तक मेरे जीवन की प्रमुख घटना होती है। चवालीस के करीब पहुँच गया और अब कितने दिन जीना है ? पंद्रह-बीस—ज्यादा से ज्यादा तीस वर्ष। मेरा विचार है तीस वर्ष में मन्त्रीगण आज की अपेक्षा कुछ अधिक चतुर हो जायेंगे, पर कुल मिलाकर इतने ही भले आदमी रहेंगे। अंग्रेजों का इतिहास इस मामले में मुझे अपने भविष्य का सूचक जान पड़ता है। तब भी अपने विशेष अधिकारों को बढाने की चिन्ता में लगा हुआ राजा और विधान-सभा के सदस्य बनने के महत्वाकांक्षी लोग मौजूद होंगे—और वे इसे उदारपथी विचार रखना और जनता का हितैषी होना कहेंगे। मिराबो ने जो ब्याप्ति और हजारों फ्रैंक अर्जित किये थे उससे इस प्रान्त के धनी व्यक्तियों के सो जाने में बाधा पड़ेगी। उग्र दक्षिणपथी तब भी सामन्त अथवा राजा के दरबारी बनने की लालसा के शिकार रहेंगे। हर व्यक्ति चाहेगा कि राज्य के जहाज को चलाने में उसका भी कुछ न कुछ हाथ रहे, क्योंकि यह धन्ये का काम है। क्या किसी सीधे-सादे यात्री को छोटी-सी जगह कभी न मिलेगी ?”

“बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक। तुम्हारे जैसे शान्तिप्रिय व्यक्ति के लिये तो उसमें बड़ा आनन्द रहा होगा। क्या पिछले चुनाव के कारण तुम्हें यहाँ से भागना पड़ रहा है ?”

“मेरी मुसीबत और भी पुरानी है। चार वर्ष पहले मैं चालीस का था और मेरे पास पाँच लाख फ्रैंक थे। आज मेरी उम्र चार वर्ष अधिक है और सम्भवतः वे पाँच लाख फ्रैंक गायब हैं। रोन के समीप मौतफलरी वाले मकान से मुझे इतना ही नुकसान होने वाला है। कैसी बढिया स्थिति है !”

“पेरिस में मैं उस अन्तहीन भड़ैती में, जिसे आप उन्नीसवीं शताब्दी की सभ्यता कहते हैं, अभिनय करते-करते उकता गया था। मैं सहज,

शात और सरल जिन्दगी के लिये बेचैन था। इसलिये मैंने रोन के पास पहाड़ियों में एक जायदाद खरीदी। इससे बढ़िया और क्या बात हो सकती थी ?

“छः महीने तक गाँव के धर्माधिकारी और देहाती जमींदार मेरी खुशामद में लगे रहे, मैं उन्हें प्रायः भोजन के लिये निमन्त्रित करता रहता था। मैं उनसे कहता, “पेरिस मैं छोड़ आया। इसलिये अब जिन्दगी में कभी राजनीति की चर्चा नहीं सुनूँगा। आप तो जानते ही हैं, मैं कभी अखबार भी नहीं मँगवाता। डाकिया जितनी कम चिट्ठियाँ लाये उतना ही मुझे अधिक सन्तोष होता है।

“पर धर्माधिकारी इसके लिये तैयार न थे। शीघ्र ही मेरे खिलाफ तरह-तरह की अजियाँ और दावे न जाने क्या-क्या शुरू हो गये। मैं दो-तीन सौ फ्रैंक सालाना गरीबों के लिये देना चाहता था। यह रकम मुझे से जोसिफ अथवा कुमारी मेरी की गिल्ड जैसी तरह-तरह की धार्मिक संस्थाओं को देने की सलाह दी गई। मैंने इन्कार किया; तो वे मुझे सैकड़ों तरह से गालियाँ देने लगे। मैंने भूखता यह की कि इस बात ने चिट गया। मेरे लिये पहाड़ियों की सुन्दरता का आनन्द उठाने के लिये सबेरे उठकर बाहर जाना कठिन हो गया। जैसे ही मैं घर में बाहर पैर रखता, कोई न कोई ऐसी बेहदा बात हो जाती जो मुझे सपनों की दुनिया से घसीटकर मनुष्यों और उनके द्वेषपूर्ण तरीकों की बुरी तरह याद दिला देती।

“उदाहरण के लिये धार्मिक त्यौहारों के अवसर पर मेरे खेतों को इसलिये आशीर्वाद न दिया जाता क्योंकि धर्माधिकारियों की दृष्टि में उनका स्वामी एक अधार्मिक व्यक्ति था। किसी बूढ़ी धार्मिक किसान औरत की गाय मर गई तो वे लोग कहने लगे कि यह पेरिस से आने वाले एक नास्तिक पतित व्यक्ति के तालाब के कारण हुआ है। हफ्ते भर बाद मैंने देखा कि उस तालाब की सारी मछलियाँ मरी हुई ऊपर तैर रही हैं। किसी ने उन्हें चूने का जहर दे दिया था। मतलब है कि मुझे हर

तरह से दुखी और परेशान किया गया। स्थानीय न्यायाधिकारी आदमी भला था, पर नौकरी जाने के डर से हमेशा मेरे खिलाफ फैसला देता था। शान्तिपूर्ण खेत मेरे लिये नरक बन गये। एक बार पता लगा कि धर्माधिकारी ने, जो गाँव के धर्म-संघ का प्रधान भी होता है, मुझे सघ से बाहर करने का ऐलान किया और उदारपथियों के प्रधान, एक अवकाशप्राप्त फौजी कप्तान ने इस बात में मेरा समर्थन न किया। फिर तो सब मेरे ऊपर टूट पड़े, यहाँ तक कि वह मिस्त्री भी जिसे मैंने साल भर तक रोजी दिलाने में मदद की थी, और वह लोहार भी जो जब भी मेरा हल ठीक करने आता तो कुछ न कुछ बेईमानी जरूर करता और फिर बच भी निकलता।

“कुछ लोगों का समर्थन प्राप्त करने के लिये और कम से कम अपने कुछ मुकदमों जीतने के लिये मैं उदारपथी हो गया। पर जैसा तुमने कहा तभी चुनाव आ पहुँचे और वे लोग मुझ से वोट माँगने लगे...”

“किसी ऐसे व्यक्ति के लिये जिसे तुम जानते न थे?”

“नहीं, नहीं, ऐसे व्यक्ति के लिये जिसे मैं अच्छी तरह से जानता था। मैंने इन्कार कर दिया। इससे बड़ी धृष्टता और क्या हो सकती थी? उसी क्षण से उदारपथी भी मेरे दुश्मन हो गये और मेरी स्थिति असहनीय हो उठी। मुझे पक्का यकीन है कि धर्माधिकारी यदि मेरे ऊपर नौकरानी की हत्या करने का आरोप लगाता तो भी दोनों पार्टियों के कम से कम बीस गवाह खड़े हो जाते जो अपनी आँखों से मुझे अपराध करते देखने की सौगन्ध खा जाते।”

“तो तुम देहात में रहने पहुँचे थे पर अपने पड़ोसियों की बात सुनने को तैयार न थे? इससे बड़ी गलती और क्या हो सकती थी!”

“जो हो, मैंने वह भूल सुधार ली है। मौतपलरी अब बिकाऊ है। मैं पचास हजार फ्रैंक का नुकसान उठाने को तैयार हूँ, पर मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं। ढोंग और छोटी-छोटी परेशानियों के इस नरक से तो पीछा छूटेगा। एकान्त और देहाती शांति की खोज मैं अब नहीं

करूँगा एकमात्र जहाँ वे फ्रांस में पाई जाती हैं—यानी शाजेलिजे के किसी चौमज़िले मकान में। और साथ ही मैं इस विचार में भी डूबा हुआ हूँ कि लरुल जिले के निवासियों में पवित्र रोटी वितरण करके मैं अपना राजनीतिक जीवन फिर से क्यों न शुरू करूँ।”

“बोनापार्ट के जमाने में ऐसी परेशानी तुम्हें न होती,” फाल्कोज़ ने कहा। उसकी आँखें क्रोध और खेद से चमक उठी थी।

“हो सकता है, पर वह तुम्हारा बोनापार्ट फिर कैसे हार गया ? आज मुझे जो कुछ भी सहना पड़ता है सब उसी का दोष है।”

यह बात सुनकर जुलिये ने अपने कान और भी ध्यान से उस तरफ लगा दिये। पहले शब्द से ही वह समझ गया था कि यह बोनापार्ट—यही फाल्कोज़ म० द रेनाल का बच्ची बचपन का दोस्त है जिससे १८१६ में उनका भगडा हो गया था। और यह में जिरो ज़िलाधीश के दफ्तर में काम करने वाले उन्हीं बड़े बाबू का भाई होगा जो सस्ते दामों में कम्यून में मकान लेने के काम में इतने दक्ष थे।

“यह सब तुम्हारे बोनापार्ट की ही करतूत है,” से-जिरो कहे जा रहा था, “कोई भला आदमी जो किसी के लेने में हो न देने में, जिसकी चालीस की अवस्था हो और पाँच लाख फ्रैंक जिसकी गाँठ में हो, प्रान्तों में कहीं भी आराम से जिन्दगी नहीं बिता सकता। पुरोहित और मामन्त मिलकर उसे निकाल बाहर कर देंगे।”

“ओहो ! उसकी बुराई न करो,” फाल्कोज़ ने कहा। उसके तेरह वर्ष के राज में फ्रांस की जितनी इज़्जत विदेशों में हुई वैसी कभी न हो सकी। उस समय लोग जो भी काम करते थे उसमें एक तरह की महानता होती थी।”

“तुम्हारे सम्राट्,” चवालीस वर्ष के व्यक्ति ने उत्तर दिया, “या तो लडाई के मैदान में महान् थे या १८०२ में, जब उन्होंने माली हालत में सुधार किया। पर उसके बाद से उनकी हरकतों का क्या अर्थ था ? वही सब दरबारी, वही ठाठ-बाट, वही त्विलरी में दाबदें—राजशाही की

सारी निकम्मी बाते फिर मौजूद थीं। यह ठीक है कि यह उन बातों का अधिक परिष्कृत रूप था तथा सौ-दो-सौ साल और भी चल सकता था। आज के सामन्त और पुरोहित पुराने रूप को ही फिर से अपना रहे हैं, पर उनके पास वह शक्ति नहीं है जिससे लोगों को वे यह सब स्वीकार करने के लिए बाध्य कर सकें।”

“तुम्हारे भीतर का पत्रकार फिर बोल रहा है।”

“कौन छीन रहा है आज मुझसे मेरी जायदाद?” पत्रकार ने क्रुद्ध स्वर में पूछा, ‘वे ही पुरोहित जिन्हें नैपोलियन ने फिर से प्रतिष्ठित किया। डाक्टरों, वकीलों, ज्योतिषियों के विषय में तो राज्य यह नहीं सोचता कि वे किस प्रकार अपनी आजीविका उपार्जन करते हैं। पर पुरोहितों को भी इसी भाँति केवल नागरिक मानने के बजाय नैपोलियन ने उन्हें फिर से पुरानी प्रतिष्ठा प्रदान कर दी। यदि तुम्हारे बोनापार्ट ने नये बैरन और काउन्ट न बनाये होते तो कोई घमण्डी सामन्त आज बाकी बचता नहीं। उस सबका तो फैशन ही हट गया था। पुरोहितों के बाद इन छोटे-छोटे देहाती सरदारों ने ही मुझे सबसे अधिक कष्ट दिया और उदारपथी बनने को बाध्य किया।”

इस वार्तालाप का कोई अन्त ही न था। इस विषय में तो फ्रांस के निवासी आधी शताब्दी तक और उलझे रहेंगे। से-जिरो यही दोहराता रहा कि किस प्रकार प्रान्तों में रहना सम्भव है। बीच में कुछ सकोच के साथ जुलिये ने म० द रेनाल का नाम उदाहरण के तौर पर लिया।

“कमाल है महाशय, आप तो बेहद सीधे जान पड़ते हैं,” फाल्कोज़ ने चौक कर कहा। “वह तो निहाई बनने से बचने के लिये बड़ा भारी हथौड़ा बन गया है। पर आजकल वालनो उसे पछाड़ने में लगा है। आप जानते हैं उस शैतान को? असली माल है। यदि किसी दिन म० द रेनाल को निकालकर म० वालनो को उनकी जगह बैठा दिया जाय तो उनका क्या हाल होगा?”

“फिर कोई उसकी बात न पूछेगा,” से-जिरो ने कहा। आप

वेरियेर से परिचित जान पड़ते हैं ? जो हो, बोनापार्ट ने ही—भगवान् उसका बुरा करे ! —उसने और उसकी तमाम राजमी टीमटाम ने ही रेनालो और शेलाओ का शासन सम्भव बनाया जिसने अब बालनो और मासलो जैसे लोगो का राज्य स्थापित कर दिया है ।”

इस वार्तालाप के निराशा भरे राजनीतिक रुझान से जुलिये को विस्मय हुआ और उसका ध्यान अपने आशक्तिपूर्ण स्वप्नो से हट गया । पेरिस के इस दूरागत प्रथम रूप से वह बहुत प्रभावित न हुआ । उसकी कल्पना ने भावी जीवन के जो स्वप्न बना रखे थे उनका वेरियेर में मिछले चौबीस घण्टो की स्मृति के साथ सघर्ष चल रहा था । उसने मन ही मन सौगन्ध खाई कि यदि धर्माधिकारियो की अदूरदर्शिता के कारण फ्रांस में फिर से लोकतन्त्र की स्थापना हुई और मामन्तो के ऊपर अत्याचार शुरू हुआ तो वह अपनी प्रेयसी के बच्चों का साथ कभी न छोड़ेगा और उनके लिये हर वस्तु का त्याग करने को उत्थान रहेगा ।

वह आश्चर्य से सोचने लगा कि उस दिन रात वेरियेर में पहुँचने पर मादाम द रेनाल के कमरे की खिड़की के सहारे सीढ़ी टिकाने के बाद यदि उस कमरे में किसी अजनबी अथवा स्वयं म० द रेनाल ने भेंट हो जानी तो क्या होता ? किन्तु तो भी उन पहले दो घण्टो का आनन्द कितना अपूर्व था जब उसकी प्रेयसी सचमुच उसे वहाँ से भगा देना चाहती थी और वह अँवरे में उनकी बगल में बैठा हुआ उनमें अनुनय कर रहा था । ऐसी स्मृतियाँ जुलिये जैसे व्यक्ति के हृदय में जीवन भर मँडराती रहेगी । अपनी प्रेयसी से इस भेंट का बाकी अग उसके मन में कोई चौदह महीने पूर्व प्रेम के प्रारम्भिक दिनों की स्मृतियों के साथ गडमड हो गया था ।

एकाएक गाडी के थमने से जुलिये की विचार-निद्रा टूटी और वह चौंका । गाडी ने ह ज्या-झाक-रुस्तो, में प्रवेश किया था । उसने उतर कर एक किराये की गाडी को बुलाया । “मुझे मान्मेजों जाना है ।” उसने कहा ।

“इस समय, महाशय, वहाँ आपको क्या काम है ?”

“इससे तुम्हे कोई मतलब नहीं, चलो ।”

समस्त सच्चे भावावेश में अपने अतिरिक्त और कुछ विचारने की शक्ति नहीं होती । मुझे लगता है कि इसी कारण पेरिस में, जहाँ आपके पड़ोसी मदा आपका इतना अधिक ध्यान माँगते हैं, भावावेश इतने अनुपयुक्त लगते हैं । मैं मात्मेजो को देखकर होने वाले जुलिये के भावावेश का वर्णन न करूँगा । उसकी आँखों में आँसू भर आये थे । क्या ! उन गन्दी सफेद दीवारों के बावजूद, जो उसी वर्ष बनाई गई थी और जिन्होंने पार्क को अलग-अलग टुकड़ों में बाँट दिया था, वह कितना सुन्दर था । जी हाँ, भावी पीढ़ियों की भाँति जुलिये के लिये भी आर्कोला, सेतेलेना और मात्मेजो के बीच कोई चुनाव सम्भव न था ।

उस दिन शाम को किसी थियेटर में प्रवेश करने के पहले जुलिये बहुत देर तक हिचकचाता रहा । पतन के इस स्थान के विषय में उसके मन में बड़ी विचित्र धारणाएँ थी । गहरे सन्देह के कारण जीवित वर्तमान के पेरिस को अच्छा मानने में उसे कठिनाई हो रही थी, अपने नायक द्वारा छोड़े हुए स्मारकों ने ही उसे प्रभावित किया था । वह सोचने लगा कि मैं पाखण्ड और षड्यन्त्र के केन्द्र इस नगर में आ पहुँचा हूँ । यहाँ आबे द फ़िलेर के सरक्षकों का ही बोलबाला है ।

वहाँ पहुँचने के तीसरे दिन शाम को उसकी फादर पिरार से मिलने के पहले ही हर वस्तु को देख लेने की योजना के ऊपर उसके कौतूहल ने विजय पा ली । आबे ने रूखे स्वर में उसे बताया कि मार्कि द ला मोल के घर में उसे कैसा जीवन बिताना होगा ।

“कुछ महीनों के बाद भी यदि तुम उपयोगी सिद्ध न हुए तो तुम्हें शिक्षा-मठ लौटना होगा यद्यपि इस बार सामने के द्वार से प्रवेश कर सकोगे । तुम्हें मार्कि के घर में ही रहना है । उनकी गिनती फ्रांस के सबसे बड़े सामन्तों में होती है । तुम्हें काले वस्त्र पहनने होंगे, पुरोहित की भाँति नहीं, बल्कि शोकग्रस्त व्यक्ति की भाँति । सप्ताह में तीन बार

तुम्हे अपने धर्म-शास्त्र के अध्ययन को जारी रखने के लिये एक शिक्षा-मठ भी जाना होगा, जिसके लिये मैं तुम्हे एक परिचय-पत्र दे दूँगा। रोज बारह बजे दिन को तुम्हे मार्कि के पुस्तकालय में बैठना होगा जहाँ वह तुम्हे अपने मुकदमों तथा अन्य कामकाज के सम्बन्ध में पत्र लिखने के काम में लगाना चाहते हैं। मार्कि को जो पत्र मिलने हैं उनके एक किनारे पर वह सक्षिप्त टिप्पणी लिख देते हैं जिससे यह ज्ञात हो जाता है कि वह उस पत्र का कैसा उत्तर चाहते हैं। मैंने उन्हें इस बात का आश्वासन दिया है कि तीन महीने के भीतर ही तुम इन पत्रों का ऐसा उत्तर तैयार करने लगोगे कि मार्कि के पास यदि तुम बारह पत्र ले जाओ तो उनमें से कम से कम आठ या नौ पर वे अपने हस्ताक्षर तुरन्त कर सकें। रोज शाम को आठ बजे तुम उनकी लिखने की मेज को व्यवस्थित करोगे और दस बजे तुम्हें छुट्टी मिल जायेगी।

“यह सम्भव है,” फादर पिरार ने आगे कहा, “कि कोई बूढ़ी स्त्री अथवा मिष्टभाषी व्यक्ति यह इशारा करे कि यदि तुम मार्कि के पास आने वाले पत्र उसे दिखा दो तो तुम्हें बहुत लाभ हो सकता है, या वे सीधे-सीधे तुम्हें बहुत-सा सोना देने का प्रस्ताव ही करें……”।

“ओह !” जुलिये ने कहा। उसका चेहरा लज्जा से लाल हो उठा।

“यह बड़े आश्चर्य की ही बात है,” फादर पिरार ने कड़वी मुस्कराहट के साथ कहा, “कि गरीबी और शिक्षा-मठ की एक वर्ष की जिन्दगी के बावजूद तुम्हारे मन में इतना सच्चा क्षोभ अभी बाकी है। सच, तुम बहुत ही अचे रहे होगे।”

“क्या यह इसके रक्त में है ?” फादर पिरार ने बहुत ही धीमे में मानो अपने आप से कहा, फिर वह जुलिये की ओर देखते हुए बोले, “अजीब बात यह है कि मार्कि तुम्हें जानते हैं—पता नहीं कैसे। शुरू में वह तुम्हें सौ लुई वेतन देंगे। वह मजदूर-मौजी व्यक्ति हैं—यही उनका मुख्य दोष है। बचपने के काम करने में वह तुमसे झोड़ करेंगे। पर यदि वह तुमसे सन्तुष्ट हो गये तो तुम्हारा वेतन आठ हजार फ्रैंक तक हो

सकता है ।

“पर यह बात तुम भली भाँति जानते हो,” आबे ने तीखे स्वर में आगे कहा, “कि यह सब धन वह तुम्हें प्रेम के कारण नहीं दे रहे हैं । तुम्हें अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध करनी होगी । यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता तो कम से कम बोलता और जिस विषय को न जानता उसके बारे में कभी मुँह ही न खोलता ।

“और हाँ, देखो,” फादर पिरार ने कहा, “मैंने तुम्हारे लिये कुछ जानकारी भी इकट्ठी कर रखी है । म० द ला मोल के परिवार के विषय में बताना तो मैं भूल ही रहा था । उनकी दो सन्तानें हैं, एक कन्या और एक उन्नीस वर्षीय पुत्र जो बहुत ही ठाट-बाट का और एक-दम सनकी नौजवान है । उसे पता नहीं कि घंटे भर बाद वह क्या करेगा । वह बुद्धिमान भी है और वीर भी, स्पेन की लड़ाई में उसने भाग लिया था । मार्कि को आशा है—पता नहीं किस कारण कि कौत-नौवें से तुम्हारी मित्रता हो जायेगी । मैंने उन्हें बताया था कि तुम लैटिन अच्छी जानते हो । सम्भवतः वह सोचते हैं कि तुम उनके बेटे को सिसरो या वर्जिल पर आधारित कुछ एक तैयार वाक्य सिखा दोगे ।

“मैं तुम्हारी जगह होता तो इस नौजवान को कभी अपनी हँसी न उड़ाने देता, उसे मित्रता के निमन्त्रणों को, जो हल्के-से व्यगपूर्ण होने पर भी सर्वथा शिष्ट होंगे, स्वीकार करने के पहले मैं इस बात की प्रतीक्षा करता कि वह उन्हें एक से अधिक बार दोहराएँ । यह बात मैं तुम से छिपाना नहीं चाहता कि कौत द ला मोल तुम्हारे निम्न मध्य-वर्गीय परिवार के होने के कारण शुरू में तुम्हें हीनता की दृष्टि से देखेंगे । उनके पूर्वज राज-दरबार से सम्बद्ध थे और राजनीतिक षड्यन्त्र में भाग लेने के कारण उन्हें २६ अप्रैल १५७४ को प्लास द ग्रेव में बध किये जाने का सम्मान मिला था । तुम स्वयं बेरियर के एक बड़ई के बेटे हो और साथ ही उसके पिता के यहाँ नौकर । इस अन्तर को भली भाँति तोल लेना, और मोररि की पुस्तक में इस परिवार का इतिहास पढ़

लेना । इस घर में भोजन के लिये आने वाले सारे पिटू इस ग्रथ का बीच-बीच में उल्लेख करते रहते हैं ।

“कौत नौर्वेर के हूँसी-मज्जाक का जवाब देने में सावधानी बरतना । वह सेना में मेजर है और राज्य के भावी सामन्त— बाद में मुझ से आकर शिकायत न करना ।”

“ऐसा जान पड़ता है,” जुलिये ने गहरा लाल पड़ते हुए कहा, “कि मुझे हीन समझने वाले व्यक्ति को मुझे उत्तर ही न देना चाहिये ।”

“तुम्हें उस प्रकार के तिरस्कार का अभी कोई अनुभव नहीं है । वह केवल अतिरजित प्रशंसा में ही प्रगट होती है । मूर्ख व्यक्ति उस प्रशंसा को सच मान बैठता है । पर यदि तुम इस दुनिया में उन्नति करना चाहते हो तो उसे सच ही मानकर चलना चाहिये ।”

“यदि किसी दिन यह सब बरदाश्त के बाहर हो जाय,” जुलिये ने कहा, “और यदि मैं अपनी १०८ न० की कोठरी को वापिस जाना चाहूँ तो क्या यह अकृतज्ञता समझी जायेगी ?”

“निस्सन्देह,” फादर पिरार ने उत्तर दिया, “इस घर के सब खुशामदी तुम्हारी बुराई करेंगे । पर मैं स्वयं तुम्हारा पक्ष लूँगा और कहूँगा कि तुम्हारा निर्णय मेरे कहने से हुआ है ।”

जुलिये फादर पिरार के तीखे और लगभग द्वेषपूर्ण स्वर से बहुत दुःखी हुआ । उसके कारण उनके अन्तिम उत्तर का प्रभाव लगभग नष्ट हो गया । सच बात यह है कि जुलिये के प्रति अपने स्नेह के कारण आबे के मन में बड़ा आन्तरिक संघर्ष था और वह एक प्रकार के धार्मिक भय के साथ ही दूसरे व्यक्ति के जीवन में इतने सीधे-सीधे हस्तक्षेप करते थे ।

“तुम्हारी मादाम द ला मोल से भेंट होगी,” उन्होंने उसी रुढ़ स्वर में अगो कहा मानो कोई कष्टदायक कर्तव्य निभा रहे हो । “वह ऊँचे कद की सुन्दर महिला हैं, धार्मिक अहंकारिणी, अत्यन्त विनम्र और उससे भी अधिक महत्त्वहीन । वह वृद्ध डुक द क्षेन की पुत्री हैं जो

अपने अभिजात पूर्वाग्रहों के लिये इतने प्रसिद्ध है। यह महिला एक प्रकार से उस वर्ग की स्त्रियों में पाई जाने वाली मुख्य विशेषताओं की प्रति-मूर्ति हैं। वह स्वयं कभी अपने इस मत को नहीं छिपाती कि जिन लोगों के पूर्वजों ने धार्मिक युद्धों में भाग लिया वही श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण है। संपत्ति इससे बहुत पीछे कही आती है। क्या इससे तुम्हें आश्चर्य होता है? यह कोई प्रान्तीय शहर नहीं है।

“उनके ड्राइगरूम में तुम बहुत से सामान्तों को राजाओं के विषय में बड़ी तुच्छता के भाव से चर्चा करते हुए पाओगे। जहाँ तक मादाम द ला मोल का प्रश्न है वह जब भी किसी राजकुमार और विशेष रूप से किसी राजकुमारी का नाम लेती है, तो सम्मानपूर्वक अपनी आवाज को धीमा कर लेती हैं। मैं तुम्हें इस बात की सलाह न दूंगा कि तुम उनके सामने फिलिप अथवा हेनरी आठवें को राक्षस कहो। वे लोग बादशाह थे और इसलिये उन्हें तुम्हारे और मेरे जैसे छोटे परिवारों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों से सम्मान पाने का अतर्क्य अधिकार है। किन्तु हम लोग पुरोहित हैं,” म० पिरार ने कहा, “वह तुम्हें इसी रूप में मानेगी, इस पद के कारण वह हम लोगों को अपनी मुक्ति के लिये आवश्यक उच्च-वर्गीय सेवक समझती है।”

“मुझे लगता है,” जुलिये ने कहा, “मैं पेरिस में अधिक दिन न ठहर सकूँगा।”

“वह जो भी हो, किन्तु इस बात का ध्यान रहे कि हमारे धन्धे में कोई व्यक्ति इन सामान्त-सरदारों की सहायता के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। तुम अपने चरित्र की उस विशेषता के कारण, जिसे कम से कम मैं ठीक-ठीक बताने में असमर्थ हूँ, यदि तुमने उन्नति नहीं की तो तुम बलेश पाओगे। तुम्हारे लिये कोई बीच का रास्ता नहीं है। अपने आपको धोखा न देना। लोगों की किसी बात से तुम्हारा प्रसन्न न होना तुरन्त प्रगट हो जाता है। अपने इस मिलनसार देश में यदि तुम ऐसी स्थिति प्राप्त न कर सके जिसमें लोग तुम्हारा सम्मान करें तो तुम्हारे लिये दुःख

अनिवार्य है ।

“माकिं द ला मोल के इस मनमौजीपन के बिना बजासो मे तुम्हारा क्या हाल होता ? एक दिन तुम समझोगे कि तुम्हारे लिये जो कुछ वह कर रहे हैं वह कितना असाधारण है, और यदि तुम अमानुषिक पशु नहीं हो तो तुम चिरकाल तक उनके और उनके परिवार के कृतज्ञ रहोगे । तुम्हारे जैसे ही गरीब और तुम से अधिक विद्वान् पुरोहित पेरिस मे न जाने कितने हैं जिन्हे प्रार्थना के लिये पद्रह और सोवॉन्न मे उपदेश देने के लिये दस सू मिलते है । याद है, पिछले जाडो मे मैंने तुम्हे उस घूर्त कार्डिनल दुव्वा के प्रारम्भिक जीवन के बारे मे क्या बताया था ? क्या अपने अहंकार मे तुम यह सोचते हो कि तुम उससे भी अधिक प्रभावशाली हो ?

“उदाहरण के लिये, मै स्वयं तो शान्त स्वभाव का मध्यम दर्जे का व्यक्ति हूँ । मैंने शिक्षा-मठ में ही जीवन के अन्तिम दिन बिताने का विचार किया था । पर मैंने यह मूर्खता की कि शिक्षा-मठ से आत्मीयता अनुभव करने लगा । जिस समय मैंने अपना त्याग-पत्र भेजा था उन दिनों में निकाला ही जाने वाला था । जानते हो, बेरे पास उस समय कुल कितनी संपत्ति थी ?—कुल मिलाकर पाँच सौ बीस फ्रैंक, न कम न अधिक । और कोई भी नहीं, मित्र तथा परिचित भी मुश्किल से दो या तीन । म० द ला मोल ने ही, जिन्हे मैंने कभी देखा भी न था, इस सकट से मुझे उबारा । उनके मुँह से एक शब्द निकलने की देर थी कि मुझे ऐसी जगह नियत कर दिया गया जहाँ के निवासी स्वतन्त्र-पीते हैं और बड़े-बड़े दोष अपेक्षाकृत बहुत कम हैं । अब अपने काम को देखते हुए जो वेतन मुझे मिलता है उससे मुझे लज्जा होती है । इतने बिस्तर से ये सब बातें मैं तुम्हे इसलिये सुना रहा हूँ कि तुम्हारे इस माथे मे कुछ अक्ल आये ।

“बस एक शब्द और—दुर्भाग्यवश मैं कुछ ज्यादा झगड़ालू हूँ । यह सम्भव है कि हम दोनों मे आपस मे बोलचाल बन्द हो जाये । यदि

मार्किज के अहंकारपूर्ण व्यवहार अथवा उनके पुत्र के द्वेष-पूर्ण हँसी-मजाक के कारण यहाँ रहना तुम्हारे लिए सचमुच अहसनीय हो जाय तो मेरी सलाह है कि तुम पेरिस के सौ मील के भीतर ही, और दक्षिण की अपेक्षा उत्तर की ओर, किसी शिक्षा-मठ में अपना अध्ययन पूरा करना। उत्तर में सम्यता अधिक है और मैं यह स्वीकार करता हूँ," उन्होंने अपने स्वर को धीमा करते हुए कहा, "कि पेरिस के समाचार-पत्रों के समीप होने के कारण छोटे-छोटे अत्याचारियों के हृदय में भय बना रहता है।

"यदि हमें एक-दूसरे के सम्पर्क से आनन्द मिलता रहा और तब म० द ला मोल के घर में रहना तुम्हारे लिये कठिन हो तो मैं तुम्हें अपने यहाँ क्यूरे बना सकता हूँ और वहाँ जो कुछ मिलता है उसमें से आधा तुम्हें दे सकता हूँ। बजासो में तुमने जो वह अद्भुत प्रस्ताव किया था उसके कारण इतना बल्कि इससे भी अधिक का मैं तुम्हारा ऋणी हूँ," उन्होंने जुलियों के कृतज्ञता-प्रकाश को बीच ही में काटते हुए कहा। "उस समय यदि पाँच सौ बीस फ्रैंक के स्थान पर मेरे पास कुछ भी न होता तो तुम्हारे प्रस्ताव के फलस्वरूप मेरी जान बच जाती।"

फादर पिरार की आवाज का वह काटने वाला स्वर गायब हो चुका था। यह देख जुलियों को बहुत सकोच हुआ कि उसकी आँखों में आँसू उमड़े आ रहे हैं। वह अपने बन्धु के हृदय से लगने के लिये बेचैन हो उठा। यथासम्भव पुरुषोचित स्वर में ये शब्द बरबस उसके मुँह से निकल पड़े : "मेरे पिता जन्म से ही मुझसे घृणा करते रहे, यह मेरा सब से बड़ा दुर्भाग्य है। पर अब मैं अपने भाग्य की कभी निन्दा नहीं करूँगा। आप जैसा बन्धु मुझे मिल गया है।"

"अच्छी बात है, अच्छी बात है" फादर पिरार ने कुछ सकोच से कहा और फिर शिक्षा-मठ के अध्यक्ष के योग्य शब्दावली में वह बोले : "तुम्हें, बेटे, भाग्य का नहीं, बल्कि बिघाता का उल्लेख करना चाहिये।" गाड़ी ठहर गई। कोचवान ने एक बड़े भारी द्वार पर खटखटाने

का पीतल का डडा उठाया। यह द ला मोल भवन था। सड़क से आने-जाने वालों को किसी सन्देह का अवसर न देने के लिये उसका नाम दरवाजे के ऊपर एक काले सगमरमर के पत्थर पर पढा जा सकता था।

यह ऐश्वर्य-प्रदर्शन जुलिये को अच्छा न लगा। ये लोग जैकोबिनों से कितना डरते हैं ! उन्हें हर भाड़ी के पीछे रोस्पियेर अपना दण्ड-शस्त्र लिये दीखता है—कभी-कभी तो इतना अधिक कि हँसते-हँसते दम निकलने लगता है। किन्तु तो भी वे अपने निवासस्थान का विज्ञापन ऐसे करते हैं कि यदि क्रांति हो जाय तो लोग आसानी से उन्हें ढूँढ लें और लूटें। यह बात उसने फादर पिरार को भी सुना दी।

“आह बेटे, देखता हूँ, जल्दी ही मुझे तुम्हें अपना क्यूरे बनाना पड़ेगा। कैसा भयंकर विचार तुम्हारे मन में उदित हुआ है।”

“मुझे तो इससे सरल कोई बात नहीं सूझती,” जुलिये ने कहा।

अनुचर की गम्भीरता और विशेषकर अहाते की स्वच्छता से वह आश्चर्यचकित रह गया। सूरज तेजी से चमक रहा था।

“कैसा अद्भुत स्थापत्य है !” उसने अपने बन्धु से कहा।

वह फौवर सैं-जेमें एक बड़े निजी मकान की ओर सकेत कर रहा था। उस तरह के मकान बोल्तेर की मृत्यु के आस-पास के युग में बनाये गये थे और उनका अग्रभाग बड़ा साधारण लगता था। शायद प्रचलित रुचि और सौन्दर्य में इतनी भारी दूरी कभी न उत्पन्न हुई हो।

: २ :

समाज में प्रवेश

जुलिये अहाते के बीचोंबीच मुँह फाड़े खड़ा देखता रह गया ।

“जरा समझदारी से काम लो,” फादर पिरार ने कहा, “पहले तो ऐसी भयकर बातें सोचने लगे और अब बिल्कुल बच्चों जैसे बन गये । क्या तुम होरेस का यह कथन भूल गये कि कभी उत्साह का प्रदर्शन न करो ? जरा सोचो कि ये सब नौकर-चाकर तुम्हें यहाँ ऐसे खड़े देखकर तुम्हारी कितनी हँसी उड़ायेंगे ? उन्हें लगेगा कि उन्हीं के दर्जे के किसी आदमी को अनुचित रूप से उनके ऊपर नियुक्त कर दिया गया है । भले स्वभाव की आड़ में उचित सलाह देने और ठीक दिशा दिखाने के बहाने वे तुम्हें किसी न किसी भयकर भूल में फँसाने का प्रयत्न करेंगे ।”

“मैं भी देखूँगा कैसे करते हैं,” जुलिये ने अपने होठ काटते हुए कहा, उसका पुराना सारा विश्वास लौट आया था ।

प्रिय पाठको, पहली मजिल के जिन स्वागत-कक्षों में होकर इन दो व्यक्तियों को मार्कि के अध्ययन-कक्ष तक पहुँचने के लिये जाना पड़ा वे आपको जितने शानदार लगते उतने ही उदासी-भरे भी जान पड़ते । यदि कोई आपसे उनमें इसी रूप में रहने का प्रस्ताव करता तो आप शायद उसे अस्वीकार ही कर देते । वे लम्बी-लम्बी जमुहाइयो और नीरस तर्क-जाल के प्रदेश हैं । जुलिये उन्हें देखकर मंत्रमुग्ध-सा था । वह सोचने लगा कि ऐसे ऐश्वर्य के स्थान में रहने वाले लोग कैसे दुखी हो सकते हैं ।

अन्त में वे इस सुन्दर भवन के एक सबसे कम आकर्षक कमरे के पास

आ पहुँचे, जिसमें घूप मुश्किल से प्रवेश कर पाती थी। वहाँ उन्होंने एक दुबले-पतले और प्रखर दृष्टि वाले व्यक्ति को देखा जिसने हल्के-से सुनहले रंग के नकली बाल लगा रखे थे। फादर पिरार ने जुलियों की ओर मुड़कर उसका परिचय कराया। यही थे मार्कि। वह इतने सौजन्यपूर्ण दिखाई पड़ रहे थे कि जुलियों को उन्हें पहिचानने में बड़ी कठिनाई हुई। इस समय वह ब्रेन्ल-ओ के आबे के अहकारी स्वामी नहीं थे। जुलियों को लगा कि उनके कृत्रिम केशों में बहुत अधिक बाल हैं और इस धारणा के फलस्वरूप वह तनिक भी अप्रतिभ न हो पाया।

हेनरी तृतीय के मित्र के ये वशधर पहले तो उमें बड़े खराब कपड़े पहने हुए जान पड़े। वह दुर्बलकाय व्यक्ति थे और उनके हाथ-पैर हिलते-डुलते रहते थे। किन्तु जुलियों ने शीघ्र ही यह अनुभव किया कि मार्कि में समक्ष व्यक्ति को प्रिय लगने वाली विनम्रता स्वयं बजासो के बिशप से भी कहीं अधिक है।

यह भेट तीन मिनट से भी कम चली। बाहर जाते-जाते फादर पिरार ने जुलियों से कहा, “तुम मार्कि की ओर ऐसे ताक रहे थे मानी कोई चित्र हो। यहाँ जिन बातों को ये लोग आचार-व्यवहार कहते हैं, उनके विषय में मैं अधिक नहीं जानता—शीघ्र ही तुम मुझ से कहीं अधिक जान जाओगे—किन्तु निस्सन्देह तुम्हारी दृष्टि की साहसिकता मुझे थोड़ी-सी अविनीत जान पड़ी।”

वे लोग फिर गाड़ी में बैठ गये, कोचवान ने पीछे के परदे गिरा दिये। फादर पिरार जुलियों को लेकर एक बड़े भारी स्वागत-कक्ष में पहुँचे जहाँ उसने देखा कि कोई फर्नीचर नहीं है। वह एक शानदार घड़ी की ओर देख रहा था जिसकी आकृति का विषय उसकी राय में बहुत ही अश्लील था। तभी एक बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ने वाले महानुभाव मुस्कराते हुए उसकी ओर आये। जुलियों ने तनिक-सा चौंकर अभिवादन किया।

सज्जन ने मुस्कराते हुए अपना हाथ उसके कंधे पर रक्खा। जुलियों

चौक पड़ा और क्रोध से लाल होकर पीछे हट गया। अपनी समस्त गम्भीरता के बावजूद फादर पिरार के हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गये। वह सज्जन दर्जी थे।

“अब दो दिन के लिये तुम्हें आजादी है,” फादर पिरार ने बाहर जाते-जाते कहा “उससे पहले तुम्हें मादाम द ला मोल के आगे प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। इस आधुनिक बेबीलोन में तुम्हारे निवास के प्रारम्भिक दिनों में कोई और व्यक्ति एक लडकी की भाँति तुम्हारी निगरानी रखता। पर तुम्हें यदि बरबाद ही होना है तो अपने आपको तुरन्त ही बरबाद कर लो जिससे मुझे उस दुर्बलता से मुक्ति मिल जाय जो मैं तुम्हारे प्रति दिखा रहा हूँ। परसो सबेरे यह दर्जी तुम्हारे लिये दो सूट लायेगा। पाँच फ्रैंक तुम उस नौजवान को देना जो ये कपड़े लायेगा और तुम्हें पहिना कर देखेगा। और हाँ, देखो, इन पेरिस-निवासियों को अपनी आवाज न सुनने देना। जहाँ तुमने एक भी शब्द कहा, और उन्हें तुम्हें हास्यास्पद बनाने का मौका मिला। इस काम में ये लोग विशेष रूप से निपुण हैं। परसो दोपहर को मेरे घर पहुँच जाना। अब जाओ, और चाहे जैसे अपना सत्यानाश करो। एक बात तो मैं भूल ही रहा था, जाकर इन पतों के ऊपर अपने लिये कुछ जोड़े जूते, कमीजें और एक टोपी खरीद लेना।”

जुलियें उन पतों के हस्ताक्षरों को देखने लगा।

“ये मार्कि के हाथ के लिखे हुए हैं,” फादर पिरार ने कहा। “वह बड़े कर्मठ व्यक्ति हैं। उनका हर बात पर पहले से ही ध्यान जाता है और वह आदेश देने की अपेक्षा स्वयं काम करना अधिक पसन्द करते हैं। वह तुम्हें इसी प्रकार की परेशानियों से छुट्टी पाने के लिए अपने यहाँ रख रहे हैं। क्या तुममें इतनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि है कि जिन बातों का यह बुद्धिमान व्यक्ति केवल संकेत करे उनको तुम भली-भाँति पूरा कर सको? इस बात का उत्तर भविष्य देगा—बस तुम सावधान रहना।”

जुलियें दिये हुये पतों पर पहुँचा पर कहीं उसने एक शब्द भी मुँह

से नहीं निकाला । उसने अनुभव किया कि उसके साथ बड़ा सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जा रहा है और जूते बनाने वाले ने अपने हिसाब के खाते में उसका नाम लिखा 'म० जुलिये द सोरेल ।'

पेरलाशेज के कब्रिस्तान में एक बहुत ही तत्पर व्यक्ति ने जो अपने भाषण में और भी अधिक उदार था, मार्शल ने की समाधि दिखाने के लिये अपनी सेवाये प्रस्तुत कर दी । राज-काज की दूरदर्शिता के कारण मार्शल को समाधि-लेख का सम्मान न मिल सका था । किन्तु जब इन उदारपंथी महोदय ने आँखों में आँसू भरकर जुलिये को हृदय से लगाने के बाद बिदा ली तो जुलिये की घड़ी भी उससे विदा ले चुकी थी । इस अनुभव से और भी समृद्ध होकर जब दो दिन बाद वह फादर पिरार के सम्मुख उपस्थित हुआ तो उन्होंने बड़ी कठोर दृष्टि से उसे देखा ।

"जान पड़ता है कि तुम अब बड़े दामिक और दिखावटी व्यक्ति बनने ही वाले हो," फादर पिरार ने सख्ती के साथ कहा । वास्तव में वह बहुत सुसज्जित दिखाई पड़ रहा था, किन्तु आबे पर स्वयं प्रान्तीय धारणाओं का इतना अधिक प्रभाव था कि वह जुलिये की चाल में अभी भी एक प्रकार की सरलता को न पहचान सके जिसे प्रान्तों में सुन्दर और प्रभावपूर्ण दोनों ही समझा जाता है । जब मार्कि ने जुलिये को देखा तो उन्होंने फादर पिरार से भिन्न रूप में इन बातों को ग्रहण किया और बोले . "यदि म० सोरेल कुछ दिन नृत्य सीखें तो आपको कोई आपत्ति तो न होगी ?"

आबे विस्मय से जड़ीभूत हो गये ।

"नहीं," उन्होंने अन्त में उत्तर दिया, "जुलिये पुरोहित नहीं हैं ।"

मार्कि स्वयं जुलिये के साथ एक छोटे-से जीने पर एक बार में दो-दो सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर गये और वहाँ उसे घर से लगे हुए बड़े भारी बगीचे की ओर खुलने वाले एक आरामदेह छोटे-से कमरे में टिका दिया । उन्होंने उससे पूछा कि ब्रजाज के यहाँ से उसने कितनी कमीजें खरीदी हैं ।

"दो," इतने बड़े आदमी को ऐसी छोटी-छोटी बातें पूछते देखकर

जुलिये ने कुछ अप्रतिभ भाव से उत्तर दिया ।

“बहुत ठीक,” मार्कि बहुत ही गम्भीर और एक प्रकार के सक्षिप्त आदेशपूर्ण स्वर में बोले जिससे जुलिये कुछ सोच में पड़ गया । “बहुत ठीक । बाईस और खरीद लीजिये । यह रहा आपका पहले तिमाही का वेतन ।”

नीचे उतरकर मार्कि ने एक बुजुर्ग-से व्यक्ति को बुलाया और कहा, “आर्सेन, तुम म० सोरेल की देख-भाल करना ।” कुछ ही मिनट बाद जुलिये ने एक सुन्दर पुस्तकालय में प्रवेश किया । वह उसके लिये बड़े ही हर्ष का क्षण था । कोई अचानक ही उसके इस भावावेश को देख न ले, इसलिये वह एक कोने में चला गया और वहाँ खड़ा होकर किताबों की चमचमाती जिल्दों की ओर बड़े गद्गद भाव से देखता रहा । मैं इन सब पुस्तकों को पढ़ सकूँगा, उसने सोचा । यहाँ रहना मुझे कैसे बुरा लग सकता है ? म० द ला मोल ने जो कुछ मेरे लिये अभी-अभी कर दिया है उसका सौवाँ भाग करके म० द रेनाल जीवन भर लज्जित अनुभव करते रहते ।

पर देखूँ, वे चिट्ठियाँ कौन-सी हैं जिनकी मुझे नकल करनी है । यह काम पूरा करके जुलिये ने पुस्तकों को छूने का साहस किया । वोल्तेर के एक संस्करण को देखकर तो वह खुशी से लगभग पागल हो उठा । उसने पहले जाकर दरवाजा खोल दिया और उसके बाद एक-एक करके अस्सी जिल्दों को खोलकर देखने का आनन्द लेने लगा । उनकी जिल्दें बहुत ही सुन्दर और बढिया थी जिन्हें लन्दन के सबसे प्रसिद्ध जिल्दसाज ने अपनी बढिया से बढिया कारीगरी के नमूने के रूप में तैयार किया था । उसके विस्मय को आसमान तक ले जाने की यही काफी था ।

घण्टे भर बाद जब मार्कि ने आकर पत्र देखे तो वह इस बात से बड़े चकित हुए कि जुलिये ने कुछ शब्द ग़लत लिखे थे । तो फिर जो कुछ आबे ने मुझसे इसके ज्ञान के बारे में कहा था वह परियों की कहानी भर था ! मार्कि ने बहुत ही निराश होकर उससे अत्यन्त कोमल स्वर में

कहा, “आपको शायद शब्दों के विषय में पूरा भरोसा नहीं ?”

“जी हाँ, यह ठीक है,” जुलिये ने कहा। उसने यह तनिक भी न सोचा कि उसकी यह बात कितनी हानिकारक सिद्ध होगी। वह अपने प्रति मार्कि के सौजन्य से बहुत ही प्रभावित हो गया था। उससे उसे म० द रेनाल के दभी व्यवहार की याद आती थी।

तो फ्रांस-कोते के इस नौजवान आबे के साथ मेरा यह प्रयोग केवल समय नष्ट करना है, मार्कि ने सोचा। मुझे तो एक विश्वसनीय व्यक्ति की आवश्यकता थी !

वह उसे शब्दों को सही-सही लिखने के बारे में समझाने लगे। “पत्रों की नकल के बाद जिन शब्दों के विषय में आपको पक्का यकीन न हो, उन्हें शब्द-कोश में देख लिया कीजिये।”

छ बजे मार्कि ने उसे बुला भेजा। जुलिये के बूटों की ओर उन्होंने प्रत्यक्ष कष्ट के साथ देखा और कहा, “एक बात की मुझ से भूल हो गई। मैंने आपको यह नहीं बताया था कि प्रतिदिन साढ़े पाँच बजे आपको सब कपड़े पहिन कर तैयार हो जाना चाहिये।”

जुलिये उनका अभिप्राय समझे बिना उनकी ओर देखने लगा।

“मेरा मतलब है कि आपको जूते और मोझे पहन लेने चाहियें। आसँन आपको इसकी याद दिला देगा। आज मैं आपकी ओर से कोई बहाना बना दूँगा।”

बातचीत समाप्त करते ही म० द ला मोल जुलिये को सुनहरे काम वाले चमचमाते हुए ड्राइंग रूम में ले गये। ऐसे अवसरो पर म० द रेनाल सदा जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर द्वार से स्वयं पहले निकलने का प्रयत्न किया करते थे। अपने पिछले संरक्षक के क्षुद्र अहंकार के कारण ही इस समय जुलिये का पैर मार्कि के पैर पर पड़ गया जिससे उसकी गठिया में पीड़ा ही उठी। आह ! यह तो इतना फूहड़ भी है, मार्कि ने सोचा। उन्होंने उसका परिचय एक रौबदार लम्बे कद की महिला से कराया। यही मार्किज थी। उसे लगा कि वह कुछ घमंडी हैं। बेस्वियर

जिले के उप-ज़िलाधीश की पत्नी मादाम द मोर्जिरो भी इसी प्रकार से-शार्ल के औपचारिक भोज में उपस्थित हुआ करती थी। ड्राइंग रूम के अनुपम ऐश्वर्य से घबरा जाने के कारण जुलिये ने सुना नहीं कि म० द ला मोल क्या कह रहे हैं। मार्किज ने तो मुश्किल से उसके ऊपर एक नज़र डाली थी। उपस्थित लोगो में कुछ पुरुष भी थे जिनमें आगद के बिशप को देखकर, जिन्होंने कुछ महीने पहले ब्रे-ल-ओ के उत्सव में उससे बातचीत करने की कृपा की थी, जुलिये को अपूर्व प्रसन्नता हुई। जुलिये जिस भाँति पिघलती हुई नज़रे कुछ सकुचाता-सा इस तरफ़ धर्माधिकारी की ओर डाल रहा था उससे वह निस्सन्देह कुछ भयभीत था और प्रान्तो के इस आगन्तुक को पहिचानने के लिये तगिक भी उत्सुक न था।

ड्राइंग रूम में एकत्र पुरुष सभी जुलिये को अपने व्यवहार में कुछ वक्र और खिचे हुए-से जान पड़े। पेरिस में लोग बहुत धीमी आवाज़ में बात करते हैं और क्षुद्र बातों पर जोर नहीं देते।

कोई साढ़े छ बजे के लगभग एक बहुत ही दुर्बल और गोरे मूछ वाले नौजवान ने प्रवेश किया। उसका सिर बहुत ही छोटा था।

“तुम सदा हम लोगो से प्रतीक्षा करवाते हो,” मार्किज ने कहा जिनका हाथ वह युवक चूम रहा था।

जुलिये समझ गया कि यही कौंत द ला मोल हैं। वह उसे पहली ही दृष्टि में बहुत आकर्षक व्यक्ति जान पड़े। वह सोचने लगा कि क्या सचमुच इसी व्यक्ति के अप्रिय हास-परिहास से उसे यह स्थान छोड़कर जाना पड़ेगा ?

काउन्ट नोर्बेर को अच्छी तरह देखने पर जुलिये का ध्यान इस बात की ओर गया कि उन्होंने बूट और एड पहिन रखे हैं। वह सोचने लगा कि शायद हीन दर्जे का व्यक्ति होने के कारण ही मेरे लिये जूते पहिनना ज़रूरी है। सब लोग एक मेज़ पर बैठ गये। जुलिये ने सुना कि मार्किज ने कुछ ऊँचे स्वर में कोई तीखी बात कही। ठीक इसी समय अत्यन्त

हल्के सुनहरे केशों और सुडौल शरीर वाली एक युवती पर उसका ध्यान गया जो आकर उसके सामने बैठ गई थी। वह उसे अच्छी न लगी। पर ध्यान से देखने पर जुलिये को अनुभव हुआ कि इतनी सुन्दर आँखें उसने पहले कभी न देखी थी। उनमें से अत्यन्त ही नीरस स्वभाव स्पष्ट झलकता था। बाद में उसे निश्चय हो गया कि उन आँखों का भाव उकताहट का है, वे प्रत्येक व्यक्ति को आलोचना की दृष्टि से देखती हैं किन्तु साथ ही दूसरे लोगों को प्रभावित करने के प्रति सचेष्ट हैं।

मादाम द रेनाल की आँखें भी बहुत सुन्दर थी, वह सोचने लगा—सब लोग इसके लिये उनकी प्रशंसा करते थे। पर उनमें इन आँखों जैसी कोई बात न थी। जुलिये दुनिया और उसके तौर-तरीकों के बारे में इतना कम जानता था कि मादाम्वाजेल मातिल्द की आँखों में—उसने उन का यही नाम पुकारा जाते सुना—बीच-बीच में चमक उठने वाली ज्वाला विदग्धता की चमक है, इस बात को पहिचान सके। मादाम द रेनाल या तो अपनी भावना की ज्वाला से चमकती थी या किसी नीच कार्य की कहानी सुनकर जाग्रत होने वाले क्षोभ से।

भोजन समाप्त होते-होते जुलिये को मादाम द ला मोल की सुन्दरता के वर्णन के लिये एक शब्द सूझ गया। ये चिनगारिया छोड़ने वाली आँखें हैं, उसने मन ही मन कहा। अन्यथा वह बहुत कुछ अपनी मा के अनुरूप थी जो उसे अधिकाधिक अरुचिकर लग रही थी। उसने उनकी ओर देखना छोड़ दिया। दूसरी ओर काउन्ट नौबेरे हर दृष्टि से उसे प्रशंसा के योग्य जान पड़ते थे। जुलिये उनसे इतना मुग्ध था कि घनी अथवा अपने से अधिक संभ्रान्त होने के लिये उनसे ईर्ष्या अथवा घृणा करने की बात भी उसे न सूझी।

जुलिये को लगा कि मार्कि ऊबे हुए दिखाई पड़ रहे हैं। भोजन के दूसरे दौर के समय उन्होंने अपने पुत्र से कहा : “नौबेरे, तुम्हें म० जुलिये सोरेल की देखभाल करनी पड़ेगी, जिन्हें मैंने अभी-अभी अपने पास नियुक्त किया है, और जिन्हें यदि सम्भव हुआ तो मैं आदमी बना

देने की आशा करता हूँ।”

“यह मेरे सेक्रेटरी हैं,” मार्कि ने अपने पास बैठे हुए व्यक्ति ने कहा
“पर यह अभी शब्द ठीक-ठीक लिखने में घबड़ा जाते हैं।”

सब लोग जुलिये की ओर देखने लगे। उसने कुछ अत्युक्तिपूर्ण ढंग से ही नौबेर का अभिवादन किया किन्तु कुल मिलाकर लोगो को उसका रूप-रंग पसन्द आया।

मार्कि ने जुलिये की शिक्षा के सम्बन्ध में अवश्य कोई उल्लेख किया होगा, क्योंकि एक अतिथि ने उससे होरेस के विषय में बातचीत शुरू कर दी। जुलिये सोचने लगा कि होरेस की चर्चा से ही बजासो के बिशप प्रभावित हुए थे। लगता है ये लोग और किसी लेखक को जानने ही नहीं।

उसी क्षण से उसका आत्मविश्वास पूरी तरह लौट आया। यह परिवर्तन उसके इस निश्चय के कारण भी आसान हो गया कि नारी के रूप में मादाम द ला मोल का उसकी दृष्टि में कभी कोई महत्व न हो सकेगा। शिक्षा-मठ के समय से ही वह पुरुषों के बुरे से बुरे व्यवहार से टक्कर लेता रहा था और आसानी से किसी व्यक्ति की धमकी से भयभीत न होता था। यदि ड्राइंग रूम इतना अधिक ऐश्वर्यपूर्ण तथा सुसज्जित न होता तो वह अपने आत्मविश्वास का और भी अधिक उपभोग कर पाता। वास्तव में आठ फीट ऊँचे दो दर्पण वहाँ लगे हुये थे जिनमें वह बीच-बीच में होरेस के विषय में प्रश्न करने वाले व्यक्ति की ओर देखता जाता था और जिससे वह अभी तक कुछ संभ्रम-त्रस्त-सा अनुभव करता था। प्रान्तों का निवासी होने पर भी उसके वाक्य बहुत लम्बे-चौड़े न होते थे। उसकी आँखें सुन्दर थी जिनमें उसकी उत्सुक किन्तु भिन्नकारी लज्जाशीलता के कारण अच्छा प्रत्युत्तर दे सकने पर प्रसन्नता का रूप ले लेती थी, और भी चमक भर जाती थी। लोगो की

प्रश्नकर्त्ता का और भी सख्ती से प्रश्न करने का अनुरोध किया। वह सोच रहे थे कि क्या यह व्यक्ति सचमुच कुछ पढ़ा-लिखा है।

जुलिये अपनी समझ से सोच-सोचकर उत्तर देता रहा। उसकी भीरुता अब इतनी तो कम हो ही चुकी थी कि उसके उत्तरों में ठीक-ठीक विदग्धता तो नहीं—वह तो पेरिस की ज़बान न बोलने वाले व्यक्ति के लिये असम्भव है—किन्तु मौलिक विचार अवश्य प्रगट न हो सके। यद्यपि वे विचार न किसी सौष्ठव के अथवा उपयुक्तता के साथ प्रगट नहीं हो रहे थे, तो भी इतना तो स्पष्ट ही था कि लैटिन में वह पूरी तरह से पारगट है।

जुलिये का प्रतिद्वन्द्वी एक ऐतिहासिक अकादमी का सदस्य था जो सयोगवश लैटिन भी जानता था। उसे जुलिये उत्तम मानववादी जान पड़ा और लज्जित करने का भय न रहने से अब वह उसे सचमुच परेशान करने की कोशिश करने लगा। आखिरकार वाद-विवाद की तेज़ी में जुलिये भोजन-गृह के वैभव और ऐश्वर्य को भूल गया और ऐसे लैटिन कवियों के विषय में अपने विचारों का प्रतिपादन करने लगा जो उसके प्रश्नकर्त्ता ने कभी न पढ़े थे। सुशिक्षित व्यक्ति होने के नाते उसने जुलिये की इसके लिये प्रशंसा की। सुखद सयोगवश चर्चा इस बात पर चलने लगी कि होरेस धनी था अथवा दरिद्र—शापेल की भाँति हँसमुख, मचमौजी और आनन्दकामी, तथा मोलियेर और ला-फ़ौते का मित्र था अथवा बेचारा गरीब राज-कवि था जो लाई बाइरन की निन्दा करने वाले सदे की भाँति दरबार से सम्बद्ध था और बादशाह के जन्म-दिवस पर गीत लिखा करता था। लोग आगस्टस और जार्ज चतुर्थ के ज़माने में समाज की अवस्था के विषय में चर्चा करने लगे। इन दोनों युगों में ही सामन्त-वर्ग सर्व-शक्तिमान था; किन्तु रोम में उसकी शक्ति मेसीनास जैसे साधारण योद्धा ने छीन ली थी, जबकि इंग्लैंड में सामन्त वर्ग ने जार्ज चतुर्थ की स्थिति बहुत कुछ वेनिस के प्रधान अधिकारी जैसी बना दी थी। इस वाद-विवाद से मार्कि उस नीरसता से छुटकारा पाते हुए

जान पड़े जिसमे भोजन के प्रारम्भ के समय वह ऊब के कारण फँस गये थे ।

सदे, लार्ड बाइरन, जार्ज चतुर्थ आदि आधुनिक नाम जुलिये पहली बार सुन रहा था और उनका उसके लिये कोई अर्थ न था किन्तु इस बात पर सभी का ध्यान गया कि जब भी रोम में होने वाली घटनाओं का जिक्र होता जिनका ज्ञान होरेस, मार्शल, टेसीटस आदि के ग्रन्थों से प्राप्त किया जा सके, तो जुलिये की श्रेष्ठता में कोई सन्देह न रहता था । उसने बजासो के बिशप के साथ होने वाले अपने उस प्रसिद्ध वार्तालाप के भी बहुत-से विचार निस्संकोच होकर यहाँ लोगों के सामने रखे और उनकी भी कम प्रशंसा नहीं हुई ।

जब वे लोग कवियों के बारे में चर्चा करते-करते उकता गये तो मार्किज ने, जो अपने पति को दिलचस्प लगने वाली हर वस्तु की प्रशंसा करती थी, जुलिये की ओर देखने की कृपा की । “यह नौजवान आबे अपने अपट्ट व्यवहार के बावजूद शायद विद्वान व्यक्ति जान पड़ता है,” मार्किज के पास बैठे हुए अकादमी-सदस्य ने कहा; उसकी यह बात कुछ-कुछ जुलिये के कान में भी पड़ी । गृहस्वामिनी के स्वभाव के अनुरूप ऐसे ही धिसे-पिटे शब्द अधिक थे । जुलिये के विषय में उन्होंने इस कथन को अपना लिया और अकादमी-सदस्य को भोजन के लिये निमन्त्रित करने के लिए अपने आपसे प्रसन्न हो उठीं । उन्होंने सोचा कि म० द ला मोल को भी वह मनोरंजक लगा है ।

प्रथम चरण

अगले दिन बहुत सबेरे जब जुलिये पुस्तकालय में बैठा चिट्ठियों की नकल कर रहा था तो माद० मातिल्द ने पुस्तकों के पीछे बहुत चतुराई से छिपे हुए एक छोटे-से निजी द्वार से वहाँ प्रवेश किया। जुलिये इस तरकीब से बड़ा प्रसन्न हुआ किन्तु माद० मातिल्द उसे वहाँ देखकर बहुत ही चकित और कुछ अप्रतिम-सी हो गईं। वह अपने बालों में घुँघराते करने वाले कागज लगाए हुए थी। जुलिये को वह बहुत ही कठोर, अहंकारिणी और लगभग पुरुषो जैसी जान पड़ी। माद० द ला मोल ने अपने पिता के पुस्तकालय से चुपचाप पुस्तकें ले जाने की व्यवस्था कर रखी थी। पर पुस्तकालय में जुलिये की उपस्थिति के कारण उनका उस दिन सबेरे का अभियान व्यर्थ हो गया था। यह उन्हें विशेष रूप से कष्टदायक लग रहा था, क्योंकि वह वोल्तेर के 'बेबीलोन की राजकुमारी' नामक ग्रन्थ का दूसरा भाग देने के लिये आई थी। सांके-कर की प्रसिद्ध राजभक्ति तथा धर्म-समर्थक शिक्षा के लिये यह उपयुक्त प्रमाणपत्र था। त्रिंतीस वर्ष की अवस्था में ही इस बिचारी लड़की को किसी उपन्यास में दिलचस्पी लेने के लिये कुछ नमक-मिर्च और वाक-पटुता की आवश्यकता पड़ने लगी थी।

तीन बजे के लगभग काउन्ट नौबेरे पुस्तकालय में आये। वह कोई अखबार देखने वहाँ आये थे ताकि उस दिन शाम को राजनीति के बारे में चर्चा कर सकें। जुलिये के अस्तित्व की तो बात थी वह भूल गये

थे। इसलिये उसे वहाँ देखकर वह बहुत प्रसन्न हुए। उनका व्यवहार एकदम समुचित था। उन्होंने जुलिये से घोड़े पर सैर के लिये चलने का प्रस्ताव रक्खा।

“पिता जी ने हम लोगो को भोजन के समय तक की छुट्टी दे दी है।”

जुलिये का ध्यान “हम लोगो” के उपयोग पर गया और यह उसे अच्छा लगा।

उसने कहा, “देखिये, यदि अस्सी फीट ऊँचे पेड़ को काटने का, उसकी डालियो को छाँटने का और चीरकर उसके तख्ते बनाने का प्रश्न हो तो मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि मैं यह काम ठीक से कर लूँगा। पर जहाँ तक घोड़े पर सवारी का सवाल है, यह तो मेरे जीवन मे छः बार से अधिक न हुआ होगा।”

“ठीक है, आज सातवीं बार सही,” नौबेरे ने कहा।

भीतर ही भीतर जुलिये—के राजा के वेरियेर आग्रामन वाली घटना का स्मरण कर रहा था, और वह वास्तव मे अपने आपको बहुत अच्छा घुड़सवार समझता था। किन्तु व्वा द बुलों से वापस लौटते समय जुलिये एक गाड़ी से बचने के प्रयत्न मे रू दु वास के ठीक बीचोबीच जा पडा और उसके कपड़े कीचड़ मे सन गये। सौभाग्य से उसके पास दो सूट थे। भोजन के समय मार्कि ने बाग़चीत चलाने के उद्देश्य से उसकी घुड़सवारी का वृत्तान्त पूछा। नौबेरे ने जल्दी से संक्षेप मे स्वयं उत्तर दे दिया।

“काउन्ट मेरे ऊपर मेहरबान है,” जुलिये ने कहा, “मैं उनका बहुत कृतज्ञ हूँ और उनकी कृपा की बहुत कद्र करता हूँ। उन्होंने कृपा करके मुझे सबसे सीधा और सबसे उत्तम दिखाई पड़ने वाला घोड़ा दिया था, पर आखिर वह मुझे उस पर बाँध तो सकते ही न थे। इस असाधारानी के कारण मैं पुल के पास उस भयंकर लम्बी सड़क पर ठीक बीचोबीच जा गिरा।” माद० मसतिव्व ने फूटती हुई हँसी को रोकने का व्यर्थ सा प्रयत्न किया और फिर बड़े कबूतरों से बनी हाल पूछने लगी।

युद्ध किया है जो केवल म० द ला माल का सेक्रेटरी मात्र है, और वह भी केवल इसलिये कि मेरे कोचवान ने मेरे कांड चुरा लिये थे।”

“यह तो निश्चित है कि इस कहानी से हँसी उड़ने की पूरी सम्भावना है।”

उसी दिन शाम को शवालिये द बोव्वाज़ि और उनके मित्र ने चारों ओर यह बात फैला दी कि म० सोरेल, जो वैसे बहुत ही आकर्षक युवक हैं, म० द ला मोल के किसी घनिष्ठ मित्र के जारज पुत्र हैं। यह बात चारों ओर फैल जाने के बाद वह नौजवान कूटनीतिज्ञ और उनके मित्र एक-दो बार जुलिये से मिलने भी आये क्योंकि उसे एक पखवाडे तक चोट के कारण अपने कमरे में बंद रहना पड़ा। जुलिये ने उनके सामने स्वीकार किया कि उसने जीवन में केवल एक बार ही अपैरा देखा है।

“यह तो बड़ी भयकर बात है,” उन्होंने कहा, “कोई भी कभी और कहीं नहीं जाता। अब ठीक हो जायें तो ‘कॉत ओरि’ सुनने के लिये अपैरा अवश्य जाइयेगा।”

अपैरा में शवालिये द बोव्वाज़ि ने उसका परिचय प्रसिद्ध गायक जेरोनिमो से कराया जो उन दिनों बहुत प्रसिद्ध हो रहा था।

जुलिये तो शवालिये की लगभग पूजा करने लगा था। आत्मसम्मान, रहस्यपूर्ण आडम्बर और यौवनसुलभ मूर्खता के इस सम्मिश्रण ने उसे मंत्रमुग्ध कर दिया था। शवालिये थोड़ा-सा हकलाते भी थे, क्योंकि उन्हें प्रायः एक ऐसे महापुरुष से मिलना पड़ता था जो इस दुर्बलता से पीड़ित थे। जुलिये ने ऐसे मनोरंजक तथा हास्यास्पद रंग-ढंग और प्रान्तों के फूहड़ लोगो के लिये अनुकरणीय निर्दोष आचार-व्यवहार एक ही व्यक्ति में एक साथ पहले कभी न देखे थे।

वह प्रायः शवालिये द बोव्वाज़ि के साथ अपैरा में दिखाई पड़ता। इस संपर्क से लोगो में उसकी चर्चा होने लगी।

“अच्छा !” म० द ला मोल ने एक दिन उससे कहा, “तो अब तुम फ्रांस-कॉते के किसी धनी महानुभाव के जारज पुत्र हो, जो मेरे भी घनिष्ठ

मित्र हैं !”

जुलिये ने प्रतिवाद करने का प्रयत्न किया कि वह अफवाह उसने नहीं फैलाई है, पर मार्कि ने उसकी बात को बीच ही में काट दिया ।

“म० द बोव्वाज़ि एक बढई के बेटे के साथ द्वंद्व-युद्ध करना नहीं चाहते थे,” जुलिये ने कहा ।

“जानता हूँ, जानता हूँ,” म० द ला मोल ने कहा । “यह मेरे ऊपर है कि मैं इस कहानी को कुछ विश्वसनीयता प्रदान करूँ अथवा न करूँ, यद्यपि यह मुझे भी सुविधाजनक तो लगती है । पर मुझे तुम से एक अनुग्रह की याचना करनी है जिसमें तुम्हारा कुल आधा घण्टे से अधिक समय न लगा करेगा । ऑपेरा के दिन तुम वहाँ जाकर बरामदे में खड़े होकर उच्च समाज के लोगो को निकलते हुए देखा करो । मुझे अब भी तुममें कुछ-कुछ प्रान्तीय तौर-तरीके दीख जाते हैं । उनसे तुम्हारा पीछा छूटना चाहिये । इसके अलावा महत्वपूर्ण लोगो को कम से कम शक्ल से भी न जानना भी बुरी बात है । उनके पास कोई सवाद लेकर भेजने का काम ही मुझे पड सकता है । जाओ, टिकटघर पर जाकर अपना नाम बताना । वहाँ तुम्हारे लिये एक पास तैयार है ।”

: ७ :

गठिया का दौर

पाठक को शायद इस उन्मुक्त और लगभग मैत्रीपूर्ण स्वर से आश्चर्य हो, क्योंकि हम यह कहना भूल गये हैं कि इसी बीच तीन सप्ताह तक मार्कि को गठिया के दौरे से घर पर रहना पडा था ।

माद० द ला मोल अपनी माँ के साथ इयेर मे अपनी नानी के पास गयी हुई थी । काउन्ट नौबेँर केवल क्षण दो क्षण के लिये ही अपने पिता से मिलने आते । उनके परस्पर सम्बन्ध बहुत अच्छे थे, पर एक दूसरे से बात करने को कुछ न था । म० द ला मोल को केवल जुलियों के साथ ही रहना पडा तो वह इस बात से चकित हुए कि इस युवक के पास विचारों की कमी नहीं । वह उससे दैनिक समाचार पढ़वाकर सुनते और शीघ्र ही तरुण सेक्रेटरी दिलचस्प अंशो को अपने आप चुनने लगा । एक नये पत्र से मार्कि को घृणा थी और उन्होंने उसे न पढ़ने की सौगन्ध खा रक्खी थी, यद्यपि उसके बारे मे वे नित्यप्रति बातचीत करते रहते । इस बात पर जुलियों को बड़ी हँसी आती । मार्कि ने वर्तमान स्थिति से परेशान होकर जुलियों से लिदी पढकर सुनाने को कहा । उन्होंने पाया कि उसका तात्कालिक अनुवाद बहुत ही रोचक होता है ।

एक दिन अत्युक्तिपूर्ण विनम्रता के स्वर में, जिससे प्रायः जुलियों का घोरज जाता रहता था, मार्कि ने उससे कहा : “भाई सोरेल, यदि अनुमति दो तो मैं तुम्हें एक नीला कोट भेंट करूँ । यदि तुम उसे पहिनकर मेरे पास आओ तो मैं तुम्हें कौत द रे का छोटा भाई, अर्थात् मेरे पुराने

मित्र ड्यूक का पुत्र समझा करूँगा।”

जुलिये ठीक-ठीक समझ न सका कि मामला क्या है। पर उसी दिन शाम को वह नीला कोट पहिनकर आया। मार्कि ने उससे बराबरी का व्यवहार किया। जुलिये का हृदय इतना उदार तो था ही कि वास्तविक विनम्रता को पहिचान सके, पर वह उसकी सूक्ष्मता को न समझ पाता था। मार्कि की इस सनक के पहले भी उसे निश्चित रूप से लगता था कि जितनी शिष्टता और आदर के साथ उसका स्वागत हुआ है उससे अधिक होना असम्भव है। कैसा अनुपम उपहार है! जुलिये ने कोट को देखकर सोचा। जब वह जाने लगा तो मार्कि ने इस बात के लिये क्षमा माँगी कि गठिया के कारण वह उसे द्वार तक छोड़ने न जा सकेगे।

जुलिये के मन को एक विचित्र विचार ने घेर लिया। क्या वह मेरी हँसी उड़ा रहे हैं? वह फादर पिरार से परामर्श लेने पहुँचा। उन्होंने उत्तर में योही कुछ कहकर दूसरी बात छेड़ दी। अगले दिन सबेरे जुलिये मार्कि के पास अपना काला कोट पहिने और एक पोर्टफोलियो तथा हस्ताक्षर कराने के लिये चिट्ठियाँ लेकर आया। इस समय उसका स्वागत पुराने ही ढंग से हुआ। शाम को नीला कोट पहिनकर आने पर फिर स्वर एकदम बदला हुआ था और बिल्कुल पिछले दिन की भाँति ही अत्यधिक सौजन्यपूर्ण था।

“तुम एक बेचारे बीमार वृद्ध व्यक्ति से मिलने आने में उकताते तो नहीं हो?” मार्कि ने कहा। “अच्छा तो तुम मुझे अपने जीवन की तमाम छोटी-छोटी घटनाएँ भी सुनाओ, पर निश्छल भाव से, और स्पष्टता-पूर्वक तथा मनोरंजक ढंग से सुनाने के अतिरिक्त अन्य किसी विचार के बिना ही। क्योंकि मनोरंजन अवश्य होना चाहिये,” मार्कि ने कहा। “जीवन में सच्ची वस्तु वही है। कोई व्यक्ति हर रोज युद्ध क्षेत्र में मेरे प्राणों की रक्षा नहीं कर सकता और न मुझे रोज दस लाख की संपत्ति भेंट कर सकता है; पर यदि यहाँ मेरे पास रिवारोल बैठ हो तो वह क्लियेक दिन मुझे एक घण्टे के कष्ट और उकताहट से छुटकारा दिला सकता

है। मैं विदेश-निवास के दिनों में हैम्बर्ग में उसे अच्छी तरह से जानता था।”

मार्कि जुलिये को रिवारोल और हैम्बर्ग के लोगों की कहानियाँ सुनाने लगे, जहाँ उसके एक विदग्ध कथन का अभिप्राय समझने के लिये चार-चार आदमियों को मिलकर प्रयत्न करना पड़ता था।

म० द ला मोल इस नौजवान पुरोहित के साथ अकेले पड़ गये थे, वह जैसे गुदगुदाकर उसमें सजीवता उत्पन्न करना चाहते थे। उन्होंने जुलिये के अभिमान को कुरेद कर उसकी वास्तविक क्षमता को उजागर करने का प्रयत्न किया। जुलिये ने केवल दो बातों को छोड़कर बाकी सारी कहानी उन्हें सुनाने का निश्चय किया—एक तो उस नाम के प्रति अपनी अन्धभक्ति जिसे सुनते ही मार्कि का पारा चढ़ जाता था, और दूसरे अपने भीतर धार्मिक श्रद्धा का नितान्त अभाव जो एक भावी क्यूरे के लिये अशोभन था। शबालिये द बोव्वाज़ि के साथ होने वाली घटना भी बड़े उपयुक्त अवसर पर आई। रू सेंटेंनोरे के काफी में कोचवान द्वारा उसे गन्दी-गन्दी गालियाँ दिये जाने के दृश्य के ऊपर तो मार्कि इतना हँसते रहे कि उनकी आँखों में आँसू आ गये। स्वामी और अनुचर के बीच यह एकदम निश्छल सम्बन्ध के दिन थे।

म० द ला मोल को इस विचित्र व्यक्तित्व में बड़ी दिलचस्पी हो गई थी। शुरू-शुरू में तो वह जुलिये की विचित्रताओं को इसलिये प्रोत्साहित करते थे कि उनसे कुछ मनोरंजन हो, पर शीघ्र ही उन्हें इस बात में अधिक आनन्द आने लगा कि व्यक्तियों तथा वस्तुओं के विषय में इस युवक के अपरिपक्व विचारों को बहुत ही मीठे ढंग से ठीक करते जायें। मार्कि सोचने लगे कि प्रान्तों से पेरिस आने वाले लोग यहाँ की हर चीज़ की प्रशंसा ही करते हैं। यह आदमी हर चीज़ से घृणा करता है। उन लोगों में बनाबटीपन बहुत अधिक होता है, इसमें जितना आवश्यक है उतना भी नहीं है, इसलिये मूर्ख लोग उसे मूर्ख समझते हैं।

उस साल जाडों के तीव्र शीत के कारण गठिया का यह दौर बहुत

दिनो तक बल्कि कई महीनो तक चला ।

लोग तो एक छोटे कुत्ते तक से प्रेम करने लगते हैं, मार्कि ने सोचा; इस तरुण पुरोहित के प्रति स्नेह में लज्जित होने की क्या बात है ? यह मौलिक ढंग का व्यक्ति है । मैं उससे बेटे की तरह व्यवहार करूँ तो इसमें हानि ही क्या है ? मेरे मन की सनक यदि बनी ही रही तो भी मेरी वसीयत में अधिक से अधिक पाँच सौ लुई के एक हीरे का ही तो खर्च है ।

आने आश्रित के चरित्र की दृढ़ता एक बार पहिचान लेने के बाद मार्कि उसे हर रोज किसी न किसी नये काम का भार सौपने लगे । जुलिये को यह देखकर बड़ा भय हुआ कि वह कभी-कभी एक ही बात के बारे में परस्पर-विरोधी आदेश दे दिया करते थे । इससे वह किसी दिन बड़ी मुसीबत में न पड़ जाये । उसके बाद से जुलिये सदा एक कापी लेकर मार्कि के पास आता, जिसमें सब निर्णय लिख लिये जाते और मार्कि उस पर हस्ताक्षर कर देते । जुलिये ने एक क्लर्क और रख लिया था जो अलग-अलग कामों से सम्बन्धित आदेशों की एक विशेष कापी में नकल कर लेता था, जिसमें सब पत्रों की नकले भी रखी जाती थी ।

शुरु-शुरु में यह प्रस्ताव बेहद वाहियात जान पड़ा । किन्तु दो महीने के भीतर ही मार्कि को इसके लाभ समझ में आने लगे । जुलिये ने यह भी प्रस्ताव किया कि किसी बैंक का कोई क्लर्क नियुक्त कर लिया जाय जो जुलिये की देखभाल में होने वाली जायदादों से सम्बन्धित आमदनी और व्यय का हिसाब-किताब दोहरी पद्धति के अनुसार रक्खा करे ।

इन सब उपायों से मार्कि की आँखें इस हद तक खुली कि वह दो-तीन नये कारोबारों में अपने दलाल की सहायता के बिना ही, जो उन्हें ठग रहा था, अपने आप निर्णय करने में सफल हुए ।

“तीन हजार फ्रैंक तुम अपने लिये ले लो,” एक दिन उन्होंने अपने तरुण मंत्री से कहा ।

“पर इससे लोग कही मेरे आचरण का गलत अर्थ न लगायें ।”

“तो फिर तुम क्या चाहते हो ?” मार्कि ने कुछ चिढ़कर पूछा ।

“मेरी इच्छा है कि आप कृपा करके बाकायदा समझौते के रूप में इस बात को अपने हाथ से इस कापी में लिख दें । इसके अनुसार मुझे तीन हजार फ्रैंक की रकम मिलेगी । वैसे भी यह सब बहीखातो की सूझ फादर पिरार की है ।” मार्कि ने उतनी ही उकताहट के भाव से, जैसा मार्कि द मोकादम म० प्वास्सो से हिसाब-किताब की बात सुनते समय अनुभव किया करते होंगे, समझौता लिख दिया ।

शाम को जब जुलिये अपना नीला कोट पहिनकर आता तो काम-काज की बात बिलकुल न होती । मार्कि की इन कृपाओं से हमारे नायक के निरन्तर आहत होने वाले आत्मसम्मान को इतनी सान्त्वना मिली कि शीघ्र ही वह अपनी इच्छा के बावजूद इस हँसमुख वृद्ध के प्रति एक तरह का स्नेह-सा अनुभव करने लगा । यह नही कि जुलिये में उस प्रकार की कोई सूक्ष्म संवेदनशीलता थी, जो पेरिस में चलती है । किन्तु उसमें मानवीय भावना का अभाव न था और बूढ़े फौजी डाक्टर की मृत्यु के बाद से किसी ने उससे इतनी आत्मीयता से बातचीत न की थी । उसे इस बात से बड़ा विस्मय हुआ कि उसके स्वाभिमान का जैसा सौजन्यपूर्ण आदर मार्कि करते थे वैसे उसे बूढ़े डाक्टर से भी कभी न मिला था । अन्त में उसे यह अनुभव हुआ कि मार्कि को अपने नीले फीते का जितना गर्व था उससे कहीं अधिक डाक्टर को अपने क्रास का था । मार्कि एक बड़े भारी सामन्त के पुत्र थे ।

एक दिन सबेरे जब वह अपना काला सूट पहिनकर काम-काज के सिलसिले में आया था तो जुलिये मार्कि को इतना मनोरंजक लगा कि उन्होंने उसे दो घण्टे तक रोके रक्खा और उनका दलाल जो बहुत से नोट लाया था उन्हें उसे देने का आग्रह करने रहे ।

“म० मार्कि, मुझे आशा है कि यदि मैं आपसे कुछ शब्द कहने की प्रार्थना करूँ तो आप उसे अविनीत न समझेंगे ।”

“तुम्हारे मन में जो भी है कहो ।”

“क्या आप मुझे उदारतापूर्वक इस उपहार को अस्वीकार करने की अनुमति देंगे ? यह उपहार काला सूट पहिनने वाले व्यक्ति के प्रति नहीं है, और इससे वे सम्बन्ध एकदम नष्ट हो जायेंगे जो आपने नीले सूटधारी व्यक्ति के साथ बनाये रखने का अनुग्रह किया है।” उसने बहुत आदर सहित झुककर अभिवादन किया और मार्कि की ओर देखे बिना ही कमरे के बाहर चला गया।

इस घटना से मार्कि बहुत चकित हुए। उस दिन शाम को उन्होंने फादर पिरार को भी यह बात सुनाई।

“एक बात मैं आज आपके सामने अवश्य स्वीकार करूँगा। मुझे जुलिये के जन्म के विषय में सब कुछ पता है और मैं आपको यह अधिकार देता हूँ कि आप इस रहस्य को गुप्त न रखें।”

मार्कि सोचने लगे कि आज सबेरे उसका व्यवहार सचमुच बड़ा उच्च था और अब मैं उससे सचमुच उच्च-कुलीन व्यक्ति की भाँति व्यवहार करूँगा।

इसके कुछ ही समय बाद मार्कि अपने कमरे से उठकर चलने-फिरने योग्य हो गये।

“जानो दो महीने लन्दन की सैर कर आओ,” उन्होंने जुलिये से कहा। “विशेष पत्रवाहक और अन्य सवाददाता मेरे पास आने वाले पत्रों को मेरी टिप्पणियों के साथ तुम्हारे पास पहुँचा दिया करेंगे। तुम प्रत्येक पत्र का उत्तर लिखकर और बन्द करके मेरे पास वापिस भेजते रहना। मैंने हिसाब लगा लिया है कि पाँच दिन से अधिक विलम्ब इसमें न हुआ करेगा।”

गाड़ी में बैठकर कैले की ओर यात्रा करते-करते जुलिये चकित भाव से सोचने लगा कि जिस तथाकथित काम के लिये वह जा रहा है, वह कितना बेकार है।

हम यहाँ उस तीव्र विरक्ति, बल्कि लगभग घृणा, के भाव का वर्णन न करेंगे जिसे लेकर उसने लन्दन की भूमि पर पैर रक्खा। बोना-

पार्ट के लिये उसे पागल उत्साह से आप भलीभाँति परिचित हैं। वहाँ उसे हर अफसर सर हडसन लो और हर सामन्त लार्ड वेथर्स्ट दिखाई पड़ता, जो दस वर्ष तक पद-लाभ का पुरस्कार पाने के लिये सेंटिलेना के लज्जाजनक अपमान का आदेश दे रहे हो।

लन्दन में आखिरकार उसका दम और सज्जाप्रियता के चरम रूप से परिचय हुआ। उसकी मित्रता कुछ रूसी तरण सामन्तो से हो गई जिन्होंने उसे सब कुछ दिखाया।

“तुम्हें तो भाग्य ने इसके उपयुक्त बनाकर भेजा है, भाई सोरेल,” वे लोग उससे कहते। “ऐसी भावहीन तटस्थता कि लगे मानो रोजमर्रा की बातों से हजारों मील दूर हैं, जिसे प्राप्त करने का हम लोग इतना अधिक प्रयत्न करते रहते हैं, स्वयं प्रकृति ने तुम्हें दे रखी है।”

“तुम अभी समझते नहीं कि तुम किस युग में रह रहे हो,” प्रिंस कोरासौफ ने उससे कहा, “लोग जो कुछ तुमसे आशा करें, हमेशा उसके ठीक विपरीत कार्य करो। सच कहता हूँ आज के युग का एकमात्र धर्म यही है। न मूर्ख बनो और न बनावटी, क्योंकि तब लोग मूर्खता और बनावट की अपेक्षा करने लगेंगे और तुम इस सिद्धान्त का पालन न कर सकोगे।”

एक दिन फिट्जफोक के ड्यूक के ड्राइंग रूम में, जहाँ प्रिंस कोरासौफ और जुलिये को भोजन पर निमन्त्रित किया गया था, उसकी बड़ी धाक बँधी। आमन्त्रित लोगों से घंटे भर तक प्रतीक्षा करवाई गई। प्रतीक्षा करने वाले बीस व्यक्तियों में से जुलिये ने जैसा व्यवहार किया वह आज तक लन्दन के दूतावास में नौजवान सचिवों द्वारा उद्धृत किया जाता है। उसके व्यवहार की रोचकता सर्वथा बेजोड़ थी।

जुलिये प्रसिद्ध दार्शनिक फिलिप वेन से मिलने के लिये बहुत उत्सुक था, जो लौक के बाद से लन्दन का एकमात्र दार्शनिक था। उसके शौकीन मित्रों ने उसे बहुत समझाया पर वह न माना। बेंन सात बरस से जेल में था। जुलिये सोचने लगा कि इस देश में अभिजात वर्ग से खिलवाड़ नहीं

हो सकता। और इस सब के ऊपर वेन को अपमानित किया जा रहा है, उसे गालियाँ दी जा रही हैं, इत्यादि।

जुलिये ने उसे बड़े जोश में पाया; सामन्त वर्ग के क्रोध से वह बड़ा मुदित जान पड़ता था। जेल से चलते समय जुलिये ने सोचा कि लन्दन में मजेदार व्यक्ति बस यही दिखाई पड़ा।

“अत्याचारियों के लिये सबसे उपयोगी विचार,” वेन ने उससे कहा था। “भगवान् की कल्पना है।” “उसका बाकी दर्शन इतना निष्ठाहीन है कि हम उसका उल्लेख यहाँ नहीं करेंगे।

फ्रांस लौटने पर म० द ला मोल ने उससे पूछा : “लन्दन से तुम मेरे लिये कौन-कौन-से मनोरंजक विचार लेकर आये हो?” वह चुप रहा। “अच्छा तुम कौन-कौन से विचार लाये हो, मनोरंजक हो या न हो?” मार्कि ने तीव्र स्वर में फिर पूछा।

“सबसे पहले,” जुलिये ने कहा, “बुद्धिमान से बुद्धिमान अंग्रेज भी दिन में एक घण्टे के लिये पागल हो जाता है। आत्महत्या का राक्षस, जो उन लोगों का राष्ट्रीय देवता है, उसके ऊपर सवार रहता है।

“दूसरे, इंग्लैंड में पैर रखते ही बुद्धि और प्रतिभा का मूल्य पच्चीस प्रतिशत कम हो जाता है।”

“तीसरे, दुनिया में लन्दन के दृश्य से अधिक सुन्दर, अधिक विस्मयकारी और अधिक हृदयस्पर्शी और कुछ नहीं।”

“अब मेरी बारी है,” मार्कि ने कहा।

“सबसे पहले, तुमने रूसी दूतावास में जाकर यह क्यों कहा कि फ्रांस में पच्चीस वर्ष की आयु वाले तीन लाख नौजवान युद्ध के लिये बुरी तरह उतावले हैं? तुम समझते हो इससे बादशाह के प्रति समुचित सम्मान प्रगट होता है?”

“अपने प्रमुख कूटनीतिज्ञों से बात करते समय क्या कहना चाहिये और क्या नहीं, यह जानना असम्भव है। उन्हें गम्भीर चर्चा प्रारम्भ करने का रोग है। यदि आप समाचार-पत्रों की घिसी-पिटी बातें कहे

तो आपको मूर्ख समझा जायेगा। यदि आपकोई बात सच्ची और मौलिक कह डाले तो वे चौक पड़ते हैं और फिर उन्हें कोई उत्तर नहीं सूझता। बस अगले दिन सबेरे सात बजे प्रथम सचिव का एक सदेश आ घमकता है कि आपने अशिष्टता बरती है।”

“बहुत अच्छे।” मार्कि ने हँसते हुए कहा। “पर बुद्धिमान नौजवान, मैं शर्त बदता हूँ कि तुम अभी तक नहीं समझे हो कि तुम्हें लन्दन किस लिये भेजा गया था।”

“क्षमा कीजिये,” जूलिये ने उत्तर दिया। “मैं वहाँ सम्राट् के राजदूत के साथ, जो विनय और शिष्टता की प्रतिमूर्ति हैं, सप्ताह में एक बार भोजन करने के लिये भेजा गया था।”

“तुम वहाँ यह प्राप्त करने के लिये भेजे गये थे,” मार्कि ने उसे दिखाते हुए कहा। “मैं यह तो नहीं चाहता कि तुम अपने काले कोट का परित्याग करो। नीले कोट वाले व्यक्ति के साथ जो आनन्ददायक सम्बन्ध मेरा बन गया है उसका मैं अभ्यस्त हो चुका हूँ। अगला आदेश मिलने तक यह बात समझ लो : जब मैं तुम्हें यह क्रास पहिने हुए देखूँगा तो तुम्हें दुकद रे का सबसे छोटा बेटा और अपना ऐसा मित्र मानूँगा, जो अनजाने ही पिछले महीनो से कूटनीति के काम में लगा हुआ है। कृपा करके यह ध्यान रहे,” मार्कि ने बहुत गम्भीर होकर और जूलिये के कृतज्ञता-प्रदर्शन को बीच में ही काटकर कहा, “कि तुम्हें अपनी स्थिति से ऊपर उठाने की मुझे कोई इच्छा नहीं है। वह सरक्षक के लिये भी अनुचित है और आश्रित के लिये भी। जब तुम मेरे मुकदमों से उकता जाओगे या मेरे काम में तुम्हारी कोई उपयोगिता न बचेगी तो मैं तुम्हारे लिये वैसी ही अच्छी-सी आजीविका का प्रबन्ध कर दूँगा, जैसी हमारे मित्र फादर पिरार को प्राप्त है। इससे अधिक कुछ नहीं,” मार्कि ने बहुत रूखे स्वर में जोड़ा।

इस क्रास ने जूलिये के स्वाभिमान को बहुत सन्तुष्ट किया। अब वह कही अधिक खुलकर बातचीत करने लगा। बात-बात में अपमानित

अनुभव होना कम हो गया । ऐसी बातों से जिनमें थोड़ी-बहुत अशिष्टता-पूर्ण अभिप्राय देखा जा सकता है, और जो बातचीत के उत्साह में कभी भी किसी के मुँह से निकल सकती है, अब वह कम परेशान होता ।

अपने क्रास के कारण उसे एक और व्यक्ति के पधारने का आनन्द मिला । बारो द वालनो अपनी पद-प्राप्ति के लिये मंत्री को धन्यवाद देने पेरिस आये थे तो उससे भी मिलने आये और उससे अच्छा संपर्क बना गये । अब वह म० द रेनाल के स्थान पर वेरियेर के मेयर नियुक्त होने वाले थे ।

जब म० द वालनो ने उससे यह कहा कि अभी-अभी म० द रेनाल के जैकोबिन होने का पता चला है तो उसे भीतर ही भीतर बड़ी जोर की हँसी आई । असलियत यह थी कि जो नये चुनाव होने वाले थे उनमें यह नये बने हुये बैरन महोदय सरकार द्वारा समर्थित उम्मीदवार थे और जिले के केन्द्रीय मतदाता क्षेत्र में, जो वास्तव में कट्टर राजपथियों का गढ़ था, म० द रेनाल का समर्थन उदारपथी कर रहे थे ।

जुलिये ने मादाम द रेनाल के समाचार पाने की भी कोशिश की, पर सफलता न मिली । लगता था बैरन महोदय को अपनी पिछली प्रतिद्वंद्विता अभी याद है और उन्होंने कोई सकेत स्वीकार नहीं किया । अन्त में उन्होंने आने वाले चुनाव में जुलिये से उसके पिता की वोट की माँग की । जुलिये ने लिखने का वचन दे दिया ।

“भाई शवालिये साहेब, आपको सचमुच मार्कि द ला मोल महोदय से मेरा परिचय कराना चाहिए ।”

कराना तो जरूर चाहिये, जुलिये ने सोचा—पर कैसा घुर्त है ।

“सच बात यह है कि,” उसने उत्तर दिया, “मैं द ला मोल भवन में इतना सामान्य व्यक्ति हूँ कि किसी का परिचय कराने का भार नहीं ले सकता ।”

जुलिये ने मार्कि को सारी बात बताई । उसी दिन शाम को उसने उन्हे वालनो की सारी करतूतें और १८१४ से उसके कार्य और साधारण

आचरण का भी विवरण सुनाया ।

“न केवल कल तुम इस नये बैरन का मुझसे परिचय कराओगे,” मार्कि ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया, “बल्कि परसो मैं उसे भोजन के लिये भी निमन्त्रित करूँगा । वह हमारा नया ज़िलाधीश बनेगा ।”

“लेकिन उस हालत में,” जुलिये ने कुछ रुखे स्वर में उत्तर दिया, “अनाथाश्रम के संचालक की जगह मेरे पिता को मिलनी चाहिये !”

“बहुत अच्छे !” मार्कि ने फिर प्रसन्न होते हुए कहा । “मजूर ! मैं तो उपदेश की आशा कर रहा था । तुम अब तरक्की कर रहे हो !”

म० द वालनो ने जुलिये को बताया कि वेरियेर के लाटरी ब्यूरो के रक्षक की हाल ही में मृत्यु हो गई । जुलिये ने सोचा कि यदि यह जगह उस बूढ़े मूर्ख म० द शोले को, जिसकी अर्जी उसे एक बार म० द ला मोल के ठहरने के कमरे में पड़ी मिली थी, दे दी जाय, तो बहुत मज़ा रहेगा । जब वित्तमन्त्री को उसके लिए एक पत्र पर हस्ताक्षर कराते समय जुलिये ने मार्कि को वह आवेदन-पत्र पढ़कर सुनाया तो मार्कि जी खोलकर हँसे ।

म० द शोलें अभी नियुक्त ही हुए थे कि जुलिये को पता चला कि ज़िले के विधान सभा के सदस्यों ने इस स्थान की माँग प्रसिद्ध गणितज्ञ म० ग्रे के लिए की है । इस उदारहृदय व्यक्ति की केवल चौदह सौ फ्रैंक की आमदनी थी और वह छः सौ फ्रैंक प्रतिवर्ष लाटरी ब्यूरो के भूतपूर्व रक्षक को अपने परिवार का पालन करने के लिए उधार दिया करते थे ।

जुलिये अपने कार्य पर चकित था । कोई विशेष बात नहीं है, उसने मन ही मन कहा । यदि मैं उसका करना चाहता हूँ तो अभी बहुत-से अन्यत्र मेरे द्वारा होसके । विशेषकर यदि मैं सुन्दर भावुक शब्दावली से उन्हें ढँक भी सकूँ । बेचारे म० ग्रे ! इस आस के योग्य वह हैं, और मिला यह मुझे है । जिस सरकार ने यह मुझे प्रदान किया है उसकी इच्छाओं के अनुरूप ही मैं चलूँगा ।

राजसम्मान और प्रतिष्ठा

एक दिन जुलिये सेन नदी के किनारे स्थित विल्लक्वे की सुन्दर ज़मींदारी से लौटा। माद० द ला मोल अपनी सब ज़मींदारियों की अपेक्षा इसी में अधिक दिलचस्पी लिया करते थे। क्योंकि केवल वही सुप्रसिद्ध बोनीफास द ला मोल की अपनी थी। उसने लौटकर देखा कि मार्किज और उनकी पुत्री अभी-अभी इधर से लौट आई हैं।

जुलिये अब बाकायदा सुसज्जित नवयुवक था और पेरिस की जिन्दगी की कला को समझने लगा था। उसने माद० द ला मोल के प्रति पूरी-पूरी उदासीनता दिखाई। उसने यह भाव तनिक भी न दिखाया कि किसी समय वह इतने उत्साह से उसके घोड़े से गिरने का विवरण पूछा करती थी।

माद० द ला मोल को वह कुछ अधिक लम्बा और अधिक विवरण जान पड़ा। उसकी आकृति अथवा वेशभूषा में तो प्रान्तीयता के कोई चिह्न न बचे थे; पर उसके वार्तालाप में अभी यह बात न थी—अभी तक उस पर कुछ न कुछ अत्यधिक गम्भीरता, अत्यधिक कट्टरता की छाप थी। इन अत्यधिक बौद्धिक गुणों के बावजूद और अपने स्वाभिमान की कृपा से उसमें कोई हीनता का चिह्न न था, बस इतना ही लगता था कि अभी तक वह बहुत-सी वस्तुओं को महत्वपूर्ण मानता है। तो भी इतना स्पष्ट था कि वह अपने वचन का पालन करने वाला व्यक्ति है।

“उसमें स्पर्श के हल्केपन की कमी है, बुद्धि की नहीं,” माद० द ला

मोल ने अपने पिता से जुलिये को क्रास देने के लिये कुछ अप्रसन्न होते हुए कहा । “भाई तुमसे पिछले अठारह महीनो से इसके लिये माँग करते रहे हैं, और वह ला मोल परिवार के है ।”

“हाँ, किन्तु जुलिये मे अप्रत्याशित कार्य करने की प्रतिभा है । जिस ला मोल का तुम जिक्र करती हो उसमें यह बात कभी नहीं पाई गई ।”

तभी दुक् द रे के आने की घोषणा हुई ।

मातिल्द को बुरी तरह से जम्हाइयाँ आ रही थी; इस आदमी की सूरत से ही उसे पुराने जमाने की पच्चीकारियों और अपने पिता के ड्राइंग रूम के पुराने परिचित चेहरों की याद आ गई । पेरिस की जिस जिन्दगी मे वह नये सिरे से प्रवेश कर रही थी उसकी एक अत्यन्त उकताहट-भरी तस्वीर उसने मन मे बनाई । और इयेर मे वह पेरिस के लिये बेचैन थी ।

अभी मे बस उन्नीस की हूँ ! उसने सोचा । सुनहरे किनारो के ग्रथ रचने वाले बुद्धू लोग इसे आनन्द की आयु कहा करते हैं । वह अपनी अनुपस्थिति मे ड्राइंग रूम की मेज पर इकट्ठे होने वाले नौ-दस हाल ही में प्रकाशित काव्य-ग्रन्थो को देखने लगी । दुर्भाग्यवश म० द क्रवाजन्वा, द केलुस, द लुज आदि अपने सभी मित्रो से उसमें बुद्धि अधिक थी । वह भली भाँति कल्पना कर सकती थी कि वे लोग उससे प्रोवांस के सुन्दर आकाश, कविता, दक्षिण इत्यादि के बारे मे क्या-क्या कहेंगे ।

वे अपूर्व सुन्दर आँखें, जिनमे अत्यन्त ही गहरी ऊब बल्कि उससे भी अधिक कभी आनन्द मिलने के विषय मे दुराशा का राज्य था, जुलिये पर आ टिकी । वह बाकी सब लोगों की भाँति तनिक भी न था ।

“म० सोरेल,” उसने जुलिये से उस तीखी तेज आवाज मे कहा जिसमे कोई नारी-सुलभ मृदुलता न थी और जिसमे उच्च वर्गों की स्त्रियाँ जान-बूझकर बोला करती हैं, “म० सोरेल, क्या आप आज रात को म० द रे के बॉल-नृत्य में आ रहे हैं ?”

“मादम्वाजेल, मुझे इयूक महोदय से परिचित होने का सौभाग्य

प्राप्त नहीं ।”

“उन्होंने मेरे भाई से आपको लाने के लिये कहा है । यदि आप चले तो मुझे विल्लक्वे की ज़मींदारी के बारे में भी सब बात बता सकेंगे, वसन्त ऋतु में वहाँ हम लोगो के जाने की भी कुछ बात चल रही है । मैं जानना चाहती हूँ कि वहाँ का घर रहने लायक भी है या नहीं और वह स्थान क्या सबमुच ही इतना सुन्दर है जितना लोग कहते हैं । कितनी प्रतिष्ठाएँ इतनी झूठ-मूठ बन जाया करती है !”

जुलिये ने कोई उत्तर न दिया ।

“मेरे भाई के साथ बॉल में आइयेगा,” मातिल्द ने बहुत ही सक्षिप्त भाव से कहा ।

जुलिये ने झुककर अभिवादन किया । तो एक बॉल-नृत्य के बीच भी मुझे परिवार के हर व्यक्ति को अपने काम-काज का हिसाब देना पड़ेगा ! क्या ये लोग मुझे अपने कामकाज के लिये अलग पैसे नहीं देते ? अपने चिडचिडे स्वभाव के कारण उसने यह भी सोचा कि भगवान् जाने कि जो कुछ मैं बेटी से कहूँ उससे उसके पिता, भाई और माता की योजनाओं में बाधा तो न पड़ेगी ।

यह तो बिलकुल पूरा राजदरबार है । यहाँ तो अपने आपको बिलकुल नगण्य बनाना जरूरी है, और साथ ही किसी को शिकायत का मौका भी न मिले !

इस लम्बी लड़की से मुझे कितनी चिड छूटती है ! वह सोचने लगा । तभी मातिल्द की माँ ने उसे अपनी कुछ सहेलियों से परिचय कराने के लिये बुला लिया था । वह हर फैशन को इतना बड़ा-चड़ाकर करती है ! गाउन कंधे से खिसका जा रहा है... गई थी उस समय से अब पीली भी अधिक लब रही है ।...उसके बाल कितने फ्रीके हैं... क्या उसके गोरेपन के कारण ऐसा लगता है ? लगता है जैसे भीतर से घूप चमकी पड़ रही हो !...उसके अभिवादन में, लोगो की ओर देखने में कितना घमण्ड टपकता है ! कौसी राजसौ भनिमाएँ हैं ! मातिल्द ने

प्रगट होगा, इस कमी को वह अपने वार्तालाप के जोशीले स्वर द्वारा पूरा कर लिया करता था ।

“इस आदमी को दस वर्ष की सजा क्यों नहीं दे दी जाती ?” जब जुलिये इस मडली के समीप पहुँचा तो ताबो यही कह रहा था । “साँपो को तो जमीन के नीचे गहरे तहखाने में बन्द करके रखना चाहिये, उनका तो अंधेरे में ही अकेले मरना ठीक है । नहीं तो उनका विष बढ़ते-बढ़ते बहुत ही खतरनाक हो जाता है । एक हजार का जुर्माना उनके ऊपर करने से क्या लाभ ? शायद वह गरीब हो, पर यह तो और भी अच्छा है, तब तो उनकी पार्टी इस जुमनि को भर देगी । उनको तो पाँच सौ फ्रैंक का जुर्माना और दस साल की सख्त कैद की सजा होनी चाहिये ।”

हे भगवान् ! ये लोग किस राक्षस के बारे में बात कर रहे हैं ? अपने सहयोगी के स्वर की तीव्रता और आवेशपूर्ण मुख-मुद्रा पर विस्मित होते हुए जुलिये ने सोचा । ~~आदमी~~ सदस्य के भतीजे का छोटा-सा पतला दुबल चेहरा इस समय ~~बहुत~~ कुरूप लग रहा था । जुलिये को जल्दी ही पता चला कि वह युग के महानतम कवि बेराजे के विषय में बात कर रहा है ।

“ओफ ! दुष्ट कही के !” आघा जोर से और आघा मन ही मन जुलिये ने कहा और उसकी आँखें उदारतापूर्ण आँसुओं से गीली हो गई । ओफ ! दुष्ट भिखमगे कही के ! एक दिन तुम्हें इन शब्दों की कीमत चुकानी पड़ेगी ! साथ ही उसने सोचा यह विचार ही उस पार्टी की एकमात्र आशा है जिसके एक नेता मार्कि भी हैं । और जहाँ तक उस प्रतिभावान व्यक्ति का प्रश्न है, जिसकी यह निन्दा कर रहा है, यदि वह अपने आपको बेच देता, मैं नहीं कहता कि म० द नेबाल के निकम्मे मंत्रालय को, बल्कि मोटे तौर पर ऐसे किसी भी मंत्री को जिन्हें हम एक के बाद एक आते देख रहे हैं,—यदि वह अपने आपको बेच सकता तो न जाने कितने सम्मान-पुरस्कार उसे अब तक न मिल चुके होते ?

फादर पिरार ने कमरे के दूसरे छोर से जुलिये को आने का इशारा

किया, म० द ला मोल ने अभी-अभी उनसे कोई बात कही थी। पर जुलिये आँखें नीची किये हुए एक बिशप की दुखभरी कहानी सुन रहा था; जब तक वह खाली होकर अपने मित्र के पास पहुँच सके तब तक उन्हें उस नीच नौजवान ताबो ने घेर लिया था। वह दुष्ट फादर पिरार से इसलिए घृणा करता था कि उनके कारण ही जुलिये को इतनी सुविधायें मिलती हैं, अब वही उनकी खुशामद करने पहुँचा है।

“कब हमे मृत्यु उस अष्टाचार के जरा-जर्जर शरीर से मुक्ति दिलायेगी ?” उस तुच्छ साहित्यकार ने ऐसे ही बाइबिल के-से ओजपूर्ण शब्दों में इस समय उस विख्यात व्यक्ति लार्ड हौलैंड का उल्लेख किया। जीवित व्यक्तियों के जीवन-चरित्र की पूरी-पूरी जानकारी इस व्यक्ति की विशेष प्रतिभा थी और वह इस समय उन तमाम लोगों के जीवन-चरित्र पर जल्दी से एक नज़र डाल रहा था जिनकी लन्दन के नये बादशाह के राज में उच्च पद प्राप्त करने की सम्भावना थी।

फादर पिरार पास के एक कमरे की ओर बड़े। जुलिये भी उनके पीछे-पीछे वही पहुँचा।

“मैं एक बात की चेतावनी तुम्हें दे दूँ कि मार्कि को लिक्खाइ लोगों से कोई प्रेम नहीं है, उनसे वह बहुत चिढ़ते हैं। तुम्हारे लिए लैटिन और ग्रीक भाषाओं की, और यदि सम्भव हो तो मिस्र तथा फारस-बासियों के इतिहास की जानकारी करना अच्छा होगा, इसके लिये वह तुम्हें विद्वान् मानकर तुम्हारा सम्मान करेंगे। पर फ्रेंच भाषा में और विशेष कर अपने पद से उच्च किसी गम्भीर विषय के ऊपर, एक पृष्ठ भी लिखा तो वह तुम्हें कलमघसीढ़ पुकारेंगे और तुम से नाराज हो जायेंगे। यह कैसे सम्भव हुआ कि एक बड़े सामन्त के घर में रहकर भी तुम वह बात नहीं जानते जो दुक्द कास्त्री ने दालाबेर और रूसों के बारे में कही थी : “ऐसे लोग हर चीज़ में दखल रखना चाहते हैं, यद्यपि उनकी आमदनी साल में एक हजार क्राउन की भी नहीं ?”

शिक्षा-मठ की भाँति ही यहाँ भी हर बात का पता लोगों को चल

जाता है, जुलिये ने सोचा। उसने नौ या दस बहुत जोरदार पृष्ठों की बूढ़े फौजी डाक्टर के विषय में एक प्रकार की प्रशस्ति-सी लिखी थी जिसने, उसके कथनानुसार, उसे आदमी बना दिया था। यह छोटी-सी नोटबुक वह सदा ताले में बन्द रखता था। वह ऊपर पहुंचा और अपनी पाड़ुलिपि को जलाकर नीचे ड्राइंग रूम में लौट आया। विख्यात धूर्त सब जा चुके थे, केवल सम्मान-चिह्न धारण करने वाले रह गये थे।

मेज़ के चारों ओर जिसे अभी-अभी नौकरो ने लगाकर रक्खा था, कोई तीस या पैंतीस वर्ष की अवस्था वाली सात या आठ महिलायें बैठी थीं जो सब बहुत कुलीन, बहुत धार्मिक और बहुत शिष्ट थीं। तभी एक मार्शल की विधवा, प्रसिद्ध मादाम द फेर्वाक ने अपनी देरी के लिये क्षमा याचना करते हुए कमरे में प्रवेश किया। आधी रात बीत चुकी थी, वह जाकर मार्किज़ के पास बैठ गई। उनकी आँखों और उनके चेहरे का भाव ठीक मादाम द रेनाल जैसा था। जुलियें बहुत ही विचलित हो उठा।

माद० द ला मोल की मडली में अभी भी कुछ लोग मौजूद थे और उनके मित्रगण बेचारे कौंत द तालेर की हँसी उड़ाने में व्यस्त थे। वह उस प्रसिद्ध यहूदी के इकलौते बेटे थे जो जन-साधारण के ऊपर अत्याचार करने वाले राजाओं को कर्ज देकर घन बटोरने के लिये प्रसिद्ध था। यहूदी हाल ही में अपने पुत्र के लिये एक लाख क्राउन प्रतिमास की आमदनी और इतना सुप्रसिद्ध नाम छोड़कर मरा था।

ऐसी विचित्र स्थिति में या तो चरित्र की सरलता अथवा बड़ी भारी मानसिक दृढ़ता की आवश्यकता थी। दुर्भाग्यवश कौत अपने खुशामदी लोगों की चाटुकारिता से फूले हुए उनके हाथों में कठपुतली के समान थे।

म० द वेलुस का कहना था कि किसी ने उन्हें माद० द ला मोल से विवाह का प्रस्ताव करने की बात सुझा दी थी। आजकल माद० द ला मोल से मार्कि द क्रवाजन्वा, जो एक दिन एक लाख लिब्र की आमदनी वाली जागीर के स्वामी होने वाले थे, घनिष्ठता बढ़ा रहे थे।

“अरे बेचारे के ऊपर अपनी निज की इच्छा होने का दोष न तो

लगाओ !” नौबेरे ने तरस भरे स्वर में कहा ।

इस बेचारे कौत द तालेर में सबसे बड़ी कमी इच्छा-शक्ति की ही थी । इस दृष्टि से शायद वह एक अत्यन्त ही योग्य बादशाह साबित होते । किन्तु हर व्यक्ति से सलाह लेने पर भी उनमें किसी सलाह को अन्त तक मान सकने का साहस न था ।

केवल उनका मुख ही, जैसा माद० द ला मोल शायद कहती, किसी को भी बेशुमार आनन्द देने के लिये पर्याप्त था । उस पर सदा घबराहट और असन्तोष का एक विचित्र संमिश्रण झलकता रहता था; पर बीच-बीच में अपने महत्व की भागती हुई झलक भी स्पष्ट दिखाई दे जाती, और साथ ही ऐसा अधिकार का भाव भी दिखाई पड़ता जो फ्रांस के सबसे धनी व्यक्ति के विशेषकर देखने में सुन्दर और अभी तक छत्तीस वर्ष से भी कम अवस्था वाले व्यक्ति के मुख पर होना चाहिये ।

“इस आदमी में एक तरह की दबी हुई धृष्टता मौजूद है ।” म० द क्रवाजन्वा कहते । कौत द केलुस, नौबेरे तथा मूछो वाले दो-तीन अन्य नौजवान जी भर कर उसकी खिल्ली उड़ते रहे, पर अन्त में जब एक बजने लगा तो उसे वहाँ से चलता कर दिया ।

“क्या आपने अपने प्रसिद्ध अरबी घोड़े को इस मौसम में दरवाजे पर खड़ा कर रक्खा है ?” नौबेरे ने उनसे पूछा ।

“नहीं, यह नई जोड़ी है, कम कीमत की । बाईं तरफ वाले घोड़े का दाम पाँच हजार फ्रैंक है और दाईं तरफ वाले का केवल सौ लुई । पर यकीन कीजिये कि उसको सिर्फ रात में ही ले जाया जाता है और वह भी इसलिये कि उसकी दुल्की दूसरी के साथ बहुत सच्ची बैठती है ।” वह चले गये और दूसरे लोगों ने भी एक-दो मिनट बाद हँसते-हँसते विदा ली ।

जन्ते-जाते सीढ़ी पर उनकी हँसी सुनकर जुलिये सोचने लगा कि मुझे अपनी परिस्थिति के ठीक विपरीत छोर को देखने का अवसर मिल गया है । मेरे पास बीस लुई सालाना की आमदनी भी नहीं है, और मैं

सुख और स्थिर

ऐसे आदमी के साथ मौजूद हूँ जिसकी तीस लुई प्रति घण्टे की आमदनी है, और ये लोग उस पर भी हँसते हैं • ...ऐसे दृश्य से आदमी में ईर्ष्या का रोग दूर हो जाता है ।

समझदारी और एक धार्मिक महिला

कई महीनों की परीक्षा के बाद जब परिवार के कारिन्दे ने तीसरी तिमाही का वेतन जुलियें के हाथ में रक्खा तो उसकी स्थिति यही थी। म० द ला मोल ने अपनी नार्मण्डी और ब्रिटानी की जमींदारी की देख-भाल उसके सुपुर्द कर दी थी। उसका एक विशेष कार्य यह था कि वह म० द फ़िलेर के साथ प्रसिद्ध मुकदमे के सम्बन्ध में, जिसके बारे में म० पिरार ने उसे सब कुछ बता रक्खा था, पत्र-व्यवहार करता रहे।

मार्कि के पास जो भी कागज-पत्र आते, उनके हाशिये में वह सक्षिप्त टिप्पणियाँ लिख दिया करते थे। उनके आधार पर जुलिये पत्र लिखता जिनमें से अधिकांश पर मार्कि बिना कुछ कहे हस्ताक्षर कर दिया करते थे। धर्मशास्त्र के स्कूल में उसके शिक्षक पढ़ने में मन न लगाने की तो शिकायत करते पर तो भी उसे अपना सबसे मेधावी छात्र मानते थे। इन सब कार्यों को जुलिये दलित महत्वाकांक्षा की समस्त शक्ति के साथ लगकर करता जिसके कारण पेरिस आने के समय उसके चेहरे पर जो प्रफुल्लता थी वह जल्दी ही गायब हो गई थी। नये शिक्षा-मठ में उसके पीले गालों को उसके सहपाठी एक गुण समझते थे। बजासो के विद्यार्थियों की अपेक्षा ये लोग उसे कम द्वेष करने वाले और पैसे के आगे घुटने टेकने के लिये कम उद्यत जान पड़े, वे लोग तो उसे क्षय रोग से ग्रस्त समझते थे।

मार्कि ने उसे एक घोड़ा दे दिया था, पर इस डर से कि कोई त्रिद्वार्थी उसे सवारी करते देख न ले, जुलिये ने उनसे कह दिया था कि

डाक्टरों ने उसे इस व्यायाम का आदेश दिया है। फादर पिरार उसे कई जानसेनपथी परिवारों में ले गये थे। वहाँ जुलियें बड़ा विस्मित हुआ। उसके मन में धर्म पाखण्ड और पैसा के लालच से जुड़ा हुआ था। उसे इन लोगों की कठोर धार्मिकता बड़ी अच्छी लगी जो निरन्तर नौन-सेल-लकड़ी की चिन्ता में न पड़े रहते थे। एक नई दुनिया उसकी आँखों के आगे खुली। जानसेनपथियों में उसका परिचय एक काउन्ट आल्तामिरा से भी हुआ। वह छः फीट लम्बे उदारपथी तथा धार्मिक व्यक्ति थे और अपने देश में उनके लिये मृत्यु-दण्ड घोषित हो चुका था। स्वाधीनता-प्रेम और ईश्वर-प्रेम के इस विचित्र समन्वय से वह बड़ा प्रभावित हुआ।

काउन्ट नौबेर् के साथ उसकी अधिक घनिष्ठता न हो सकी थी। उन्होंने पाया था कि जब उनके कुछ मित्र उसकी खिल्ली उड़ाने लगते तो वह बड़े तीखे उत्तर दे दिया करता है। दो एक बार अशिष्टता हो जाने के कारण जुलिये ने माद० द ला मोल से एक भी शब्द न कहने का नियम बना लिया था। घर में हर व्यक्ति उससे शिष्टतापूर्ण व्यवहार करता, पर उसे लगता कि वह उन लोगों की दृष्टि में कुछ गिर गया है। अपनी प्रादेशिक सहज-बुद्धि में इस स्थिति को उसने इस कहावत द्वारा समझ लिया कि घर का जोगी जोगिया आन गाँव का सिद्ध। शायद पहले की अपेक्षा उसकी दृष्टि अब अधिक स्पष्ट हो गई थी या शायद पेरिस की नागरिकता के लुभावनेपन का जादू अब टूट चुका था। जैसे ही उसका काम खत्म होता वह बड़ी ही तीव्र असहनीय ऊब का अनुभव करता। सम्य समाज में बरती जाने वाली उस अपूर्व शिष्टता का, जो इतनी नपीतुली और सामाजिक स्थिति के अनुकूल ही कम या अधिक होती है, ऐसा ही विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। तनिक भी सवेदनशील हृदय इस चाल की असलियत तुरन्त समझ जाता है।

निस्सन्देह प्रान्तों के निवासियों में पाये जाने वाले फूहड़पन और अशिष्टता की निन्दा होना आवश्यक है। पर वहाँ लोगों के उत्तरों में एक प्रकार की आत्मीयता होती है। द ला मोल भवन में जुलियें के

आत्मसम्मान पर कभी आघात न होता । किन्तु प्रायः दिन बीतते-बीतते वह रूखाँसा हो जाता । प्रान्तों में यदि कार्फे में प्रवेश करते समय आपके साथ कोई दुर्घटना हो जाय तो वहाँ बैरा आपके मामले में कुछ दिलचस्पी अवश्य दिखायेगा । यदि इस दुर्घटना में आपके आत्माभिमान को चोट पहुँचाने वाली कोई बात हो तो वह दस बार उसी को दुहराता रहेगा जिससे आपको कष्ट हो रहा है । पेरिस में लोग इतने शिष्ट तो हैं कि अपनी हँसी को छिपा ले, पर वहाँ आप सदा अजनबी बने रहते हैं ।

यहाँ उन छोटी-छोटी बहुत-सी घटनाओं का उल्लेख बेकार है जिनके कारण जुलिये यदि एक प्रकार से उपहास के अनुपयुक्त न होता तो हास्यास्पद समझा जाता । अपनी अनर्थक तीक्ष्ण संवेदनशीलता के कारण वह अनगिनती भूले करता । उसके सारे मनोरंजन एक तरह के भावी अनिष्ट का सामना कर सकने के लिये तैयारी के उपाय थे—वह प्रतिदिन पिस्तौल चलाने का अभ्यास करता और एक अत्यन्त प्रसिद्ध तलवार शिक्षक का बहुत ही प्रतिभावान छात्र गिना जाने लगा था । पहले जब एक मिनट भी खाली मिलने पर वह उसे पढ़ने में लगाया करता था । अब वह तुरन्त घुड़सवारी के स्कूल में पहुँचकर दुष्ट से दुष्ट घोड़े की माँग करता । जब भी वह घुड़सवारी के शिक्षक के साथ बाहर जाता तो अनिवार्य रूप से घोड़े से गिरता ।

मार्कि उसके अध्यवसाय, काम के प्रति लगन, उसके मौन और उसकी बुद्धिमत्ता के कारण उसे उपयोगी समझते थे । और धीरे-धीरे उन्होंने अपने कारोबार के सारे छोटे-बड़े पेचीदा मामले उसके सुपुर्द कर दिये थे । अब कभी अपनी उच्च महत्वाकांक्षा से उन्हें थोड़ा-बहुत अवकाश मिलता, मार्कि स्वयं अपने कामकाज की बड़ी चतुराई से देखभाल करते । कहीं क्या हो रहा है इसका पता रखने की स्थिति में होने के कारण उनके अनुमान प्रायः सच्चे बैठते । वह जायदाद और जंगल खरीदते थे, पर क्रुद्ध भी बहुत ही जल्दी होते थे । सैकड़ों लुई वह यों ही लुटा देते और थोड़े-से फ्रैंको के लिये मुकदमा चलाते । अभिमानी घनी

लोग अपने कारबार से मनोरंजन चाहते हैं, लाभ नहीं। मार्कि को एक ऐसे प्रधान सचिव की आवश्यकता थी जो उनके रुपये-पैसे के मामले को स्पष्ट और सुबोध ढंग से व्यवस्थित रख सके।

मादाम द ला मोल स्वभाव से सावधान होने पर भी कभी-कभी जुलिये की हँसी उड़ाने लगती। उच्च कुलो की महिलाओं को समझदारी से उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रियाओं से विशेष रूप से डर लगता है। यह उन्हें शिष्टता के बिलकुल विपरीत जान पड़ता है। दो या तीन बार स्वयं मार्कि ने जुलिये का पक्ष लिया। वह कहते : “तुम्हारे ड्राइंग रूम में वह चाहे जितना हास्यास्पद लगे पर अपनी मेज पर वह बहुत ही उपयोगी व्यक्ति है।” उधर जुलिये सोचता कि उसने मार्किज का रहस्य पहचान लिया है। जैसे ही बारों द ला जुमात प्रवेश करते, वह प्रत्येक वस्तु में दिलचस्पी लेने लगती थी। ये महोदय बहुत ही नीरस व्यक्ति थे जिनके चेहरे पर कभी कोई भाव न दिखाई पड़ता। छोटे कद के, दुर्बल कुरूप और बहुत सजे-बजे रहने वाले ये सज्जन प्रायः अपने दिन शांतों में बिताया करते थे और साधारणतः किसी विषय में कुछ न कहते। उनका यह अपना खास रंग-ढंग था। यदि मादाम द ला मोल उन्हें अपनी बेटी का पति बनाने में सफल हो जातीं तो जीवन में पहली बार उन्हें बड़ी भारी प्रसन्नता प्राप्त हुई होती।

: ६ :

महत्व का प्रश्न

इस जीवन के लिए अजनबी होने पर भी जुलिये अभिमानवश कभी कोई बात पूछता न था। यह देखते हुए उसने बहुत-सी भयकर भूलें नहीं की। एक दिन अचानक जोरो से वर्षा होने के कारण उसे रू सेतोनोरे मे एक काफे में जाना पडा। वहाँ कीमती कपडे का ओवरकोट पहिने एक लम्बे कद का नौजवान उसकी एकटक दृष्टि से चकित होकर बहुत-कुछ उसी भाँति उसे घूरने लगा जैसे बहुत दिन पहले बजासो मे मृद० अमादा के प्रेमी ने घूरा था।

जुलिये उस अपमान की उपेक्षा करने के लिये प्रायः अपनी भर्त्सना करता रहता था। इस समय उसने इस नौजवान से तुरन्त इसका कारण पूछा। उत्तर मे उस व्यक्ति ने और भी गन्दी अपमानजनक बातें कह डाली। काफे के सब लोग उनके चारों ओर इकट्ठे हो गये। राह चलते लोग भी द्वार के सामन ठहर गये। पक्के प्रादेशिक की भाँति जुलिये सदा अपनी जेब मे पिस्तौलें लेकर चला करता था। इस समय उसने अपनी जेबो मे हाथ डालकर उन्हे जोरो से पकड़ लिया। किन्तु बुद्धिमानी उसने इतनी ही की कि बस बीच-बीच मे वह यही शब्द दोहराता रहा : “आपका पता, महाशय ? मैं आपको नीच समझता हूँ।”

जिस आग्रह से वह इन शब्दो को बार-बार दुहराये जा रहा था उससे अन्त में वहाँ भीड पर प्रभाव पडा। “यह भी क्या बात है ! वह आदमी जो लगातार ज़बान चलाये जा रहा है, अपना पता क्यों नहीं दे देता” ओवर-

कोट वाले व्यक्ति ने यह बात कई बार सुनने पर अपने पाँच-छ काई जुलिये के मुख पर फेक दिये । सौभाग्यवश उनमें से कोई उसे लगा नहीं क्योंकि उसने यह निश्चय कर रक्खा था कि यदि उसके बदन से हाथ नहीं लगाया गया तो वह अपनी पिस्तौली को इस्तेमाल न करेगा । वह आदमी वहाँ से चला गया पर जाते-जाते भी वह बीच-बीच में पीछे मुड़कर उसे अपना घूँसा दिखाता और गाली-गुफ्ता बकता गया ।

जुलिये का पसीना छूट रहा था । तो यह नीच व्यक्ति मुझे इतना उत्तेजित कर सकता है ! उसने मन ही मन कहा । इस अपमानजनक भावुकता से मैं कैसे अपना पीछा हट्टा सकता हूँ ?

द्वन्द्व-युद्ध के लिए अपना सहायक वह कहाँ खोजे ? उसका एक भी मित्र न था । कुछ लोगो से उसकी जान-पहिचान अवश्य हुई थी पर वे सभी कोई पाँच-छः सप्ताह तक उससे मिलने-जुलने के बाद अनिवार्य रूप से ठंडे पड़ गये थे । मैं तो असामाजिक प्राणी हूँ, उसने सोचा, और अब मुझे इसका निर्मम दंड मिल रहा है । अन्त में उसने त्येवें नाम के एक अवकाश-प्राप्त लेफ्टीनेण्ट के पास जाने का विचार किया जिसके साथ वह प्रायः तलवार चलाने का अभ्यास किया करता था । जुलिये ने उससे सब सच्ची-सच्ची बात कही ।

“मैं तुम्हारा सहायक बनने के लिये पूरी तरह तैयार हूँ,” त्येवें ने कहा, “पर एक शर्त है । यदि तुम अपने विपक्षी को आहत न कर सके तो तुम्हें वही तुरन्त मेरे साथ लड़ना पड़ेगा ।”

“ठीक है,” जुलिये ने बहुत ही प्रसन्न होते हुए कहा और वे लोग कांड के ऊपर दिये हुए पते पर फौब्रर सें जे में मे म० सी० द बोव्वाज़ि को ढूँढ़ने चल पड़े ।

उस समय सबेरे के सात बजे थे । जब वह अपना नाम भेजने लगा तो अचानक जुलिये को खयाल आया कि यह व्यक्ति कहीं मादाम द रेनाल का वह सम्बन्धी न हो जो पहले कहीं रोम या नैपिल्स के दूनावास में था और जिसने गायक जेरोनियो को एक परिचय-पत्र दिया था । जुलिये ने

लम्बे कद वाले नौकर को पहले दिन अपने ऊपर फेंके गये एक कार्ड के साथ अपना भी एक कार्ड दे दिया ।

उसे और उसके सहायक को कोई पौन घण्टे तक प्रतीक्षा करनी पड़ी । अन्त में उन्हें बहुत बेहद सजे हुए कमरे में ले जाया गया जहाँ नौजवान एक दर्जी के मौडल की भाँति सजा हुआ मौजूद था । उसकी मुखाकृति सौन्दर्य के ग्रीक आदर्श की भाँति सम्पूर्णता और निर्जीविता की प्रतिमूर्ति थी । उसके अत्यन्त ही छोटे सिर पर बहुत सुन्दर केश थे जिन्हे बहुत सावधानी से धुँधराला बनाया गया था और एक भी बाल इधर-उधर निकला हुआ न था । लेफ्टिनेन्ट ने सोचा कि अपने बालों को इस भाँति धुँधराले करने के लिये ही इस नालायक पिल्ले ने हम लोगों को बिठाये रक्खा । उसका धारीदार ड्रेसिंग गाउन, सबेरे पहनने की पैन्ट, सक्षेप में, कड़ी हुई चट्टियों तक, हर वस्तु उपयुक्त और अपूर्व रूप में सुन्दर थी । उसके मुखाकृति के सौम्य अभिजात साँचे से यह स्पष्ट था कि विचार उसके पास कम हैं पर सब समुचित ही है । वास्तव में वह एक ऐसा आदर्श मिलनसार आदमी दिखाई पड़ता था जो बहुत गम्भीर हो और जिसे अप्रत्याशित वस्तु तथा उपहास से बड़ा भय लगता हो ।

लेफ्टिनेन्ट ने जुलियों को बता दिया था कि किसी के मुँह पर कार्ड फेंक कर मारने के बाद उसे इतनी देर तक बिठाये रखना और भी अपमान की बात है । इसलिये वह बड़े रौब के साथ म० द बोव्वाज़ि के कमरे में घुसा चला गया । उसका इरादा उद्धत होने का था, पर साथ ही वह सुशिक्षित भी दिखाई पड़ना चाहता था ।

पर वह म० द बोव्वाज़ि के विनम्र व्यवहार से उनके शिष्टाचार, आत्म-महत्व और आत्मनिर्दोष के मिश्रित भाव से, और उस वातावरण के विस्मयजनक ऐश्वर्य से इतना चकित हुआ था कि पलक मारते ही उद्धत होने का विचार उसके मन से गायब हो गया । यह तो वह व्यक्ति न था । वह एक उजड़ आदमी को ढूँढता हुआ वहाँ आया था । उसके

बजाय एक ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्ति से सामना होने के कारण उसका बिस्मय इतना अधिक था कि उसे एक शब्द भी कहने के लिये न सूझा । अपने उन फेंके गये कार्डों में से एक उनकी ओर बढ़ा दिया ।

“यह मेरा ही नाम है ।” उस फैशनेबल आदमी ने कहा जिसके मन में सात बजे सबेरे जुलियों को काला कोट पहने देखकर कोई विशेष आदर का भाव नहीं उत्पन्न हुआ था । “किन्तु सच कहता हूँ मैं समझा नहीं”

इन अन्तिम तीन शब्दों के उच्चारण का उसका ढग ऐसा था कि जुलिये फिर गरम हो उठा । “मैं आपसे द्वन्द्व-युद्ध करने के लिये आया हूँ, महाशय,” उसने कहा और जल्दी से सारी परिस्थिति बता दी ।

म० शार्ल द बोव्वाज़ि गम्भीरतापूर्वक विचार करने के बाद जुलिये के कोट के कटाव से कुछ प्रसन्न हुए । उसकी बात सुनते-सुनते उन्होंने सोचा कि यह निश्चित ही स्तौव के यहाँ का है । वह वेस्टकोट भी बहुत सुव्चिपूर्ण है । बूट भी ठीक हैं, पर इस समय सबेरे यह काला सूट ! उन्होंने सोचा कि शायद गोली से बचने के लिए पहना गया हो ।

यह बात सूझते ही उनकी वह निर्दोष विनम्रता और शिष्टता लौट आई और वह जुलियों से लगभग बराबरी का-सा व्यवहार करने लगे । यह वार्तालाप कुछ लम्बा था और मामला कुछ पेचीदा । पर अन्त में जुलिये प्रमाणों को अस्वीकार न कर सका । उसके सामने बैठा हुआ शिष्ट और सुशिक्षित व्यक्ति किसी भी प्रकार से उस अपमान करने वाले गँवार व्यक्ति से न मिलता था ।

जुलियों को वहाँ से हटने की इच्छा ही नहीं हो रही थी, वह अपनी बात समझाने में और भी देर लगाता रहा और इस बीच शवालिये द बोव्वाज़ि के आत्म-विश्वास पर ध्यान देता रहा । जुलियों के उन्हें सीधे-सीधे ‘मस्यु’ कहकर पुकारने से कुछ अप्रतिभ होकर उन्होंने अपना नाम शवालिये द बोव्वाज़ि बताया था ।

जुलियों को उनकी गम्भीरता अच्छी लगी जिसमें हल्का-सा अहंकार

भी मिला हुआ तो था पर क्षणभर भी अलग से अनुभव न होता था । जिस तरह से वह शब्दों के उच्चारण में अपनी जीभ को घुमाते थे उससे जुलिये बड़ा चकित हुआ पर कुल मिलाकर इन सब में ऐसी कोई बात न थी जिससे भगड़े के लिये प्रोत्साहन मिल सके ।

वह तरुण कूटनीतिज्ञ बड़े सौजन्य से युद्ध के लिये प्रस्तुत हो गया । पर लेफ्टिनेंट महोदय ने, जो पिछले एक घण्टे से अपनी जाँघों पर हाथ रखे और पैर फैलाये बैठे थे, यह निश्चय किया कि उनके मित्र म० सोरेल ऐसे व्यक्ति नहीं हैं कि जर्मन ढग से केवल इस कारण किसी दूसरे से भगड़ा करने लगे कि किसी ने उस व्यक्ति के कार्ड चुरा लिये हो ।

जुलिये जब उस घर से निकला तो उसका मिजाज बहुत खराब था । शवालिये द बोव्वाजि की गाड़ी सीढियों के सामने अहाते में खड़ी थी । नजर उठाने पर जुलिये ने कोचवान को पहिचान लिया । पिछले दिन उसी ने उसका अपमान किया था । फौरन जुलिये ने उसके मोटे कोट को पकड़कर उसे सीट से घसीट लिया और अपने बेल्ट से उसकी कस के मरम्मत की । यह सब काम जैसे पलक मारते हो गया । दो नौकरो ने अपने साथी को बचाने की कोशिश की । वे जुलिये पर घूँसा चलाने आये तो उसने तुरन्त अपनी जेब से पिस्तौल निकाल कर दाग दी । पिस्तौल देखते ही वे सब सिर पर पैर रखकर भागे । इस सारे काम में एक मिनट से भी कम समय लगा होगा ।

शवालिये द बोव्वाजि बहुत ही हास्यास्पद गम्भीरता के साथ और अपने अभिजात स्वर को दोहराते हुये नीचे आये “यह क्या ? यह क्या ?” स्पष्ट ही वह सारा मामला समझने को बहुत उत्सुक थे, पर उनकी कूटनीतिज्ञोचित गम्भीरता उन्हें अधिक कौतूहल प्रगट न करने देती थी । जब वे सारी बात समझ चुके तो उनके मुख पर खासी उपेक्षा तथा एक कूटनीतिज्ञ के लिये आवश्यक हल्की-सी परिहासपूर्ण संयत मुखमुद्रा के बीच सघर्ष-सा चल रहा था ।

लेफ्टिनेंट महोदय ने अनुभव किया कि म० द बोव्वाजि की लड़ने की

इच्छा है, बड़ी चतुराई से उन्होंने अपने मित्र की पहल रखने के लिए कहा, “अब तो द्वन्द्व-युद्ध के लिये अवसर उपस्थित हो गया।”

“यही समझना चाहिये,” कूटनीतिज्ञ ने उत्तर दिया।

“इस बदमाश को फौरन निकाल बाहर करो,” उन्होंने अपने नौकरों से कहा। “तुमसे कोई गाड़ी मम्हाल ले।” उन्होंने गाड़ी का दरवाजा खोला। शवालिये महोदय ने इस बात पर जोर दिया कि जुलियें और उनके सहायक पहले बैठें। वे लोग अब म० द बोव्वाज़ि के किसी मित्र को ढूँढने पहुँचे, जिन्होंने एक निराला स्थान सुझा दिया। रास्ते में बातचीत बिलकुल अवसरोचित थी। केवल राजनीतिज्ञ का ड्रेसिंग गाउन पहने होना ही थोड़ा साधारण से भिन्न लगता था।

जुलियें सोचने लगा कि ये लोग सच्चे सामन्त होते हुए भी उतने नीरस नहीं हैं जितने म० द ला मोल के यहाँ आमन्त्रित व्यक्ति होते हैं। और इसका कारण भी समझ में आता है; ये लोग अपने बातलाप में थोड़ी-सी आत्मीयता भी आने देते हैं। इस समय किन्ही नर्तकियों का जिक्र छिड़ा हुआ था। इस सिलसिले में उन लोगो ने ऐसी-ऐसी सरस कहानियाँ सुनाईं जिनसे जुलियें और उसके सहायक एकदम अनभिज्ञ थे। जुलियें इतना मूर्ख न था कि उन्हें पहले से सुने होने का बहाना करता। उसने बड़े ढंग से अपना अज्ञान स्वीकार कर लिया। इस निश्छलता से शवालिये के मित्र बड़े प्रसन्न हुए और वे उन कहानियों को और भी विस्तार तथा बड़े रोचक ढंग से सुनाने लगे।

एक बात पर जुलियें का आश्चर्य अन्त तक कम न हो सका। रास्ते में गाड़ी एक वेदी के सामने ठहरी जो कौर्पस क्रिस्टी के जुलूस के लिये सड़क के बीचोबीच बनाई जा रही थी। वे लोग बहुत-सी मज़ाक की बातें करने लगे। उनके कथनानुसार क्यूरे किसी आर्च बिशप का लडका है। मार्कि द ला मोल ड्यूक बनने के आकांक्षी थे; उनके घर पर ऐसी बात कहने का साहस कभी कोई नहीं कर सकता था।

द्वन्द्व-युद्ध एक क्षण में समाप्त हो गया। जुलियें की बाँह में मोली

लगी। उस पर ब्राण्डी में रूमाल डुबाकर बाँध दिया गया और शवालिये ने बड़े शिष्टाचारपूर्वक जुलिये से अनुरोध किया कि वह उन्हीं की गाड़ी में घर तक चले। द ला मोल भवन का नाम लेते ही युवक राजनीतिज्ञ और उसके मित्र ने एक-दूसरे की ओर देखा। जुलिये की गाड़ी भी प्रतीक्षा कर रही थी, पर सुयोग्य लेफ्टिनेंट की अपेक्षा इन महानुभावों का वार्तालाप उसे कहीं अधिक रोचक लग रहा था।

हे भगवात् ! बस यही होता है द्वन्द्व-युद्ध में ? जुलिये सोचने लगा। अच्छी तकदीर थी कि वह कोचवान फिर मिल गया ! किसी काफ़े में दूसरी बार ऐसा अपमान सहना कितने दुर्भाग्य की बात होती ! उन लोगों का मनोरंजक वार्तालाप बन्द ही न होना था। जुलिये ने अनुभव किया कि कूटनीतिज्ञों के रंग-ढंग में भी आखिरकार फायदा तो है ही।

तो प्रबन्ध अभिजातवर्गीय वार्तालाप का कोई अनिवार्य अंग नहीं है। उसने सोचा। ये लोग कौर्पस क्रिस्टी के जुलुस के विषय में भी मज़ाक कर सकते हैं, बड़ी से उड़ी खतरनाक कहानियाँ भी ऐसी सरसता से विस्तार पूर्वक सुना सकते हैं। वास्तव में इनमें केवल एक ही चीज़ की कमी है, और वह है राजनीति के विषय में ठीक-ठीक विचार। किन्तु यह अभाव उनके आकर्षक व्यवहार और उनकी बातचीत की निपुणता से पूरा हो जाता है। जुलिये ने उन लोगों के प्रति बड़े आकर्षण का अनुभव किया। वह सोचने लगा कि यदि इन लोगों से और अधिक मिलना-जुलना हो सकता तो कितना अच्छा होता !

विदा होते ही शवालिये द बोव्वाज़ि जल्दी से पूछताछ के लिये चल पड़े, पर उन्हें बहुत अधिक सफलता न मिली। वह इस व्यक्ति के बारे में जानने को बहुत उत्सुक थे। पर क्या उसके घर मिलने जाना उचित होगा ? जो कुछ थोड़ी-बहुत जानकारी उन्हें मिली थी वह बहुत प्रोत्साहित न करती थी।

“यह तो बड़ी भयानक बात है,” उन्होंने अपने सहायक से कहा। “मैं यह किसी तरह से स्वीकार न करूँगा कि जिस व्यक्ति से मैंने द्वन्द्व-

युद्ध किया है जो केवल म० द ला माल का सेक्रेटरी मात्र है, और वह भी केवल इसलिये कि मेरे कोचवान ने मेरे कार्ड चुरा लिये थे ।”

“यह तो निश्चित है कि इस कहानी से हँसी उड़ने की पूरी सम्भावना है ।”

उसी दिन शाम को शवालिये द बोव्वाज़ि और उनके मित्र ने चारों ओर यह बात फैला दी कि म० सोरेल, जो वैसे बहुत ही आकर्षक युवक हैं, म० द ला मोल के किसी घनिष्ठ मित्र के जारज पुत्र हैं । यह बात चारों ओर फैल जाने के बाद वह नौजवान कूटनीतिज्ञ और उनके मित्र एक-दो बार जुलियों से मिलने भी आये क्योंकि उसे एक पखवाड़े तक चोट के कारण अपने कमरे में बंद रहना पड़ा । जुलियों ने उनके सामने स्वीकार किया कि उसने जीवन में केवल एक बार ही अपिरा देखा है ।

“यह तो बड़ी भयकर बात है,” उन्होंने कहा, “कोई भी कभी और कहीं नहीं जाता । अब ठीक हो जायें तो ‘कौंत औरि’ सुनने के लिये अपिरा अवश्य जाइयेगा ।”

अपिरा में शवालिये द बोव्वाज़ि ने उसका परिचय प्रसिद्ध गायक जेरोनिमो से कराया जो उन दिनों बहुत प्रसिद्ध हो रहा था ।

जुलियों तो शवालिये की लगभग पूजा करने लगा था । आत्मसम्मान, रहस्यपूर्ण आडम्बर और यौवनसुलभ मूर्खता के इस सम्मिश्रण ने उसे मंत्रमुग्ध कर दिया था । शवालिये थोड़ा-सा हकलाते भी थे, क्योंकि उन्हें प्रायः एक ऐसे महापुरुष से मिलना पड़ता था जो इस दुर्बलता से पीड़ित थे । जुलियों ने ऐसे मनोरंजक तथा हास्यास्पद रंग-ढंग और प्रान्तों के फूहड़ लोगों के लिये अनुकरणीय निर्दोष आचार-व्यवहार एक ही व्यक्ति में एक साथ पहले कभी न देखे थे ।

वह प्रायः शवालिये द बोव्वाज़ि के साथ अपिरा में दिखाई पड़ता । इस सपर्क से लोगों में उसकी चर्चा होने लगी ।

“अच्छा !” म० द ला मोल ने एक दिन उससे कहा, “तो अब तुम फ्रांस-कौंते के किसी धनी महानुभाव के जारज पुत्र हो, जो मेरे भी घनिष्ठ

मित्र हैं ।”

जुलिये ने प्रतिवाद करने का प्रयत्न किया कि वह अफवाह उसने नहीं फैलाई है, पर मार्कि ने उसकी बात को बीच ही में काट दिया ।

“म० द बोव्वाज़ि एक बढ़ई के बेटे के साथ द्वन्द्व-युद्ध करना नहीं चाहते थे,” जुलिये ने कहा ।

“जानता हूँ, जानता हूँ,” म० द ला मोल ने कहा । “यह मेरे ऊपर है कि मैं इस कहानी को कुछ विश्वसनीयता प्रदान करूँ अथवा न करूँ, यद्यपि यह मुझे भी सुविधाजनक तो लगती है । पर मुझे तुम से एक अनुग्रह की याचना करनी है जिसमें तुम्हारा कुल आधा घण्टे से अधिक समय न लगा करेगा । ऑपेरा के दिन तुम वहाँ जाकर बरामदे में खड़े होकर उच्च समाज के लोगो को निकलते हुए देखा करो । मुझे अब भी तुमसे कुछ-कुछ प्रान्तीय तौर-तरीके दीख जाते हैं । उनसे तुम्हारा पीछा छूटना चाहिये । इसके अलावा महत्वपूर्ण लोगों को कम से कम शकल से भी न जानना भी बुरी बात है । उनके पास कोई सवाद लेकर भेजने का काम ही मुझे पड़ सकता है । जाओ, टिकटघर पर जाकर अपना नाम बताना । वहाँ तुम्हारे लिये एक पास तैयार है ।”

. ७ :

गठिया का दौर

पाठक को शायद इस उन्मुक्त और लगभग मैत्रीपूर्ण स्वर से आश्चर्य हो, क्योंकि हम यह कहना भूल गये हैं कि इसी बीच तीन सप्ताह तक मार्कि को गठिया के दौरे से घर पर रहना पडा था ।

माद० द ला मोल अपनी माँ के साथ इयेर मे अपनी नानी के पास गयी हुई थी । काउन्ट नौर्वेरे केवल क्षण दो क्षण के लिये ही अपने पिता से मिलने आते । उनके परस्पर सम्बन्ध बहुत अच्छे थे, पर एक दूसरे से बात करने को कुछ न था । म० द ला मोल को केवल जुलियों के साथ ही रहना पडा तो वह इस बात से चकित हुए कि इस युवक के पास विचारो की कमी नहीं । वह उससे दैनिक समाचार पढ़वाकर सुनते और शीघ्र ही तरुण सेक्रेटरी दिलचस्प अंशों को अपने आप चुनने लगा । एक नये पत्र से मार्कि को घृणा थी और उन्होंने उसे न पढ़ने की सौगन्ध खा रक्खी थी, यद्यपि उसके बारे में वे नित्यप्रति बातचीत करते रहते । इस बात पर जुलियों को बड़ी हँसी आती । मार्कि ने वर्तमान स्थिति से परे-ज्ञान होकर जुलियों से लिवी पढकर सुनाने को कहा । उन्होंने पाया कि उसका तात्कालिक अनुवाद बहुत ही रोचक होता है ।

एक दिन अत्युक्तिपूर्ण विनम्रता के स्वर में, जिससे प्रायः जुलियों का धीरज जाता रहता था, मार्कि ने उससे कहा : “भाई सोरेल, यदि अनुमति दो तो मैं तुम्हें एक नीला कोट भेंट करूँ । यदि तुम उसे पहिनकर मेरे पास आओ तो मैं तुम्हें कौत द रे का छोटा भाई, अर्थात् मेरे पुराने

सुख और स्याह

मित्र ड्यूक का पुत्र समझा करूँगा ।”

जुलिये ठीक-ठीक समझ न सका कि मामला क्या है । पर उसी दिन शाम को वह नीला कोट पहिनकर आया । मार्कि ने उससे बराबरी का व्यवहार किया । जुलिये का हृदय इतना उदार तो था ही कि वास्तविक विनम्रता को पहिचान सके, पर वह उसकी सूक्ष्मता को न समझ पाता था । मार्कि की इस सनक के पहले भी उसे निश्चित रूप से लगता था कि जितनी शिष्टता और आदर के साथ उसका स्वागत हुआ है उससे अधिक होना असम्भव है । कैसा अनुपम उपहार है ! जुलिये ने कोट को देखकर सोचा । जब वह जाने लगा तो मार्कि ने इस बात के लिये क्षमा माँगी कि गठिया के कारण वह उसे द्वार तक छोड़ने न जा सकेगे ।

जुलिये के मन को एक विचित्र विचार ने घेर लिया । क्या वह मेरी हँसी उड़ा रहे है ? वह फादर पिरार से परामर्श लेने पहुँचा । उन्होंने उत्तर में योही कुछ कहकर दूसरी बात छोड़ दी । अगले दिन सबेरे जुलिये मार्कि के पास अपना काला कोट पहिने और एक पोर्टफोलियो तथा हस्ताक्षर कराने के लिये चिट्ठियाँ लेकर आया । इस समय उसका स्वागत पुराने ही ढंग से हुआ । शाम को नीला कोट पहिनकर आने पर फिर स्वर एकदम बदला हुआ था और बिल्कुल पिछले दिन की भाँति ही अत्यधिक सौजन्यपूर्ण था ।

“तुम एक बेचारे बीमार वृद्ध व्यक्ति से मिलने आने में उकताते तो नहीं हो ?” मार्कि ने कहा । “अच्छा तो तुम मुझे अपने जीवन की तमाम छोटी-छोटी घटनाएँ भी सुनाओ, पर निश्छल भाव से, और स्पष्टतापूर्वक तथा मनोरञ्जक ढंग से सुनाने के अतिरिक्त अन्य किसी विचार के बिना ही । क्योंकि मनोरञ्जन अवश्य होना चाहिये,” मार्कि ने कहा । “जीवन में सच्ची वस्तु वही है । कोई व्यक्ति हर रोज युद्ध क्षेत्र में मेरे आणों की रक्षा नहीं कर सकता और न मुझे रोज दस लाख की सपत्ति भेंट कर सकता है; पर यदि यहाँ मेरे पास रिवारोल बैग हो तो बद्ध अत्येक दिन मुझे एक घण्टे के कष्ट और उकताहट से छुटकारा दिला सकता

है। मैं विदेश-निवास के दिनों में हैमबर्ग में उसे अच्छी तरह से जानता था।”

मार्कि जुलिये को रिबारोल और हैम्बर्ग के लोगों की कहानियाँ सुनाने लगे, जहाँ उसके एक विदग्ध कथन का अभिप्राय समझने के लिये चार-चार आदमियों को मिलकर प्रयत्न करना पड़ता था।

म० द ला मोल इस नौजवान पुरोहित के साथ अकेले पढ़ गये थे; वह जैसे गुदगुदाकर उसमें सजीवता उत्पन्न करना चाहते थे। उन्होंने जुलिये के अभिमान को कुरेद कर उसकी वास्तविक क्षमता को उजागर करने का प्रयत्न किया। जुलिये ने केवल दो बातों को छोड़कर बाकी सारी कहानी उन्हें सुनाने का निश्चय किया—एक तो उस नाम के प्रति अपनी अन्वभक्ति जिसे सुनते ही मार्कि का पारा चढ़ जाता था, और दूसरे अपने भीतर धार्मिक श्रद्धा का नितान्त अभाव जो एक भावी क्यूरे के लिये अशोभन था। शबालिये द बोव्वाज़ि के साथ होने वाली घटना भी बड़े उपयुक्त अवसर पर आई। रू सेंटेंनोरे के काफ़े में कोचवान द्वारा उसे गन्दी-गन्दी गालियाँ दिये जाने के दृश्य के ऊपर तो मार्कि इतना हँसते रहे कि उनकी आँखों में आँसू आ गये। स्वामी और अनुचर के बीच यह एकदम निश्छल सम्बन्ध के दिन थे।

म० द ला मोल को इस विचित्र व्यक्तित्व में बड़ी दिलचस्पी हो गई थी। शुरू-शुरू में तो वह जुलिये की विचित्रताओं को इसलिये प्रोत्साहित करते थे कि उनसे कुछ मनोरंजन हो, पर शीघ्र ही उन्हें इस बात में अधिक आनन्द आने लगा कि व्यक्तियों तथा वस्तुओं के विषय में इस युवक के अपरिपक्व विचारों को बहुत ही मीठे ढंग से ठीक करते जायें। मार्कि सोचने लगे कि प्रान्तों से पेरिस आने वाले लोग यहाँ की हर चीज़ की प्रशंसा ही करते हैं। यह आदमी हर चीज़ से घृणा करता है। उन लोगों में बनावटीपन बहुत अधिक होता है, इसमें जितना आवश्यक है उतना भी नहीं है, इसलिये भूख लोग उसे भूख समझते हैं।

उस साल जाड़ों के तीव्र शीत के कारण गठिया का यह दौर बहुत

दिनो तक बल्कि कई महीनो तक चला ।

लोग तो एक छोटे कुत्ते तक से प्रेम करने लगते हैं, मार्कि ने सोचा, इस तरुण पुरोहित के प्रति स्नेह में लज्जित होने की क्या बात है ? यह मौलिक ढंग का व्यक्ति है । मैं उससे बेटे की तरह व्यवहार करूँ तो इसमें हाज़ि ही क्या है ? मेरे मन की सनक यदि बनी ही रही तो भी मेरी बसीयत में अधिक से अधिक पाँच सौ लुई के एक हीरे का ही तो खर्च है ।

अग्ने आश्रित के चरित्र की दृढ़ता एक बार पहिचान लेने के बाद मार्कि उसे हर रोज़ किसी न किसी नये काम का भार सौंपने लगे । जुलिये को यह देखकर बड़ा भय हुआ कि वह कभी-कभी एक ही बात के बारे में परस्पर-विरोधी आदेश दे दिया करते थे । इससे वह किसी दिन बड़ी मुसीबत में न पड़ जाये । उसके बाद से जुलिये सदा एक कापी लेकर मार्कि के पास आता, जिसमें सब निर्णय लिख लिये जाते और मार्कि उस पर हस्ताक्षर कर देते । जुलिये ने एक क्लर्क और रख लिया था जो अलग-अलग कामों से सम्बन्धित आदेशों की एक विशेष कापी में नकल कर लेता था, जिसमें सब पत्रों की नकले भी रखी जाती थी ।

शुरू-शुरू में यह प्रस्ताव बेहद वाहियात जान पड़ा । किन्तु दो महीने के भीतर ही मार्कि को इसके लाभ समझ में आने लगे । जुलिये ने यह भी प्रस्ताव किया कि किसी बैंक का कोई क्लर्क नियुक्त कर लिया जाय जो जुलिये की देखभाल में होने वाली जायदादों से सम्बन्धित आमदनी और व्यय का हिसाब-किताब दोहरी पद्धति के अनुसार रक्खा करे ।

इन सब उपायों से मार्कि की आँखें इस हद तक खुली कि वह दो-तीन नये कारोबारों में अपने दलाल की सहायता के बिना ही, जो उन्हें ठग रहा था, अपने आप निर्णय करने में सफल हुए ।

“तीन हज़ार फ़ैंक तुम अपने लिये ले लो,” एक दिन उन्होंने अपने तरुण भ्राता से कहा ।

“पर, इससे लोग कही मेरे आचरण का गलत अर्थ न लगायें ।”

सुख और त्याग

“तो फिर तुम क्या चाहते हो ?” मार्कि ने कुछ चिढ़कर पूछा ।

“मेरी इच्छा है कि आप कृपा करके बाकायदा समझौते के रूप में इस बात को अपने हाथ से इस कापी में लिख दे । इसके अनुसार मुझे तीन हजार फ्रैंक की रकम मिलेगी । वैसे भी यह सब बहीखातो की सूझ फादर पिरार की है ।” मार्कि ने उतनी ही उकताहट के भाव से, जैसा मार्कि द मोकाद म० प्वास्सो से हिसाब-किताब की बात सुनते समय अनुभव किया करते होंगे, समझौता लिख दिया ।

शाम को जब जुलिये अपना नीला कोट पहिनकर आता तो काम-काज की बात बिलकुल न होती । मार्कि की इन कृपाओं से हमारे नायक के निरन्तर आहत होने वाले आत्मसम्मान को इतनी सान्त्वना मिली कि शीघ्र ही वह अपनी इच्छा के बावजूद इस हंसमुख वृद्ध के प्रति एक तरह का स्नेह-सा अनुभव करने लगा । यह नहीं कि जुलिये में उस प्रकार की कोई सूक्ष्म संवेदनशीलता थी, जो पेरिस में चलती है । किन्तु उसमें मानवीय भावना का अभाव न था और बूढ़े फौजी डाक्टर की मृत्यु के बाद से किसी ने उससे इतनी आत्मीयता से बातचीत न की थी । उसे इस बात से बड़ा विस्मय हुआ कि उसके स्वाभिमान का जैसा सौजन्यपूर्ण आदर मार्कि करते थे वैसे उसे बूढ़े डाक्टर से भी कभी न मिला था । अन्त में उसे यह अनुभव हुआ कि मार्कि को अपने नीले फीते का जितना गर्व था उससे कहीं अधिक डाक्टर को अपने क्रास का था । मार्कि एक बड़े भारी सामन्त के पुत्र थे ।

एक दिन सबेरे जब वह अपना काला सूट पहिनकर काम-काज के सिलसिले में आया था तो जुलिये मार्कि को इतना मनोरंजक लगा कि उन्होंने उसे दो घण्टे तक रोके रक्खा और उनका दलाल जो बहुत से नोट लाया था उन्हें उसे देने का आग्रह करने रहे ।

“म० मार्कि, मुझे आशा है कि यदि मैं आपसे कुछ शब्द कहने की प्रार्थना करूँ तो आप उसे अविनीत न समझेंगे ।”

“तुम्हारे मन में जो भी है कहो ।”

“क्या आप मुझे उदारतापूर्वक इस उपहार को अस्वीकार करने की अनुमति देगे ? यह उपहार काला सूट पहिनने वाले व्यक्ति के प्रति नहीं है, और इससे वे सम्बन्ध एकदम नष्ट हो जायेंगे जो आपने नीले सूटधारी व्यक्ति के साथ बनाये रखने का अनुग्रह किया है।” उसने बहुत आदर सहित झुककर अभिवादन किया और मार्कि की ओर देखे बिना ही कमरे के बाहर चला गया।

इस घटना से मार्कि बहुत चकित हुए। उस दिन शाम को उन्होंने फादर पिरार को भी यह बात सुनाई।

“एक बात मैं आज आपके सामने अवश्य स्वीकार करूँगा। मुझे जुलिये के जन्म के विषय में सब कुछ पता है और मैं आपको यह अधिकार देता हूँ कि आप इस रहस्य को गुप्त न रखें।”

मार्कि सोचने लगे कि आज सबेरे उसका व्यवहार सचमुच बड़ा उच्च था और अब मैं उससे सचमुच उच्च-कुलीन व्यक्ति की भाँति व्यवहार करूँगा।

इसके कुछ ही समय बाद मार्कि अपने कमरे से उठकर चलने-फिरने शीघ्र हो गये।

“जाओ दो महीने लन्दन की सैर कर आओ,” उन्होंने जुलिये से कहा। “विशेष पत्रवाहक और अन्य सवाददाता मेरे पास आने वाले पत्रों को मेरी टिप्पणियों के साथ तुम्हारे पास पहुँचा दिया करेंगे। तुम प्रत्येक पत्र का उत्तर लिखकर और बन्द करके मेरे पास वापिस भेजते रहना। मैंने हिस्सा लगा लिया है कि पाँच दिन से अधिक विलम्ब इसमें न हुआ करेगा।”

गाड़ी में बैठकर कैले की ओर यात्रा करते-करते जुलिये चकित भाव से सोचने लगा कि जिस तथाकथित काम के लिये वह जा रहा है, वह कितना बेकार है।

हम यहाँ उस तीव्र विरक्ति, बल्कि लगभग धृणा, के भाव का बर्णन न करेंगे जिसे लेकर उसने लन्दन की भूमि पर पैर रक्खा। बोना-

पार्ट के लिये उसने पागल उत्साह से आप भलीभाँति परिचित हैं। वहाँ उसे हर अफसर सर हडसन लो और हर सामन्त लार्ड वैथर्स्ट दिखाई पड़ता, जो दस वर्ष तक पद-लाभ का पुरस्कार पाने के लिये सेंटिलेना के लज्जाजनक अपमान का आदेश दे रहे हो।

लन्दन में आखिरकार उसका दम और सज्जाप्रियता के चरम रूप से परिचय हुआ। उसकी मित्रता कुछ रूसी तरण सामन्तो से हो गई जिन्होंने उसे सब कुछ दिखाया।

“तुम्हे तो भाग्य ने इसके उपयुक्त बनाकर भेजा है, भाई सोरेल,” वे लोग उससे कहते। “ऐसी भावहीन तटस्थता कि लगे मानो रोजमर्रा की बातों से हजारों मील दूर है, जिसे प्राप्त करने का हम लोग इतना अधिक प्रयत्न करते रहते हैं, स्वयं प्रकृति ने तुम्हे दे रखी है।”

“तुम अभी समझते नहीं कि तुम किस युग में रह रहे हो,” प्रिंस कोरासौफ ने उससे कहा, “लोग जो कुछ तुमसे आशा करें, हमेशा उसके ठीक विपरीत कार्य करो। सच कहता हूँ आज के युग का एकमात्र धर्म यही है। न मूर्ख बनो और न बनावटी, क्योंकि तब लोग मूर्खता और बनावट की अपेक्षा करने लगेंगे और तुम इस सिद्धान्त का पालन न कर सकोगे।”

एक दिन फिट्जफोक के ड्यूक के ड्राइंग रूम में, जहाँ प्रिंस कोरासौफ और जुलिये को भोजन पर निमन्त्रित किया गया था, उसकी बड़ी घाक बँधी। आमन्त्रित लोगों से छप्ते बर तक प्रतीक्षा करवाई गई। प्रतीक्षा करने वाले बीस व्यक्तियों में से जुलिये ने जैसा व्यवहार किया वह आज तक लन्दन के दूतावास में नौजवान सचिवों द्वारा उद्धृत किया जाता है। उसके व्यवहार की रोचकता सर्वथा बेजोड़ थी।

जुलिये प्रसिद्ध दार्शनिक फिलिप वेन से मिलने के लिये बहुत उत्सुक था, जो लोक के बाद से लन्दन का एकमात्र दार्शनिक था। उसके शौकीन मित्रों ने उसे बहुत समझाया पर वह न माना। बँस सात बरस से जेल में था। जुलिये सोचने लगा कि इस देश में अभिजात वर्ग से खिलवाड़ नहीं

हो सकता। और इस सब के ऊपर वेन को अपमानित किया जा रहा है, उसे गालियाँ दी जा रही हैं, इत्यादि।

जुलिये ने उसे बड़े जोश में पाया, सामन्त वर्ग के क्रोध से वह बड़ा मुदित जान पड़ता था। जेल से चलते समय जुलिये ने सोचा कि लन्दन में मजेदार व्यक्ति बस यहीं दिखाई पड़ा।

“अत्याचारियों के लिये सबसे उपयोगी विचार,” वेन ने उससे कहा था। “भगवान् की कल्पना है।” ... उसका बाकी दर्शन इतना निष्ठाहीन है कि हम उसका उल्लेख यहाँ नहीं करेंगे।

फ्रांस लौटने पर म० द ला मोल ने उससे पूछा - “लन्दन से तुम मेरे लिये कौन-कौन-से मनोरंजक विचार लेकर आये हो?” वह चुप रहा। “अच्छा तुम कौन-कौन से विचार लाये हो, मनोरंजक हो या न हो?” मार्कि ने तीव्र स्वर में फिर पूछा।

“सबसे पहले,” जुलिये ने कहा, “बुद्धिमान से बुद्धिमान अंग्रेज भी दिन में एक घंटे के लिये पागल हो जाता है। आत्महत्या का राक्षस, जो उन लोगों का राष्ट्रीय देवता है, उसके ऊपर सवार रहता है।

“दूसरे, इंग्लैंड में पैर रखते ही बुद्धि और प्रतिभा का मूल्य पच्चीस प्रतिशत कम हो जाता है।”

“तीसरे, दुनिया में लन्दन के दृश्य से अधिक सुन्दर, अधिक विस्मयकारी और अधिक हृदयस्पर्शी और कुछ नहीं।”

“अब मेरी बारी है,” मार्कि ने कहा।

“सबसे पहले, तुमने रूसी दूतावास में जाकर यह क्यों कहा कि फ्रांस में पच्चीस वर्ष की आयु वाले तीन लाख नौजवान युद्ध के लिये बुरी तरह उतावले हैं? तुम समझते हो इससे बादशाह के प्रति समुचित सम्मान प्रगट होता है?”

“अपने प्रमुख कूटनीतिज्ञों से बात करते समय क्या कहना चाहिये और क्या नहीं, यह जानना असम्भव है। उन्हें गम्भीर चर्चा प्रारम्भ करने का रोग है। यदि आप समाचार-पत्रों की चिन्सी-पिटी बातें कहे

तो आपको मूर्ख समझा जायेगा। यदि आप कोई बात सच्ची और मौलिक कह डाले तो वे चौक पड़ते हैं और फिर उन्हें कोई उत्तर नहीं सूझता। बस अगले दिन सबेरे सात बजे प्रथम सचिव का एक सदेश आ घमकता है कि आपने अशिष्टता बरती है।”

“बहुत अच्छे।” मार्कि ने हँसते हुए कहा। “पर बुद्धिमान नौजवान, मैं शर्त बदला हूँ कि तुम अभी तक नहीं समझे हो कि तुम्हें लन्दन किस लिये भेजा गया था।”

“क्षमा कीजिये,” जलिये ने उत्तर दिया। “मैं वहाँ सम्राट् के राजदूत के साथ, जो विनय और शिष्टता की प्रतिमूर्ति है, सप्ताह में एक बार भोजन करने के लिये भेजा गया था।”

“तुम वहाँ यह प्राप्त करने के लिये भेजे गये थे,” मार्कि ने उसे दिखाते हुए कहा। “मैं यह तो नहीं चाहता कि तुम अपने काले कोट का परित्याग करो। नीले कोट वाले व्यक्ति के साथ जो आनन्ददायक सम्बन्ध मेरा बन गया है उसका मैं अभ्यस्त हो चुका हूँ। अगला आदेश मिलने तक यह बात समझ लो : जब मैं तुम्हें यह कास पहिने हुए देखूँगा तो तुम्हें दुग्द रे का सबसे छोटा बेटा और अपना ऐसा मित्र मानूँगा, जो अनजाने ही पिछले महीनो से कूटनीति के काम में लगा हुआ है। कृपा करके यह ध्यान रहे,” मार्कि ने बहुत गम्भीर होकर और जलिये के कृतज्ञता-प्रदर्शन को बीच में ही काटकर कहा, “कि तुम्हें अपनी स्थिति से ऊपर उठने की मुझे कोई इच्छा नहीं है। वह सरक्षक के लिये भी अनुचित है और आश्रित के लिये भी। जब तुम मेरे मुकदमों से सकता जाओगे या मेरे काम में तुम्हारी कोई उपयोगिता न बचेगी तो मैं तुम्हारे लिये वैसी ही अच्छी-सी आजीविका का प्रबन्ध कर दूँगा, जैसी हमारे मित्र फ़ादर पिरर को प्राप्त है। इससे अधिक कुछ नहीं,” मार्कि ने बहुत रूखे स्वर में जोड़ा।

इस कास ने जलिये के स्वाभिमान को बहुत सन्तुष्ट किया। अब वह कहीं अधिक खुलकर बातचीत करने लगा। बात-बात में अपमानित

अनुभव होना कम हो गया। ऐसी बातों से जिनमें थोड़ी-बहुत अशिष्टता-पूर्ण अभिप्राय देखा जा सकता है, और जो बातचीत के उत्साह में कभी भी किसी के मुँह से निकल सकती हैं, अब वह कम परेशान होता।

अपने क्रास के कारण उसे एक और व्यक्ति के पधारने का आनन्द मिला। बारो द वालनो अपनी पद-प्राप्ति के लिये मंत्री को धन्यवाद देने पेरिस आये थे तो उससे भी मिलने आये और उससे अच्छा संपर्क बना गये। अब वह म० द रेनाल के स्थान पर बेरियेर के मेयर नियुक्त होने वाले थे।

जब म० द वालनो ने उससे यह कहा कि अभी-अभी म० द रेनाल के जैकोबिन होने का पता चला है तो उसे भीतर ही भीतर बड़ी जोर की हँसी आई। असलियत यह थी कि जो नये चुनाव होने वाले थे उनमें यह नये बने हुये बैरन महोदय सरकार द्वारा समर्थित उम्मीदवार थे और जिले के केन्द्रीय मतदाता क्षेत्र में, जो वास्तव में कट्टर राजपथियों का गढ़ था, म० द रेनाल का समर्थन उदारपथी कर रहे थे।

जुलिये ने मादाम द रेनाल के समाचार पाने की भी कोशिश की, पर सफलता न मिली। लगता था बैरन महोदय को अपनी पिछली प्रतिद्वंद्विता अभी याद है और उन्होंने कोई संकेत स्वीकार नहीं किया। अन्त में उन्होंने आने वाले चुनाव में जुलिये से उसके पिता की वोट की माँग की। जुलिये ने लिखने का वचन दे दिया।

“भाई शवालिये साहेब, आपको सचमुच मार्कि द ला मोल महोदय से मेरा परिचय कराना चाहिए।”

कराना तो जरूर चाहिये, जुलिये ने सोचा—पर कैसा घूर्त है !

“सच बात यह है कि,” उसने उत्तर दिया, “मैं द ला मोल भवन में इतना सामान्य व्यक्ति हूँ कि किसी का परिचय कराने का भार नहीं ले सकता।”

जुलिये ने मार्कि को सारी बात बताई। उसी दिन शाम को उसने उन्हें वालनो की सारी करतूतों और १८१४ से उसके कार्य और साधारण

आचरण का भी विवरण सुनाया ।

“न केवल कल तुम इस नये बैरन का मुझसे परिचय कराओगे,” मार्कि ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया, “बल्कि परसो मैं उसे भोजन के लिये भी निमन्त्रित करूँगा । वह हमारा नया जिलाधीश बनेगा ।”

“लेकिन उस हालत में,” जुलिये ने कुछ रुखे स्वर में उत्तर दिया, “अनाथाश्रम के संचालक की जगह मेरे पिता को मिलनी चाहिये !”

“बहुत अच्छे !” मार्कि ने फिर प्रसन्न होते हुए कहा । “मजूर ! मैं तो उपदेश की आशा कर रहा था । तुम अब तरक्की कर रहे हो ।”

म० द वालनो ने जुलिये को बताया कि वेरियेर के लाटरी ब्यूरो के रक्षक की हाल ही में मृत्यु हो गई । जुलिये ने सोचा कि यदि यह जगह उस बूढ़े मूर्ख म० द शोलें को, जिसकी अर्जी उसे एक बार म० द न्ना मोल के ठहरने के कमरे में पड़ी मिली थी, दे दी जाय, तो बहुत मजा रहेगा । जब वित्तमन्त्री को उसके लिए एक पत्र पर हस्ताक्षर कराते समय जुलिये ने मार्कि को वह आवेदन-पत्र पढ़कर सुनाया तो मार्कि जी खोलकर हँसे ।

म० द शोलें अभी नियुक्त ही हुए थे कि जुलिये को पता चला कि जिले के विधान सभा के सदस्यों ने इस स्थान की माँग प्रसिद्ध मण्डितज्ञ म० प्रो के लिए की है । इस उदारहृदय व्यक्ति की केवल चौबह सौ फ़ैंक की आमदनी थी और वह छः सौ फ़ैंक प्रतिवर्ष लाटरी ब्यूरो के भूतपूर्व रक्षक को अपने परिवार का पालन करने के लिए उधार दिया करते थे ।

जुलिये अपने कर्ण पर चकित था । कोई विशेष बात नहीं है, उसने मन ही मन कहा । यदि मैं उन्नति करना चाहता हूँ तो अभी बहुत-से अवसर मेरे द्वारा होमे । विशेषकर यदि मैं सुन्दर भावुक शब्दावली से सत्ते कंक भी सकूँ । बेचारे म० प्रो ! इस आस के योग्य वह हैं, और मिला यह मुझे है । जिस सरकार ने यह मुझे प्रदान किया है उसकी शक्तियों के अनुरूप ही मैं चलूँगा ।

राजसम्मान और प्रतिष्ठा

एक दिन जुलिये सेन नदी के किनारे स्थित विल्लक्वे की सुन्दर ज़मींदारी से लौटा । म० द ला मोल अपनी सब ज़मींदारियों की अपेक्षा इसी में अधिक दिलचस्पी लिया करते थे । क्योंकि केवल वही सुप्रसिद्ध बोनीफ़ास द ला मोल की अपनी थी । उसने लौटकर देखा कि मार्किज़ और उनकी पुत्री अभी-अभी इयर से लौट आई हैं ।

जुलिये अब बाकायदा सुसज्जित नवयुवक था और पेरिस की जिन्दगी की कला को समझने लगा था । उसने माद० द ला मोल के प्रति पूरी-पूरी उदासीनता दिखाई । उसने यह भाव तनिक भी न दिखाया कि किसी समय वह इतने उत्साह से उसके घोड़े से गिरने का विवरण पूछा करती थी ।

माद० द ला मोल को वह कुछ अधिक लम्बा और अधिक विवरण जान पड़ा । उसकी आकृति अथवा वेशभूषा में तो प्रान्तीयता के कोई चिह्न न बचे थे; पर उसके वार्तालाप में अभी यह बात न थी—अभी तक उस पर कुछ न कुछ अत्यधिक गम्भीरता, अत्यधिक कट्टरता की छाप थी । इन अत्यधिक बौद्धिक गुणों के बावजूद और अपने स्वाभिमान की कृपा से उसमें कोई हीनता का चिह्न न था, बस इतना ही लगता था कि अभी तक वह बहुत-सी वस्तुओं को महत्वपूर्ण मानता है । तो भी इतना स्पष्ट था कि वह अपने वचन का पालन करने वाला व्यक्ति है ।

“उसमें स्पर्श के हल्केपन की कमी है, बुद्धि की नहीं,” माद० द ला

मोल ने अपने पिता से जुलिये को कास देने के लिये कुछ अप्रसन्न होते हुए कहा । “भाई तुमसे पिछले अठारह महीनों से इसके लिये माँग करते रहे हैं, और वह ला मोल परिवार के है ।”

“हाँ, किन्तु जुलिये मे अप्रत्याशित कार्य करने की प्रतिभा है । जिस ला मोल का तुम जिक्र करती हो उसमे यह बात कभी नहीं पाई गई ।”

तभी दुक् द रे के आने की घोषणा हुई ।

मातिल्द को बुरी तरह से जम्हाइयाँ आ रही थी, इस आदमी की सूरत से ही उसे पुराने ज़माने की पन्चीकारियो और अपने पिता के ड्राइंग रूम के पुराने परिचित चेहरो की याद आ गई । पेरिस की जिस जिन्दगी मे वह नये सिरे से प्रवेश कर रही थी उसकी एक अत्यन्त उकताहट-भरी तस्वीर उसने मन में बनाई । और इयेर में वह पेरिस के लिये बेचैन थी ।

अभी मैं बस उन्नीस की हू ! उसने सोचा । सुनहरे किनारो के अथ रचने वाले बुद्धू लोग इसे आनन्द की आयु कहा करते हैं । वह अपनी अनुपस्थिति मे ड्राइंग रूम की मेज पर इकट्ठे होने वाले नौ-दस हाल ही में प्रकाशित काव्य-ग्रन्थो को देखने लगी । दुर्भाग्यवश म० द क्रवाजन्वा, द केलुस, द लुज आदि अपने सभी मित्रो से उसमे बुद्धि अधिक थी । वह भली भाँति कल्पना कर सकती थी कि वे लोग उससे प्रोवास के सुन्दर आकाश, कविता, दक्षिण इत्यादि के बारे मे क्या-क्या कहेंगे ।

वे अपूर्व सुन्दर आँखें, जिनमे अत्यन्त ही गहरी उब बल्कि उससे भी अधिक कभी आनन्द मिलने के विषय मे दुराशा का राज्य था, जुलिये पर आ टिकी । वह बाकी सब लोगो की भाँति तनिक भी न था ।

“म० सोरेल,” उसने जुलिये से उस तीखी तेज आवाज में कहा- जिसमें कोई नारी-सुलभ मृदुलता न थी और जिसमें उच्च वर्गों की स्त्रियाँ जान-बूझकर बोला करती है, “म० सोरेल, क्या आप आज रात को म० द रे के बॉल-नृत्य में आ रहे हैं ?”

“मादम्वालेल, मुझे इयूक महोदय से परिचित होने का सौभाग्य

प्राप्त नहीं ।”

“उन्होंने मेरे भाई से आपको लाने के लिये कहा है । यदि आप चले तो मुझे विल्लक्वे की जमींदारी के बारे में भी सब बात बता सकेंगे, वसन्त ऋतु में वहाँ हम लोगों के जाने की भी कुछ बात चल रही है । मैं जानना चाहती हूँ कि वहाँ का घर रहने लायक भी है या नहीं और वह स्थान क्या सबमुच ही इतना सुन्दर है जितना लोग कहते हैं । कितनी प्रतिष्ठाएँ इतनी झूठ-मूठ बन जाया करती हैं ।”

जुलिये ने कोई उत्तर न दिया ।

“मेरे भाई के साथ बॉल में आइयेगा,” मातिल्द ने बहुत ही सक्षिप्त भाव से कहा ।

जुलिये ने झुककर अभिवादन किया । तो एक बाँल-नृत्य के बीच भी मुझे परिवार के हर व्यक्ति को अपने काम-काज का हिसाब देना पड़ेगा ! क्या ये लोग मुझे अपने कामकाज के लिये अलग पैसे नहीं देते ? अपने चिड़चिड़े स्वभाव के कारण उसने यह भी सोचा कि भगवान् जाने कि जो कुछ मैं बेटी से कहूँ उससे उसके पिता, भाई और माता की योजनाओं में बाधा तो न पड़ेगी !

यह तो बिलकुल पूरा राजदरबार है । यहाँ तो अपने आपको बिलकुल नगण्य बनाना जरूरी है, और साथ ही किसी को शिकायत का मौका भी न मिले !

इस लम्बी लडकी से मुझे कितनी चिढ़ छूटती है ! वह सोचने लगा । तभी मातिल्द की माँ ने उसे अपनी कुछ सहेलियों से परिचय कराने के लिये बुला लिया था । वह हर फैशन को इतना बढ़ा-चढ़ाकर करती है ! गखन कन्धे से खिसका जा रहा है ... गई थी उस समय से अब पीली भी अधिक लग रही है । ... उसके बाल कितने फीके हैं ... क्या उसके गोरेपन के कारण ऐसा लगता है ? लगता है जैसे भीतर से घूप चमकी पड़ रही हो ! ... उसके अभिवादन में, लोगों की ओर देखने में कितना घमण्ड टपकता है ! कैसी राजसी भंगिमाएँ हैं ! मातिल्द ने

अभी-अभी डाइंग रूम से जाते-जाते अपने भाई को अपनी ओर बुलाया था ।

काउण्ट नौबैर जुलिये के पास बढ आये । “भाई सोरेल,” उन्होंने कहा “म० द रे के बॉल-नृत्य मे चलने के लिये तुम कहाँ मिलोगे ?” उन्होंने मुझ से विशेष रूप से तुम्हे लाने को कहा था ।”

‘मुझे भली भाँति पता है कि इस कृपा के लिये मुझे किसका कृतज्ञ होना चाहिये,’ जुलिये ने बहुत ही विनीत अभिवादन सहित कहा ।

नौबैर ने जिस सौजन्य और आत्मीयता के स्वर मे बात कही थी उसमे कोई आपत्ति की गुँजाइश न पाकर जुलिये अपने चिडचिडेपन के कारण अपने उत्तर के ढग पर ही अपने आपको कोसने लगा । उसे लगा कि उसके उत्तर मे एक प्रकार का दयनीयता का भाव था ।

रात को बॉल-नृत्य मे पहुँचने पर वह द रे भवन के ऐश्वर्य और वैभव से बड़ा प्रभावित हुआ । प्रवेश-द्वार के पास का प्रागण गहरे लाल रंग के सुनहरे सितारो-जडे वितान से ढँका था और बहुत ही सुन्दर लग रहा था । वितान के नीचे समूचा प्रागण सतरे के वृक्षो और फूली हुई कनेर के कुँज जैसा जान पड़ता था । वृक्षो के गमलो को सावधानी से नीचे दबा देने के कारण कनेर और सतरे के पौधे धरती से फूटते हुए लगते थे । गाडी निकलने के रास्ते पर बालू फैला दी गई थी ।

हमारे इस प्रान्तवासी नायक पर इन सब बातों का बड़ा गहरा प्रभाव पडा । उसे ऐसे वैभव की कल्पना भी न थी । पल भर मे उसकी उत्तेजित कल्पना चिडचिडेपन से हजारों मील ऊपर उड गई । बॉल-नृत्य के लिये जाते समय गाडी मे काउण्ट नौबैर बडे प्रसन्न थे पर उसका मन्त अप्रिय बातों से भरा था । किन्तु प्रागण मे प्रवेश करते ही दोनों की स्थिति मे एकदम परिवर्तन हो गया ।

नौबैर का ध्यान ऐसी एक-दो छोटी-छोटी बातों पर अटक गया था जिन पर इस सब ऐश्वर्य मे ध्यान न दिया जा सका था । वह प्रत्येक वस्तु के मूल्य का हिसाब लगाने लगा और जुलिये ने देखा कि जैसे-जैसे कुल

जोड़ बढ़ता गया वैसे ही वैसे, एक प्रकार के ईर्ष्या भरे रोष का भाव उस की बातों में झलकने लगा और अन्त में वह बहुत चिढ़कर गुमसुम हो गया ।

जुलिये तो विस्मय से मंत्रमुग्ध और अत्यधिक भावावेश से कुछ भयभीत-सा पहले स्वागत कक्ष में पहुँचा जहाँ नृत्य चल रहा था । दूसरे कमरे के द्वार पर भीड़ लगी थी और इतने लोग आ-जा रहे थे कि आगे बढ़ना असम्भव था । इस दूसरे कमरे को ग्रेनेडा में अलहाम्ब्रा के रूप में सजाया गया था ।

“यह तो तुम भी मानोगे कि इस बॉल-नृत्य की रानी वही है,” एक मूखोवाले नौजवान ने कहा जिसका कन्धा जुलिये की छाती में चुभ रहा था ।

“जाडो में माद० फूर्मी सबसे सुन्दर समझी जाती थी; अब वह भी समझती है कि उनका स्थान दूसरा है,” उसके पड़ोसी ने उत्तर दिया । “जरा देखो, कैसा मजेदार चेहरा बना रही है ।”

“रिक्ताने के लिये अपने सारे मन्तर चला रही है । देखो, दिखाई पड़ती है कि अकेला नाचना शुरू करने ही उसकी मुस्कराहट कैसी मधुर हो जाती है ? वाह वाह, कोई जवाब नहीं ।”

माद० द ला मोल को अपनी विजय के आनन्द पर पूरा काबू जान पड़ता है । अपनी जीत को वह झली भाँति पहचानती भी है । ऐसा लगता है मानो डर रही हो कि कहीं किसी को लुभावनी न लगने लगूँ ।

“क्यों नहीं, जरूर । सम्मोहन की सारी कला ही इसी बात में है ।”

जुलिये व्यर्थ ही इस मोहनी स्त्री की एक झटकी पाने का प्रयत्न करता रहा । उससे लम्बे सात-आठ व्यक्तियों के कारण उसे कुछ भी नहीं दीख रहा था ।

“उस ऊँचे दर्जे की लापरवाही में भी बड़ी भारी अदा है,” मूखोवाले नौजवान ने उत्तर दिया ।

“और वे बड़ी-बड़ी नीली आँखें, जैसे ही लगता है भेद खुला, तुरन्त

सुर्ख और स्याह

धीमे से नीची हो जाती है । सच । इससे अधिक चतुराई मुश्किल है ।”

“जरा देखो, उसके सामने सुन्दरी फूमों कितनी साधारण लग रही है,” तीसरे ने कहा ।

“इस उदासीन भाव का अर्थ है • ‘यदि मेरे योग्य पुरुष तुम्हीं होते तो तुम्हारे लिए मैं अपने आपको कितना आकर्षक बना सकती ।”

“और इस अपूर्व मातिल्द के योग्य होगा कौन ?” पहले ने पूछा ।
“कोई सुन्दर, चतुर, गठीला-सजीला, वीर और अधिक से अधिक बीस वर्ष का राजकुमार ।”

“रूस के सम्राट् का कोई जारज बेटा, जिनके लिये विवाह के विचार से कोई न कोई राज्य ढूँढ लिया जायेगा; या सीधे-सीधे कहें तो कौत द तालेर, जो सजे-बजे किसान जैसे लगते हैं • •”

आखिरकार दरवाजे से भीड़ हटी, जुलिये ने भीतर प्रवेश किया । इन गुडियो जैसे सजे हुए पिल्लो को यदि इतनी अपूर्व जान पड़ती है तो उसे ध्यान से देखने की तकलीफ तो करनी ही चाहिये, उसने सोचा । यही समझ सकूँगा कि ऐसे लोगो का आदर्श क्या है ।

वह मातिल्द की नज़र पाने का यत्न ही कर रहा था कि वह उसकी ओर देख उठी । जुलिये सोचने लगा कि कर्त्तव्य का बुलावा आ गया, पर मुख के अतिरिक्त उसके भीतर कहीं कोई खीझ न थी । कौतूहल से प्रेरित होकर वह बड़ी प्रसन्नता के साथ आगे बढ़ा । मातिल्द का बहुत ही नीचे कंधेवाला गाउन उसे इतना आकर्षक लग रहा था जो उसके आत्माभिमान के लिए बहुत गौरवपूर्ण न था । इस सौंदर्य के पीछे यौवन है, उसने सोचा । पाँच-छ नौजवान, जिनमे कुछ-एक वे भी थे जिन्हें जुलिये ने द्वार पर बात करते हुये सुना था, उसके और मातिल्द के बीच खड़े थे ।

“आप तो महाशय,” वह बोली “आप तो यहाँ जाडो भर थे । आप मुझे बताइये, क्या यह बॉल मौसम भर मे सबसे सुन्दर नहीं है ?” उसने कोई उत्तर न दिया ।

“यह कुली नृत्य मुझे बहुत ही अच्छा लगता है और ये महिलाएँ बहुत सुन्दर नाच भी रही हैं।” वे सब नौजवान यह देखने के लिए पीछे घूमे कि जिस सौभाग्यशाली व्यक्ति से वह ‘कोई’ न कोई उत्तर पाने पर आमादा है वह है कौन ! उत्तर कोई उत्साहवर्धक न था।

“मैं इसका अच्छा पारखी नहीं, मादम्वाजेल ! मेरा जीवन तो कलम घिसने में बीतता है। ऐसा शानदार बॉल मैने यह पहला ही देखा है।”

मूछोवाले नौजवान सब एकदम चौक गये।

“आप बुद्धिमान व्यक्ति हैं, म० सोरेल,” उसने और भी घनिष्ठता के साथ कहा, “आप इन सब नृत्यों, समारोहों को जाँ-जाक रुस्सो की भाँति दार्शनिक दृष्टि से देखते हैं। ऐसी मूर्खताएँ आपको चकित करती हैं, लुभाती नहीं।”

एक बात से जुलिये की गगनचारी कल्पना रुक गई और उसके मन से सारा भ्रम दूर हो गया। उसके होठों पर ऐसा अवज्ञा का भाव छा गया जो शायद आवश्यकता से कुछ अधिक ही था।

“जाँ-जाक रुस्सो,” उसने उत्तर दिया, “जब उच्च समाज का निर्णायक बन बैठता है तो मैं उसे मूर्ख के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझता। वह समाज के इस अंश को समझता न था और उसे ऐसे अनुचर की दृष्टि से देखता था जिसे अपनी वास्तविक स्थिति से ऊपर उठने का अवसर मिला हो।

“उसने ‘सामाजिक कर्तव्य’ जैसी पुस्तक लिखी है,” मातिल्द ने कुछ श्रद्धा के स्वर में कहा।

“पर वह जहाँ एक ओर प्रजातन्त्र की स्थापना और राजसी अधिकार और विशेष सुविधाओं के अन्त का उपदेश देता है, वही दूसरी ओर किसी ड्यूक द्वारा किसी मित्र को घर पहुँचाने के लिए अपनी भोजनोपरान्त पद्धति में परिवर्तन से प्रसन्नता से फूला नहीं समाता।”

“हाँ हाँ ! मोतमोरासी में दुक् द लुजर्बाँर पेरिस के रास्ते पर म० क्वादे के साथ दूर तक गये थे --” किताबी ज्ञान के पहले आनन्द-

दायक स्वाद से पूरी तरह उल्लसित होकर मा० द मातिल्द ने उत्तर दिया । वह करीब-करीब राजा फेरेट्टीयस के अस्तित्व का पता लगाने वाले अकादमी सदस्य की भाँति ही अपने ज्ञान के नशे में डूब गई ।

जुलिये की दृष्टि कठोर और पैनी ही बनी रही । मातिल्द ने क्षण भर के लिये जोश का अनुभव किया था, पर अपने सगी की बेरुखी से वह एकदम अप्रतिभ हो गयी । उसे और भी आश्चर्य इस कारण हुआ कि यह प्रभाव प्रायः वही दूसरे लोगों पर उत्पन्न किया करती थी ।

मार्कि द क्रवाजन्वा उत्सुकतापूर्वक माद० द ला मोल की ओर बढ़े । वह पल भर के लिए कोई तीन फीट की दूरी पर रुक गये, क्योंकि भीड़ के कारण पास तक पहुँचना असम्भव हो रहा था । वह अपने बीच की बाधाओं पर मुस्कराते हुए उनकी ओर देखने लगे । मातिल्द की चचेरी बहिन मार्किज द रुब्रे अपने पति की बाँह पर झुकी हुई उनके पास ही खड़ी थी । उनके विवाह को पंद्रह दिन ही हुए थे । मार्कि द रुब्रे भी अल्प-वयस्क ही थे और उनके मुख से प्रेम का अपूर्व भाव प्रकट हो रहा था । उनकी अवस्था उस व्यक्ति की सी थी जिसे परिवार के वकीलो द्वारा ही पूरी तरह निर्धारित होने वाले समुचित विवाह-सम्बन्ध के बाद यह पता चले कि उसकी सहचरी सर्वथा देवी है । म० द रुब्रे एक बहुत ही वृद्ध चचा की मृत्यु पर ह्यूक होने वाले थे ।

मार्कि द क्रवाजन्वा भीड़ में से न निकल सकने के कारण मातिल्द की ओर देख-देखकर मुस्करा रहे थे । तभी उसने अपनी बड़ी-बड़ी स्वर्गोपम नीली आँखें उठाकर उनके तथा उनके पड़ोसियों पर टिका दी । वह सोचने लगी कि इन सब लोगों से अधिक जी को उबाने वाला और क्या हो सकता है । इस क्रवाजन्वा को ही देखो जो मुझसे विवाह करने की आशा लगाये है । वह हँसमुख है, मिलनसार है और म० रुब्रे की भाँति ही बहुत ही सुशील और शिष्ट भी है । इसके सिवाय कि इन लोगों को देखते ही मेरा जी घबराने लगता है, ये सब लोग बहुत ही अच्छे हैं । वह भी मेरे साथ बॉल-नृत्य में ऐसी ही तृप्ति-भरी मुद्राएँ बनाया

सुख और स्याह

करेगा। विवाह के एक वर्ष के भीतर ही गाड़ी, घोड़े, गाउन, पेरिस से साठ मील की दूरी पर कोठी—मेरे पास सब कुछ मौजूद होगा, सक्षेप में वह सब सरजाम होगा जिसके कारण दूसरो को—जैसे उदाहरण के लिए कौतेस द र्वाविल को—को खूब कुढ़न हो। और फिर उसके बाद ?...

मातिल्द सोच-सोचकर ही ऊबने लगी। मार्कि द क्रवाजन्वा कुछ देर में उसके पास पहुँच गये, पर वह उनकी बात सुने बिना अपने ही स्वप्नो में डूबी रही। उनके शब्द नृत्य के धड़कते हुए मर्मर में डूब गए। उनकी आँखें गन्धर्व जुलिये का अनुसरण कर रही थी जो एक सभ्रमपूर्वक किन्तु स्वाभिमान तथा क्षुब्ध भाव से दूसरी ओर चला गया था। इस सब उमड़ती हुई भीड़ से अलग कोने में काउण्ट आल्तामिरा दिखाई पड़े जिनके लिए, जैसा कि पाठक जानते ही हैं, उनके देश में मृत्युदण्ड की घोषणा हो चुकी थी। चौदहवें लुई के राज्य में, उनके एक पूर्वज ने किसी एक प्रिंस द कोति से विवाह किया था; इस बात की स्मृति ने उन्हें धर्म-सच के गुप्त अनुचरो के हाथो थोड़ी-सी सुरक्षा प्रदान कर दी थी।

मृत्युदण्ड के अतिरिक्त और कोई वस्तु मुझे मनुष्य को सम्मान प्रदान करती नहीं दिखाई पड़ती, मातिल्द ने सोचा। केवल यही एक ऐसी वस्तु है जो खरीदी नहीं जा सकती।

आहा ! मैंने कैसी बढ़िया बात कही है ! दुःख यही है कि पहले सूझती तो इसकी कुछ बड़ाई होती ! इतनी लुश्चि मातिल्द में मौजूद थी कि पहले से सोचे हुए सुन्दर वाक्य को बातचीत में लाना अच्छा न समझती थी। साथ ही उसमें गर्व भी इतना कम न था कि अपनी चतुराई से प्रसन्न न होती। उकताहट के बजाय उसका चेहरा खिल उठा। मार्कि द क्रवाजन्वा ने, जो अभी तक उससे कुछ न कुछ रुहे जा रहे थे, इसे अपनी सफलता का चिह्न समझा और उन्होंने अपना वाक्चातुर्य दूना कर दिया।

मेरी इस उक्ति में कोई चिड़चिड़े भिजाज वाला व्यक्ति क्या दोष निकाल

सकता है ? मातिल्द सोचने लगी । अपने आलोचकों को मैं यह उत्तर दूँगी “बैरन अथवा वाइकाउण्ट का पद—उसे खरीदा जा सकता है, क्रास—अरे, वह तो यो ही मिल जाता है, मेरे भाई को अभी-अभी मिला है और उसने किया ही क्या है ? सेना में पदोन्नति—वह तिकडम से हो सकती है । दस साल तक गैरीसन में काम अथवा युद्ध-मन्त्री से कोई रिश्ता होने पर कोई भी नौबैर की भाँति घुडसवार सेना का मेजर बन सकता है । बड़ी भारी सम्पत्ति ! इसके मिलने में अभी तक सबसे अधिक कठिनाइयाँ हैं, इसीलिए उसे आज भी बहुत बड़ी चीज माना जाता है । कैसी अजीब बात है ! किताबों में जो कुछ लिखा है उस सब से विपरीत !” पर सम्पत्ति प्राप्त करनी हो तो म० रोथ्सचार्ल्ड की पुत्री से विवाह कर लीजिये ।

मेरा यह कथन सचमुच ही बहुत गहरा है । मृत्युदण्ड एकमात्र ऐसी वस्तु है जिसे अभी तक किसी ने माँगा नहीं ।

“क्या आप काउण्ट आल्तामिरा को जानते हैं ?” उसने म० द क्रवाजन्वा से पूछा ।

उसके प्रश्न पूछने में ऐसी ध्वनि थी मानो वह किसी सुदूर स्थान से अभी-अभी लौटी हो और इस प्रश्न का उन सब बातों से इतना क्षीण सम्बन्ध था, जो बेचारे मार्कि पिछले पाँच मिनट से उससे कह रहे थे, कि उनका हँसमुख स्वभाव भी कुछ देर के लिये तो एकदम विचलित हो गया । पर वह बहुत ही तत्पर बुद्धि के व्यक्ति थे और इस विषय में उनकी बड़ी ख्याति भी थी ।

मातिल्द कुछ सनकी है, उन्होंने सोचा । यह एक खराबी जरूर है—पर उसके पति को समाज में कितना उत्तम स्थान प्राप्त होगा ! पता नहीं मार्कि यह कैसे करते हैं; यह प्रत्येक पार्टी के बढिया से बढिया लोगों के मित्र नज़र आते हैं । उन्हें कभी नीचा देखना ही नहीं पड़ता । इसके अतिरिक्त मातिल्द की यह सनक प्रतिभा भी तो मानी जा सकती है । उच्च कुल और पर्याप्त संपत्ति होने पर प्रतिभा हास्यास्पद नहीं समझी

जाती और फिर कितनी विशिष्टता उसमें है ! जब भी चाहती है वह वाक्पटुता, चारित्रिक दृढ़ता और वार्तालाप में निपुणता का ऐसा अपूर्व मिश्रण प्रस्तुत करती है कि उसका सग इतना आनन्ददायक हो उठता है । ..

एक साथ ही दो काम भली-भाँति करना कठिन होने के कारण मार्कि ने मातिल्द को खोये-मे भाव से उत्तर दिया मानो कोई पाठ दोहरा रहे हो । “बेचारे आल्तामिरा को कौन नहीं जानता ?” वह बोले और मातिल्द को उनके विचित्र और असफल षड्यन्त्र की कहानी सुनाने लगे ।

“बाहियात है !” मातिल्द ने जैसे अपने आप से कहा, “पर कुछ किया तो है ! मैं किसी ‘पुरुष’ से मिलना चाहती हूँ; उन्हें मेरे पास ले आइये, उसने मार्कि से कहा जो एकदम हतबुद्धि-से हो गये थे ।

काउन्ट आल्तामिरा माद० द ला मोल के गर्विले और लगभग उद्धत व्यवहार के बड़े स्पष्ट प्रशंसकों में से थे । वह उसे पेरिस की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरियों में गिनते थे ।

“किसी राजसिंहासन पर वह कितनी सुन्दर दिखाई पड़ेगी,” उन्होंने म० द क्रवाजन्वा से कहा और उनके साथ-साथ सहज ही मातिल्द की ओर बढ आये । इस दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं जिनके लिए १९वीं शताब्दी के षड्यन्त्र करने जैसी बुरी बात कोई दूसरी नहीं, उसमें उन्हें जैकोबिनवाद की दुर्गन्ध आती है । और एक असफल जैकोबिन से अधिक विरक्तिकर दूसरा कौन हो सकता है ?

मातिल्द ने म० द क्रवाजन्वा की ओर ऐसे देखा मानो वह आल्तामिरा की कुछ-कुछ हँसी उड़ा रही हो, पर उनकी बात वह बहुत प्रसन्नता के साथ सुनती रही । बाल-नृत्य तथा एक षड्यन्त्रकारी—दोनों परस्पर बहुत ही विरोधी हैं, उसने सोचा । इस काली मूर्खोंवाले षड्यन्त्रकारी में वह विश्राम करते हुए सिंह की समानता खोजना चाहती थी । पर उसे शीघ्र ही पता चला कि उनके मन में केवल एक ही दृष्टिकोण के लिये—उपयोगितावादी सिद्धान्त की अत्यधिक प्रशंसा के लिये—स्थान है ।

तरुण काउण्ट केवल उन्हीं बातों पर ध्यान देते थे जिनसे उनके देश को दो सभाओं वाली सरकार प्राप्त हो सके। इसीलिये जब उन्होंने पेरू के किसी जनरल को कमरे में प्रवेश करते देखा तो वह बॉल-नृत्य की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मातिल्द को प्रसन्नतापूर्वक छोड़कर चले गये। मेनेनिक द्वारा सगठित यूरप से निराश होकर बेचारे आल्तामिरा अब यह सोचने लगे थे कि जब दक्षिण अमेरिका के राज्य प्रबल और शक्तिशाली हो जायेंगे तो वे मिस मिराबो के सिद्धान्त की यूरप में स्थापना कर देंगे।

मूछोवाले नौजवानों की उमड़ती हुई भीड़ ने मातिल्द को चारों ओर से घेर लिया था। वह यह स्पष्ट समझ गई थी कि आल्तामिरा पर उमका जादू नहीं चला और उनके प्रस्थान से वह कुछ चिढ़ी-सी थी। उसने देखा कि पेरू के जनरल से बात करते-करते उनकी काली आँखें चमक उठी हैं। माद० द ला मोल सारे फ्रेंच नौजवानों की ओर ऐसी गहन गम्भीरता से देखने लगी जिसकी उसका कोई प्रतिद्वन्द्वी नकल न कर सकता था। वह सोचने लगी कि सम्पूर्ण अवसर प्राप्त होने पर भी इनमें से कौन मृत्युदण्ड के उपयुक्त कार्य कर सकता है ?

जिस विचित्र दृष्टि से वह उनकी ओर देख रही थी उससे कम बुद्धिवाले तो प्रसन्न हुए, पर बाकी लोग बड़ी बेचैनी अनुभव करने लगे। उन्हें भय हुआ कि अब कोई ऐसा विस्फोट होने वाला है जिससे बचाव करना कठिन हो जायेगा।

मातिल्द सोच रही कि उच्च कुल में जन्म लेने से मनुष्य में ऐसी संकटों विशेषताएँ उत्पन्न होती हैं जिनके अभाव से मुझे क्लेश होता है—जैसे जुलिये ही है—पर उससे आत्मा के वे गुण मर जाते हैं जिनके बिना कोई मृत्युदण्ड का भागी नहीं बनता।

तभी किसी ने पास में ही कहा : “यह काउण्ट आल्तामिरा सां नजारो—पिमातेल के राजा के दूसरे पुत्र हैं। किसी पिमातेल ने ही कौरादि को बचाने का यत्न किया था जिसका १२६५ में वध हुआ। उनकी गिनती नेपिल्स के उच्चतम परिवारों में होती है।”

मातिल्द सोचने लगी कि यह मेरे सिद्धान्त का उत्तम प्रमाण है—
उच्च कुल में जन्म मनुष्य से आत्मा की वह महानता छीन लेता है जिसके
बिना लोग मृत्युदण्ड के भागी नहीं बन सकते। लगता है आज मेरे भाग्य
में बकवास करना ही बड़ा है। मैं भी बस केवल स्त्री हूँ, मेरे लिए भी
नाचना ही उत्तम है। उसने क्राजन्वा की प्रार्थना स्वीकार कर ली जो
पिछले एक घण्टे से नृत्य के लिये अनुनय कर रहे थे। दर्शन से अपना
ध्यान हटाने के लिए मातिल्द ने अपनी पूरी मोहिनी बिखेर दी ; म० द
क्राजन्वा के आनन्द का कोई ठिकाना न था।

किन्तु न तो नृत्य, न राजदरबार के एक सुन्दरतम पुरुष को प्रसन्न
करने की इच्छा और न कोई अन्य वस्तु ही मातिल्द का ध्यान बँटा
सकती थी। आज के नृत्य की रानी वही थी, वह यह जानकर भी
उदासीन ही बनी रही।

क्राजन्वा जैसे प्राणी के साथ मुझे कैसी फीकी जिन्दगी बितानी
पड़ेगी ! घण्टे भर बाद जब वह उसके साथ अपने स्थान पर वापिस
लौटी तो सोचने लगी कि यदि छ महीने तक बाहर रहने के बाद भी मुझे
ऐसे नृत्य में आनन्द नहीं मिला, जिससे पेरिस की सारी स्त्रियो में ईर्ष्या
जाग्रत होती, तो मेरे लिए आनन्द फिर कहाँ होगा ? मैं यहाँ चुने हुए
लोगों के आदर और सम्मान के बीच खड़ी हूँ, हाल ही में बने थोड़े-से
सामन्तो और एक-दो जुलिये जैसे लोगों को छोड़कर मध्य-वर्ग का एक
भी व्यक्ति यहाँ मौजूद नहीं। भाग्य ने मुझे कौन-सी सुविधा नहीं दी
है ? प्रतिष्ठा, धन, संपत्ति, यौवन—सक्षेप में, सुख के अतिरिक्त
सभी कुछ !

किन्तु मेरी सबसे सदिग्ध विशेषताएँ ठीक वही हैं जिनके बारे में
लोग मुझ से लगातार चर्चा करते हैं। मुझ में वाक्पटुता है, या कम
से कम ऐसा मेरा विश्वास है, क्योंकि स्पष्ट ही मुझ से सब लोग डरते
हैं। यदि कोई किसी गंभीर विषय पर चर्चा चलाने का साहस करता
है तो पाँच मिनट की बातचीत के बाद वह हाँफता हुआ मेरी ही बात

को कुछ ऐसे ढग से कहता है मानो उसने कोई बड़ी भारी खोज की हो । मैं सुन्दर हूँ । मुझे वह सुविधा प्राप्त है जिसके लिये मादाम द स्नाल अपना सर्वस्व त्याग करने के लिये तैयार हो जाती । किन्तु तो भी सत्य यह है कि मैं ऊब से मरी जा रही हूँ । यह बात कैसे मान लूँ कि अपना नाम छोड़कर मार्कि द क्रवाजन्वा का नाम ग्रहण कर लेने पर मैं कम ऊबूंगी ?

वह लगभग रूझाँसी हो आयी । पर क्या वह हर तरह से उपयुक्त नहीं है ? सुशिक्षित व्यक्ति की मूर्ति ? उसकी ओर देखते ही कोई न कोई बढ़िया चतुराई-भरी बात अपने आप सूझने लगती है । वह बहादुर है । पर यह आदमी सोरेल बड़ा अजीब व्यक्ति है, वह सोचने लगी, और उसकी आँखों में जो अभी तक निस्तेज-सी पड़ी थी, अचानक क्रोध झलक आया । मैंने कह दिया था कि मुझे कोई बात कहनी है, पर तो भी उसने दोबारा आने की कृपा नहीं दिखाई ।

: ६ :

बॉल-नृत्य

“कुछ चिड़ी हुई दिखाई पड़ रही हो”, मार्किज द ला मोल ने मातिल्द से कहा। “खबरदार, बॉल में यह अनुचित है।”

“सिर में दर्द होने लगा है”, मातिल्द कुछ विरक्त स्वर में बोली, “यहाँ है भी बड़ी गरमी।”

उसी क्षण मानो माद० द ला मोल के कथन को प्रमाणित करने के लिये वृद्ध बारो द तोनि अचेत होकर फर्श पर गिर पड़े, उन्हें उठा कर बाहर ले जाया गया। कुछ लोगो ने मिरगी रोग का नाम लिया; घटना बड़ी अप्रिय लगी।

मातिल्द ने इस ओर कोई ध्यान न दिया। उसकी यह पुरानी आदत थी कि वह वृद्धो तथा मनहूस ढंग का वार्तालाप करने वाले लोगों की ओर नज़र उठाकर देखती भी न थी। मिरगी सम्बन्धी इस चर्चा से बचने के लिये वह नाबने लगी। वास्तव में वह मिरगी थी भी नहीं, क्योंकि दो दिन बाद ही बैरन फिर ठीक हो गये थे।

पर म० सोरेल अभी तक नहीं आये, नाचना बन्द करने पर उसने फिर एक बार मन ही मन कहा। उसकी आँखें जुलिये की खोज में इधर-उधर भटकने लगी। तभी वह उसे एक दूसरे कमरे में दिखाई पड़ा। अजीब बात यह थी कि इस समय उसकी स्वाभाविक नीरस दुर्बोधता का भाव उसके मुख पर न था, इस समय वह अग्रेसर जैसा न दिखाई पड़ रहा था।

अरे, वह तो काउण्ट आल्तामिरा से बातचीत कर रहा है ! मातिल्द ने मन ही मन कहा । उसकी आँखें एक तीखी आग से प्रज्वलित हैं । वह छद्मवेशी राजकुमार जैसा दिखाई पड़ रहा है, उसकी दृष्टि सदा से भी अधिक गर्वपूर्ण है ।

जुलिये आल्तामिरा से बातचीत करता हुआ उसी ओर बढ़ता आ रहा था जहाँ मातिल्द खड़ी थी । वह उसकी ओर एकटक देखने लगी मानो उसकी आकृति में वे उच्च गुण खोज रही हो जिनके कारण मनुष्य मृत्युदण्ड का भागी होने का सम्मान अर्जित करता है ।

“हाँ,” वह काउण्ट आल्तामिरा से कह रहा था, “डैन्टन सचमुच पुरुष था ।”

हे भगवान् ! क्या यह दूसरा डैन्टन हो सकता है, मातिल्द ने अपने आप से कहा । पर इसका चेहरा तो इतना पवित्र है, वह आदमी डैन्टन कैसा कुरूप लगता था, शायद वह कोई कसाई था । जुलिये अभी उसके बहुत समीप था । उसने बेझिझक उसे बुला लिया ।

“डैन्टन कसाई नहीं था ?” उसने जुलिये से पूछा । अपने प्रश्न पर वह गर्व अनुभव कर रही थी । किसी लड़की के लिये ऐसी बात पूछना बहुत ही असाधारण बात थी ।

“क्यों, हाँ हाँ, कुछ लोगों की दृष्टि में अवश्य था,” जुलिये ने बहुत ही प्रच्छन्न तिरस्कार के भाव से उत्तर दिया । उसकी आँखें अभी तक आल्तामिरा के साथ वार्तालाप से चमक रही थी । “किन्तु उच्च कुल वालों के दुर्भाग्यवश वह मेरा-सु-सेन में वकील भी था ।” उसने कुछ द्वेष के साथ आगे कहा, “इसका यह अर्थ है मादम्वाजेल, कि उसने अपना जीवन बहुत-कुछ उन सामन्तों की भाँति आरम्भ किया था जो यहाँ आज दिखाई पड़ रहे हैं । यह सच है कि सुन्दर लोगों की दृष्टि से डैन्टन में एक बड़ा भारी दोष था—वह बहुत ही कुरूप था ।”

अपने अन्तिम शब्द उसने जल्दी-जल्दी और ऐसे विचित्र स्वर में कहे थे जो निस्सन्देह सौजन्य से बहुत विपरीत था ।

जुलिये पलभर प्रतीक्षा करता रहा। उसके शरीर का उर्ध्व भाग हलका-सा झुका हुआ था और उसके मुख का भाव एक प्रकार की गर्व-पूर्ण विनम्रता का था जो मानो कह रहा हो - 'मैं आपको उत्तर देने का वेतन पाता हूँ, और मैं अपने वेतन पर निर्भर हूँ।' उसने मातिल्द को देखने के लिये अपनी आँखें ऊपर न उठाई। जहाँ तक मातिल्द का प्रश्न था वह अपनी सुन्दर आँखों को असाधारण रूप से खोले और उसके ऊपर गड़ाये ऐसे देख रही थी मानो उसकी क्रीतदासी हो। यह मौन कुछ देर चला तो अंत में जुलिये ने उसकी ओर ऐसे ही देखा जैसे कोई नौकर आदेश की प्रतीक्षा में अपने मालिक की ओर देखता है। उसकी दृष्टि मातिल्द की दृष्टि से मिली, जो अभी तक एक विचित्र-से भाव से उसकी ओर ताक रही थी, किन्तु उसने बहुत ही शीघ्रता से अपनी दृष्टि फेर ली।

जो व्यक्ति स्वयं इतना सुन्दर है वह कुरूपता की ऐसी प्रशंसा करे! मातिल्द ने अपने स्वप्नों से जागकर सोचा। पल भर के लिये भी अपनी चिन्ता नहीं! वह केलुस या क्रवाजन्ना की भाँति नहीं है। इस सोरेल में कुछ-कुछ वही भाव है जो मेरे पिता में किसी बॉल-नृत्य में नैपोलियन की नकल करते समय आ जाया करता है। वह डैन्टन को एकदम भूल गई थी। मैं अवश्य ही आज बहुत ऊँची हुई हूँ। उसने अपने भाई की बाँह पकड़ ली और उसे बॉलरूम में चारों ओर अपने साथ चलने के लिये बाध्य करने लगी जिससे वह बहुत चिढ़ गया। मातिल्द को अभी-अभी यह सूझा था कि दण्डित व्यक्ति के साथ जुलिये के वार्तालाप का अनुसरण करे।

भीड़ बड़ी भारी थी। तो भी उसने उन लोगों को ढूँढ़ लिया। जब वह उन लोगों से दो फीट की दूरी पर रह गयी तो उसने देखा कि आल्तामिरा आगे बढ़कर बरफ ले रहे हैं। वह आगे जुलिये की ओर मुड़े हुए उससे बात भी करते जा रहे थे। जैसे ही वह बरफ उठाने लगे कि एक सुनहली बेल से सुसज्जित बाँह उनके पास ही बरफ उठाने के लिये आगे बढ़ी। उस सुनहली बेल से आकर्षित होकर वह समूचे उस

महत्वपूर्ण व्यक्ति की ओर घूम गये। पर तुरन्त ही हलका तिरस्कार का-सा भाव उनकी उज्ज्वल चतुराई-भरी आँखों में भर आया।

“आप देखते हैं उन सज्जन को ?” उन्होंने जुलिये के कान में कहा “ये हैं प्रिंस दारसेलि,—के राजदूत जिन्होंने आज सबेरे आपके विदेशमन्त्री म० द नेरवाल से मुझे उनके सुपुर्द कर देने की प्रार्थना की है—वही जो बिह्स्ट खेल रहे हैं। म० द नेरवाल इसके लिये कुछ-कुछ तैयार भी हैं; क्योंकि १८१६ में हमने भी आपको दो या तीन षड्यन्त्रकारी वापिस लौटा दिये थे। यदि इन लोगों ने मुझे मेरे बादशाह को सौंप दिया तो चौबीस घण्टे के भीतर ही मुझे फाँसी पर लटका दिया जायेगा और उन मूछोवाले सुन्दर सज्जनो में से ही कोई न कोई मुझे गिरफ्तार करेगा।”

“नीच, बर्बर !” जुलिये ने कुछ उच्च स्वर में चीवकर कहा।

मातिल्द से उनके वार्तालाप का एक अक्षर भी न छूटा। उसकी सारी उकताहट भाग चुकी थी।

“कुल मिलाकर इतने नीच नहीं हैं,” काउण्ट आल्तामिरा ने उत्तर दिया। “मैंने अपने बारे में आप से इसलिये कहा था कि सत्य का एक विशद चित्र आपके सम्मुख उपस्थित कर सकूँ। प्रिंस दारसेलि को देखिये। हर पाँच मिनट में उनकी आँखें अपने सुनहरे सम्मान-चिह्न की ओर चली जाती हैं। अपने वक्ष पर लटके हुए प्रतिष्ठा के प्रमाणपत्र को देखने का उनका आनन्द अभी मिटा नहीं है। बेचारा असल में एक तरह से भग्नावशेष के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। एक शताब्दी पहले यह सम्मान-चिह्न विशेष प्रतिष्ठा की वस्तु समझी जाती थी। पर तब यह उनकी पहुँच के बाहर होता। आज कोई दारसेलि के सिवाय उच्च कुल का व्यक्ति इससे रोमांचित नहीं होगा। और वह तो उसे प्राप्त करने के लिये एक समूचे नगर को फाँसी लगवाने के लिए भी तैयार हो जायेगा।”

“उसने इस सम्मान के लिये क्या यही मूल्य चुकाया होगा ?”

जुलिये ने निश्छल भाव से पूछा ।

“नही, ठीक यही नहीं”, आल्तामिरा ने कुछ रुखे स्वर में उत्तर दिया । “सम्भवतः अपने ज़िले के कोई तीस उदारपथी समझे जाने वाले अमीर जमींदारों को नदी में फिकवाया होगा ।”

“कैसे पशु है !” जुलिये ने दोहराया ।

माद० द ला मोल तीव्र कौतूहल से आगे झुकी हुई उसके इतने समीप आ गई कि उसके सुन्दर केश लगभग उसके कंधे को छू उठे ।

आप अभी बहुत नौजवान हैं !” आल्तामिरा ने उत्तर दिया । “मैंने आपसे कहा था कि प्रोवास में मेरी एक विवाहित बहिन थी । वह अब भी सुन्दर, स्नेहमयी और बड़ी सुकृमर है । वह अपने परिवार में उत्तम माँ है जो अपने सारे कर्तव्य पूरे करती है और अधिक टीमटाम दिखाये बिना ही घासिक है ।”

यह बात किस उद्देश्य से कही जा रही है, माद० द ला मोल ने सोचा ।

“वह सुखी है”, काउण्ट आल्तामिरा ने आगे कहा, “ऐसे ही वह १८१५ में भी थी । उस समय आँतीबे उनकी जमींदारी में उनके घर में ही छिपा हुआ था । पर जिस क्षण उन्होंने मार्शल के वध के समाचार सुने वह नाचने लगी थी ।”

“मुझे तो यकीन नहीं होता !” जुलिये ने अवाक् होकर कहा ।

“दलबन्दी की भावना ऐसी ही होती है,” आल्तामिरा ने उत्तर दिया । “उन्नीसवीं शताब्दी में कोई सच्चा जोश नहीं बचा । यही कारण है कि लोग फ्रांस में इतने ऊबे रहते हैं । बड़े से बड़ा अत्याचार किया जाता है, पर निष्ठुरता के उद्देश्य से नहीं ।”

“यह तो और भी बुरी बात है ।” जुलिये ने कहा । “जब लोप अपराध करते हैं तो कम से कम उन्हें उसमें कुछ आनन्द तो मिलना चाहिये । उनकी यही एक अच्छाई हो सकती है, और ऐसे सब कारणों के अतिरिक्त उनका कोई अन्य औचित्य तनिक भी नहीं माना जा सकता ।”

माद० द ला मोल अपने प्रति अपने कर्तव्य को बिलकुल भूलकर एकदम सीधे आल्तामिरा और जुलिये के बीच में घँस पड़ी थी । उनके भाई जो उनकी आज्ञा मानने के अभ्यस्त थे, उन्हें अपनी बाँह का सहारा दिये हुए थे । उन्होंने अब अपनी दृष्टि कमरे में दूसरी ओर घुमाई ताकि सकोच का अनुभव न हो और यह जान पड़े कि मानो भीड़ के कारण वहाँ आ पड़े हैं ।

“बिलकुल ठीक,” आल्तामिरा ने कहा । “लेकिन लोग हर काम—अपराध तलक—बिना आनन्द के ही कर डालते हैं । और फिर उन्हें इस बात की याद तक नहीं रहती कि उन्होंने क्या कर डाला है । मैं इस बॉल-रूम में शायद दस व्यक्ति ऐसे बना सकता हूँ जिनके ऊपर हत्यारे होने का आरोप लगाया जा सकता है, पर इस बात को वे भी भूल गये हैं, और दुनिया भी ।

“इनमें से बहुतों के कुत्ते का पंजा भी टूट जाय तो उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं । पेरलासेज में जब, आपके पेरिसवासियों के कथनानुसार, समाधियों पर फूल बिखराये जायेंगे, तो कहा जायेगा कि मृत व्यक्तियों में ससार का हर गुण मौजूद था, और लोग हेनरी चतुर्थ के युग में जीवित उनके प्रपितामह के महान् करतबों की चर्चा करेंगे । यदि प्रिंस दारासेल की कृपा के बावजूद मुझे फाँसी न मिली और मैं पेरिस में अपने भाग्य का उपभोग करता रहा तो मैं कभी आपको ऐसे नौ-दस हत्यारों के साथ भोजन करने के लिये निमन्त्रित करूँगा जिनका लोग सम्मान करते हैं और जिन्हें स्वयं कोई पछतावा नहीं है ।

“इस दावत में आप और मैं ही केवल ऐसे व्यक्ति होंगे जिनके हाथ रक्तरजित नहीं हैं, किन्तु मुझे एक खूनी राक्षस और जैकोबिनपथी होने के कारण, और आपको भद्र समाज में घृष्टापूर्वक पैर रखने वाले नीच जाति के व्यक्ति के रूप में, घृणा की दृष्टि से देखा जायगा ।”

“इससे अधिक सच्ची कोई बात नहीं हो सकती,” माद० द ला मोल ने बीच में ही कहा ।

आल्तामिरा चकित होकर उनकी ओर देखने लगे, जुलिये ने नज़र उठाना भी आवश्यक नहीं समझा ।

“याद रखिये,” आल्तामिरा ने अपनी बात जारी रखी, “जिस क्रान्ति का नेतृत्व मेरे कन्धों पर आ पड़ा था वह असफल हुई, किन्तु यह केवल इस कारण कि मैं तीन व्यक्तियों के सिर काटे जाने और अपने कब्जे में तिजोरी में से सत्तर या अस्सी लाख की रकम के अपने समर्थकों में बाँटे जाने के पक्ष में था । मेरे बादशाह, जो आज मुझे फाँसी पर लटकाने के लिये इतने आतुर हैं और जो क्रान्ति से पहले मेरे साथ मित्रता बल्कि आत्मीयता का व्यवहार करते थे, मुझे अपने राज्य का बड़ा भारी सम्मान प्रदान कर देते यदि मैं उन तीन व्यक्तियों का वध हो जाने देता और उस तिजोरी के रुपये को बँटवा देता, क्योंकि उस हालत में मुझे थोड़ी-बहुत सफलता मिली ही होती और मेरे देश में किसी न किसी प्रकार का विधान बन गया होता ... दुनिया का ऐसा ही कारोबार है शतरंज के खेल की तरह ।”

“उस समय आप,” जुलिये ने उत्तर दिया, “इस खेल को समझे न थे किन्तु अब...”

“आपका मतलब है मैं वे सिर कटवा देता, इसका जवाब मैं आपको तब दूँगा,” आल्तामिरा ने कुछ उदास होकर कहा, “जब आप द्वन्द्व-युद्ध में किसी व्यक्ति को मार चुके होंगे जो कुल मिलाकर किसी अधिक के हाथों उसकी हत्या कराने से कहीं कम कुत्सित कार्य है ।”

“जहाँ तक मैं समझता हूँ,” जुलिये ने कहा, “साधनों का औचित्य साध्य से है । यदि एक नगण्य व्यक्ति होने के बजाय मेरे हाथ में सत्ता होती तो मैं चार की ज़िन्दगी बचाने के लिये तीन को अवश्य फाँसी दिलवा देता ।”

उसकी आँखों में शहादत की आग और मानवीय बुद्धि के मिथ्या अहंकार के प्रति घृणा स्पष्ट प्रगट थी । उसकी दृष्टि पास ही खड़ी हुई माद० द ला मोल से मिली और उसकी घृणा सौजन्यतापूर्ण शिष्टता का

रूप लेने के बजाय और भी बढ़ती हुई जान पड़ी। इससे मातिल्द को बड़े ग़ोर का धक्का लगा, किन्तु जुलिये को अपने मन से दूर करना अब उसके बस की बात न रही थी।

वह आहत और कुपित भाव से अपने भाई को साथ लेकर आगे बढ़ गई। मुझे कुछ प्रहार-शक्ति प्राप्त करनी चाहिये और बहुत नाचना चाहिये, उसने मन ही मन कहा। मैं अब अच्छे से अच्छा नाचने वाला सगी ढँढँगी और जैसा भी बने वैसे सबको प्रभावित करूँगी। ठीक, कौतूहल फेरवाक् मौजूद है जो अपनी घृष्टता के लिये प्रसिद्ध है। उसने उसका आमन्त्रण स्वीकार कर लिया और वे दोनों नाचने लगे। वह सोचने लगी कि यह तो अभी देखना है कि हम दोनों में से कौन अधिक घृष्ट हो सकता है, किन्तु उसे जी भरकर मूर्ख बनाने के लिये मुझे उसको बातचीत में तो लगाना ही होगा। थोड़ी ही देर में बाकी सारे लोग केवल नाचने का बहाना भर करने लगे। कोई भी मातिल्द के चुभते हुए एक भी प्रत्युत्तर को खोना नहीं चाहता था। म० द फेरवाक् अप्रतिभ थे और विचारों के स्थान पर केवल सुन्दर शब्दों के अतिरिक्त अन्य कुछ न प्रस्तुत कर सकने के कारण उनकी भौहे चढ़ी जा रही थी। मातिल्द चिढ़ी हुई होने के कारण इतनी निर्मम थी कि उसने उन्हें अपना शत्रु बना लिया। वह सबेरा होने तक नाचती रही और अन्त में बुरी तरह थककर बॉल-रूम से चली गई। किन्तु गाड़ी में अपनी बची हुई थोड़ी-बहुत शक्ति को वह अपने आपको भूरी तरह उदास और दुःखी बनाने में ही लगाती रही। जुलिये ने उसका तिरस्कार किया था और वह उस तिरस्कार का बदला न ले पायी थी।

जुलिये का सुख तो चोटी पर था। अनजाने ही वह सगीत, फूलों, सुन्दर स्त्रियों, सामान्य वैभव के ज्वार में बहा जा रहा था। इन सबसे अधिक वह स्वयं अपने लिये गौरव की कल्पना और मानव जाति की स्वाधीनता के सपनों में डूबा हुआ था। उसने आल्तामिरा से कहा, “कितना सुन्दर बॉल-नृत्य है ! किसी चीज़ की कमी नहीं।”

“विचार की कमी है,” आल्तामिरा ने उत्तर दिया। उनके चेहरे पर

वह घृणा का भाव झलक आया था जो यह स्पष्ट प्रगट होने के कारण और भी अधिक तीखा लगता है कि सौजन्य के कारण इस घृणा को छिपाना भी आवश्यक कर्तव्य है ।

“आप तो यहाँ मौजूद है । क्या इसे विचार, बल्कि षड्यन्त्रकारी विचार की उपस्थिति न माना जायेगा ?”

“यहाँ मैं अपने नाम के कारण हूँ । किन्तु आपके यहाँ डाइंग रूमों में विचार से घृणा की जाती है । उसे कभी संगीत-भवन के गान के स्तर से ऊपर न उठाना चाहिये, तभी उसकी बढाई होती है । जो व्यक्ति सोचता है उसे तो आपके यहाँ आस्थाहीन कहा जाता है, विशेषकर यदि उसके उत्तरो में कोई जोश और भौतिकता भी हो । क्या यही उपाधि आपके एक न्यायाधीश ने क्यूरे को प्रदान न की थी ? आपने उसे और बैराजे को जेल में बन्द किया था । आपके यहाँ जिस व्यक्ति में भी तनिक-सी बुद्धि है उसे धर्म-सघ पुलिस के हवाले कर देता है और अच्छे से अच्छे लोग इस पर ताली बजाते हैं ।

“इसका कारण यही है कि आपका यह पुराणपथी समाज शिष्टाचार को सबसे बड़ा समझता है । ...आप लोग कभी रणोपयुक्त शूरवीरता से ऊपर न उठेंगे । आपके यहाँ बहुत से मुरा होंगे, पर एक भी वाशिंगटन नहीं । मुझे फ्रांस में अहंकार के अतिरिक्त और कुछ नहीं दीखता । मौलिक बात कहने वाले व्यक्ति के मुँह से सहज ही कोई तीखी बात भी निकल सकती है, जिसके कारण उसके आतिथेय अपने को अपमानित अनुभव करते हैं ।”

जुलिये काउण्ट की गाडी में ही घर जा रहा था । उनकी यह बात समाप्त होते-होते गाडी द ला मोल भवन जा पहुँची । जुलिये को यह षड्यन्त्रकारी बेहद अच्छा लगा था । आल्तामिरा ने उसकी बहुत प्रशंसा की थी जो स्पष्ट ही गहरे विश्वास से उत्पन्न हुई थी । “आपको फ्रांसवासियों की-सी हलकी-फुलकी बुद्धि नहीं मिली है,” उन्होंने उससे कहा था, “और आप उपयोगिता के सिद्धान्त को समझते हैं ।”

सुख और स्याह

सयोगवश केवल दो दिन पहले ही जुलिये ने म० काशीनीर द लावी द्वारा लिखित 'मारिनो फालियरो' नामक एक दु खान्त नाटक देखा था । हमारा विद्रोही नायक सोचने लगा कि क्या इजरायल बरतूसियो में वेनिस के तमाम सामन्तो से अधिक चारित्रिक दृढता नहीं थी ? किन्तु तो भी ये लोग शार्लमा से सौ वर्ष पहले सन् ७०० से प्रतिष्ठित सामन्त माने जाते हैं । म० द रे के इस बाल-नृत्य मे उपस्थित सामन्त अधिक से अधिक तेरहवीं शताब्दी मे बने होंगे । जो हो, वेनिस के वे तमाम सामन्त कुलीन होते हुए भी इतने शिथिल और इतने दुर्बल चरित्र वाले हैं; उनके बीच इजरायल बरतूसियो ही ऐसा व्यक्ति है जिसकी याद बनी रहती है ।

षड्यन्त्र सामाजिक अस्थिरता द्वारा प्रदत्त प्रत्येक पद-सम्मान को निरर्थक बना देता है । ऐसी परिस्थिति मे व्यक्ति का सम्मान इसी बात से निर्धारित होता है कि वह मृत्यु का सामना किम ढंग से करता है । ऐसे समय बुद्धिगत श्रेष्ठता का महत्व भी कुछ कम हो जाता है । बालनो और रेनालो के इस युग मे आज डेन्टन क्या होता ? किसी सरकारी वकील का सहायक भी नहीं । मैं क्या कह रहा हूँ ? वह अपने आपको धर्म-सघ को बेच देता, बल्कि मंत्री बन जाता, क्योंकि इतना बड़ा आदमी होकर भी डेन्टन चोरी पर उतर आया था । मेराबो ने भी अपने आप को बेचा था । नैपोलियन ने भी इटली से लाखों की संपत्ति लूटी, नहीं तो वह भी दरिद्रता के चक्कर मे आ जाता । केवल ला फायेत ने कभी चोरी नहीं की । चोरी क्या आवश्यक ही है ? अपने आपको बेचना क्या इतना अनिवार्य है ? जुलिये मन ही मन प्रश्न करने लगा । इस प्रश्न ने उसे झकझोर दिया । बाकी रात उसने क्रान्ति का इतिहास पढ़ने मे बिताई ।

अगले दिन सबेरे पुस्तकालय मे पत्रों की नकल करते-करते काउण्ट आल्तामिरा के वार्तालाप के अतिरिक्त और किसी बात मे उसका ध्यान ही न जाता था ।

बहुत देर तक सोचते रहने के बाद वह अपने आप से बोला कि वास्तव मे यदि स्पेन के उदारपथियों ने थोड़े-बहुत अपराध कर डाले होते

तो इतनी आसानी से न मिटाये जा सकते। वे डींगे हाँकने वाले बड़बड़ाते हुए बालक थे... मेरी ही भाँति ! एकाएक मानो चौककर जागता हुआ-सा जुलिये बोल पड़ा।

मैंने अपने जीवन में ऐसा कौन-सा काम किया है कि मैं उन लोगों के विषय में अच्छे-बुरे का फैसला करने बैठूँ जिन्होंने जीवन में कम से कम एक बार तो योजना बनाने का, कुछ कर गुजरने का साहस किया था ? मैं तो ऐसे व्यक्ति की भाँति हूँ जो भोजन की मेज से उठते-उठते कहता है : 'मैं कल भोजन न करूँगा, पर उससे मेरे आज की भाँति ही उत्साही और तत्पर होने में कोई बाधा न पड़ेगी' कौन जानता है कि किसी बड़े कार्य के बीच आदमी को कैसा अनुभव होता है ?—

ये सब उच्च विचार अचानक माद० द ला मोल के अप्रत्याशित आगमन से भग हो गये। वह डेन्टन, मेराबो और कानों जैसे लोगों के श्रेष्ठ गुणों के प्रति, जिन्होंने कभी पराजय स्वीकार न की थी, अपने भक्ति भाव से इतना उत्तेजित था कि उसकी आँखें माद० द ला मोल पर टिकी होने पर भी वह उनके बारे में सोच तक न रहा था। उसने उनका अभिवादन भी नहीं किया था, बल्कि उसने वास्तव में उनको देखा तक न था। जब आखिरकार उसकी बड़ी-बड़ी खुली हुई आँखें उनकी उपस्थिति के प्रति सजग हुईं तो उनकी ज्योति बुझ गई। माद० द ला मोल ने कुछ तिकता के साथ ही यह बात अनुभव की।

इस बात से कोई लाभ न हुआ कि उन्होंने उससे वेलि के फ्रास के इतिहास का एक खण्ड माँगा जो आल्मारी के सबसे ऊपर वाले खन में था, जुलिये को उसके लिये बड़ी सीढ़ी लानी पड़ी। वह सीढ़ी ले आया और पुस्तक ढूँढ़कर दे दी, पर तो भी उनकी ओर उसका ध्यान न गया। सीढ़ी वापिस ले जाते समय जल्दी में उसकी कुहनी आल्मारी के एक शीशे से टकरा गई। फर्श पर बरसते हुए काँच के टुकड़ों ने अन्त में उसे जगा दिया। उसने जल्दी से माद० द ला मोल से क्षमा माँगी। वह बस विनम्र होने की कोशिश कर रहा था, अधिक कुछ नहीं।

माद० द ला मोल यह स्पष्ट समझ गयी कि उनके आने से उसके विचारों में बाधा पड़ी है, और उनसे बात करने के बजाय वह अपने उन सपनों में खोये रहना कहीं अधिक पसन्द करता ।

कुछ देर उसे एकटक ताकते रहने के बाद वह धीरे-धीरे कमरे से बाहर चली गई । जुलिये उसे आते देखता रहा । उसके इस समय के वस्त्रों की सादगी की पिछली रात के वस्त्रों के ऐश्वर्यपूर्ण वैभव से तुलना करने में जुलिये को बड़ा आनन्द आ रहा था । उसके मुख के भावों का अन्तर भी उतना ही तीव्र था । दुर्दरे के बाल नृत्य में इतनी उद्धत दिखाई पड़ने वाली इस युवती के चेहरे का भाव हम समय जैसे अनुनयपूर्ण था । जुलिये ने मन ही मन कहा कि सचमुच काले गाउन से उसकी रूपाकृति का सौंदर्य और भी बढ़ जाता है । पर वह शोक-सूचक काले वस्त्र क्यों पहने है ?

वह सोचने लगा कि इस शोकावस्था का कारण पूछने में कोई और भयकर भूल न हो जाय । जुलिये अपने हृदय को झकझोर देने वाले सपनों से पूरी तरह जाग चुका था । उसने सोचा कि आज अपने लिखे सारे पत्रों को फिर से पढ़ लेना चाहिये । पता नहीं कितने शब्द छूटे हों, कितनी मूर्खतापूर्ण भूलें हुई हों । वह पहला पत्र पढ़ने का प्रयत्न ही कर रहा था कि उसने अपने बहुत पास रेशमी वस्त्रों की सरसराहट सुनी । वह तेजी से घूमा, माद० द ला मोल उसकी मेज से कोई दो फीट दूर खड़ी हँस रही थी । इस भाँति दूसरी बार विघ्न पढ़ने से जुलिये क्रुद्ध हो उठा ।

मातिल्द अभी-अभी इस बात को तीव्रता से पहचान चुकी थी कि इस युवक के लिये उसका कोई महत्व नहीं । उसकी हँसी अपने इस संकोच को छिपाने के लिये ही थी जिसे वह सफल हुई ।

“जाहिर है, आप कोई बड़ी दिलचस्प बात सोच रहे हैं, म० सोरेल क्या उसका सम्बन्ध काउन्ट आल्तामिरा के किसी षड्यन्त्र से है ? कृपा करके मुझे भी बताइये । मैं सुनने को बेचैन हूँ । किसी से कहूँ नहीं ।

सुख और स्याङ

सौगन्ध खाती हूँ, नहीं कहूंगी !” यह कहते-कहते वह स्वयं ही अपने शब्दों पर चकित हो उठी। क्या ! एक नौकर से अनुनय ! उसका सकोच बढ़ गया; उसने हलके-से ताच्छल्य के साथ आगे कहा, “आप तो साधारणतः बड़े ठड़े रहते हैं, ऐसी क्या बात हो गयी कि आप इतने भावाविष्ट, माइकेल एजिलो के पैगम्बरो की भाँति दिखाई पड़ रहे हैं ?”

इस तीखे और कुछ-कुछ उद्धत प्रश्न से जुलिये बड़ा आहत हुआ और उसका विक्षिप्त उत्साह फिर से जाग्रत हो उठा।

“क्या डेन्टन का चोरी करना ठीक था ?” उसने बहुत ही रूखे स्वर में और ऐसे ढंग से कहा जो प्रत्येक क्षण अधिकाधिक असयत होता जा रहा था। “पीमो के, स्पेन के क्रान्तिकारियों को क्या अपराध करके जनता के साथ विश्वासघात करना चाहिये था ? क्या उन्हें सेना का हर पद और प्रत्येक क्रास ऐसे आदमियों को दे देना चाहिये था जो उसके उपयुक्त न थे ? क्या इन क्रास धारण करने वालों को राजतंत्र फिर से स्थापित होने का भय न होता ? क्या उन्हें तुरी के राजकोष को इस भाँति लुटा देना चाहिये था ? संक्षेप में, मादम्बाजेल,” उसने मातिल्द की ओर बड़े ही भयोत्पादक भाव से बढ़ते हुए कहा, “क्या जो व्यक्ति इस ससार से अज्ञान और अपराध को दूर करना चाहता है उसे एक तूफान की भाँति और बिना सोचे-विचारे दुष्कार्यपूर्ण जीवन बिताना चाहिये ?”

मातिल्द भयभीत हो उठी। वह उसकी तीखी दृष्टि का सामना न कर सकी और एक-दो कदम पीछे हट आई। पल भर उसने जुलिये की ओर देखा और फिर अपने भय से लज्जित होकर हल्के पैरों पुस्तकालय से बाहर चली गई।

रानी मार्गरित

जुलिये ने अपने पत्र पढ़ डाले । जैसे ही भोजन की घटी उसके कानों में पड़ी उसने मन ही मन कहा . इस पेरिस की गुडिया को मैं कितना हास्यास्पद लगा हूँगा ! अपने मन की बात उससे कहना कितनी बड़ी मूर्खता हुई ! पर शायद वह इतनी बड़ी मूर्खता नहीं थी । इस अवसर पर सत्य बोलना मेरे उपयुक्त ही था ।

किन्तु आखिर क्यों वह मुझ से ऐसे निजी मामले में प्रश्न पूछ रही थी ? उसका ऐसे सवाल पूछना सचमुच बड़ी धृष्टता है । यह तो शिष्ट व्यवहार नहीं । डेन्टन के विषय में मेरे विचारों का उस नौकरी से कोई सम्बन्ध नहीं जिसके लिये उसके पिता मुझे वेतन देते हैं ।

भोजन-गृह में प्रवेश करने के साथ ही मातिल्द को गहरे शोक-सूचक वस्त्र पहने देखकर उसके मिजाज का सारा चिड़चिड़ापन गायब हो गया । इस बात से वह और भी अधिक प्रभावित इसलिये हुआ कि परिवार में और किसी ने काले कपड़े नहीं पहन रखे थे ।

भोजन के बाद उसका मन उन तमाम उत्साह-भरी कल्पनाओं से सर्वथा मुक्त हो चुका था जिन्होंने उसे सारे दिन आक्रान्त कर रखा था । सौभाग्यवश लैटिन जानने वाले अकादमी-सदस्य भी उस दिन भोजन के लिये आये हुए थे । यदि मातिल्द के शोक-सूचक वस्त्रों के विषय में पूछना अनुचित हो तो मेरे पूछने पर यह व्यक्ति मुझे मूर्ख बनाने की कोशिश शायद न करेगा ।

मातिल्द एक बड़े अनोखे भाव से उसकी ओर देख रही थी। जुलिये सोचने लगा कि ये ही है इन स्त्रियों के रिक्ताने के रगढग। मादाम द रेनाल ठीक ही कहा करती थी। आज सबेरे मैंने उसके साथ न तो अच्छा व्यवहार किया, और न उसकी बातचीत करने के शौक मे साथ दिया। इसीलिये मेरा मूल्य बढ गया है। निस्सन्देह कभी न कभी मुझे इसकी कीमत चुकानी पडेगी। बाद मे उसका यह तिरस्कार भरा अहंकार मुझ से अवश्य बदला लेगा। खैर, करे उसका जो जी चाहे। उस बिछड़ी हुई नारी से यह कितनी भिन्न है। कितना भोला लावण्य था उसका। कितनी सरलता। मैं उसके विचारो को उससे भी पहले समझ जाता था। मुझे जैसे वे आकार धारण करते दीख जाते थे। उसके हृदय मे मेरा एकमात्र विरोधी था उसका अपने बच्चों की मृत्यु का भय। यह स्नेह बहुत ही स्वाभाविक था, जो इतना त्रास-दायक होने पर भी मुझे कितना प्यारा लगता था। मैं बिलकुल मूर्ख हूँ। पेरिस के विषय मे मैंने जो धारणा बना रखी थी उसके कारण मैं उस महात्मा स्त्री को भली-भाँति समझ न सका।

हे भगवान्। कितना अन्तर है। यहाँ मुझे क्या मिला? आत्मीयता-हीन उद्धत दम, आत्मश्लाघा का सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप—और कुछ नहीं।

लोग मेज़ से उठने लगे थे। जुलिये ने सोचा कि अक्रादमी-सदस्य को किसी और के पल्ले न पडने देना चाहिये। बाग मे जाते-जाते वह उसके पास पहुँचा और एक विनीत तथा आरोप भरे भाव से 'हेरनानी' की सफलता पर उसके क्रोध में वह भी सम्मिलित हो गया।

“यदि कही बिना मुकदमे लोगो को गिरफ्तार करने का जमाना होता !” उसने कहा।

“तो उसे इस बात का साहस न होता !” अक्रादमी-सदस्य ने तालमा के उपयुक्त मुद्रा मे चीखकर कहा।

फूलों के बारे में बात करते-करते जुलिये ने वर्जिल के 'ज्योर्जिक्स' एक-दो पक्तियाँ उद्धृत की और कहा कि आबे दलील के काव्य का

कोई जवाब नहीं। संक्षेप में हर प्रकार से अकादमी-सदस्य की खुशामद करने के बाद उसने यथासम्भव उदासीनता के साथ कहा : “शायद माद० द ला मोल को अपने किसी चाचा से कोई उत्तराधिकार मिला जान पड़ता है, जिसके शोक में उन्होंने काले वस्त्र पहन रखे हैं।”

“क्या ! आप तो घर के ही आदमी हैं,” अकादमी-सदस्य ने चलते-चलते एकाएक रुककर कहा, “और आप उनके इस पागलपन के बारे में नहीं जानते ? सच पूछिये तो अजीब बात है कि उनकी माँ इन बातों की आज्ञा देती हैं। पर देखिये, किसी से कहियेगा नहीं। चरित्र की दृढ़ता इस घर के लोगो की विशेषता नहीं। माद० द ला मोल में वह इन सबसे अधिक है, इसीलिये वह मनमानी करती हैं। आज तीन अप्रैल है !” अकादमी-सदस्य ने बोलना बन्द करके बड़ी जानकारी के भाव से जुलिये की ओर देखा। जुलिये भी जितना बन पड़ा उतनी बुद्धिमत्ता दिखाते हुए मुस्कराया।

पर वह मन ही मन आश्चर्य कर रहा था कि मनमानी करने, काले कपड़े पहनने और तीस अप्रैल में परस्पर क्या सम्बन्ध हो सकता है ? सचमुच में बहुत ही बुद्धू हूँ।

“मैं यह स्वीकार करता हूँ...” उसने अकादमी-सदस्य से कहा। उसकी आँखों में अभी भी प्रश्न थे।

“चलिये बगीचे में थोड़ा घूमे,” अकादमी-सदस्य ने एक लम्बी और अच्छे वाक्यों से परिपूर्ण कहानी सुना सकने की सभावना से प्रसन्न होकर कहा।

“क्या आप सचमुच यह कहना चाहते हैं कि आप नहीं जानते कि तीस अप्रैल १५७४ को क्या हुआ था ?”

“कहाँ ?” जुलिये ने विस्मय से कहा।

“प्लास द ग्रेव में।”

जुलिये ऐसा चकित था कि इस नाम से भी उसके ज्ञान में कोई वृद्धि न हुई। कोई दुःखभरी बात सुनने की प्रत्याशा और कौतूहल ने उसकी

सुखी और स्याह

आँखों में वह चमक पैदा कर दी थी जो कहानी सुनाने वाले को अपने श्रोताओं में बहुत ही प्यारी लगती है। अकादमी-सदस्य ऐसे अछूते कान वाले श्रोता को पाने से पुलकित होकर विस्तारपूर्वक जुलियें को सुनाने लगे कि किस भाँति तीस अप्रैल १५७४ को वॉनिफास द ला मोल का, जो अपने युग के सुन्दरतम पुरुष माने जाते थे, अपने मित्र आनिबाल द कोकोनास्सो के साथ जो पिएमो के एक सभ्रान्त व्यक्ति थे, प्लास द ग्रेव में वध हुआ था। ला मोल नावार की रानी मार्गारित के प्रेमी थे और इस कारण वह लोगों के मन में बसे हुए थे। यह ध्यान रहे, अकादमी-सदस्य ने आगे कहा, “कि माद० द ला मोल का नाम मातिल्द-मार्गारित है।” साथ ही ला मोल दुक् दालासो के प्रिय-पात्र थे और अपनी प्रेयसी के पति नावार के राजा के, जो बाद में हेनरी चतुर्थ हुए, बड़े घनिष्ठ मित्र थे। १५७४ में उन दिनों राजदरबार से जेम्स था जहाँ बेचारे राजा चार्ल्स नवे मृत्यु-शय्या पर पड़े थे। ला मोल अपने उन मित्रों को उड़ा ले जाना चाहते थे, जिन्हें कातरिन द मेदिसिस ने राजदरबार में बंदी बना रक्खा था। वह कोई दो सौ घुडसवारों को लेकर से-जेम्स की दीवारों के नीचे पहुँच गये, जिससे दुक् दालासो को भय हुआ और ला मोल को तुरन्त अधिक के हाथों सौंप दिया गया।

“सात-आठ वर्ष पहले जब माद० द ला मोल केवल बारह वर्ष की थी, उन्होंने स्वयं मुझे बताया था—क्योंकि लड़की में दिमाग है, और क्या दिमाग है !—” अकादमी-सदस्य ने आसमान की ओर अपनी आँखें उठाते हुए कहा। “इस राजनीतिक दुर्घटना में नावार की रानी मार्गारित ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया, जो प्लास द ग्रेव में एक मकान में छिपी हुई प्रतीक्षा कर रही थी। उन्होंने साहसपूर्वक अधिक से अपने प्रेमी का सिर मँगवा भेजा था जिसे वह उसी दिन आधी रात को अपनी गाड़ी में रखकर मौमात्र की पहाड़ी के नीचे एक गिरजाघर में अपने हाथों दफनाने के लिये ले गई थी।”

“नहीं-नहीं, यह सम्भव नहीं हो सकता,” जुलिये ने बहुत ही विचलित

होकर कहा ।

“आप जानते ही हैं कि माद० द ला मोल अपने भाई को तिरस्कार की दृष्टि से देखती हैं, क्योंकि उन्हें प्राचीन इतिहास की इन बातों से कोई दिलचस्पी नहीं है और वह तीस अप्रैल को शोक-सूचक वस्त्र नहीं पहनते । इस प्रसिद्ध वध के जमाने से और ला मोल की कोकोनास्सो के साथ—जो इटली-निवासी होने के कारण आनिबाल कहलाता था—घनिष्ठ मित्रता की स्मृति में इस परिवार के लोगो ने उनका नाम धारण कर रक्खा है । और यह अकादमी कोकोनास्सो,” अकादमी-सदस्य ने अपनी आवाज को धीमा करते हुए कहा, “स्वयं चार्ल्स नवे के कथनानुसार, २४ अगस्त १५७२ के क्रूरतम हत्यारो में से था । पर यह कैसे सम्भव है, भाई सोरेल, कि इस घर के सदस्य होकर भी आप इन सब बातों से अनभिज्ञ हैं ?”

“तो यही कारण होगा कि भोजन के समय माद० द ला मोल ने अपने भाई को दो बार आनिबाल कहकर पुकारा था । मैंने सोचा कि मुझ से सुनने में भूल हुई ।”

“वह एक प्रकार की भर्त्सना थी । यह अजीब ही है कि मार्किज ऐसी मूर्खताओं की आज्ञा देती है ।” उम लडकी के पति को कुछ बड़ी बेढब बातों का सामना करना पड़ेगा !”

इन शब्दों के साथ-साथ पाँच-छः व्यगपूर्ण बातें भी कही गईं । जुलिये अकादमी-सदस्य की आँखों में द्वेषपूर्ण निन्दा की चमक देखकर स्तब्ध रह गया । वह सोचने लगा कि हम दो नौकर अपने स्वामी की बुराई में लगे हैं । पर इस अकादमी-सदस्य की किसी भी बात से मुझे आश्चर्य न होना चाहिये ।

एक दिन पहले ही जुलिये ने उसे मार्किज के आगे घुटनों के बल बैठे गिडगिडाते देखा था । वह कही दूर किसी कस्बे में रहने वाले अपने किसी भतीजे के लिये तम्बाकू के लाइसेंस की भीख माँग रहा था । उस दिन शाम को माद० द ला मोल की एक नौकरानी ने, जो किसी

जमाने में एलिजा की भाँति आजकल जुलिये की ओर विशेष ध्यान देने लगी थी, उसे बताया कि उसकी स्वामिनी के ये शोक-सूचक वस्त्र केवल दिखावे के लिये नहीं हैं। वह सचमुच इस ला मोल से प्रेम करती हैं जो अपने युग की सबसे अधिक वाक्पटु और बुद्धिमान रानी का प्रतिष्ठित प्रेमी था और जिसने अपने मित्रों की स्वाधीनता के लिए जान दे दी थी। और मित्र भी कैसे ! राजा हेनरी चतुर्थ और अन्य सगे-सम्बन्धी राजकुमार !

जुलिये मादाम द रेनाल के व्यवहार की सर्वथा अकृत्रिम सरलता का अभ्यस्त था। उसे पेरिस की तमाम स्त्रियों में बनावट के अतिरिक्त और कुछ न दिखाई देता था और तनिक भी खिन्न होने पर उसे कहने के लिये कभी कोई बात तक न सूझती थी। माद० द ला मोल इसमें एक अपवाद सिद्ध हुई।

उच्च कुल की महिलाओं में पाये जाने वाले सौन्दर्य को अब वह हृदय की कठोरता नहीं मानता था। माद० द ला मोल कभी-कभी भोजन के बाद ड्राइंग रूम की खुली हुई खिड़कियों के सामने उसके साथ इधर से उधर टहलती रहती और लम्बी-लम्बी चर्चा चला करती। एक दिन उन्होंने उसे बताया कि वह दोबिएँ का इतिहास और ब्रातोम पढ़ रही हैं। जुलिये सोचने लगा कि जिसके पिता वाल्टर स्कॉट के उपन्यास नहीं पढ़ने देते उसका ये पुस्तकें पढ़ना कितना अजीब है।

एक दिन हार्दिक प्रशंसा के आनन्द से छलछलाती आँखों से उन्होंने उसे हेनरी तृतीय के राज्य में एक युवती के अनोखे कर्तव्य की कहानी सुनाई, जिसके विषय में उन्होंने हाल ही में 'मेम्बर द लेत्वाल' में पढ़ा था। अपने पति की विश्वासघातकता का पता चलते ही उस स्त्री ने उसे छुरा भोक कर मार डाला था।

इससे जुलिये को अहंकार को बड़ी तुष्टि मिली। जिस स्त्री का सब लोग इतना आदर करते थे और जो अकादमी-सदस्य के कथनानुसार घर पर राज्य करती थी वह उससे ऐसे बातचीत करने लगी थी मानो

उसे मित्र समझती हो ।

कुछ और विचार करने पर जुलिये ने सोचा कि मैं भूल कर रहा हूँ । यह मित्रता नहीं है । मैं तो किसी दुःखान्त नाटक के विश्वासपात्र के समान हूँ—बातचीत करने के लिये उसे कोई न कोई चाहिये । यह परिवार मुझे विद्वान् समझता है । मैं जाकर ब्रातोम दोबिर्ने और लेत्वाल पहुँगा । तब मैं माद० द ला मोल के चुटकलो की सचाई पहचान सकूँगा । ऐसे निरीह विश्वासपात्र की भूमिका से छुटकारा पाना जरूरी है ।

एक साथ ही इतने गरिमायुक्त और सहज व्यक्तित्व वाली इस लड़की के साथ उसकी बातचीत धीरे-धीरे अधिकाधिक दिलचस्प होती गई । वह अपना विद्रोही नागरिक का दुःखभरा पार्ट अदा करना भूल गया । उसने देखा कि वह सुपठित भी है और तर्कसंगत बातचीत भी कर सकती है । बाग के वार्तालाप में प्रगट होने वाले उसके मतामत डाइंग रूम में खुल्लमखुल्ला कही जाने वाली बातों से बहुत भिन्न होते थे । कभी-कभी तो वह उसके साथ इतने उत्साह और खुलेपन से बातें करती थी जो उसके साधारण उद्धत और नीरस व्यवहार से एकदम भिन्न जान पड़ता था ।

“लीग युद्धो का युग फ्रांस का वीर-युग है,” उसने जुलिये से एक दिन कहा ; उसकी आँखें बुद्धिमत्ता और उत्साह से चमक रही थी । “उस समय प्रत्येक व्यक्ति किसी विशेष लक्ष्य को सामने रखकर अपनी पार्टी की विजय के लिए लड़ा था, आपके सम्राट् के युग की भाँति किसी क्षुद्र क्रॉस की प्राप्ति के लिए नहीं । आप सहमत होंगे कि उसमें अहंकार और ओछापन बहुत कम था । मुझे उस युग से प्रेम है ।”

‘और बोनिफास द ला मोल उसका नायक था,’ उसने मातिल्द से कहा ।

“कम से कम उसे ऐसा प्यार मिला जैसा प्यार मिलना शायद मधुर होता है । आज के ज़माने की कौनसी स्त्री अपने मृत प्रेमी के मस्तक

को छूनेमात्र से भय से सकुचित न हो उठेगी ?”

मादाम द ला मोल ने अपनी पुत्री को भीतर पुकारा । ढोंग तभी तक उपयोगी है जब तक वह छिपा रहे, और जैसा आप देखते हैं, जुलिये ने नैपोलियन के प्रति अपने आदर की बात किसी हद तक माद० ला मोल को बता दी थी ।

इस मामले में इन लोगों को हमसे कहीं अधिक सुविधा प्राप्त है, बाग में अकेले रह जाने पर जुलिये सोचने लगा । इनके पूर्वजों का इतिहास इन्हें कुत्सित भावनाओं से ऊपर उठा देता है ; उन्हें कभी रोटी कमाने की बात भी नहीं सोचनी पड़ती । कैसी शोचनीय अवस्था है ! उसने कुछ तिव्रता के साथ सोचा । मैं ऐसे उच्च विषयों पर चर्चा करने योग्य नहीं हूँ । दो कौर रोटी के लिये आवश्यक एक हजार फ्रैंक की आय भी न होने के कारण मेरा जीवन बस ढोंग होकर रह गया है ।

“अब आप क्या सपना देख रहे हैं, जनाब ?” मातिल्द दौड़ती हुई लौटी और पूछने लगी ।

जुलिये आत्म-तिरस्कार से उकता चुका था । गर्व में आकर उसने निश्छल भाव से अपने मन की बात बता दी । इतनी धनी लड़की से अपनी दरिद्रता की चर्चा करने में उसका चेहरा लज्जा से गहरा लाल हो उठा । अपने स्वर के दर्प से उसने यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि वह कुछ माँग नहीं रहा है । मातिल्द को वह इतना सुन्दर पहले कभी नहीं लगा था ; उसे उसके चेहरे पर इस समय एक ऐसी सहृदयता और उन्मुक्तता का भाव दीख पड़ा जिसका उस पर प्रायः प्रभाव रहता था ।

महीने भर के बाद एक दिन जुलिये द ला मोल भवन के उद्यान में सोच में डूबा हुआ टहल रहा था । उस दिन उसके मुख पर हीनता की चेतना से अन्तर्मुखी हो जाने वाले गर्व की कठोर छाप न थी । वह अभी-अभी माद० द ला मोल को डाइंग रूम के द्वार तक पहुँचाकर लौटा था जिसका कहना था कि भाई के साथ दौड़ने में उनके पैर में चोट आ

सुख और स्याह

गई है ।

वह मेरी बाँह पर बहुत ही विचित्र ढंग से झुकी हुई थी, जुलियोंने मन ही मन कहा । क्या मैं एकदम गधा हूँ अथवा सचमुच मैं उसे अच्छा लगने लगा हूँ ? जब मैं उसे ऐसी बातें सुनाने लगता हूँ जिनसे अपने गर्व के कारण मुझे कष्ट होता रहता है तो भी वह कितनी कोमलता से मेरी बात सुनती रहती है । वह जो बाकी हर व्यक्ति के साथ इतना दपपूर्ण व्यवहार करती है । ड्राइंग रूम में वे लोग यदि उसके चेहरे का यह भाव देख ले तो बहुत ही आश्चर्यचकित हो । यह तो बिल्कुल निश्चित है कि मेरे सिवाय और किसी के साथ वह ऐसा कोमल और आत्मीयता का भाव नहीं अपनाती ।

जुलियोंने प्रयत्न किया कि इस विचित्र मैत्री को अतिरजित करके न देखे । अपने मन में वह उसकी तुलना एक सशस्त्र विराम-सन्धि से करना । प्रत्येक दिन मिलने पर पिछले दिन की आत्मीयता के साथ बातचीत शुरू करने के पहले वे दोनों ही एक-दूसरे से पूछने-से जान पड़ते . 'आज हम लोग मित्र रहेंगे अथवा शत्रू ?' जुलियोंने यह समझ चुका था कि यदि उसने इस अहकारी लड़की को एक बूझ भी अपना अपमान कर लेने दिया तो फिर खैर नहीं । यदि उससे झगडा होना ही है तो क्या यही अधिक उत्तम न होगा कि मैं अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिये प्रारम्भ से ही झगडा शुरू कर दूँ ? अपने स्वाभिमान की तनिक-सी भी उपेक्षा करते ही तिरस्कार के लक्षण प्रगट होने लगेंगे । फिर उस तिरस्कार के विरोध से कोई लाभ न होगा ।

यदि कभी वे लोग झल्लाये हुये होते तो मातिल्द बहुत बार उसके साथ उच्च सम्भ्रान्त महिलाओं की भाँति आचरण करने लगती । इन प्रयत्नों में वह अपूर्व कौशल दिखाती, किन्तु जुलियोंने बड़े रूखेपन से उसका प्रत्युत्तर देता ।

एक दिन उसने बीच में ही मातिल्द की बात काटकर कहा, "क्या माद० द ला मोल को अपने पिता के सेक्रेटरी को कोई आदेश देना है ?

सुख और स्याह

४३३

उसे ऐसे आदेशों को सावधानी से और सम्मानपूर्वक पूरा करना होगा । किन्तु इसके अतिरिक्त उसे उनसे और कुछ नहीं कहना है । उसे अपने विचार बताने के लिये कोई वेतन नहीं मिलता ।”

इन परिस्थितियों के तथा जुलिये के मन में उठने वाले विचित्र सन्देहों के कारण उसकी वह उकताहट जाती रही जो इस ड्राइंग रूम में उसे सदा हुआ करती थी । इतना वैभवपूर्ण होने पर भी इस ड्राइंग रूम में हर बात से भय लगा करता था । वहाँ किसी भी बात को मज़ाक में लेना अनुचित समझा जाता था ।

यदि वह मुझसे प्रेम करने लगी है तब तो बड़ा मज़ा आयेगा, जुलिये ने सोचा । किन्तु प्यार चाहे करती हो या न करती हो, इसमें सन्देह नहीं कि मैंने एक ऐसी बुद्धिमान लड़की से मित्रता की है जिससे सारा घर, और सबसे अधिक मार्किट क्रवाजन्ना थर-थर काँपते हैं । वह युवक बहुत ही शिष्ट, इतना सौजन्यतापूर्ण और इतना वीर है, उच्च कुल तथा सम्पत्ति की वे सभी सुविधाएँ उसे प्राप्त हैं जिनमें से यदि एक भी मुझे प्राप्त होती ! वह इस लड़की के प्रेम में पागल है और उससे विवाह करने वाला है । उन तमाम पत्रों को ही देखो जो म० द ला मोल ने इस सम्बन्ध में दोनों ओर के वकीलों को लिखवाये हैं ! और मैं जो उस समय कलम हाथ में लिये ऐसी प्राचीन आधीन में बैठा रहता हूँ, दो घण्टे बाद यहाँ बगीचे में उस हँसमुख और मिलनसार युवक से जीत जाता हूँ । क्योंकि कुछ मिलाकर इतना तो स्पष्ट ही है कि उसकी अपेक्षा वह मुझे अधिक पसन्द करती है । उससे शायद अपने भावी पति के रूप में भी वह घृणा करने लगी है । इतना घमण्ड तो उसमें है ही । तो फिर मेरे ऊपर जो कृपा वह करती है वह केवल एक विश्वास-पात्र सेवक के रूप में ही ।

किन्तु नहीं, या तो मैं पागल हूँ या वह मुझसे प्रेम करने लगी है । मैं आपको जितना ही रूखा और संभ्रमपूर्ण दिखाने का प्रयत्न करता हूँ उतना ही वह मुझे अधिक खोजती है । यह हठ भी हो सकती है अथवा

केवल एक दिखावा भी, पर जब कभी मैं अचानक ही आ पड़ता हूँ तो उसकी आँखें कैसी चमक उठती हैं ! क्या पेरिस की स्त्रियाँ इस हद तक नाटक रच सकती हैं ? पर मुझे क्या परवाह ! इस समय बाहरी परिस्थितियाँ मेरी ओर हैं । मैं क्यों न उनका पूरा लाभ उठाऊँ ? हे भगवान्, कितनी लावण्यमयी है वह ! वे बड़ी-बड़ी नीली आँखें, जो प्रायः मेरी ओर ताकती रहती हैं, पास से देखने पर कितनी सुखद लगती हैं । इस साल की यह वसन्त ऋतु पिछले साल से कितनी भिन्न है जब मैं तीन सौ गन्दे, कुत्सित विचारों वाले ढोगी लोगों के बीच केवल अपने चरित्र की दृढ़ता के कारण हिम्मत बाँधे इतनी दरिद्रता में जीवन बिता रहा था । उस समय मैं स्वयं उन्हीं के समान पापी हो गया था ।

सन्देह और अविश्वास के क्षणों में जुलियें सोचता : यह लड़की मुझे मूर्ख बना रही है, उसने अपने भाई के साथ साँठ-गाँठ करके मुझे किसी जाल में फँसाना तै किया है । पर वह प्रायः अपने भाई की उत्साहहीनता के प्रति तो इतनी घृणा दिखाती है ! कहती है कि वह बस बहादुर है, और कुछ नहीं । उसके मन में एक भी ऐसा विचार नहीं जिससे प्रचलित फैशन के विरुद्ध जाने का साहस प्रगट होता हो । हमेशा मुझे ही उसकी रक्षा के लिये खड़ा होना पड़ता है । उन्नीस साल की लड़की ! क्या इस उम्र की लड़की ढोग के स्व-निर्धारित नियमों का इतनी कुशलता के साथ हर मिनट पालन करती रह सकती है ?

दूसरी ओर जब मादो द ला मोल की बड़ी-बड़ी नीली आँखें एक विचित्र से भाव से एकटक मेरी ओर देखने लगती हैं तो काउन्ट नौबेरे सदा खिसक जाते हैं । यह बात अवश्य सन्देहजनक है । क्या घर के एक नौकर के ऊपर अपनी बहिन की ऐसी कृपा से उन्हें क्रुद्ध न होना चाहिये ? मैंने सुना है कि दुक् द शोन मुझे नौकर ही कहते हैं । यह बात याद आते ही जुलियें के मन में अन्य सब भावों का स्थान क्रोध ने ले लिया । क्या यह केवल एक बूढ़े सनकी ड्यूक का पुराने ढंग की शब्दावली से प्रेम मात्र ही है ?

जो भी हो, वह है बड़ी सुन्दरी ! जुलिये ने बाघ जैसी दृष्टि से कहा । मैं उसे लेकर यहाँ से उड़ जाऊँगा—और मेरे इस पलायन में बाधा डालने वालों की खैर नहीं ।

जुलिये का सारा ध्यान इस एक विचार पर केन्द्रित हो गया, अब उसे और कोई बात ही न सूझती । उसके दिन घण्टों की भाँति बीतने लगे ।

दिन में जब भी वह किसी गम्भीर बात पर अपना ध्यान जमाने की कोशिश करता तो उसका मन कहीं न कहीं बहक जाता; पन्द्रह मिनट बाद वह अचानक जागता, और फिर भी घडकते हुए हृदय तथा परेशान मस्तिष्क से केवल एक ही स्वप्न में डूबा रहता था वह मुझ से प्रेम करती है ?

: ११ :

एक लड़की की शक्ति

जो समय जुलिये मातिल्द के सौन्दर्य को बढ़ा-बढ़ा कर देखने अथवा एक ऐसे अहंकार के विरुद्ध उत्तेजित होने में, जो उसके परिवार में स्वाभाविक था किन्तु जिसे वह उसके कारण भूली जा रही थी, लगता था उसे यदि वह ड्राइंग रूम में होने वाली गति-विधि के अध्ययन में लगाता तो वह यह आसानी से समझ जाता कि अपने आसपास के प्रत्येक व्यक्ति के ऊपर मातिल्द के प्रभुत्व का असली स्वरूप क्या है। माद० द ला मोल अपने को अप्रसन्न करने वाले को एक तीक्ष्ण उक्ति द्वारा दण्ड देना जानती थी। उनकी ये उक्तियाँ इतनी सहज ही कही जाती थीं, इतनी सुचिन्तित होती थी, ऊपर में इतनी विनम्र होती थीं तथा ऐसी अवसरोचित होती थी कि उनसे आहत होने वाला व्यक्ति जितना ही उन पर विचार करता उतना ही और अधिक आहत अनुभव करता था। इस प्रकार जिन लोगो के अभिमान को वह ठेस पहुँचाती उनके प्रति थोड़ा-थोड़ा करके असह्य रूप से निष्ठुर हो जाती थी।

अपने परिवार द्वारा इच्छित बहुत-सी वस्तुओं का उनके लिए कोई महत्व न था। इस कारण उनकी नज़रो में वह सदा ही शांत और सयत दिखाई पड़ती थी। अभिजातवर्गीय ड्राइंग रूमों का जिक्र वहाँ से चले आने के बाद ही सुखद लगता है, पर बस इतना ही, प्रथम परिचय के अवसर के अतिरिक्त केवल सौजन्य का कभी कोई मूल्य नहीं। यह बात जुलिये को आनन्द के ऐसे रोमांच तथा आश्चर्य के पहले आघात के

बाद ही समझ में आ गई थी। वह सोचने लगा कि सौजन्य अथवा शिष्टता उस चिडचिडेपन के अभाव के अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु नहीं है जो बुरे लालन-पालन के कारण उत्पन्न होती है। मातिल्द प्रायः ऊबी हुई रहती थी, शायद वह कभी भी ऊबी रहती। ऐसे अवसरों पर किसी व्यंग्योक्ति को तीक्ष्णतर बनाना उसके लिये मन-बहलाव और वास्तविक आनन्द का साधन बन जाता था।

अपने विख्यात रिश्तेदारों अथवा अकादमी-सदस्य तथा पाँच-छः अन्य हीन कोटि के प्रशसकों की तुलना में अधिक मनोरंजक आखेट प्राप्त करने के लिये ही शायद उसने मार्किट क्रवाजन्वा, कौत केलुस तथा दो-तीन अन्य उच्चकुलीन युवकों को कुछ-कुछ आशा दे रखी थी। उसके निकट वे उसकी तीक्ष्ण वाक्पटुता के लक्ष्यों के अतिरिक्त अधिक कुछ न थे।

हमें मातिल्द से स्नेह है, इसलिए यह बात हमें दुःख के साथ स्वीकार करनी पड़ती है कि उसे इनमें से बहुत से युवकों के पत्र मिला करते थे और कभी-कभी वह भी उनके उत्तर दिया करती थी। यह बात हम तुरन्त कह देना आवश्यक समझते हैं कि इस युग के रीति-रिवाजों की दृष्टि से यह युवती अपवाद थी। साधारणतः सेक्रेड हार्ट मठ के छात्रों पर असावधानी का आरोप नहीं लगाया जा सकता।

एक बार मार्किट क्रवाजन्वा ने उन्हें पहले दिन लिखा हुआ एक ऐसा पत्र मातिल्द को वापिस किया जो किसी के हाथ में पड़ जाने से मातिल्द के लिए बड़ा अशोभन सिद्ध होता। उन्होंने सोचा कि सावधानी के ऐसे अपूर्व प्रदर्शन द्वारा वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति में अधिक सफल होंगे। पर मातिल्द को अपने पत्र-व्यवहार में असावधानी ही सबसे अधिक अच्छी लगती थी। जोखिम का काम करने में उसे आनन्द आता था। इस घटना के बाद छः सप्ताह तक फिर वह उनसे बोली तक नहीं।

इन युवकों के पत्रों में उसे बड़ा मजा आता था। पर उसका कहना था कि वे सब एक से होते हैं, सदा उनमें सम्मिश्रता तथा अधिक से

अधिक विषादपूर्ण प्रेम का उल्लेख होता है।

“पत्रों में हर व्यक्ति,” वह अपनी चचेरी बहिन से कहती, “ऐसा आदर्श सज्जन दिखाई पड़ता है मानो इसी क्षण पवित्र प्रदेश के लिये चल पड़ेगा। इससे अधिक नीरस बात की तुम कल्पना कर सकती हो? और जीवन भर उसे ऐसे ही पत्र मिलते रहेंगे। इस प्रकार के पत्र केवल बीस वर्ष में एक बार, तत्कालीन लोकप्रिय रुचि के अनुसार बदलते हैं। साम्राज्य के दिनों में वे अवश्य ही इससे कम फीके रहे होंगे। उस समय इन तमाम दुनियादार लोगों ने भी एक या दो काम अवश्य ऐसे देखे अथवा किये थे जिनमें कोई न कोई महानता रही हो। मेरे चाचा, दुक् द न—ने वाग्रा में युद्ध में हिस्सा लिया था।

“तलवार चलाने में कौन-सी बुद्धि की आवश्यकता है?” मातिल्द की चचेरी बहिन माद० द सेतेरेदिते ने कहा। “किन्तु जब भी इन लोगों के लिये ऐसा अवसर आ पड़ता है तो वे कितनी बार इसकी चर्चा करते हैं।”

“मुझे ऐसी कहानियों में बड़ा आनन्द आता है। किसी वास्तविक युद्ध में नैपोलियन के किसी युद्ध में जिसमें दस हजार सैनिक मारे गये हो, मौजूद रहा होना भी साहस का प्रमाण है। सिर पर विपत्ति मोल लेने से आत्मा उदात्त होती है और उस ऊब से रक्षा करती है जिसमें मेरे सारे प्रशंसक डूबे हुए जान पड़ते हैं। यह ऊब उड़कर लगने वाली बीमारी है। उनमें किसके मन में साधारण से भिन्न कोई कार्य करने का विचार है? वे सब मुझे प्राप्त करने के इच्छुक हैं।—अच्छा कर्तव्य है। मैं घनी हूँ और मेरे पिता अपने जमाई को आगे बढ़ने में सहायता करेंगे। ओफ! यदि वह कोई ऐसा जमाई ढूँढ़ निकालने जो थोड़ा-बहुत दिलचस्प भी होता।”

मातिल्द के चीजों को सजीव, तीक्ष्ण और चित्रात्मक ढंग से देखने के कारण, जैसा आप देख सकते हैं, उसकी बातचीत पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा था। उसके सुशिष्ट मित्रों को उसके कथन प्रायः ही रुचि-

विहीन जान पड़ते थे। यदि वह कम आकर्षक होती तो शायद यह स्वीकार कर लिया जाता कि उसकी उग्र भाषा में स्त्री-सुलभ सुकुमारता का अभाव है।

वह स्वयं ब्राह्मणों में एकत्र होने वाले सुन्दर घुड़सवारों के प्रति बहुत ही निर्मम थी। वह अपने भविष्य की कल्पना किसी आतंक भाव से नहीं, क्योंकि वह अत्यधिक तीव्र भावावेग होता, बल्कि एक प्रकार की विरक्ति के भाव से किया करती थी जो उसकी उग्र की लड़की के लिये बहुत ही असाधारण था।

उसे किस बात की कमी थी? संपत्ति, उच्च कुल, बुद्धि और सौंदर्य आदि गुण भाग्य ने उसके ऊपर मुक्त हस्त से बिखेरे थे। ऐसा अन्य लोग भी कहते थे और वह स्वयं भी इसमें विश्वास करती थी।

फैबूर से-जेम्स की इस अपार वैभवशालिनी तथा अधिक से अधिक ईर्ष्या की पात्र युवती ने जब जुलिये के साथ टहलने में आनन्द अनुभव करना शुरू किया तो उसके विचार कुछ इसी प्रकार के थे। वह जुलिये के गर्व से चकित हो जानी थी। साधारण गरीब परिवार के इस व्यक्ति की चतुराई से उसे विस्मय होता था। वह सोचती कि फादर मौरी की भाँति ही वह भी अवश्य ही बिशप पद प्राप्त करेगा।

शीघ्र ही जिस सच्चे अकृत्रिम विरोध से हमारा नायक उसके बहुत से विचारों का स्वागत करता था, उसमें मातिल्द का मन उलझने लगा। वह इसके ऊपर विचार करती। पर जब अपनी चचेरी बहिन को इन बातोंलापो को विस्तार से सुनाने लगती तो उसे अनुभव होता कि वह उनके स्वरूप को पूरा-पूरा नहीं अभिव्यक्त कर पाती है।

एक दिन एक आकस्मिक विचार ने उसे जैसे प्रबुद्ध कर दिया। कल्पनातीत आनन्दातिरेक से उसने मन में कहा कि शायद मुझे प्रेम में पड़ने का सौभाग्य प्राप्त हो गया है। मैं प्रेम करने लगी हूँ, यह स्पष्ट है। मेरी जैसी अल्पवयस्क और सुन्दर बुद्धिमती लड़की को प्रेम में स्फूर्ति न मिलेगी तो और कहाँ मिलेगी? मैं चाहे जितना प्रयत्न करूँ,

क्रवाजन्वा, केलुम अथवा उनके जैसे किसी भी व्यक्ति के प्रति कभी कोई प्रेम का अनुभव न कर पाऊँगी। वे लोग एकदम सम्पूर्ण हैं, शायद अत्यधिक सम्पूर्ण हैं। संक्षेप में उनसे मैं ऊब जाती हूँ।

वह उपन्यासों में पढ़े प्रेम के सारे वर्णनों को मन ही मन दोहराने लगी। स्पष्ट ही 'महान प्रेम' के अतिरिक्त अन्य किसी भाव का तो कोई प्रश्न ही न था, कोई क्षुद्र-सा प्रेम-काण्ड उसकी जैसी अवस्था और कुल की लड़की के लिये अनुपयुक्त होता। वह प्रेम केवल उभी वीरतापूर्ण भाव को कहती थी, जो फ्राम में हेनरी तृतीय तथा वासोपेर के काल में पाया जाता था। ऐसा प्रेम कभी भी बाधाओं के आगे क्षुद्रता के साथ घुटने न टेकता था, इसके विपरीत व्यक्ति से बड़े-बड़े काम करा लेता था। वह मोचने लगी, कैसे दुर्भाग्य की बात है कि आजकल कातरिन द मेदिसि अथवा लुई तेरहवें का जैसा कोई वास्तविक राज-दरबार नहीं। मैं अपने आपको प्रत्येक अधिक से अधिक साहसपूर्ण और अधिक से अधिक महान् कार्य करने के लिये समर्थ अनुभव करती हूँ। लुई तेरहवें जैसा कोई उच्चात्मा राजा मेरे पैरों पर आगे भर रहा हो तो मैं क्या नहीं कर सकती। जैसा बारो द तोलि प्रायः कहा करते हैं, मैं उसे बाँदे ले जाती जहाँ से वह अपना राज्य फिर से जीत कर प्राप्त करता; फिर विधान का अन्त हो जाता। जुलिये इसमें मेरी सहायता करता। उसमें किस बात की कमी है? यश की और धन की। यश वह उपाजित कर लेता, धन उसे प्राप्त हो जाता।

क्रवाजन्वा को किसी चीज़ का अभाव नहीं। वह जीवन भर एक ह्यूक से अधिक और कुछ न हो सकेगा—आधा राजपथी और आधा उदारपथी, ऐसा जीव जो कभी निश्चय नहीं कर सकता, जो सदा दोनों छोरों से बचता रहता है, और परिणाम-स्वरूप सदा दूसरी पक्ति में दिखाई पड़ता है।

ऐसा कौन-सा महान् कार्य है जो प्रारम्भ करते समय किसी न किसी सीमान्त पर न जान पड़े? पूरा होने पर ही वह साधारण कोटि के

लोगो को सम्भव दीखने लगता है। हाँ, प्रेम ही अपने सारे चमत्कारों के साथ मेरे हृदय पर अधिकार कर रहा है। मैं यह बात उस आग से अनुभव करती हूँ जो मेरी नसों में जाग उठी है। इस देन का नियति पर मेरा ऋण था। वह किसी व्यक्ति पर अपने सारे वरदान व्यर्थ ही नहीं बिखेरती। मेरा सुख भी मेरे उपयुक्त ही होगा। मेरा कोई भी दिन पिछले दिन के अनुरूप न हुआ करेगा। अपनी सामाजिक स्थिति से इतने नीचे व्यक्ति में प्रेम करना अपने आप में एक उच्च हृदय और साहसिक आत्मा को प्रगट करता है। पर अभी देखना है, क्या वह इसके उपयुक्त बना रहेगा? दुर्बलता का पहला चिह्न देखते ही मैं उसका त्याग कर दूँगी। मुझ जैसी ऊँचे कुल की लड़की को, और ऐसी साहसपूर्ण प्रवृत्ति के रहते हुए, जिसका लोग-बाग प्रायः मुझसे उल्लेख करते रहते हैं (यह उसके पिता का कथन था), मूर्ख और नासमझ की भाँति व्यवहार नहीं करना चाहिये।

मार्कि द क्रवाजन्वा से प्रेम करना क्या ऐसा ही कार्य न होगा? वह मेरी उन चचेरी बहिनों के सुख का ही नया संस्करण होगा। जिनसे मैं इतनी नफरत करती हूँ, मैं पहले से ही जानती हूँ कि बेचारे मार्कि मुझसे कहेंगे और उत्तर में उनसे मुझे क्या कहना पड़ेगा। यह कैसा प्रेम है जिससे दूसरे को जम्हाई आने लगती है? इससे तो आदमी धार्मिक ही बन जाये तो अच्छा। मुझे भी अपनी छोटी से छोटी बहिन की भाँति अपने विवाह के स्वीकृत पत्र पर हस्ताक्षर करने का दिखावा करना पड़ेगा और मेरे सारे कुलों नाते-रिश्तेदार, यदि दूसरे पक्ष के वकील द्वारा एक दिन पहले ही जोड़ी गई शर्तों के कारण अप्रसन्न न हुए तो, भावुकता का प्रदर्शन करेंगे।

: १२ :

क्या वह दूसरा डैन्टन है ?

जुलिये और मेरे बीच किसी स्वीकृत-पत्र पर हस्ताक्षर आवश्यक न होगा, किसी पारिवारिक वकील की आवश्यकता न पड़ेगी; यहाँ हर वस्तु वीरोचित परिमाण में होगी, हर वस्तु अकस्मात् ही प्रकट होगी। यदि वह उच्चकुल का होता तो मेरा प्रेम मार्गरित द वाल्वा के अपने युग के सबसे विख्यात तरुण ला मोल के प्रति प्रेम से किसी तरह हल्का न पड़ता। क्या यह मेरा अपना दोष है कि आजकल राज-दरबार के नौजवान इतने रूढ़िवादी हैं और तनिक भी असाधारण साहसपूर्ण कार्य की सम्भावना से ही पीले पड़ जाते हैं ? उनके लिये यूनान अथवा अफ्रीका का छोटा सा अभियान ही बड़ी भारी साहसिकता है लेकिन तब भी वह सेना का साथ छोड़कर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते। अबेले पड़ते ही वे भयभीत हो उठते हैं, बद्दी के भालों से नहीं, बल्कि हँसी उड़ाने के डर से और यह भय उन्हें पागल-सा बना देता है।

इसके विपरीत मेरा जुलिये केवल अकेले ही कार्य करना पसन्द करता है। इस विशिष्ट मानव में दूसरे लोगों से उपहार अथवा सहायता प्राप्त करने का हल्के से हल्का विचार भी नहीं आता। वह दूसरे लोगों से घृणा करता है, और यही कारण है कि मैं उससे घृणा नहीं करती।

यदि जुलिये गरीब होने पर भी सामन्त कुल का होता तो मेरा उसमें प्रेम करना एक अत्यन्त ही अशोभन, भ्रूखंतापूर्ण कार्य, एक साधारण अनुचित विवाह-सम्बन्ध से अधिक और कुछ न होता। यह मैं कभी नहीं

चाहती। इसमें ऐसी कोई बात ही नहीं जो महान प्रेम में पाई जाती है— बड़ी से बड़ी बाधाओं को दूर करने की आवश्यकता और परिणाम के विषय में घोर अनिश्चय।

माद० द ला मोल अपनी इस सुन्दर तर्कवाली से स्वयं ही इतनी प्रभावित हुई कि अगले दिन बिना कुछ सोचे-समझे उन्होंने मार्कि द क्रवाजन्वा और अपने भाई के आगे जुलिये की प्रशंसा के गीत गाने शुरू कर दिये। उनकी वाक्विदग्धता इतनी ऊँची पहुँच गई कि वे लोग चिढ़ गये।

“ऐसे क्षमतावान युवक से जरा होशियार रहना।” उसके भाई ने कहा। “क्रान्ति फिर से हुई तो वह हम सबके सिर उड़वा देगा।”

सीधा उत्तर देने के बजाय मातिल्द अपने भाई तथा मार्कि द क्रवाजन्वा के क्षमता से भयभीत होने का मजाक उड़ाने लगी, जो वास्तव में अप्रत्याशित से सामना होने तथा आकस्मिक घटनाओं के बीच हतबुद्धि हो जाने के भय के अतिरिक्त और कुछ न था।

“सर्वदा, सज्जनो, सर्वदा वही हँसी उड़ाने का भय। यह ऐसा राक्षस है जो दुर्भाग्यवश १८१६ में मर चुका है।”

“हँसी उड़ाने का डर” म० द ला मोल कहा करते, “ऐसे देश में समझ नहीं जहाँ दो पार्टियाँ हो।” उनकी बेटी उनका अभिप्राय समझती थी।

“और इसलिये, मज्जनो,” उसने जुलिये के शत्रुओं से कहा, “आप लोग जीवन भर भय से त्रस्त रहेंगे और बाद में आपको पता चलेगा कि जिससे आप डरते थे वह भेड़िया नहीं केवल एक छाया थी।”

इसके बाद शीघ्र ही मातिल्द उनके पास से चली गई। अपने भाई की बात से वह विचलित हो उठी थी और बड़ी बेचैनी का अनुभव कर रही थी। पर जब अगले दिन सबेरे उसकी नींद खुली तो उस कथन में उसे सर्वोच्च प्रशंसा ही दृष्टिगोचर हुई।

वह सोचने लगी, इस युग में जब जीवन-शक्ति भर चुकी है, इसी से

उसकी जीवन-शक्ति से इन लोगो को डर लगता है। मैं अपने भाई की बात उसे सुनाऊँगी, देखूँ, वह क्या उत्तर देता है, पर मैं ऐसा क्षण चुनूँगी जब उसकी आँखें चमक रही हो। उस समय वह मुझसे झूठ नहीं बोल सकता।

क्या वह दूसरा डेन्टन हो सकता है ? उसने देर तक घुँघले-से विचारो में डूबे रहने के बाद मन ही मन कहा। अच्छा, मान लो क्रान्ति फिर हुई तो उसमें क्राजन्वा और मेरे भाई का क्या हाथ होगा ? उनके लिये तो सब पहले से ही निर्धारित है—भव्य आत्मसमर्पण ! वे लोग साहसी भेडे बनेंगे और मूक भाव से अपने गले कटवायेगे ! मरते समय भी उन्हें केवल इसी बात का भय होगा कि कहीं कोई अशिष्टता न झलक आये। पर मेरा प्यारा जुलिये मुझे गिरफ्तार करने के लिए एक आने वाले जैकोबिन का भेजा उडा देगा, विशेषकर यदि भाग निकलने की तकनीक भी आशा हुई। कम से कम उसे अशिष्ट दिखाई पड़ने का कोई भय नहीं है।

इस अन्तिम विचार ने उसे कुछ उदास कर दिया। उसकी कुछ दुःखद स्मृतियाँ जाग पड़ी जिससे उसका सारा साहस जाता रहा। इससे उसे म० द केलुस, द क्राजन्वा, द लुज और अपने भाई की व्यंग्यवक्तियों की याद आ गई। ये सब सज्जन जुलिये के ऊपर पुरोहित-सुलभ बनावटी ब्रिन्नम्रता का आरोप लगाने में एकमत थे।

पर एकाएक उसकी आँखें हर्ष से चमक उठी और वह मन ही मन कहने लगी कि उनके इस निमंम परिहास के तीखेपन और उसकी पुनरावृत्ति से यह सिद्ध होता है कि उनकी सारी बातों के बावजूद जुलिये इस शीतकाल में मिलने वाले सभी व्यक्तियों से विशिष्ट है। उसके दोषों अथवा उसके हास्यास्पद रग-ढग से क्या आता-जाता है ? उसमें महानता है इसीलिये इतने उदार और हँसमुख स्वभाव के लोग भी उससे इतना घबराते हैं। निस्सन्देह वह गरीब है और पुरोहित बनने के लिये अध्ययन करता रहा है। ये लोग अफसर हैं और इन्हें अध्ययन की कोई आवश्यकता नहीं, जीवन उनके लिये अधिक आसान है।

उसके चिरन्तन काले सूट की बुराइयों के और चेहरे के पुरोहिताना भाव के बावजूद, जो उस बेचारे को भूखो न मरने के लिए धारण करना आवश्यक है, इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं कि ये सब लोग उसकी योग्यता से भयभीत रहते हैं। और फिर उसका पुरोहिताना भाव तो मेरे साथ अकेले में कुछ ही मिनटों बाद उसके चेहरे से जाना रहता है। साथ ही कोई ऐसी बात कहने पर, जो उनकी समझ से बड़ी सूक्ष्म और मौलिक हो, क्या उनकी दृष्टि सदा जुलिये के ऊपर नहीं होती? यह बात मैंने बहुत स्पष्ट देखी है। यह बात भी वे लोग भली भाँति जानते हैं कि जब तक स्वयं उसी से कोई प्रश्न न पूछा जाय वह उनसे कभी नहीं बोलता। केवल मुझसे ही वह कोई बात कभी-कभी कहता है। मुझे वह उच्च विचारों वाली समझता है। वह उनको आपत्तियों का उत्तर केवल उतना ही देता है जितना सौजन्यवश आवश्यक है और फिर तुरन्त ही उनके साथ एक सम्मानपूर्ण दूरी स्थापित कर लेता है। पर मेरे साथ घण्टों बहस करता है और जब तक मैं तनिक-सी भी आपत्ति करती रहती हूँ तब तक अपने विचारों के विषय में आश्चर्य अनुभव नहीं करता। जो भी हो, इस बार कोई द्वन्द्व-युद्ध नहीं हुए; जुलिये ने अपने शब्दों द्वारा ही ध्यान आकर्षित किया है। पिता जी तो ऐसे श्रेष्ठ-तर बुद्धिवाले व्यक्ति हैं जो हमारे परिवार के वैभव को और बढ़ायेगे। जुलिये के लिये उनके मन में बहुत आदर है। बाकी सब लोग उससे घृणा करते हैं, किन्तु माँ के धार्मिक मित्रों के अतिरिक्त अन्य कोई उसे हीन दृष्टि से नहीं देखता।

कौतूहल को घोंघों का बड़ा भारी शौक था, कम से कम वह ऐसा दिखाते ही थे। अपना अधिकांश समय वह तबेलों में ही बिताते, और दोपहर को प्रायः वही भोजन करते थे। अपने इस बड़े शौक तथा कभी न हँसने की आदत के कारण उनके सभी मित्र उनकी बड़ी प्रशंसा किया करते थे। इस छोटी-सी मडली के वह चमकते हुए सितारे थे।

अगले दिन जैसे ही वे लोब मादाम द ला मोल की आरामकुर्सी

के पीछे इकट्ठे हुए, तो जुलिये को अनुपस्थित पाकर म० द ला केलुस ने क्रवाजन्वा और नौबेरे के समर्थन से, अकारण ही और माद० द ला मोल को देखते ही जुलिये के विषय में उनकी अच्छी धारणा के ऊपर बड़ी जोरो से आक्रमण कर दिया। मातिल्द को इस सूक्ष्म चाल की मील भर दूर से ही गन्ध आ गई थी और वह इससे बहुत प्रसन्न थी।

वह सोचने लगी कि ये सब के सब एक ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध जुट पड़े हैं जिसे साल में दस लुई भी नहीं मिलते और जो प्रश्न किये बिना सीधे उनकी बातों का उत्तर भी नहीं दे सकता। काला कोट पहने रहने पर भी ये लोग उससे डरते हैं। यदि वह सैनिक सम्मान-चिह्न धारण किये होता तो न जाने क्या हालत होती।

उस दिन मातिल्द की वाक्विदग्धता का कोई जवाब न था। पहले ही आक्रमण के बाद उसने केलुस और उसके समर्थकों को अपने तीखे व्यंग-बाणों से आच्छादित कर दिया। जब इन प्रतिष्ठित अफसरों के परिहास की अग्नि बुझ गई, तो उसने म० केलुस से कहा :

“यदि कल फ्रांस-कौंते के पहाड़ों के किसी बूढ़े खबीस सज्जन को अचानक पता चले कि जुलिये उनका जारज पुत्र है और वह उसे एक नाम तथा कुछ हजार फ्रैंक प्रदान कर दें, तो सज्जनो, छः सप्ताह के भीतर ही उसकी मूर्खे भी आप लोगो जैसी हो जायेंगी। छः महीने के भीतर ही वह भी आप लोगो की भाँति ही अफसर हो जायेगा और तब उसके चरित्र की महानता किसी परिहास का विषय नहीं रहेगी। मैं देख रहा हूँ, भावी ड्यूक महोदय जी, कि आप उस पुरानी निकम्मी दलीलों का सहारा लेने पर मजबूर हैं—प्रान्तीय सामन्तों से राजदरबारी सामन्तों की श्रेष्ठता। किन्तु यदि मैं निष्ठुर होकर जुलिये के पिता को स्पेन का कोई ड्यूक बना दूँ, जो नैपोलियन के समय में बजासो में युद्धबन्दी था और जो अब मृत्यु-सैया पर आत्मानुताप के फलस्वरूप उसे अपना पुत्र स्वीकार करता है, तो फिर आपकी क्या हालत होगी ?”

अवैधता की ये सब कल्पनाएँ म० केलुस तथा म० द क्रवाजन्वा को

बहुत कुरचिपूर्ण जान पड़ी। मातिल्द की दलीलो मे उन्हे बस यही बात दीखी।

नौबेर अपनी बहिन के प्रभाव मे चाहे जितना रहा हो, पर इस समय मातिल्द के शब्दो का अर्थ इतना स्पष्ट था कि उसकी मुख-मुद्रा गम्भीर हो गई जो उसके मुस्कराते हँसमुख चेहरे के तनिक भी उपयुक्त न थी। उसने मातिल्द से दो-एक बात कहने का साहस किया।

“तुम्हारी तबियत कुछ खराब है ?” मातिल्द ने कुछ गम्भीर होकर उत्तर दिया। “परिहास का उत्तर उपदेश द्वारा देने लगे हो तो सचमुच ही बहुत अस्वस्थ होगे। तुममे नीति उपदेश। क्या कही का ज़िलाघोश बनने की तैयारी है ?”

बहुत जल्दी ही मातिल्द कौत द केलुस की दुखी मुद्रा, नौबेर के कोप और म० द क्रवाजन्वा के भूक हताश भाव को भूल गई। उसे एक ऐसे विषय मे निश्चय करना था जिसने उसके मन को पूरी तरह वशीभूत कर लिया था।

जुलिये मेरे साथ तो कोई कपट नहीं करता, उसने मन ही मन कहा। इस उम्र मे और हीनता तथा तीव्र महत्वाकांक्षा से उत्पन्न होने वाले क्लेश की अवस्था मे उसे नारी के प्रेम की आवश्यकता है। वह नारी शायद मे ही हूँ, किन्तु उसमे तो मैं प्रेम का कोई चिह्न ही नहीं देखती। अन्यथा वह तो स्वभाव से ही इतना साहसिक और निर्भीक है कि अवश्य मुझसे प्रेम की बात करता।

उस क्षण से इस अनिश्चय ने, इस आंतरिक आत्ममथन ने मातिल्द के जीवन के हर क्षण को घेर लिया, और जब भी जुलिये उससे बात करता तो इसके लिये उसे कोई न कोई नया तर्क मिल जाता। फल-स्वरूप ऊब के वे सारे दौर गायब हो गये जो उसे निरन्तर त्रस्त करते रहते थे।

वह एक ऐसे सुयोग्य और बुद्धिमान व्यक्ति की बेटी थी जिसके मंत्री हो जाने और फिर पुरोहित वर्ग को उनकी वन-भूसि लौटा देने की बहुत

सम्भावना थी। इसलिए सेक्रेड हार्ट कनवेंट में उसकी बेहद खुशामद होती थी। ऐसे दुर्भाग्य का कोई उपचार नहीं। लोगो ने उसे यह मानने को बाध्य कर दिया था कि अपने परिवार तथा धन-सम्पत्ति इत्यादि के कारण उसे अन्य लड़कियों की अपेक्षा अधिक सुखी होना ही चाहिये। राजकुमारो के भीतर की ऊब का, और उनकी तमाम मूर्खताओ का उद्गम यही है।

इस विचार के घातक प्रभाव से मातिल्द भी न बच सकी थी। कोई भी लड़की चाहे जितनी बुद्धिमान क्यों न हो, दस वर्ष की उम्र में एक समूचे कनवेंट की खुशामद के घातक प्रभाव से नहीं बच सकती, विशेषकर जब उस खुशामद का आधार ठीक ही जान पड़े।

जैसे ही उसे निश्चय हुआ कि वह जुलिये से प्रेम करने लगी है, उसकी सारी ऊब जाती रही। अब वह प्रत्येक दिन इस महान् भावावेग में पड़ने के निश्चय के लिये अपने आप को बघाई देती। वह सोचती कि इस मनोरंजन में बड़ी जोखिमें हैं। पर यह तो और भी अच्छा है। हजार गुना अच्छा है।

ऐसे महान् प्रेम के बिना ही मैं एक लड़की के जीवन के सर्वोत्तम अंश में भी, सोलह से लगाकर बीस वर्ष की अवस्था में भी ऊब के कारण तिल-तिल घुलती रही हूँ। मेरे जीवन के सर्वोत्तम वर्ष बाध्य होकर अपनी मा के मित्रों की अनर्गल बकवास सुनने में नष्ट हो गये हैं। मैंने सुना है कि १७६२ में कोबले में लोग आचरण के बारे में भी इतने कठोर न थे जितने आज ये लोग अपने वार्तालाप में हुआ करते हैं।

जिन दिनों मातिल्द इन गंभीर सशयो से दुःखी थी उन्ही दिनों जलिये को उसकी अटकी हुई निगाहों का अर्थ समझने में कठिनाई हो रही थी। निस्सन्देह वह काउन्ट नौबेरे के व्यवहार में बढ़ती हुई बेरुखी को, म० द केलुम, द लुज और क्रावाजन्वा के व्यवहार में तीव्र दर्प को स्पष्ट पहिचान रहा था। इसका वह अभ्यस्त भी था। कभी-कभी यह सकट उसके ऊपर उस दिन पड़ता जब वह अपनी हैसियत से अधिक

प्रखरता दिखा पाता था। यदि मातिल्द विशेष रूप से उसे न बुलाती होती और इस मडली की हर बात के लिए उसके मन में अत्यधिक कौतूहल न होता, तो जब भोजन के बाद ये मूछोवाले तेज नौजवान मातिल्द के साथ बगीचे में जाने लगते उस समय वह उनका अनुसरण कभी न करता।

सच, यह बात अब अपने आप से छिपाना असम्भव है, जुलिये ने सोचा, कि माद० द ला मोल विचित्र ढंग से मेरी ओर देखती है। किन्तु जिस समय उनकी सुन्दर नीली आँखें सयमहीन होकर मेरी ओर ताकती होती हैं, तब भी उनकी गहराइयों में स्थिर आत्मसयम, आलोचना और द्वेष स्पष्ट दिखाई पड़ता है। क्या यह किसी प्रकार भी प्रेम हो सकता है? मादाम द रेनाल की आँखों का भाव कितना भिन्न हुआ करता था।

एक दिन भोजन के बाद जुलिये, जो म० द ला मोल के साथ उनके कमरे में चला गया था, जल्दी-जल्दी बगीचे की ओर लौट रहा था। तभी साहसपूर्वक मातिल्द की मडली की ओर बढ़ने-बढ़ते उसने ऊँचे स्वर में कुछ बातें सुनी। मातिल्द अपने भाई को चिढ़ा रही थी। जुलिये को स्वयं अपना नाम भी दो बार सुनाई पड़ा। पर उसके वहाँ पहुँचते ही मडली पर गहरा सन्नाटा छा गया और उसे तोड़ने के सारे प्रयत्न बेकार सिद्ध हुए। माद० द ला मोल और उनके भाई तो इतने अधिक उत्तेजित थे कि उनके लिये वार्तालाप का दूसरा विषय सोचना हा कठिन था। म० द केलुस, म० द क्रवाजन्वा, म० द लुज और उनके एक अन्य मित्र जुलिये के प्रति बेद बेखली धारण किये रहे। अंत में वह उन लोगों को छोड़कर चला आया।

एक षड्यन्त्र

अगले दिन फिर उसने नौबेर और उसकी बहिन को अपने विषय में बातचीत करते हुए पकड़ लिया। आज भी उसके आते ही पहले दिन की भाँति ही मौत का-सा सन्नाटा छा गया। उसके सन्देह की कोई सीमा न रही। क्या ये सब लोग मुझे मूर्ख बनाने का जाल रच रहे हैं? यह तो मानना ही पड़ेगा कि एक बेचारे सेक्रेटरी से माद० द ला मोल के प्रेम करने की अपेक्षा यह कहीं अधिक सम्भव जान पड़ता है। पहली बात तो यही है कि क्या इस तरह के लोग कर भी सकते हैं? उनकी तो विशेषता ही घोखाघड़ी है। ये लोग वार्तालाप में मेरी थोड़ी-सी श्रेष्ठता से ईर्ष्या करने लगे हैं। ईर्ष्या, यह उनकी अन्य दुर्बलता है। इस मडली की हर बात एकदम शीशे की तरह साफ है। माद० द ला मोल केवल इसीलिये मेरे ऊपर कृपा दिखाती हैं कि एक दिन वह अपने भावी पतिदेव को मेरा तमाशा दिखा सकें।

इस निर्मम सन्देह ने जुलिये की मनोदशा पूरी तरह बदल दी। इस विचार से उसके मन में धीमे-धीमे उगता हुआ प्रेम का अकुर सहज ही नष्ट हो गया। यह प्रेम केवल मातिल्द के अपूर्व सौंदर्य पर, बल्कि उसके राजसी व्यवहार और वस्त्रों के विषय में अमूर्ती अभिरुचि पर आधारित था। इस मामले में जुलिये अभी तक नौसिखिया था। लोगों का कहना है कि यदि कोई चतुर किसान किसी भाँति समाज के उच्चतम स्तर पर पहुँच जाये तो दुनियादार सुन्दर स्त्री ही उसे सबसे अधिक

विस्मित करती है। पिछले कुछ दिनों से जुलिये जो स्वप्न देखने था लगा वे किसी भाँति भी मातिल्द के चरित्र के कारण न थे। इतना वह भली भाँति समझता था कि मातिल्द के चरित्र की कोई जानकारी उसे नहीं है। जो कुछ उसे दिखाई पड़ता था वह बाहरी दिखावा भी हो सकता था।

उदाहरण के लिये, मातिल्द रविवार के दिन प्रार्थना में जाना कभी न टालती थी, लगभग प्रतिदिन वह अपनी माँ के साथ गिरजाघर जाती थी। यदि द ला मोल भवन के ड्राइंग रूम में कोई असावधान व्यक्ति, यह भूलकर कि वह कहाँ है, किसी प्रकार राजतंत्र अथवा चर्च के वास्तविक अथवा काल्पनिक हितों की तनिक भी हँसी उड़ाने लगता तो मातिल्द तुरन्त बेहद कठोर हो जाती थी। उसके मुख पर, जो साधारणतः इतने आकर्षक रूप में सजीव रहता था, तुरन्त ही एक पुराने पारिवारिक चित्र का-सा भावहीन दर्प छा जाता था।

साथ ही जुलिये यह बात भी निश्चित जानता था कि वह वोल्तेर के दर्शन विषयक ग्रन्थों में से एक-दो सदा अपने कमरे में रखती है। प्रायः वह स्वयं उस सुन्दर और मजबूत जिल्द वाले स्फुरण के एक या दो खण्ड चुपचाप पढ़ने के लिये ले जाया करता था। किसी को इस बात का पता न चले, इस उद्देश्य से पास में रखी हुई अन्य जिल्दों को थोड़ा-थोड़ा खिसकाकर रख दिया करता था। पर शीघ्र ही उसे लगा कि और भी वोल्तेर पढ़ रहा है। तब उसने शिक्षा-मठ में सीखी तरकीब का सहारा लिया, उसने दो-एक घोड़े के बाल उन खण्डों में रख दिये जो उसके अनुमान से माद० द ला मोल की रचि के थे। वे जिल्दे हफ्तों गायब रहती।

म० द ला मोल का पुस्तक-विक्रेता उन्हें तरह-तरह के झूठे सस्मरक ग्रन्थ भेजता रहता था। इससे असन्तुष्ट होकर उन्होंने जुलियो को आदेश दिया कि कोई भी सनसनीदार किताब निकले तो वह जाकर खरीद लाये। किन्तु इस विषय को समूचे घर में फैलने से रोकने के लिये सेक्रेटरी को आदेश था कि इन पुस्तकों को वह स्वयं मार्कि के कमरे में एक छोटी-

सी आलमारी में रख दिया करे। जुलिये को शीघ्र ही पता चल गया कि नई पुस्तको में से कोई तनिक भी राजतंत्र और चर्च के विरुद्ध होती तो उसके गायब होने में देर नहीं लगती थी। उनको पढ़ने वाला नीबोर नहीं था।

जुलिये अपनी इस खोज के महत्त्व को अतिरजित करके माद० द ला मोल को मेक्यावेलि की सी छल-नीति का श्रेय देने लगा। यह तथा-कथित दुष्टता उसकी दृष्टि में एक प्रकार का आकर्षण, बल्कि मातिल्द के मस्तिष्क का एकमात्र आकर्षण थी। ढोंग और शीलपूर्ण वार्तालाप की मात्रा अधिक हो जाने पर वह ऐसी ही चरम अतिरजनापूर्ण बातों में पड़ जाता था। उसकी कल्पना इतनी सुलग उठी कि वह प्रेम में बिलकुल बह गया।

माद० द ला मोल के लावण्य की अपूर्वता, उनके वस्त्रों की सुन्दर रचि, उनके हाथ के गोरेपन, उनकी बाहों के सौंदर्य, उनकी गतिविधियों की सहज निर्भीकता के स्वप्नों में अपने आप को खो देने के बाद ही उसने अनुभव किया कि वह प्रेम में पड़ गया है। फिर मानो इस सम्मोहन मंत्र को पूरा करने के लिये वह उनकी कातरिन द मेदिसि के रूप में कल्पना करने लगा। उनका जो चरित्र उसने मान रक्खा था उसके लिये कोई भी बात अधिक गहरी अथवा अधिक अपराधपूर्ण न थी। मासलो, फ़िलेर, कास्तानेद आदि का आदर्श यही था जिन्हें वह भी बचपन में प्रशंसा की दृष्टि से देखता था। संक्षेप में उसके लिये यह पेरिस का आदर्श था।

इससे अधिक हास्यास्पद कोई बात कभी किसी ने सुनी है कि पेरिसीय-चरित्र में गहराई अथवा अपराधवृत्ति होती है ?

सम्भव है यह तिगड्डा मुँह मूर्ख बना रहा हो, जुलिये सोचता। यदि पाठक को मातिल्द की निगाहों के जवाब में जुलिये के मुख की सम्भीर बेरुखी अभी तक नहीं दीखी है तो वह अभी उसके चरित्र से विशेष परिचित नहीं हो पाया है। उसके व्यवहार से चकित होकर

माद० द ला मोल ने दो-तीन अवसरो पर मित्रता का आदवासन देना चाहा भी तो कडवे व्यंग द्वारा उसका प्रतिरोध हुआ ।

इस आकस्मिक विचित्र व्यवहार से आहत होकर इस लडकी का स्वभाव से ही आवेगहीन, ऊबा हुआ और केवल मानसिक बातों के प्रति संवेदनशील हृदय ऐसा भाव-विह्वल हो उठा जो उसकी प्रकृति के अनुकूल था । किन्तु साथ ही मातिल्द में स्वाभिमान भी बहुत था । इसीलिये इस प्रेम-भाव के उत्पन्न होने के साथ-साथ, जिसके कारण उसका सारा सुख दूसरे के ऊपर निर्भर हो उठा था, गहरा अवसाद भी उसके मन में घिरने लगा ।

पेरिस आने के बाद से जुलिये ने काफी प्रगति कर ली थी । अब उसे यह समझने में देर न लगी कि यह उकताहट का शुष्क अवसाद नहीं है । अब वह पहले की भाँति सन्ध्या के आमन्त्रणों, नाटकों और हर प्रकार के मन-बहलाव के लिये उत्सुक होने के बजाय उनसे बचती रहती थी ।

फ्रांसवासियों द्वारा गाये जाने वाले संगीत से मातिल्द बुरी तरह ऊबती थी; किन्तु जुलिये ने, जो अन्त तक ऑपेरा में उपस्थित रहना अपना कर्तव्य मानने लगा था, यह देखा कि अब वह वहाँ अधिक से अधिक बार जाने लगी है । उसे यह भी अनुभव हुआ कि किसी समय उसके हर कार्य में पाया जाने वाला उसका वह अपूर्व सतुलन कुछ-कुछ कम हो गया है । वह कभी-कभी अपने मित्रों को ऐसे तीखे परिहासों द्वारा उत्तर देती जो लगभग अपमानजनक होते । जुलिये को लगा कि वह म० द क्रवाजन्वा को भी नापसन्द करने लगी है । वह सोचने लगा कि आदमी को सचमुच ही धन का बहुत ही लोभ होगा नहीं तो वह ऐसी लडकी को, वह चाहे जितनी अमीर क्यों न हो, अवश्य छोड़ देता ! जुलिये स्वयं पुरुष की मर्यादा पर होने वाले इन प्रहारों से क्षुब्ध होकर उसकी ओर अधिकाधिक उदासीन होता गया । कभी-कभी यह नौबत आ जाती कि वह उसे कुछ अशिष्टतापूर्ण उत्तर दे बैठता ।

किन्तु मातिल्द का स्नेह-प्रदर्शन कभी-कभी इतना स्पष्ट होता और जुलिये को वह देखने में इतनी सुन्दर लगती कि लाख निश्चय करने के बाद भी वह उसके जाल में करीब-करीब फँस ही जाता।

इन दुनियादारी युवक-युवतियों की चतुराई और धीरज की अन्त में मेरी अनुभवहीनता के ऊपर अवश्य विजय होगी, वह मन ही मन कहता। मुझे यहाँ से चल देना चाहिये ताकि २ स सबसे छुट्टी मिले। मार्कि ने अभी-अभी उसे अपने निम्न लागदोक के इलाके की कई एक छोटी-छोटी जमीदारियों और जायदादों के प्रबन्ध का भार सौंपा था। वहाँ एक बार जाना आवश्यक था, म० द ला मोल कुछ अनिच्छापूर्वक राजी हो गये। उच्चतम महत्वाकांक्षियों के मामलों को छोड़कर जुलिये अब उनका अभिन्न अंग बन गया था।

यात्रा की तैयारी करते-करते जुलिये सोचने लगा कि कुल मिलाकर ये लोग अपनी चाल में मुझे फसा नहीं सके। इन सज्जनों की जो हँसी माद० द ला मोल उड़ाती हैं, वह चाहे वास्तविक हो चाहे मुझे फँसाने के लिये, मैंने उसका खूब मजा लिया है। यदि इस बड़ई के बेटे के विरुद्ध कोई षड्यन्त्र नहीं है तो माद० द ला मोल मेरे लिये एक रहस्य हैं, पर वह जितनी मेरे लिये हैं उतनी ही म० द क्राजन्वा के लिये भी हैं। उदाहरण के लिये कल ही उनका क्रोध निस्सन्देह वास्तविक था और मुझे अपने कारण एक ऐसे नौजवान को अपमानित होने देखने का आनन्द मिला जो उतना ही धनी और सभ्रान्त है जितना मैं गरीब और साधारण। यह मेरी सबसे बड़ी विजय है। लागदोक के मैदानों में डाक-गाड़ी में यात्रा करते-करते इस बात की याद से ही बड़ा आनन्द आता रहेगा।

उसने अपने प्रस्थान का समाचार गुप्त रक्खा था, किन्तु मातिल्द को यह भली-भाँति मालूम हो चुका था कि वह अगले दिन एक लम्बे अर्से के लिये पेरिस छोड़कर जा रहा है। उसने बड़े भीषण मिर-दर्द का बहाना किया और कहा ड्राइंग रूम के बन्द वातावरण में वह और भी

बढ़ रहा है। वह कुछ देर तक बाग में टहलती रही और नीबेर, माकि द क्वाजन्वा, केलुस, द लुज तथा उस दिन आमन्त्रित कुछ अन्य युवकों को अपने तीखे व्यंग्य बाणों से इतना सत्रस्त किया कि वे लोग हारकर चले गये। जुलिये की ओर वह अजीब-सी दृष्टि से देखती रही।

सम्भवतः यह दृष्टि बस अभिनय मात्र है, जुलिये सोचने लगा। पर वह जल्दी चलती हुई साँस, वह सब उत्तेजना! सब बकवास है। मैं ऐसी बातों को क्या समझूँ? यह सब उस अनुपम सूक्ष्मता का ही अंग है जिसमें पेरिस की स्त्रियाँ इतनी पटु हैं। जिन जल्दी चलती हुई साँसों ने मुझे करीब-करीब विचलित कर दिया है वे शायद इस लड़की ने लेओतीन फे से सीखी होगी, जिसकी वह इतनी भक्त है।

वे लोग अकेले रह गये, बातचीत स्पष्ट ही उखड़ी-उखड़ी-सी थी। नहीं! जुलिये के मन में मेरे लिये कोई भाव नहीं, मातिल्द ने सचमुच बड़े मानसिक सताप की अवस्था में मन ही मन कहा।

जब वह उससे विदा लेने लगा तो एकाएक मातिल्द ने कसकर उसकी बाँह पकड़ ली। “प्राज रात में आपको मेरा एक पत्र मिलेगा,” उसने ऐसी लड़खड़ाती हुई आवाज में कहा कि जुलिये मुदिकल से सुन सका। इससे वह बहुत ही विचलित हुआ।

“मेरे पिता जी, आपकी सहायता का बहुत ही आदर करते हैं,” मातिल्द ने आगे कहा, “कल आप मत जाइये, कोई न कोई बहाना कर दीजिये।” और वह जल्दी से भाग गई।

उसका रूप बहुत ही लुभावना था। उसके पैर से अधिक सुन्दर पैर की कल्पना भी कठिन थी, उसके दौड़कर चले जाने में ऐसी अपूर्व शोभा थी कि जुलिये मन्त्रमुग्ध-सा रह गया। किन्तु उसके आँखों से ओझल होते ही जो विचार जुलिये के मन में आया उसका किसे अनुमान हो सकता था? जिस राजसी स्वर में उसने कहा कि “मत जाइये,” उससे वह चिढ़ गया। लुई पद्रहवाँ भी मृत्यु-शय्या पर अपने मुख्य चिकित्सक के ऐसे ही स्वर से इतना क्षुब्ध हुआ था, और लुई पद्रहवाँ तो कोई

नया सामन्त न था ।

घण्टे भर बाद एक नौकर ने जुलिये को पत्र ला कर दिया । पत्र में सीधा-सीधा प्रेम-निवेदन ही था ।

शैली तो अधिक बनावटी नहीं है, जुलिये ने मन ही मन कहा । वह इस प्रकार साहित्यिक समीक्षा द्वारा उस आनन्द को सयत करने का यत्न कर रहा था जिसके कारण उसके गाल सकुचित हो उठे थे और बरबस हँसी फूट रही थी ।

“और इस भाँति मुझे, ’ उसने अचानक प्रबल भावावेग से उच्छ्वसित होकर कहा, “मुझे, एक गरीब किसान को, एक उच्चकुल की भद्र महिला से प्रेम-निवेदन प्राप्त हुआ है ।”

“जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैंने अपने व्यवहार में कोई गलती नहीं की,” उसने अपनी प्रसन्नता की लगाम को यथासम्भव खींचते हुए आगे कहा । “मैंने अपने चरित्र की दृढ़ता को सुरक्षित रक्खा है । मैंने यह कभी नहीं कहा कि मैं प्रेम करता हूँ ।”

वह मातिल्द की लिखावट का अध्ययन करने लगा । वह सुन्दर छोटे-छोटे अंग्रेजी ढग के अक्षर लिखती थी । अपने इस लगभग विक्षिप्तता के आनन्द को कुछ देर भूलने के लिये उसे किसी न किसी शारीरिक कार्य की आवश्यकता थी ।

“तुम्हारे जाने के कारण मैं लिखने को लाचार हो गई हूँ ” तुम्हारा आँखों से ओझल होना मैं किसी भी भाँति न सहन कर सकूँगी...”

तभी किसी नयी खोज की भाँति एक आकस्मिक विचार जुलिये के मन में आया । इससे उसका मातिल्द के पत्र का अध्ययन रुक गया और उसकी खुशी कुछ बढ़ गयी । वह जोर से कह उठा, “म० द क्रवाजन्वा की तुलना में भी मुझे अच्छा समझा गया है ” मुझे, जो गम्भीर बातों के अतिरिक्त और कुछ कहता ही नहीं ! और वह क्रवाजन्वा तो कितना सुन्दर है, मूछों वाला ! आकर्षक वर्दी भी पहनता है ! और साथ ही कोई न कोई अवसरोचित चतुराई-भरी बात भी सदा कहता है ।”

जुलिये के लिये यह अपूर्व प्रसन्नता का क्षण था । वह खुशी से पागल-सा बगीचे में घूमता रहा ।

बाद में वह ऊपर अपने कार्यालय में पहुँचा और मार्कि द ला मोल से भेट का प्रबन्ध किया जो सौभाग्यवश अभी बाहर नहीं गये थे । उसने बहुत आसानी से नार्मण्डी से आये हुये कुछ स्टाम्प लगे दस्तावेज दिखा कर यह सिद्ध कर दिया कि इस समय कुछ अन्य महत्वपूर्ण मुकदमों के कारण लागदोक की यात्रा स्थगित करना अत्यन्त आवश्यक है ।

“अच्छा हुआ तुम नहीं जा रहे हो,” काम-काज की बातचीत समाप्त होने पर मार्कि ने कहा । “मुझे तुम्हें यहाँ आसपास देखना अच्छा लगता है ।” जुलिये कमरे से बाहर चला गया, उनके इस अन्तिम कथन से वह कुछ सकोच में पड़ गया था ।

और मैं इसी व्यक्ति की बेटी को पथभ्रष्ट करने वाला हूँ ! फलस्वरूप शायद मार्कि द क्रवाजन्वा से उसका विवाह असम्भव हो जाय, जिसके ऊपर उन्होंने अपनी भविष्य की सारी आशाएँ केन्द्रित कर रखी हैं । वह स्वयं ड्यूक न भी बनें तो कम से कम उनकी बेटी को तो राज-दरबार में डचेज का आसन मिला करेगा । अचानक जुलिये सोचने लगा कि मातिल्द के पत्र के बावजूद, मार्कि को अभी-अभी बताये गये कारणों के रहते भी, वह तुरन्त लागदोक के लिये चल पड़े । सदाचार की यह बिजली जैसी कौध बहुत शीघ्र ही बुझ गई ।

वह मन ही मन सोचने लगा कि मेरे जैसे साधारण व्यक्ति का इतने बड़े परिवार पर तरस खाना कितनी भली बात है और मुझी को दुक् द शोन धरेलू नौकर कहते हैं ! मार्कि अपनी इस अगाध सम्पत्ति को कैसे बढ़ाते हैं ? अगले दिन किसी आकस्मिक परिवर्तन की सम्भावना का पता चलते ही अपनी कुछेक हूँडियो को बेचकर ! और मैं, जिसे नियति ने सौतेली माँ की भाँति निम्नतम स्थिति में डाल रक्खा है, जिसे केवल उदार हृदय तथा एक हज़ार फ्रैंक से भी कम की आमदनी प्रदान की है, जो मेरे खाने-पहनने के लिये भी पर्याप्त नहीं है,—सच पूछिये तो

रोज के भोजन के लिये भी काफी नहीं है—वही मैं, क्या सामने परोसी हुई थाली को ठुकरा दूँ ? साधारणता के जिस जलते हुए मरु-प्रदेश में ऐसे कष्ट के साथ सघर्षपूर्वक चल रहा हूँ उसमें प्यास को बुझाने के लिये सामने उमड़ते शीतल निर्मल जल-स्रोत की ओर से आँख फेर लूँ ! कसम से, मैं इतना गधा नहीं हूँ । स्वार्थपरता की इस मरु-भूमि में, जिसे लोग जीवन कहते हैं, हर आदमी को अपनी ही चिन्ता करनी चाहिये ।

और उसे वे सब तिरस्कार-भरी निगाहे याद आयी जो माद० द ला मोल और विशेष रूप से उसकी सखियाँ उसकी ओर डाला करती थी । मार्कि द क्रवाजन्वा के ऊपर विजय प्राप्त करने के आनन्द ने उसके भीतर जागती हुई सदाचार की भावना को एकदम खदेड़ दिया ।

उसको क्रुद्ध करने में कितना मजा आयेगा, जुलिये ने सोचा । अब मैं कितने आश्वासन के साथ उसे अपनी तलवार से आहत कर सकूँगा ! उसने ऐसी मुद्रा बनाई मानो सचमुच तलवार का वार कर रहा हो । आज से पहले मैं केवल एक कृपाकाक्षी विद्वान् मात्र था जो थोड़े-में साहस का अनुचित नीचतापूर्ण लाभ उठा रहा था । इसके बाद मैं अब उसकी बराबरी का हूँ ।

“हाँ,” उसने असीम आनन्द के साथ धीरे-धीरे और समझ-ममझ कर जोर से कहा । मार्कि के और मेरे गुण अलग-अलग तोल लिये गये हैं और विजय जुरा के गरीब बढई के हाथ लगी है ।”

“ठीक,” उसने आगे कहा । “यह रहा उत्तर के ऊपर मेरा हस्ताक्षर । मादम्बाजेल द ला मोल, आप यह न समझ बैठियेगा कि मैं अपनी हैसियत भूल रहा हूँ । मैं यह आपको साफ-साफ अनुभव करा दूँगा कि आप एक बढई के बेटे के लिये सत लुई के साथ जिहाद में जाने वाले विख्यात गी द क्रवाजन्वा के वशघर के साथ विश्वासघात कर रही हैं ।”

जुलिये का आनन्द उसके भीतर समाता न था । वह लाचार होकर बगीचे में चला गया । उसे लग रहा था कि उसके अपने कमरे में साँस लेने के लिये बहुत कम स्थान है ।

वह बार-बार यही दोहरा रहा था : “मुझे, जुरा के एक गरीब किसान को ! मुझे, जिसको महीने के तीसो दिन यही काला कोट पहनने का अभिशाप मिला हुआ है ! ओफ ! बीस वर्ष पहले मैं भी उन्ही की भाँति फौजी वर्दी पहिनता होता ! उन दिनों मे मेरे जैसा व्यक्ति या तो मारा जाता था या तीस वर्ष की उम्र मे जनरल हो जाता था ।” उस पत्र ने, जिसे उसने कस के अपनी मुट्ठी मे दबा रक्खा था, उसे एक वीर योद्धा का सा आकार और भाव प्रदान कर दिया था । यह सही है कि आजकल इस काले कोट से आदमी को चालीस वर्ष की उम्र मे बोवे के बिशप महोदय की भाँति एक लाख फ्रैंक की वृत्ति और नीला फीता प्राप्त हो सकता है ।

“खैर, जो भी हो,” उसने मैफिस्टोफेलीस की भाँति हँसते हुए अपने आप ही कहा, “मुझ मे उनसे अधिक बुद्धि है, मैं अपने जमाने की वर्दी चुनना जानता हूँ ।” उसे अपनी महत्वाकांक्षा और अपनी पुरोहितो जैसी आदतो से कुछ अधिक लगाव अनुभव होने लगा । कितने ही कार्डिनल मुझ से भी गरीब परिवार के होकर भी बड़े ऊँचे पद तक पहुँचे हैं ! उदाहरण के लिये मेरा ही देशवासी ग्रावेल ।

धीरे-धीरे जुलिये की यह उत्तेजना कम हो गई, दूरदर्शिता सतह पर उभर आयी । उसने अपने शिक्षक तार्तुफ की भाँति, जिसका पार्ट उसने कठस्थ कर रक्खा था, अपने आप से कहा :

“मे इन शब्दो को सच्चा मान, सकता हूँ ।

किन्तु मैं ऐसी आकर्षक भीठी बातों का विश्वास तब तक न करूँगा जब तक जिसकी कृपा के लिये मैं बेचैन हूँ,

वह स्वयं आकर मुझे आश्वासन न दे कि वह झूठ नहीं बोल रही है ।”

“तार्तुफ भी एक स्त्री के कारण बरबाद हुआ था और वह भी भला आदमी था ।” हो सकता है मेरा उत्तर लोगो को दिखाया जाय । ... ठीक है, इसका भी उपाय है,” उसने अपने शब्दो को ठहर-ठहर कर

उच्चारण करते हुए और एक दबी हुई तीव्रता के साथ कहा। “अपने पत्र को हम सुन्दरी मातिल्द के पत्र के सबसे चुभते हुए शब्दों से ही प्रारम्भ करेंगे।

“हाँ, किन्तु यदि म० द क्राजन्वा के चार अनुचर मेरे ऊपर टूट पड़े और मूल पत्र को छीन ले जाये तो ? नहीं ! मैं भली-भाँति शस्त्र-सज्जित हूँ, और वे जानते ही हैं कि मुझे नौकरो पर गोली चला देने का अभ्यास है।

“मान लीजिये उनमें से एक हिम्मत करे मेरे ऊपर झपट ही पड़ता है, क्योंकि उसे सौ नैपोलियन के इनाम का आश्वासन मिला है। मुझे तमाम उचित कानूनी कार्रवाई द्वारा जेल में बन्द कर दिया जाता है। मैं पुलिस की अदालत में पेश किया जाता हूँ और न्यायाधीश की ओर से न्याय और औचित्य का पूरा-पूरा दिखावा बनाये रखने के बाद मुझे फोता और मागालो के साथ पुआसि में रहने की सजा मिलती है। वहाँ मैं चार सौ भिखमगो गुण्डों के साथ सोने के लिये बाध्य होता हूँ। “और मैं ऐसे लोगों पर तरस खाऊँ।” वह उछल कर खड़ा हो गया और जोर से बोला। “गरीब लोग जब इनके चंगुल में फँस जाते हैं तो इन्हे तरस आता है ?” म० द ला मोल के प्रति जिस कृतज्ञता के कारण वह अनचाहे ही अभी तक सन्नस्त अनुभव कर रहा था, उसने इन शब्दों के साथ अपनी दम तोड़ दी।

“ठीक है मेरे सभ्रान्त सज्जनो, मैं आपकी इस धूर्तता को भली-भाँति समझता हूँ। शिक्षा-मठ में फादर मामलो अथवा म० कास्तानेद भी इस से अधिक चतुराई न दिखा सकते थे। आप लोग मुझे फुसलाने वाले पत्र को छीन ले जायेंगे, और मैं कोलमार में कर्नल कारो का दूसरा खण्ड बन जाऊँगा।

“किन्तु महाशयो, पल भर ठहरिये, मैं इस पत्र को भली-भाँति मोहर-बन्द लिफाफे में रखकर फादर पिरार के पास सुरक्षित रखने के लिये भेजे देता हूँ। वह ईमानदार आदमी है; जानसेनपथी और इस भाँति

हर प्रकार के आर्थिक प्रलोभनों से दूर। हाँ, पर यदि उन्होंने पत्र खोल दिया तो ?... यह पत्र मुझे फूँके के पास भेजना चाहिये।”

यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि इस समय जुलिये की आँखों की दृष्टि भयानक थी। उसके चेहरे का भाव घृणित था, उससे खुल्लम-खुल्ला अपराधवृत्ति के अतिरिक्त और कोई बात न प्रगट होती थी। इस समय वह उन अभागों लोगों की प्रतिमूर्ति बना हुआ था जो समूचे समाज से शत्रुता मोल लिए रहते हैं।

“हथियार उठाओ !” घर के सामने एक छलाग में सारी सीढियाँ पार करते हुए जुलिये ने कहा। वह सड़क के किनारे पत्र लिखने वाले की दुकान में पहुँचा, वह व्यक्ति डर गया। “इसे नकल कर दो,” उसने उसे माद० द ला मोल का पत्र देते हुये कहा।

जितनी देर में उस व्यक्ति ने अपना काम पूरा किया उतने में जुलिये स्वयं एक पत्र फूँके को इस बहुमूल्य धरोहर को सुरक्षित रखने की प्रार्थना करते हुए लिखने लगा। तभी एकाएक बीच ही में यह सोचकर वह रुक गया कि कहीं डाकखाने के गुप्तचर मेरा पत्र खोलकर उन लोगों को न दे दे। यह विचार आते ही वह जाकर एक प्रोटेस्टेंट पुस्तक-विक्रेता से एक बड़ी भारी बाईबल खरीद लाया और उसकी जिल्द में होशियारी से मातिल्द के पत्र को छिपाकर रख दिया। इसके बाद पुस्तक को भली-भाँति कागज में लपेट कर उसने वह छोटा-सा पार्सल फूँके के एक कर्मचारी के नाम भेज दिया जिसे पेरिस में कोई भी नहीं जानता था।

यह सब करने के बाद वह बड़े हल्के हृदय से द ला मोल भवन वापिस लौटा। “अब अपना-अपना पार्ट शुरू हो !” उसने कमरे को भीतर से बन्द करके अपना कोट उतारकर फेंकते हुए कहा।

उसने मातिल्द को लिखा था . “क्या मादम्वाजेल, स्वयं माद० द ला मोल अपने पिता के सेवक आर्सेन के हाथों जुरा के एक गरीब बूढ़े के पास, निस्संदेह उसकी सरलता का मजाक उड़ाने के लिये ही ऐसा फुसलाने वाला पत्र भेजती है।”

और उसने मातिल्द के पत्र से ऐसे सब वाक्यांश अपने पत्र में नकल कर दिये जिनमें अर्थ अधिक से अधिक स्पष्ट था ।

उसका पत्र शवालिये द बोव्वाजि की कूटनीतिज्ञ शैली को भी मात करता था । अभी केवल दस ही बजे थे । जुलिये आनन्द और अपनी शक्ति के नशे में डूबा हुआ, जो उसके जैसे दरिद्र व्यक्ति के लिये बहुत ही नया था, इटेलियन ऑपेरा देखने चला गया । वहाँ उसने अपने मित्र ज़रोनिमो का गाना सुना । संगीत ने उसे पहले कभी इतना प्रभावित न किया था । वह देवता हो गया था ।

: १४ :

एक लड़की के विचार

मातिल्द उसे पत्र आन्तरिक सघर्ष के बिना न लिख पाई थी। जुलिये की ओर उसके रुझान का प्रारम्भ चाहे जो रहा हो, बहुत शीघ्र ही उसने मातिल्द के गर्व पर विजय पा ली थी। जब से उसे होश था उसके हृदय का एकमात्र स्वामी यह गर्व ही रहा था। यह भावहीन तिरस्कार भरा हृदय पहली बार प्रबल भावनाओं से विवश हुआ था। किन्तु उसके गर्व को बस में करने के बाद भी यह प्रेम-भाव अभी तक गर्व द्वारा निर्मित अभ्यासों का अनुचर था। दो महीनों के सघर्ष और नवीन सवेदनाओं ने एक प्रकार से उसके समूचे नैतिक व्यक्तित्व को नये सिरे से ढाल दिया था।

मातिल्द सोचती थी कि सुख उसकी आँखों के सामने है। इस स्वप्न को, जो साहसिक हृदय में श्रेष्ठ बुद्धि के साथ जुड़ने पर सर्वशक्तिमान हो जाता है, आत्मगौरव और कर्तव्य के तमाम साधारण विचारों के विरुद्ध बड़ा लम्बा सघर्ष करना पड़ा। एक दिन सबेरे सात की घण्टी बजते ही वह अपनी माँ के कमरे में जाकर उनसे अनुरोध करने लगी कि उसे विलेक्वे चले जाने दिया जाय। मार्किज ने उसकी बात का उत्तर देना भी आवश्यक न समझा और उसे जाकर सोने की सलाह दी। दुनियादारी और स्वीकृत विचारों के प्रति सम्मान का यह अन्तिम प्रयत्न था।

किसी प्रकार का अनुचित व्यवहार कर बैठने अथवा केलुस, लुज,

क्राजन्वा आदि लोगो द्वारा अटल समझे जाने वाले विचारो के विरुद्ध होने का भय उसे बहुत कम था, यह उसे कभी न लगता था कि ऐसे लोग उसके मन को समझने के लिए बने हैं। कोई गाड़ी अथवा जमींदारी खरीदने का प्रश्न होता तो वह उनसे सलाह भी लेती। उसे सबसे बड़ा भय इस बात का था कि कहीं जुलिये उससे अप्रसन्न न हो जाय।

कभी-कभी वह आश्चर्य से सोचती कि कहीं उसके व्यक्तित्व की श्रेष्ठता भी बाहरी दिखावा मात्र न हो। चरित्र के अभाव से उसे बड़ी चिढ़ थी। अपने चारो ओर के नौजवानो से उसकी एकमात्र शिकायत यही थी। जितनी ही चतुराई के साथ वे फैशन से भिन्नता अथवा उसे मानकर भी उसे अपनाते मे असमर्थता की वे हँसी उड़ाते, उतने ही वे उसकी आँखों मे अधिक गिरते जाते।

वे लोग बहादुर थे, बस। परन्तु वे किस प्रकार बहादुर हैं? कभी-कभी वह अपने आपसे प्रश्न करती। द्वन्द्व-युद्ध मे? किन्तु द्वन्द्व-युद्ध तो आजकल बस औपचारिक ही रह गया है। हर बात पहले से पता रहती है। यहाँ तक कि गिरते समय आदमी को क्या कहना होगा। घास पड़ पड़े हुए, अपना हाथ अपने हृदय पर रखकर विरोधी के लिये उदारतापूर्वक क्षमा और किसी सुन्दरी महिला के लिये, कोई सन्देश और यह महिला भी या तो काल्पनिक होती है, या ऐसी जो उसके मृत्यु के दिन सन्देश के डर से बॉल-नृत्य में जाती है।

चमचमाते शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित घुड़सवार दस्ते के आगे कोई भी आदमी सकट का सामना कर सकता है—पर क्या एकान्त का सकट भी, जो इतना विचित्र, अप्रत्याशित और वास्तव मे कुत्सित होता है?

हाय ! मातिल्द सोचने लगी, हेनरी तृतीय के राजदरबार में ही ऐसे लोग हुआ करते थे जो चरित्र से जितने महात् थे उतने ही जन्म के भी ! ओफ ! यदि जुलिये जारनाक अथवा मोकोतुर में काम कर चुका होता तो मेरे मन मे कोई सन्देश न रहता। शक्ति और साहसपूर्ण कार्यों के उस युग के फ्रासवाँसी दर्जी की दुकान पर रखी हुई मूरतो जैसे व

थे । युद्ध का दिन लगभग सबसे कम परेशानी का दिन हुआ करता था ।

उनका जीवन मित्र की ममी की भाँति भीतर के खोल तक सीमित नहीं था जो सबके और सर्वदा एक से होते हैं । हाँ, उन दिनों कातरिन द मेदिसि के निवासस्थान ओतेल द स्वास्वो से अकेले घर जाने में भी, आजकल अल्रिजिये के लिये चल पड़ने से कहीं अधिक सच्चे साहस की आवश्यकता होती थी । पुरुष का जीवन अनगिनती जोखिमों से भरा रहता था । अब सम्भ्रता तथा पुलिस के प्रधान ने सारी जोखिमों समाप्त कर दी हैं तो अप्रत्याशित के लिये कोई गुजाइश ही न बची है । यदि अप्रत्याशित हमारे विचारों में प्रगट होता है तो लोगों को उसके विरुद्ध पर्याप्त उक्तियाँ नहीं मिलती, यदि वह घटनाओं में प्रगट होता है तो भय के कारण हमारी नीचता की कोई हद नहीं रहती । भय के कारण हम जो भी पागलपन कर बैठे उसके लिये बहाने ढूँढ लिये जाते हैं । यह पतित और नीरस युग है । यदि बोनिकास द ला मोल सन् १७९३ में अपने कटे हुए सिर को कन्न से उठाकर देखते कि उनके सत्रह वशधर वध से दो दिन पहले भेड़ों की भाँति ले जाये जा रहे हैं, तो वह क्या कहते ? मृत्यु तो निश्चित थी, किन्तु अपनी रक्षा करना और कम से कम एक-दो जैकोबिनो को मार डालना शिष्टता के विरुद्ध सम्झा जाता था ! आह ! बोनिकास द ला मोल के दिनों में फ्रांस के वीरतापूर्ण युग में जूलियें मेना में मेजर होता और मेरा भाई औचित्य का आदर्श तथा अपने होठों पर सावधानी और आँखों में समझदारी धारण करने वाला नौजवान पुरोहित ।

कुछ महीने पहले मातिल्द किसी अप्रचलित बनावट के व्यक्ति से मिलने के विषय में निराश हो चुकी थी । समाज के कुछेक युवकों को पत्र लिखने में उसे थोड़ा-बहुत आनन्द मिला करता था । यह अशोभन साहसिकता किसी युवती के लिये अत्यन्त नासमझी की बात मानी जाती थी । इसके कारण यह आशंका थी वह म० द क्रवाजन्वा की, उसके पिता की और दुक् द शोन तथा उसके समस्त परिवार की नज़रों में कहीं गिर

न जाय, जो प्रस्तावित विवाह-सम्बन्ध को टूटने देवकर यह जानना चाहते कि इसका कारण क्या है। उन दिनों ऐसा ही एक पत्र लिखने के बाद मातिल्द को एक रात नींद नहीं आई थी। किन्तु तो भी उसके यह पत्र केवल उत्तर भर थे।

और आज उसे यह कहने का साहस है कि वह प्रेम करती है। वह समाज के निम्नतम स्तर के एक व्यक्ति को पहले (कैसा भयानक शब्द है।) लिख रही है।

यदि इन परिस्थितियों का पता चल जाता तो उसकी हमेशा के लिये बदनामी पक्की थी। उसकी माँ से मिलने आने वाली कौन-सी स्त्री उसका पक्ष लेने का साहस करेगी? ड्राइंग रूमों के भीषण तिरस्कार के तीव्र आघातों को हलका करने के लिये वे लोग कैसे-कैसे चतुराई भरे शब्द ढूँढेंगे?

किसी पुरुष से बात करना ही काफी चौंकाने वाली बात है—पर लिखना। कुछ ऐसी भी चीजें होती हैं जिन्हें कभी लिखा नहीं जाता। नैपोलियन ने जब वेले के पतन की बात सुनी तो चौंक कर यही कहा था। यह बात उसे जुलिये ने ही बताई थी, मानो उसे पहले से ही शिक्षा दिये दे रहा हो।

पर यह सब भी अभी तक इतना विशेष कुछ न था। मातिल्द के सताप के अन्य कारण थे। समाज के ऊपर होने वाले भीषण प्रभाव की, अपनी जाति के विरुद्ध चलने के कारण सार्वजनिक घृणा उत्पन्न करने वाले अमिट कलक की चिन्ता छोड़कर मातिल्द अब ऐसे व्यक्ति को पत्र लिख रही थी जो क्राजन्वा, लुज और वेलुस जैसे लोगों से एकदम भिन्न है।

यदि वह उसके साथ साधारण रूढ़िगत सम्बन्ध भी स्थापित कर रही होती तो भी जुलिये के चरित्र की गहराई और उसकी अग्रगण्य रहस्यमयता बड़ी डरावनी जान पड़ती। पर वह तो उसे अपना प्रेमी, शायद अपना स्वामी, बनाने जा रही थी।

यदि कभी उसे मेरे ऊपर पूरा अधिकार प्राप्त हो गया तो वह मुझ से कौन-सी चीज की माँग न करेगा ? ठीक है, मेदेआ की भाँति मन ही मन कहूँगी “इन सभी सकटों के बीच मेरा निजत्व तो मेरे पास है ही !”

उसे विश्वास था कि जुलिये के मन में कुल की उच्चता के लिये कोई आदर नहीं है। इससे भी बुरी बात यह है कि शायद उसके मन में मेरे लिये कोई प्रेम नहीं !

उन भयानक सन्देह के क्षणों में स्त्री-मुलभ अभिमान के विचार प्रबल हो जाते। मातिल्द अधीर होकर कहने लगती, मेरी जैसी लड़की के भाग्य में हर चीज असाधारण ही होने को है। तब बचपन से ही उसके भीतर कूट-कूटकर भरा हुआ स्वाभिमान उसके शील के विरुद्ध सक्रिय हो उठता। ठीक इसी स्थिति में जुलिये के प्रस्ताव ने समय से पूर्व ही प्रश्न को तात्कालिक बना दिया। (ऐसे चरित्र सौभाग्यवश बहुत कम ही होते हैं।)

उस दिन रात को बहुत देर से जुलिये दुष्टतापूर्वक एक बहुत ही भारी सन्दूक मजदूर के सिर पर रखवाकर नीचे ले गया। इस काम के लिये उसने उस नौकर को ही बुलाया जो मा० द ला मोल की नौकरानी को रिझाने में लगा था। उसने मन ही मन कहा कि हो सकता है इस चाल का कोई परिणाम न निकले, किन्तु यदि यह सफल हुई तो वह सोचेगी कि मैं चला गया हूँ। अपनी इस चालाकी से बहुत ही प्रसन्न होकर वह सो गया। मातिल्द की उस रात पलक भी न लगी।

अगले दिन जुलिये बहुत सबेरे ही किसी के उठने के पहले ही घर से चला गया, पर आठ बजते-बजते लौट आया।

उसने मुद्रिकल से पुस्तकालय में प्रवेश किया होगा कि माद० द ला मोल दरवाजे पर दिखाई दी। उसने अपना जवाब उनके हाथों में पकड़ा दिया। उसने उनसे बातचीत करनी चाही, कम से कम इससे

अधिक सुविधा-जनक अवसर मिलना कठिन था । पर माद० द ला मोल ने उसकी कोई बात न सुनी और वह पत्र लेकर गायब हो गई । जुलिये इससे प्रसन्न ही हुआ, उसे समझ में नहीं आ रहा था कि उनसे क्या कहेगा ।

वह सोचने लगा कि यदि ये सब काउण्ट नौबैर के साथ तय करके रचा जाने वाला खेल नहीं है तो फिर यही हो सकता है कि मेरी बेरुखी ने इस बड़े घर की लड़की के मन में कोई विचित्र प्रकार का प्रेम जाग्रत किया है । यदि उस बड़ी भारी कपड़े की गुड़िया के प्रति मैं अपने मन में कोई स्नेह उत्पन्न हो जाने दूँ तो मुझसे बड़ा मूर्ख और कोई न होगा । इस विचार ने उसे पहले से भी अधिक रूखा और सावधान बना दिया ।

वह सोचता रहा कि जो युद्ध अभी शुरू होने वाला है उसमें परिवार की उच्चता का गर्व मेरे-उसके बीच युद्धोपयोगी टेकरी का काम करेगा । हम दोनों को इसी स्थल पर अपने-अपने पैतरे दिखाने होंगे । मैंने पेरिस में ठहरे रहकर बड़ी भूल कर दी । अपना जाना टाल देने से मेरी स्थिति कुछ कमजोर पड़ गयी है और अगर यह सब निरी चाल है तो मेरे लिए खतरा भी हो सकता है । मेरे चले जाने में क्या डर था ? यदि वे लोग मुझे मूर्ख बनाने का जाल रच रहे हैं तो उससे वे ही मूर्ख बनते । और यदि उसका मेरे प्रति यह स्नेह किसी प्रकार सच्चा है तो मेरी अनुपस्थिति से वह सौ गुना और बढ़ता ।

माद० द ला मोल के पत्र से जुलिये के आत्माभिमान को इतना सन्तोष मिला था कि इन घटनाओं के ऊपर प्रसन्न होने में वह वहाँ से चले जाने की आवश्यकता पर गभीरतापूर्वक विचार करना बिलकुल भूल गया था ।

अपनी भूलों के प्रति बड़े तीव्र रूप में सजग होना उसके चरित्र की बड़ी घातक विशेषता थी । अपनी इस भूल के कारण वह बहुत ही दुखी हो गया । उसने इस हल्की-सी पराजय से पहले की अनोखी विजय के बारे में सोचना भी छोड़ दिया । तभी करीब नौ बजे माद० द ला

मोल फिर पुस्तकालय के द्वार की देहली पर प्रगट हुई और उसके सामने एक पत्र फेंककर जल्दी से चली गई ।

लगता है कि यह पत्रों के रूप में उपन्यास बनने वाला है, उसने पत्र को उठाते-उठाते कहा । शत्रु एक चाल चल रहा है । मैं अपनी ओर से बेरुखी और सदाचारिता से काम लूँगा ।

पत्र में एक ऐसे दर्पपूर्ण स्वर में निश्चित उत्तर माँगा गया था जिसने उसकी आन्तरिक आनन्द-वृत्ति के लिए ई धन का काम किया । वह अपने उत्तर में दो पत्रों तक उन सब लोगों को रहस्य में डाले रखने का आनन्द उठाता रहा जो उसे मूर्ख बनाने के लिए जाल रच रहे थे । अन्त में उसने अगले दिन सबेरे पेरिस से प्रस्थान करने की घोषणा भी कर दी ।

पत्र लिखने के बाद उसने सोचा कि इसे देने के लिये बगीचा ही ठीक रहेगा और वह बाहर निकल आया । वह माद० द ला मोल के कमरे की खिड़की की ओर ऊपर देखने लगा । उनका कमरा पहली मजिल पर था, पर बीच में एक बड़ी-मी नीची छत वाली मजिल भी थी । पहली मजिल की छत इतनी ऊँची थी कि जब जुलिये पत्र हाथ में लेकर नीबू के पेड़ों वाले रास्ते में चला तो माद० द ला मोल की खिड़की से दिखाई न पड़ता था । सुन्दर ढंग से छूँटे हुये नीबू के पेड़ों से एक मेहराब सी बन गयी थी जो ऊपर से दिखाई पड़ने में बाधक होती थी । क्या ! जुलिये ने मन ही मन क्रुद्ध भाव से कहा । एक और मूर्खता ! यदि ये लोग मेरा मञ्चाक बना रहे हैं तो पत्र लेकर इस भाँति दिखाई पड़ना शत्रु की चाल में फँस जाने के बराबर है ।

नौबेर का कमरा अपनी बहिन के कमरे के ठीक ऊपर ही था । और नीबू के पेड़ों की डालियों से बनी हुई गली से जुलिये के बाहर निकलते ही काउण्ट और उसके मित्र उसकी सारी गतिविधि देख सकते थे ।

माद० द ला मोल खिड़की के काँच के पीछे दिखाई पड़ी । जुलिये ने अपना पत्र उन्हे दिखाया तो उन्होंने अपना सिर हिला दिया । तुरन्त

जुलिये अपने कमरे की ओर चल पड़ा। सीढ़ियों पर उसकी सुन्दरी मातिल्द से भेट हुई जिसने बहुत ही सहज भाव से और हँसती हुई आँखों से उनके साथ में पत्र छीन लिया।

वेचारी मादाम रेनाल को छ महीने की घनिष्ठता के बाद भी जब मेरा पत्र मिला था तो किनना प्रेम उनकी आँखों में था। जुलिये सोचने लगा। मुझे विश्वास है कि शायद एक बार भी उन्होंने मुझे ऐसी हँसती हुई आँखों से न देखा होगा।

अपनी बाकी प्रतिक्रिया उसने इतनी स्पष्टता से समझने का यत्न नहीं किया। क्या वह अपने उद्देश्यों में किसी हल्की वस्तु के कारण लज्जित है? पर वह आगे सोचने लगा कि उनके सबेरे के वस्त्रों की सुन्दरता में, उनके रूप के सामान्य सौन्दर्य में भी कितना अन्तर है। कोई भी सुसचिसम्पन्न व्यक्ति मादाम द ला मोल को तीस फीट की दूरी से देखकर भी एक ही नज़र में यह बता सकता है कि वह समाज में कौन से स्तर की है। कम से कम यह तो एक निश्चित गुण उनमें है ही।

जुलिये मन ही मन इस भाँति उपहाम-सा करना रहा, परन्तु अपने विचारों में छिपी हुई सारी बातों को स्वीकार नहीं किया। मादाम द रेनाल के आगे उसके कारण कोई मार्कि क्वाजन्वा परित्याग करने को न था। वहाँ उस नीच आदमी उपजिलाधीश म० शार्को को छोड़कर, जो वास्तविक मौगिरो परिवार के अभाव में अपने आप को म० द मौगिरो कहता था, कोई और उसका प्रतिद्वन्द्वी न था।

पाँच बजे जुलिये को तीसरा पत्र मिला जो पुस्तकालय के द्वार में से उसके पास फेंका गया था। मादाम द ला मोल इस बार भी तुरन्त ही चली गई थी। कैसा लिखने का खब्ब है, जबकि बातचीत करना इतना आसान है, उसने हँसकर मन ही मन कहा। इतना तो स्पष्ट है कि शत्रु मेरे पत्र, और बहुत से पत्र, प्राप्त करने को व्यग्र है। उसे पत्र खोलने की कोई जल्दी न थी, वह सोचता था कि कुछ और सुन्दर-सुन्दर से वाक्य होंगे। पर जब उसने उसे पढ़ा तो उसका चेहरा पीला पड़ गया उसमें

केवल आठ पक्तियाँ थीं ।

“मैं तुम से बात करना चाहती हूँ, आज ही रात को जैसे ही एक बजे, तुम बाग में आ जाना । दीवार के पास माली की लम्बी सीढ़ी पड़ी हुई है । उसे मेरी खिड़की के सहारे टिकाकर मेरे कमरे में ऊपर चढ़ आना । रात में चाँदनी तो होगी, पर कोई हर्ज नहीं ।”

: १५ :

क्या यह कोई जाल है ?

अब तो मामला गंभीर होता जा रहा है, जुलिये ने सोचा और थोड़ा थोड़ा स्पष्ट भी। क्या ! यह सुन्दर और सभ्रांत महिला मुझे पुस्तकालय । सी स्वतन्त्रता से बात कर सकती है कि, भगवान भला करे, जिसकी कोई सीमा नहीं। मार्कि वहाँ इस लिए नहीं आते कि मैं कही उन्हें हिसाब-किताब न दिखाने लगूँ। क्या ! म० द ला मोल और काउन्ट नौबैर ही यहाँ आते हैं, और वे दोनों लगभग सारे दिन बाहर रहते हैं। उनके लौटने के समय का ध्यान रखना आसान है। किन्तु तो भी वह सुन्दर मातिल्द, जिसका पाणिग्रहण किसी सिंहासनासीन राजा के लिये भी सौभाग्य की बात होगी, चाहती है कि मैं एक भीषण दुःसाहसिकता का काम कर डालूँ !

यह तो स्पष्ट है बरबाद करना चाहते हैं, या कम से कम मुझे मूर्ख बनाना चाहते हैं। सबसे पहले तो उन्होंने मुझे पत्रों द्वारा बरबाद करने की कोशिश की, पर वे बहुत सयत सिद्ध हुए। ठीक है, अब उन्हें मेरा कोई ऐसा काम चाहिये जो दिन की तरह साफ हो। ये सब महापुरुष या तो मुझे एकदम बुद्ध समझते हैं या बेहद अहकारी। गोली मारो ! ऐसी चमकती हुई चाँदनी में इस तरह की सीढ़ी पर घरती से कोई पच्चीस फीट की ऊँचाई पर पहली मंजिल तक चढ़ कर जाना।

पास पड़ोस के घरों से भी लोगो को मुझे देखने में कोई कटिनाई न होगी। कितना सुन्दर लगूँगा मैं उस सीढ़ी पर ! जुलिये अपने कमरे में

पहुँचकर अपने सटूक में सामान रखने लगा। बीच-बीच में वह सीटी भी बजाता जाता था। उसने पत्र का उत्तर दिये बिना ही चले जाने का निश्चय कर लिया था।

किन्तु इस बुद्धिमानी के निश्चय से उसे शांति तनिक भी न मिली थी। सटूक बन्द हो जाने के बाद एकाएक उसे सूझा कि यदि सयोगवश मातिल्द ने सच्चे हृदय से यह लिखा होगा तो फिर उसे मैं घोर कायर जान पड़ूँगा। नीच कुल का तो मैं हूँ ही। अपने कार्यों में मुझे आवश्यकता होते ही किसी छत्र-रूप के बिना श्रेष्ठतम खरे गुणों का प्रदर्शन करना चाहिये; मेरे कार्य ऐसे हों जो अपनी प्रशंसा अपने आप करें।

वह कोई पंद्रह मिनट तक इस बात पर विचार करता रहा। इस बात से इन्कार करने से क्या लाभ? उसने अपने आप से कहा। वह मुझे कायर ही समझेगी। मैं न केवल उच्च समाज की प्रमुख स्त्री से हाथ धो बैठूँगा, बल्कि एक ड्यूक के बेटे और स्वयं भावी ड्यूक म० क्रवाजन्वा को अपने कारण परित्यक्त होते देखने के परम आनन्द से भी वंचित हो जाऊँगा। वह कैसा सुन्दर नौजवान है, जिसमें वे सब गुण मौजूद हैं जो मुझ में नहीं हैं... प्रत्युत्पन्न बुद्धि, उच्चकुल, धन-संपत्ति...

इसका मुझे जिन्दगी भर पछतावा रहेगा। मातिल्द के कारण नहीं, प्रेमिकाओं की क्या कमी है, किन्तु जैसा बूढ़ा डौन डीगो कहता है, 'सम्मान केवल एक ही है।' सम्मान के कारण उत्पन्न होने वाले पहले ही सकट से मैं पीछे हटा जा रहा हूँ, इतना तो बिलकुल ही स्पष्ट है। मा० द बोव्वाज़ि के साथ वह द्वन्द्व-युद्ध तो बस मजाक ही था। यह एकदम अलग बात है। सम्भव है कोई नौकर मुझे पास से गोली मार दे, पर उसमें इतना खतरा नहीं। ऐसे तो मैं अपना सम्मान गँवा बैठूँगा।

“मामला गम्भीर हुआ जा रहा है, उस्ताद,” उसने गैस्करन लहजे और आनन्द के भाव से कहा। “सम्मान दाँव पर लगा है। मेरे जैसे व्यक्ति को जिसे भाग्य ने इतना हीन बनाया है, फिर कभी ऐसा अवसर

नहीं मिलेगा। स्त्रियों के विषय में मुझे और बहुत सफलताएँ मिलेंगी, पर वे सब छोटी घटनाएँ ही होंगी।”

वह बहुत देर तक इसी भाँति सोचता हुआ अपने कमरे में तेज़ी से इधर से उधर टहलता रहा। बीच-बीच में वह एकाएक रुक जाता। उसके कमरे में कार्डिनल रिश्लिय की सगमरमर की बहुत ही सुन्दर मूर्ति रक्खी थी, उसकी आँखें अपने आप ही उसकी ओर खिंच गईं। उसे लगा कि मूर्ति कठोर भाव से उसकी ओर देख रही है, मानो एक फ्राँसीसी में स्वाभाविक साहसिकता की इतनी कमी के लिये उसकी भर्त्सना कर रही हो। किन्तु हे महापुरुष, क्या आपके युग में मैं एक पल के लिये भी हिचकचाना ?

अन्त में जुलिये ने सोचा, मान भी लिया जाय कि यह सारा का सारा जाल है। पर यह तो बहुत ही भयंकर जाल है और किसी नवयुवती के लिये बहुत ही बदनामी का कारण हो सकता है। वे लोग जानते हैं कि मैं छुा रहने वाला आदमी नहीं हूँ। इसलिये उन्हें मेरी हत्या ही करनी पड़ेगी। १५७४ में, बोनिफास द ला मोल के ज़माने में, यह सब बहुत ठीक था, पर आज के ला मोल कभी ऐसा साहस नहीं कर सकते। ये लोग अब वैसे नहीं रहे। माद० द ला मोल ने इतने लोग ईर्ष्या करते हैं, कल ही चार सौ ड्राइंग रूम उनकी लज्जा की कहानी से, और वह भी कितनी प्रसन्नता के साथ, गूँजते हुए सुनाई पड़ेगे।

नौकर-चाकर तक इस बात की चर्चा करने लगे हैं कि मेरे ऊपर विशेष कृपा-दृष्टि है। मैं जानता हूँ, मैंने अपने कानों उनकी बातें सुनी हैं।

किन्तु दूसरी ओर उसके पत्र !.. शायद वे सोचते हों कि मैंने उन्हें अपने पास रख छोड़ा है, अचानक ही कमरे में आकर मुझे पकड़ लेने से उनके हाथ पड़ जायेंगे। मुझे दो, तीन, चार, कौन जानता है कितने लोगों का सामना करना पड़ेगा ? पर वे सब आदमी उन्हें मिलेंगे कहाँ से ? पेरिस में ऐसे भाड़े के टट्टू मिलेंगे कहाँ जो जवान

काबू में रख सके ? वे सब कानून से डरते हैं" समझ गया ! केलुस, लुज, क़वाजन्वा आदि ही रहेंगे । अवसर और मेरी दुर्गति के तमाशे का आकर्षण रहेगा ही ! जनाब सेक्रेटरी साहब, आबेलार की दुर्गति की कुछ याद नहीं !

अच्छी बात है, जो भी हो ! आप लोगो को भी तो यो ही छुटकारा न मिलेगा । मैं फार्सालिया में सीजर के सैनिकों की भाँति आपके चेहरो पर प्रहार करूँगा । जहाँ तक पत्रों का सवाल है, मैं उन्हें सुरक्षित स्थान में रख सकता हूँ ।

जुलिये ने अन्तिम दोनों पत्रों की नकलें की और उन्हें पुस्तकालय में वोल्तेर की सुन्दर-सी जिल्द में भीतर छिपा दिया । असली पत्रों को वह स्वयं डाक से भेजने के लिये चला गया ।

लौटने पर उसने आश्चर्य और विस्मय से कहा : "अब मैं किस पागलपन में बहा जा रहा हूँ ?" पिछले पंद्रह मिनट से उसने इस बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार ही न किया था कि रात को उसे क्या करना होगा ।

किन्तु यदि मैंने इससे बचने की कोशिश की तो बाद में आजीवन मैं अपने आप से घृणा करता रहूँगा । जिन्दगी भर यह मामला सन्देह का विषय बना रहेगा और मेरे लिये ऐसे सन्देह से बढ़कर आस दूसरा नहीं । आमादा के प्रेमी के मामले में मेरी यही हालत नहीं हुई थी ? शायद खुल्लमखुल्ला अपराध करके उसके लिये अपने आपको क्षमा करना मेरे लिये अधिक आसान है, एक बार स्वीकार कर लेने के बाद मैं उसे बिलकुल भूल सकता हूँ ।

अरे ! यह बड़े सौभाग्य की ही बात है कि इतने भीड़-भडाके में से मुझे ही एक ऐसे व्यक्ति के प्रतिद्वन्द्वी बनने का अवसर मिल रहा है जो फ्रांस के एक उच्चतम वंश का है । फिर भी मैं लापरवाही से अपने आपको उससे हीन सिद्ध कर दूँ । आखिरकार नहीं जाना कायरता तो है ही । "इस एक शब्द ने सब निश्चित कर दिया," जुलिये ने उछल

कर खड़े होते हुये कहा । “इसके अतिरिक्त वह है कितनी मुन्दर ।”

यदि इसमे कोई छल-कपट नहीं है तो यह मेरे लिये कितनी जोखिम उठा रही है ।... यदि केवल मजाक ही है तो, सज्जनो, इसका भार मेरे ऊपर है कि इसे सच्चा कर दिखाऊँ । यही मैं करूँगा ।

किन्तु यदि कमरे मे प्रवेश करते ही वे मुझे पकड़ कर मेरे हाथ-पैर बाँध ले तो ? हो सकता है कि उन्होंने कोई ऐसा फन्दा ही लगा रक्खा हो !

यह तो द्वन्द्व-युद्ध है, वह हँसते-हँसते मन ही मन कहने लगा, इसमें हर वार का जवाबी वार भी है ही, जैसा मेरे तलवार के शिक्षक कहा करते है, किन्तु भगवान् जब यह निर्णय करते हैं कि अन्त आ पहुँचा, तो वह दो मे से एक को अपना बचाव भूल जाने के लिये बाध्य कर देते हैं । इसके अतिरिक्त उन लोगो के उत्तर के लिये यह चीज भी तो मेरे पास है । उसने अपनी जेबी पिस्तौले निकाल ली, और देखने लगा कि पूरी भरी तो हैं ।

अभी कई घण्टे की प्रतीक्षा बाकी थी । किसी तरह समय बिताने के लिये जुलियें फूके को पत्र लिखने लगा ।

“मेरे दोस्त, साथ के पत्र को कोई दुर्घटना होने पर ही खोलना, तभी जब तुम सुनो कि मेरे साथ कोई अजीब घटना घट गई है । उस हालत मे, जो पांडुलिपि मे भेज रहा हूँ, उसमें से नाम काट कर और उसकी आठ प्रतिलिपियाँ बनाकर मासेय, बोदों, लियो, ब्रुमेल्स इत्यादि के अखबारो मे भेज देना । दस दिन बाद इस पांडुलिपि को छपा कर उसकी पहली प्रति मार्कि द ला मोल को भेजना और उसके पन्द्रह दिन बाद बाकी प्रतियो को वेरियेर की सड़को पर बँटवा देना ।”

अपने कार्य का औचित्य प्रगट करने वाले इस सक्षिप्त से स्मृति-पत्र मे, जो वर्णनात्मक ढंग से लिखा गया था और जिसे दुर्घटना की स्थिति के सिवाय फूके को न खोलने का आदेश था, जुलियें ने यथासम्भव इस ढंग से सारी बात लिखी थी कि माद० द ला मोल के ऊपर कम से कम आँच आये, किन्तु साथ ही उसने अपनी स्थिति भी बहुत सुनिश्चित

शब्दों में प्रगट कर दी थी ।

जुलिये अपने छोटे-से पैकेट पर मोहर ही लगा रहा था कि भोजन की घण्टी बजी । उसका दिल जोरों से धडक उठा । अभी-अभी रची हुई कहानी में डूबी होने के कारण उसकी कल्पना केवल दुखभरी भावनाओं से ही पूरी तरह आक्रान्त थी । वह मन ही मन नौकरो द्वारा पकड़े जाने, गला दबाये जाने और मुँह में कपड़ा ठूँसकर तहखाने में ले जाये जाने की कल्पना करता रहा था । वहाँ उनमें से कोई एक उसकी निगरानी करता रहेगा और यदि उच्च परिवार के सम्मान के लिये किसी दुखद अन्त की आवश्यकता पड़ी तो किसी ऐसे विष का सहारा आसानी से लिया जा सकेगा जिसका कोई चिह्न तक नहीं दिखाई पड़ सके । फिर बाद में यह कहकर कि उसकी मृत्यु किसी बीमारी से हुई है, उसके मृत शरीर को उसके कमरे में पहुँचा दिया जायगा ।

किसी नाटककार की भाँति, अपनी ही कहानी से विचलित होकर जुलिये ने जब भोजन-गृह में प्रवेश किया तो वह सचमुच कुछ भयभीत-सा था । वह पूरी बढ़िया पहने नौकरो को देखकर उनके चेहरे की आकृति का अध्ययन करने लगा । उनमें से कौन लोग आज के कार्य के लिये चुने गये होंगे ? वह आश्चर्य से सोचने लगा । इस परिवार में हेनरी तृतीय के राजदरबार की स्मृतियाँ इतनी उपस्थित रहती हैं, इतनी बार याद की जाती हैं कि किसी प्रकार के सकट का अनुभव होते ही ये लोग अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे । वह माद० द ला मोल की ओर देखने लगा, मानो उनकी आँखों में पढ़ना चाहता हो कि उनका परिवार क्या योजना बना रहा है । उनका मुख पीला था और उसे लगा कि उनके चेहरे पर कोई बिलकुल मध्ययुगीन-सा भाव है । ऐसी गरिमा कभी उसने उनके मुख पर न देखी थी । वह सचमुच सुन्दर और महिमामयी लग रही थी । उसने मन ही मन कहा कि इनके चेहरे का यह पीलापन भी इनकी योजना की गहराई का सूचक है ।

भोजन के बाद वह कुछ देर तक बाग में अटका रहा, पर कोई लाभ न हुआ। माद० द ला मोल वहाँ नहीं आयी। उस समय वह यदि उनसे बातचीत कर पाता तो उसके हृदय से एक भारी बोझ हट जाता।

क्यों न इस बात को स्वीकार कर लिया जाय ? वह भयभीत है। मन ही मन निश्चय कर चुकने के कारण इस भावना को उसने किसी लज्जा के बिना ही स्वीकार कर लिया। यदि कार्य के अवसर पर मुझ में आवश्यक साहस मौजूद रहा तो इस बात से क्या आता-जाता है कि मैं इस समय क्या अनुभव कर रहा हूँ ? वह स्थिति का अनुमान करने और सीढ़ी का वजन जाँचने के लिये चला गया।

लगता है मेरे भाग्य में इसी साधन का उपयोग बड़ा है। वेरियर की भाँति यहाँ भी। उसने हँसकर सोचा। किन्तु कितना अन्तर है। उसने लम्बी साँस ली। उस समय मेरे मन में उस व्यक्ति के प्रति कोई सन्देह नहीं था जिसके लिये मैं वह सकट उठा रहा था। और फिर सकट में भी कितना अन्तर था।

म० द रेनाल के बगीचे में मारे जाने में किसी बदनामी की आशका न थी। वहाँ मेरी मृत्यु को रहस्यमय सिद्ध करना बहुत आसान था। यहाँ पर द शोन भवन, द वेलुस भवन, द रे भवन इत्यादि में, सक्षेप में हर जगह, लोग-बाग कैसी-कैसी घृणित कहानियाँ न गढ़ेंगे। भावी पीढ़ियाँ वर्षों तक मुझे राक्षस समझती रहेगी।

या शायद दो-तीन वर्ष तक, उसने अपने ऊपर हँसते हुए कहा। किन्तु इस विचार से वह विचलित हो उठा। मेरे कार्य को उचित ठहराने वाला कौन होगा ? मेरी मृत्यु के बाद यदि फूँके उस पुस्तिका को प्रकाशित भी कर दे तो उससे बदनामी ही और होगी। लोग कहेंगे कि देखो ! एक परिवार में इसे आश्रय मिला और उसके बदले में, वहाँ मिलने वाली हर तरह की सुविधा और कृपा के पुरस्कार में इसने वहाँ होने वाली घटनाओं को लेकर पुस्तिका छपा दी। एक स्त्री के सम्मान

पर प्रहार कर डाला । ओफ ! इससे तो मूर्ख ही बनूँ । हजार बार बही
अच्छा है !

वह शाम बड़े त्रास में बीती ।

: १६ :

रात को एक बजे

वह फूके को अपने पिछले आदेशों को रद्द कर देने के लिये निग्वने ही जा रहा था कि घड़ी में ग्यारह बजे । उसने कुछ शोर के साथ अपने दरवाजे के ताले में चाबी को घुमाया, मानो वह भीतर से ताला बन्द कर रहा हो । उसके बाद वह चुपके से यह देखने के लिये बाहर निकल आया कि क्या हलचल है, विशेषकर चौथी मजिल पर जहाँ नौकर रहते हैं, वहाँ क्या हो रहा है । कोई असाधारण बान उसे दिखाई न पड़ी । मा० द ला मोल की एक नौकरानी ने दावत दी थी और सारे नौकर इस भाग्य पीने-पिलाने में लगे थे । जुलिये सोचने लगा कि आज रात के आभ्यास के लिये चुने जाने वाले लोग इस भाँति हँसते हुए नहीं दिखाई पड़ेंगे, वे कहीं अधिक गभीर होते ।

गर्न में वह बगीचे के एक अघेरे-से कोने में चला गया । यदि इन लोगों का इरादा अपनी योजना को घर के नौकरो से भी छिपाने का है तो मेरे ऊपर चुपके से हमला करने के लिये तैनात आदमी बगीचे की दीवार लाँघकर ही आयेगा ।

यदि मा० द क्रवाजन्वा ठंडे दिमाग और सहज बुद्धि से इस योजना का संचालन कर रहे हैं तो वे यह अवश्य अनुभव करेंगे कि उस बेचारी युवती के कमरे में प्रवेश करने से पहले ही मुझे पकड़ लेना कहीं अधिक सम्मानजनक होगा ।

उसने एकदम सैनिक सावधानी के साथ पूरी स्थिति का पता लगाते

की कोशिश की। उसने सोचा कि मेरा सम्मान दाँव पर लगा है। यदि मुझ से कोई भूल होगी तो मैं यह कहकर अपने आपको क्षमा नहीं कर सकूँगा कि मैंने यह बात सोची न थी।

मौसम एकदम शान्त और खुला हुआ था। कोई ग्यारह बजे के लगभग चाँद उग आया था और साढ़े बारह पर तो बगीचे की ओर मकान का सारा हिस्सा पूरी तरह आलोकित हो उठा था।

यह लडकी बिलकुल पागल है, जुलिये सोचने लगा। एक बजा तो काउन्ट नौबैर की खिडकी में अभी रोशनी थी। जुलिये कभी अपने जीवन में इतना भयभीत न हुआ था। उसे इस कार्य के केवल सकट ही दीख रहे थे, उत्साह उसके मन में तनिक भी न था।

वह उस बड़ी भारी सीढ़ी को लेने के लिये चल पड़ा, फिर पाँच मिनट तक इस प्रतीक्षा में रहा कि अब भी मातिल्द अपने आदेश को रद कर दे। एक बजकर पाँच मिनट पर उसने सीढ़ी को उसकी खिडकी के सहारे टिका दिया। फिर भी कोई आक्रमण न हुआ तो विस्मित-सा चुपचाप पिस्तौल हाथ में लिये ऊपर चढ़ने लगा। पास पहुँचते ही खिडकी बहुत ही धीमे से खुल गई।

“तो तुम आ गये,” मातिल्द ने उससे भाव-विह्वल स्वर में कहा।
“मैं घण्टे भर से तुम्हारी गतिविधि को देख रही हूँ।”

जुलिये बड़ा सकुचित अनुभव करने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कैसा व्यवहार करे, प्रेम तो उसके हृदय में बिलकुल था ही नहीं। अपनी घबराहट में साहसिक होने के विचार से उसने मातिल्द को आलिङ्गन करने का प्रयत्न किया।

“नहीं, नहीं!” उसने जुलिये को झटके-से अपने से दूर करते हुए कहा।

इस भाँति अलग किये जाने पर एक प्रकार की मुक्ति-सी अनुभव करके, उसने अपने चारों ओर नज़र डाली। चाँदनी इतनी निर्मल थी कि उसके कारण माद० द ला मोल के कमरे में पड़ने वाली छायाएँ

काफी काली थी। हो सकता है कि वहाँ बहुत से लोग छिपे हो जो मुझे दीख नहीं रहे हैं।

“अपने कोट की बगल वाली जेब में तुमने क्या छिपा रक्खा है ?” मातिल्द ने बातचीत का कोई विषय पाने से प्रसन्न होकर कहा। वह विचित्र रूप से सन्नस्त थी। अच्छे परिवार की नवयुवती के लिये सर्वथा स्वाभाविक सकोच और आत्मगोपन के भाव फिर से प्रबल हो उठे थे और उसे कष्ट दे रहे थे।

“मेरे पास हर तरह के हथियार और पिस्तौलें हैं,” जुलिये ने भी कुछ कहने का अवसर पाने से कुछ आश्वस्त होकर उत्तर दिया।

“सीढ़ी तो हटा दो,” मातिल्द ने कहा।

“सीढ़ी बहुत ही बड़ी है, गिरने से कहीं नीचे ड्राइंग रूम अथवा बिचली मजिल की खिडकियाँ न टूट जायें।”

“खिडकियाँ टूटना तो ठीक नहीं” मातिल्द ने साधारण वार्तालाप का स्वर अपनाने का व्यर्थ प्रयत्न करते हुए कहा।

“सीढ़ी को रस्सी से बाँधकर नीचे लटकाया जा सकता है। मेरे कमरे में हमेशा बहुत-सी रस्सियाँ रहती हैं।”

यही है प्रेम करने वाली स्त्री ! जुलिये ने सोचा। कैसे इसे यह कहने का साहस होता है कि प्रेम करती हूँ ? इसकी ये सब सावधानियाँ और सहज बुद्धि इस बात को स्पष्ट प्रकट करती हैं कि मैंने मूर्खतावश ही यह सोच रक्खा था कि मैं म० द क्रवाजन्वा के ऊपर विजय प्राप्त कर रहा हूँ ; वास्तव में मैं उनका उत्तराधिकारी बन रहा हूँ। पर इसमें आता-जाता भी क्या है ? मैं भी तो कोई उससे प्रेम नहीं करता। मार्कि के ऊपर इस मानी में तो मेरी जीत है ही कि अपना कोई उत्तराधिकारी होने मात्र से ही वह बहुत क्रुद्ध होगे, और इससे तो उनके क्रोध का कोई ठिकाना ही न रहेगा कि वह उत्तराधिकारी मैं हूँ। कल शाम को काफी तोर्तोंनी में वह कैसे घमण्ड के साथ मेरी ओर देख रहे थे जैसे मुझे पहचानते ही न हो*। बाद में जब बच न सके तो कितनी घृष्टता

के साथ उन्होंने मेरा अभिशदन किया था। जुलिये ने सीढ़ी के सबसे ऊपर वाले डंडे में रस्सी बाँध दी थी और अब वह उसे धीरे-धीरे नीचे लटका रहा था। वह झरोखे में काफी आगे को झुक गया था ताकि सीढ़ी खिड़कियों से न टकराये। वह सोचने लगा कि यदि मातिल्द के कमरे में कोई सचमुच छिपा हो तो मुझे मारने का यह अवसर बहुत अच्छा है। पर सब जगह गहरी निस्तब्धता छाई हुई थी।

सीढ़ी जमीन पर जा टिकी। जुलिये ने उसे दीवार के सहारे उगे पौधों के बीच गिरा दिया।

“मेरी माँ को” मातिल्द ने कहा, “कल जब अपने सुन्दर पौधे कुचले हुए दिखाई पड़ेंगे तो वह क्या कहेगी। यह रस्सी भी नीचे फेंक दो,” उसने एकदम शान्त स्वर में कहा। “यदि किसी ने झरोखे से रस्सी लटकी हुई देखी तो इसका बहाना बनाना कठिन हो जायेगा।”

“और मैं जाऊँगा कैसे ?” जुलिये ने नौकरानी की देहाती बोली की नकल करते हुए कहा।

“दरवाजे से,” मातिल्द इस सूझ से प्रसन्न होकर बोली। ओफ ! यह व्यक्ति मेरे प्रेम के लिये कितना उपयुक्त है, उसने सोचा। जुलिये ने रस्सी को भी गिरा दिया। तभी मातिल्द ने कसकर उसकी बाँह पकड़ ली। पल भर को जुलिये को लगा जैसे किसी शत्रु ने उसे दबोच लिया हो और वह अपनी कटार निकाल कर भटके के साथ घूमा। मातिल्द को लगा था कि कहीं कोई खिड़की खुली। वे दोनों निश्चल साँस रोके खड़े रहे। चमकती हुई खिली चाँदनी उन पर बरस रही थी। कोई आवाज फिर सुनाई न पड़ी तो उनकी आशंका जाती रही।

अब नया संकोच शुरू हुआ, जो दोनों ओर ही बहुत अधिक था। जुलिये आश्वस्त हो चुका था कि दरवाजे की कुण्डी-चटखनी सब बन्द हैं। उसकी बहुत इच्छा हुई कि पलंग के नीचे भी देख ले, पर साहस न हुआ—एक-दो नौकर वहाँ भी छिप सकते हैं।

मातिल्द तीव्र संकोच की यातना में डूब गई। वह अपनी स्थिति

सुख और स्याह

की कल्पना करके घबरा उठी थी ।

“मेरे पत्रों का तुमने क्या किया ?” उसने आखिरकार पूछा ।

यदि वे सब सज्जनवृन्द सुन रहे हो तो उनकी सारी योजनाओं को बेकार करना तथा लडाई से बचने का कैसा उत्तम अवसर है ! जुलिये ने सोचा ।

“पहला तो एक बड़ी भारी प्रोटेस्टेंट बाईबल में छिपा है,” उसने कहा, “जिसे पिछली रान की डाक यहाँ से बहुत दूर लिये जा रही है ।”

यह बात उसने बहुत साफ-साफ और इस ढंग से कही कि यदि दो बड़ी-बड़ी महोगनी की आलमारियों में भी जिन्हे देखने का उसे साहस न हुआ था, कोई छिपा हो तो भली-भाँति सुन ले ।

“बाकी दोनों भी डाक में ही हैं और उमी रास्ते जा रहे हैं ।”

“हे भगवान् ! पर इन सब सावधानियों की क्या जरूरत थी ?” मातिल्द ने विस्मित होकर पूछा ।

मुझे भूख बोजने की क्या आवश्यकता है ? जुलिये ने सोचा, और उसने अपने सारे सन्देह उमके आगे स्वीकार कर लिये ।

“तो यह कारण है तुम्हारे पत्रों की स्नेहहीनता का, प्रिय !” मातिल्द ने स्नेह से भी अधिक तीव्र उत्तेजना के स्वर में कहा ।

जुलिये को यह मूक्षम अन्तर न दीख सका । उसके “प्रिय” शब्द के व्यवहार से उसका होश-हवास जाता रहा । कम से कम उसके सारे संदेह तो गायब हो ही गये । उमने साहस करके इस लडकी को अपनी बाहों में कमकर भर लिया । कितनी सुन्दर थी वह और उमके भीतर कितनी आदर की भावना जाग्रत करती थी ! इस बार उसको आधा ही दूर हटाया गया ।

उसने अपनी स्मरणशक्ति का सहारा लिया, जैसा बहुत दिन पहले उसने बजासो में अमादा बिनो के साथ किया था और ‘नूवेल एल्बा’ में बहुत-से सुन्दर-सुन्दर वाक्य कह डाले ।

“तुम्हारे भीतर एक पुरुष का हृदय है, प्रियतम,” जुलिये के शब्दों

की ओर बहुत अधिक ध्यान दिये बिना ही वह बोली, "मैं स्वीकार करती हूँ कि मैं तुम्हारे साहस की परीक्षा ले रही थी। पहले सन्देह और फिर दृढनिश्चय से तुम, मैंने सोचा था उससे भी कहीं अधिक निर्भीक सिद्ध होते हो।" मातिल्द प्रयत्न करके अपने स्वर को आत्मीय बना रही थी। स्पष्ट ही अपने शब्दों की अपेक्षा बातचीत के इस अपरिचित ढंग की ओर उसका कहीं अधिक ध्यान था।

इस सर्वथा स्नेहशून्य प्रेमालाप से जुलिये को पहले क्षण के बाद कोई आनन्द न मिला। वह अपने मन में सुख के इस अभाव पर चकित था। अन्त में उसने विवेक का सहारा लिया। यह अत्यन्त ही गर्वीली लडकी, जो कभी किसी की जी खोलकर प्रशंसा नहीं करती, इस समय मेरा आदर कर रही है। इस तर्क की सहायता से आत्म-श्लाघा के ऊपर आधारित सुख उसे मिला। यह सही है कि इसमें आत्मा का वह भावातिरेक न था जो उसने कई बार मादाम द रेनाल के ससर्ग में प्राप्त किया था। प्रेम के इस प्रथम क्षण में उसकी भावनाओं में स्नेह का लेशमात्र न था। यह तीव्र सुव महत्वाकांक्षा का था, और जुलिये सबसे पहले एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति ही था। वह फिर उसे मुनाने लगा कि किन-किन लोगों पर उसे सन्देह हुआ था और उसने कौन-कौन से साधन बरते थे। यह बताते-बताते भी वह यही सोच रहा था कि अपनी विजय का पूरा-पूरा लाभ किस भाँति उठाया जाय।

मातिल्द अभी तक सकुचित अनुभव कर रही थी और उसके मुख पर ऐसा भाव था जैसा अपने किसी कार्य से स्तम्भित हो जाने वाले व्यक्ति के मुख पर होता है। वह बातचीत का कोई विषय पाकर प्रसन्न हो उठी। वे लोग एक दूसरे से फिर मिलने के साधनों और उपायों की चर्चा करते रहे। जुलिये को अपनी बुद्धि और वीरता और साहस की चर्चा में बड़ा आनन्द आता था। अपनी बातचीत में उन गुणों इन्हीं के और भी प्रमाण प्रस्तुत किये। उन लोगों को अत्यन्त ही तीक्ष्ण दृष्टि वाले लोगों से मुकाबला करना था। युवक ताबो तो निस्सन्देह ही

गुप्तवर है। किन्तु मातिल्द और उसमे भी चालाकी की कमी नहीं थी। इससे अधिक आसान और क्या हो सकता है कि वे पुस्तकालय में मिल कर सभी व्यवस्था ठीक कर लिया करें ?

“मैं घर के किसी भी भाग में कोई भी सन्देह पैदा किये बिना ही आ-जा सकता हूँ, बल्कि स्वयं मा० द ला मोल के कमरे तक में,” जुलिये ने कहा। बेटी के कमरे में पहुँचने के लिये उनके कमरे से निकलना बिल्कुल आवश्यक था। किन्तु यदि मातिल्द सदा सीढ़ी से ही आना ठीक समझती हो तो वह इस साधारण-सी जोखिम को भी खुशी-खुशी उठाने को तैयार है।

उसकी बात सुनते-सुनते मातिल्द को उसके विजय के-से भाव से कुछ धक्का लगा। तो अब यह मेरा स्वामी है। पश्चात्ताप से जलबूँट हुए उसने सोचा। जो भयकर मूर्खता वह कर बैठी थी उससे वह काँप उठी। सम्भव होता तो इस समय वह जुलिये का और अपना, दोनों का नाम-निशान तक मिटा देती। बीच-बीच में जब उसकी इच्छाशक्ति पश्चात्ताप की भावना को शांत भी कर पाती तो संकोच और आहत लज्जा की भावनाएँ उसको अत्यन्त ही दुखी कर देती थी। इस समय जिस भयकर मानसिक त्रास का वह अनुभव कर रही थी, उसकी उसने क्षण भर के लिये भी कल्पना नहीं की थी।

अन्त में उसने मन ही मन कहा कि जो भी हो मुझे उससे बातचीत तो करनी ही चाहिये। यह तो एक साधारण नियम की बात है, अपने प्रेमी से बात तो सभी करते हैं। और फिर अपने इस कर्तव्य को पूरा करने के लिये और ऐसे स्नेह के भाव से, जो स्वर की अपेक्षा शब्दों में अधिक था, उसने जुलिये को बताया कि पिछले कुछ दिनों में उसे लेकर कैसे-कैसे निश्चय उसने कर डाले हैं।

उसने निश्चय किया था कि यदि जुलिये उसके आदेशानुसार माली की सीढ़ी द्वारा उसके कमरे में आने का साहस कर सका तो वह सम्पूर्णतः उसकी हो जायेगी। किन्तु ऐसी सुकुमार स्नेहभरी बात कभी किसी

ने शायद इससे अधिक विरक्तिपूर्ण और औपचारिक स्वर में न कही होगी। वह किसी के मन को भी प्रेम के विचार मात्र से घृणा से भर देने के लिये काफी था। एक अविचारी नवयुवती के लिये कैसा नैतिक पाठ है ! क्या ऐसे एक क्षण के लिये अपने समूचे भविष्य को नष्ट करना उचित है ?

बहुत देर तक असमजस में पड़े रहने के बाद मातिल्द आखिरकार उसके लिये एक स्नेहमयी और प्यार करने योग्य प्रेमिका बन गई। मातिल्द की यह हिचकचाहट दूर से देखने वाले को तीव्र असदिग्ध घृणा से उत्पन्न लग सकती थी, क्योंकि एक स्त्री की कर्तव्य-चेतना इतनी दृढ़ सकल-शक्ति के आगे भी बड़ी कठिनाई से परास्त होती है।

सच बात यह है कि उनके भावावेग कुछ-कुछ बनावटी थे। उत्कट प्रेम अभी उनके लिये यथार्थ की अपेक्षा आदर्श ही अधिक था। जिसका अनुकरण करने का वे यत्न कर रहे थे।

माद० द ला मोल को विश्वास था कि वह अपने तथा अपने प्रेमी दोनों के प्रति एक कर्तव्य का पालन कर रही है। उन्होंने मन ही मन कहा कि बेचारे लडके ने कितना भारी साहस दिखाया है ! मुझे उसे सुखी बनाना चाहिये, नहीं तो इससे मेरे ही चरित्र की दुर्बलता प्रगट होगी। किन्तु साथ ही यदि वह अनन्त काल तक दुःख उठाने के मूल्य पर भी अपनी इस निर्मम बाध्यता से मुक्त हो सकती तो खुशी-खुशी स्वीकार कर लेती।

अपनी भावनाओं के ऊपर इतना भीषण अत्याचार होने पर भी उसने अपनी जीभ पर पूरा नियन्त्रण बनाये रखा। इस रात्रि के आनन्द को नष्ट करने के लिये कोई पछतावा, कोई अप्रिय बात उसके मुख पर न आई।

जुलिये को यह रात सुखी से अधिक विचित्र लग रही थी। हे भगवान ! बेरियरे में उसके अन्तिम चौबीस घण्टों से यह कितनी भिन्न है ! उसने मन ही मन बहुत ही अन्यायपूर्वक कहा कि पेरिस के इन सुन्दर तौर-

तरीको ने हर वस्तु को यहाँ तक कि प्रेम को भी, भ्रष्ट करने का रहस्य खोज निकाला है ।

महोगनी की एक बड़ी भारी आलमारी के भीतर सीधा खड़ा-खड़ा वह इन्हीं सब सोच-विचारों में डूब गया था, जहाँ उसे बगल में मादाम द ला मोल के कमरे से कोई आहट सुनाई पड़ते ही झट से प्रवेश करना पड़ा था । मातिल्द अपनी माँ के साथ प्रार्थना के लिये चली गई, नौकरानियाँ भी शीघ्र ही कमरे से बाहर निकल गयी और जुलिये भी उनके आने के पहले आसानी से वहाँ से निकल आया ।

तुरन्त वह अपने घोड़े पर सवार होकर पेरिस के पास ही जंगल के सबसे एकान्त स्थल के लिये चल पड़ा । वह सुब से कहीं अधिक विस्मय अनुभव कर रहा था । बीच-बीच में जो सुख का भाव उसके मन में भर जाता वह उस तरुण लेफ्टीनेन्ट के भाव की भाँति था जो अपने किसी विस्मयकारी करतब के कारण प्रधान सेनापति द्वारा युद्ध-क्षेत्र में ही कर्नल बना दिया गया हो । उसे लगता कि वह किसी बड़ी भारी ऊँचाई पर जा पहुँचा है; एक दिन पहले जो स्थल उससे बहुत ऊँचा था, आज वह उसके बराबर है अथवा उसमें बहुत ही नीचे चला गया है । धीरे-धीरे ज्यो-ज्यो वह पेरिस से दूर पहुँचता गया, त्यो-त्यो उसका सुख बढ़ता गया ।

यदि उसके मन में स्नेह का कोई लेश न था तो इसका कारण यही था कि मातिल्द ने अपने समस्त व्यवहार में उसके प्रति केवल कर्तव्य का ही पालन किया था । उस रात्रि की घटनाओं में उसके लिये उपन्यासों में वर्णित चरम आनन्द की बजाय अनुभव होने वाले दुःख और ग्लानि के अतिरिक्त अन्य कोई बात अप्रत्याशित न थी ।

क्या मुँह से भूल हो गई ? उसने मन ही मन प्रश्न किया । क्या यह सम्भव है कि मैं उसे प्यार नहीं करती ?

: १७ :

पुरानी तलवार

भोजन के समय वह नीचे नहीं उतरी। शाम को वह पल भर के लिये ड्राइंग रूम में आई भी तो उसने जुलिये की ओर नहीं देखा। यह व्यवहार उसे बड़ा विचित्र लगा। वह सोचने लगा मैं उच्च समाज के इन तौर-तरीकों को जानता ही नहीं, वह अवश्य कोई न कोई अच्छा-सा बहाना इस सबके लिये बना देगी। किन्तु तो भी तीव्र कौतूहल से प्रेरित होकर वह मातिल्द के मुख के भाव का अध्ययन करने लगा और यह बात उससे छिप न सकी कि वह बहुत ही विरक्त और निर्मम दिखाई पड़ रही है। स्पष्ट ही यह वह स्त्री नहीं है जिसने पिछली रात को आनन्द के इतने तीव्र आवेश का अनुभव किया था अथवा अनुभव करते का बहाना किया था।

अगले दिन तथा उसके भी अगले दिन मातिल्द की विरक्ति वैसी ही बनी रही। उसने जुलिये की ओर एक बार भी नहीं देखा। वह उसके अस्तित्व से भी अनभिज्ञ जान पड़ती थी। जुलिये तीव्र उद्विग्नता में घुला जा रहा था और पहले दिन जिस विजय के भाव ने उसे अनुप्राणित किया था उससे वह अब सैकड़ों मील दूर था। वह आश्चर्य से सोचने लगा कि क्या इसे अचानक ही सशर्चर का फिर स्मरण हो आया है, पर मातिल्द जैसी गर्वीली स्त्री के लिये यह बहुत ही मध्यवर्गीय शब्द था।

साधारणतः वह घर्म में कोई विश्वास नहीं प्रगट करती, जुलिये ने

सोचा। उसे वह अपने वर्ग के हितों के लिये उपयोगी-भर मानती है। किन्तु क्या यह सम्भव नहीं है कि केवल स्त्री-सुलभ सुकुमारता के कारण ही वह अपनी इस भूल के लिये दुखी है? जुलिये को विश्वास हो गया था कि यही उसका पहला प्रेम है।

किन्तु दूसरे ही क्षण वह अपने आप से कहना कि इतना तो निश्चित पड़ेगा कि उसके मारे व्यवहार में कोई बात कौशलहीन अथवा स्नेहपूर्ण नहीं थी। इससे अधिक दर्पयुक्त तो मैंने पहले उसे कभी नहीं देखा। क्या यह सम्भव है कि अब वह मुझ से घृणा करने लगी है? यह बात भी उसके सर्वथा अनुकूल ही होगी कि एक नीच कुल के व्यक्ति के लिए इतना त्याग करने के कारण पछता रही हो।

जुलिये पुस्तको तथा बेरियेर की स्मृतियों से उत्पन्न पूर्वग्रहों के फलस्वरूप एक ऐसी स्नेहमयी प्रेयसी की अनोखी कल्पनाओं में डूबा हुआ था जो अपने प्रेमी को सुखी करने के क्षण से अपने अस्तित्व के विषय में पल भर भी नहीं सोचती, उधर मातिल्द का स्वाभिमान भीषण रूप से उसके विरुद्ध प्रज्वलित हो उठा था।

पिछले दो महीनों से उसे ऊबने से छुटकारा मिल चुका था। जुलिये को इस बात की तनिक भी कल्पना नहीं थी कि उसके अनुकूल सबसे बड़ी परिस्थिति नष्ट हो चुकी है।

तीव्रतम शोक में डूबी हुई मातिल्द सोच रही थी कि मैंने अपने लिए एक स्वामी जुटा लिया है। हो सकता है वह सम्मान की मूर्ति हो। बड़ी अच्छी बात है; पर यदि मैंने उसके स्वाभिमान को कोई भी ठेस पहुँचाने की कोशिश की तो वह हमारे सम्बन्धों की बात को प्रकट करके इसका बदला लेगा। मातिल्द ने आज तक कोई प्रेमी न बनाया था। इसलिए जीवन के जिन क्षणों में अपने कठोर से कठोर हृदय में भी जब सुकुमार कल्पनाएँ जागने लगती हैं, वे उसके लिए अत्यन्त ही कड़वी और दुःखदाई चिन्ता से विषाक्त हो उठे थे।

मैं बुरी तरह उसके जगुल में फँस गयी हूँ, क्योंकि वह आतक का

सहारा लेता है, और यदि मैंने उसके साथ कठोरता बरती तो वह मुझे बड़ा भीषण दण्ड दे सकता है। यह विचार अपने आप में ही मातिल्द को जुलिये के अपमान के लिए प्रेरित करने को पर्याप्त था, क्योंकि उसके चरित्र का प्रधान गुण साहस था। इस विचार के अनिरिव्त कि वह अपने समूचे अस्तित्व को जोखिम में डाल रही है, अन्य कोई बात न तो उसे किसी प्रकार से विचलित कर सकती थी और न उस छिपी हुई उकताहट की भावना से छुटकारा दिला सकती थी जो बराबर ऊपर छलक आया करती थी।

तीसरे दिन भी जब माद० द ला मोल ने किसी प्रकार भी जुलिये की ओर न देखा तो वह भोजन के बाद, स्पष्ट ही उनकी इच्छा के विरुद्ध, उसके पीछे-पीछे विलियर्ड रूम में जा पहुँचा।

“महाशय जी,” वह लगभग अनियन्त्रित क्रोध से बोली, “आप शायद यह विश्वास करने लगे हैं कि आपको मुझ पर बड़े पक्के अधिकार प्राप्त हो चुके हैं, नहीं तो मेरी इतनी स्पष्ट इच्छा के विरुद्ध आप मुझसे बात करने का प्रयत्न न करते। आप जानते हैं कि दुनिया में आज तक कभी किसी को यह करने की हिम्मत नहीं हुई?”

अनजान में ही एक दूसरे के प्रति ऐसी तीव्र घृणा से उत्तेजित इन दो प्रेमियों की बातचीत बहुत ही रोचक थी। दोनों में से किसी के स्वभाव में घीरज न था और दोनों ही सभ्य समाज के व्यवहार के अभ्यस्त थे। इसलिये बहुत शीघ्र ही दोनों एक दूसरे को बिलकुल ही स्पष्ट शब्दों में सचेत करने लगे कि उनके मित्रतापूर्ण सम्बन्ध सदा के लिए और पूरी तरह टूट चुके हैं।

“मैं सौगन्ध खाता हूँ कि मैं आपके इस भेद को सदा छिपा कर रूँगा,” जुलिये ने कहा। “यदि मुझे इस बात का डर न होता कि एकदम बोलना बन्द कर देने से आप ही प्रतिष्ठा पर आघात पहुँचेगा तो अब मैं आप से कभी एक शब्द भी न कहता।” उसने, सम्मानपूर्वक झुक कर अभिवादन किया और चला गया।

जुलिये अपने निर्धारित कर्तव्य को किसी भी कठिनाई के बिना पूरा करने लगा। वह इस विश्वास से बहुत दूर था कि उसे माद० द ला मोल से प्रेम है। निस्मन्देह तीन दिन पहले जब वह उम बड़ी भारी महोगनी की आलमारी में छिपा था तब उसके मन में कोई भी प्रेम न था। किन्तु जैसे उसे लगा कि उसका मातिल्द से सदा के लिए भगडा हो गया है तो उसके हृदय में बड़ी शीघ्रता से परिवर्तन होने लगा।

उसकी निर्मम स्मरणशक्ति उस रात की छोटी से छोटी घटना को फिर से सजीव करने लगी, जिसमें वास्तव में तो वह इतना अविचलित ही रहा था। इस स्थायी सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा के बाद दूसरी रात को तो जुलिये लगभग विक्षुब्ध हो उठा और यह स्वीकार करने को बाध्य हो गया कि वह माद० द ला मोल से प्रेम करने लगा है। यह जानते ही उसके भीतर बड़ा भीषण संघर्ष छिड़ गया। उसकी सारी भावनाएँ उल्टी-सीधी हो उठी। दो दिन में ही यह अवस्था आ पहुँची कि म० क्राजन्वा के साथ उद्धत व्यवहार करने के बजाय वह उन्हें आँखों में आँसू भर कर हृदय से लगा लेने को तैयार हो उठा था।

दुख से निरन्तर परिचय के कारण उसकी सहज बुद्धि जाग्रत हुई। उसने लागदोक जाने का निश्चय किया, और अपना सामान बक्म में सजाकर डाकघर की ओर चल पड़ा।

जब घोडागाडी के कार्यालय में पहुँचकर उसे पता चला कि विचित्र सयोग से अगले दिन एक सीट तुलु मेल में खाली है तो उसका दिल बैठने लगा। उसने वह सीट बुक करा ली और मार्कि को अपने जाने की सूचना देने के लिए द ला मोल भवन लौटा।

म० द ला मोल कहीं बाहर गये हुए थे। जीवित से अधिक मृत जैसी अवस्था में वह उनकी प्रतीक्षा करने के लिए पुस्तकालय में पहुँचा, पर वहाँ माद० द ला मोल को देखकर उसकी क्या दशा हो गई?

उसे आते देखकर मातिल्द ने ऐसा अप्रिय भाव मुख पर धारण कर लिया जिसे गलत समझना असम्भव था। अपने दुख से विह्वल होकर

और आश्चर्य से हतबुद्धि-सी अवस्था में जुलिये ने दुर्बलता के कारण उससे अत्यन्त स्नेह-भरे स्वर में कहा, "तो तुम अब मुझे प्यार नहीं करती ?"

"पहले ही आगन्तुक के आगे अपना समर्पण कर बैठने के लिए मैं बहुत ही दुखी हूँ," मातिल्द ने अपने ऊपर तीव्र क्रोध से रोते हुए कहा।

"पहले ही आगन्तुक को !" जुलिये चीखकर बोला और वह पुस्तकालय में एक दर्शनीय वस्तु की भाँति रखी हुई मध्ययुग की पुरानी तलवार की ओर झपटा।

माद० द ला मोल से बात कहते समय उसे अपना दुख तीव्रतम जान पड़ रहा था, किन्तु जब उसने उन्हें लज्जा के आँसू बहाते देखा तो वह सौ गुना बढ़ गया। यदि वह उनको जान से मार सकता तो बहुत ही सुखी होता।

"जैसे ही उसने तलवार को कुछ कठिनाई के साथ उसकी प्राचीन म्यान से खींचा वैसे ही मातिल्द इस नई सनसनीदार घटना से प्रसन्न होकर उसकी ओर गर्व के साथ बढ़ी, उसके आँसू बन्द हो गये थे।

जुलिये के आगे अपने आश्रयदाता म० द ला मोल का चित्र स्पष्ट खिच गया। उन्हीं की बेटी की हत्या ? कैसी जघन्य बात है ! उसने ऐसी मुद्रा बनाई मानो तलवार को फेंक देगा। वह सोचने लगा कि अवश्य ही यह लड़की मेरे इस अति-नाटकीय आचरण पर बहुत हँसेगी। यह सोचते ही उसका आत्मसंयम लौट आया। वह कौतूहल-भरी दृष्टि से उस पुरानी तलवार को देखने लगा, मानो देख रहा हो कि उस पर कहीं जग तो नहीं लगी है। फिर उसे म्यान में बन्द करके बड़ी स्थिरता के साथ कैसे की चमकीली कील से यथास्थान लटका दिया।

इस समूचे कार्य में, जो अन्त में बहुत धीमा पड़ गया था, कोई एक मिनट का समय लगा होगा। माद० द ला मोल विस्मित-सी उसकी ओर ताक रही थी। तो मैं अभी-अभी अपने प्रेमी के हाथों मरते-मरते बची हूँ। वह सोचने लगी। इस विचार ने उन्हें चार्ल्स नवे और हेनरी

तृतीय के युग के सर्वश्रेष्ठ दिनों में पहुँचा दिया था ।

वह जुलिये के सामने निश्चल खड़ी रही और उसे ऐसी दृष्टि से ताकती रही जिनमें अब घृणा का कोई लेश भी न था । यह तो मानना ही पड़ेगा कि उस समय वह बहुत ही मोहिनी लग रही थी । निश्चय ही वह पेरिस की गुडिया से कितनी भिन्न लगती थी । (इस शहर की स्त्रियों के बारे में जुलिये यही कहा करता था ।)

मैं फिर अब उसके प्यार में डूबने ही वाली हूँ, मातिल्द सोचने लगी; और तब वह तुरन्त ही फिर अपने आपको मेरा स्वामी समझने लगेगा । ठीक अभी-अभी मैं दृढ़तापूर्वक बात करके उसके मन से यह विचार दूर कर पायी हूँ । वह तेजी से वहाँ से चली गयी ।

हे ईश्वर ! कितनी सुन्दर है, जुलिये उसे जल्दी से जाते देखकर सोचने लगा । यही स्त्री केवल तीन-चार दिन पहले ऐसे उत्कट प्यार से मेरी बाहों में सिमट गयी थी । अब वे क्षण कभी वापिस नहीं आयेगे । और यह सब मेरा ही दोष है । ऐसे असाधारण क्षण में भी, जिसका मेरे साथ इतना गहरा सम्बन्ध था, मैं उसकी ओर से आँख मूँदे रहा ! मानना हूँ मैं बेहद ठस और चिड़चिड़ा स्वभाव लेकर पैदा हुआ हूँ ।

मार्कि लौट आये । जुलिये जल्दी से अपने जाने के समाचार सुनाने उनके पास पहुँचा ।

“कहाँ जा रहे हो ?” म० द ला मोल ने कहा ।

“लागदोक ।”

“नहीं, नहीं, तुम्हारे भाग्य में कुछ ऊँचा काम बड़ा है ; जाना ही हुआ तो तुम उत्तर की ओर जाओगे” - सैनिक भाषा में कहे तो तुम अब से इस मकान में ही नज़रबन्द हो । मेहरबानी करके एक बार मैं दो-तीन घण्टे से अधिक के लिये यहाँ से कहीं मत जाना । मुझे किसी क्षण भी तुम्हारी आवश्यकता पड़ सकती है ।”

जुलिये ने झुककर अभिवादन किया और कुछ भी कहे बिना चला गया । मार्कि बहुत चर्कित रह गये, पर उसके लिए एक भी शब्द बोलना

असम्भव हो रहा था। और उसने अपने कमरे को भीतर से बन्द कर लिया। वहाँ वह अपने भाग्य की भीषण निष्ठुरता को इच्छानुसार बढा-चढाकर देखने के लिए स्वतन्त्र था।

तो अब मैं कही जा भी नहीं सकता। वह सोचने लगा। भगवान् जाने मार्कि कितने दिनो तक मुझे पेरिस में रखने वाले है। हे ईश्वर। मेरा क्या होगा? कोई ऐसा मित्र भी नहीं जिससे सलाह ले सकूँ। फादर पिरार तो मुझे पहला वाक्य भी पूरा नहीं करने देगे। काउन्ट आल्तामिरा मुझे किसी न किसी षड्यन्त्र का सदस्य बनने का प्रस्ताव करेगे।

और इधर मैं पागल हुआ जा रहा हूँ। मुझे अनुभव होने लगा है कि मैं बिलकुल पागल हूँ। मुझे कौन सलाह दे सकता है, मेरा क्या होगा?

: १८ :

कड़वे क्षण

नाद० द ला मोल को अपने हर्षातिरेक में इस चरम आनंद के सिंघा और कुछ सूझता ही न था कि वह अभी-अभी मृत्यु के मुँह से लौटी है। वह सोचने लगी : क्योंकि वह मुझे अभी मार डालने वाला था इसलिए वह मेरा स्वामी होने के योग्य है। ऐसे तीव्र भावावेग को प्राप्त करने के लिये कितने सारे सुन्दर और दुनियादार नौजवानों को पिघलाकर एक करने की आवश्यकता होगी ?

इतना तो मानना ही पड़ेगा कि जब वह कुर्सी पर चढ़कर तलवार को ठीक उसी प्रकार रखने लगा जैसे घर सजाने वालों ने उसे पहले से रखा था, तो वह बहुत ही सुन्दर दीख रहा था। कुल मिलाकर उसे प्यार करना ऐसी पागलपन की बात नहीं।

उस क्षण यदि सुलह का कोई सम्मानपूर्ण उपाय सूझ जाता तो वह खुशा-खुशी स्वीकार कर लेनी। उधर जुलिये अपने कमरे में सुरक्षित रूप में बन्द होकर बड़ी तीव्र यातना में तड़प रहा था। अपनी बदहवासी में वह कभी-कभी जाकर मातिल्द के पैरों पर गिरनेका बात सोचता यदि एक कोन में छिपकर बैठे रहने के बजाय वह घर में तथा बाहर बगीचे में भटकता होता, ताकि कोई अवसर मिलने पर उसका लाभ उठा सके, तो शायद एक ही क्षण में उसका यह तीखा दुःख हर्षातिरेक का रूप धारण कर लेता।

पर दुःख की यह ऐसी तीक्ष्णता, जिसके अभाव के लिए हम उसे

दोष दे रहे हैं, तलवार खींचने के उस उदात्त कार्य को असम्भव बना देती जिनके कारण वह माद० द ला मोल को इतना सुन्दर जान पड़ा था। यह जुलिये के लिये हिनकर अनियन्त्रित कल्पना दिन भर बनी रही, मातिल्द बार बार मन ही मन उन क्षणों का लुभावना चित्र बनाती रही जिनमें उसने जुलिये को प्यार किया था और बड़े पछतावे के साथ उनकी याद करती रही।

वह सोचने लगी वास्तव में वह बिचारा लड़का कहता होगा कि उसके लिये मेरा प्रेम उस दिन रात को एक बजे कोट की जेबों में पिस्तौलें भरे हुए सीढ़ी से चढ़कर आने के समय से सबेरे आठ बजे तक ही रहा। उसके पंद्रह मिनट बाद ही से-वालेर में प्रार्थना सुनते-सुनते मुझे सूझा था कि अब वह अपने आपको मेरा स्वामी समझकर मुझे डरा-धमकाकर अपनी आज्ञा मनवायेगा।

भोजन के बाद माद० द ला मोल ने जुलिये में बचने के बजाय उस से बातचीत की और अपने साथ बगीचे में चलने का आग्रह करने लगी। जुलिये ने यह आदेश मान लिया। यह परीक्षा अभी तक नहीं हुई थी। मातिल्द अनजान में ही अपने मन में जुलिये के लिए फिर से जाग्रत होते हुए प्रेम के आगे झुक रही थी। उसे जुलिये के साथ चलते-चलते उन हाथों के ऊपर कौतूहल-भरी निगाहें डालने में, जिन्होंने उस दिन सबेरे उसे मार डालने के लिए तलवार खींच ली थी, बहुत ही आनन्द आ रहा था।

इस कार्य के तथा पिछली तमाम घटनाओं के बाद बातचीत के पुराने सब विषयों का उठना तो सम्भव ही न था।

धीरे-धीरे मातिल्द बहुत ही घनिष्ठ और प्रात्मीयतापूर्ण शब्दों में उसे अपने हृदय की अवस्था बताने लगी। इस तरह के वार्तालाप में उसे एक विचित्र प्रकार का उत्कट आनन्द अनुभव हुआ। यहाँ तक कि म० द क्रवाजन्वा, म० द केलुस इत्यादि के प्रति अपने क्षणिक झुकाव की चर्चा भी उसने जुलिये से कर दी।

“क्या ! म० द केलुस भी !” जुलिये ने चीखकर कहा। एक परि-

स्थित प्रेमी की तीव्र ईर्ष्या उसके शब्दों में फूट पड़ी। मातिल्द ने भी यह देखा और वह इससे अप्रसन्न हुई।

वह हृदय के गहनतम सत्य को उजागर करने वाले स्वर में अपनी पिछली भावनाओं का विस्तृत और अत्यन्त सजीव वर्णन सुनाकर उसे तडपाती रही। जुलिये समझ गया कि वह आँखों के सामने उपस्थित बातों का वर्णन कर रही है और यह अनुभव करके उसे दुख हुआ कि झोलने के साथ-साथ वह भी मानो अपने हृदय के रहस्य से परिचित होती जा रही है।

ईर्ष्या का दुख इससे अधिक नहीं हो सकता। यह सन्देह कि आपकी प्रेयसी किसी अन्य को प्यार तो नहीं करती अपने आप में ही बड़ी कड़वी चीज है, पर यदि वह स्वयं ही विस्तार से उस प्यार का वर्णन करे तो निस्सन्देह यह दुख की चरम सीमा है।

जुलिये ने अपने आपको केलुस, क्राजन्वा तथा ऐसे ही अन्य व्यक्तियों से बहुत ऊँचा मान लिया था। इस कारण इस समय उसे कितना बड़ा दण्ड मिला! अब वह अत्यन्त तीव्र और हार्दिक दुख के साथ उनके छोटे से छोटे गुण को बड़ा-चढ़ाकर देखने लगा। कितनी तीव्र सदाशयता के साथ वह अपने आपसे घृणा कर उठा।

मातिल्द इस समय उसे बहुत ही प्यारी लग रही थी, शब्दों में इतनी शक्ति नहीं कि उसके प्यार की तीव्रता को प्रकट कर सके। उसके माथ-माथ चलते हुए और नजर बचाकर उसके हाथों, बांहों और उसके राजनी व्यक्तित्व को देखते हुए स्नेह और दुख से विह्वल होकर उसे ऐसा लग रहा था कि उसके पैरों पर गिर पड़े और रोकर कहे “मुझ पर तरस खाओ!”

वह सोचने लगा कि यह नारी जो इतनी सुन्दर है, जो अत्यन्त स्त्रियो से इतनी श्रेष्ठ है, और जो कभी मुझे प्यार करती थी, अब निस्सन्देह ही म० द केलुस से प्रेम करने लगेगी।

जुलिये माद० द ला मोल की निश्छलता पर अविश्वास नहीं कर

सकता था, उनकी हर बात में सत्य की छाप एकदम स्पष्ट थी। जुलिये के त्रास को मानो सब तरह से असह्य बनाने के लिए बीच-बीच में मातिल्द, किसी समय म० केलुस के प्रति अनुभूत भावनाओं पर मन को केन्द्रित करने के फलस्वरूप, इस समय उनका ऐसा वर्णन करने लगती मानो वह आज भी उनसे प्रेम करती हो। निस्सन्देह उसकी आवाज के स्वर में प्रेम की गूँज स्पष्ट थी। जुलिये को भी वह साफ सुनाई पड़ी।

यदि उसके हृदय के भीतर पिघला शीशा भर गया होता तो भी उसकी पीड़ा इतनी तीव्र न होती। यातना की ऐसी चरम अवस्था में वह बिचारा युवक यह कैसे समझ पाता कि उसके साथ बातचीत करने के कारण ही माद० द ला मोल को म० द केलुस या म० द लुज के प्रति किसी समय की हल्की-सी प्रेम-भावना की स्मृति में इतना आनन्द आ रहा है ?

जुलिये के तीव्र सताप को शब्दों द्वारा प्रगट करना असम्भव था। वह उन्हीं नीबू के कुजों में दूसरों से प्रेम के वर्णन सुन रहा था, जहाँ कुछ ही दिन पहले वह उसके कमरे में जाने के लिए रात को एक बजे तक इन्तजार करता रहा था। कोई मनुष्य इससे अधिक दुख सहन नहीं कर सकता।

यह अत्यन्त निष्ठुर घनिष्ठता पूरे सप्ताह भर चली। उससे बातचीत करने का अवसर मातिल्द कभी-कभी स्वयं ढूँढती हुई जान पड़ती और कभी-कभी ऐसा लगता कि अवसर अपने आप मिल जाय तो उसे कोई आपत्ति नहीं होगी। एक प्रकार के पीड़ादायक आनन्द से वे बराबर एक ही विषय पर बातचीत करते और मातिल्द उससे अन्य पुरुषों के प्रति अनुभव की हुई भावनाओं का वर्णन करती रहती। वह उससे अपने लिखे हुए पत्रों की बात कहती, बल्कि उसके लाभ के लिए वह उन पत्रों के शब्द तक बता देती—यहाँ तक कि समूचे वाक्य उसके आगे उद्धृत कर देती। इस सप्ताह के अन्तिम दिनों में तो यह लगाने लगा था कि वह एक प्रकार के द्वेषपूर्ण आनन्द से जुलिये का अध्ययन कर रही है।

उसकी यातना से उसे तीव्र परितृप्ति मिलती ।

यह तो स्पष्ट ही है कि जुलिये को जीवन का कोई अनुभव न था; उसने कोई उपन्यास भी नहीं पढ़े थे । यदि वह केवल कुछ कम बेढया और सकोची होता और ठंडे दिमाग से इस लडकी से, जिसे वह इतना प्यार करता था और जो उसे इस तरह की बातें सुना रही थी, यह कह सकता कि माना, मैं इन सज्जनो के समान योग्य नहीं हूँ, पर तो भी तुम प्यार तो मुझे ही करती हो .., तो शायद वह प्रसन्न हुई होती कि आखिरकार जुलिये ने उसके मन की बात पहिचान ली । कम से कम उस हालत में सफलता पूरी तरह इस बात पर निर्भर करती कि जुलिये न कितनी शालीनता से और किस अवसर पर यह बात कही । जो भी हो, वह इस स्थिति से, जो अब मातिल्द को नीरस जान पड़ने लगी थी, सफलतापूर्वक और लाभ सहित निकल आया ।

“तो अब तुम मुझे प्यार नहीं करती, यद्यपि मैं अब भी तुम्हारी पूजा करता हूँ ।” एक दिन जुलिये ने प्रेम और दुख से बेचैन होकर उससे कहा । इससे बड़ी गलती वह और दूसरी नहीं कर सकता था ।

उसकी बात ने पल भर में ही उस सारे आनन्द को नष्ट कर दिया जो माद० द ला मोल उसे अपने हृदय की अवस्था सुनाकर अनुभव कर रही थी । अब उन्हें आश्चर्य होने लगा था कि उनकी बातों से जुलिये को क्रोध क्यों नहीं आता । बल्कि जिस समय जुलिये ने अपनी मूर्खतापूर्ण बात कही उस समय वह यह कल्पना करने लगी थी कि अब वह उससे प्रेम नहीं करती । वह सोच रही थी कि अवश्य ही गर्व ने उसके प्रेम को बुझा दिया है । वह ऐसा व्यक्ति नहीं है कि केलुस, लुज और क्वाजन्वा जैसे लोगों को अपने से श्रेष्ठ माना जाता देखता रहे और कुछ न बोले । नहीं, मैं अब कभी उसे अपने पैरों में गिरा हुआ नहीं देखूँगी ।

पिछले दिनों में अपने सहज दुख के कारण जुलिये कई बार इन सब लोगों के गुणों की प्रशंसा कर चुका था, बल्कि बहुत-कुछ बढ़ा-चढ़ा कर ही कहता रहा था । यह सूक्ष्म अन्तर माद० द ला मोल की निगाह

से छूटा न था। वह इससे चकित तो हुई थी, किन्तु इसका कारण न समझ सकी थी। जुलिये का पागल विक्षिप्त हृदय अपने प्रतिद्वन्द्वी की प्रशंसा करके, जिसे वह समझता था कि उसकी प्रेयसी प्यार करती है, उसके सुख में स्वयं सुखी होना चाहता था।

उसके एकदम सच्चे, किन्तु बहुत ही मूर्खतापूर्ण कथन ने सारी परिस्थिति को एक क्षण में ही बदल दिया। अपने प्रति जुलिये के प्रेम का पक्का विश्वास होते ही मातिल्द उसे एकदम अनादर की दृष्टि से देखने लगी।

यह असामयिक कथन जुलिये के मुख से निकलते समय मातिल्द उसके साथ टहल रही थी। उसे सुनते ही वह तुरन्त उसे वहाँ छोड़कर चल दी, जाते समय उसकी दृष्टि से बहुत ही डरावना धिक्कार बरस रहा था। ड्राइंग रूम में पहुँचने के बाद उसने फिर उस दिन एक बार जुलिये की ओर नज़र उठाकर भी न देखा। अगले दिन जुलिये के प्रति धिक्कार की भावना ने उसके हृदय को पूरी तरह घेर लिया। जिस प्रवृत्ति के कारण पिछले सप्ताह भर वह जुलिये को अपना घनिष्ठतम मित्र मानकर इतना आनन्द अनुभव करती रही थी उसका अब लेश मात्र भी न बचा था। अब तो जुलिये की सूरत से भी उसे चिट होने लगी। बल्कि मातिल्द को उसमें एक प्रकार की अरुचि-सी अनुभव हुई, उसकी दृष्टि अकस्मात् भी जुलिये पर पड़ते ही उसके भीतर जो तीव्र अनादर की भावना उमड़ती उसे शब्दों में प्रगट करना कठिन है।

मातिल्द के हृदय में पिछले सप्ताह भर होने वाली इस उथल-पुथल को जुलिये तनिक भी न समझ सका था। पर अब उसके धिक्कार को वह पहिचान गया। उसमें इतनी समझ तो थी ही कि जहाँ तक भी बनता अब वह उसके सामने ही न पड़ता और स्वयं कभी उसकी ओर आँख उठाकर भी न देखता।

किन्तु उसके सम्पर्क से अपने आपको पूरी तरह काट लेना सरल कार्य न था। वह एक प्रकार की तीव्र यातना का अनुभव मन में करता।

उसे लगता कि उसका दुःख इससे और भी बढ गया है। वह सोचता कि साहस इससे आगे नहीं जा सकता। वह अपना समय घर की सबसे ऊपर की मञ्जिल पर एक छोटी-सी खिड़की में बैठकर बिता देता। खिड़की की झिलमिली सावधानी से बन्द रहती। जब भी माद० द ला मोल बाग में आती तो कम से कम उनकी एक झलक उसे अवश्य मिल जाती।

जब वह वहाँ उन्हें म० द केलुस, म० द लुज अथवा किसी ऐसे व्यक्ति के साथ घूमते देखता जिनके प्रति थोड़े-बहुत प्रेम की भावना वह उसके आगे स्वीकार कर चुकी थी, तो उसके मन पर कैसी बीतती ?

जुलिये को दुःख की ऐसी तीव्रता का पहले कोई अनुभव न हुआ था। उसे लगता कि वह अभी-अभी चीख पड़ेगा। उसका दृढ हृदय आघात से इतना विक्षिप्त हो उठा था कि विश्वास करना कठिन था।

माद० द ला मोल के सिवाय अन्य कोई भी विचार उसे घृणित लगना। सरल से सरल पत्र भी उससे न लिखे जाते।

“तुम्हारी बुद्धि खराब हो गयी है,” मार्कि ने एक दिन उससे कहा।

जुलिये कॉप उठा कि कहीं उसकी वास्तविक दशा का पता न चल जाय। इसलिए कहने लगा कि तबीयत ठीक नहीं है और मार्कि को इसका विश्वास भी हो गया। सौभाग्यवश भोजन के समय मार्कि आगामी यात्रा के विषय में उसे कुछ बताते रहे। मातिल्द को लगा कि यह यात्रा शायद बहुत लम्बी होगी। जुलिये कई दिनों से उसके मामने पढ़ने से बचता रहा था। और उन बुद्धिमान नौजवानों में अब यह शक्ति न थी कि उसे अपने सपनों से बाहर खींचकर उसका दिल बहला सकें, यद्यपि उनके पास वे सब चीजें मौजूद थी जो इस अत्यन्त पीले तथा उदास मुख वाले व्यक्ति में, जिसे वह कम प्यार करती थी, नहीं थी।

वह मन ही मन सोचती कि कोई भी साधारण लड़की अपनी पसन्द का आदमी उन्हीं लोगों में से चुनती जो ड्राइंग रूम में सबका ध्यान आकर्षित करते हैं। किन्तु प्रतिभा की एक विशेषता यह भी है कि वह अपने विचारों को उस रास्ते कभी नहीं भटकने देती जिस पर सब

साधारण लोग चलते रहते हैं।

जुलियें जैसे व्यक्ति की सगिनी बनकर, जिसके पास धन-दौलत के अतिरिक्त किसी वस्तु की कमी नहीं है, उसकी ओर निरन्तर सबका ध्यान आकर्षित होगा। मैं जीवन में कभी भी उपेक्षित न रहूँगी। मेरे दूसरे भाई-बहिन क्रान्ति से इतना डरते हैं कि डर के मारे वह कोचवान को डाट नहीं सकते। इसके विपरीत मैं क्रान्ति में हिस्सा लूँगी, बल्कि बड़ा हिस्सा लूँगी, क्योंकि मेरे मनोनीत व्यक्ति में चरित्र भी है और असीम महत्वाकांक्षा भी। उसे किस बात की कमी है ? मित्र की ? धन की ? यह तो मैं उसे दे सकती हूँ। किन्तु अनजाने ही उसने जुलिये ऐसा हीन कोटि का व्यवित मान लिया था जिसे अपनी इच्छानुसार प्यार किया जा सकता है।

इटैलियन ओपेरा

मातिल्दा का ध्यान भविष्य की कल्पनाओं और उसमें अपने महत्वपूर्ण स्थान की आशाओं पर केन्द्रित होते ही अब उसे जुलिये के साथ पिछले दिनों की नीरस आध्यात्मिक चर्चाओं की याद आने लगी। ऐसे उच्च विचारों से क्लान्त होकर वह कभी-कभी उन सुख के क्षणों के लिए भी व्याकुल हो उठती जो उसे जुलिये के सहवास में प्राप्त हुए थे। पर इन क्षणों की स्मृतियाँ उठते ही अनिवार्य रूप से पश्चात्ताप उसे घेर लेता जिससे कभी-कभी तो वह विह्वल हो जाती।

फिर वह सोचने लगती कि यदि मुझे जैसी लड़की मन में प्रेम अनुभव करती है तो किसी सुयोग्य व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य किसी के लिए अपने कर्तव्य को भूल जाना उचित नहीं। कोई यह तो न कहेगा कि उसकी सुन्दर मूर्छों अथवा घोड़े पर सवारी करने के सुन्दर ढंग पर मैं फिसल पड़ी; बल्कि फ्रांस के भविष्य के विषय में उसकी गम्भीर चर्चाओं ने इंग्लैंड की १६८८ की राज्य-क्रान्ति तथा हमारे देश में निकट भविष्य में सभाव्य घटनाओं के बीच समानता के विषय में उसके विचारों ने ही मुझे आकर्षित किया। वह अपने पश्चात्ताप को शान्त करने के लिए आगे कहती, ठीक है, मैं अपना सर्वस्व दे बैठी, मैं दुर्बल स्त्री हूँ, किन्तु कम से कम किसी बाह्य आकर्षण से तो मैं पथभ्रष्ट नहीं हुई।

यदि इस देश में फिर से क्रान्ति हो तो यह क्यों सम्भव नहीं है कि जुलिये सोरेल रोला की भूमिका पूरी करे और मैं मादाम रोला की ?

मुझे वह महिला मादाम द स्ताल से अधिक पसन्द है। हमारे युग में अनैतिक आचरण बाधा सिद्ध होगा। निश्चय ही कोई मुझे दूसरी बार दुर्बलता का दोष न दे सकेगा, मैं तो लज्जा से मर ही जाऊँगी।

यहाँ यह बता दे कि मातिल्द के सारे विचार उतने ही गम्भीर न थे जैसे हमने यहाँ लिख दिये हैं। वह जुलिये की ओर देखती और उसके साधारण से साधारण कार्य में भी लुभावनी सुन्दरता अनुभव करती।

वह सोचती कि निस्सन्देह उसके मन के इस विचार को तो मैंने पूरी तरह मिटा दिया है कि उसे मेरे ऊपर कोई छोटे से छोटा अधिकार भी है। बेचारे ने एक सप्ताह पहले जिस दुख और तीव्र भाव-विह्वलता से अपने प्रेम का जिक्र किया था उससे कम से कम इतना तो सिद्ध होता ही है। मैं मानती हूँ कि इतने आदर और प्रेम-भरे कथन से मेरा क्रुद्ध हो जाना बहुत ही अजीब था। क्या मैं उसकी पत्नी नहीं हूँ? उसका वह कथन बहुत ही स्वाभाविक था, बल्कि मानती हूँ कि बहुत ही प्यारभरा था। मैंने उससे बड़ी ही निष्ठुरतापूर्वक उन फैशनेबल नौजवानों के प्रति अपने झूठमूठ रुझान की और अपनी जिन्दगी से होने वाली उकताहट की चर्चा की थी। इन सब नौजवानों से जुलिये को कितनी ईर्ष्या है, किन्तु उस बे सिर-पैर की लम्बी-चौड़ी चर्चा के बाद भी वह मुझे प्यार करता है। आह! यदि वह किसी तरह जान पाता कि इन सब लोगों से मेरे लिए कोई डर नहीं। उसकी तुलना में वे सब मुझे कितने एक ही सचि में ढले हुए फीके और बीमार पुतलों जैसे लगते हैं।

इन्हीं सब बातों पर विचार करते-करते मातिल्द अपने एलबम के एक पृष्ठ पर यो ही कुछ लकीरे भी खींचती जा रही थी। अभी-अभी जो एक आकृति पूरी हुई थी उसे देखकर वह एकदम चकित और प्रसन्न हो उठी। यह तो बहुत कुछ जुलिये से मिलती है! तो भगवान् का यही आदेश है! प्रेम का कैसा चमत्कार है! वह भावातिरेक में बोल उठी। बिलकुल अनजाने में ही मैंने उसका चित्र बना डाला है।

वह भागकर अपने कमरे में पहुँची और भीतर से दरवाजा बन्द

करके जुलिये का चित्र बनाने में जुट गई। पर अब वह उससे न बन सका, वह अकस्मात् बना हुआ पहला रेखा-चित्र ही सबसे ठीक था। मातिल्द इस बात से मुग्ध हो उठी। उसे इसमें महान् प्रेम का स्पष्ट प्रमाण दीखा।

वह अपने एलबम से बहुत देर तक उलझती रही और जब मार्किज ने उसे इटैलियन ऑपेरा में चलने के लिए बुलाया, तभी उठी। इस समय उसके मन में एक ही विचार था कि किसी तरह जुलिये पर नज़र पड़ जाय ताकि अपनी माँ से वह उसे भी साथ चलने के लिए आमन्त्रित करने को कह सके।

पर वह कही दिखाई न दिया। महिलाओं के बाक्स में कुछ बहुत ही नीरस लोग थे। ऑपेरा के पहले अंक में मातिल्द अपने प्रेमी के बारे में तीव्र और अतिरेकपूर्ण भाव-विह्वलता के साथ स्वप्न बुनती बैठी रही। किन्तु दूसरे अंक में एक बहुत ही सुन्दर प्रेम-गीत ने उसके हृदय को छू लिया। ऑपेरा की नायिका कह रही थी : 'उसकी इतनी अधिक पूजा करने के लिए मुझे दण्ड मिलना चाहिए, मैं उसमें बहुत अधिक प्यार करती हूँ।'

इस अपूर्व गीत को सुनने ही दुनिया की अन्य प्रत्येक वस्तु मातिल्द की चेतना में से विलीन हो गयी। पुकारने पर भी वह उत्तर न देनी, माँ ने डाटा तो वह उनकी ओर दृष्टि तक न घुमा सकी। उसका भाव-तिरेक तीव्र प्रेम-विह्वलता के उम स्तर पर पहुँच गया था कि उसकी तुलना केवल उन उत्कट भावनाओं से ही की जा सकती थी जो पिछले कुछ दिनों में जुलिये उसके प्रति अनुभव करता रहा था। गीत इतना मधुर और सुन्दर था और उसका भाव मातिल्द की अपनी स्थिति के इतना अधिक अनुरूप था कि जुलिये की याद के अतिरिक्त केवल वही उनके मन में समाया हुआ था। अपने सगीत-प्रेम के कारण उसकी उस रात को वैसी ही अवस्था हो गयी जो जुलिये की याद करते समय अनिवार्य रूप से मादाम द रेनाल की हो जाया करती थी। मस्तिष्क में उपजने वाले

प्रेम मे हृदय मे अनुभव होने वाले प्रेम की अपेक्षा निस्सन्देह बुद्धि-चातुर्य अधिक सूक्ष्म होता है, किन्तु उसमे उत्साह के क्षण बहुत ही दुर्लभ हैं। ऐसा प्रेम अपने आपको बहुत जानता है और निरन्तर अपनी आलोचना करता रहता है। मन को बहकाने की बात तो दूर वह स्वयं ही पूरी तरह सुचिन्तित विचारों पर निर्मित होता है।

घर लौटने पर मादाम द ला मोल के बहुत-कुछ कहने के बावजूद मातिन्द ने बहाना किया कि उसे बुखार है और वह बाकी रात उस गीत को अपने पियानो पर बराबर बजाती रही और उस सुन्दर धुन के शब्दों को गाती रही।

इस रात-व्यापी पागलपन के परिणामस्वरूप वह यह कल्पना करने लगी कि उसे अपने प्रेम पर विजय प्राप्त हो गयी है।

(यह पृष्ठ इस लेखक की प्रतिष्ठा को एकाधिक प्रकार से हानि पहुँचायेगा। हिमवत जडीभूत हृदय उस पर अनौचित्य का आरोप लगायेंगे। वह पेरिस के ड्राइंग रूमों में चमकने वाले युवक-युवतियों का यह कहकर अपमान नहीं करना चाहता कि उनमें से एक भी मातिन्द के चरित्र को गिराने वाली पागल प्रवृत्तियों का शिकार हो सकता है। यह चरित्र पूरी तरह काल्पनिक है और उन सामाजिक रीति-रिवाजों में बिल्कुल अलग रचा गया है जिनके कारण उन्नीसवीं शताब्दी इतिहास की अन्य सब शताब्दियों से इतनी भिन्न समझी जायगी।

निश्चय ही इस शीतकाल में बॉल-रूमों को सुशोभित करने वाली युवतियों में दूरदर्शिता की कमी न थी।

और मेरे विचार से उनके ऊपर कोई यह दोष भी नहीं लगाया जा सकता कि उन्होंने बड़ी भारी धन-दौलत, घोड़े, जायदाद अथवा समाज में सुखद स्थिति को दृढ़ करने वाली किसी भी वस्तु को विशेष रूप से ठुकरा दिया। इन सब सुविधाओं को नितांत नीरस मानने के बजाय वे आम तौर पर उन्हें अपनी चिर-सचित्त अभिलाषाओं का केन्द्र बनाती रहती हैं, और यदि उनके हृदय में कभी कोई प्रेम उमड़ता भी है तो

वह इसी तरह की वस्तुओं के लिये ही होता है ।

इसी प्रकार जुलिये जैसे थोड़ी-बहुत प्रतिभा वाले नौजवानों के जीवन में भी मुख्य हाथ प्रेम का नहीं होता । ये नौजवान बड़ी दृढ़ता और हठ के साथ किसी न किसी मडली में अपने आपको जोड़ते हैं और यदि वह मण्डली सफल होती है तो फिर समाज की अच्छी से अच्छी वस्तुएँ उनके लिये अनायास ही सुलभ हो जाती हैं । जो अध्ययनशील व्यक्ति किसी मडली से सम्बद्ध नहीं है उसका कोई पूछने वाला नहीं । उसकी छोटी-छोटी सदिग्ध सफलताएँ भी उसके विरुद्ध ही गिनी जायेगी और श्रेष्ठतर गुण वाले लोग उन सफलताओं को उससे छीनकर उसके ऊपर विजयी होंगे ।

महाशय जी, उपन्यास तो राजमार्ग पर चलता हुआ दर्पण है । कभी उसमें आपको आसमान का गहरा नीलापन दिखाई पड़ता है, कभी नीचे सड़क पर बने हुए कीचड़ के गढ़े । जो आदमी दर्पण लेकर चलता है उस पर आप अनैतिक होने का आरोप लगायेगे । उसके दर्पण में कीचड़ दिखाई पड़ी तो आप दर्पण को दोष देगे । उचित तो यह है कि आप उस राजमार्ग को दोष दे जिस पर गढ़ा बना हुआ है, और उससे भी अधिक सड़कों और राजमार्गों के इन्स्पेक्टरों को जो वहाँ पानी को ठहर वर कीचड़ बनने देते हैं ।

अब इस प्रकार इस बात पर सहमत होने के बाद कि मातिल्द जैसा चरित्र हमारे नीतिवान और दूरदर्शिता-प्रेमी युग में असम्भव है, मेरा इस बात का भय कुछ कम हो गया है कि इस सुन्दर लड़की की मूर्खताओं के वर्णन से आपको अधिक कष्ट होगा ।)

अगले दिन वह निरंतर विक्षिप्त प्रेम पर अपनी विजय का आश्वासन प्राप्त करने के अवसर ढूँढती रही । उसका मुख्य उद्देश्य था कि जुलिये के प्रति अधिकाधिक अप्रिय व्यवहार कर सके, किन्तु उसकी कोई गतिविधि जुलिये की आँखों से छिपी न रह सकी ।

जुलिये स्वयं इतना दुखी था और उससे भी अधिक इतना उत्तेजित

था कि भावना के ऐसे जटिल रूप के अर्थ को समझना उसके लिए कठिन था, और उससे उसे अपने हित की बात पहचानना तो और भी असम्भव था। इसलिए वह मातिल्द के व्यवहार का शिकार हो गया, शायद उसका दुःख इतना गहन कभी न हुआ था। उसके कायकलाप उसके मस्तिष्क के नियन्त्रण से इतने बाहर थे कि यदि कोई चिन्तक दार्शनिक उससे यह कहता कि 'अपने लिए उपयोगी परिस्थितियों का जल्दी से जल्दी लाभ उठाने का प्रयत्न करो, पेरिस के इस उच्च जातीय प्रेम में एक ही भाव-दशा दो दिन से अधिक नहीं टिकती,' तो यह बात उसकी समझ में न आती। किन्तु अधिक से अधिक उत्तेजित होने पर भी जुलिये को अपने सम्मान का ध्यान बराबर था। उसका पहला कर्तव्य विवेक का था, इतना वह समझता था। किसी से सलाह माँग सकने में, किसी भी व्यक्ति को अपने दुःख-दर्द की कहानी सुना सकने में, उसे वैसा ही सुख मिलता जैसा जलते हुए रेगिस्तान में चलने वाले यात्री को आकाश से हिमशीतल जल की बूँद मिलने से होता है। पर वह अपने सकट को समझता था, उसे भय था कि किसी के कोई प्रश्न पूछते ही कहीं आँसुओं की धार के साथ बाकी सब कुछ भी उसके मुँह से न निकल जाये। इसलिए वह अपने कमरे को भीतर से बन्द करके बैठा रहा।

उसने मातिल्द को बहुत देर तक बाग में टहलते देखा। आखिरकार जब वह चली गयी तो वह उतरकर वहाँ पहुँचा और उस गुलाब के पेड़ के पास जा खड़ा हुआ जिससे उसने एक फूल तोड़ा था।

रात आँवेरी थी और यहाँ वह खुलकर अपने दुःख को प्रगट कर सकता था, किसी के देखने का डर वहाँ नहीं था। अब उसे यह विश्वास हो गया था कि माद० द ला मोल उन नौजवान अफसरों में से ही किसी को प्यार करती है जिनसे वह अभी-अभी इतनी हँस हँसकर बातें कर रही थी। कभी उन्होंने उसे भी प्यार किया था, पर अन्त में वह उसकी अयोग्यता पहचान गयी थी।

और सचमुच, मैं हूँ ही किस योग्य ? उसने पूरे-पूरे विश्वास के साथ

मन ही मन कहा । कुल मिलाकर मैं बहुत ही नीरम व्यक्ति हूँ, साधारण, दूसरों को उबा देने वाला तथा बिना कुल निकम्मा । अपने जिन-जिन अच्छे गुणों को वह कभी इतने उत्साह से प्यार करता था, इस समय वह उन सब से बेजार था । इस विकृत कल्पना की अवस्था में वह जीवन की व्याख्या करने लगा । उच्च शक्ति का व्यक्ति प्रायः यही भूल करता है । कई बार आत्महत्या का विचार भी उसके मन में आया । यह कल्पना बड़ी आकर्षक लगती थी । वह चरम आनन्दपूर्ण विश्राम की, मरुभूमि के ताप में प्यास में मरते हुए व्यक्ति को हिमशीतल जल मिलने की कल्पना थी ।

मेरे प्रति उसके मन का तिरस्कार मेरी मृत्यु से और भी बढ़ जायेगा । वह चीख उठा । अपनी कंसी स्मृति में पीछे छोड़ जाऊँगा ।

दुख के गहरे गर्त में पड़े व्यक्ति के लिए साहस के सिवाय और कोई सहारा नहीं । जुलिये में इतनी बुद्धि न थी कि अपने आपसे कह सके मुझे साहसी होना चाहिए । पर जैसे ही उसने नज़र उठाकर मातिल्द के कमरे की खिड़की की ओर देखा तो भिलमिनियो में से उसे दिखाई पड़ा कि वह रोशनी बुझा रही है । वह अपने मन में उस सुन्दर कमरे की कल्पना करने लगा जिसको उसने जीवन में हाय । बस एक बार ही देखा । उसकी कल्पना और आगे नहीं गयी ।

घड़ी ने एक का घण्टा बजाया । उसे सुनने से लेकर मन ही मन यह कहने में कि मैं सीढ़ी से ऊपर जा रहा हूँ, क्षण भर ही लगा होगा ।

यह जैसे प्रतिभा की कौध थी, पक्के ठोस कारण तो सब बाद में ध्यान में आये । जो दुरवस्था मेरी इस समय है, उससे बुरी और क्या होगी । उसने मन ही मन कहा । वह सीढ़ी लेने के लिए दौड़ पड़ा, माली ने उसे जजीर से बाँध रक्खा था । जुलिये इस समय किसी अमानवीय शक्ति से प्रेरित था । उसने अपनी जेबी पिस्तौल को तोड़कर हथौड़ा बनाया और उससे जजीर की कडी को टेढ़ा कर डाला । कुछ ही क्षणों में उसकी बाधा दूर हो गयी और उसने सीढ़ी ले जाकर मातिल्द

को खिडकी से टिका दी ।

वह क्रुद्ध होगी, अपनी घृणा से मुझे आक्रांत कर देगी, पर उससे क्या ? मैं उसे प्यार करूँगा, एक अंतिम चुम्बन, और फिर अपने कमरे में जाकर अपने जीवन का अन्त कर दूँगा । मरने से पहले मेरे होठों को उसके गालों का स्पर्श तो मिल जायगा ।

सीढ़ी के ऊपर वह मानो उड़ा चला गया । उसने धीमे से झिलमिली को थपथपाया, एक-दो सैकिण्ड में ही मातिल्द ने उसकी आवाज़ सुन ली । उसने झिलमिली खोलने की कोशिश की, पर सीढ़ी बीच में थी । जुलिये खिडकी खुली रहने के लिए लगे हुए लोहे के एक टुकड़े से लटक गया और कई बार नीचे गिर पड़ने की जोखिम उठाकर भी उसने एक झटका देकर सीढ़ी को थोड़ा-सा खिसका दिया । मातिल्द ने झिलमिली खोल दी ।

वह कमरे में जीवित से अधिक मृत जैसा आकर गिरा ।

“तो तुम हो, प्रिय ।” मातिल्द ने कहा और उसकी बाहों में बँध गई ।

जुलिये के सुख की तीव्रता का वर्णन कौन कर सकता है ? मातिल्द की खुशी भी लगभग उसके बराबर ही थी ।

वह उससे अपने ही विरुद्ध बातें कहने लगी, उसके आगे अपने ऊपर अभियोग लगाती रही ।

“मुझे मेरे भयंकर गर्व के लिए सज़ा दो,” वह उससे बोली और उसे इतने कसकर चिपटा लिया कि जुलिये का दम घुटने लगा । “तुम मेरे स्वामी हो, मैं तुम्हारी दासी हूँ । मैं घुटनों के बल बैठकर तुमसे भीख माँगती हूँ, मेरे विद्रोह के लिए मुझे क्षमा कर दो ।”

वह उसकी बाहों से फिसल कर पैरों पर गिर पड़ी । “हाँ प्रियतम, तुम मेरे स्वामी हो,” प्रेम और हर्ष के उन्माद में वह बराबर यही दोहराती रही । “मेरे ऊपर चिरकाल तक राज करो, तुम्हारी दासी जब भी विद्रोह करना चाहे, उसे कठोर दण्ड दो ।”

दूसरे ही क्षण वह उसके आलिंगन से छूटकर एक मोमबत्ती जलाने लगी। जुलिये ने बहुत ही कठिनाई से उसे अपने एक ओर के बालों को काट डालने से रोका।

“मैं सदा अपने आपको यह याद दिलाना चाहती हूँ कि मैं तुम्हारी बाँदी हूँ,” वह बोली। “यदि मेरा गर्हित दर्प कभी मुझे बहका ले जाय तो तुम यह बालों की लट दिखाकर कहना : ‘अब सवाल प्रेम का नहीं है, इससे कोई मतलब नहीं कि इस समय तुम्हारे हृदय में कौन-सा भाव आ रहा है। तुमने तो मेरी आज्ञा मानने की सौगन्ध खाई है, इसलिए तुम्हें मेरी आज्ञा माननी ही पड़ेगी।’”

किन्तु ऐसे विक्षिप्त और उन्मादपूर्ण आनन्द और सुख का वर्णन छोड़ देना ही बुद्धिमानी है।

जुलिये का आत्मसंयम उसके सुख के बराबर ही था। जब बगीचे के पार चिमनियों के ऊपर पूरब में उषा झाँकने लगी तो उसने मानित्व से कहा, “मुझे सीढ़ी से ही लौटना चाहिए। इसके लिए जो त्याग मुझे करना पड़ेगा वह तुम्हारे योग्य ही है। मैं अपने आपको कुछ घण्टों के ऐसे अभूतपूर्व सुख से वचन कर रहा हूँ जो मनुष्य के लिए सर्वथा दुर्लभ है। यह त्याग तुम्हारी प्रतिष्ठा के लिए ही है, यदि तुम मेरे हृदय को पहचानती हो तो समझोगी कि मैं अपनी भावनाओं के साथ कितना अत्याचार कर रहा हूँ। क्या मेरे प्रति तुम्हारा प्यार सदा ऐसा ही बना रहेगा ? पर सम्मान का आह्वान सुनाई पड़ रहा है और वह पर्याप्त है। एक बात मैं तुम्हें बता दूँ कि हमारी पहली भेट के बाद सन्देह केवल चोरो के विरुद्ध ही नहीं हुआ है। म० द ला मोल ने बगीचे में चौकीदार रखवा दिये हैं। म० क्रावाजन्वा तो हर समय गुप्तचरो से घिरे रहते हैं, रोज़ रात में वह जो भी करते हैं उसका पता चल जाता है।”

यह सुनकर मातिल्द बड़े जोर से हँसी। उसकी माँ और एक नौकरानी जाग गयी। एकाएक उसे दरवाज़े पर किसी की आवाज़ सुनायी पड़ी। जुलिये मातिल्द की ओर देखने लगा। नौकरानी को डाँटते समय

उमका चेहरा पीला पड़ गया था। अपनी माँ से उसने एक शब्द भी नहीं कहा।

“किन्तु यदि वे खिड़की खोल बैठी तो सीढ़ी दीख जायेगी,” जुलिये ने कहा।

उसने एक बार फिर मातिल्द का आलिंगन किया, जल्दी से सीढ़ी पर पहुँचा, और उतरा नहीं बल्कि खिसककर नीचे आ गया, पल भर में वह धरती पर था।

तीन सैकिण्ड बाद सीढ़ी नीबुओं के नीचे थी और मातिल्द का सम्मान सुरक्षित था। होश आने पर जुलिये ने अपने आपको आधा नगा और खून से लथपथ पाया। जल्दी से नीचे उतरने में उसका बदन कई जगह से छिल गया था।

सुख की तीव्रता ने उसकी समस्त चरित्र-शक्ति को फिर से लौटा दिया। उस समय यदि बीस आदमी भी उसके सामने होते तो उन पर निहृते अकेले ही आक्रमण करने में भी उसे प्रसन्नता होती। सौभाग्यवश उसकी सैनिक वीरता की परीक्षा का अवसर नहीं आया। उसने सीढ़ी यथास्थान रख दी और उसे जजीर से पहले की भाँति ही बाँध दिया। लौटकर वह मातिल्द की खिड़की के नीचे सुन्दर फूलों की क्यारी में बने सीढ़ी के निशानों को मिटाना भी न भूला।

जिस समय वह अंधेरे में नरम मिट्टी के ऊपर हाथ फेरकर निशान मिटा रहा था, उसे लगा उसके हाथ पर कोई चीज गिरी। मातिल्द ने एक ओर के अपने सारे बाल काटकर डाल दिये थे।

वह खिड़की पर ही खड़ी थी और काफी जोर से बोली, “देखो, तुम्हारी दासी तुम्हारे लिए क्या भेज रही है। यह मेरी चिरन्तन आधीनता का स्मरण-चिह्न है। आज से मैं अपने विवेक के प्रयोग का परित्याग करती हूँ, प्रियतम, मेरे स्वामी तुम्हीं हो।”

जुलिये बहुत ही भाव-विह्वल हो उठा। उसकी तीव्र इच्छा हुई कि फिर से सीढ़ी ले आये और चढ़कर उसके कमरे में पहुँच जाये पर अन्त

मे विवेक का पलड़ा भारी पड़ा ।

बगीचे से घर में प्रवेश करना आसान काम न था । वह एक तहखाने के दरवाजे को तोड़कर अन्दर आया । भीतर उसे अपने कमरे का द्वार भी यथासम्भव चुपचाप तोड़कर खोलना पड़ा । उत्तेजना में वह अपनी सारी चीजे उस छोटे से कमरे में ही छोड़ आया था जहाँ से उसे ऐसी जल्दी में भागना पड़ा था । इनमें उसके कोट की जेब में पड़ी हुई उसकी चाभी भी थी । वह सोचने लगा कि कहीं मातिल्द उन सब कपड़ों को छिपाना न भूल जाये ।

आखिरकार थकान ने सुख के ऊपर काबू पा लिया और मूरज उगने के साथ-साथ वह गहरी नीद में सो गया । दोपहर को भोजन की घण्टी बजने पर वह बड़ी कठिनाई से उठा और तैयार होकर भोजन-गृह में पहुँचा । थोड़ी देर बाद मातिल्द भी अन्दर आयी । सब ओर से इतनी सम्मानित-समादृत नारी की आँखों में प्यार के आलोक की किरन देखकर जुलिये के चित्त को बड़ी शान्ति मिली । पर शीघ्र ही अपनी दूरदर्शिता के कारण उसे सकट की सभावना दिखाई दी ।

समय न मिलने के बहाने मातिल्द ने अपने बाल जान-बूझकर विशेष ढंग से बाँध रखे थे । जुलिये उसे देखते ही समझ गया कि पिछली रात बाल काटकर उसने कितना बड़ा त्याग किया है । यदि उसके सलोने मुख की सुन्दरता भी किसी भाँति नष्ट हो सकनी होती तो मातिल्द वह भी कर बैठती । उसके सुन्दर हल्के-सुनहले बाल एक ओर से इतने अधिक कट गये थे कि कोई आध इंच से अधिक न बचे थे ।

भोजन के समय मातिल्द का सारा व्यवहार अदूरदर्शिता के इस पहले कार्य के अनुरूप ही था । बल्कि ऐसा लगता था मानो जुलिये के प्रति अपना पागल प्रेम सब पर जता देना उसने अपना कर्तव्य मान लिया हो । पर भाग्यवश म० द ला मोल और मार्किज उस दिन एक अन्य बात में उलझे हुए थे । निकट भविष्य में ही कुछ लोगों को नीला फीता मिलने वाला था । पता चला था कि उस सूची में म० द शोन का नाम

नहीं है। भोजन खत्म होने के पहले मातिल्द ने जुलिये से बातचीत करते-करते एक बार उसे स्वामी कहकर सम्बोधित कर डाला। लज्जा से उसका रोम-रोम लाल हो उठा।

सयोगवश अथवा मादाम द ला मोल की योजनावश उस दिन मातिल्द को एक मिनट के लिए भी अकेले रहने का अवसर न मिला। किन्तु शाम को भोजन गृह से ड्राइंग रूम में जाते-जाते अवसर पाकर उसने जुलिये से कहा “इसे मेरा काम न समझ बैठना, पर ममी ने अभी-अभी निश्चय किया है कि अबसे उनकी एक नौकरानी रात को मेरे कमरे में सोया करेगी।”

दिन बिजली की तरह निकल गया, जुलिये सुख के शिखर पर था। अगले दिन सबेरे सात बजे से ही वह पुस्तकालय में जा बैठा। उसे उम्मीद थी कि माद० द ला मोल अवश्य वहाँ आयेगी। उसने उनके लिए एक बहुत लम्बा पत्र लिख रक्खा था।

पर दोपहर को भोजन के पहले मातिल्द से उसकी भेंट न हो सकी। उस दिन उसके बाल बहुत ही सावधानी से बने हुए थे, बड़ी अद्भुत चतुराई से कटे हुए बालों के स्थान को छिपा दिया गया था। मातिल्द ने एक-दो बार जुलिये की ओर देखा पर उसकी आँखों का भाव शान्त और शिष्टतापूर्ण था, अब जुलिये को ‘स्वामी’ कहकर पुकारने की कोई आवश्यकता न थी।

विस्मय से जुलिये की साँस रुक गयी— क्या अब उसे अपने किये पर पछानावा हो रहा है ?

गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर मातिल्द अब इस निश्चय पर पहुँची थी कि जुलिये यदि एकदम साधारण व्यक्ति नहीं, तो कम से कम साधारण लोगो से इतना भिन्न भी नहीं है कि उसके लिए ये सब मूर्खताएँ की जाये। कुल मिलाकर प्रेम की बात उसके मन में तनिक भी न थी; प्रेम से उस दिन वह कुछ उकताई हुई थी।

जुलिये के हृदय की प्रतिक्रियाएँ उस समय सोलह वर्ष के बालक के

समान थी । उसे लग रहा था कि भोजन कभी समाप्त ही न होता, पूरे समय भयकर सन्देह, विस्मय और निराशा एक-एक करके उसे दबोचते रहे ।

जैसे ही अशिष्ट हुए बिना मेज से उठना सम्भव हुआ, वह उठा और तुरन्त अस्तबल की ओर झपटा, उसने स्वयं ही घोड़े पर जीन कसी और बैठकर सरपट चल पड़ा । उसे भय था कि कहीं कोई दुर्बलतापूर्ण कार्य न कर बैठे । म्यूदो के जगलो में घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए उसने मन ही मन कहा कि अब शरीर को थकाकर हृदय को मार डालना ही उचित है । मैंने ऐसा कौन-सा कान किया है, ऐसी कौन-सी बात कही है जो ऐसे अपमान के योग्य समझा जाऊँ ?

घर लौटने पर उसने सोचा कि आज मुझे न कुछ करना चाहिए और न कुछ कहना चाहिए, आत्मा की भाँति ही शरीर से भी मृत होना चाहिए । जुलिये अब जीवित नहीं, उसका शव ही अब तक बेचैनी में डोल रहा है ।

: २० :

जापानी फूलदान

भोजन की घण्टी बज रही थी, जुलिये को बस कपड़े बदलने का ही समय मिल सका। मातिल्द ड्राइंग रूम में ही थी और अपने भाई तथा म० द क्रवाजन्वा से आग्रहपूर्वक अनुरोध कर रही थी कि वे लोग शाम को मार्शल की विधवा मादाम द फेरवाक् के यहाँ न जाये।

उन्हे लुभाने और आकर्षित करने के लिए उसने कोई बात न उठा रखी। भोजन के बाद म० द लुज, म० द केलुस और उनके कई एक मित्र आ पहुँचे। आज माद० द ला मोल को देखकर कोई भी यह कहता कि भ्रातृ-प्रेम के साथ-साथ कठोरतम रूढ़ियों का पथ उन्होंने फिर से अपना लिया है। मौसम बहुत ही सुन्दर होने पर भी उन्होंने आग्रह किया कि बगीचे में न चला जाय। लगता था उन्होंने निश्चय कर रखा है कि मादाम द ला मोल की आराम-कुर्सी के पास से किसी को हटने न देगी। जाड़ों की भाँति ही नीला सोफा मडली का केन्द्र बना रहा।

बाग से मातिल्द को विरक्ति हो गयी थी, या कम से कम बिलकुल अरुचिकर तो लग ही रहा था—उसके साथ जुलिये की स्मृति जुड़ी हुई थी।

दुख मन को जड़ कर देता है। हमारे नायक ने मूर्खता यह की कि वह उस छोटी-सी बेत की कुर्सी पर जम गया जहाँ उसने पहले ऐसी शान-दार विजय के दृश्य देखे थे। उस दिन उससे कोई एक शब्द भी न बोला। वहाँ उसकी उपस्थिति पर शायद किसी का ध्यान ही न गया। या शायद

इससे भी अधिक खराब स्थिति थी। माद० द ला मोल के जो मित्र सोफे पर उसके पास बैठे थे उन्होंने उसकी ओर से पीठ मोड़ रखी थी, कम से कम जुलिये को ऐसा ही लगा।

इस समय दरबार में मेरे ऊपर कृपा नहीं है। उसने उन लोगों पर नज़र रखने का निश्चय किया जो उपेक्षा द्वारा उसका अपमान करने की कोशिश कर रहे थे।

म० द लुज के चाचा राजमहल में एक महत्वपूर्ण पद पर थे। फलस्वरूप यह सुन्दर युवक अफसर हर आगतुक के साथ बातचीत इस दिलचस्प समाचार के साथ शुरू करता कि उसके चाचा सात बजे से-क्यू चले गये थे और रात को वहीं रहेगे। यह समाचार देखने में बहुत ही सहज ढंग से लाया जाता पर कभी छूटता न था।

म० द क्रवाजन्वा को दुख भरी कठोर दृष्टि से देखते हुए जुलिये का ध्यान इस ओर गया कि अच्छे स्वभाव के इस हँसमुख युवक का जादू-टोने में बड़ा ही विश्वास था। छोटी से छोटी घटना का भी कोई सरल और एकदम स्वाभाविक कारण बताते ही वह खिन्न और चिड़चिड़ा हो जाता। जुलिये सोचने लगा कि इसमें कुछ-कुछ पागलपन का लटका है। जैसा ग्रिन्स कोरासौफ ने बताया था, यह चरित्र सम्राट् ऐलेक्जेंडर में बहुत मिलता-जुलता है। पेरिस में प्रथम वर्ष में बेचाग जुलिये अभी-प्रभी शिक्षा-मठ में निकलकर आने के कारण और इन हँसमुख नौजवानों की नयी-नयी चाल-ढाल से प्रभावित होने के कारण उनकी प्रशंसा ही कर पाता था। उनका वास्तविक चरित्र तो अब उसके आगे ठीक-ठीक उभर रहा था।

एकाएक उसे अनुभव हुआ कि यहाँ बैठकर मैं बहुत ही हीन कार्य कर रहा हूँ। किन्तु इस छोटी-सी बात की कृमि से इस भाँति कैसे उठा जाय कि बहुत भद्दा न लगे। उसने अपनी पहले से ही कही और उाँकी हुई कल्पना-शक्ति से कोई नया उपाय सोचने की कोशिश की। उसे एकमात्र भरोसा अपनी स्मरण-शक्ति का ही था, जो ऐसे साधनों में

तनिक भी समृद्ध न थी। बेचारा लड़का अभी तक दुनिया के रंग-ढंग से कम ही अभ्यस्त था। इसलिए जब आखिरकार वह ड्राइंग रूम से जाने लगा तो उसके ढंग में कुछ ऐसा भद्दापन था जो खटकता था। उसके समूचे ढंग से कुछ टपक रहा था। पौन घण्टे से वह निम्न स्तर के दीन व्यक्ति की भाँति वहाँ बैठा था, जिससे किसी को अपने मन की बात छिपाने तक की जरूरत न थी।

किन्तु इस बीच उसने अपने प्रतिद्वन्दी को पैनी दृष्टि से देखा जिससे अपने दुर्भाग्य को वह बहुत अतिरजित न कर पाया। अपने गर्व की रक्षा के लिए अभी भी उसके पास दो दिन पूर्व की घटना की स्मृति मौजूद थी। बगीचे में अकेले जाते-जाते वह सोचने लगा कि ये लोग मुझसे और चाहे जिन बातों में श्रेष्ठ हों, उनमें से किसी को मातिल्द से कभी वह दान नहीं मिला है जो मुझे वह अपने जीवन में दो बार दे चुकी है।

उसकी बुद्धि और आगे नहीं गयी। वह उस असाधारण नारी के चरित्र को तनिक भी न समझ सका जो पिछले दिनों संयोगवश उसके समस्त सुख की एकछत्र स्वामिनी बन गयी थी।

अगले दिन भी वह अपने आपको और अपने घोड़े को बहुत बुरी तरह थकाकर चूर कर देने के कार्य में ही लगा रहा। उस दिन शाम को उसने नीले सोफे के समीप जाने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

उसका ध्यान इस बात की ओर भी गया कि घर में काउन्ट नौबैर ने भेंट होने पर उसकी ओर नज़र तक न डाली। वह सोचने लगा कि इस सहज शिष्ट व्यक्ति को ऐसा व्यवहार करने में अपने साथ बड़ा अत्याचार करना पड़ता होगा।

इस अवस्था में नींद जुलिये के लिए वरदान सिद्ध होती। शारीरिक थकान के बावजूद अत्यन्त ही लुभावनी-सी स्मृतियाँ उसकी समग्र कल्पना को आच्छादित करने लगी। उसमें यह देखने की बुद्धि न थी कि घोड़े पर बैठकर पेरिस के चारों ओर के जंगलों में दूर-दूर तक भटकने का प्रभाव केवल उस पर ही पड़ता है, किसी भाँति भी मातिल्द के मन या

हृदय पर नहीं। तथा वह यह भी न देख रहा था कि इस प्रकार अपने भाग्य का निपटारा वह नियति के हाथों सौंप रहा है।

उसे लगता था कि इस दुख में केवल एक ही चीज़ से उसे सात्वना मिल सकती है, और वह है मातिल्द से बातचीत। पर वह उससे कौन सी बात कहने का साहस करेगा ?

एक दिन सबेरे सात बजे वह इसी सोच-विचार में डूबा था कि उसने मातिल्द को पुस्तकालय में आते देखा।

‘मुझे पता चला है, महाशय जी, आप मुझमें बातचीत करना चाहते हैं।’

‘हे भगवान् ! यह तुममें किसने कहा ?’

‘बस जानती हूँ, इससे क्या आता-जाता है कि कैसे ? यदि आप में सम्मान की भावना न हो तो आप मेरा सर्वनाश कर सकते हैं, या कम से कम इसका प्रयत्न तो कर ही सकते हैं। पर एक तो मैं ऐंसे मकट को वास्तविक नहीं समझती और दूसरे, उसके कारण मैं सत्य से आँखें नहीं मोड़ सकती। मुझे आपसे कोई प्रेम नहीं, मेरी विक्षिप्त कल्पना ने मुझे धोखा दिया।’

जुलिये प्रेम और दुख से विक्षिप्त-सा तो था ही, इस भयकर आघात के उत्तर में वह अपनी सफाई देने की कोशिश करने लगा। इससे अधिक मूर्खतापूर्ण कोई बात नहीं हो सकती थी। प्रसन्न न कर सकने की कोई क्या सफाई दे सकता है ? किन्तु उसके कार्यों के ऊपर विवेक का कोई अकुश न बचा। एक प्रकार की अन्ध-प्रवृत्ति उसे अपने भाग्य के निपटारे को कुछ देर के लिए ही सही, टाल देने को प्रेरित कर रही थी। उसे लगता था कि जब तक वह कुछ न कुछ कहता रहेगा तब तक मानो अंत रुका रहेगा। मातिल्द ने उसके शब्दों को नहीं सुना, उनकी आवाज़ से ही उसे चिढ़ हो रही थी। वह सोच भी न सकती थी कि उसकी बात बीच में से काटने का साहस जुलिये को कैसे हुआ।

शील-चेतना-जन्य पश्चात्ताप आहत अभिमान की प्रतिहिंसा से उस

दिन मातिल्द भी उतनी ही दुखी थी। वह इस भयकर विचार से एक प्रकार से टूक-टूक हुई जा रही थी कि एक तुच्छ कृषक पुत्र पुरोहित को उसने अपने ऊपर इतना अधिकार दे डाला। अपने दुर्भाग्य को अतिरजित करके देखने पर वह सोचने लगती यह तो अपने किसी दरबान के साथ पक्षपात कर बैठने के बराबर है।

अभिमानि और साहसी व्यक्तियों के लिए अपने प्रति क्रोध से दूसरो के प्रति भयानक विश्वास के बीच केवल एक ही कदम की दूरी है। ऐसी परिस्थिति में उन्हें प्रचण्ड रोष भाव से बड़ी गहरी प्रसन्नता मिलती है।

पल भर में ही माद० द ला मोल जुलिये के ऊपर तीव्रतम धिक्कार की वर्षा करने लगी। उनकी सूझ और उपज असीम थी। यह सूझ और उपज दूसरो के स्वाभिमान को निर्मम होकर आहत और पीड़ित करने की कला में ही अधिक से अधिक खुलकर प्रगट होती थी।

जीवन में पहली बार जुलिये का अपने विरुद्ध तीव्रतम घृणा से उदीप्त श्रेष्ठतर बुद्धि के कार्यों से सामना हुआ। उस क्षण में अपने बचाव की क्षीणतम इच्छा के बजाय वह स्वयं आत्म-तिरस्कार की स्थिति में पहुँच गया था। मातिल्द की ये तिरस्कारपूर्ण बातें बड़ी चतुराई के साथ इस उद्देश्य से कही जा रही थी कि अपने विषय में जुलिये की कोई भी अच्छी धारणा हो तो नष्ट हो जाये। उन्हें सुनकर उसे सच-मुच यही लगा कि मातिल्द की बात ही सही है, तथा वह और भी कहे तो अच्छा है।

मातिल्द के दर्प को इसमें बहुत परितोष मिल रहा था, क्योंकि इस प्रकार वह कुछ दिन पहले उत्पन्न होने वाले जुलिये के प्रति अन्ध प्रेम के लिए अपने आप को तथा उसे दण्ड दे रही थी।

जो निष्ठुरतापूर्ण बातें वह इतने आनन्द के साथ उससे कह रही थी वे उसे आज पहली ही बार नहीं सूझी थी। वह तो केवल उन्हीं बातों को दोहरा रही थी जो पिछले एक सप्ताह से उसके हृदय में आरोप

लगाने वाला वकील कहता रहा था। उसके प्रत्येक शब्द से जुलिये का भयकर सन्ताप सौ गुना बढ़ जाता था। उसने भागने का प्रयत्न किया, पर माद० द ला मोल ने बड़े अधिकार के साथ उसकी बाँह को पकड़ लिया।

“कृपा करके यह तो सोचिये,” उसने मातिल्द से कहा, “कि आप बहुत जोर से बोल रही है। आपकी बात दूसरे कमरे में सुनाई पड़ेगी।”

“उससे क्या होता है।” माद० द ला मोल ने गर्व के साथ उत्तर दिया। “मुझसे यह कहने का साहम किसे होगा कि उसने मेरी बात सुनी है? मैं आज सदा के लिए आपके उस क्षत्र घमण्ड का इलाज कर देना चाहती हूँ जिसके कारण शायद आपके मन में मेरे बारे में कोई धारणा बन गयी हो।”

आखिरकार जब जुलिये लाइब्रेरी से निकला तो वह इतना चकित था कि उसे अपना दुःख भी इतनी तीक्ष्णता से अनुभव नहीं हो रहा था। “तो यह मामला है। अब वह मुझे प्यार नहीं करती।” यह बात वह बार-बार दोहराता रहा। इसे वह जोर-जोर से कहता मानो अपने आपको अपनी स्थिति की सूचना दे रहा हो। अब तो ऐसा लगता है कि वह तो मुझे हफ्ते दस दिन के लिए प्यार करके छुट्टी पा गयी, पर मैं उसे जीवन भर प्यार करता रहूँगा। क्या यह सच हो सकता है कि केवल कुछ ही दिन पहले उसका मेरे हृदय में कोई भी, एकदम कोई भी, स्थान न था!

मातिल्द का हृदय परितृप्त अभिमान के आनन्द से उमड़ रहा था। वह उससे सदा के लिए सम्बन्ध-विच्छेद करने में सफल हो गयी। इतने भारी लगाव के ऊपर ऐसी सम्पूर्ण विजय की कल्पना ने उसे एकदम प्रसन्न कर दिया। वह सोचने लगी कि अब यह सज्जन सदा के लिए समझ जायेंगे कि इन्हे मेरे ऊपर न तो कोई अधिकार प्राप्त है, न कभी होगा। वह इतनी प्रसन्न थी कि उस क्षण वह सचमुच यह अनुभव करने लगी कि अब उसे जुलिये से तनिक भी प्यार नहीं रहा।

ऐसे भयकर अपमान के बाद जुलिये से कम भाव-प्रवण व्यक्ति के लिए

तो प्रेम असम्भव ही हो जाता। माद० द ला मोल ने एक क्षण के लिए भी अपने हित की बात भूले बिना जुलिये से कुछ ऐसी अत्रिय बातें कह डाली थी जो ठंडे दिमाग से याद करने पर भी इतनी सच्ची जान पड़ती हैं।

इस आश्चर्यजनक अनुभव से जुलिये ने सबसे पहला निष्कर्ष तो यह निकाला कि मातिल्द के गर्व की कोई सीमा नहीं। उसे पक्का विश्वास हो गया कि उनके सम्बन्ध सदा के लिये टूट गये, फिर भी अगले दिन भोजन के समय वह उसकी उपस्थिति में सकोच और घबराहट दोनों ही अनुभव करता रहा। आज तक यह दोष उसमें कभी किसी ने न पाया था। छोटी और बड़ी हर तरह की परिस्थिति में वह यह निश्चित पहचान लेता था कि वह क्या चाहता है, तथा उसे क्या करना चाहिए, और वह उसे पूरा भी कर डालता था।

उस दिन भोजन के बाद मादाम द ला मोल ने उससे एक राजविरोधी किन्तु दुर्लभ पुस्तिका माँगी जो उनके देहात का पुरोहित उसी दिन सबेरे चुपचाप उनके लिए लाया था। एक किनारे रक्खी हुई मेज की दराज से निकालते-निकालते जुलिये ने नीली चीनी के एक अत्यन्त ही भोड़े किन्तु प्राचीन फूलदान को गिरा दिया।

मादाम द ला मोल दुख से चीखकर खड़ी हो गयी और आगे बढ़ कर अपने प्रिय फूलदान के टुकड़ों को देखने लगी। वह बोली “यह प्राचीन जापानी फूलदान था जो मुझे मेरी पड़दादी आबेस्स द शैल से मिला था। जब ओरल्या ड्यूक राज्य-संचालक थे उस समय डच लोगो ने उन्हें भेंट किया था और वही उन्होंने बाद में अपनी बेटी को दे दिया था...” मातिल्द भी अपनी माँ के पीछे-पीछे वहाँ चली आई थी। वह बेहद भड़े कुरूप नीले फूलदान के टूटने से बड़ी प्रसन्न हुई। जुलिये चुप रहा और बहुत अधिक परेशान भी न हुआ। उसने माद० द ला मोल को अपने बहुत समीप खड़ा देखा।

वह उनसे बोला, “यह फूलदान सदा के लिए नष्ट हो गया, यही

हाल उस भावना का भी है जिसने कभी मेरे हृदय को बस मे कर रक्खा था। उसके कारण मुझ से जो भी मूर्खताएँ हुईं उनके लिए कृपया मेरी क्षमा-याचना स्वीकार करे।” इतना कहकर वह कमरे के बाहर चला गया।

उसे जाते हुए देखकर मादाम द ला मोल ने कहा, “उसके ढगसे तो यह लगता है कि उसे बड़ा घमंड है और जो कुछ किया है उससे प्रसन्न भी है।”

उनके शब्द मातिल्द के हृदय में सीधे उतर गये। उसने मन ही मन कहा कि ठीक है, मेरी माँ ने ठीक ही समझा है, सचमुच वह यही अनुभव करता है। इसके बाद उसके मन में दो दिन पहले के उम वार्नालाप की सारी खुशी गायब हो गयी। उसने ऊपरी शान्ति के साथ मन ही मन कहा, ठीक है, सब भगडा मिटा। मुझे भी बड़ी भारी शिक्षा मिल गयी। मुझ से भयकर और अपमानजनक भूल हुई है। उससे मुझे अब जीवन भर समझ मिलती रहेगी।

मैंने सच बात क्यों नहीं कही? जुलिये सोचने लगा। इस पागल लड़की के लिये मैं जो प्रेम अनुभव करता हूँ वह अभी तक मुझे क्यों त्रास दे रहा है?

उसने सोचा था कि यह प्रेम मर जायेगा, पर इसके बजाय वह और भी तेजी से बढ़ने लगा। वह मन ही मन कहता : यह ठीक है कि वह बिल्कुल पागल है, पर क्या वह इस कारण कम प्यारी लगनी है? उससे अधिक सुन्दर कोई और हो सकता है? सम्यता जो भी सूक्ष्म से सूक्ष्म आनन्द प्रदान करती है वह क्या पूरी तरह माद० द ला मोल में वर्तमान नहीं है? पिछले सुख की इस स्मृति ने जुलिये के मन को आच्छादित कर लिया और विवेक के सारे बाँध तोड़ दिये। ऐसी स्मृतियों के विरुद्ध विवेक का संघर्ष व्यर्थ ही होता है, उसके कठोर उपायो से उनका आकर्षण बढ़ता ही है।

पुराने जापानी फ़ून्दान टूटने के चौबीस घण्टे बाद जुलिये निश्चित रूप से अत्यन्त ही दुखी व्यक्ति था।

: २१ :

गुप्त पत्र

मार्कि ने उसे बुला भेजा । म० द ला मोल का कायाकल्प-सा हुआ जान पड़ता था, उनकी आँखें बहुत ही चमक रही थी ।

“कुछ अपनी स्मरण-शक्ति के बारे में बताओ,” उन्होंने जुलिये से कहा । “सुना है कि वह बहुत ही अद्भुत है । क्या तुम चार पृष्ठ कण्ठस्थ करके उन्हें लन्दन जाकर सुना सकते हो ? एक भी शब्द इधर से उधर किये बिना ?”

मार्कि कुछ क्रुद्ध से भाव से उस दिन के ‘कोतिदेन’ के पन्ने उलट-पलट रहे थे और व्यर्थ ही एक बहुत ही गम्भीर मुख-मुद्रा को हल्का बनाने का प्रयत्न कर रहे थे । जुलिये ने ऐसा भाव उनके मुख पर कभी न देखा था, जिन दिनों वे फ्रिनेर के मुकदमे पर विचार करते थे उन दिनों भी नहीं ।

अब तक जुलिये सभ्य समाज के आचार-व्यवहार से काफी परिचित हो चुका था । वह जानता था कि उसे मार्कि के हल्के कण्ठ-स्वर पर पूरा-पूरा विश्वास करने का भाव दिखाना चाहिये ।

“कोतिदेन” का यह अंक शायद बहुत रोचक नहीं है, किन्तु यदि आप आदेश दे तो कल मैं इसे शुरू से आखिर तक याद करके सुना दूँगा ।”

“क्या । विज्ञापन तक ?”

“बिलकुल ठीक-ठीक, और एक भी शब्द छोड़े बिना ।”

“क्या तुम मुझे इसका पक्का वचन देते हो ?” मार्कि ने अचानक गम्भीर होकर कहा ।

“हाँ श्रीमान्, केवल अमफल होने का भय मेरी स्मृति को भने ही धुँधला कर दे ।”

“कल मैं तुम से यह बात पूछना भूल गया था । मैं तुम से सौगन्ध खाने को कभी न कहूँगा कि जो कुछ तुम सुनने वाले हो उसे कभी किसी के आगे दोहराना मत, मैं तुम्हें इतना अधिक जानता हूँ कि यह कह कर तुम्हारा अपमान नहीं करूँगा । मैंने तुम्हारी ओर से आश्वासन दे दिया है, और अब मैं तुम्हें एक कमरे में ले चलाऊँगा जहाँ बारह व्यक्ति इकट्ठे होंगे । तुम्हें प्रत्येक व्यक्ति की बातों को निख लेना होगा ।

“घबराओ नहीं, बातचीत बे-सिर-पैर की नहीं होगी । सब व्यक्ति बारी-बारी से बोलेंगे, यद्यपि किसी औपचारिक-क्रम से नहीं.” मार्कि ने अपने स्वाभाविक पैने तथा चतुरतापूर्ण ढंग से आगे कहा । “हम लोगों की बातचीत के कोई बीस पन्ने बनेंगे । फिर तुम मेरे साथ यहाँ वापिस आओगे और हम लोग उन बीस पृष्ठों का सार चार में तैयार करेंगे । ये चार पृष्ठ ही ‘कोतिदेन’ के अंक की बजाय कल सबेरे तुम मुझे याद करके सुनाओगे । उनके बाद तुरन्त ही तुम्हें यहाँ से खाना होना पड़ेगा । तुम इस प्रकार यात्रा करोगे मानो कहीं सैर के लिए जा रहे हो । तुम्हारा उद्देश्य यह होगा कि किसी का भी ध्यान आकर्षित किये बिना ही अपने गन्तव्य पर पहुँच जाओ । वहाँ तुम्हारी एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति से भेंट होगी । उस जगह तुम्हें और भी अधिक कुशलता की आवश्यकता पड़ेगी । तुम्हें उस व्यक्ति के आम-पाम एकत्रित सभी लोगों को धोखा देना पड़ेगा, क्योंकि उसके मन्त्रियों अथवा सेवकों में हमारे शत्रुओं के गुप्तचर मौजूद हैं जो हमारे प्रतिनिधियों को बीच ही में रोककर पकड़ लेने की घात में लगे रहते हैं ।

“तुम्हारे पास एक ऐसा परिचय-पत्र होगा जिससे मैं ओर माधारणतः किसी का ध्यान न जा सके । जब वह सज्जन तुम्हारी ओर देखें तो

तुम मेरी इस घड़ी को निकालकर उस मे समय देखने लगोगे । यह मैं तुम्हे यात्रा के लिए दे दूँगा । लो इसे अभी से पहन लो और मुझे अपनी दे दो, कुछ तो काम खत्म हो जाये ।

“जो चार पृष्ठ तुम यहा से याद करके ले जाओगे उन्हें तुम्हारे सुनाने पर ड्यूक स्वयं अपने हाथ से लिख लेने की कृपा करेगे । जब यह पूरा हो जाये, और खबरदार उसके पहले नहीं, तब तुम, यदि ड्यूक महोदय पुछे तो, उस सभा का हाल सुना देना जिसमे अब तुम चलने वाले हो ।

“यात्रा मे एक बात के कारण तुम्हे कोई उकताहट न होने पायेगी, और वह यह कि पेरिस और ड्यूक के महल के बीच ऐसे बहुत लोग होंगे जो म० सोरेल के ऊपर गोली चला कर अपने को धन्य समझेंगे । यदि ऐसा हुआ तो यह कार्य पूरा न हो सकेगा और बहुत विलम्ब हो जाने की सम्भावना रहेगी क्योंकि हमे तुम्हारी मृत्यु का पता ही कैसे चलेगा ? इतना उत्साह तुम भी कहाँ से लाओगे कि हमे पहले से सूचना भेज दो ।

“अब जल्दी से जाकर अपने लिए सारा सामान खरीद लाओ”, मार्कि ने गम्भीर मुद्रा से आगे कहा । “अपने आपको दो वर्ष पूर्व के वस्त्रो मे सुसज्जित करना । आज शाम को तुम्हे थोडा मैला-कुचैला दिखाई पड़ना चाहिये । इसके विपरीत यात्रा के समय तुम्हें अपने साधारण वस्त्र पहनने होंगे । क्या इससे तुम्हे आश्चर्य हुआ और क्या अपने सन्देह के फलस्वरूप तुम इसका कारण समझ गये ? हाँ, मेरे नौजवान दोस्त, आज रात को जिन महत्वपूर्ण व्यक्तियों से तुम मिलने वाले हो उनमे से बहुत सम्भव है कोई तुम्हारे बारे मे सभाचार भेज दे, किसके परिणामस्वरूप कोई शायद तुम्हे किसी आरामदेह सराय में भोजन के साथ-साथ अफीम खिलाने की कोशिश करने लगे ।”

“शायद यह अधिक अच्छा होगा”, जुलिये ने कहा, “कि कोई सौ मील आगे जाकर फिर लौटा जाय और सीधा रास्ता न अपनाया

जाय । हम लोग शायद रोम की ही चर्चा कर रहे हैं ।”

मार्कि के मुख पर ऐसी दर्पपूर्ण अप्रसन्नता छा गयी जो जुलिये ने इतने तीव्र रूप में ब्रे-ल-ग्रो के बाद कभी न देखी थी ।

“वह आपको तभी पता चलेगा, महाशय, जब मैं बताना उचित समझूँगा । सवाल मुझे पसन्द नहीं ।”

“वह प्रश्न नहीं था”, जुलिये ने क्षमा-याचना करने हुए कहा । “सौगन्ध खाकर कहता हूँ, श्रीमान, कि मैं मन ही मन मबते सुगन्ध मार्ग की कल्पना करने लगा था, और मेरे विचार अचानक ही मेरे मुख से निकल पड़े थे ।”

“हाँ, लगता है तुम्हारा मन कहीं बहुत दूर था । यह न भूलो कि एक राजदूत को विशेषकर तुम्हारी अवस्था के राजदूत को, यह नहीं दिखाना चाहिए कि वह जबरदस्ती गोपनीय बातें जानना चाहता है ।”

जुलिये बहुत ही दुखी हुआ । उसमें भूल हो गयी थी । स्वाभिमान-वश वह इसका भी कोई कारण खोजने लगा किन्तु कुछ सूझा नहीं ।

“यह बात भी समझो” म० द ला मोल ने आगे कहा, “कि आदमी कोई मूर्खता कर बैठने के बाद सदा अपने हृदय की दुहाई देता है ।”

एक घण्टे बाद जुलिये मार्कि के कमरे के बाहर बैठक में बहुत ही मामूली सस्ते कपड़े पहने, एक मटमैला-सा रुमाल गले में बाँधे और बहुत-कुछ एक दीन-हीन व्यक्ति की मुद्रा बनाये मौजूद था । उसे देखते ही मार्कि जोर से हँस पड़े और जुलिये का दोष-मार्जन पूरा हो गया ।

म० द ला मोल सोचने लगे यदि यह नौजवान भी मुझे धोखा दे तो मैं और किसका भरोसा कर सकता हूँ ? फिर भी काम के सन्य किसी न किसी का भरोसा तो करना ही होता है । मेरे बेटे और उसके योग्य मित्रों में साहस और वफादारी तो लाखों से अधिक है । यदि लड़ने का अवसर आये तो वे राजसिंहासन की सीढ़ियों पर अपने प्राण दे देंगे । वे लोग हर काम करना जानते हैं । इस समय जो आवश्यक है उसके अतिरिक्त । मुझे उसमें एक भी ऐसा नहीं दीखता जो चार

लम्बे-लम्बे पृष्ठों को कण्ठस्थ करके दो-तीन सौ मील की यात्रा इस भाँति कर सके कि किसी को उसके पीछे लगने का अवसर ही न मिले । नौबेर अपने पूर्वजों की भाँति प्राण दे सकता है, पर इतना तो एक नया रगल भी जानता है ।

मार्कि विचारों में खोये सोचते रहे । शायद प्राण देने का अवसर आने पर यह लडका सोरेल भी उसके समान ही योग्य सिद्ध हो...।

“चलो गाड़ी में बैठें”, मार्कि ने मानो किसी उलझन से बचने के प्रयत्न में कहा ।

“श्रीमान”, जुलिये ने कहा, “जब मेरा यह कोट बदला जा रहा था उस समय मैंने आज के ‘कोतिदेन’ का पहला पृष्ठ याद कर डाला ।”

मार्कि ने अखबार ले लिया और जुलिये ने समूचा पृष्ठ एक भी शब्द भूले बिना सुना दिया । ठीक, मार्कि ने सोचा । उस समय वह बड़ी ही कूटनीतिज्ञ की-सी मनोदशा में थे । वह मन ही मन कह उठे कि इस बीच उस लडके का मार्ग की सड़कों पर तनिक भी ध्यान नहीं गया है ।

आखिरकार वे एक विशाल और कुछ अंधेरे-से कमरे में जा पहुँचे जिसकी दीवारें कुछ तो लकड़ी के तख्तों से और कुछ हरी मखमल से जड़ी हुई थी । कुछ क्रुद्ध दीखने वाले एक नौकर ने एक बड़ी भारी भोजन की मेज अभी-अभी कमरे के बीचोबीच रखी थी जिसे उसने किसी मन्त्रालय के पुराने, स्याही के धब्बों से भरे हुए, बड़े भारी हरे कपड़े से घँक कर कॉन्फेन्स की मेज बना दिया था ।

गृहस्वामी एक लम्बा-चौड़ा भारी बदन का व्यक्ति था जिसका नाम नहीं बताया गया । उसके मुख के भाव से और बातचीत करने के ढंग से जुलिये ने अनुमान लगाया कि वह व्यक्ति जल्दी ही किसी बात का बुरा नहीं मानता होगा ।

मार्कि का इशारा पाकर जुलिये मेज के निचले छोर पर जाकर बैठ गया, और अपनी अक्कचाहट को छिपाने के लिए कुछ कलमें बनाने

लगा। अपनी आँखों के कोनों से उसने कोई सात वक्ता गिने किन्तु वह उनकी पीठ के सिवाय और कुछ न देख सका। उनमें से दो म० द ला मोल से बराबरी के दर्जे से बातचीत कर रहे थे और बाकी कमोबेश आदर के साथ।

एक अन्य व्यक्ति ने कमरे में घोषणा के बिना ही प्रवेश किया। जुलिये को यह अजीब लगा। कमरे में आने वाले किसी व्यक्ति का नाम नहीं बताया जाता। क्या यह सावधानी मेरे सम्मान में बरती जा रही है? आगन्तुक के स्वागत के लिए सब लोग उठ खड़े हुए। वह कमरे में उपस्थित तीन व्यक्तियों के समान ही एक अत्यन्त प्रमुख सम्मान-चिह्न धारण किये था। सब लोग बहुत धीमी आवाज़ में बोल रहे थे। आगन्तुक के बारे में कोई धारणा बनाने के लिए उसकी मुद्राकृति और साधारण वेशभूषा के अतिरिक्त और कोई साधन न था। वह नाटे कद और भूरे बदन का व्यक्ति था। उसके मुख का रंग कुछ लाल और आँखें चमकती हुई थी जिनमें जगली सुअर की भयकर क्रूरता के अतिरिक्त और कोई भाव न था।

उसी समय सर्वथा भिन्न प्रकार के एक अन्य व्यक्ति के आगमन से जुलिये का ध्यान एकदम बंट गया। यह नया व्यक्ति लम्बे कद का और दुबला-पतला था, उसने तीन या चार वेस्टकोट पहन रखे थे। उसकी आँखें स्निग्ध और मुख-भंगिमाएँ सुमस्कृत थी।

यह तो ठीक बजासो के पुराने बिशप का-सा चेहरा है, जुलिये ने सोचा। अवश्य ही यह कोई चर्च का आदमी है। उसकी उम्र पचास-पचपन से अधिक न होगी, पर देखने में वह बहुत ही बुजुर्ग लग रहा था।

आगद के तरुण बिशप भी आ पहुँचे और जब उपस्थित व्यक्तियों पर नज़र डालते-डालते उनकी आँखें जुलिये पर आ कर टिकी तो वह बहुत ही चकित जान पड़े। ब्रे-ल-ओ के समारोह के बाद में उनकी जुलिये से कोई बातचीत न हुई थी। उनकी आश्चर्यभरी दृष्टि से जुलिये

को सकोच भी हुआ और कुछ क्रोध भी आया। क्या ! किसी व्यक्ति से पहले से परिचय क्या हमेशा मेरे विरुद्ध ही पड़ेगा ? ये सब बड़े-बड़े सामन्त-सरदार जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा, मुझे तनिक भी भयभीत नहीं करते, पर इस तरुण बिशप की नज़र मुझे बरफ की तरह ठंडा किये देती है। यह तो मानना ही पड़ेगा कि मैं बहुत ही विचित्र और बहुत ही अभागा व्यक्ति हूँ।

कुछ ही देर बाद एक बहुत ही सॉवले रंग का छोटा-सा आदमी बड़े शोरगुल और टीमटाम के साथ आया और उसने दरवाजे के पास पहुँचते ही बोलना शुरू कर दिया। उसके मुख का रंग कुछ फीका था और वह पागल-सा दिखाई पड़ता था। बकबक की इस अनथक मशीन के आते ही उससे बचने के लिये लोगो ने कई अलग-अलग मडलिया-सी बना ली।

जैसे-जैसे वह लोग अगीठी के पास से दूर हटते गये, वे मेज के निचले छोर के समीप आते गये, जहाँ जुलिये बैठा था। अब वह और भी सकोच अनुभव करने लगा क्योंकि लाख प्रयत्न करने पर भी अब उनकी बातें न सुनना उसके लिए असम्भव था। वे लोग खुल कर बातें कर रहे थे और अपने अल्प अनुभव के बावजूद वह उन बातों का पूरा महत्व समझ रहा था। वह सोचने लगा कि उसके आगे बैठे हुए इन प्रमुख व्यक्तियों को भी तो अपनी बातें गोपन रखने की चिन्ता होगी।

यथासम्भव धीरे-धीरे काम करने पर भी जुलिये अब तक कोई बीस कलमे बना चुका था। शीघ्र ही यह उपाय अब काम न देगा। वह व्यर्थ ही २० द ला मोल की ओर आदेश के लिए देखने लगा। मार्कि तो उसे बिलकुल भूल गये थे।

मैं यहाँ बहुत ही हास्यास्पद काम कर रहा हूँ, जुलिये कलमे काटते-काटते सोचने लगा। किन्तु ऐसा तुच्छ चेहरा होने पर भी जिन लोगों को इतने महत्वपूर्ण कार्य दूसरों के द्वारा अथवा स्वयं अपने द्वारा सुपुर्व किये जाते हैं, वे अवश्य ही बहुत तीक्ष्ण होंगे। लोगो की ओर देखने

का मेरा ढग कुछ बहुत ही कौतूहलपूर्ण और आदररहित होता है जिससे उनके अप्रमत्त होने का डर है। पर यदि मैं अपनी आँखें बिलकुल नीची ही किये रहूँ तो शायद यह लगेगा कि मैं उनकी बातों को मन में भरता जा रहा हूँ।

उसका सफ़ाच बहुत ही अधिक था क्योंकि वह कुछ बेहद प्रसाधारण बातें सुन रहा था।

: २२ :

वाद-विवाद

नौकर ने जल्दी से आकर घोषणा की “महामान्यवर दुक् द—।”
“चुप रहो, बेवकूफ !” ड्यूक ने प्रवेश करते हुए कहा। ये शब्द उन्होंने जिस अच्छे ढंग और राजसी गरिमा के साथ कहे उससे जुलिये यह अनुभव किये बिना न रह सका कि नौकर पर क्रुद्ध होने की जानकारी इन महापुरुष से अधिक किसी में सम्भव नहीं। जुलिये ने अपनी आँखें उठाई और फिर तुरन्त उन्हें नीचा कर लिया। उसने इस आगन्तुक के महत्व को इतना ठीक-ठीक समझा था कि उसे भय हुआ कहीं उसकी दृष्टि धृष्टतासूचक न समझी जाय।

ड्यूक की अवस्था पचास के लगभग होगी। वह बड़े ठाठदार कपड़े पहने थे और ऐसे चल रहे थे मानो नीचे स्प्रिंग लगे हों। उनका माथा छोटा तथा नाक बड़ी थी और चेहरे की गोलाईयाँ प्रमुख रूप में आगे की निकली हुई जान पड़ती थी। किसी के लिए भी एक साथ इतना उच्च और इतना नगण्य दिखाई पड़ना कठिन था। उनके आते ही सभा की कार्रवाई शुरू हो गयी।

जुलिये द्वारा आगन्तुको की इस शरीर-रचना-सम्बन्धी जांच-पड़ताल में मं० द ला मोल की आवाज से अचानक बाधा पड़ी।

“आज्ञा दीजिये, आबे सोरेल को आप लोगो के सम्मुख प्रस्तुत करूँ,” मार्कि कह रहे थे। “इन्हें अद्भुत स्मरण-शक्ति मिली है। कोई एक घण्टे पहले ही मैंने इनसे उस कार्य का जिक्र किया था जिसका

सम्मान शायद इन्हें दिया जाये। और इन्होंने अपनी स्मरण-शक्ति के प्रमाणस्वरूप 'कोतिदेन' का पहला पृष्ठ कण्ठस्थ कर लिया है।"

"आह उस विचारे न—के विषय में समाचार पढ़ा," गृहस्वामी ने कहा। उन्होंने जल्दी से अखबार उठा लिया और जुलिये की ओर कुछ ऐसे भाव से देखते हुए बोले जो महत्वपूर्ण से अधिक हास्यास्पद था : "तो सुनाइये, महाशय।"

चारों तरफ सन्नाटा छा गया और सब आँखें जुलिये पर जा टिकी। उसने अपना पाठ इतनी कुशलता के साथ सुनाया कि बीस पक्तियों के बाद ही ड्यूक बोले, "बस काफी है।" जगली सुअर की-सी आँखों वाला आदमी बैठ गया। वही मभा का अध्यक्ष था, क्योंकि उसने बैठते ही जुलिये को एक छोटी मेज दिखाकर उसे अपने पास ले आने के लिये कहा। जुलिये सब आवश्यक लेखन-सामग्री लेकर वहाँ जम गया। हरे कपड़े के चारों ओर बैठे हुए बारह व्यक्ति थे।

"म० सोरेल," ड्यूक ने कहा, "कृपया दूसरे कमरे में चले जाइये, हम अभी आपको बला लेगे।"

गृहस्वामी बहुत ही उद्विग्न हो उठे। "खिडकियों की फिल-मिलियाँ बन्द नहीं हैं" उसने अपने पड़ोसी के कान में धीमे से कहा। "आप खिडकी से न भाँकियेगा," वह जुलिये को कुछ मूर्खतापूर्ण ढंग से पुकार कर बोला। अब मैं षड्यन्त्र के बीचोबीच आ फसा हूँ, जुलिये सोचने लगा। भाग्यवश यह प्लास द ग्रेव को ले जाने वाला षड्यन्त्र नहीं। और यदि उसमें जोखिम हो भी तो मार्कि का मेरे ऊपर इतना ऋण तो है ही, बल्कि शायद इससे भी अधिक है। मेरी मूर्खताओं से शायद एक दिन उन्हें बहुत दुःख मिलने वाला है। यदि मैं उनका कोई प्रायश्चित्त कर सकूँ तो मुझे बड़ी खुशी हो।

अपनी मूर्खताओं और अपने दुःख के विषय में सोचते-सोचते ही वह अपने परिवेश की ओर ऐसे ताकने लगा कि उसे कभी भूल न सके। तभी उसे याद पड़ा कि मार्कि ने अपने नौकर को सड़क का नाम नहीं

बताया था और वह भाड़े की गाड़ी में यहाँ आये थे, जो वह साधारणतः कभी नहीं करते ।

जुलिये को बहुत देर तक अपने विचारों में डूबे रहने का अवसर मिला । वह एक ड्राइंग रूम में था जिसमें सुनहरी काम की बड़ी-बड़ी पेंटिंग्स वाली लाल मखमल की लटकने थी । किनारे की मेज़ पर एक बड़ी-सी हाथीदाँत की ईसामसीह की मूर्ति थी और मेण्टलपीस पर सुनहरे किनारे की बढिया जिल्दवाली म० द मेस्त्र की पुस्तक 'दु पाप' रखी हुई थी । जुलिये ने उसे खोल लिया जिससे यह न लगे कि वह बातें सुन रहा है । बीच-बीच में अगले कमरे से आने वाली आवाज़ें बड़ी ऊँची हो जाती । आखिरकार दरवाजा खुला और उसका नाम पुकारा गया ।

"सज्जनो, याद रखिये," अध्यक्ष कह रहे थे, "इस क्षण से हम कुछ द—की उपस्थिति में बातचीत कर रहे हैं ।" फिर वह जुलिये की ओर इशारा करके बोले, "यह सज्जन पुरोहित बनने के अभिलाषी हैं और हमारे—उद्देश्य में आस्था रखते हैं । इन्हें अपनी अद्भुत स्मरण-शक्ति की सहायता से हमारे कम से कम महत्व के कथन को भी दोहराने में कोई कठिनाई न होगी ।

"अब इसके बोलने की बारी है," उन्होंने बुजुर्ग दिखाई देने वाले सज्जन की ओर इशारा करके कहा जो तीन-चार वेस्टकोट पहने थे । जुलिये को लगा कि उनका नाम वेस्टकोटवाले सज्जन रखना भी बहुत स्वाभाविक होता । वह कागज लेकर विस्तार से लिखने लगा ।

(यहाँ लेखक की बड़ी इच्छा थी कि एक पृष्ठ खाली छोड़ दिया जाय । प्रकाशक का कहना है कि यह बहुत शोभन न लगेगा और ऐसी हल्की-फुल्की किताब के लिये अशोभनता का अर्थ है मृत्यु ।

लेखक ने उत्तर में कहा : 'राजनीति सत्य के गले में बंधे पत्थर के समान है जो छ महीने के भीतर ही उसे डुबाकर मार डालेगी । कल्पना-प्रधान वस्तुओं के बीच में राजनीति सगीत-समारोह के बीच

पिस्तौल की आवाज के समान है। उसमें शोर तो कान फाड़ देने वाला होता है पर स्वर नहीं होता। किसी साज के साथ उसकी स्वर-संगति नहीं बैठती। यह राजनीति की चर्चा मेरे आधे पाठको को बुरी तरह अप्रसन्न कर देगी और बाकी आधे, जो अपने सबेरे के ख़बर में इससे कहीं अधिक सशक्त और विस्तृत राजनीति का घूँट पी चुके होंगे, उससे उकता जायेंगे।”

“यदि आपके पात्र राजनीति की बात न करते,” मेरे प्रकाशक ने उत्तर दिया, “तो वे १८३० के फ़ामवासी नहीं, और फिर आपकी पुस्तक दर्पण नहीं मानी जा सकती, जैसा कि आपका दावा है।)

जुलिये की लिखित रिपोर्ट छब्बीस पृष्ठों की थी। यहाँ मैं उसका एक फीका-सा संक्षिप्त रूप प्रस्तुत कर रहा हूँ क्योंकि सदा की भाँति मैं उन निरर्थक बातों को छोड़ देने के लिए बाध्य हूँ जिनके आधिक्य से बड़ा धक्का-सा लगता और उन पर मुश्किल से विश्वास किया जाता।

वेस्टकोट और बुजुर्ग भाववाले सज्जन (शायद वह कोई बिशप थे) बार-बार मुस्कराते थे और तब उनकी आँखें अपनी झपकती हुई पलकों के चौखटे में एक अत्यन्त ही असाधारण चमक और अपेक्षाकृत कम अस्पष्ट भाव धारण कर लेती। इन्हीं सज्जन को ड्यूक की उपस्थिति में सर्वप्रथम बोलने को कहा गया था। पर कौन में ड्यूक ? जुलियें आश्चर्य से मोचने लगा। जो हो, उनसे कहा गया कि वह और प्रधान सेलिसिटर की भाँति सभा के विचारों को प्रस्तुत कर दें। पर जुलिये को लगा कि उन्हें निश्चय और सुस्पष्ट निष्कर्षों का अभाव-सा अनुभव हो रहा है, जिसका आरोप न्यायाधीशों पर प्रायः लगाया जाता है। वाद-विवाद के दौरान में ड्यूक ने उन्हें इसके लिये कोचा भी।

नीति और दर्शन-सम्बन्धी बहुत-से वाक्यों के बाद वेस्टकोट वाले सज्जन बोले, “उस महान् देश इंग्लैंड ने उस महापुरुष चिरस्मरणीय पिट के निर्देशन में क्रान्ति को ध्वस्त करने के लिये चार अरब फ्रैंक खर्च किये थे। यदि यह सभी एक दुःखद विषय के स्पष्ट उल्लेख की अनुमति

मुझे दे तो मैं कहूँगा कि इंग्लैंड यह बात भली-भाँति नहीं समझता कि बोनपार्ट जैसे व्यक्ति के साथ, विशेषकर जब उसका विरोध करने के लिये मुट्ठीभर सदेच्छाओं के अतिरिक्त और कुछ अपने पास न हो, व्यक्तिगत संपर्क के अतिरिक्त और कोई निश्चित उपाय नहीं है ।”

“ओफ ! हत्या की प्रशंसा में एक और भाषण !” गृहस्वामी ने कुछ चिन्तित होकर कहा ।

“अपने इन भावुक वचनों से हमें बचाइये ।” अध्यक्ष क्रुद्ध भाव से बोले और उसकी जगली सुअर जैसी आँखें एक बर्बर चमक से प्रज्वलित हो उठी । “कृपया आप अपनी बात जारी रखें,” उन्होंने वेस्टकोट वाले सज्जन से कहा । अध्यक्ष का माथा और गाल क्रोध से लाल हो उठा था ।

वक्ता ने आगे कहा “वह महान् देश इंग्लैंड आज कुचला हुआ पड़ा है क्योंकि प्रत्येक अंग्रेज को अपनी रोज की रोटी का मूल्य चुकाने के पहले उन चार अरब फ्रैंक का सूद भी चुकाना पड़ता है जो जैकोबिन पथियों के विरुद्ध खर्च हुए थे । और आज उसके पास पिट जैसा व्यक्ति भी नहीं है .”

“उसके पास विलिंगडन के ड्यूक तो है,” एक सैनिक सज्जन बड़े रोष से बोले ।

“कृपया चुप रहिये, सज्जनो,” अध्यक्ष चीखे । “यदि हम लोगों में अभी तक असहमति है तो म० सोरेल को बुलाने से कोई लाभ नहीं हुआ ।”

“यह तो सभी जानते हैं कि हमारे माननीय मित्र के पास विचारों की कमी नहीं,” ड्यूक ने कुछ चिढ़कर और बीच में टोकने वाले के ऊपर एक नजर डालते हुए कहा । यह सज्जन पहले नैपोलियन की सेना में एक जनरल थे । जुलियेँ समझ गया कि यह किसी व्यक्तिगत और बहुत ही क्रोध दिखाने वाली बात की ओर संकेत है । सब लोग मुस्करा दिये, जनरल साहब क्रोध से उबलते दिखाई पड़े ।

“अब पिट जैसा व्यक्ति नहीं है, सज्जनो,” वक्ता कुछ ऐसे भाव से कहने लगे मानो अपने श्रोताओं को समझदागी की बान मनवा सकने में हताश हो चुके हैं। “और यदि इंग्लैंड में नया पिट होता भी, तो किमी राष्ट्र को एक ही उपाय से दो बार धोखा नहीं दिया जा सकता। ...”

“यही कारण है कि एक विजेता जनरल का, एक अन्य बोनापार्ट का फ्रांस में फिर से उत्पन्न होना असम्भव है,” सैनिक सज्जन ने बीच ही में फिर टोका।

इस बार न तो अध्यक्ष ने और न ड्यूक ने कोई अप्रसन्नता दिखाने का साहस किया यद्यपि जुलिये को लगा कि उनकी आँखों में हमकी तीव्र इच्छा स्पष्ट झलक रही है। उन्होंने अपनी आँखें नीचे कर ली और ड्यूक ने ऐसी लम्बी साँस से ही सन्तोष कर लिया जो सबका मुनायी पड़ जाय।

किन्तु वक्ता को क्रोध आ गया था।

“आप चाहते हैं कि मैं जल्दी से बात खत्म कर दूँ,” उन्होंने क्रुद्ध स्वर में कहा। जुलिये जिस हँसमुख मुद्रा और वाक्समय को उनके चरित्र का स्वाभाविक अंग मान रहा था वह पूरी तरह गायब हो गया। “आप चाहते हैं कि मैं जल्दी से चुन हो जाऊँ। मैं तो यही प्रयत्न कर रहा था कि यहाँ किसी व्यक्ति के कानों को कोई कष्ट न पहुँचे, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो। किन्तु आप उसके लिए कोई आभार नहीं मानना चाहते। अच्छी बात है, तो सज्जनो मैं संक्षेप में ही कहूँगा।

“और मैं दो टूक भी कहूँगा। लन्दन के पास इस अच्छे उद्देश्य के लिए एक छद्म भी नहीं है। यदि स्वयं पिट भी लौट आये तो वह अपनी सारी प्रतिभा के बावजूद इंग्लैंड के छोटे-छोटे जमींदारों की आँखों में धूल भोकेने में कामयाब न हो सकेगा, क्योंकि वे जानते हैं कि वाटरलू के छोटे से अभियान में ही उनका एक अरब घन खर्च हो गया था। आप साफ-साफ सुनना चाहते हैं तो सुनिये,” वक्ता ने अधिकाधिक उत्तेजित होकर कहा। “अपनी मदद अपने आप कीजिये, क्योंकि लन्दन

के पास आपकी मदद के लिए एक पैसा भी नहीं है और यदि इंग्लैंड आपको पैसा नहीं देता तो आस्ट्रिया, रूस, प्रशिया इत्यादि के पास तो केवल साहस है, पैसा नहीं, वे फ्रांस के विरुद्ध एक-दो अभियान से अधिक नहीं चला सकते।

“यह कहा जा सकता है कि जैकोबिनपथियों ने जो नौजवान सैनिक इकट्ठे किये हैं वे पहली मुठभेड़ में ही पराजित हो जायेंगे, किन्तु तीसरी में (यद्यपि यह कथन आप लोगों की पूर्वग्रही दृष्टि में क्रान्तिकामी समझा जायेगा) आप लोगों को १७९४ के सैनिक लाने पड़ेगे, जो १७९२ के किसान-बटालियनों में न थे।”

तीन-चार लोगो ने एक साथ ही बीच में टोका।

“महाशय,” अध्यक्ष ने जुलिये से कहा, “आप दूसरे कमरे में जाकर अब तक लिखी हुई रिपोर्ट की साफ-साफ नकल कर डालिये।” जुलिये बड़ी अनिच्छा के साथ कमरे से गया। वक्ता ने अभी-अभी उन्हीं सम्भावनाओं की चर्चा शुरू की थी जिनके बारे में वह प्रायः सोचा करता था। वह सोचने लगा, इन लोगो को डर है कि मैं इनकी बातों पर हँसूँगा।

जब उसे फिर से बुलाया गया तो म० द ला मोल बोल रहे थे। वह ऐसी सचाई के भाव से बोल रहे थे कि जुलिये को, जो उन्हें जानता था, बहुत ही मजेदार लगा।

“हाँ, सज्जनो,” वह कह रहे थे, “इस अभागी जाति के लिए विशेष रूप से यह कहा जा सकता है, यह देवता बनेगी मेज बनेगी या हाथ धोने का बेसिन बनेगी?”

“यह देवता बनेगी।” कथाकार का कहना है। सज्जनो, ऐसी और महान और गहरी कहावत आप ही लोगो पर लागू होती जान पड़ती है। अपनी सहायता स्वयं कीजिये, और हमारा महान देश फ्रांस फिर एक बार वैसा ही हो जायेगा जैसा हमारे पूर्वजो ने उसे बनाया था और जैसा हमारी आँखो ने भी उसको लुई सोलहवें की मृत्यु के पहले तक देखा था।

“लन्दन को, अथवा कम से कम उसके बड़े-बड़े समन्त-सरदारो को,

इस घृणित जैकोबिनवाद से उतनी ही घृणा है जितनी हमें है। लन्दन के स्वर्ण के बिना आस्ट्रिया, प्रशिया अथवा रूम कोई भी दो या तीन से अधिक अभियान नहीं चला सकता। क्या उतने में उसी प्रकार से सैनिक अधिकार हो सकेगा जैसा वह था जिसे म० द रिशाल्य ने १८१७ में ऐसे मूर्खतापूर्वक नष्ट कर दिया। मैं ऐसा नहीं समझता।”

यहाँ किसी ने फिर बीच में टोका, पर वह बाकी लोगो की ‘चुपचुप !’ की आवाजों में डूब गया। इस बार भी बाधा जनरल महोदय ने ही डाली थी जो नीला फीता प्राप्त करने के लिए बहुत उत्सुक थे और इसलिए इस गुप्त पत्र की रचना में आगे बढ़कर भाग लेना चाहते थे।

“मैं ऐसा नहीं सोचता,” जब शोर बन्द हो गया तो म० द ला मोल ने दोहराया। उन्होंने ‘मैं’ शब्द पर ऐसे दर्प के साथ जोर दिया कि जुलिये मुग्ध हो उठा। यह अच्छा हाथ रहा उसने मार्कि के शब्दों को लिखने में उतनी ही तेजी से कलम चलाते हुए मन ही मन मोचा। एक ही यथास्थान शब्द द्वारा मार्कि ने बागी जनरल की बीस लड़ाइयों का नाम-निशान मिटा दिया।

“नया सैनिक कब्जा,” मार्कि बहुत ही सधे शब्दों में कहते गये, “केवल विदेशियों द्वारा होने की सम्भावना ही नहीं है,” ‘ग्लोब’ में गरमागरम लेख लिखने वाले नौजवानों में आपको तीन चार हजार ऐसे कैप्टेन मिल जायेंगे, क्लेवर, औच जूदा, पिचिंगू जैसे लोग भी निकल आये, चाहे उतने उत्साही भले ही न हों।

“हम लोग उसकी शानदार स्मृति को जीवित रखने में अमफल रहे,” अध्यक्ष ने कहा “हमें उसे अमर कर देना चाहिए था।”

“फ्रांस में दो पार्टियों की आवश्यकता है,” म० द ला मोल ने आगे कहा, “नाममात्र की दो पार्टियाँ नहीं, बल्कि बिल्कुल साफ-साफ एक दूसरे से अलग और भिन्न। हमें यह तो मालूम रहे कि हमें कुचलना किसे है। एक ओर तो पत्रकार, जनमत, संक्षेप में समूची नयी पीढ़ी और उसके सारे प्रशंसक हों। यदि नयी पीढ़ी स्वयं अपनी दर्पपूर्ण

बकवास की आवाज से ही घबराई रहती है, तो हमें बजट से सम्बन्धित होने के कारण कुछ सुविधाएँ प्राप्त हो जाती है।”

यहाँ फिर किसी ने टोका।

“महाशय,” म० द ला मोल ने बड़ी तिरस्कार-भरी सहजता के साथ टोकने वाले से कहा, “आपको सम्बन्धित होने से आपत्ति है, ठीक है। आप तो बजट द्वारा मिले हुए चालीस हजार और नागरिक विभाग से मिले हुए अस्सी हजार फ्रैंक उड़ाते हैं।

“अच्छा महाशय, आप मुझे बाध्य कर रहे हैं तो मैं साहस करके आपका ही उदाहरण लेता हूँ। आपको अपने सत लुई के पीछे धर्मयुद्ध में जाने वाले पूर्वजों की भाँति ही, उन एक लाख बीस हजार फ्रैंक के बदले में कम से कम एक रेजीमेण्ट, एक कम्पनी, बल्कि आधी ही कम्पनी तो दिखानी चाहिए, फिर उसमें चाहे किसी जीवित या मृत उद्देश्य के लिए लड़कर जान देने वाले पचास सिपाही ही क्यों न हों। आपने सिर्फ भाड़े के टट्टू इकट्ठे किये हैं जिनसे विद्रोह होने पर स्वयं आपको भय लगेगा।

“जब तक आप प्रत्येक जिले में पाँच सौ वफादार आदमियों की सेना स्वयं तैयार नहीं करते, तब तक सिंहासन, चर्च और सामन्तवर्ग के किसी भी दिन नष्ट होने की आशंका है। ये वफादार आदमी ऐसे होने चाहिये जिनमें न केवल फ्रांसीसियों की बहादुरी और साहस हो बल्कि स्पेनवासियों की-सी दृढ़ता भी हो।

“इस सेना के आधे भाग में हमारे बेटे-भतीजे, संक्षेप में अच्छे खानदान के लोग, होने चाहिए। उनमें से प्रत्येक के बगल में ऐसा व्यक्ति न हो जो १८१५ की पुनरावृत्ति होने पर तिरंगा उड़ाने को तैयार हो जाय, बल्कि अच्छा-भला, ईमानदार, कातलिनो जैसा सरल और स्पष्टवादी किसान हो। हमारा खानदानी नौजवान उसे हमारे सिद्धान्तों की शिक्षा देगा, बल्कि यदि वह खानदानी नौजवान का सौतेला भाई हो तो और भी अच्छा है। हम लोगों को चाहिये कि प्रत्येक जिले

मे ऐसे पाँच सौ जवानों की वफादार सेना तैयार करने के लिये अपनी आमदनी का पाँचवाँ हिस्सा अर्पित करे। तब आप विदेशी सेना का भरोसा कर सकते हैं। यदि प्रत्येक ज़िले में पाँच सौ सहधर्मियों के मिलने का भरोसा न हो तो कोई विदेशी सैनिक कभी दिजो तक भी न आयेगा।

“दूसरे देश के शासक आपकी बात तभी सुनेंगे जब उन्हें आप यह समाचार दे सकें कि बीस हजार हथियारबन्द सैनिक उनके लिए फ्रांस के द्वार खोलने को सन्नद्ध हैं। आप कहेंगे कि यह सेवा बड़ी कठिन है। सज्जनों, अपने प्राणों के लिए यह कीमत हमें चुकानी ही पड़ेगी। अखबारों की स्वतन्त्रता और सामन्त रूप में हमारे अस्तित्व के बीच आमरण युद्ध छिड़ा हुआ है। कारखानेदार या किसान हो जाइये, अथवा अपनी बन्दूक सम्हाल लीजिये। भीरु भले ही बनें, किन्तु मूर्ख न बनिये। अपनी आँखें खोलिए।

“अपनी सेना में पक्तिबद्ध हो जाइये, मैं जैकोबिन गीत के शब्दों में आप से कहता हूँ। तब कोई उच्चात्मा गुस्तेवस अडौल्फस मिल जायेगा जो राजतन्त्रीय सिद्धान्तों के सकट को देखकर अपने देश से हजार मील आपकी सहायता के लिए दौड़ेगा और आपके लिए वही कार्य करेगा जो गुस्तेवस अडौल्फस ने प्रोटेस्टेंट राजाओं के लिए किया था। क्या आप चिरकाल तक कुछ भी किये बिना सिर्फ़ बातें ही करते रहेंगे। पचास वर्ष के भीतर योरोप में राजाओं के बजाय सिर्फ़ प्रजातन्त्रों के प्रधान ही रह जायेंगे। राजा के साथ-साथ ही पुरोहित और सामन्त भी मिटेंगे। मुझे तो केवल मैली कुचैली जनता की खुशामद करते हुए ‘उम्मीदवारों’ के अतिरिक्त भविष्य में और कुछ नज़र नहीं आता।

“यह कहने से कोई लाभ नहीं कि इस समय फ्रांस में ऐसा कोई प्रतिष्ठित जनरल नहीं है जिसे सब जानते हों और प्रेम करते हों, कि सेना केवल राजतन्त्र और चर्च की हितों की रक्षा के लिए ही सगठित है, कि उसके सब पुराने सेनानायक निकाल दिये गये हैं, जब कि प्रशिया

और आस्ट्रिया की प्रत्येक रेजीमेण्ट में ऐसे पाँच सौ बिना कमीशन वाले
अफसर हैं जो लडाई का मैदान देख चुके हैं ।

“निम्न-मध्यवर्ग के दो लाख नौजवान दिलोजान से युद्ध के लिए
आतुर हैं... ।”

“इन अप्रिय सत्यो को चर्चा अब हमें बन्द करनी चाहिए,” किसी
महत्वपूर्ण व्यक्ति ने सभ्रम के साथ कहा । स्पष्ट ही वह सज्जन चर्च के
कोई बड़े पदाधिकारी थे, क्योंकि म० द ला मोल नाराज होने के बजाय
प्रसन्नता के साथ मुस्कराये । जुलिये के लिए यह इगित पर्याप्त था ।

“इन अप्रिय सत्यो की चर्चा अब हमें बन्द करनी चाहिये और,
सज्जनो, निष्कर्षों पर आ जाना चाहिए । जिस आदमी को अपने घाव
से सड़े हुए पैर को कटवाना है उसका अपने डाक्टर से यह कहना कि
‘यह पैर बिल्कुल ठीक हालत में है,’ बहुत ही अनुपयुक्त होगा । सज्जनो,
मुझे इस कथन के लिए क्षमा करेंगे कि— के महाद् ड्यूक ही हमारे
डाक्टर हैं ।” अब तो सारा भेद खुल गया, जुलिये ने सोचा । आज रात
को मुझे—की ओर कूच करना है ।

: २३ :

धर्माधिकारी, वनभूमियाँ, स्वाधीनता

वह सज्जन अपनी बात कहे जा रहे थे । इतना तो स्पष्ट था कि वह अपने विषय को भली-भाँति जानते हैं । एक प्रकार की सुनिश्चित मृदु ओजस्विता से, जो जुलिये को बहुत ही सुखद लगी, उन्होंने निम्नलिखित महान् सत्यो की स्थापना की :

“(१) इंग्लैंड के पास हमारी सहायता के लिये एक कौड़ी भी नहीं है, वहाँ आजकल किफायत और हयूम का फैशन है । इस समय ‘संत लोग’ भी हमें धन न देगे और मिस्टर ब्राउहम तो हमारे मुँह पर हँसेगे ।

“(२) इंग्लैंड के स्वर्ण के बिना योरप के शासको से दो से अधिक अभियान करवा सकना असम्भव है, और मध्यवर्ग के विरुद्ध दो अभियान काफी न होंगे ।

“(३) फ्रांस में एक सशस्त्र पार्टी की स्थापना की आवश्यकता है जिसके बिना योरप में राजतन्त्र के अन्य समर्थक इन दो अभियानों का खतरा भी उठाने को तैयार न होंगे ।

“चौथी बात मैं आपके सामने यह रखना चाहता हूँ कि धर्माधिकारियों के बिना फ्रांस में सशस्त्र पार्टी की स्थापना असम्भव है । सज्जनो, मैं आपसे यह बात साहसपूर्वक कहना हूँ क्योंकि मैं इसे सिद्ध कर सकता हूँ । हमें धर्माधिकारियों को हर वस्तु देने को प्रस्तुत होना चाहिए क्योंकि रात-दिन अपने कार्य में सलग्न रहने के कारण और ऐसी उच्च योग्यता वाले व्यक्तियों के निर्देशन में चलने के कारण जो

तूफान की पहुँच के बाहर है और आपके देश की सीमा से हजार मील दूर है ।”

“ओ हो, रोम !” गृहस्वामी ने जोर से कहा ।

“जी हाँ, महाराज, रोम !” कार्डिनल गोरव के साथ बाले । “आप के बचपन के दिनों में चाहे जैसे चतुराईभरे मजाक प्रचलित रहे हों, पर आज १८३० में, मैं साहस के साथ कह सकता हूँ कि रोम के निर्देशन में चलने वाले धर्माधिकारी ही एकमात्र ऐसे हैं जिनका निम्न-वर्ग से सम्पर्क बना हुआ है । पचास हजार पुरोहित अपने अधिकारियों द्वारा नियत दिन पर एक से ही शब्द दोहराते हैं, और जनता, जिसमें से ही आखिरकार सिपाही आते हैं, दुनिया की तमाम छोटी-छोटी कविताओं की अपेक्षा अपने पुरोहितों की बात से कहीं अधिक प्रभावित हो सकती है ।” (इस व्यक्तिगत आक्षेप से थोड़ी-सी कानाफूसी होने लगी ।)

“धर्माधिकारियों के पास आपसे श्रेष्ठतर बुद्धि मौजूद है,” कार्डिनल ने अपना स्वर ऊँचा करते हुए आगे कहा “फ्रांस में सशस्त्र पार्टियों की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण सवाल पर आपने जितने भी कदम उठाये हैं वे सब हमी लोगो द्वारा उठाये गये हैं ।” यहाँ उन्होंने तथ्य प्रस्तुत करना शुरू कर दिया । ‘वाँदे को अस्सी हजार बन्दूकें किसने भेजी,’ इत्यादि इत्यादि ?

“जब तक धर्माधिकारियों को उनकी वनभूमियों से वंचित रखा जायेगा तब तक उनके पास कुछ नहीं है । किन्तु तो भी लड़ाई आरम्भ होते ही वित्त-मन्त्री ने अपने कर्मचारियों को लिखा कि पुरोहितों के अति-रिक्त और किसके पास धन नहीं है । हृदय से, फ्रांस धर्महीन है और युद्ध से प्रेम करता है । जो भी उसे युद्ध प्रदान करे वह दुगना लोकप्रिय होगा, क्योंकि, प्रचलित शब्दावली में कहे तो, युद्ध का अर्थ है जैस्विटपथियों को भूलो मार डालना । युद्ध चलाने का अर्थ है उस बेहद घमडी जाति फ्रांसीसी, को विदेशी हस्तक्षेप से मुक्ति दिलाना ।”

कार्डिनल की बात लोगो ने मनोयोग से सुनी । उन्होंने कहा,

“यह आवश्यक है कि म० द नेवाल मन्त्रालय छोड़े। उनके नाम से व्यर्थ ही लोगो को बहुत क्षोभ होता है।

यह सुनते ही सब लोग उठ खड़े हुए और एक साथ बोलने लगे। जुलिये ने सोचा कि ये लोग अब फिर उसे कमरे से बाहर भेज देंगे। किन्तु दूरन्देश अध्यक्षा तक जुलिये की उपस्थिति को, बतकि उसके अस्तित्व तक को, भूल गये थे। सारी आँखें एक ही व्यक्ति की ओर लगी थी जिसे जुलिये ने पहिचान लिया। वह स्वयं प्रधानमंत्री म० द नेवाल थे जिन्हें उसने दुक द रे के बॉल-नृत्य में देखा था।

जैसा ससद के विषय में समाचार-पत्र कहा करते हैं, यहाँ भी शोर-गुल चोटी पर पहुँच गया था। पर कोई पन्द्रह मिनट बीतते-बीतते एक बार फिर अपेक्षाकृत शान्ति छा गयी।

तब म० द नेवाल खड़े हुए और कुछ मसीहाई प्रदाज में बोलने लगे। उन्होंने विचित्र से स्वर में कहा “आपके सामने यह घोषणा करने का मेरा कोई इरादा नहीं है कि मुझे अपने पद से प्रेम नहीं। सज्जनो, मुझे यह बताया गया है कि मेरे नाम के कारण जैकोबिनपथियो की शक्ति दुगुनी हो जाती है और वे शान्त विचारो के लोगो को भी हमारे विरुद्ध भडकाने में सफल हो जाते हैं। इसलिए मैं अपने पद का त्याग खुशी-खुशी करना चाहूँगा। पर भगवान् की लीला थोड़े लोगो की समझ में आती है, और सज्जनो,” उन्होंने कार्डिनल से आँखें मिलाते हुए कहा, “मेरे सामने एक लक्ष्य है। भगवान् ने मुझे आदेश दिया है ‘या तो तुम सूली पर चढ़ोगे, या फ्रांस में पूर्ण राजतन्त्र की स्थापना करके ससद की दोनों मभाओ को वही स्थिति प्रदान करोगे जो उसे लुई पन्द्रहवें के काल में प्राप्त थी।’ सज्जनो, मैं यह कार्य पूरा करूँगा।” उन्होंने बोलना बन्द कर दिया और अपने स्थान पर बैठ गये। चारो ओर गहरा सन्नाटा छा गया।

कैसा बढ़िया अभिनेता है! जुलिये ने सोचा। उसकी भूल यही थी, जो वह लगभग सदैव ही करता था, कि दूसरे लोगो को बहुत अधिक

चतुर मान बैठता था। ऐसे रोचक वादविवाद से, और सबसे अधिक उसकी ईमानदारी से, उत्तेजित होने के कारण म० द नेवाल सचमुच उस समय अपने लक्ष्य में विश्वास करने लगे थे। उनमें साहस पर्याप्त होने पर सहज बुद्धि की बहुत कमी थी।

‘मैं यह कार्य पूरा करूँगा’ आदि सुन्दर शब्दों के बाद जो सन्नाटा छाया उसमें बारह बज गये। जुलिये को लगा घड़ी की आवाज में एक प्रकार की अन्त्येष्टि-कालीन गम्भीरता है। वह बहुत विचलित हो उठा।

वादविवाद फिर और भी अधिक जोश के साथ, और विशेष रूप से अविश्वसनीय भोलेपन के साथ, शुरू हो गया। कभी-कभी जुलिये सोचने लगता कि ये लोग उसे अवश्य ज़हर देकर मरवा डालेंगे। एक साधारण आदमी के सामने ये लोग ऐसी बातें कह कैसे रहे हैं ?

दो बजे तो भी उनकी बातचीत चल ही रही थी। गृहस्वामी बहुत देर पहले ही सो गये थे। इसलिए म० द ला मोल ने लाचार होकर घण्टी बजायी और नयी मोमबत्तियाँ मँगवायी। म० द नेवाल पौने दो बजे के लगभग ही चले गये थे। जितनी देर वह वहाँ थे, लगातार पास ही टँगे हुए दर्पण में जुलिये के चेहरे को गौर से देखते रहे थे। उनके प्रस्थान ने सबको आश्चर्य कर दिया।

जिस समय नयी मोमबत्तियाँ लाई जा रही थी तब वेस्टकोट वाले व्यक्ति ने अपने पड़ोसी के कान में फुसफुसा कर कहा, “भगवान जाने यह आदमी महाराज से क्या-क्या कहेगा। वह चाहे तो हमें बहुत ही मूर्ख सिद्ध कर सकता है और हमारे भविष्य की योजनाओं पर पानी फेर सकता है।

“यह तो तुम्हें मानना ही पड़ेगा कि उसका यहाँ आना उसके असाधारण अहंकार, बल्कि उसकी घृष्टता का प्रमाण है। मंत्री होने के पहले वह यहाँ आया करता था, पर मंत्रीपद हर चीज को बदल देता है, आदमी के अन्य सब रुझानों को खत्म कर देता है। यह बात तो उसे समझनी चाहिए थी।”

मन्त्री महोदय के जाते ही बोनापार्ट के जनरल ने अपनी आँखें बन्द करली। अब वह अपने स्वास्थ्य और अपने लडाई के धावों की चर्चा करने लगा, फिर घड़ी देखी और बिदा लेकर चला गया।

“मैं शर्त बदने को तैयार हूँ,” वेस्टकोट वाले सज्जन ने कहा, “कि जनरल मन्त्री के पीछे-पीछे गया है। वह यहाँ की उपस्थिति के लिए कोई न कोई बहाना निकाल लेगा और ऐसा भाव दिखायेगा कि हमारा चाहे जो कर सकता है।”

जब अधसोया नौकर मोमबत्तियाँ बदल चुका तो अध्यक्ष ने कहा : “सज्जनो, अब हमें गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। एक दूसरे को समझाते रहने से कोई लाभ नहीं। अब हमें उस पत्र के रूप पर विचार कर लेना चाहिए जो अड़तालीस घण्टे के भीतर ही हमारे विदेशी मित्रों के सम्मुख होगा। यहाँ पर मन्त्रियों का भी कुछ उल्लेख हुआ है। म० द नेवाल के जाने के बाद अब हम कह सकते हैं कि हमें मन्त्रियों की क्या परवाह है ? उन्हें हम अपनी इच्छानुसार भुक्ने को मजबूर कर लेंगे।”

कार्डिनल ने बड़े भेद-भरे ढंग से मुस्करा कर अपना समर्थन प्रगट किया। “मुझे लगता है कि अपनी स्थिति को संक्षेप में रखना बहुत ही आसान काम है,” आगद के तरुण बिशप ने ऐसे स्वर में कहा जिससे बड़ी ही तीखी कट्टरता की दबी हुई भीतरी आग प्रगट होती थी। अभी तक वह चुप ही रहे थे। पर जुलिये ने देखा था कि उनकी आँखें, जो शुरू में शान्त और कोमलतापूर्ण थी, पहले घण्टे के विवाद में ही प्रज्वलित हो उठी थी। अब उनका हृदय विसूवियस ज्वालामुखी के लावा की भाँति बह निकला।

उन्होंने कहा : “१८०६ से १८१४ तक इंग्लैंड ने केवल एक ही भूल की; उसने नैपोलियन के साथ सीधे और व्यक्तिगत रूप से टक्कर न ली। जैसे ही उस आदमी ने ड्यूक और चैम्बरलेन बनाये, जैसे ही उसने राजसिंहासन की फिर से स्थापना की, तो भगवान ने जो लक्ष्य उसको सौंपा था वह पूरा हो गया था, अब उसके विनाश की घड़ी आ

गयी थी। पवित्र धर्मग्रन्थों में हमें एक से अधिक स्थान पर शिक्षा दी गयी है कि अत्याचारियों के विनाश का क्या उपाय है।” (यहाँ पर बहुत-से लैटिन के उद्धरण भी उन्होंने दिये।)

‘सज्जनो, आज हमें किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं करना है—समूचे पेरिस का प्रश्न है। सारा फ्रान्स पेरिस की नकल करता है। प्रत्येक जिले में पाँच सौ व्यक्तियों को शास्त्र देने से क्या लाभ होगा? यह बड़ा जोखिम का काम है जो कभी पूरा न हो पायेगा। समूचे फ्रांस को ऐसे काम में उलझाने से क्या लाभ है जो केवल पेरिस की ही अपनी विशेषता है? केवल पेरिस ने ही, अपने समाचार-पत्रों और अपने ड्राइंग रूमों के द्वारा, मुसीबत बुलायी है। इस आधुनिक बेबीलोन का नाश होना ही उचित है।

“चर्च और पेरिस के बीच इस प्रतिद्वन्द्विता का अन्त होना चाहिए। ऐसा नाटकीय निष्कर्ष वास्तव में राजतन्त्र के सामारिक हित में भी है। बोनापार्ट के राज्यकाल में पेरिस को एक शब्द भी कहने का साहस क्यों नहीं हुआ था? यह से-रौश के तोखाने से पृच्छिये।”



म० द ला मोल के साथ जुलिये जब वहाँ से निकला तो सबेरे के तीन बजे थे। मार्कि कुछ लज्जित और थके हुए से लग रहे थे। जुलिये के साथ बातचीत में पहली बार उनके स्वर में कुछ अनुनय का भाव था। उन्होंने उससे वचन माँगा कि उत्साह के जिस अतिरेक को देखने का उसे सयोगवश अवसर मिला है उसे वह कभी किसी के आगे प्रगट न करेगा। “हमारे विदेशी मित्र जब तक इस नौजवान गरम दिलियों के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करने पर बहुत जोर न दे, तब तक उनसे इस बात का कोई जिक्र न करना। यदि सरकार का पतन हो जाय तो इससे इन लोगों का क्या बिगड़ेगा? ये लोग तो कार्डिनल बन जायेंगे और जा कर रोम में आश्रम खोज लेंगे। रक्त तो देहात के मकानों में हमारा बहेगा।”

जुलिये की छब्बीस पन्ने की रिपोर्ट के आधार पर जो गुप्त पत्र मार्कि ने बनाया वह सवा पाँच के पहले तैयार नहीं हो सका ।

“मैं थक कर चूर हूँ,” मार्कि ने कहा, “जैसा तुम्हें इस पत्र से ही साफ पता चल जायेगा । अन्त तक पहुँचते-पहुँचते इसमें स्पष्टता नहीं रही । मैं इससे जितना असन्तुष्ट हूँ उतना जीवन में अपने किसी काम से नहीं हुआ । “देखो भाई,” उन्होंने आगे कहा, “तुम भी जाकर कुछ देर लेट रहो । कहीं तुम्हें कोई उडा न ले जाये, इस डर से मैं तुम्हें कमरे में बन्द करके बाहर से ताला लगा दूँगा ।”

अगले दिन मार्कि जुलिये को पेरिस से कुछ दूर पर एक निर्जन-से मकान में ले गये । वहाँ पर उन्हें कुछ अजीब-से लोग मिले जिन्हें जूलियें ने पुरोहित समझा । उसे छद्म-नाम से एक पासपोर्ट दे दिया गया जिस पर गन्तव्य स्थान का नाम स्पष्ट लिखा था । अभी तक जूलियें यही बहाना करता आया था कि उसे इस नाम का पता नहीं है । वह अकेला ही गाडी में बैठकर चल पड़ा ।

मार्कि को उसकी स्मरण-शक्ति के बारे में कोई दुविधा नहीं थी; जुलिये पत्र को कई बार उन्हें मुँहजबानी सुना चुका था । पर उन्हें उसके बीच ही में पकड़ लिये जाने का बड़ा डर था ।

“इस बात का विशेष ध्यान रखना कि फ़ैशनेबल और मूर्ख सैलानी के अतिरिक्त तुम कुछ और न जान पड़ो,” जुलिये ड्राइंग रूम से बाहर जाने लगा तो उन्होंने बड़े स्नेह से उससे कहा, “हमारी कल रात की सभा में शायद दो या तीन रंगे सियार अवश्य रहे होंगे ।”

यात्रा तो तेज थी पर उसका मन बड़ा उदास हो रहा था । मार्कि की नजर से ओझल होते ही वह गुप्तपत्र और अपने उद्देश्य को एकदम भूल गया और मातिल्द का तिरस्कार ही उसके विचारों में मँडराता रहा ।

मेट्ज के आगे एक गाँव में पोस्टमास्टर आया और कहने लगा कि घोड़े नहीं हैं । उस समय रात के दस बजे थे । जुलिये ने बहुत ही क्रुद्ध

होकर भोजन के लिए आदेश दिया। वह सामने के द्वार से बाहर निकल कर चुपचाप धीरे-धीरे अस्तबल के अहाते में जा पहुँचा। उसे सचमुच वहाँ कोई घोड़ा नहीं दिखाई पड़ा।

किन्तु उस आदमी का ढग बड़ा अजीब था, जुलिये सोचने लगा। उसकी वे अजीब सी आँखें मुझे बड़े गौर से देख रही थी।

वह किसी बात को आँख मूँद कर ठीक नहीं माने ले रहा था। भोजन के बाद उसके मन में भाग निकलने का विचार आया और बाहर के रंग-ढंग समझने के लिए वह अपने कमरे से निकल कर रसोई घर में आकर आग तापने लगा। वहाँ प्रसिद्ध गायक सिनोर जैरोनिमो को देख कर उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा।

उसने एक आरामकुर्सी आग के पास रखवा ली थी और उसी में बैठा हुआ वह जोर-जोर से कराह रहा था और अपने चारों ओर बैठे हुए जर्मन किसानों की अपेक्षा स्वयं अपने आपसे ही अधिक बातचीत करता जा रहा था।

“ये लोग मुझे बरबाद कर देंगे,” उसने जुलिये से कहा। “मैंने कल मयास में गाने का वादा कर रखा है। वहाँ सात शासनाखुद राजा मेरा गाना सुनने के लिए इकट्ठे हैं, पर चलो, बाहर कुछ हवा खा आये,” उसने अर्थपूर्ण निगाहों से देखते हुए कहा।

सड़क पर कोई तीस गज चलने के बाद एकान्त पाकर उसने जुलिये से कहा, “जानते हो, यहाँ क्या हो रहा है? यह पोस्टमास्टर गुण्डा है। यहाँ पर टहलते-टहलते मैंने एक छोटे से लडके को एक फ्रैंक देकर सब बात का पता लगा लिया है। गाँव के दूसरे छोर पर अस्तबल में एक दर्जन से भी अधिक घोड़े हैं। ये लोग किसी पत्र-वाहक अथवा अन्य व्यक्ति को रोकने के चक्कर में जान पड़ते हैं।”

“सचमुच?” जुलिये ने बड़े भोलेपन के साथ कहा।

इस चाल का पता लगाना ही काफी न था; वहाँ से किसी तरह निकल चलना भी जरूरी था। पर यह जुलिये और उसके मित्र नहीं

कर सके। “चलो, सबेरे तक इन्तज़ार करे।” गायक ने अन्त में कहा। “इन्हें हम लोगो पर शक हो रहा है। कल सबेरे हम बढिया से नाश्ते का आदेश देगे और जब तक ये उसे तैयार करे, हम लोग बाहर सैर के लिए निकल पडेगे। फिर कुछ घोडे किराये पर लेकर चुपचाप भाग निकलेगे और अगले स्टेशन पर पहुच जायेगे।”

“और आपका सामान ?” जुलिये ने कहा। वह सोचने लगा था कि कही जैरोनिमो को ही उसे पकडने के लिये न भेजा गया हो। उन्हे भोजन करके सोने के लिये जाना पडा। जुलिये अभी पहली ही नीद में था कि अपने कमरे में बडी लापरवाही से दो व्यक्तियों के बात करने की आवाज से उसकी आंख खुल गयी।

उसने पोस्टमास्टर को पहचान लिया; उसके हाथ में एक चोर लालटेन थी। रोशनी उस समय उस बक्स की ओर थी जो जुलिये अपने साथ लाया था। पोस्टमास्टर के बगल में ही एक दूसरा व्यक्ति था जो बडे इत्मीनान से खुले हुए सद्क को टटोल रहा था। जुलिये को केवल उसके कोट की काली आस्तीने दिखाई पडी जो बदन पर बहुत चुरत थी।

यह तो कैसक है, अपने तकिये के नीचे रक्खी हुई पिस्तौल को चुपचाप हाथ में लेते हुए उसने सोचा।

“उसके जाग उठने का कोई डर नहीं है, पुरोहित जी,” पोस्टमास्टर ने कहा। “हमने उसे आपकी तैयार की हुई शराब ही दी है।”

“यहाँ तो कही कोई कागज नहीं दिखाई पडते,” क्यूरे ने उत्तर दिया। “बहुत सारे कपडे, तेल-फुलेल और ऐसी ही बेकार छोटी-मोटी चीजें हैं। यह तो कोई सैर के लिए निकला हुआ मनमौजी सैलानी जान पडता है। पत्र-वाहक शायद वह दूसरा आदमी होगा जो इटैलियन लहजे में बातचीत करता है।’

दोनों आदमी जुलिये के यात्रा-कोट की जेबे तलाश करने के लिये और पास आ गये। उन्हे चोर समझकर मार डालने का उसे बडा लालच हुआ। इसकी बडी इच्छा उसे हुई—पर मन ही मन उसने कहा

कि यह बड़ी सुखता होगी, मेरा उद्देश्य अधूरा रह जायेगा। उसके कोट की तलाशी लेने के बाद पुरोहित ने कहा “यह कोई कूटनीतिज्ञ नहीं है।” और उसने बाहर चले जाने की बुद्धिमानी की।

जुलिये मन ही मन कह रहा था कि इसने मेरा बिस्तर छूने की कोशिश की तो पछतायेगा। पास आकर कहीं तुरा भोक दे तो ? यह मैं नहीं होने दूँगा।

पुरोहित ने सिर घुमाया तो जुलिये ने अपनी आँखें खोल ली। उस के विस्मय का ठिकाना न था। फादर कास्तानेद। और सचमुच, इन दोनों के बहुत ही धीमे-धीमे बातें करने पर भी उसे शुरू से ही लगा था कि उनमें से एक की आज्ञा वह पहचानता है। जुलिये की बड़ी तीव्र इच्छा हुई कि ससार को नीचतम दुष्ट से छुटकारा दिला दे।

पर मेरा उद्देश्य। उसने अपने आपको याद दिलाया।

पुरोहित अपने सगी के साथ बाहर चला गया। पंद्रह मिनट बाद जुलिये ने जाग पड़ने का बहाना किया। उसने लोगो को पुकारकर घर भर को जगा डाला।

“मुझे जहर दिया गया है,” उसने जोर से कहा। “बेहद दर्द हो रहा है।” वह जैरोनिमो की सहायता के लिए जाने का कोई बहाना चाहता था। वह शराब में मिलाये गये जहर में अध मूर्च्छित अवस्था में पड़ा था।

ऐसी ही किराी अजीब-सी चाल के भय से जुलिये ने भोजन के साथ कुछ चाकलेट भी ली थी जो वह अपने साथ ही पेरिस से लेना आया था। जैरोनिमो को वह इतना अधिक न जगा सका कि उसे वहाँ से चल पड़ने के लिए राजी कर सकता।

“मुझे अगर नेपिल्स का पूरा राज्य भी मिल जाय तो मैं इस समय निद्रा के अपूर्व आनन्द को छोड़ने के लिए तैयार नहीं,” गायक ने कहा।

“और सात शासनारूढ राजा ?”

“उन्हे प्रतीक्षा करने दो।”

“जुलिये अकेला ही चल पडा और अन्य किसी दुर्घटना के बिना ही उस महत्वपूर्ण व्यक्ति के घर जा पहुँचा। एक पूरी सुबह उनसे भेट कर सकने के असफल प्रयत्नों में बीत गयी। सौभाग्यवश चार बजे के लगभग ड्यूक ने बाहर भ्रमण का निश्चय किया। जुलिये ने उन्हें पैदल ही घर से निकलते हुए देखा तो वह बेहिचक उनमें भीख माँगने के बहाने उनकी ओर बढ़ा। जब वह उनसे कोई दो फीट की दूरी पर रह गया तो उसने मार्कि की दी हुई घड़ी निकाली और उसका बहुत प्रदर्शन किया। “कुछ दूर रहकर मेरे पीछे-पीछे आओ,” उसकी ओर नज़र डाले बिना ही उससे कहा गया।

कोई पौन मील चलने के बाद ड्यूक अचानक एक काफी हाउस में घुस गये। इस घटिया दर्जे की सराय के एक कमरे में जुलिये को अपने चार पृष्ठ ड्यूक को सुनाने का सौभाग्य मिला। जब वह सुनना बुरा तो उससे कहा गया “फिर से और थोड़ा धीरे-धीरे सुनाओ।”

ड्यूक कुछ लिखते भी गये। “पैदल ही गाड़ी के अगले स्टेशन तक चले जाओ। अपना सामान और गाड़ी यहीं छोड़ दो और किसी न किसी तरह स्ट्रासबूर पहुँचो। इस महीने की बाईसवी तारीख को” (उस दिन दस थी) “साढ़े बारह बजे यहीं इसी काफी हाउस में आ जाना। इस समय यहाँ से आधे घण्टे के पहले न निकलना। किसी से कुछ कहना मत।”

जुलिये को बस यही शब्द सुनने को मिले। वे उनके मन में अगिक से अधिक श्रद्धा उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त थे। तो दुनिया का कारबार इस तरह से चलता है, वह सोचने लगा। यदि इस महान् राजनीतिज्ञ ने तीन दिन पहले उन गरम-दली बकवासी लोगों की बातें सुनी होती तो यह क्या कहते ?

स्ट्रासबूर पहुँचने में जुलिये को दो दिन लगे। वह जानता था कि वहाँ उसे करना तो कुछ है ही नहीं, इसलिए वह लम्बा चक्कर लगाता हुआ वहाँ पहुँचा। यदि वह शैतान फादर कास्तानेद मुझे पहचान लेता

तो फिर आसानी से पीछा छोड़ने वाला जीव न था... और मुझे मूर्ख बनाने और मेरे उद्देश्य को भ्रष्ट करने में उसे कितनी प्रसन्नता होती !

फादर कास्तानेद उत्तर सीमान्त पर धर्मसंघ के गुप्तचरो के मुखिया थे । उन्होंने उसे नहीं पहचाना और स्त्रासबूर के जैस्विटपथियो ने भी अपने सारे उत्साह के बावजूद जुलिये के ऊपर कोई नजर न रखी । क्योंकि अपने बड़े भारी नीले कोट के कारण वह एक ऐसे नौजवान सैनिक जैसा दिखाई पड़ता था जो अपनी साज-सज्जा के बारे में बहुत चिन्तित रहता है ।

स्त्रासबूर

स्त्रासबूर मे जुलिये को एक सप्ताह बिताना पडा । मन बहलाने के लिए वह सैनिक गौरव और अपने देश के प्रति कर्तव्य के विचारो मे डूबा रहता । तो क्या वह सचमुच प्रेम-पीडित है ? उसे तनिक भी समझ मे न आता था, किन्तु अपने सत्रस्त हृदय मे वह पाता कि मातिल्द उसके सुख की भाँति ही उसके विचारो की भी सम्पूर्ण स्वामिनी है । हताशा के गर्त मे डूबने से बचने के लिये उसे अपनी समस्त मानसिक शक्ति की आवश्यकता थी । किसी ऐसे विषय की कल्पना करना जिसका माद० द ला मोल से कोई सम्बन्ध न हो, उसकी शक्ति के बाहर था । पिछली बार जब ऐसी भावनाएँ मादाम द रेनाल के कारण उसके मन मे जाग्रत हुई थी, तो महत्वाकाक्षा और मिथ्याहकार की छोटी-छोटी सफलताओ से वह मन बहला लिया करता था । किन्तु मातिल्द ने सब कुछ अपने मे समा लिया था । वह उसे अपने भविष्य मे हर स्थान पर दिखाई पडती थी ।

इस भविष्य मे जुलिये को हर जगह असफलता ही नजर आती । वह व्यक्ति जो वेरियेर मे आत्मविश्वास से ऐसा भरपूर दिखाई पडा करता था, आज ऐसे तीव्र आत्म-तिरस्कार मे डूबा हुआ था ।

तीन दिन पहले वह फादर कास्तानेद को मारने के लिये लालायित था; स्त्रासबूर मे यदि कोई बच्चा भी उससे झगडा करने लगता तो वह बच्चे का ही पक्ष लेता । जब वह अपने अतीत के सारे विरोधियो और

खुल्लमखुल्ला शत्रुओं की बात सोचने लगा तो उसे अनुभव हुआ कि भूल सदा स्वयं उसकी अपनी ही हुआ करती थी ।

यह उचित ही था कि उसकी जो कल्पना-शक्ति किसी समय भविष्य के स्वर्ण-स्वप्नों की रचना में लगी रहती थी, प्राज वही उसकी सबसे बड़ी शत्रु थी ।

यात्री होने के कारण भयकर एकान्त ने इस तीखी कल्पना की शक्ति को और भी बढ़ा दिया था । इस समय कोई मित्र कैसी बड़ी निधि होता । किन्तु जुलिये सोचने लगा कि क्या इस सप्ताह में कोई भी ऐसा हृदय है जो मेरे लिये धडकता हो । और यदि कोई मित्र मिल भी जाय तो क्या सम्मान की यह माँग नहीं है कि मैं चिरकाल तक मौन हो रहूँ ?

उस दिन वह इसी उदास मनःस्थिति में केल के चारों ओर देहात में भटक रहा था । यह राइन नदी के किनारे बसी हुई छोटी-सी मण्डी है जो दस और गूवियों से-सीर के नाम से अमर हो गयी है । एक जर्मन किसान ने उसे वे सब छोटी-छोटी धाराएँ, सड़के और राइन नदी के छोटे-छोटे द्वीप दिखाये जिन्हें इन महान सेनापतियों की वीरता ने इतना प्रसिद्ध बना दिया है ।

जुलिये ने बाये हाथ में घोड़े की लगाम थामकर दाये में वह शान-दार नक्शा खोल रक्खा था जो 'मार्शल से-सीर के सम्मरण' नामक पुस्तक में मिलता है । तभी किसी की प्रसन्नताभरी किलकारी सुनकर उसने सिर उठाया ।

सामने उसके लन्दन के मित्र प्रिन्स कोरासौफ खड़े थे जिन्होंने कुछ ही महीने पहले उसके आगे भव्य सूर्खता के मौलिक सिद्धान्त प्रतिपादित किये थे । इस महान् कला के प्रति अपनी पुरानी भक्ति के परिणाम-स्वरूप कोरासौफ, जो अभी-अभी स्वासबूर पहुँचे थे, जो केल में पिछले एक घण्टे से अधिक न बिता पाये थे और जिन्होंने अपने जीवन में १७६६ के घेरे के विषय में एक पक्ति भी कभी न पढ़ी थी, ये सब बातें

जुलिये को समझाने लगे । जर्मन किसान विस्मित होकर उनकी ओर ताक उठा क्योंकि उसे इतनी जानकारी तो थी ही कि प्रिस की भयकर भूलो को पहिचान सके । जुलिये का मन इस किसान के विचारों से हजारों मील दूर था । वह आश्चर्य से इस सुन्दर नौजवान की ओर देख रहा था और उसकी घुड़सवारी में निपुणता की मन ही मन प्रशंसा कर रहा था ।

कैसा सुखी स्वभाव है ! उसने सोचा । उसके वस्त्र कितने चुस्त हैं, बाल कितने सुन्दर कटे हुए हैं । आह ! यदि मैं भी ऐसा ही होता तो तीन दिन तक प्यार करने के बाद वह मेरी ओर से इतनी अधिक विरक्त न हो जाती ।

केल के घेरे का वर्णन समाप्त करने के बाद प्रिस ने जुलिये से कहा “अरे तुम तो बिल्कुल ट्रेपपन्थी लग रहे हो । गम्भीरता का जो सिद्धान्त मैंने तुम्हें लन्दन में बताया था उसे तुमने बहुत बुरी तरह अपना डाला है । उदास मुद्रा कभी सदाचरण नहीं मानी जा सकती, आवश्यकता ऊबे हुये दिखाई पड़ने की है । उदाम होने का अर्थ है कि तुम्हें किसी ऐसी चीज की चाह है जो तुम्हारे पास नहीं है अथवा कोई ऐसी बात है जिसमें तुम्हें सफ़रता नहीं मिली । यह तो अपनी हीनता स्वीकार कर लेने के बराबर है । दूसरी ओर यदि तुम ऊबे हुए हो तो इसका अर्थ हुआ कि जो व्यक्ति तुम्हें व्यर्थ ही प्रसन्न करने का प्रयत्न कर रहा है वह तुमसे हीन है । भले आदमी, सोचो तो सही कि कितनी भारी भूल तुम कर रहे हो ।”

जुलिये ने एक क्राउन उस किसान के आगे फेंक दिया जो मुँह फाड़े उनकी बातें सुन रहा था ।

“बहुत ठीक । प्रिस ने कहा ।” “यह हुई शान की बात । कितने ऊँचे दर्जे की उपेक्षा प्रकट होती है ! सचमुच, बहुत अच्छे ।” और अपने घोड़े को सरपट दौड़ा दिया । जुलिये मन्त्रमुग्ध-सा उनके पीछे चला ।

आह ! यदि मैं ऐसा होता तो वह कभी क्वाजन्वा को मुझसे अच्छा

न समझती ! प्रिस की मूर्खताओं से ज्यो-ज्यो उसके विवेक को धक्का लगता त्यों-त्यों उनको न ग्रहण कर सकने के कारण वह अपने आपसे अधिक घृणा करने लगता और उनमें हिस्सा न ले सकने के कारण अपने आप को और भी अधिक अभागा समझता । आत्मविद्रूप इससे आगे नहीं जा सकता ।

प्रिस को वह सचमुच उदास जान पड़ा । उन्होंने उससे कहा, “अच्छा, यह बताओ कि क्या अपना सारा धन गँवा बैठे हो, या किसी छोटी-मोटी अभिनेत्री के प्रेम में पड़ गये हो ?”

रूसी लोग फ्रांसवासियों के रग-ढग की नकल तो करते हैं, पर सदा उनसे पचास वर्ष पीछे रहते हैं । वे लोग अभी लुई पन्द्रहवें के युग तक ही पहुँच पाये हैं ।

इस प्रेम-सम्बन्धी परिहास से जुलियें की आँखों में आँसू आ गये । इस भले मिलनसार व्यक्ति से सलाह क्यों न लूँ ? उसने अचानक ही सोचा । वह प्रिस से बोला : “मैं सचमुच प्रेम में पड़ गया हूँ, बल्कि सच पूछो तो एक तिरस्कृत प्रेमी हूँ । पड़ोस के एक शहर में रहने वाली एक सुन्दर स्त्री ने तीन दिन तक प्रेम करने के बाद मुझे ठुकरा दिया है और यह परिवर्तन मुझे मारे डाल रहा है ।”

उसने एक छद्म नाम से मातिल्द का चरित्र और व्यवहार प्रिस को कह सुनाया ।

“और आगे कहने की आवश्यकता नहीं,” प्रिस ने कहा । “अपने चिकित्सक की योग्यता में तुम्हें विश्वास दिलाने के लिए कहानी मैं ही पूरा किये देता हूँ । इस युवती के पति के पास बहुत अधिक संपत्ति है, अथवा इससे भी अधिक सम्भव यह है कि वह स्वयं जिले के किसी बहुत बड़े खानदान की है । इतने भारी गर्व का कोई न कोई कारण तो होना ही चाहिए ।”

जुलियें ने स्वीकृति से सिर हिलाया, बोलने लायक उसके हृदय में साहस ही न बचा था ।

सुख और स्याह

“बहुत ठीक,” प्रिस ने कहा, “अब तुम्हे फौरन ही तीन कड़वी गोलियाँ गले से उतारनी पड़ेगी।”

“पहल, तुम्हे रोज जाकर मादाम—से मिलना चाहिए। क्या नाम है उनका ?”

“मादाम द दुब्बा।”

“नाम भी क्या है !” प्रिस ने बेतहाशा हँसते हुए कहा। “भाई, माफ करना, तुम्हारे लिये तो यह नाम बहुत ही अपूर्व होगा। तुम्हे मादाम द दुब्बा से रोज बिला नागा मिलना चाहिए, और इस बात की सावधानी बरतनी चाहिए कि उन्हे तुम विरक्त और अप्रसन्न न जान पड़ो। इस युग के महान् सिद्धान्त को याद रखो—लोग जो आशा करते हैं उसके विपरीत बनो। उनके सामने अपने आपको ठीक वैसे ही रखो जैसे तुम उनकी कृपा होने के एक सप्ताह पहले तक थे।”

“आह ! उस समय तो मैं शान्त था,” जुलिये ने हताश भाव से कहा, “मैं समझता था कि मैं उसके ऊपर तरस खा रहा हूँ।”

“परवाना शमा से ही जलता है,” प्रिस ने आगे कहा, “यह बात दुनिया के शुरू से चली आ रही है।”

“तो सबसे पहले, तुम उससे हर रोज मिलो।”

“दूसरे, उसकी मडली की किसी अन्य स्त्री के प्रति रुझान दिखाना शुरू करो, पर अपने व्यवहार में किसी प्रकार के आवेश का प्रदर्शन किये बिना ही, समझ गये ? मैं तुमसे छिपाऊँगा वही, तुम्हारा पार्ट है जरा कुछ कठिन ही। तुम्हे झूठ-मूठ बहाना बनाना है। पर अगर तुम्हारा भेद खुल गया तो सब काम मिट्टी समझो।”

“उसमें इतनी अधिक बुद्धि है, और मुझमें इतनी कम है। मेरा उबरना कठिन है,” जुलिये ने उदासी के साथ कहा।

“नही, बात यह है कि मैंने जितना सोचा था तुम उससे कहीं अधिक प्रेम में हो। मादाम द दुब्बा भगवान् के यहाँ से बहुत ऊँची पदवी अथवा बहुत अधिक धन पाने वाली तमाम स्त्रियों की भाँति केवल अपने आप

को ही प्यार करती है। वह तुम्हारी ओर देखने के बजाय अपनी ओर देखती है और इसलिये तुम्हें पहचानती नहीं। दो-तीन बार उन्होंने जो तुम्हारे प्रति प्रेम-प्रदर्शन किया है वह इस कारण कि अपनी कल्पना के जोर से उन्होंने तुममें अपने सपनों के नायक की झलक देखी है, तुम्हारे असली रूप को नहीं समझा—पर भाई सोरेल, ये सब तो प्रारम्भिक बातें हैं—तुम क्या बिल्कुल स्कूनी बालक हो ?

“भगवान् की कसम ! चलो इस दुकान में चले ! यहाँ एक सुन्दर-सा काला गुलुबन्द है। ऐसा लगता है कि बॉलिंगटन स्ट्रीट के जॉन एन्डरसन के यहाँ का बना हुआ हो। मेरे ऊपर दया करके उसे ले लो और जो बाह्यात काली रस्सी तुमने अपने गले में लपेट रखी है उसे जल्दी से जल्दी फेंक दो।

“और अब,” स्त्रासबूर के सबसे सुन्दर वस्त्र-विक्रेता की दुकान से निकलते-निकलते प्रिंस ने कहना शुरू किया, “मादाम द दुब्बा की मित्र-मंडली किस प्रकार की है ? हे भगवान् ! क्या नाम पाया है ! नाराज न होना भाई सोरेल, मुझसे रहा ही नहीं जाता। हाँ, तो फिर तुम किसकी तरफ रुझान दिखाओगे ?”

“एक बहुत ही अमीर व्यापारी की बेटी के साथ जो बड़ा सदाचार का ढोंग रचती है। उसकी आँखें अपूर्व सुन्दर हैं जो मुझे बहुत ही अच्छी लगती हैं। निस्सन्देह वह जिले में सबसे महत्वपूर्ण स्त्री है। पर अपने सारे ठाटबाट के बावजूद यदि कोई व्यापार अथवा दुकानदारी का नाम भी ले दे तो उसका मुँह लज्जा से लाल हो जाता है और वह घबरा उठती है। दुर्भाग्यवश उसके पिता स्त्रासबूर के सबसे प्रसिद्ध व्यापारी थे।”

“इस भाँति यदि कोई ‘उद्योग’ शब्द मुँह से निकाल दे,” प्रिंस ने हँसते हुए कहा, “तो इस बात का पक्का यकीन है कि वह सुन्दरी अपने बारे में सोचने लगेगी, तुम्हारे बारे में नहीं। यह हास्यास्पद विशेषता सचमुच दिव्य है और बहुत ही उपयोगी है। इसके कारण तुम उसकी सुन्दर आँखों के आगे पल भर के लिए भी अपना होशहवास खोने

से बचे रहोगे । तुम्हारी सफलता निश्चित है ।”

जुलिये मार्शल की विधवा मादाम द फेन्वाक की बात सोच रहा था जो अक्सर द ला मोल भवन आया करती थी । वह एक सुन्दरी विदेशिनी महिला थी जिन्होंने मार्शल से उनकी मृत्यु के एक वर्ष पहले ही विवाह किया था । उनके सारे जीवन का इसके अतिरिक्त अन्य कोई लक्ष्य ही न जान पड़ता था कि लोगो को उनके एक व्यापारी की बेटी होने की बात याद न रहे । पेरिस में महत्वपूर्ण व्यक्तियों में अपनी गिनती कराने के लिए वह धार्मिक लोगो में प्रमुख बन चुकी थी ।

जुलिये सचमुच प्रिंस से बहुत प्रभावित हुआ । उनके विचित्र रंग-ढग पाने के लिये वह क्या नहीं देने को तैयार हो जाता ! दोनो मित्रों के बीच वार्तालाप खत्म ही न होता था । कोरासौफ तो बिलकुल ही भावविह्वल था; कभी किसी फ्रांसीसी ने इतनी देर तक उसकी बात न सुनी थी । वह प्रसन्न होकर सोचने लगा कि इस भाँति आखिरकार अपने शिक्षको को शिक्षा देकर मैंने अपने लिए एक श्रोता भी जुटा लिया है ।

“तो फिर तय रहा,” उसने जुलिये से दसवीं बार दोहराया, “कि जब मादाम द दुब्वा के सामने इस व्यापारी की बेटी से बात करो तो भावावेग का लेशमात्र भी न हो । दूसरी ओर जब लिखो तो ऐसा लगे मानो प्रेम की ज्वाला में जले जा रहे हो । इन धार्मिक बनने वाली स्त्रियों को प्रेम-पत्र पढ़ने में बड़ा आनन्द आता है; वह एक प्रकार से क्षण भर के लिए लगाम ढीली कर देने के बराबर है । इसमें कोई बनावट नहीं, उस समय उन्हें अपने हृदय की बात सुनाने का साहस होने लगता है, इसलिए दो पत्र रोज ।”

“नहीं-नहीं, कभी नहीं !” जुलिये ने हिम्मत हारते हुए कहा । “तीन वाक्य सोचने की अपेक्षा मैं खल्लड में कूटा जाना अधिक पसन्द करूँगा । मैं तो भई, एक लाश की भाँति हूँ । मुझसे अब और कुछ पाने की आशा न करो । मुझे तो सड़क के किनारे ही मरने दो ।”

“पर यह किसने कहा कि तुम खुद पत्र सोच कर लिखो ? मेरे सन्दूक मे प्रेम-पत्रों के छः ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ मौजूद हैं। उनमें हर प्रकार के स्त्री-चरित्र के योग्य पत्र पड़े हैं। उसमें ऐसे भी हैं जो किसी प्रकार न डिगने वाली स्त्री को भी लिखे जा सकते हैं। क्या कालिस्की ने रिचमण्ड में टैरेस पर—तुम तो जानते हो उस जगह को, लन्दन से कोई दस मील की दूरी पर है—इंगलैड की सर्वश्रेष्ठ क्वेकर सुन्दरी से प्रेम नहीं किया था ?”

जब रात को दो बजे जुलिये ने अपने मित्र से विदा ली तो उसका दुख बहुत कुछ कम था।

अगले दिन प्रिंस ने एक नकल करने वाले को बुला भेजा और दो दिन के भीतर ही जुलिये को तिरपन प्रेम-पत्र मिल गये जिन पर बाँकायदे क्रम-सख्या पड़ी हुई थी और जो पवित्र से पवित्र और गम्भीर से गम्भीर शीलवती के हृदय को पिघला देने के उद्देश्य से रचे गये थे।

“चौवनवाँ इसलिए नहीं है,” प्रिंस ने कहा, “क्योंकि कालिस्की को तभी उसके काम पर भेज दिया गया था। पर तुम तो मादाम द दुब्बा के हृदय पर प्रभाव डालना चाहते हो। इसलिए यदि यह व्यापारी की बेटी तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करे तो इससे तुम्हें क्या ?”

वे दोनों हर रोज साय-साथ घुड़सवारी के लिए जाते थे, प्रिंस को जुलिये बहुत ही भा गया था। अपनी इस आकस्मिक मैत्री का कोई वास्तविक प्रमाण दे सकने की इच्छा से अन्त में उन्होंने जुलिये से अपनी मास्को की एक सम्पत्तिशालिनी चचेरी बहिन के साथ विवाह का प्रस्ताव भी कर दिया। उन्होंने कहा : “एक बार विवाह हो जाने के बाद मेरी जान-पहिचान और अपने उस क्रास के कारण तुम दो वर्ष में कर्नल बन जाओगे।”

“पर यह क्रास नेपोलियन का दिया हुआ नहीं है” बल्कि उसके ठीक विपरीत।”

“इससे क्या होता है ?” प्रिंस ने कहा। “चलाया तो उसी ने था

न ? यह आज भी योरप भर मे सर्वोच्च सम्मान-चिह्न है ।”

जुलिये शायद इस प्रस्ताव को स्वीकार कर ही लेता, पर तभी कर्तव्य के आह्वान ने उसे वहाँ से बुला लिया । उसने कोरासौफ से विदा लेते समय पत्र लिखने का वचन दिया । उसे गुप्त पत्र का उत्तर मिल गया और वह जल्दी से पेरिस लौट पड़ा । पर उसे वहाँ पहुँचे दो दिन से अधिक न हुए होंगे कि फ्रांस और मातिल्द को छोड़कर जाने का विचार उसे मौन से भी अधिक त्रासदायक जान पड़ने लगा । उसने मन ही मन कहा कि मैं कोरासौफ के लाखों-करोड़ों से तो शादी न करूँगा, पर उसकी सलाह पर चल कर देखूँगा ।

वह सोचने लगा कि आखिरकार स्त्रियों को फुसलाना ही तो उसका धन्धा है । उसकी उम्र इस समय तीस वर्ष की है, यानी पंद्रह वर्ष से उसने और किसी बात पर ध्यान ही नहीं दिया । यह भी नहीं कहा जा सकता कि उममे बुद्धि की कमी है । वह होशियार भी है और सावधान भी । ऐसे स्वभाव के व्यक्त के लिए उत्साह और कविता असम्भव वस्तुएँ हैं । वह अनुभवी मध्यस्थ है । इस कारण भी उसके भूल करने की सम्भावना कम है ।

मैं अब अवश्य मादाम द फेरवाक से प्रेम-प्रदर्शन करूँगा । उनसे थोड़ा-सा ऊबने की सम्भावना अवश्य है, पर मैं उन सुन्दर आँखों की ओर ताकता रहा करूँगा, जो मुझे सबसे अधिक प्यार करने वाली आँखों से इतनी अधिक मिलती है । वह विदेशिनी भी हैं, इसलिए एक नये चरित्र को अध्ययन करने का मौका मिलेगा ।

मेरा सिर फिर गया है, मैं तो डूबते हुए व्यक्ति के समान हूँ । मुझे अपनी समझ पर भरोसा करने के बजाय किसी मित्र की सलाह पर चलना चाहिये ।

•

इस सुन्दर गीत को शायद ही कभी किसी ने इससे अधिक अधीरता से सुना हो। गीत पूरा होने पर डोन डीगो बुस्तोस ने जुलिये से कहा “मादाम द फेरवाक ने ‘एक दिन सराय मे कामदेव’ नामक गीत के लेखक को नौकरी से निकलवा दिया था।

जुलिये यह सोचकर कॉप उठा कि अब यह गाना भी सुनना पड़ेगा, डोन डीगो उसका विश्लेषण करके ही सन्तुष्ट हो गया। वह सचमुच ही गन्दा और घटिया दर्जे का गीत था।

“जब मादाम द फेरवाक इस गाने को लेकर नाराज होने लगी,” डोन डीगो ने कहा, “तो मैंने उन्हें समझाया कि उनकी जैसी महिला को वास्तव मे इस तरह की मूर्खतापूर्ण चीजे पढनी ही नहीं चाहिये। धर्म और सदाचार की चाहे जितनी उन्नति हो जाय, फिर भी फ्रांस मे कलारी का साहित्य सदा बना रहेगा। जब उन्होंने आठ सौ फ्रैंक पाने वाले लेखक को निकलवा दिया तो मैंने उनसे कहा ‘होशियार रहिएगा, आपने इस बिचारे तुक्कड़ पर अपने अस्त्रो से प्रहार किया है, कही वह अपनी तुक्कड़ियों द्वारा आपसे बदला न ले। वह सदाचार के ऊपर ही कोई गीत बना देगा। बड़े-बड़े ड्राइंग रूम तो आपके पक्ष मे होंगे पर जो लोग हँसी-मजाक पसन्द करते हैं वे सब उसके गन्दे मजाको को दोहरायेगे।’ आप जानते है जनाब, मादाम द फेरवाक ने उत्तर मे मुझसे क्या कहा ? कहने लगी, ‘सारा पेरिस भगवान की सेवा के लिए मुझे बलिदान होते देखेगा। फ्रांस के लिए यह नया ही दृश्य होगा। उससे जन-साधारण सच्चे सामन्त वर्ग का आदर करना सीखेंगे। वह मेरे जीवन की सुन्दरतम घडी होगी।’ यह बात कहते-कहते उनकी आँखें इतनी सुन्दर लग उठी थी जितनी पहले कभी न लगी थी।”

“मचमुच ही उनकी आँखें बहुत सुन्दर हैं।” जुलिये ने भावोच्छ्वास से कहा।

“जाहिर है कि आप प्रेम-पीडित है ‘इसलिए,” डोन डीगो बुस्तोस गम्भीरतापूर्वक आगे कहने लगे, “उनका ऐसा स्वभाव तो नहीं है कि

अपने आप ही प्रतिहिंसा की ओर झुकता हो। पर फिर भी यदि वह लोगो को हानि पहुँचाती हैं तो यह केवल इसीलिए कि वह बहुत दुखी हैं। मुझे तो किसी न किसी गहरी आन्तरिक पीड़ा का सन्देह होता है। यह भी तो सम्भव है कि वह अब अपनी इस सदाचारिता से उकता उठी हो।”

स्पेनवासी पूरे एक मिनिट तक झुपचाप उसकी ओर ताकता रहा।

“यही तो सारा सवाल है,” उसने गम्भीरतापूर्वक कहा, “और इसी से आपको थोड़ी-बहुत आशा हो सकती है। जिन दो वर्षों में मैं अपने आपको उनका तुच्छतम सेवक घोषित करता रहा उन दिनों मैंने इस बात पर बहुत विचार किया था। तरुण प्रेमी महाशय, आपका समूचा भविष्य इस महान् समस्या पर ही लटका हुआ है। क्या वह ऐसी स्त्री है जो अब अपने सदाचार से तग आ चुकी है, अथवा वह इसलिए निष्ठुर है कि वह स्वयं ही बहुत दुखी है?”

“अथवा,” आखिरकार आल्तामिरा ने अपने मौन को तोड़ते हुए कहा, “क्या वह भी हो सकता है जो मैं बीसियों बार पहले ही तुम से कह चुका हूँ? अर्थात् विशुद्ध रूप में फ्रांसीसी स्त्री का मिथ्याभिमान मात्र। अपने उस कपड़े के प्रसिद्ध व्यापारी पिता की स्मृति ही इस स्वभावतः कठोर और क्षुब्ध हृदय को दुखी करती रहती है। उसके सुख का केवल एक ही रास्ता हो सकता है कि वह तोलेदो में रहकर एक ऐसे पाप-स्वीकारकर्ता का पीडन सहन करती रहे जो प्रतिदिन उसे नरक के खुले हुए मुख का दर्शन कराये।

चलते समय डौन डीगो ने जुलिये से कहा, “आल्तामिरा ने बताया है कि आप हमी लोगो में से हैं। एक दिन आप स्वतन्त्रता-प्राप्ति में हमारी सहायता करेंगे। इसलिए मैं इस छोटे से मन-बहलाव में आपकी सहायता करने को तैयार हूँ। मारेसाल की शैली से परिचित हो जाना आपके लिए उपयोगी होगा। ये चार पत्र उन्हीं के हाथ के लिखे हुए हैं।”

“मैं उन्हें नकल करके आपको वापिस कर दूँगा,” जुलिये ने कहा।

“और आज के वार्तालाप का एक शब्द भी आप कभी किसी से न कहेंगे ?”

“कभी नहीं, वचन देता हूँ ।” जुलिये ने कहा ।

“तो भगवान आपकी सहायता करें ।” स्पेनवासी ने कहा और वह जुलिये तथा आल्तामिरा को चुपचाप सीढियों तक पहुँचा गया ।

इस दृश्य ने हमारे नायक को थोड़ा उत्साहित किया, वह मुस्करा उठा । उसने मन ही मन सोचा तो धार्मिक आल्तामिरा भी मुझे इस व्यभिचार की इस योजना में सहायता दे रहे हैं ।

डॉन डीगो बुस्तोस के गम्भीर वार्तालाप के बीच भी जुलिये लगातार औतेल देलिग्र की घड़ी के घण्टों की ओर ध्यान लगाये हुए था ।

भोजन का समय समीप आ रहा था । आज इतने दिनों के बाद फिर वह मातिल्द को देखेगा ! घर पहुँच कर उसने बड़ी सावधानी के साथ कपड़े पहने ।

सीढियों से उतरते-उतरते उसने सोचा कि बड़ी भूल हो गयी । प्रिंस के नुस्खे को मुझे पूरी तरह काम में लाना चाहिए । यह सोचकर वह फिर ऊपर लौटा और सादे से सादा यात्रा का लिबास पहन कर नीचे उतर आया ।

अब प्रश्न यह है कि मैं उसकी ओर किस प्रकार देखूँ । उस समय सिर्फ साढ़े पाँच बजे थे, और भोजन छ बजे था । वह ड्राइंग रूम में पहुँचा पर वहाँ देखा कि अभी कोई नहीं आया है । नीने सोफे को देखते ही उसके आँसू आ गये । शीघ्र ही उसके गाल जल उठे । उसने मन ही मन क्रुद्ध होकर सोचा कि मुझे इस मूर्खतापूर्ण संवेदनशीलता को थका कर दूर कर देना चाहिए नहीं तो यह मेरा भेद खोल देगी । उसने दिखावे के लिए एक अखबार ले लिया और ड्राइंग रूम से बाग तक दो-तीन चक्कर लगा आया ।

एक बड़े भारी ओक वृक्ष के पीछे भली भाँति छिपकर तथा भय से काँपते हुए उसने मादो द ला मोल की खिडकी की ओर आँखें उठाने

का साहस किया। वह कसकर बन्द थी। वह लगभग धरती पर लुढ़क कर बहुत देर तक ओक के सहारे टिका रहा। फिर डगमगाते हुए पैरों में माली की सीढ़ी को खोजने चल पड़ा।

जजीर की जो कड़ी उसने जबर्दस्ती खोल डाली थी—हाय वह कितनी भिन्न परिस्थितिया थी!—उसकी अभी तक मरम्मत नहीं हुई थी। पागलपन में आकर जुलिये ने उसे होठों से लगा लिया।

बहुत देर तक ड्राइंग रूम और बगीचे के बीच भटकते रहने से जुलिये बहुत बुरी तरह थक गया। यह एक प्रारम्भिक सफलता थी जिसे वह भी भली भाँति समझता था। अब मेरी आँखें निर्जीव-सी रहेंगी और मेरा भेद न खोल सकेगी, वह सोचने लगा। एक-एक करके अतिथि ड्राइंग रूम में आने लगे। जब भी दरवाजा खुलता तो जुलिये के हृदय को असहनीय धक्का लगता।

सब लोग मेज के आगे बैठ गये। माद० द ला मोल सदा की भाँति प्रतीक्षा करवाने के बाद आखिरकार प्रगट हुई। जुलिये को देखते ही उनका मुख लज्जा से गहरा लाल हो उठा। उन्हें उसके लौटने के समाचार अभी तक न मिले थे। प्रिन्स कोरासौफ के आदेशानुसार जुलिये उनके हाथों की ओर देखने लगा, वे काँप रहे थे। यह देखकर वह स्वयं बहुत ही विचलित हो उठा, सौभाग्यवश वह बेबल थका हुआ ही दिखाई पड़ा।

म० द ला मोल तो उसकी प्रशंसा के गीत गा रहे थे। कुछ ही देर बाद मार्किज उससे बोली और उसके क्लान्त दिखाई पड़ने के विषय में स्नेह से कुछ कहा। जुलिये लगातार अपने आपसे कह रहा था : मुझे माद० द ला मोल की ओर बहुत अधिक नहीं देखना चाहिए और न उनसे बचने की ही कोशिश करनी चाहिए। मुझे सबकुछ ही वैसा दिखाई पड़ना चाहिए जैसा कि मैं अपने दुःखद पराभव से एक सप्ताह पहले था। उसे इस विषय में अपनी सफलता पर सन्तुष्ट होने का अवसर मिला और वह ड्राइंग रूम में ही रहा आया। आज पहली बार गृहस्वामिनी

की ओर ध्यान देने के बाद उसने उपस्थित पुरुषों को बातचीत में लगाने और समस्त वार्तालाप को रोचक बनाये रखने का यथासम्भव प्रयत्न किया ।

उसके सौजन्य का पुरस्कार भी मिला, आठ बजे के लगभग मादाम द फेरवाक के आने की घोषणा हुई । जुलिये चुपचाप खिसक गया और कुछ ही देर बाद बहुत ही सावधानी के साथ वस्त्र पहनकर लौट आया । मादाम द ला मोल आदर की इस अभिव्यक्ति से बहुत ही पुलकित हो उठी और उन्होंने अपनी प्रसन्नता दिखाने के लिए उसकी यात्रा का जिक्र मादाम द फेरवाक से किया । जुलिये मार्शल की विधवा के पास इस ढंग से जा बैठा कि मारिन्द उनकी आँखों को न देख सके । कला के समस्त नियमों के अनुसार इस भाँति बैठने के बाद मादाम द फेरवाक ही उसके तीव्र विस्मय का परम केन्द्र-बिन्दु बन गयी । प्रिंस कोरासौफ ने जो तिरपन पत्र उसे भेंट किये थे उनमें से पहला इस भावना के महत्व से ही प्रारम्भ होता था ।

मारेगाल ने बताया कि वह इटैलियन ऑपेरा देखने जा रही हैं । जुलिये भी जल्दी से वही जा पहुँचा । जहाँ उसकी भेंट शवालिये द बोव्वाजी से हो गयी जो उसे मादाम द फेरवाक के बगल में ही राजमहल के पुरुषों के लिए सुरक्षित स्थान में ले गये । जुलिये निरन्तर उन्हीं की ओर ताकता रहा । घर लौटते समय वह मन ही मन सोचने लगा कि मुझे इस आक्रमण की डायरी रखनी चाहिये, नहीं तो मैं कुछेक घटनाओं की गिनती ही भूल जाऊँगा । उसने जबर्दस्ती ही इस नीरस विषय पर दो-तीन पृष्ठ लिखे । मजेदार बात यह है कि इस भाँति वह माद० द ला मोल को लगभग भूल ही गया ।

उसकी अनुपस्थिति में मारिन्द स्वयं भी उसे करीब-करीब भूल गयी थी । वह सोचने लगी थी कि आखिरकार वह बहुत ही साधारण आदमी है । पर उसका नाम मुझे सदा अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल की याद दिलाता रहेगा । मुझे सच्चे मन से सदाचार और शैलोचित व्यवहार के

प्रचलित आदर्शों का पालन करना चाहिए, उन्हें भूलते ही स्त्री के सर्वस्व छिन जाने का भय रहता है। अब, उसने मार्कि द क्रवाजन्वा के साथ विवाह-सम्बन्ध की चर्चा में भी कुछ रुचि दिखायी। वह तो इस बात से खुशी में पागल हो उठे। उन्हें यह जानकर बहुत ही आश्चर्य होता कि मातिल्द की जिस मनोदशा से वह इतने गौरव का अनुभव कर रहे थे वह उसके भीतर एक प्रकार की उदासीनता की भावना से उत्पन्न हुई थी।

किन्तु जुलिये को देखते ही माद० द ला मोल के सारे विचार बदल गये। उन्होंने मन ही मन कहा कि वास्तव में और सचमुच ही यही व्यक्ति मेरा पति है। यदि मैं सचमुच सदाचारिणी बनना चाहती हूँ तो मुझे इसी व्यक्ति से विवाह करना चाहिए।

वह जुलिये की ओर से बड़े दुख के भाव की, तरह-तरह की अनुनय-विनय की आशा कर रही थी। इसलिए उसने अपने उत्तर भी सब तैयार कर रखे थे क्योंकि उसे पक्का विश्वास था कि मेज से उठने पर वह अवश्य उससे दो-एक शब्द कहने का प्रयत्न करेगा। किन्तु इसके विपरीत वह ड्राइंग रूम में ही जमा बैठा रहा। उसने बगीचे की ओर एक बार नज़र तक न डाली—भगवान ही जानता है कि कितनी कठिनाई से वह यह कर सका था। माद० द ला मोल सोचने लगी कि अब सारी सफाई तुरन्त हो जाना ही ठीक है। वह अकेली ही बगीचे में चली गयी, पर जुलिये का फिर भी कोई पता नहीं। मातिल्द आकर ड्राइंग रूम की खिड़की के पास टहलने लगी। उसने देखा कि जुलिये बड़ी तन्मयता के साथ मादाम द फेरवाक को रोन नदी के किनारे के ढालों पर बने हुए पुराने किलो के खण्डहरों के बारे में बता रहा था। कुछ ड्राइंग रूमों में जिस भावुकतापूर्ण चित्रात्मक शैली को वाक्-चातुर्य कहा जाता है उसमें अब वह भी पारगत हो उठा था।

इस समय प्रिंस कोरासौफ यदि पेरिस में होते तो उन्हें सचमुच ही अपने ऊपर बड़ा गर्व होता। इस समय स्थिति ठीक वैसी ही थी जैसी उन्होंने भविष्यवाणी कर दी थी। अगले दिनों में भी जुलिये ने जैसा

व्यवहार दिखाया वह भी उन्हें समुचित ही जान पड़ता ।

राजदरबार के कुछ शक्तिशाली सदस्यों के षड्यन्त्र के फलस्वरूप कुछ नीले फीतो का वितरण होने को था । मादाम द फेरवाक का कहना था कि उनके दादा को यह सम्मान मिलना चाहिए, मार्कि द ला मोल ऐसी ही माँग अपने ससुर के लिए कर रहे थे । इसलिए दोनों ने मिलकर प्रयत्न करने का निश्चय किया और मारेशल लगभग प्रतिदिन द ला मोल भवन आने लगी । उन्हीं से जुलिये को पता चला कि मार्कि अब मंत्री होने ही वाले हैं । वह तीन वर्ष के भीतर ही विधान को घूमघाम के बिना रद्द करने के उद्देश्य से एक बहुत ही चतुराई भरी योजना कामारिला के आगे रख रहे थे ।

म० द ला मोल के मंत्री होने पर जुलिये के भी बिशप होने की आशा थी । किन्तु ऐसे सब बड़े-बड़े हित उसकी आँखों से ऐसे छिपे हुए थे मानो उन पर कोई परदा पड़ा हो । उसकी कल्पना बहुत ही अस्पष्ट रूप में और वह भी किसी सुदूर भविष्य में ही उन्हें देखती थी । जिस भीषण पीड़ा का रोग उसे लग गया था, उसके कारण जीवन में उसकी सारी रुचि माद० द ला मोल के साथ अपने सम्बन्ध में ही केन्द्रित हो गयी थी । वह हिसाब लगाता रहता था कि पाँच-छ साल के निरन्तर प्रयत्न के बाद वह शायद फिर उनका प्रेम प्राप्त कर सके ।

यह तो स्पष्ट ही है कि उसका वह अत्यधिक शान्त मस्तिष्क अब बिल्कुल विवेकशून्य हो उठा था । किसी जमाने में जो सब गुण उसमें प्रमुख रूप में पाये जाते थे उनमें से अब थोड़ी-सी दृढ़ता ही बाकी बची थी । प्रिंस कोरासौफ ने जिस व्यवहार की योजना उसके लिए बनायी थी उसका वह बड़ी दृढ़ता के साथ पालन कर रहा था । प्रत्येक दिन वह मादाम द फेरवाक की कुर्सी के पास बैठता पर उनसे कहने के लिए एक शब्द भी उसे न सूझता था ।

मातिल्द को प्रेम-मुक्त दीखने का नाटक रचने के लिए जो आत्म-पीड़न उसे करना पड़ता था उसमें उसके हृदय और मस्तिष्क की सारी

शक्ति चुक जाती थी । मारेशाल की बगल में वह लगभग निर्जीव-सा बैठा रहता था जैसा तीव्र शारीरिक यातना की अवस्था में होता है । उसकी आँखों की सारी चमक गायब हो गयी थी ।

मादाम द ला मोल का दृष्टिकोण कभी भी अपने पति के मतामत को दोहराने के अतिरिक्त अन्य कुछ न होता था । इसलिए पिछले कुछ दिनों से वह जुलिये के गुणों को आसमान पर चढ़ाये हुए थी ।

: २६ :

पवित्र प्रेम

मादाम द फेरवाक सोचती थी कि इस सारे खानदान के लोगो के विचारो मे ही थोडा-सा पागलपन का लटका है। और कुछ नही तो ये लोग अपने इस छोटे-से पुरोहित के पीछे ही पागल है जिसे चुपचाप देखने और बात सुनते रहने के अतिरिक्त और कुछ नही आता, यद्यपि यह सच है कि उसकी आँखे बडी आकर्षक है।

उधर जुलिये को मारेशल का व्यवहार उस अपूर्व शान्ति का लगभग निर्दोष आदर्श जान पडता जिसमे पूरी-पूरी शिष्टता भी है और साथ ही किसी प्रकार के तीव्र भावावेग को अनुभव करने की असमर्थता भी। किसी भी अप्रत्याशित मुद्रा अथवा प्रवृत्ति से, किसी प्रकार के आत्म-नियन्त्रण के अभाव से मादाम द फेरवाक को वैसा ही धक्का लगता जैसा अपने से निम्न कोटि के व्यक्तियों के प्रति व्यवहार मे राजसी गौरव के अभाव से लगता। तनिक-सी भी सवेदनशीलता उनकी दृष्टि मे एक प्रकार की नैतिक उन्मत्तता जैसी जान पडती जिसके लिए आदमी को लज्जित होना पडता है और जो उच्च कुलीन व्यक्तियों के लिए बहुत अनुपयुक्त है। उन्हे अन्तिम शाही शिकार की चर्चा मे बडी प्रसन्नता होती थी और उनकी प्रिय पुस्तक थी 'दुक् द से-सिमो' के सस्मरण; विशेषकर उसके वंशावली विषयक अंश का जिज्ञासु वह प्रायः किया करती थी।

जुलिये जानता था कि जिस प्रकार ड्राइंग रूम मे प्रकाश की व्यवस्था थी उसे देखते हुए किस जगह से मादाम द फेरवाक का-सा सौंदर्य सबसे

अच्छा लगता है। वह उनसे पहले ही वहाँ पहुँच जाता और बी सावधानी के साथ कुर्सी को इस तरह घुमा कर रखता कि मातिल्द पर उसकी दृष्टि न पड़े। जुलिये के उससे बचने के इन निरन्तर प्रयत्नों को देखकर एक दिन मातिल्द नीले सोफे को छोड़ कर मार्किज की कुर्सी के पास रक्खी हुई छोटी-सी मेज पर आ बैठी। अब जुलिये मादाम द फेरवाक की टोपी के किनारों के नीचे से उसे बहुत समीप से देख सकता था। जिन आँखों ने उसके भाग्य को बस में कर रक्खा था उन्हें इतने समीप से देखकर पहले तो उसे भय लगा, फिर उसकी वह साधारण उदामीनता बड़े तीव्र झटके के साथ टूट गई। वह बातचीत करने लगा और बहुत ही सुन्दर ढंग से बातचीत करने लगा।

बात वह अवश्य मारेशाल में कह रहा था, किन्तु उनका एकमात्र लक्ष्य मातिल्द के हृदय को प्रभावित करना था। वह इतना उत्तेजित हो उठा कि अन्त में मादाम द फेरवाक की समझ में ही न आया कि वह कह क्या रहा है।

यह उसकी पहली सफलता हुई। यदि जुलिये को कही अन्त में जर्मन रहस्यवाद से भरा हुआ, उच्च कोटि की धार्मिकता का अथवा जैस्विटपथी भावनाओं से परिपूर्ण कोई वाक्य सूझ जाता तो मारेशाल उसे तुरन्त ही वही ऐसे लोगों की सूची में शामिल कर लेनी जो सर्वोच्च कोटि के होते हैं और अपने युग का पुनरुद्धार करने के लिए जन्म लेते हैं।

उधर माद० द ला मोल ने सोचा कि अब इसकी रुचि इननी बिगड़ गई है कि वह मादाम द फेरवाक से भी इतनी देर तक और इतने उत्साह के साथ बातचीत करने लगा है, इसलिए अब मैं उसकी कोई बात न सुनूँगी। इसलिए उस दिन बाकी समय में उन्होंने भी अपने प्रण का पालन किया यद्यपि उन्हें इसमें थोड़ी कठिनाई हुई।

आधी रात के समय जब मातिल्द हाथ में एक मोमबत्ती लेकर अपनी माँ को उनके कमरे तक पहुँचाने जा रही थी, तो मादाम द ला मोल

सीढ़ी पर ही खड़ी हो गईं और खुल्लमखुल्ला जुलिये की तारीफो के पुल बाधने लगी। इससे मातिल्द का मिजाज एकदम खराब हो गया। उसके लिए सोना असम्भव हो उठा। केवल एक ही विचार उसको सान्त्वना देता था : वह तो ठीक ही है कि जिस व्यक्ति को मैं तुच्छ समझती हूँ वह भारेशाल को बहुत ही योग्य जान पड़े।

जुलिये क्रियाशील हो उठने के कारण अब इतनी यातना नहीं अनुभव कर रहा था। उसकी दृष्टि रूसी चमड़े के उस बैग पर पड़ी जिसमें प्रिंस कोरासौफ ने वे तिरपन पत्र बन्द करके उसे भेंट किये थे। जुलिये ने पहले पृष्ठ के नीचे एक टिप्पणी लिखी देखी। पहली भेंट के एक सप्ताह बाद पहला पत्र भेजना चाहिए।

अरे, मुझे तो देर हो गई ! जुलिये ने चौंक कर सोचा। मादाम द फेरवाक से मेरी पहली मुलाकात को तो बहुत दिन हो गए। वह तुरन्त इस पहले प्रेम-पत्र को नकल करने बैठ गया। पत्र में सदाचार की प्रशस्तियाँ भरी पड़ी थी और वह बेहद नीरस था। सौभाग्यवश जुलियें को दूसरे ही पृष्ठ पर नींद आ गई।

कुछ घटो बाद धूप सिर पर पड़ने से उसकी आँखें खुलीं, वह मेज पर सिर टिकाये सो रहा था। उसके लिए जीवन का सबसे दुःखदायी क्षण प्रतिदिन सबेरे होता जब जागते ही उसे अपनी यातना का नए सिरे से अनुभव होने लगता था, परन्तु उस दिन अपने पत्र की नकल पूरी करते-करते वह लगभग हँस रहा था। वह मन ही मन सोच रहा था कि क्या ऐसे भी नौजवान होते हैं जो इस तरह से लिख सकें ? उमने गिन कर देखा कि कई वाक्य नौ-नौ पक्तियों के हैं। मूल पत्र के नीचे पेंसिल से लिखी हुई एक टिप्पणी थी - "इस पत्र को स्वयं ले जाकर दो और काला गुलुबन्द तथा नीला ओवरकोट पहन कर और घोड़े पर सवार होकर जाओ। पत्र नौकर को कुछ लज्जित भाव से, और आँखों में गहरी उदासी के साथ देना। यदि किसी नौकरानी पर दृष्टि पड़ जाय तो जल्दी से अपनी आँखें पोंछकर दो-एक शब्द उससे भी कहना।" यह

सब बड़ा सावधानी के साथ पूरा किया गया ।

द फेरवाक भवन से लौटते-लौटते जुलिये सोचने लगा कि मैं बड़ा साहस का काम कर रहा हूँ । अपने सदाचार के लिए इतनी प्रसिद्ध महिला को पत्र लिखन की हिम्मत ! अब मेरी अधिक से अधिक उपेक्षा होगी । पर इसमें मजा भी मुझे खूब आयेगा । कुल मिलाकर इस प्रकार का नाटक ही तो मैं पसन्द करता । हाँ, सचमुच उस घृणित जीव को जिसे मैं 'स्वयं' कहता हूँ, उपहास से अपमानित करके मुझे सचमुच बहुत प्रसन्नता होगी । यदि मैं अपने 'स्वयं' से कोई सलाह करूँ तो बहक कर कोई न कोई अपराध कर बैठूँगा ।

पिछले महीने भर से जुलिये के लिये दिन में सबसे अधिक सुख का क्षण वह होता जब वह लौटकर अपने घोड़े को अस्तबल में पहुँचाता । कोरासौफ ने खास तौर से यह हिदायत कर दी थी कि उपेक्षा करने वाली प्रेयसी की ओर किसी भी बहाने न ताके । किन्तु उसके घोड़े की चाल को और नौकर को बुलाने के लिए अस्तबल के दरवाजे पर जुलिये का चाबुक फटकारने के ढंग को मातिल्द भली भाँति पहचानती थी और उन्हें सुनते ही वह कभी-कभी अपनी खिडकी के परदे के पीछे आकर खड़ी हो जाती थी । परदे की मलमल इतनी बढिया थी कि जुलिये को उसके आरपार दिखाई पड़ता था । अपनी टोपी के किनारों के नीचे से खास ढंग से देखने पर मातिल्द की आँखों को देखे बिना ही उसकी एक झलक जुलिये को मिल जाया करती थी । वह अपने आपको समझाता कि मातिल्द को भी तो मेरी आँखें न दीखती होंगी । इसलिए इस प्रकार उसकी एक झलक पा लेना उसे देखना नहीं कहा जा सकता ।

उस दिन शाम को मादाम द फेरवाक ने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया मानो जो दार्शनिक, रहस्यवादी तथा धार्मिक प्रबन्ध वह इतनी उदासी के भाव से सबेरे नौकर को दे आया था वह उन्हें मिला ही न हो । पिछले दिन शाम को सयोग्रश जुलिये को अपने वार्तालाप को ओजस्वी बनाने का रहस्य हाथ आ गया था । आज भी वह इस तरह से बैठा कि

सुख और स्याह

मातिल्द की आँखें दीखती रही । मातिल्द भी मारेशाल के आते ही नीला सोफा छोड़कर चली आयी थी । इसका अर्थ था अपनी नित्य की मित्र-मडली को छोड़कर आना और उसकी इस नयी सजक पर म० द क़वा-जन्वा बहुत क्षुब्ध दिखाई पड़ रहे थे । उनके इतने सुस्पष्ट दुख को देख कर जुलिये को थोड़ा-सा चैन मिला ।

भाग्य की इस अप्रत्याशित कृपा के फलस्वरूप उसका वातालाप बड़ा ही प्रभावशाली हो उठा । चूँकि अहंकार उन हृदयों में भी प्रवेश पा जाता है जो कठोरतम शैली और सदाचार के मन्दिर बनने हैं, इसलिए उस दिन अपनी गाड़ी में बैठते-बैठते मादाम द फेरवाक सोचने लगी कि मादाम द ला मोल ठीक ही कहती हैं, यह युवक पुरोहित वास्तव में बहुत प्रतिभावान है । शुरू के कुछ दिनों में मेरी उपस्थिति से वह भय-भीत हो गया होगा । सच बात यह है कि इस घर में जिन लोगों से भेट होती है वे सब बड़ी ही हल्की तबियत के लोग हैं । वहाँ जो भी सदाचार दिखाई पड़ता है वह आयु के कारण है, और उसके प्रगट होने में काल ५ हिम-शीतल हस्त की बहुत आवश्यकता पड़ी है । इस युवक को भी यह अन्तर तो दिखाई पड़ा होगा । वह लिखता भी अच्छा है । उसने अपने पत्र में मुझसे परामर्श की भी प्रार्थना की है, किन्तु मुझे भय है कहीं यह प्रार्थना अपनी वास्तविक प्रतिभा को न समझने के कारण ही न हो ।

तो भी कितने धर्म-परिवर्तन इसी भाति प्रारम्भ नहीं होते ? एक बात बड़ी शुभ है कि आज तक जिन सब युवकों के पत्र मुझे मिलते रहे हैं उनसे इसके लिखने की शैली में कितना अन्तर है । पुरोहित बनने के इस तरण आकांक्षी की गति में एक प्रकार की ओजस्विता, मन की गहन गम्भीरता और निष्ठा को न देख सकना असम्भव है । निस्सन्देह उसमें मासलों के गुण मौजूद हैं ।

: २७ :

चर्च के उच्चतम पद

इस भाँति जुलिये के नाम के साथ बिशप-पद का विचार पहली बार एक ऐसी स्त्री के मस्तिष्क में आया जो चर्च के सर्वध्वंश पदों के वितरण का अधिकार आगे-पीछे प्राप्त करने ही वाली थी। जुलिये के विचार इस क्षण अपने वर्तमान दुखदायी अवस्था से भिन्न ऐसी किसी स्थिति तक पहुँचने में असमर्थ थे। हर चीज से उसकी यातना बढ़ती ही थी। उदाहरण के लिए, स्वयं अपना कमरा उसके लिए असह्य हो उठा था। रात में जब वह सोमबत्ती लिए अपने कमरे में लौटता तो कमरे का हर सामान, प्रत्येक वस्तु उसे अपनी यातना के किसी नये पक्ष के विषय में कठोर स्वर से सूचित करती हुई जान पड़ती थी।

उस दिन शाम को उसने ऐसे उत्साह के साथ अपने कमरे में प्रवेश किया जैसा बहुत दिनों से उसे अनुभव न हुआ था। मन ही मन उसने कहा कि मुझे बड़े कठोर परिश्रम का दण्ड मिला है। दूसरा पत्र शायद पहले जैसा नीरस न हो।

पर वह उससे भी अधिक नीरस निकला। वह जो कुछ भी नकल कर रहा था वह उसे इतना बाहियात जान पड़ा कि वह उन शब्दों के अर्थ पर ध्यान देना छोड़ यन्त्रवत नकल करने लगा।

वह सोचने लगा कि इसमें तो मुन्स्टर की सन्धियों के सरकारी दस्तावेजों से भी ज्यादा शब्दाडम्बर है, जिसे उसके कूटनीति के शिक्षक ने लन्दन में उसे नकल करने को दिया था।

इसी सिलसिले में उसे मादाम द फेरवाक के उन पत्रों की याद आयी जो उसे स्पेनवासी सज्जन डीन डीगो बुस्तोस ने दिये थे। अभी तक उन पत्रों की मूल प्रतिलिपि उसने लौटाई न थी। इस समय उसने उन्हें ढूँढ़ कर निकाला। वे भी युवक रूसी सामन्त के पत्रों की भाँति ही उलझे हुए और पेचीदा थे। वे एकदम और पूरी तरह से अस्पष्ट थे। उनमें सब कुछ कहने का और कुछ भी न कहने का प्रयत्न किया गया था। ससार की निस्सारता, मृत्यु, अनन्तता इत्यादि के ऊपर उच्चतम विचारों के जमघट में उसे केवल एक ही वास्तविक चीज़ दिखाई पड़ी कि कहीं कोई हँसी न उड़ाये।

जिस स्वागत-भाषण का संक्षेप में हमने यहाँ उल्लेख किया है, वह एक पखवाड़े तक बराबर दोहराया जाता रहा। जुलिये का जीवन बस ऐसे ही एकरस कार्यों तक सीमित रह गया था। धार्मिक ज्ञान-लाभ की एक प्रकार की टीका को निकल करते-करते सो जाना, अगले दिन जाकर उदास मुद्रा में पत्र दे आना, लौट कर मातिल्द के वस्त्रों की झलक देखने की आशा में घोड़े को अस्तबल तक पहुँचा देना, कामकाज देखना और जिस दिन मादाम द फेरवाक द ला मोल भवन न आये उम दिन अपिरा पहुँच जाना। यदि मादाम द फेरवाक मार्किज से मिलने आती थी तो सरसता अधिक रहती थी। तब जुलिये मारेशल की टोपी के किनारों के नीचे से मातिल्द की आँखों की झलक पा जाता और उसकी वाक्-चातुरी में चार-चाँद लग जाते। उसकी चित्रात्मक और भावुक शब्दावली अधिकाधिक प्रभावशाली और आकर्षक होती जा रही थी।

वह यह बात भली भाँति समझता था कि उसकी बातें मातिल्द को एकदम बाहियात लगती होंगी, पर वह उसे अपनी सुन्दर शब्दावली से प्रभावित करने का यत्न करता रहता। वह सोचता था कि जितनी अधिक झूठी बातें कहूँगा उतना ही उसको अधिक प्रसन्न कर सकूँगा और फिर उसने बेहद साहसिकता के साथ प्रकृति के कुछ पक्षों के विषय में बड़ा-बड़ा कर कहना शुरू कर दिया। वह यह बात बहुत जल्दी ही समझ गया था

कि मारेशाल की नज़रो मे अत्यन्त साधारण व्यक्ति न दिखाई पडने के लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि सरल और बुद्धिसंगत विचारो से एकदम बचकर चला जाय। जिन दो उच्च कुलीन महिलाओ को प्रसन्न करने वह निकल पडा था उनकी आँखो मे दृष्टिगोचर उत्साह अथवा उदासीनता के अनुसार ही या तो वह अपनी बात कहता रहता अथवा अपनी कल्पना की उडान को रोक लेता।

कुल मिलाकर आजकल उसे अपना जीवन उन दिनों की अपेक्षा कम भयावह जान पडता था जब वह कुछ न करता था।

एक दिन शाम को वह सोचने लगा कि यह मेरा पदद्वय पत्र है। पहले चौदह नियमपूर्वक मादाम द फेरवाक के हाथो सौंप दिय गये है। शीघ्र ही उनकी मेज के पत्र रखने के सब स्थान भर जायेंगे। किन्तु इस सौभाग्य के बाद भी वह मुझ से वैसा ही व्यवहार करती है मानो मैंने उन्हे कभी कोई पत्र न लिखा हो ! इस सबका क्या अन्त होगा ? क्या मेरी इस एकान्त-निष्ठा से वह भी उतना ही ऊबती होगी जितना मैं उससे ऊबता हूँ ? यह तो कहूँगा कि कोरामौफ का यह रूसी मित्र अपने जमाने मे बडा ही भयकर व्यक्ति रहा होगा। इमने अधिक साघातिक नीरसता की कल्पना करना कठिन है।

जुलिये की अवस्था उस सीमित बुद्धिवाले व्यक्ति की भाँति थी जो सयोगवश किसी महान सेनापति के सम्पर्क मे आ पड़े। उस रूसी युवक ने एक अग्रेज तरुणी के हृदय के विरुद्ध जो आक्रमण चलाया था उसका रहस्य जुलिये की समझ मे तनिक भी न आता था। पहले चालीस पत्रो का उद्देश्य केवल मही था कि उसे पत्र लिखने की हिम्मत करने के लिए क्षमा मिले। इसका अभिप्राय यह था कि उन सुन्दर और भली महिला को, जो सम्भवतः जिन्दगी से बुरी तरह ऊबी हुई थी, ऐसे पत्र पाने की आदत पड जाय जो उनके साधारण रोजमर्रा के जीवन से कुछ कम नीरस हो।

एक दिन सबेरे एक पत्र उसे लाकर दिया गया। उसने तुरन्त

मादाम द फेरवाक के पारिवारिक चिह्न को पहचान लिया और पत्र की मोहर उसने ऐसी उत्सुकता के साथ तोड़ी जो स्वयं उसे ही कुछ दिन पहले असम्भव जान पड़ती। उसमें केवल भोजन के लिये निमन्त्रण था।

उसने जल्दी से प्रिंस कोरासौफ के आदेशों की शरण ली। दुर्भाग्यवश जिस मामले में उस रूसी युवक को सरल और बुद्धिगम्य होना चाहिए था वहाँ वह बोरा की भाँति निरर्थक था। जुलिये की समझ में ही न आया कि मार्शल की विधवा के साथ भोजन करते समय कैसा नैतिक दृष्टिकोण अपनाये।

उनका ड्राइंग रूम बहुत ही शानदार था जिसमें त्विलरीज की गालरी द घान का-सा सुनहला काम था और लकड़ी के दिलेदार जडाव पर तैलचित्र बने हुए थे। इन चित्रों पर बीच-बीच में हलके रंगों के घब्बे-से थे। बाद में जुलिये को पता चला कि गृहस्वामिनी को चित्रों के ये विषय अश्लील जान पड़े थे, इसलिए उन्होंने चित्रों को बदलवा लिया था। हमारा नैतिक युग ! वह सोचने लगा।

ड्राइंग रूम में उसे तीन ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्ति दिखाई पड़े जो उस गुप्त-पत्र वाली सभा में भी थे। उनमें से एक—के बिशप, मारेशल के चचा थे और कहा जाता था कि वह अपनी भतीजी की कोई बात टालते न थे। एक उदासीभरी मुस्कान के साथ जुलिये सोचने लगा कि मैंने कितनी अधिक उन्नति कर ली है और इस सबका मेरे ऊपर कितना कम प्रभाव है ! आज मैं—के प्रसिद्ध बिशप के साथ एक ही मेज पर भोजन कर रहा हूँ।

भोजन कुछ साधारण भाव से ही बीता और वार्तालाप ऐसा था कि आदमी का धीरज चुक जाय। जुलिये सोचने लगा कि वह सब किसी रद्दी-सी पुस्तक की विषय-सूची के समान है। मानव-चिन्तन के समस्त महत्वपूर्ण विषयों की चर्चा साहसपूर्वक प्रारम्भ की जाती है, किन्तु तीन मिनट तक सुनिये तो तुरन्त यह प्रश्न आपके मन में आयेगा कि दोनों में कौन-सा अधिक बड़ा है ? वक्ता का कट्टर आत्मविश्वास अथवा उसका

भयकर अज्ञान ।

निस्सन्देह पाठक अकादमी-सदस्य के भतीजे और नये-नये प्रोफेसर तथा साहित्यिक ताँबो को भूल गये होंगे, जिसने द ला मोल भवन के ड्राइंग रूम में अपनी निन्दा-भरी चर्चा द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के मन को विषाक्त करने का भार अपने ऊपर ले लिया था ।

इसी छोटे-से व्यक्ति से जुलिये को पहली बार यह विचार मिला कि मादाम द फेरवाक उसके पत्रों का उत्तर चाहे न दे, पर उनको प्रेरित करने वाली भावना से वह सम्भवतः अप्रसन्न न होगी । म० ताँबो का काला हृदय जुलिये की शान्ति से टुकड़े-टुकड़े हुआ जा रहा था, किन्तु दूसरी ओर एक व्यक्ति चाहे वह योग्य हो चाहे मूर्ख, एक साथ दो स्थानों पर उपस्थित नहीं हो सकता । ताँबो सोचने लगा कि यदि म० सोरेल मादाम द फेरवाक के प्रेम हो जायें तो वह उन्हें चर्च में कोई महत्वपूर्ण पद दिलवा देगी और द ला मोल भवन में उनसे मुझे छुटकारा मिल जायेगा ।

फादर पिरार भी द फेरवाक भवन में सफलता के लिए जुलिये को लम्बे उपदेश लिख कर भेजते थे । उस कठोर जानसेनपथी और जैस्विट-वाद तथा राजतन्त्र के सिद्धान्तों के समर्थक के और समाज-सुधार की योजनाओं वाली, सदाचारिणी मादाम द फेरवाक के ड्राइंग रूम के बीच एक प्रकार की साम्प्रदायिक प्रतिद्वन्द्विता मौजूद थी ।

: २८ :

मानो लेस्को

रूसी आदेशों में इस बात का कड़ा विधान था कि जिस व्यक्ति को पत्र लिखे जा रहे हैं उससे बातचीत होने पर उसकी किसी बात का विरोध नहीं करना चाहिए। किसी भी कारणवश पक्के भक्त और प्रशंसक के रूप को न त्यागना चाहिए। प्रत्येक पत्र के पीछे यही धारणा थी।

एक दिन आपेय में मादाम द फेरवाक के बाक्स में जुलिये 'मानो लेस्को' के बँले की बड़ी प्रशंसा करने लगा। इसका एकमात्र कारण यह था कि उसे वह बेहद नीरस जान पड़ा था। उसकी बात सुनकर मारेशल कहने लगी कि आवे प्रोबोस्त के उपन्यास की तुलना में यह बँले बहुत घटिया है।

क्या ! जुलिये चकित और प्रसन्न हो कर सोचने लगा कि ऐसे उच्च आचार-विचार वाली महिला एक उपन्यास की प्रशंसा कर रही है ! मादाम द फेरवाक सप्ताह में दो-तीन बार उन सब लेखकों के प्रति अपना तीव्र तिरस्कार प्रगट कर दिया करती थी जो इस प्रकार की कुत्सित रचनाओं द्वारा अपने आप ही इन्द्रिय-सुख की ओर दौड़ने वाली नयी पीढ़ी को भ्रष्ट करने का प्रयत्न करते रहते हैं।

मादाम द फेरवाक ने आगे कहा, "मैंने सुना है कि अनैतिक और हानिकारक लेखकों की कोटि में मानो लेस्को का स्थान उच्चतम माना जाता है। लोगो का कहना है कि उसमें अपराधी हृदय की दुर्बलताओं

का चित्रण इतनी सचाई के साथ किया गया है कि वह बहुत ही गम्भीर लगता है। तो भी तुम्हारे बोनापार्ट ने मैतेलेना मे उसे चाकरो के लिए लिखा हुआ उपन्यास घोषित किया था।”

यह सुनते ही जुलिये तुरन्त पूरी तरह सतर्क हो उठा। अवश्य कोई न कोई मारेशाल से मेरी चुगली करता रहा है। उसी ने उनसे जैपॉलियन के लिए मेरी भक्ति का जिक्र किया होगा। इस बात से वह इतनी रुष्ट हैं कि अपने क्रोध को प्रगट कर देने का लोभ भी संवरण न कर सकी।

इस जानकारी से वह बड़ा प्रसन्न हो उठा और इमने उसे विनोदपूर्ण भी बना दिया। आपेरा के बाद विदा लेते समय मारेशाल बोली - “यन्द रखिये महाशय जी, मुझसे प्रेम करने वालो को बोनापार्ट से प्रेम नहीं करना चाहिए। अधिक से अधिक वे उसे नियति का अभिशाप मान सकने हैं। जो भी हो, उस व्यक्ति मे इतनी समझ न थी कि श्रेष्ठ माहृत्य को पहचान सके।”

‘मुझसे प्रेम करने वालो को।’ जुलिये ने मन ही मन दोहराया। या तो इसका कोई अर्थ नहीं है या सब कुछ है। भाषा का यह रहस्य हम प्राणो के निवासी नहीं समझने और मारेशाल के लिए एक बहुत लम्बा-सा पत्र नकल करते-करते उसे मादाम द रेनाल की बहुत याद आयी।

अगले दिन मारेशाल ने उमसे बहुत ही बनावटी उदासीनता के साथ पूछा, “अच्छा, यह बताइये कि कल शायद ऑपेरा से जाने के बाद लिखे हुए अपने पत्र मे आपने लन्दन और रिचमण्ड का जिक्र कैसे किया था?”

जुलिये बड़ा चौका। उसने पत्र की एक-एक पक्ति को बिना कुछ सोचे-समझे नकल कर दिया था और स्पष्ट ही मूल मे लिखे हुए ‘लन्दन’ और ‘रिचमण्ड’ के स्थान पर ‘पेरिस’ और ‘सै-बलू’ लिखना भूल गया था। उसने दो-तीन बार कुछ कहना शुरू किया पर अपना वाक्य पूरा न कर सका। उसे लगा कि वह अभी-अभी विवश होकर जोरों से हँस पड़ेगा। अन्त में उचित शब्द ढूँढते-ढूँढते एकाएक उसे यह बात सूझी

“मानव मन के उदात्ततम और उच्चतम हितों की चर्चा से उत्तेजित होकर मेरा मन आपको लिखते समय शायद कुछ बहक गया होगा।”

वह सोचने लगा कि अब तो मेरा प्रभाव पड़ने लगा है। इसलिए आज अगर इस नीरसता से कुछ छुट्टी ले लूँ तो भी कोई हर्ज नहीं। वह जल्दी ही द फेरवाक भवन से चला आया। रात को मूल पत्र में उसे वह स्थल शीघ्र ही मिल गया जहाँ नौजवान रूसी ने रिचमण्ड और लन्दन का जिक्र किया था। जुलिये को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह पत्र बहुत ही भावपूर्ण था।

उसकी बातचीत के ऊपरी हल्केपन और उनके पत्रों की लगभग इलहामी गम्भीरता के बीच इतने तीव्र अन्तर के कारण ही उसकी ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित हो रहा था। उसके वाक्यों की लम्बाई मारेशल को विशेष रूप से अच्छी लगती थी। यह उस पापी वोल्टेर द्वारा प्रचलित उच्छ्रल अस्थिर शैली न थी यद्यपि हमारा नायक अपनी बातचीत से सहज बुद्धि के सारे चिह्न दूर रखने में कोई प्रयत्न बाकी न छोड़ता था, तो भी उसमें कुछ न कुछ राजतन्त्र-विरोध और अधात्मिकता की ऐसी ध्वनि होती थी जो मादाम द फेरवाक से छिपी न रह पाती थी।

वह साधारणतः ऐसे लोगों से घिरी रहती थी जो बेहद सदाचारी तो होते थे किन्तु कोई भी नया विचार न प्रगट कर पाते थे। इसलिए यह महिला ऐसी ही बात से प्रभावित होती थी जिसमें कोई न कोई नवीनता हो, किन्तु साथ ही वह उससे चौकने का प्रदर्शन करना भी अपना कर्तव्य समझती थी। इस दुर्बलता को वह ‘इस तुच्छ वृत्ति वाले युग का लक्षण’ मानती थी।

किन्तु ऐसे डाइग रूमों में तभी जाना सार्थक है जब कोई काम सिद्ध करना हो। जैसा नीरस जीवन जुलिये इन दिनों बिता रहा था वह पाठकों से भी निस्सन्देह छिपा न होगा। यह हमारी यात्रा का ऊँड़ प्रदेश ही है।

जुलिये का समय फेरवाक-काण्ड में लगने के सारे दौरान में माद० द ला मोल को उसके विषय में कुछ न सोचने के लिए बड़ा दृढ़तापूर्वक प्रयत्न करना पड़ा। उनका हृदय तीव्रतम अतर्द्वन्द्व से टुकड़े-टुकड़े हुआ जा रहा था। कभी-कभी उन्हें लगता कि मैं इस गुमसुम नौजवान में घृणा करती हूँ, किन्तु तो भी अपनी इच्छा के विरुद्ध उन्हें उसका वार्तालाप बहुत ही आकर्षक लगता। उन्हें सबने अधिक आश्चर्य उसकी बातों के झूठेपन से होता। वह मारेगाल से ऐसा एक शब्द भी नहीं कहता था जो या तो एकदम झूठ न हो अथवा कम से कम उसके अपने दृष्टि-कोण से, जिसे सातिन्द हर विषय के सम्बन्ध में इतनी भली भानि जानती थी, पूरी तरह भिन्न न हो। इस चाणक्यनीति में वह बड़ी प्रभावित हुई। वह सोचने लगी कि कितनी गहरी सूक्ष्मता है। वैसे ही भाषा बोलने वाले सभी मूर्खों, अथवा ताबों जैसे साधारण धूर्तों से यह कितना भिन्न है।

किन्तु जुलिये के दिन बहुत ही बुरे बीत रहे थे। रोज़ शाम को मारेगाल के ड्राइंग रूम में उपस्थित होना उसके लिए अधिक में अधिक कष्टदायक कर्तव्य को पालन करने के बराबर था। रोज़ नाटक रचने के प्रयत्न से अन्त में उसके मन की सारी शक्ति चुक गई। प्रायः रात को द फेरवाक भवन के बड़े भारी सहन को पार करते-करते वह वेगल चरित्र की दृढ़ता और तीखी बुद्धि के कारण ही अपने मन को नितान्त हताशा के गर्त में गिरने से बचा पाता था।

वह सोचने लगता कि शिक्षा-मठ में भी मैंने निराशा पर विजय पायी थी, यद्यपि उस समय मेरे सामने भविष्य कैसा भयकर था। उस समय तो स्थिति यह थी कि भाग्य बने अथवा विगड़े, हर हालत में मुझे अपना समूचा जीवन ससार के घृणित और निकृष्टतम अश के घनिष्ठ सहवास में बिताना पड़ेगा। किन्तु उसके केवल ग्यारह महीने के बाद ही मैं अपनी आयु के युवकों में सबसे दुखी व्यक्ति था।

किन्तु प्रायः यह सब सुन्दर युक्तियाँ भयकर वास्तविकता के आगे

निरर्थक सिद्ध होती। मातिल्द से उसकी दोपहर को तथा रात को भोजन के समय नित्य ही भेंट होती। म० द ला मोल उसे जो अनगिनती चिट्ठियाँ लिखते थे उनसे वह यह जानता था कि मातिल्द का विवाह म० द क्रवाजन्वा से अब होने ही वाला है। वह सज्जन अभी से द ला मोल भवन में दिन को दो बार पधारने लगे थे। एक ठुकराये हुए प्रेमी की ईर्ष्यागिरी नजरो से उनका कोई भी काम छिप न पाता था।

जब भी उसे लगता कि माद० द ला मोल अपने उम्र प्रणयाकाक्षी के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार कर रही है तो अपने कमरे पर लौटने पर वह बड़े प्यार के साथ अपनी पिस्तौली को देखने लगता था।

वह भी मन ही मन कहता, ओफ ! कितनी बुद्धिमानी की बात हो कि मैं अपने वस्त्रों से पहचान के चिह्न अलग करके, पेरिस से पचास-साठ मील किसी निर्जन वन में जाकर इस असहनीय जीवन को समाप्त कर दूँ। इस जिले में अजनबी होने के कारण मेरी मृत्यु दस-पन्द्रह दिन तो छिपी ही रह जायेगी और फिर पन्द्रह दिन बीतने के बाद कौन मेरे लिये सोच करेगा।

युक्ति बहुत ही बुद्धि-सगत थी। किन्तु अगले ही दिन दस्तानो और गाउन की आस्तीन के बीच मातिल्द की बाँह की एक झलक हमारे तरुण दार्शनिक को निर्मम स्मृतियों के अथाह जल में डुबो देती और उसके जीवन का मोह चुकने न पाता। तब वह कह उठता कि ठीक है कि मैं इस रूसी नीति का अन्त तक पालन करूँगा। किन्तु वह अन्त क्या होगा ?

जहाँ तक मारेदाल का प्रश्न है, इतना निश्चित है कि इन तिरपन पत्रों को नकल करने के बाद और न लिखूँगा। इन पिछले छः सप्ताहों के इस कष्टदायक नाटक का या तो मातिल्द के ऊपर कोई प्रभाव न पड़ेगा या कम से कम क्षण भर के लिए उसका क्रोध शान्त हो जायेगा। हे भगवान ! मेरी तो खुशी के कारण मौत ही हो जायेगी ! इस दिशा में आगे सोचना उसके लिए असम्भव हो जाता।

एक बार जब वह बहुत देर तक सोच में डूबे रहने के बाद इस तर्क

को आगे बढ़ाने में सफल हो गया तो सोचने लगा कि इस मुझे एक दिन का सुख प्राप्त होगा और फिर उसकी कठोरता नये भिरे से शुरू हो जायेगी । सचमुच मुझमें उसे प्रसन्न करने की क्षमता ही नहीं है । इसके बाद मेरे पास कोई साधन न बचेगा और मैं सदा के लिए बेबस, लाचार और असहाय हो जाऊँगा ।

जैसा उसका चरित्र है उसमें कभी कोई गारण्टी हो सकती है ? हाय ! मेरे व्यवहार में ही उच्चता की कमी है, मेरा बोलने का ढंग भारी और नीरस है ! हे भगवान् ! मैं जैसा हूँ वैसा क्यों हूँ ?

: २६ :

उकताहट

जुलिये के प्रारम्भिक पत्रों को निरानन्द भाव से पढ़ने के बाद अब मादाम द फेरवाक को उनमें बड़ा रस मिलने लगा था। किन्तु एक चीज से उनको बड़ा दुःख होता था। वह सोचती कि यदि म० सोरेल सचमुच पुरोहित होते तो कितना अच्छा होता। तब उनसे एक प्रकार की घनिष्ठता सहज हो जाती। उनके क्रास और साधारण वस्त्रों के कारण तरह-तरह के ऐसे बेरहम सवाल उठने की सम्भावना रहती है जिनका जवाब देना मुश्किल होगा। उन्होंने अपने विचार को पूरा नहीं किया। यदि आगे सोचती तो उनके विचार शायद इस प्रकार के होते कि कोई द्वेषी व्यक्ति शायद यही मान ले और इस बात का प्रचार कर दे कि म० सोरेल मेरे कोई रिश्ते के गरीब भाई है, राष्ट्रीय सेना की सेवा के लिए सम्मानित कोई व्यापारी है।

जुलिये से प्रथम भेंट के पहले तक मादाम द फेरवाक को अपने नाम के आगे 'मारेशल' लिखने से बड़ी प्रसन्नता हुआ करती थी। उनके बाद से उनके शीघ्र ही आह्वन होने वाले कुष्ठाग्रस्त मिथ्याभिमान और एक नये भावावेग के बीच संघर्ष चलने लगा था।

मारेशल कभी-कभी सोचती कि जुलिये को पेरिस के पास ही किसी क्षेत्र में प्रधान विकार बनाना कितना आसान होगा! किन्तु केवल म० सोरेल, और उससे भी अधिक म० द ला मोल का-सेक्रेटरी मात्र! यह तो बहुत ही कष्टदायक है!

जीवन में पहली बार हर वस्तु से भयभीत होने वाली यह आत्मा अपनी मर्यादा और सामाजिक श्रेष्ठता के अहंकार के अतिरिक्त किसी अन्य विषय से प्रभावित होने लगी। उनके बूढ़े नौकर का भी ध्यान इस बात पर गया कि जब भी वह उस उदास मुख वाले सुन्दर नौजवान का कोई पत्र लेकर आता है तो नौकरी की उपस्थिति में साधारणतया उनके मुख पर झलकने वाला असन्तोष का भाव तुरन्त गायब हो जाता है।

उनके जीवन की एकमात्र महत्वाकांक्षा बाहरी दुनिया को प्रभावित करने की थी जिसके लिए उनके हृदय के भीतर कोई वास्तविक उत्साह न था।

जब से उन्होंने जुलियें के विषय में सोचना शुरू किया था तब से इस जीवन की उकताहट इतनी असह्य हो उठी थी कि किसी दिन उस अजीब नौजवान के साथ एक घण्टा बिता लेना इस बात के लिए काफी था कि अगले समूचे दिन किसी नौकरानी के साथ किसी प्रकार का दुर्व्यवहार न हो। उसकी बढ़ती हुई प्रतिष्ठा पर चतुराई से लिखे आने वाले गुमनाम पत्रों का कोई प्रभाव न पड़ा था। ताँबो ने व्यर्थ ही म० द लुज, म० द क्रवाजन्वा, म० द वे लुस इत्यादि को दो-तीन ऐसी धूर्ततापूर्ण बदनामी की बातें गढ़कर सुना दी थी जिन्हें इन महानुभावों ने सचाई की जाच किये बिना ही खुशी-खुशी सब जगह प्रचलित कर दिया था। मादाम द फेरवाक का मन ऐसे कुत्सित उपायों का सामना करने में समर्थ न था। वह मातिल्द को अपने सन्देह बताती जो सदा उन्हें सान्त्वना देती रहती थी।

एक दिन तीन बार यह पूछने के बाद कि कोई पत्र तो नहीं आया है, मादाम द फेरवाक ने एकाएक स्वयं जुलियें के पत्रों का उत्तर देने का निश्चय किया। यह एक प्रकार से उकताहट की ही विजय थी। दूसरा पत्र लिखते-लिखते मारेसाल इस चेतना से लगभग हतबुद्धि हो उठी कि वह 'म० सोरेल, द्वारा म० ल मार्कि द ला मोल' जैसे छुद्र पते को स्वयं अपने हाथ से लिख रही हैं।

“आप कुछ अपना पता लिखे हुए लिफाफे मुझे ला दीजिये,” एक दिन उन्होंने कुछ तीखेपन के साथ जुलिये से कहा ।

जुलिये सोचने लगा कि तो अब मैं एक प्रकार के सेवक प्रेमी के रूप में नियुक्त हो गया । उसने कौतूहल से झुक कर कुछ ऐसा मुँह बनाया कि वह मार्कि के वृद्ध सेवक आरसेन की भाँति दिखायी पड़ने लगा ।

उसी दिन शाम को वह अपने साथ कुछ लिफाफे लेता आया और अगले दिन सबेरे उसे तीसरा पत्र मिला । उसने पाँच-छ पत्रियाँ प्रारम्भ की और दो-तीन अन्त की पढ़ी । चार पृष्ठों का समूचा पत्र बहुत ही छोटे और टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखा हुआ था ।

कमश. मारेशल को रोज़ लिखने का अभ्यास पड़ गया । उत्तर में जुलिये रूसी पत्रों की ही नकल करके भेजता रहता । शब्दाडम्बरपूर्ण शैली का यही लाभ है कि मादाम द फेरवाक को अपने पत्रों तथा उनके उत्तरों के बीच किसी सम्बन्ध के अभाव से तनिक भी आश्चर्य न होता था ।

इधर ताँबो अपनी स्वेच्छा से ही जुलिये के कार्यों पर नज़र रखने लगा था । यदि वह मारेशल को किसी तरह यह सूचित कर सकता कि जुलिये उनके पत्रों को बिना खोले ही अपनी दराज़ में फेंक देता है तो उनके अभिमान को कितनी ठेस लगती !

एक दिन सबेरे नौकर मारेशल का एक पत्र जुलिये को देने के लिए पुस्तकालय में जा रहा था कि रास्ते में उसकी मुलाकात मातिल्द से हो गयी । उसने देखा कि कोई ऐसा पत्र आया है जिस पर जुलिये के हस्ताक्षरों में ही पता लिखा है । नौकर के जाते ही वह पुस्तकालय में भीतर पहुँची । पत्र अभी तक मेज़ के कोने में पड़ा था, क्योंकि काम में बहुत व्यस्त होने के कारण जुलिये ने उसे अपनी दराज़ में नहीं रखा था ।

“यह मैं बिलकुल नहीं बरदास्त कर सकती” मातिल्द ने झपटकर पत्र उठाते हुए कहा, “तुम मुझे, अपनी पत्नी को, एकदम भूले जा रहे

हो । महाशय जी, आपका व्यवहार बेहद खराब है ।”

इतना कहते-कहते, अपने कार्य के अनौचित्य से चकित होने से स्वाभिमान के कारण उसका गला रुँध गया और आँखें डबडवा आईं । पल भर में ही जुलिये को लगा कि उसे साँस लेने में भी कठिनाई हो रही है ।

जुलिये इतना विस्मित और अवाक् था कि इस घटना के समूचे अनोखेपन और सुख को वह ठीक ठीक ग्रहण न कर सका । उसने मातिल्द को पकड़ कर बिठाया, वह लगभग उसकी बाहों में आ रही ।

जिस क्षण उसे इस कार्य का अर्थ समझ में आया उसके आनन्द का ठिकाना न रहा । किन्तु दूसरे ही क्षण कोरासौफ के ध्यान ने उसे घेर लिया । एक ही शब्द द्वारा सर्वनाश हो सकता है । यह नीतिजन्य बन्धन इतना कष्टदायक था कि उसकी बाहें कठिन हो आईं । वह सोचने लगा कि इस सुन्दर समर्पित देह को अपने हृदय से लगाने के लोभ में मुझे न पडना चाहिए नहीं तो यह तुरन्त ही मुझ से घृणा करके कठोर व्यवहार करने लगेगी । कैसा भीषण चरित्र है !

मातिल्द के चरित्र को दोषी ठहराते हुए भी ठीक इसी कारण उसके प्रति सौ गुना प्यार भी उसे अनुभव हुआ । उसे लगा मानो वह किसी साम्राज्ञी को अपनी बाहों में भरे हुए हैं ।

जुलिये की भावहीन विरक्ति ने मातिल्द के हृदय को चीरे डालने वाले आहत अभिमान की धार को और भी तीखा कर दिया । उस क्षण ऐसे आत्म-संयम से वह बहुत दूर थी कि जुलिये की आँखों के वास्तविक भाव को पढ़ सके अथवा पढ़ने का प्रयत्न कर सके । उसे उसकी ओर देखने तक का साहस न हुआ, तिरस्कार का भाव देखने की आशका से ही वह काँप उठी । जुलिये की ओर से मुख फेरे निश्चल बैठी हुई वह ऐसी तीव्रतम पीड़ा से सन्तप्त थी जिसे केवल अभिमान और प्रेम के लिए ही मानव-हृदय सहन करने को बाध्य होता है । सुष-बुध खोकर वह कैसी अद्वैतदर्शिता कर बैठी थी ।

मैं कितनी अभागिन हूँ कि मेरे ऐसे खुल्लमखुल्ला प्रेम-प्रदर्शन की भी उपेक्षा हो गयी और वह उपेक्षा भी किसके द्वारा ? पीडा से विक्षिप्त अभिमान ने सुझाया—अपने पिता के एक नौकर द्वारा ।

“यह मैं बिलकुल नहीं सहन करूँगी,” वह जोर से कह उठी और क्रोध से तडप कर एकाएक उसने जुलिये की मेज की दराज खोल ली । दराज में ठीक वैसे ही नौ-दस पत्र और भी पड़े हुए थे जैसा एक अभी-अभी नौकर दे गया था । उन्हें देखकर वह आघात से जडीभूत-सी हो गयी । सभी लिफाफों पर उसने जुलिये की कमोवेश छिपाई हुई लिखावट पहचान ली ।

वह क्रोध से चीख उठी, “तो न केवल वह तुम्हारे लिए पागल है बल्कि तुम उससे धृणा भी करते हो । तुम, एक श्रदना से आदमी, मारेशाल द फेरवाक से धृणा करते हो ।”

फिर एकाएक वह जुलिये के पैरो पर गिरकर बोली, “आह, मुझे क्षमा करो, प्रिय ! चाहो तो मुझसे धृणा करो, पर मुझे प्यार करो । तुम्हारे प्रेम से वंचित होकर मैं अब और जीवित न रह सकूँगी ।” और वह एकदम मूर्च्छित होकर गिर पड़ी ।

जुलिये सोचने लगा कि आखिरकार यह अभिमानिनी नारी आज मेरे पैरो में पड़ी है ।

ऑपेरा में

इस भावाविष्ट स्थिति में जुलियें सुखी से अधिक विस्मित था। मातिल्द के अपमानजनक वचनों से रूमी नीति की वृद्धिमानो पूर्णतया स्पष्ट थी। 'कम कहो, कम करो' इसी में मेरी मुक्ति का एकमात्र मार्ग है।

उसने एक भी शब्द कहे बिना मातिल्द को उठाकर फिर से कोच पर लिटा दिया। धीरे-धीरे आंसुओं से उसका कण्ठ रुँध गया।

अपने पर समय रखने के लिए वह मादाम द फेरवाक के पत्र हाथ में लेकर धीरे-धीरे उनकी मोहरे तोड़ने लगी। मारेशाल की लिखावट पहचान कर वह एकाएक चौंक पड़ी और पत्रों को बिना पढ़े हुए ही उलटने-पलटने लगी। उनमें से अधिकांश छ. पन्नों के थे।

“कुछ तो जवाब दो,” मातिल्द ने अन्त में बहुत ही अनुनय-भरे स्वर में जुलियें की ओर देखे बिना ही कहा। “तुम अच्छी तरह जानत हो कि मैं अभिमानिनी हूँ। यह मेरी स्थिति का, और बल्कि मैं स्वीकार करती हूँ कि मेरे चरित्र का, बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम है। तो मादाम द फेरवाक ने मेरे पास से तुम्हारा हृदय चुरा लिया है? क्या उन्होंने भी वे सब त्याग किए हैं जो अपने घातक प्रेम के कारण मैं तुम्हारे लिए कर चुकी हूँ?”

उत्तर में जुलियें केवल मौन ही रहा। वह सोच रहा था कि किस अधिकार से यह मुझ से ऐसे रहस्य के उद्घाटन की माँग करती है जो

किसी भी सम्मानवाले व्यक्ति के लिए अनुचित है ?

मातिल्द ने पत्रों को पढ़ने का प्रयत्न किया पर आँसुओं से रुंधी हुई आँखों के कारण यह असम्भव हो गया। पिछले महीने भर से वह भयकर यातना सहन कर रही थी। पर अभिमान के कारण अपने मन का यह भाव स्वयं अपने ही आगे स्वीकार करना भी उसके लिए सम्भव न था। वर्तमान विस्फोट केवल संयोगवश ही हुआ था, क्षण भर के लिए ईर्ष्या और प्रेम ने अहंकार पर विजय पायी थी। वह कोच पर उसके पीछे पास ही बैठी हुई थी। जुलिये को उसके बाल और अलाबास्टर जैसी सफेद गर्दन दिखाई पड़ी। पल भर के लिए वह अपना सारा कर्तव्य भूल गया और उसे अपनी बाहों में भरकर हृदय से लगा लिया।

मातिल्द ने धीरे-धीरे उसकी ओर सिर घुमाया। जुलिये उसकी आँखों में गहन दुःख के भाव को देखकर चकित हो उठा। वह भाव इतना गहन था कि उन आँखों के सहज भाव को पहचानना उसके लिए असंभव हो उठा। उसे लगा कि उसकी शक्ति जवाब दे रही है, साहस का जो अभिनय वह जबर्दस्ती कर रहा था वह इस क्षण असंभव था।

दूसरे ही क्षण जुलिये सोचने लगा कि यदि मैंने प्रेम प्रगट करके अपने आपको इस सुख में बह जाने दिया तो ये आँखें शीघ्र ही तीव्रतम विरक्ति और घृणा से भर उठेंगी। इसी बीच क्षीण स्वर में मातिल्द अपने उन सब कार्यों के लिए पश्चात्ताप प्रगट किये जा रही थी जो अपने प्रबल अभिमान के कारण उससे बन पड़े थे। उसका स्वर ऐसा निस्तेज था मानो कुछ भी कहने की शक्ति ही उसमें न बची हो।

“मेरा भी तो स्वाभिमान है,” जुलिये ने उससे कहा। उसके शब्द इतने धीमे थे मानो होठों से निकल ही न रहे हो, और उसके मुख पर एक तीव्र शारीरिक क्लान्ति की छाया स्पष्ट थी।

मातिल्द कुछ झटके के साथ उसकी ओर मुड़ी। जुलिये की आवाज़ सुनने के सुन्न की उसने लगभग आशा ही छोड़ दी थी। तभी उसे अपना तिरस्कार भरा व्यवहार याद आया। इस क्षण वह कोई भी ऐसा

असाधारण अविश्वसनीय कार्य करने को 'खुशी-खुशी' तैयार हो जाती जिससे यह सिद्ध हो सकता कि वह उसे कितना अधिक प्यार करती है और अपने आपसे कितनी अधिक धृष्टा ।

“सम्भवतः उस स्वाभिमान के कारण ही,” जुलिये ने आगे कहा, “तुमने क्षण भर के लिए मुझे कुछ विशेष समझा होगा । और निश्चित ही उस पुरुषोचित साहसपूर्ण दृढ़ता के लिए ही तुम आज मेरा आदर कर रही हो । हो सकता है कि मैं मारेशाल से प्रेम करने लगा हूँ ”

मातिल्द चौंर पड़ी, उसके मुख पर एक विचित्र-सा भाव झलक आया मानो अभी-अभी उसे सजा सुनायी जाने वाली हो । उसके मुख का यह भाव जुलिये से छिपा न रहा, उसका साहस फिर ढीला पड़ने लगा ।

ओफ ! अपने मुख से निकलने वाले शब्द उसे निरर्थक ध्वनियों जैसे, कहीं दूर से आते हुए कोलाहल जैसे, सुनाई पड़े । वह सोच रहा था कि यदि मैं किसी प्रकार उन चम्पई गालों को ऐसे चुम्बनों से भर सकता कि पता न चले । . .

“हो सकता है कि मैं मारेशाल से प्रेम करने लगा हूँ,” वह कहता गया । किन्तु उसका स्वर क्षीणतर होता जा रहा था, “किन्तु निश्चय ही मेरे पास इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि उन्हें भी मेरे प्रति कोई स्नेह है ।”

मातिल्द उसकी ओर ताकने लगी । जुलिये उस तीक्ष्ण दृष्टि के आगे टिका न रहा, कम से कम यही लगा कि उसके मुख ने उसके हृदय का भेद नहीं खोला है । उसके हृदय के गहनतम अन्तराल में उस समय मातिल्द के लिये प्रबल प्रेम उमड़ रहा था । इतनी उत्कटता के साथ प्यार का अनुभव उसने कभी न किया था, इस समय वह मातिल्द के समान ही प्रेम-विभोर था । यदि मातिल्द में इस समय इतनी हिम्मत और स्थिरता होती कि चतुराई से काम ले सके तो अवश्य ही जुलिये उसके पैरों पर गिर पड़ता और इस निरर्थक ढोंग को छोड़ने की सौगन्ध खा लेता ।

जुलिये मे केवल इतनी ही शक्ति थी कि कुछ न कुछ बोलता जाये, ओफ ! कोरासौफ, तुम यहाँ इस समय क्यों नहीं हो ? मुझे इस समय तुम्हारी सलाह की कितनी अधिक आवश्यकता है ! उसके हृदय मे बराबर यही बात उठ रही थी ।

ऊपर से उसने कहा, “और कुछ नहीं तो कृतज्ञता के कारण ही मुझे मारेशाल से आत्मीयता अनुभव करनी चाहिये । उन्होंने मुझे ऐसे समय मे सात्वना दी, अपनापन दिखाया, जब चारो ओर से मेरा तिरस्कार किया जा रहा था । शायद मुझे उन सब भाव-प्रदर्शनों मे कोई भी आस्था न रखनी चाहिये जो निस्सन्देह बड़े आनन्ददायक तो थे, किन्तु सम्भवतः क्षणिक भी थे ।”

“आह ! दयामय ईश्वर !” मातिल्द कह उठी ।

“अच्छी बात है ! तुम मुझे क्या आश्वासन दोगी ?” जुलिये सजग और भावाविष्ट स्वर मे कहने लगा । लगता था जैसे क्षण भर के लिए कूटनीति के सावधानी भरे सारे उपाय उसने छोड़ दिये हो । “इसका क्या आश्वासन है, कौन-सा देवी-देवता मुझे इस बात का वचन देगा कि जो स्थिति तुम मुझे प्रदान करने के लिए इस क्षण तैयार हो वह दो दिन से अधिक बनी रहेगी ?”

“मेरे प्रेम की उत्कटता, और तुम्हारे प्यार के अभाव मे मेरी पीड़ा,” मातिल्द ने उसकी ओर मुड़कर उसका हाथ पकड़ते हुए कहा ।

इस भाँति झटके के साथ मुड़ने के कारण उसके वस्त्र थोड़े-से अस्तव्यस्त हो गये, जुलिये को उसके सुन्दर कन्वे दीख उठे । उसके झुलके-से बिलखे हुए बालो को देखकर एक अन्य अपूर्व स्मृति उसके मन मे कौंध गयी ।

वह समर्पण करने के लिए उद्यत हो उठा । फिर सोचने लगा कि जल्दबाजी का एक शब्द ही निराशा के अनगिनती लम्बे दिनों को फिर लौटा लाने के लिए काफी होगा । मादाम द रेनाल अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए कारण ढूँढ लेती थी, उच्च समाज की यह नव-

युवती अपने हृदय को केवल तभी विचलित होने देती है जब बहुत ही प्रबल कारणों से उसे यह विश्वास हो जाय कि उसका भावविह्वल होना उचित है।

यह सत्य पलक मारते उसे दीख गया और पलक मारते ही उसका साहस वापिस लौट आया। उसने मातिल्द के हाथों में से अपना हाथ छुड़ा लिया और बहुत ही सभ्रमपूर्वक उससे हटकर बैठ गया। मानवीय साहस इससे आगे नहीं जा सकता। इसके बाद वह कोच पर चारों ओर बिखरे मादाम द फेरवाक के पत्रों को इकट्ठा करने लगा और बड़ी ही निर्भय तथा तीव्र निष्ठुरता के साथ बोला - “माद० द ला मोल, कृपा करके मुझे इस विषय में कुछ विचार करने का अवसर दे।”

वह जल्दी से उठकर पुस्तकालय से बाहर चला गया, मातिल्द ने दरवाजों के बन्द किये जाने की आवाज सुनी।

वह मन ही मन कह उठी कि कैसा जगली है, तनिक भी विचलित नहीं हुआ। पर यह मैं क्या कह रही हूँ। जगली! वह सचमुच बुद्धिमान है, दूरदर्शी है और दयालु है। गलती मेरी ही है और इतनी अधिक है कि कल्पना नहीं की जा सकती।

यह मन स्थिति दूर न हुई। मातिल्द उस दिन लगभग सुखी थी, क्योंकि वह सम्पूर्णतः और पूरे मन से प्रेमासक्त थी। उस समय कोई यही कहता कि इस हृदय को अहंकार ने—और वह भी कैसे अहंकार ने।—कभी पीड़ित नहीं किया।

उस दिन शाम को जब नौकर ने मादाम द फेरवाक के आने की घोषणा की तो वह चौंक उठी, नौकर की आवाज में उसे एक प्रकार की डरावनी गूँज सुनाई पड़ी। मारेशाल की सूरत भी सहन करना उसके लिए कठिन हो गया और वह कमरे से बाहर चली गयी। जुलिये अपनी इस कष्टसाध्य विजय में विशेष गौरव का अनुभव कर रहा था और उसे भय था कि कहीं उसकी आँखें कोई भेद न खोल दें। इसलिए उस दिन उसने द ला मौल भवन में भोजन ही नहीं किया।

सघर्ष का क्षण दूरतर होने के साथ-साथ उसका प्रेम और सुख शीघ्रता से बढ़ने लगा । उसे अपना व्यवहार अनुचित लगने लगा था । वह सोचने लगा कि मैं कैसे अपने आप पर सयम रखूँ ? यदि अब वह मुझसे प्रेम करना छोड़ दे तो क्या होगा । उस अभिमानी आत्मा में एक क्षण भी परिवर्तन करने के लिए काफी है और इतना तो मानना ही पड़ेगा कि मैंने उसके साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया है ।

शाम को उसे लगा कि इटैलियन ऑपेरा में मादाम द फेरवाक के बाक्स में जाना बहुत ही आवश्यक है । उन्होंने विशेष रूप से उसे निमित्त किया था । मातिल्दा को वहाँ उसकी उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति का अवश्य पता चल जायेगा । इस ठोस दलील के बावजूद शुरू में उसे इतने साहस का अनुभव न हो रहा था कि किसी से मिले-जुले । उसे भय था कि बातचीत करते ही उसका आधा सुख उससे छिन जायेगा ।

दस का घण्टा बजा ; अब तो उसका वहाँ जाना सर्वथा आवश्यक हो गया । सौभाग्यवश मारेशाल का बाक्स स्त्रियों से भरा हुआ था और उसे दरवाजे के पास एक ऐसी सीट मिली जो उनकी टोपियों से पूरी तरह छिपी हुई थी । इस स्थान ने उसे एक हास्यास्पद स्थिति से बचा लिया ; ऑपेरा में एक गीत को सुनकर उसकी आँखें आँसुओं से भर उठी थी । इन आँसुओं पर मादाम द फेरवाक की भी दृष्टि पड़ी । उसकी आकृति की साधारण पुरुषोचित दृढ़ता से ये आँसू इतने विपरीत थे कि उस महिला के इतने दिनों से अहंकार के विनाशकारी तत्वों में डूबे हुए हृदय को भी उस पर तरस हो आया । उनके हृदय में जो थोड़ा बहुत नारीत्व बचा था उसने उन्हें उससे बातचीत करने के लिए प्रेरित किया । उस समय वह स्वयं अपने स्वर को सुनकर प्रसन्न होना चाहती थी ।

“आपने ला मोल महिलाओं को देखा ?” उन्होंने जुलियें से पूछा । “वे लोग तीसरी सीढ़ी पर हैं ।” जुलियें तुरन्त ही सिर निकालकर उस ओर ताकने लगा । उसे मातिल्दा दीख पड़ी ; उसकी आँखें भी आँसुओं से चमक रही थी ।

आज तो उनका अप्रैरा आने का दिन नहीं है, जुलिये सोचने लगा ।
कितनी उत्सुकता है !

मातिल्द ने किसी तरह से अपनी माँ को अप्रैरा आने के लिए राजी कर लिया था यद्यपि जिस बाक्स में वह बैठी हुई थी वह परिवार के एक भक्त द्वारा बड़ी उत्सुकतापूर्वक प्रस्तुत किया गया होने पर भी बहुत अच्छा न था । किन्तु मातिल्द की यह देखने की बड़ी इच्छा थी कि जुलिये वह शाम मारेशाल के साथ बिताता है अथवा नहीं ।

: ३१ :

‘भय बिन होय न प्रीत’

जुलिये जल्दी से मादाम द ला मोल के बाक्स में पहुँचा, जहाँ सबसे पहले उसकी नज़र मातिल्द के आँसुओं से भीगे नयनों पर पड़ी। वह समयमहीन होकर रो रही थी ; बाक्स में दो-तीन परिचितों के अतिरिक्त और कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति न था। मातिल्द ने अपना हाथ जुलिये के हाथ पर रख दिया ; लगता था मानो वह अपनी माँ का सारा भय भूल चुकी है। आँसुओं से लगभग रूँधे हुए कंठ से वह जुलिये से केवल एक ही शब्द कह सकी . “आश्वासन !”

वह स्वयं बहुत ही भाव-विह्वल हो रहा था। उसने अपनी आँखों को ऐसा ढँक लिया मानो उन फानूसों की चकाचौंध से बचा रहा हो जो तीसरी पक्ति के बाक्सों में लटके हुए थे। उसने सोचा कि चाहे जो हो मुझे इससे बातचीत न करनी चाहिए। यदि मैं बोला तो मेरी भावनाओं की गहराई में उसे कोई सन्देह न रह जायेगा, मेरी आवाज़ सारा भेद खोल देगी और अभी पूरे सर्वनाश का डर है ही।

सुबह की अपेक्षा इस समय उसका आन्तरिक संघर्ष कहीं अधिक पीड़ाजनक था, क्योंकि उसके हृदय को भावना की तीव्रता अनुभव करने का अवकाश मिल चुका था। किन्तु मातिल्द के अहंकार को विजयी होने का अवसर देने में उसे डर लगता था। इसीलिए प्रेम और प्रबल लालसा से विक्षिप्तप्राय होने पर भी उसने दृढ़तापूर्वक कुछ न कहने को अपने आपको बाध्य किया।

मेरे विचार मे यह उसके चरित्र की एक श्रेष्ठतम विशेषता है । जिस व्यक्ति मे आत्मसयम की ऐसी क्षमता है वह दूर तक जा सकता है ।

माद० द ला मोल ने जुलिये से अपने साथ ही घर चलने का आग्रह किया । सौभाग्यवश उस समय बड़े जोर की वर्षा हो रही थी । किन्तु मार्किज ने उसे अपने सामने बिठा लिया और निरन्तर बिना रुके हुए बातचीत करती रही; उनकी बेटी से बात करने का उसे कोई अवसर ही न मिला । लगता था मानो मार्किज जुलिये के सुख का ध्यान करके ही ये सब कर रही है । अब अत्यधिक भावविह्वलता प्रगट करके सर्वनाश कर लेने का भय न होने से उसने उन्मुक्त होकर अपने भावावेग के आगे समर्पण कर दिया ।

अपने कमरे मे पहुँचते ही जुलिये ने घुटनो के बल बैठ कर प्रिंस कोरासौफ द्वारा दिये हुए प्रेम-पत्रो को बार-बार चूमा ।

ओफ ! अद्भुत व्यक्ति ! वह विक्षिप्त भाव से पुकार उठा । मैं तुम्हारा कितना अधिक ऋणी हूँ ! धीरे-धीरे उसका आत्मसयम लौट आया । वह अपनी तुलना उस जनरल से करने लगा जो किसी महायुद्ध का पूर्वार्ध अभी-अभी जीत चुका हो । वह सोचने लगा कि विजय वास्तविक है और बड़ी भारी है । पर कल क्या होगा ? एक क्षण मे ही सब कुछ नष्ट हो सकता है ।

एक तीव्र भावना के वशीभूत होकर उसने नैपोलियन के सैन्तेलेना मे लिखाये गये सस्मरण निकाल लिये और दो घण्टे तक वह उन्हें पढता रहा । केवल उसकी आँखें ही उन पृष्ठों को पढ़ रही थी । पर इससे क्या, वह जबर्दस्ती ही पढता रहा । जिस समय वह ऐसे अजीब से काम मे अपने आपको लगाये हुए था, उस समय उसका मस्तिष्क और हृदय उच्चतम कार्यों के आकाश मे उड रहे थे किन्तु वह स्वयं उनसे अवगत न था । वह सोचने लगा मातिल्द का यह हृदय मादाम द रेनाल से कितना अधिक भिन्न है, पर उसके विचार और आगे न गये ।

एकएक अपनी पुस्तक को फेंकते हुए वह चीख उठा; 'भय बिना

होय न प्रीत' । शत्रु तभी तक मेरी आज्ञा मानेगा जब तक उसे मेरा डर रहे, तब उसे मेरे तिरस्कार का साहस न होगा । वह हर्षोन्मत्त भाव से अपने कमरे में इधर से उधर टहलने लगा, यद्यपि सच पूछा जाय तो उसका आनन्द प्रेम से अधिक अभिमान के कारण था ।

“भय बिन होय न प्रीत ।” वह गर्व के साथ बार-बार दोहराता रहा और उसका गर्व उचित ही था । वह सोच रहा था, चरम आनन्द के क्षणों में भी मादाम द रेनाल को सदा सन्देह रहता था कि मेरा प्रेम स्वयं उनके प्रेम के बराबर है अथवा नहीं । यहाँ मुझे एक दैत्य को बस में करना है, इसलिए बस करने का कर्तव्य मेरा ही है ?”

वह भली भाँति जानता था कि अगले दिन सबेरे आठ बजे ही मातिल्द पुस्तकालय में आ जायेगी । वह वहाँ नौ बजे तक नहीं आया । प्रेम से सुलगते रहने पर भी उसने अपने हृदय पर नियन्त्रण रक्खा । शायद एक भी मिनट ऐसा न बीता होगा जब उसने मन ही मन यह न दोहराया हो : ‘उसके मन का निरन्तर इस भयंकर सन्देह से ग्रस्त रहना ठीक है कि क्या वह मुझे प्यार करता है ?’ वह जानता था कि अपने ऊँचे खानदान और अपने मिलने वालों की खुशामद के कारण वह कुछ आवश्यकता से अधिक गर्वीली हो गयी है ।

पुस्तकालय में पहुँच कर उसने देखा कि वह निस्तेज और स्थिर भाव से कोच पर बैठी हुई है । लगता था जैसे तनिक भी हाथ-पैर हिलाने की सामर्थ्य उसमें न बची हो । उसने अपना हाथ जुलिये की ओर बढ़ाते हुए कहा, “यह सच है, प्रियतम, मैंने तुम्हें अप्रसन्न कर दिया है । क्या तुम सचमुच मुझसे नाराज हो ?”

जुलिये ने ऐसे सहज स्वर की आशा न की थी । उसके लिए अपने आपको बस में रखना लगभग असम्भव हो उठा ।

“तुमने आश्वासनों की इच्छा प्रकट की थी,” उसने पल भर के मौन के बाद, जिसके तोड़े जाने की उसे हल्की-सी आशा थी, आगे कहा । “यह ठीक है, तो चलो मेरे साथ भाग चलो, हम लोग लन्दन

चले जायेंगे । उसके बाद मैं फिर कही मुँह दिखाने लायक न रहूँगी ।” उसने बड़ी मुश्किल से साहस करके अपना हाथ जुलिये के हाथ से खींच कर अपनी आँखें ढँकी । स्त्री-सुलभ लज्जा और सकोच की भावनाएँ उसके हृदय में उमड़ आयी थी । अन्त में एक लम्बी साँस लेते हुए वह फिर बोली, “ठाँक है ! मुझे कही मुँह दिखाने लायक न रहने दो । यह सबसे बड़ा आश्वासन है ।”

जुलिये सोचने लगा कि कल मैं सुखी था क्योंकि अपने प्रति कठोर होने का साहस मुझ में मौजूद था । पल भर चुप रहकर वह किसी प्रकार अपने हृदय को इतना बस में कर सका कि भावहीन स्वर में कह सके : “लन्दन चल पड़ने के बाद, और, तुम्हारे ही शब्दों में, किसी को मुँह दिखाने का बिल न रहने के बाद भी इसका आश्वासन कौन देगा कि तुम मुझे प्यार करती ही रहोगी ? इसका क्या भरोसा है कि गाड़ी में मेरी उपस्थिति तुमको असहनीय न लग उठेगी ? मैं कोई हृदयहीन पशु नहीं हूँ, तुम्हारी बदनामी से मुझे और भी अधिक दुख ही होगा । बाधा तुम्हारी सामाजिक स्थिति की नहीं, बल्कि दुर्भाग्यवश तुम्हारे अपने चरित्र की है । क्या तुम्हें अपने ऊपर इतना भरोसा है कि मुझे एक सप्ताह तक प्यार करती रहोगी ?”

(जुलिये सोचने लगा, आह, और कुछ नहीं तो यह एक सप्ताह के लिए, बस एक ही सप्ताह के लिए, मुझे प्यार करे ! मैं इतने में ही आनन्द से पागल हो जाऊँगा । भविष्य की मुझे क्या चिन्ता है, स्वयं जीवन की भी मुझे क्या चिन्ता है ? और यह स्वर्गिक सुख मैं चाहूँ तो इसी क्षण प्राप्त हो सकता है, यह पूरी तरह मेरे ऊपर निर्भर है ।)

मातिल्द ने देखा कि वह गहरे सोच में डूबा हुआ है ।

“तो मैं एकदम तुम्हारे अयोग्य हूँ ? उसने जुलिये का हाथ पकड़ते हुए कहा ।

जुलिये ने उसे हृदय से लगा लिया किन्तु तुरन्त ही कर्तव्य के लौह-हस्त ने उसके हृदय को जकड़ लिया । वह सोचने लगा कि यदि इसे पता

चल गया कि मैं इसे इतना प्यार करता हूँ तो मैं उसे गँवाँ बैठूँगा। और अपने आपको उसकी बाहों से अलग करने के पहले उसने समस्त पुरुषोचित सम्मान का भाव फिर से धारण कर लिया था।

उस दिन तथा बाद के दिनों में वह अपने इस परम आनन्द की प्रबलता को छिपाने में सफल रहा। ऐसी भी क्षण होते जब वह उसे अपनी बाहों में भरने के सुख से भी अपने आपको वंचित रखता। दूसरी ओर कभी-कभी आनन्द का निर्बन्ध उन्माद समझदारी के ऊपर विजयी हो जाता।

बगीचे में एक फूलों का कुँज था जिसके पीछे सीढ़ी रक्खी रहा करती थी। किन्हीं दिनों जुलिये यही खड़ा होकर मातिल्द की खिडकी की ओर ताकता रहता और उसकी बेवफाई के लिए सिर धुनता रहता था। पास में ही एक बड़ा भारी ओक का वृक्ष था जिसके बड़े भारी तने के पीछे छिपकर वह लोगों की नजरों से बचा रहा करता था।

एक दिन वह मातिल्द के साथ इस जगह के पास से निकला जिसे देखते ही उसे अपने पिछले दुःख की तीव्रता इतने स्पष्ट रूप में याद आ गयी। पिछली निराशा और वर्तमान आनन्दातिरेक के बीच अन्तर इतना प्रबल था कि वह उसके जैसे स्वभाव के लिए असहनीय हो उठा। उसकी आँखों में आँसुओं की बाढ़-सी आ गयी और अपनी प्रेयसी के हाथों को होठों से लगाते हुए उसने कहा : “यही मैं तुम्हारा ध्यान करते-करते दिन बिताता था, यही से मैं खिडकी की ओर देखता हुआ घण्टों उस सुखद क्षण की प्रतीक्षा करता रहता था जब तुम्हारा यह हाथ उसे खोल दे।”

उसके मन का बाँध पूरी तरह टूट गया। उसने मातिल्द के आने उन दिनों की अपनी पीड़ा की सारी गहराई ऐसे सच्चे रंगों में चित्रित की जिन्हें कोई मन से नहीं बना सकता। बीच-बीच में ऐसे भी संक्षिप्त उल्लेख आ जाते थे जिनसे इस वर्तमान सुख का आभास मिलता जिसने उस भयंकर पीड़ा का अन्त कर दिया था।

हे भगवान, मैं कर क्या रहा हूँ ! अचानक होश में आकर जुलिये सोचने लगा। मैं तो सब किये-कराये पर पानी फेरे दे रहा हूँ।

अपने तीव्र भय में उसे अभी से ही माद० द ला मोल की आँखों में कम प्यार दीखने लगा था। यह केवल भ्रम ही था, किन्तु जुलिये के मुख का भाव अचानक ही बदल गया, सारा चेहरा मौन जैसा सफेद पड़ गया। पल भर के लिए उसकी आँखों की ज्योति खो गयी और तीव्र तथा प्रबलतम प्रेम के स्थान पर हल्का सा द्वेषपूर्ण अहंकार क्षणभर के लिए तेजों से उसकी आँखों में झलक आया।

“क्या बात है, प्रियतम ?” मातिल्द ने उद्विग्न होकर बड़े प्यार से पूछा।

“मैं झूठ बोल रहा हूँ,” जुलिये ने कुछ चिड़चिड़े स्वर में कहा, “मैं तुमसे झूठ बोल रहा हूँ। मुझे इसका बड़ा पश्चात्ताप है। भगवान जानता है कि मैं तुम्हारी इतनी अधिक इज्जत करता हूँ कि तुमसे झूठ नहीं बोल सकता। तुम मुझसे प्रेम करती हो, फिर मुझे तुम्हें खुश करने के लिए सुन्दर वक्तूताएँ रचने की कोई जरूरत नहीं।”

“हे ईश्वर ! तो पिछले दस मिनट से जो मनोहारिणी बाने तुम मुझमें कह रहे हो वे सब क्या केवल सुन्दर वक्तूताएँ ही थी ?”

“मुझे सचमुच उनके लिए बहुत ही दुःख है। वे मैंने बहुत दिन पहले एक ऐसी स्त्री के लिए तैयार की थी जो मुझसे प्रेम करती थी। पर मुझे उससे बड़ी विरक्ति होती थी - मेरे चरित्र का यह सबसे भारी दोष है। मैं तुम्हारे आगे यह स्वीकार करता हूँ। मुझे क्षमा कर दो।”

मातिल्द के गालों पर कड़वे आँसू बह पड़े।

जुलिये ने आगे कहा, “जब भी कभी कोई आघात पहुँचाने वाली वस्तु पल भर के लिए मुझे अनमना कर देती है तो मेरी अभागी स्मरण-शक्ति मुझे कुछ न कुछ सहारा देती है और मैं उसका अनुचित लाभ उठाने लगता हूँ।”

‘तो मैंने अनजान में ही कोई ऐसा काम कर दिया है जिससे तुम्हें आघात पहुँचा है ?’ मातिल्द ने लुभावनी सरलता से कहा।

“यह मुझे याद है कि एक दिन जब तुम इस कुँज के पास से निकली

थी तो तुमने एक फूलो का गुच्छा तोड़ लिया था। म० द लुज ने वह गुच्छा तुम्हारे हाथों से लेकर अपने पास रख लिया था। मैं एक-दो कदम पीछे ही था।”

“म० द लुज ? असम्भव,” मातिल्द ने ऐसे गर्व के साथ कहा जो उसके लिए स्वाभाविक ही था। “ऐसे काम मैं कभी नहीं करती।”

“मुझे पक्की याद है कि तुमने किया था,” जुलियें ने तीव्र स्वर में उत्तर दिया।

“ठीक है, तुम कहते हो तो अवश्य सच होगा,” मातिल्द ने उदास भाव से अपनी आँखें नीची करके कहा। उसे पक्का विश्वास था कि पिछले कई महीनों से उसने म० द लुज को ऐसा कोई व्यवहार न करने दिया था।

जुलियें अकथनीय स्नेह से उसकी ओर देखने लगा। वह मन ही मन कह उठा कि नहीं, इसका प्यार तनिक भी कम नहीं हुआ है।

उस दिन शाम को मातिल्द ने मादाम द फेरवाक के प्रति उसके झुकाव के लिए हँसते-हँसते उसकी खबर ली। नयी-नयी सामन्त-वर्ग में प्रवेश करने वाली महिला के प्रति एक साधारण व्यक्ति का प्रेम ! उसके बालों से खेलते हुए वह बोली, “शायद केवल उस प्रकार के हृदय ही ऐसे हैं जिन्हें मेरा जुलियें प्रज्वलित नहीं कर सकता। पर उसने तुम्हें पक्का शौकीन व्यक्ति बना दिया है।”

जिन दिनों जुलियें अपने आपको मातिल्द की घृणा का पात्र समझने लगा था, उन्हीं दिनों में उसकी गिनती पेरिस के सबसे सुसज्जित व्यक्तियों में होने लगी थी। किन्तु तो भी इस प्रकार के अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा उसमें एक खूबी थी, एक बार अपने वस्त्र पहन लेने के बाद वह उनकी फिर तनिक भी चिन्ता न करता था।

मातिल्द एक बात से बड़ी चिन्तित थी। जुलियें अब भी उन रूसी पत्रों को नकल करके मारेशल को भेजता रहता था।

: ३२ :

बाघ

एक अंग्रेज पर्यटक ने जिक्र किया है कि किम प्रकार वह एक बाघ के साथ मित्र की भाँति रहा करता था, उसने बाघ का पालन किया था और उससे बड़ा लाड भी करता था, किन्तु साथ ही वह एक भरी हुई पिस्तौल भी सदा अपनी मेज पर तैयार रखता था ।

जब तक ऐसी स्थिति न होती कि मातिल्द उसकी आँखों का भाव पढ़ सके तब तक जुलिये अपने इस सुख में कभी भी पूरी तरह आत्म-विस्मृत न होता था । वह बीच-बीच में उससे कुछ कठोर शब्द कहने के कर्तव्य का नियमित रूप से पालन करता ।

किन्तु मातिल्द के व्यवहार की कोमलता और उसके प्रति प्रगाढ़ स्नेह भाव ऐसा था कि जुलिये स्वयं ही चकित था । धीरे-धीरे जब यह स्थिति आने लगी कि उसे अपना आत्मनियंत्रण खो बैठने का भय लगा तो वह साहस करके अचानक ही कहीं बाहर चला गया ।

मातिल्द के लिए यह प्यार का पहला अनुभव था । जो जिन्दगी उसे कछुवे की गति से रेंगती जान पड़ती थी अब उसी में मानो पर लग गये ।

किन्तु उसके आत्माभिमान को व्यक्त होने का कोई न कोई मार्ग मिलते रहता भी आवश्यक था । इसीलिए उसने अपने आप को सारे प्रेम-जन्य संकटों में साहसपूर्वक डालने का निश्चय किया । जुलिये बहुत सतर्क रहता था; किन्तु जब भी किसी प्रकार की आशंका दिखाई पड़ती तो

सुर्ख और स्याह

मातिल्द उसकी बात न मानती थी। साथ ही उसके आगे विनम्र और आज्ञाकारिणी होते हुए भी दूसरे लोग, सगे-सम्बन्धी अथवा नौकर-चाकर, उसके समीप आते तो वह उनके साथ और भी तीव्र अहंकार के साथ व्यवहार करती थी।

शाम को ड्राइंग रूम में साठ व्यावयवों के बीच में भी वह जुलिये को अलग बुलाकर उससे चुपचाप देर तक बातें करती रहती थी।

एक दिन ताबो उनके पास आकर जम गया। मातिल्द ने उससे पुस्तकालय में जाकर स्मालेट की रचनाओं का वह खण्ड ले आने का अनुरोध किया जिसमें १६८८ की क्रांति का हाल दिया हुआ है। उसे हिचकिचाते देखकर वह बोली - “जल्दी की कोई जरूरत नहीं है।” यह बात उसने ऐसे अपमानजनक तिरस्कार भरे स्वर में कही जिससे जुलिये के हृदय को बड़ा चैन मिला।

‘तुमने उस शैतान के मुख का भाव देखा?’ उसने मातिल्द से पूछा।

“उसके चचा ने इस ड्राइंग रूम में दस-बारह वर्ष से हाजिरी बजाई है, नहीं तो मैं उसे तुरन्त निकाल बाहर करती।”

म० द क्रवाजन्वा, म० द लुज तथा अन्य लोगों के साथ मातिल्द का व्यवहार बाहर से अत्यधिक शिष्टतापूर्ण होते हुए भी वास्तव में बहुत ही खिजाने वाला था। वह इस विषय में जुलिये से कही हुई बातों के लिए प्रायः पछताती रहती थी, विशेषकर इसलिये और भी अधिक कि अब उसे यह बताने का साहस न होता था कि इन लोगों के प्रति अपने अत्यन्त ही निर्दोष व्यवहार को उसने बहुत ही बर्बाद कर जुलिये को बताया था।

प्रतिदिन मन ही मन दृढ़ निश्चय करने पर भी अपने स्त्री-सुलभ स्वाभिमान के कारण वह जुलिये से यह न कह पाती : “केवल तुमसे बातचीत करने के कारण ही मुझे अपनी उस दुर्बलता के वर्णन में आनन्द मिलता था कि जब कभी किसी सगमरमर की मेज पर अचानक ही पल भर के लिए म० द क्रवाजन्वा के हाथ से मेरा हाथ छू गया

तो मैंने उसे तुरन्त हटाया नहीं ।”

इन सब सज्जनो से पल दो पल बात करने ही उसे तुरन्त जुलियें से कोई न कोई बात पूछने की याद आ जाती और इस बहाने वह उसे अपने पास ही बिठाये रखती ।

उसे पता चला कि वह गर्भवती है और उसने बड़ी खुशी-बुशी यह समाचार जुलिये को सुनाया ।

“अब भी तुम्हे मुझ पर शक है ? क्या यह आश्वासन नहीं है ? अब तो मैं सदा के लिए तुम्हारी पत्नी हूँ ।”

इस घोषणा से जुलिये को बड़ा गहरा विस्मय हुआ । वह अपने व्यवहार के निर्धारित सिद्धान्त को लगभग भूल गया । यह बेचारी लड़की अपने आपको मेरे लिए बरबाद किये दे रही है, अब मैं उसके साथ जान-बूझकर विरक्ति और अपमान का व्यवहार कैसे करूँ ? यदि दूरदर्शिता की भयानक आवाज उसे सुनाई भी पड़ती, तो भी उसे मातिल्द से कोई ऐसी कठोर बात कहने की इच्छा न होती जिसे वह अपने अनुभव से ही प्रेम के स्थायी होने के लिए इतना अनिवार्य समझने लगा था ।

“मैं अपने पिता को लिखने की बात सोच रही हूँ,” मातिल्द ने एक दिन उससे कहा । “वह मेरे लिए पिता से भी अधिक है—मेरे बन्धु भी हैं । इसलिए यह मेरे और तुम्हारे दोनों के लिए अशोभन होगा कि मैं एक पल के लिए भी उन्हें धोखे में रखूँ ।”

“हे भगवान ! तुम क्या करने वाली हो ?” जुलिये ने भयभीत होकर कहा ।

“अपना कर्तव्य,” मातिल्द ने उत्तर दिया । उसकी आँखें हर्ष से चमक रही थी ।

उसे अनुभव हुआ कि उसके हृदय में अपने प्रेमी से अधिक साहस है ।

“पर वह मुझे बेइज्जत करके घर से निकाल देगे ।”

“यह उनका अधिकार है, तुम्हे इसे स्वीकार करना पड़ेगा । तुम मुझे अपनी बाँह का सहारा देना और हम लोग खुले-खजाने के सामने

के दरवाजे से बाहर निकल चलेगे ।”

जुलिये अवाक् था, उसने मातिल्द से एक सप्ताह रुकने का अनुरोध किया ।

“यह मैं नहीं कर सकती,” मातिल्द ने उत्तर दिया । “मेरी इज्जत का सवाल है । मैं अपना कर्तव्य जानती हूँ । वह मुझे तुरन्त ही पूरा करना होगा ।”

“अच्छी बात है तो यह मेरा आदेश है कि तुम अभी रुको,” जुलिये ने दृढतापूर्वक कहा । “तुम्हारी इज्जत सुरक्षित है, मैं तुम्हारा पति हूँ । इस गम्भीर कदम से हम दोनों की स्थिति बदलना अनिवार्य है । यह बात मैं अपने अधिकार को समझ कर ही कह रहा हूँ । आज मंगल है, अगले मंगल को दुक् द रे के यहाँ निमन्त्रण है । उस दिन शाम को जब म० द ला मोल घर लौटेंगे तो नौकर उन्हें वह महत्वपूर्ण पत्र हाथ में देगा” । उनकी एक बड़ी लालसा है कि तुम्हें किसी तरह डचेज बनवा दें, यह बात मैं पक्की तौर पर जानता हूँ । जरा सोचो उन्हें कितना सताप होगा ।”

“तुम्हारा मतलब है कि उनके क्रोध और बदले की चिन्ता करूँ ?”

“अपने उपकारकर्ता के लिए मेरे मन में तरस भले ही आये, उन्हें दुख पहुँचाने के विचार से तीव्र कष्ट का अनुभव भले ही हो, किन्तु मैं डरता नहीं हूँ और कभी किसी व्यक्ति से नहीं डरूँगा ।”

मातिल्द मान गयी । जब से उसने जुलिये को अपनी हालत के बारे में बताया था तब से आज पहली बार उसने इतने अधिकार के स्वर में बात की थी । इतनी आत्मीयता से उसने मातिल्द को कभी प्यार न किया था । मातिल्द की अवस्था से अवसर पा कर उसके स्वभाव के सुकुमार अंश ने उसे इस बात के लिए लाचार कर दिया कि वह कोई कटु बात न कहे । पर वह म० द ला मोल से सारी बात कह देने के विचार से बहुत उद्धिग्न हो उठा था । क्या अब उसे मातिल्द से अलग होना पड़ेगा ? और विदा के समय मातिल्द का दुख चाहे जितना तीव्र

क्यों न हो, पर उसके जाने के महीने भर बाद भी क्या उसे जुलियें की याद रहेगी ?

लगभग इतना ही भय उसे मार्कि की डाट-फटकार का था ।

उस दिन शाम को उसने मातिल्द को अपनी उद्विग्नता का दूसरा कारण बताया और फिर प्रेम में विह्वल होकर पहला भी कह डाला ।

मातिल्द का मुँह पीला पड़ गया ।

“क्या छ महीने के वियोग से तुम्हें सचमुच बहुत दुख होगा ?”
उसने जुलिये से पूछा ।

“बेहद दुख, और एकमात्र ऐसा दुख जिससे मैं घबराता हूँ ।”

मातिल्द की खुशी का ठिकाना न था । अभी तक जुलिये अपना अभिनय इतनी सफलता के साथ करता आया था कि मातिल्द अपने प्रेम को जुलिये से अधिक गहरा समझती थी ।

आखिरकार वह मंगलवार भी आ पहुँचा । आधी रात को घण्टी बजने पर मार्कि को एक पत्र मिला जिस पर यह हिदायत लिखी थी कि लिफाफे को वह स्वयं ही और केवल तभी खोलें जब कोई और उपस्थित न हो । पत्र इस प्रकार था :

“पिताजी,

हमारे बीच का प्रत्येक सामाजिक बन्धन टूट चुका है, केवल प्राकृतिक बन्धन ही बाकी है । मेरे पति के बाद आपसे अधिक इस संसार में मुझे कोई प्यारा नहीं और न कभी होगा । मेरी आँखें आँसुओं से भर उठती हैं और मैं सोचने लगती हूँ कि मैं आपको कितना दुख दे रही हूँ । पर इस खयाल से कि मेरी नज्जा सब पर प्रगट न हो और आपको सब कुछ सोचने और उसके अनुसार कार्य करने के लिए पर्याप्त अवसर मिल जाय, मैं अब इस बात को आपके सामने प्रणव किये बिना और नहीं रह सकती । मैं जानती हूँ कि आपका मुँह पर कितना स्नेह है । यदि उस स्नेह से प्रेरित होकर आप मुझे छोटा-सा सालाना भत्ता दे सकें तो मैं अपने पति के साथ जहाँ आप कहेंगे,

सुख और स्याह

सदाहरण के लिए स्विट्जरलैंड में, जाकर रहने लगूँगी। उसका नाम इतना अपरिचित है कि बेरियर के एक बहई की पुत्रवधू मादाम सोरेल के नाम से कोई आपकी पुत्री को न पहचानेगा। यही है वह नाम जिसे लिखने में मुझे इतनी कठिनाई हुई है। मुझे जुलिये के लिए भय है जिससे आप उचित ही इतने क्रुद्ध होंगे। पिता जी, यह ठीक है कि मैं डचेज न हो पाऊँगी, पर यह बात मैं उसके प्रेम में पड़ते समय भी जानती थी। उसके प्रेम में मैं ही पहले पड़ी, मैंने ही उसे बहकाया। मैंने इतना स्वाभिमान आपसे ही प्राप्त किया है कि मेरा मन किसी भी कुत्सित बात पर नहीं ठहरता। इस बात से कोई लाभ न हो सका कि आपको प्रसन्न करने के उद्देश्य से मैं म० द क्रवाजन्वा से विवाह के प्रस्ताव पर सोच-विचार करती रही; पर आपने सच्ची योग्यता को मेरी आँखों के आगे क्यों उपस्थित किया? इयर से लौटने पर स्वयं आप ही ने मुझ से कहा था : 'यह लडका सोरेल ही एकमात्र मनोरंजक व्यक्ति मुझे लगता है।' इस पत्र से आपको जो कष्ट होगा उससे वह बेचारा मेरे बराबर ही बल्कि सम्भवतः मुझ से अधिक ही दुखी है। पिता के रूप में आपको नाराजी मैं नहीं रोक सकती; पर एक बन्धु के नाते तो आप मुझ पर प्यार कीजियेगा।

जुलिये सदा मेरा सम्मान करता था। यदि कभी-कभी वह मुझ से कुछ बोलता था तो वह केवल आपके प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता के कारण। क्योंकि अपने चरित्र के स्वाभाविक आत्माभिमान के कारण अपने से ऊँची स्थिति वाले किसी व्यक्ति को काम के सिवाय वह कभी कोई उत्तर नहीं देता। सामाजिक स्थिति की भिन्नता की उसे तीखी और जन्मजात समझ है। अपने सर्वश्रेष्ठ बन्धु के आगे यह बात स्वीकार करते हुए मुझे लज्जा होती है, और यह बात मैं कभी किमी और से न कह सकूँगी कि मैंने ही एक दिन बगीचे में कसकर उसकी बाँह पकड़ ली।

अब से चौबीस घण्टे के भीतर आपको उसकी उपस्थिति से अप्रसन्न

होने का कोई कारण न रहेगा। मेरा दोष अक्षम्य है। यदि आप चाहें तो जुलिये की आपके प्रति गहन श्रद्धा और आपको अप्रसन्न करने के प्रति उसके दुःख का आश्वासन मैं स्वयं आपके पास पहुँचा दूँगी। उसे फिर अपनी आँखों से देखना आपके लिए आवश्यक नहीं, मैं ही जहाँ वह चाहेगा उसके पास चली जाऊँगी। यह उसका अधिकार है और मेरा कर्तव्य, वह मेरे बच्चे का पिता है। यदि आप अपने स्नेहवश हमें छ. हजार फ्रैंक भी जीविका के लिए देने की कृपा करें तो मैं उन्हें कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करूँगी। यदि नहीं तो जुलिये बजासो में लैटिन भाषा और साहित्य के शिक्षक का काम लेना चाहता है। आज वह चाहे जितने निम्न स्थान से शुरू करें, मुझे विश्वास है कि वह उन्नति करेगा। उसके साथ मुझे अज्ञात रहने का भय नहीं है। यदि क्रान्ति हुई तो मुझे विश्वास है कि उस समय वह महत्वपूर्ण कार्य पूरा करेगा। क्या आप यह बात मुझ से विवाहाकांक्षियों में से किसी और के लिए कह सकते हैं? उनके पास बड़ी-बड़ी जायदादे हैं। पर इसमें मुझे आकृष्ट होने का तनिक सा भी कारण नहीं दीखता। मेरे जुलिये को यदि दस लाख फ्रैंक और मेरे पिता का संरक्षण प्राप्त हो तो वह वर्तमान व्यवस्था में भी बड़ा ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकता है।”

मातिल्द जानती थी कि मार्कि एकदम पहली बार में जो कुछ सूझ जाय वही कर बैठते हैं। इसीलिए उसने आठ पृष्ठों का लम्बा पत्र लिखा था।

जिस समय म० द ला मोल इस पत्र को पढ़ रहे थे उस समय जुलिये सोच रहा था कि मैं क्या करूँ? एक तो मेरा कर्तव्य क्या है और दूसरा मेरा हित किसमें है? मैं उनका बहुत ही अधिक ऋणी हूँ। उनकी कृपा के बिना मैं कहीं छोटा-मोटा तिकड़मी घूर्त बना रहता और इतना घूर्त भी न हो पाता कि बाकी लोग मुझ से घृणा न करें और मेरे पीछे न पड़े रहें। उन्होंने मुझे दुनियादारी सिखाई है। अब मेरे तिकड़म के काम एक तो कम होंगे और दूसरे कम घूर्ततापूर्ण होंगे। यदि

वह मुझे दस लाख की संपत्ति दे देते तो वह भी इस दान से कम होती।
उन्हीं की कृपा से मुझे यह क्रास और कूटनीति विभाग में कार्य करने
का अवसर मिला जिसके कारण मैं अपने बराबर वालों से ऊपर उठ
सका।

यदि वे अपनी कलम से मेरे आगे के व्यवहार की बात लिखने लगे
तो क्या लिखेंगे ?...

म० द ला मोन के बूढ़े नौकर के आने से जुलिये के विचारों में
बाधा पड़ी।

“मार्कि ने आपको तुरन्त आने का आदेश दिया है, आप चाहे जैसे
कपड़े पहने हों।” जुलिये के साथ-साथ चलते-चलते उसने बहुत ही धीमे
से आगे कहा, “सरकार इस समय क्रोध से पागल हैं, जरा होशियार
रहियेगा।”

अनिश्चित मस्तिष्क का नरक

मार्कि भयकर क्रोध की अवस्था में थे। शायद अपने जीवन में पहली बार ये सामान्त महोदय असम्य होने का अपराध कर रहे थे, उन्होंने जो भी गाली मुँह पर आयी उसकी जुलियें पर बौछार कर दी। हमारा नायक चकित था और भीतर ही भीतर सुलग रहा था, पर अन्त तक उसका कृतज्ञता का भाव अविचलित रहा। वह सोचने लगा कि यह व्यक्ति कितनी सारी सुन्दर-सुन्दर योजनाएँ, हृदय के भीतर सचित अभिलाषाएँ पल भर में धूल में मिलने देख रहा है ? पर उन्हें उत्तर देना मेरा कर्तव्य है; मौन रहने से उनका क्रोध और भी बढ़ेगा। तार्तुफ के पाटें से उसे एक उत्तर सूझ गया।

“मैं कोई देवता नहीं हूँ - मैंने आपकी भली भाँति सेवा की है। और आपने उदारतापूर्वक मुझे उसके बदले में धन दिया है—मैं सचमुच कृतज्ञता अनुभव करता हूँ पर मेरी उम्र केवल बाईस वर्ष की है। इस घर में कोई मेरे मन को नहीं समझता, केवल आपको और उस प्रिय व्यक्ति को छोड़ कर।”

“अभागे शैतान !” मार्कि ने चीखकर कहा। “प्रिय ! प्रिय ! जिस दिन वह तुम्हें प्रिय लगी थी उसी दिन तुम्हें यहाँ से कूच कर देना चाहिये था।”

“मैंने कोशिश की थी; उसी समय मैंने आपसे कहा था कि मुझे लागदोक जाने दीजिये।”

सुख और स्याह

मार्कि क्रोध में इधर-उधर टहलते-टहलते थक कर और दुख से अभिभूत होकर एक आरामकुर्सी में थप से बैठ गये। जुलिये ने उन्हें अपने आप ही बड़बड़ाते सुना : “आदमी सचमुच में बदमाश नहीं है।”

“नहीं, आपके लिए तनिक भी नहीं हूँ,” जुलिये ने उनके पैरों पर गिरते हुए कहा। पर फिर उसे अपनी इस प्रेरणा पर बड़ी लज्जा हुई और वह तुरन्त ही उठ खड़ा हुआ।

मार्कि सचमुच आपे से बाहर थे। यह देखते ही वह फिर एक बार जुलिये के ऊपर ऐसी-ऐसी अपमानजनक गालियों की वर्षा करने लगे जो किसी गाढावान के मुख से अधिक शोभा देती है। इन गालियों की नवीनता से शायद उनका ध्यान बँट रहा था।

क्या ! मेरी बेटी मादाम सोरेल कहलायेगी ! क्या ! मेरी बेटी डचेज न बनेगी ! जब भी ये दो विचार एक-दूसरे से इतने भिन्न रूप में उनके सामने आते तो वह व्यथित हो उठते और उनका मन अपने काबू में न रहता। जुलिये को भय हुआ कि वह कही मारपीट न कर बैठे।

धीरे-धीरे जैसे-जैसे मार्कि अपने इस दुर्भाग्य से अभ्यस्त हो चले वैसे ही वैसे जुलिये के ऊपर उनकी गालियों की वर्षा अधिक सघन होती गयी।

“आपको चले जाना चाहिये था, महाशय,” उन्होंने कहा। “आपका यही कर्तव्य था आपसे नीच कोई न होगा...”

जुलिये मेज के पास जाकर लिखने लगा :

“बहुत दिनों से मेरी जिन्दगी दुर्वह हो रही है। आज मैं उसका अन्त कर रहा हूँ। मैं मार्कि महोदय से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी असीम कृतज्ञता के साथ-साथ उनके मकान में मेरी मृत्यु से होने वाली परेशानी के लिए मेरी क्षमा-याचना स्वीकार करे।”

“श्रीमान इस कागज़ को पढ़ने की कृपा करें मुझे मार डालिए,” जुलिये ने कहा, “अथवा अपने निजी नौकर से मुझे मरवा डालिए। इस समय सबरे का एक बजा है। मैं बगीचे में दूसरे-छोर पर दीवार के किनारे टहलता रहूँगा।”

“जहन्नुम मे चले जाओ ।” उमे कमरे से जाते देखकर मार्कि ने चीख कर कहा ।

मैं समझता हूँ । अपने नौकर द्वारा मेरी हत्या कराने मे उन्हें कोई खेद न होगा । ठीक है तो मार डाले वह मुझे, मैं उन्हें इतना सन्तोष देने को तैयार हूँ * पर भगवान, मुझे जीवन से प्रेम है । अपने बेटे के प्रति भी तो मेरा कर्तव्य है ।

यह विचार इस समय पहली बार उसकी कल्पना मे इतने सुस्पष्ट रूप मे प्रगट हुआ । पहले दो-तीन मिनट तक बाग मे घूमते-घूमते वह केवल अपने सकट की ही बात सोच रहा था, पर अब इस विचार ने उसके मन को पूरी तरह घेर लिया ।

इस सर्वथा नये लगाव ने उसे दूरदर्शी व्यक्ति बना दिया । वह सोचने लगा कि इस अग्निशर्मा व्यक्ति से निपटने के लिए मुझे सलाह की आवश्यकता है । उन्हें अच्छा-बुरा कुछ नहीं सूझता, वह कुछ भी कर सकते हैं । फूके बहुत दूर है, इसके अतिरिक्त वह मार्कि जैसे व्यक्ति के मन की भावनाओं को समझ भी न सकेगा ।

काउण्ट आल्तामिरा * पर उनसे क्या मैं सदा इस विषय मे चुप रहने की आशा कर सकता हूँ ? मेरी सलाह की माँग कोई निश्चित कार्य न होना चाहिए, नहीं तो परिस्थिति और भी जटिल हो उठेगी । हाय ! कठोर फादर पिरार के अतिरिक्त और कोई नहीं सूझता * उनका मन जानसेनवाद के कारण सकुचित है । कोई जैस्विटपन्थी धूर्त अधिक अनुभवी और मेरे लिए अधिक उपयुक्त हो सकता है * * * इसके अतिरिक्त फादर पिरार तो इस अपराध का जिम्मे करते ही मुझे मार बैठें तो भी ताज्जुब नहीं ।

इस समय भी तार्तुफ की चतुराई ने जुलिये की सहायता की । वह कह उठा, अच्छा, ठीक है । मैं जा कर उनके आगे सब स्वीकार कर लूँगा । यह अन्तिम निर्णय उसे बगीचे मे पूरे दो घण्टे तक टहलते रहने के बाद सूझा । किसी गोली का अचानक ही निशाना बनने का अब उसे

खयाल ही न था। नींद से वह गिरा पड़ रहा था।

अगले दिन बहुत सबेरे जुलिये पेरिस से काफी दूर उस कठोर जानसेनपथी का द्वार खटखटा रहा था। यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी बातें सुनकर फादर पिरार बहुत अधिक नहीं चौंके।

“शायद इसमें थोड़ा-सा दोष मेरा भी है,” फादर पिरार ने क्रोध से अधिक बेचैनी के साथ कहा। “मुझे स्वयं ही इस प्रेम-काण्ड का सन्देह हुआ था। अभागें लड़के, तुम्हारे प्रति स्नेह के कारण मैं यह बात उस लड़की के पिता से न कह सका।”

“अब वह क्या करेंगे?” जुलिये ने बड़ी व्यग्रता से पूछा।

(उस क्षण उसे आबे के प्रति बड़ा स्नेह अनुभव हुआ और उनसे किसी प्रकार का झगडा उसे बहुत ही कष्टदायक लगता।)

“मुझे तीन रास्ते नज़र आते हैं,” जुलिये ने कहा। “एक तो यह कि म० द ला मोल मेरी हत्या करवा सकते हैं।” और उसने आबे को उस पत्र की बात भी बता दी जिसमें अपनी आत्महत्या की बात लिखकर वह मार्कि के पास छोड़ आया था। “दूसरे, यह भी सम्भव है कि काउण्ट नौबेरे मुझे द्वन्द्व-युद्ध के लिए चुनौती दे कर उसमें मुझे गोली से मार डालें।”

“पर क्या तुम वह चुनौती स्वीकार करोगे?” आबे ने क्रोध में खड़े होकर कहा।

“आप मेरी पूरी बात तो सुन लीजिये। मैं अपने उपकार-कर्ता के बेटे पर कभी गोली न चलाऊंगा। तीसरे, वह मुझे यहाँ से दूर भेज सकते हैं। यदि वह मुझ से कहें कि एडिनबरा अथवा न्यूयार्क चले जाओ तो मैं तुरन्त आज्ञा का पालन करूंगा। तब वे लोग माद० द ला मोल की हालत को छिपा सकते हैं; पर मैं उन्हें किसी भी हालत में अपने बच्चे की हत्या न करने दूँगा।”

“इस बात में तो कोई सन्देह ही नहीं कि उस व्यक्ति का पहला विचार यही होगा।”

पेरिस में मातिल्द की हालत बड़ी शोचनीय थी। उसने लगभग सात बजे अपने पिता से भेट की थी। उन्होंने उसे जुलिये का पत्र दिखा दिया था और वह भय से कांप रही थी कि कहीं जुलिये अपने जीवन का अन्त करना ही महान् कार्य न समझ बैठे और वह भी मेरी अनुमति के बिना। वह क्रोध-मिश्रित दुःख में सोचने लगी।

“यदि वह जीवित न रहा तो मैं भी मर जाऊँगी,” उसने अपने पिता से कहा। “और उनकी मृत्यु का कारण आप ही होंगे” सम्भवतः आपको इससे प्रसन्नता हो... पर मैं उसकी दिवंगत आत्मा की सौगंध खाकर कहती हूँ कि मैं तुरन्त शोकसूचक वस्त्र धारण कर लूँगी और उसकी विधवा पत्नी होने की खुलेआम घोषणा कर दूँगी। मैं मादाम सोरेल के नाम से अन्त्येष्टि-पत्र भी भेज दूँगी, आप भरोसा रखिये। आप न तो मुझे दुर्बल पायेगे। “और न कायर।”

प्रेम ने उसे पागल कर दिया था। उधर म० द ला मोल भी उसकी बातें सुनकर हक्का-बक्का थे।

अब वह सारी परिस्थिति को अधिक बुद्धिसंगत दृष्टि से देखने लगे। दोपहर को भोजन के समय मातिल्द नहीं आयी। मार्कि को लगा जैसे उनके मन से बड़ा भारी बोझ उतर गया, और इस बात से वह बहुत ही प्रसन्न हुए कि उसने अपनी माँ से कुछ भी न कहा।

कोई दोपहर के लगभग जुलिये वापिस लौटा; सहन में उसके घोड़े की टाँपें बजी। वह घोड़े से उतरा तो मातिल्द ने उसे बुला भेजा और लगभग अपनी नौकरानी के सामने ही उसको बाहो में बाँध लिया। इस भाव-प्रदर्शन से जुलिये बहुत प्रसन्न न हुआ। वह फादर पिरार से बहुत देर तक मन्त्रणा करके बहुत ही कूटनीतिपूर्ण मन स्थिति लेकर लौटा था। विभिन्न सम्भावनाओं पर विचार करते-करते उसकी कल्पनाशक्ति कुछ घुँघली पड़ गई थी। मातिल्द ने आँखों में आँसू भर कर सूचित किया कि उसने जुलिये का आत्महत्या की घोषणा का पत्र पढ़ लिया है।

“मेरे पिता का मन कहीं फिर न बदल जाय। यदि तुम मुझे प्रसन्न

करना चाहते हो तो तुरन्त विलेक्वि के लिए रवाना हो जाओ। चलो, घोड़े पर सवार होकर इन लोगों के मेज से उठने के पहले ही यहाँ से चल दो।”

जुलिये की भावहीन आश्चर्य भरी मुद्रा वैसी ही रही तो मातिल्द की आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। वह उसे बाहु-बधन में कसकर बांधते हुए उत्तेजित स्वर में कहने लगी, “अब इस मामले को मेरे हाथ में छोड़ दो। तुम भली भाँति जानते हो कि मैं अपनी इच्छा से तुम से अलग नहीं होना चाहती हूँ। तुम मेरी नौकरानी के नाम से भीतर लिफाफे में मोहरबन्द पत्र रखकर भेजना और पता किसी अपरिचित लिखावट में लिखना। जहाँ तक मेरा सवाल है मैं तुम्हें पोथियाँ लिखकर भेजूँगी। अच्छा बिदा! अब तुरन्त चले जाओ।”

उसके अन्तिम शब्दों से जुलिये आहत हो उठा, पर उसने आशों का पालन किया। वह सोचने लगा कि उत्तम से उत्तम क्षण में भी इन लोगों को मुझे आहत करने का कोई न कोई उपाय मिल ही जाता है।

मातिल्द अपने पिता की दूरदर्शितापूर्ण योजनाओं का दृढ़तापूर्वक विरोध करती रही। उसने एक के अतिरिक्त अन्य किसी आधार पर बातचीत करने से एकदम इन्कार कर दिया। आधार केवल यही हो सकता था कि वह मादाम सोरेल बने और या तो अपने पिता के साथ पेरिस में रहे अथवा अपने पति के साथ स्विट्ज़रलैंड में गरीबी में दिन बिताये। चुपके-चुपके प्रसव के प्रस्ताव को उसने बिल्कुल ठुकरा दिया...” इसमें तो बदनामी और अपमान दोनों की सम्भावनाएँ हैं। विवाह के दो महीने बाद मैं अपने पति के साथ विदेश-यात्रा के लिए चली जाऊँगी और फिर यह प्रगट करना सहज है कि हमारा बच्चा उचित समय पर ही पैदा हुआ है।’

शुरू में इस बात से मार्कि बेहद भडक उठे, किन्तु मातिल्द के निश्चय से डगमगाकर वह अन्त में अनिश्चित-से हो उठे।

एक अपेक्षाकृत अधिक सयत मन स्थिति में उन्होंने अपनी बेटी से

कहा “देखो, यह एक हशेर सार्टिफिकेट है जिससे दम हजार लिब्र सालाना की आमदनी होती है। इसे तुरन्त अपने जुलिये को भेज दो और कुछ ऐसा इन्तजाम करने को कहो कि फिर मेरे लिए इसे वापिस लेना सम्भव न रहे।”

जुलिये भली भाँति जानता था कि मानिल्द को आदेश देने का कितना शौक है। उसकी बात मानकर उसने कोई सवा सौ मील की अनावश्यक यात्रा कर डाली और विलेक्वि पहुँचकर किमानो के हिसाब-किताब की देखभाल करने लगा। मार्कि के इस उपहार के कारण उसे फिर पेरिस लौटना पडा। अब उसने जाकर फादर पिरार के यहाँ शरण ली जो उसकी अनुपस्थिति में मातिल्द के सबसे उपयोगी महायक बन गये थे। जब भी मार्कि उनमें इस विषय में कुछ भी पूछते तो वे यही सिद्ध करते कि सार्वजनिक विवाह के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय भगवान् की दृष्टि में पाप होगा।

“और भाग्यवश,” आबे ने आगे कहा, “इस विषय में सामाजिक बुद्धिमता धर्म के अनुकूल ही है। माद० द ला मोल का जैसा उग्र स्वभाव है उसे देखते हुए क्या आपको आशा है कि अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी बात को वह छिपा कर रख सकेगी? यदि आप भी धीरे-धीरे सार्वजनिक विवाह का रास्ता न अपनायेंगे तो समाज बहुत दिनों तक इस विचित्र सम्बन्ध की चर्चा करता रहेगा। प्रत्येक बात साफ-साफ तनिक भी वास्तविक अथवा ऊपरी रहस्यमयता के बिना ही कही जानी चाहिए।”

“यह तो ठीक है,” मार्कि ने गम्भीरतापूर्वक विचार करने हुए कहा। “इस उपाय द्वारा विवाह के बाद तीन दिन के बाद उसकी चर्चा केवल निठल्ले लोग ही भले ही करें। हमें जैकोबिनपथियों के विरुद्ध किसी महत्वपूर्ण कानून की घोषणा का लाभ उठा कर उसके कोलाहल में चुपचाप यह काम कर डालना पड़ेगा।”

म० द ला मोल के दो-तीन मित्र भी फादर पिरार की राय से

सहमत थे। उनकी दृष्टि में मातिल्द का दृढ चरित्र ही सबसे बड़ी कठिनाई थी। किन्तु इन सब उत्तम युक्तियों के बावजूद मार्कि अपनी बेटी को डचेज बनाने की आशा छोड़ देने के अभ्यस्त न हो पाते थे।

उनकी स्मृति और कल्पना तरह-तरह की ऐसी तिकड़मों और चालबाजियों से भरी रहती थी जो उनके जवानी के दिनों में आसानी से सम्भव हुआ करती थी। आवश्यकता के आगे सिर झुकाना, कानून से डर कर चलना उन्हें अपनी स्थिति के व्यक्ति के लिए वाहियात भी लगता था और असम्मानपूर्ण भी। पिछले दस वर्षों से अपनी बेटी के भविष्य को लेकर जिन सुनहले सपनों का जाल वह मन ही मन बुनते आये थे उनका उन्हें अब महँगा मूल्य चुकाना पड़ रहा था। इसकी किसे कल्पना हो सकती थी? वह मन ही मन कहते। ऐसी अभिमानिनी लड़की, इतनी प्रखर बुद्धिमती और अपने कुल के विषय में मुझ से भी अधिक गर्वीली। ऐसी कि जिसके साथ विवाह करने की प्रार्थना, उसके वयस्क होने के पहले ही, फ्रांस के सभी विख्यात लोग कर चुके थे। दूरदर्शिता के सब विचार छोड़ने पड़ेगे। यह जमाना ही हर चीज को नष्ट कर देने का है। हम लोग बरबादी की ओर बढ़ रहे हैं।

बुद्धिमान व्याक्ति

मन के ऊपर दस साल के सुखद दिवा-स्वप्नो का साम्राज्य किसी युक्ति से नष्ट नहीं होता । मार्कि को क्रुद्ध होना तो अनुचित लगता पर क्षमा करना भी उनके लिए कठिन हो रहा था । कभी-कभी वह सोचने लगते कि यदि जुलिये किसी तरह मयोगवश मर जाय । इस भाँति उनकी मुरभाई हुई कल्पना उन बे-सिर-पैर की बातों में डूबी रह कर सात्वना पाती रहती थी जिसके कारण फादर पिरार की समझदारी की सलाह का प्रभाव नगण्य हो जाता था । एक महीना इसी तरह बीत गया और परिस्थिति में कोई अन्तर नहीं आया ।

राजनीतिक विषयो की भाँति ही इस पारिवारिक मामले में भी मार्कि को अचानक नये विचार सूझते जिनको लेकर तीन दिन तक वह बड़े उत्साहित रहते । इस बीच उन्हें कोई ठोस युक्तियो पर आधारित योजना अच्छी न लगती, बल्कि ऐसी ही युक्ति उन्हें पसन्द आनी जो उनकी तत्कालीन योजना का समर्थन करती हो । तीन दिन तक वह किसी कवि के से प्रज्वलित उत्साह से परिश्रम करके वातावरण को अपने अनुकूल बनाने का यत्न करते रहते, चौथे दिन के बाद फिर वह उसका नाम तक न लेते थे ।

जुलिये पहले तो मार्कि के इस टालने वाले ढग से बड़ा परेशान हुआ, किन्तु साथ ही थोड़े समय के बाद वह अनुभव करने लगा कि इस मामले में म० द ला मोल के आगे कोई निश्चित योजना नहीं है ।

मादाम द ला मोल और बाकी घर वाले यह विश्वास करते थे कि जुलिये जमींदारी के इन्तजाम के लिए प्रान्तो का दौरा कर रहा है, वास्तव में वह फादर पिरार के घर में छिपा हुआ था और लगभग प्रत्येक दिन मातिल्द से मिला करता था। मातिल्द प्रायः प्रत्येक दिन सबेरे एक घण्टा पिता के साथ बिताती पर कभी-कभी हफ्तों तक वे केवल उस एक विषय पर कोई चर्चा न करते जिसने उनके समूचे मन को आच्छादित कर रखा था।

एक दिन मार्कि ने उससे कहा, “मैं यह नहीं जानना चाहता कि वह कहाँ है, पर यह पत्र तुम उसके पास भिजवा देना।”

मातिल्द ने वह पत्र ले कर पढ़ा

“मेरी लागदोक् की जमींदारी से बीस हजार छ सौ फ्रैंक की आमदनी है। इसमें मैं दस हजार छ सौ अपनी बेटी को और दस हजार म० जुलिये सोरेल को देता हूँ। यह तो कहने की आवश्यकता ही नहीं कि स्वयं जायदाद भी मैं दे रहा हूँ। इसके दो अलग-अलग दस्तावेज तैयार करा कर उन्हें कल मेरे पास ले आना। उसके बाद हमारे बीच कोई सम्पर्क न रहेगा। ओफ़। महाशय, मुझे इसकी कभी आशा न थी।

मार्कि द ला मोल”

“बहुत-बहुत धन्यवाद,” मातिल्द ने प्रसन्नता से कहा। “हम लोग जाकर आगे और मारमाद के बीच सातो दैगीलो में रहने लगेंगे। सुना है कि वह इलाका इटली जैसा ही सुन्दर है।”

इस सूचना से जुलिये को बड़ा आश्चर्य हुआ। अब वह वैसा कठोर और रूखा व्यक्ति न रहा था जैसा हम उसे देखते आये हैं। उसके सारे विचार अपने बच्चे के भविष्य की चिन्ता में सिमट गये थे। इस अप्रत्याशित सम्पत्ति ने, जो उसके जैसे गरीब व्यक्ति के लिए बहुत भारी थी, उसे महत्वाकांक्षी बना दिया। वह छत्तीस हजार फ्रैंक की आमदनी से अपनी और अपनी पत्नी की स्थिति की कल्पना करने लगा। मातिल्द की तो सारी भावनाएँ अपने पति की पूजा में केन्द्रित हो गयी थी—अपने स्वाभिमान

के कारण जुलिये को वह सदा इसी नाम से स्मरण करती थी। उसकी एकमात्र बड़ी महत्वाकांक्षा यही थी कि उसका वह विवाह स्वीकृत हो जाय। वह अपना सारा समय अपनी उस दूरदर्शिता को अतिरिक्त करके देखने में ही बिताती थी जो उसने एक श्रेष्ठ व्यक्ति के साथ अपना भाग्य जोड़ देने में दिखाई थी। उसके मन में सबसे आगे व्यक्तिगत योग्यता ही थी।

लगभग निरन्तर वियोग, अनगिनती कामकाज की बातें, प्रेमालाप के लिए दोनों के पास समय का अभाव—इन सबने मिलकर जुलिये की उस दूरदर्शिता की नीति के सुप्रभाव को पूरा कर दिया जो उसने कुछ दिन पहले अपनायी थी। अन्त में मातिल्द बेहद अधीर हो उठी कि जिस व्यक्ति से वह सचमुच प्रेम करने लगी थी उससे मिलने का इतना कम अवसर मिलता है।

एक बार चिढ़कर उसने अपने पिता को एक पत्र लिखा :

“मार्कि द ला मोल की बेटी को समाज में जो सुविधाएँ मिलती हैं, उनकी बजाय मैंने जुलिये को श्रेष्ठतर समझा। यह अब स्वयं ही प्रमाणित है। सामाजिक प्रतिष्ठा और तुच्छ अहंकार के ये सुख मेरे लिए कोई अर्थ नहीं रखते। शीघ्र ही मुझे अपने पति से अलग रहते छः सप्ताह हो जायेंगे। अगले बृहस्पतिवार के पहले मैं अपने पिता का घर छोड़कर चली जाऊँगी। आपने कृपा करके हमें धनी बना दिया है। अद्वेय फादर पिरार के अतिरिक्त मेरा रहस्य और कोई नहीं जानता। मैं उन्हीं के पास जाऊँगी और वही हमारा विवाह करा देंगे। उसके एक घण्टे के बाद ही हम लोग लागदोक् के लिए चल पड़ेंगे और आपकी आज्ञा के बिना कभी पेरिस न आयेगे। मुझे दुख केवल इसी बात का है कि इस सबसे मेरे और आपके नाम को लेकर लोगो में तरह-तरह की चर्चाएँ फैलेगी। कहीं मूर्ख लोगो के तीखे वचनो से भैया नौबेर जुलिये से कोई झगडा तो न कर बैठेंगे? मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि ऐसी स्थिति में मैं जुलिये का किसी तरह रोक न सकूँगी। उसके हृदय के

भीतर एक विद्रोही छिपा हुआ है। प्यारे पिता, मैं आपसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करती हूँ कि अगले बृहस्पतिवार को फादर पिरार के गिरजाघर में हमारे विवाह में सम्मिलित होने के लिए आप भी अवश्य आये। उससे हर तरह की द्वेषपूर्ण कहानी की धार नष्ट हो जायेगी और आपकी एकमात्र पुत्री तथा उसके पति का जीवन सुरक्षित हो जायेगा, इत्यादि-इत्यादि।'

इस पत्र से मार्कि को अजीब तरह के धर्मसंकट का अनुभव हुआ। अब तो उन्हें कोई न कोई निश्चय करना ही पड़ेगा। अपनी सुपरिचित विचार पद्धति से, मोटी अक्ल के मित्रों की राय से, अब कोई काम न चलेगा।

इन विचित्र परिस्थितियों में उनके चरित्र की सुनिश्चित विशेषताओं ने, जो उनके यौवन की घटनाओं से निर्धारित हुई थी, उनके मन को पूरी तरह वश में कर लिया। देशान्तरित व्यक्ति के जीवन के दुःखद अनुभवों ने उन्हें कल्पना-प्रधान व्यक्ति बना दिया था। दो वर्ष तक बहुत धन-सम्पत्ति और दरबार में उच्चतम सम्मान का उपभोग करने के बाद उन्हें १७६३ में देशान्तरण के भयकर दुखों का सामना करना पड़ा था। इस कठोर पाठशाला ने बाईस वर्ष के युवक हृदय में बड़े-बड़े परिवर्तन कर दिये थे। वास्तव में वह अपनी वर्तमान संपत्ति के बीच प्रवासी की भाँति रहते थे, उसके नियन्त्रण में बसने वाले व्यक्ति नहीं। किन्तु जिस कल्पना-शक्ति ने उनके हृदय की स्वर्ण के घातक विष से रक्षा की थी उसी ने उन्हें अपनी बेटी को किसी बड़ सम्मान से विभूषित देखने की प्रबल इच्छा के वशीभूत भी किया था।

पिछले छ सप्ताहों में मार्कि की बीच-बीच में जुलिये को धनी बना देने की इच्छा होती। गरीबी उन्हें जघन्य वस्तु जान पड़ती, स्वयं अपने लिये, म० द ला मोल के लिए, असम्मानजनक और अपनी बेटी के पति के लिए असम्भव। वह वैसे भी अपना धन खुले दिल से लुटाते रहते थे। पर दूसरे ही दिन उनकी कल्पना एक अन्य दिशा में दौड़ पड़ती

और उन्हें लगता कि जुलिये धन की इस मूक भाषा को समझ कर इस बात के लिए तैयार हो जायेगा कि वह अपना नाम बदल कर कहीं दूर अमरीका में जा बसे और मातिल्द को यह लिख दे कि उसके लिए वह मर गया। म० द ला मोल इस पत्र को मान कर ही चलते और फिर अपनी बेटी के चरित्र पर उसके प्रभाव की कल्पना करने लगते...।

जिस दिन मातिल्द के वास्तविक पत्र से उनके ये सब स्वप्न टूटे उस दिन बहुत देर तक जुलिये को मार डालने की सम्भावना पर विचार करने के बाद अब वह उसके लिए किसी बड़े भारी महत्वपूर्ण कार्य के सपनों में व्यस्त थे। वह सोच रहे थे कि वह उन्हीं की किसी एक ज़मींदारी का नाम धारण कर लेगा, और क्यों न वह स्वयं अपना सामन्ती वंश-परम्परागत नाम उसको प्रदान कर दे? स्वयं उनके ससुरा दुक द शोन अपने इकलौते बेटे के स्पेन में मारे जाने से कई बार उनसे कह चुके थे कि वह अपना पद नौबेरे को दे देना चाहते हैं।...

मार्कि सोचते कि इस बात से तो इन्कार नहीं किया जा सकता कि जुलिये में काम-काज करने के लिए बड़ी अद्भुत क्षमता है, साहसिक हृदय है और शायद विलक्षणता भी। पर उसके चरित्र में कहीं कोई डरावनी चीज़ भी छिपी हुई है। उसके बारे में यह प्रभाव सभी लोगों पर पड़ता है, इसलिए इसमें कुछ तो सार होना ही चाहिए। (इस सत्य को पकड़ने में जितनी कठिनाई होती मार्कि का कल्पनाशील मन उससे उतना ही भयभीत होने लगता।) मेरी बेटी ने ही उस दिन इस बात को बड़े उत्तम ढंग से अपने उस पत्र में प्रकट किया था; “जुलिये किसी ड्राइंगरूम अथवा किसी मंडली-विशेष का व्यक्ति नहीं है।” उसने मेरे कोई अन्य सहारा बनाने की कोशिश नहीं की है, और यदि मैं उसे निकाल दूँ तो उसके पास कोई साधन नहीं। किन्तु क्या इसका यह अर्थ है कि समाज की वर्तमान अवस्था से वह अनभिज्ञ है? ...दो-तीन बार मैं उससे कह चुका हूँ. “ड्राइंगरूमों को छोड़कर अन्य किसी समाज की

सदस्यता का प्रयत्न करने में कोई वास्तविक लाभ नहीं...

नहीं, उसकी विशेष प्रतिभा छोटी बातों में उलझने वाले धूर्त वकीलों जैसी नहीं है जो कभी एक भी मिनट अथवा अवसर नहीं बरबाद करते... दूसरी ओर मैं देखता हूँ कि उसका मन तरह-तरह के अनुदार विचारों से भरा हुआ है। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता। क्या वह इन विचारों को अपनी भावनाओं की बाढ़ के विरुद्ध बाँध लगाने के लिए दोहराता रहता है ?

जो भी हो, एक चीज तो दिन की तरह साफ है, और वह यह कि उसे घृणा और तिरस्कार सहन नहीं होता। इस बात से उसके ऊपर मेरा थोड़ा-बहुत काबू अवश्य होता है।

यह सही है कि वह कुलीनता का भक्त नहीं; उसके मन में हमारे लिए कोई स्वाभाविक आदर नहीं है—यह एक दोष है—किन्तु शिक्षा-मठ में रहे हुए व्यक्ति का हृदय तो धन-दौलत और सुख-सुविधा के भाव से ही अधीर होना चाहिये, वह स्वयं बहुत ही अलग तरह का व्यक्ति है और तिरस्कार किसी कीमत पर सहन नहीं कर सकता।

अपनी बेटी के पत्र से लाचार होकर म० द ला मोल ने तुरन्त निश्चय की आवश्यकता को अनुभव किया। संक्षेप में सारा सवाल यह है : क्या जुलिये की घृष्टता इतनी बढ़ चुकी है कि वह मेरी बेटी से यह समझ कर प्रेम करता है कि वह मुझे सबसे अधिक प्रिय है और मेरी एक लाख क्राउन की आमदनी है ?

मातिल्द तो ठीक इसके विपरीत बात ही कहती है... 'नहीं जुलिये महाशय, इस बारे में मैं किसी भ्रम में नहीं रहना चाहता।

क्या उसका प्रेम सच्चा और स्वतः स्फूर्त है अथवा अपने आपको उच्च स्थान पर पहुँचाने की इच्छा मात्र है ? मातिल्द की बुद्धि बड़ी प्रखर है। वह शुरू से ही समझती थी कि मुझे ऐसा कोई सन्देह हुआ तो फिर खैर नहीं। इसीलिए उसने मुझसे यह बात कही कि पहले प्रेम उसी ने करना शुरू किया ...।

जरा कल्पना कीजिये कि ऐसे उच्च चरित्र की लड़की इतना होश-हवास खो बैठी कि शारीरिक सम्बन्ध पर उतर आई । एक दिन बगीचे में उसकी बाँह का सहारा लिया ! कैसी भयंकर बात है ? मानो उसके पास अपना प्रेम प्रगट करने के इससे कम अशोभन उपाय न थे ! बहाना बनाना अपना दोष स्वीकार करने के बराबर है । मुझे मातिल्द पर भरोसा नहीं होता ..

उस दिन मार्कि के विचार सदा की अपेक्षा निर्णय की ओर अधिक उन्मुख थे । तो भी पुरानी आदत आसानी से नहीं जाती । उन्होंने अपनी बेटी को पत्र लिख कर और समय लेने का निश्चय किया । आजकल घर के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक पत्र व्यवहार ही चलता था । आमने-सामने अपनी बेटी से बातचीत करने का साहस उन्हें न होता था । उन्हें भय था कि वह अचानक ही उसकी बात मान कर सारे मामले को खत्म न कर बैठे । उन्होंने पत्र लिखा :

“कोई दूसरी मूर्खता अब न करो । मैं इस पत्र के साथ म० द ला शवालिये जुलिये सोरेल द ला वेर्ने के नाम लेफ्टीनेन्ट बनाये जाने का आज्ञा पत्र भेज रहा हूँ । तुम्हीं देखो मैं उसके लिए क्या कर रहा हूँ । मेरी विरोध न करो और न मुझमें कोई प्रश्न ही पूछो । उसे चौबीस घण्टे के भीतर ही स्त्रासबूर, पहुँचने को कहो जहाँ उसकी रेजीमेन्ट नियुक्त है । साथ में बैंक का ड्राफ्ट भी भेज रहा हूँ । मेरी आज्ञा का पालन होना चाहिए ।”

मातिल्द के प्रेम और आनन्द की कोई सीमा न थी । अपनी सफलता का पूरा लाभ उठाने की इच्छा से उसने तुरन्त उत्तर लिखा :

“म० द ला वेर्ने को यदि यह पता चलता कि आप कृपा करके उनके लिए क्या-क्या कर रहे हैं तो वह कृतज्ञता से विह्वल होकर आपके पैरों पर गिरते । पर इस सब उदारता के बीच मेरे पिता अपनी बेटी को भूले जा रहे हैं । आपकी बेटी का सम्मान संकट में है । थोड़ी-सी असावधानी से उस पर ऐसा दाग पड़ने का डर है जिसे बीस हजार क्राउन की

आमदनी भी न मिटा सकेगी। मैं यह पत्र म० द ला बेर्ने के पास तक न भेजूंगी जब तक आप मुझे इस बात का आश्वासन न दे कि अगले महीने के भीतर ही मेरा विवाह विलेक्वि मे खुले आम कर दिया जायगा। मैं आपसे भीख माँगती हूँ कि इस अवधि को बढ़ाइए मत। उसके बाद आपकी बेटी लोगो के सामने मादाम द ला बेर्ने के अतिरिक्त अन्य किसी नाम से न उपस्थित हो सकेगी। प्यारे पापा, मोरेल के नाम से मेरी रक्षा करने के लिए आपको कैसे धन्यवाद दूँ ? इत्यादि इत्यादि।”

इसका उत्तर एकदम अप्रत्याशित था।

“मेरी आज्ञा का पालन करो नहीं तो मैं सब कुछ वापिस लेना हूँ। अधीर लडकी, कुछ तो डरो। मैं अभी तक भी यह नहीं जानता कि तुम्हारा जुलिये किस तरह का आदमी है और तुम तो मुझसे भी कम जानती हो। उसे स्त्रासबूर जाने दो और उससे कहो कि होशियारी से रहे। मैं पन्द्रह दिन के भीतर ही तुम्हें अपनी इच्छा की सूचना दे दूँगा।”

इस दृढ़तापूर्ण उत्तर से मातिल्द को बड़ा विस्मय हुआ। ‘मैं जुलिये को नहीं जानता,’ पत्र के इन शब्दों को लेकर वह एक दिवा-स्वप्न में डूब गयी जो शीघ्र ही अत्यन्त मनोहर कल्पनाओं के साथ टूट गया। पर वह अपनी कल्पनाओं को सच समझती थी। मेरे जुलिये का मन झाइगरूमो की गन्दी वर्दी पहनने वाला नहीं, और मेरे पिता ठीक उसी बात के कारण उस पर अविश्वास करते हैं जो उसका साहस प्रमाणित करती है।

तो भी यदि मैं उनकी इस विचित्र इच्छा को पूरा न करूँ तो खुल्लमखुल्ला कहा-सुनी की सम्भावना है। किसी तरह की बदनामी हुई तो समाज में मेरी प्रतिष्ठा कम हो जायगी और फलस्वरूप शायद मैं जुलिये की नज़रो से भी गिर जाऊँ। बदनामी के बाद गरीबी के दस वर्ष ! केवल गुण के लिए ही पति चुनने की मूर्खता को अगाध

सम्पत्ति द्वारा ही हास्यास्पद होने से बचाया जा सकता है। यदि इस अवस्था में मैं अपने पिता से दूर रही तो वह गायद मुझे भूल जायेगे। नोबेर् शायद किसी सुन्दर चालाक लड़की से शादी कर लेगा। चौदहवाँ लुई भी अपने बुढ़ापे में डचेज द बूगो के वश में हो गया था ।

इसलिए उसने पिता की बात मानने का ही निश्चय किया, किन्तु उसने जुलिये को अपने पिता के पत्र की सारी बातें न बताईं। उसे डर था कि अपने विचित्र स्वभाव के कारण कहीं वह और मूर्खता न कर बैठे।

उस दिन शाम को जब उमने जुलिये को बताया कि वह लेफ्टिनेण्ट बनाया गया है तो उमकी खुशी का कोई ठिकाना न था। जो लोग उमकी जीवनव्यापी महत्वाकांक्षा से परिचित हैं और अपने बच्चे के प्रति उमके वर्तमान प्रबल स्नेह को जानते हैं वे उसके इस आनन्द को समझ सकते हैं। अपने नाम को इस भाँति बदलते देखकर उसके विस्मय का मीमा न रही। वह सर्वथा अवाक् था।

वह सोचने लगा कि आखिरकार मेरी कहानी अपनी परिणति पर पहुँच रही है, और इसका सारा श्रेय कुल किलाकर मुझी को है। वह मातिल्द की ओर देखते हुए मन ही मन कहने लगा कि आज मुझे इस भयंकर अहंकारिणी स्त्री का प्रेम प्राप्त है। उमका पिता उमके बिना नहीं रह सकता और न वह मेरे बिना रह सकती है।

: ३५ :

तूफान

उसका मन विचारों में डूबा हुआ था; मातिल्द की विह्वल प्रेमाभिव्यक्ति के बदले में वह केवल आधे मन से शामिल हो पाता। वह प्रायः चुप और खोया हुआ-सा रहता। मातिल्द को वह पहले कभी इतना महान और इतना प्रिय न लगा था। उसे जुलिये के स्वाभिमान से बड़ा भय लगता था कि उसके कारण कहीं सारी स्थिति बिगड़ न जाय।

वह हर रोज सबेरे फादर पिरार को घर आते देखती थी। यदि उसकी सहायता से जुलिये किसी प्रकार उसके पिता के मन की बात का पता लगा सके तो कितना अच्छा हो ! क्या यह सम्भव नहीं कि किसी क्षणिक प्रेरणा के वश होकर मार्कि ने जुलिये को भी एक पत्र लिखा हो ? ऐसे सौभाग्य के बाद जुलिये इतना कठोर क्यों रहता है ? किन्तु उससे पूछने का साहस मातिल्द को न होता था।

उसे साहस न होता था ! उसे, मातिल्द को ! उस क्षण से उसके मन में जुलिये के प्रति एक प्रकार का अस्पष्ट अकथनीय लगभग आतंक का सा भाव भर गया। पेरिस के उस आवश्यकता से अधिक भावहीन वातावरण में पले हुए व्यक्ति के लिए प्रेम की जितनी विह्वलता अनुभव करना सम्भव है, वह सारी मातिल्द अनुभव करती थी।

अगले दिन सबेरे जुलिये फादर पिरार के यहाँ पहुँचा। पास ही के डाक-स्टेशन से एक पुरानी-सी किराये की गाड़ी को खींचते हुए दो घोड़े अहाते में आकर खड़े हो गये।

“ऐसी गाडियो का आजकल चलन नहीं रहा,” कठोर आबे ने कुछ नीरस स्वर में उससे कहा। “म० द ला मोल ने तुम्हारे लिए यह बीस हजार फ्रैंक भेजे हैं, उन्हें आशा है कि तुम यह धन एक वर्ष में खर्च कर सकोगे। केवल इतना ध्यान रखना कि कहीं अपने आपको हास्यास्पद न बना बैठो।” बेचारे पुरोहित को यही लगता था कि एक नवयुवक को इतनी बड़ी रकम देना उसे पाप करने का अवसर देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

“मार्कि ने यह भी कहा है ‘म० जुलिये द ला वेर्ने को यह धन अपने पिता से प्राप्त हुआ है, जिसके बारे में अधिक विस्तार से कुछ बनाना आवश्यक नहीं। म० द ला वेर्ने शायद बेरियेर के एक बढई म० सोरेल को कुछ उपहार भेजना उचित समझे, जिन्होंने बचपन में उनकी देखभाल की थी।’—इस कार्य का भार मैं लेने को तैयार हूँ,” आबे ने आगे कहा। “मैंने आखिरकार म० द ला मोल को इस बात के लिए तैयार कर लिया है कि वह उस जैस्विटपयी म० द फ़िलेर से समझौता कर ले। उमका पराभव निश्चित रूप से हमारी शक्ति के बाहर है। इस समझौते की एक निहित शर्त यह भी होगी कि बजासों में एकछत्र राज करने वाला यह व्यक्ति तुम्हारे कुलीन घराने में जन्म होने की बात चुपचाप स्वीकार कर ले।”

जुलिये के लिए अब अपनी उत्तेजना को बश में रखना सम्भव न रहा, उसने आबे को हृदय से लगा लिया, उसे अनुभव हुआ कि अब उसे पहिचाना जा रहा है।

“तुम क्या सोच रहे हो?” आबे ने उसे दूर हटाते हुए कहा। “इस सासारिक अहंकार का क्या अर्थ है? सोरेल और उसके बेटों से मैं अपनी ओर से यह प्रस्ताव करूँगा कि जब तक मैं उनसे सन्तुष्ट हूँ तब तक उन्हें अलग-अलग पाँच सौ फ्रैंक सालाना मिलता रहेगा।”

इस बीच जुलिये स्थिर और विरक्त हो उठा था। उसने बहुत ही अस्पष्ट शब्दों में और अपने आप को किसी शर्त से बाँधे बिना आबे को

धन्यवाद दिया। क्या यह सचमुच सम्भव है कि मैं उस भयंकर नैपोलियन द्वारा पहाड़ों में निर्वासित किसी बड़े सामन्त का जारज पुत्र हूँ? प्रत्येक क्षण यह विचार उसको कम से कम असम्भव लगता। "अपने पिता के प्रति मेरी घृणा शायद इसी कारण से है। मैं कोई राक्षस नहीं हूँ!"

इस आत्मसंवाद के कुछ ही दिनों बाद सेना की सबसे प्रसिद्ध पन्द्रहवीं हज़ार रेजीमेण्ट स्त्रासबूर के परेड के मैदान में पकितबद्ध खड़ी थी। शवालिये द ला वेर्ने आल्सास के सर्वोत्तम घोड़े पर सवार थे जिसके लिए उन्हें छः हज़ार फ्रैंक खर्च करने पड़े थे। उन्होंने सीधे लेफ्टिनेण्ट की हैसियत से सेना में प्रवेश किया था। किसी अज्ञात रेजीमेण्ट के हाज़िरी रजिस्टर को छोड़कर वह कभी द्वितीय लेफ्टिनेण्ट न रहे थे।

उसकी भावहीन मुद्रा ने, उसकी कठोर और लगभग निमग्न आँखों, पीले चेहरे तथा अटल आत्म-नियन्त्रण ने शुरू से ही उसकी धाक जमा दी थी। उसके व्यवहार की शिष्टता निर्दोष तथा अकृत्रिम थी और उसने पिस्तौल तथा तलवार चलाने में अपनी कुशलता के विषय में अत्यधिक बनावट के बिना ही सबको अवगत करा दिया था। इसके फलस्वरूप थोड़े ही समय में उसका मजाक उड़ाने का विचार एकदम लोगों के मन से निकल गया। पाँच-छः दिन तक आश्चर्य में पड़े रहने के बाद रेजीमेण्ट के आधे लोग उसके पक्ष में हो गये। दूसरों का मजाक उड़ाने वाले पुराने अफसर कहने लगे, "इस युवक के पास यौवन के अतिरिक्त और सब कुछ है।"

स्त्रासबूर से जुलिये ने बेरियेर के भूतपूर्व क्योरे म० शैला को एक पत्र लिखा। वह अब बहुत ही वृद्ध हो चुके थे।

"मुझे विश्वास है कि आपको इस बात का पता चल गया होगा और आप इससे प्रसन्न हुए होंगे कि अब मेरे परिवार ने मुझे धनी बना दिया है। मैं आपके पास पाँच सौ फ्रैंक भेज रहा हूँ। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप इन्हें मेरा नाम लिये बिना ही चुपचाप ही उन दुखी लोगों में बँटवा दें जो उतने ही गरीब हैं जितना एक दिन मैं था और जिनकी निस्सन्देह आज भी आप उसी भाँति सहायता कर रहे होंगे जैसे एक दिन मेरी

करते थे ।”

जुलिये ग्रहकार का नही महत्वाकांक्षा का नशा अनुभव कर रहा था । तो भी वह अपने बाहरी रूपरंग और वेशभूषा पर काफी ध्यान रखता । उसके घोड़े, उसकी तथा उसके नौकरो की वर्दियाँ ऐसी साफ-सुथरी और चमकती हुई रहती कि उन्हें देखकर किसी बड़े भारी अंग्रेज सामन्त को भी ईर्ष्या होती । उसे लेफ्टिनेण्ट हुए दो ही दिन हुए थे, पर वह अभी से यह सोचने लगा था कि सब बड़े-बड़े सेनानायको की भाँति अधिक से अधिक तीस वर्ष की उम्र में प्रधान सेनापति बनने के लिए तेईस वर्ष की उम्र में लेफ्टिनेण्ट से कुछ अधिक बनना आवश्यक है । अपने तथा अपने बेटे के गौरवपूर्ण भविष्य के अतिरिक्त और कोई विचार उसके मन में न आता था ।

अनियन्त्रित महत्वाकांक्षा की इन भावनाओं के बीच ही अचानक द ला मोल भवन से एक नौकर एक पत्र लेकर आ पहुँचा । मातिल्द ने लिखा था :

“सत्यानाश हो गया । , जल्दी से जल्दी यहाँ आओ । कोई उपाय बाकी न छोड़ना, उचित हो तो भाग कर चले आना । यहाँ आ कर एक गाड़ी में मेरे लिए — सड़क के किनारे बगीचे के छोटे-से दरवाजे के पास प्रतीक्षा करना । मैं बाहर आकर तुम्हें सब बात सुनाऊँगी । हो सकता है कि मैं तुम्हें बगीचे में अन्दर भी ले जा सकूँ । सर्वनाश हो चुका है, भय है कि शायद सदा के लिए । पर मुझ पर भरोसा रखना, बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी तुम मुझे दृढ़ और वफादार पाओगे । मैं तुम्हें प्यार करती हूँ ।”

कुछ ही मिनटों में जुलिये ने अपने कर्नल से छुट्टी ली और घोड़े पर सवार होकर तेजी से चल पड़ा । पर अपनी भयंकर व्यग्रता के कारण मेज़ से आगे घोड़े पर यात्रा करना उसके लिए सम्भव न रहा । उसने एक घोड़ा-गाड़ी ले ली और बहुत तेजी से द ला मोल भवन उद्यान के छोटे द्वार के पास, बियत स्थान पर जा पहुँचा । दरवाजा खुला और

पल भर में ही लोगो के कहने-सुनने की बात भूल कर मातिल्द आकर उससे लिपट गयी। सौभाग्यवश उस समय सबेरे के पाँच बजे थे और सड़क बिल्कुल निर्जन थी।

“सर्वनाश हो गया। मेरे आँसुओं से डर कर मेरे पिता बृहस्पतिवार की रात को चले गये। कहाँ गये कोई नहीं जानता। यह रहा उनका पत्र, लो पढ़ लो।” और वह भी आकर जुलिये के साथ गाड़ी में बैठ गयी। पत्र में लिखा था

“धन के कारण तुम्हें फुसलाने की योजना के अतिरिक्त मैं और सब कुछ क्षमा कर सकता था। अभागी लड़की, भीषण सत्य यही है। मैं अपने सम्मान की सौगन्ध खा कर कहता हूँ कि मैं उस आदमी से विवाह करने की अनुमति कभी तुम्हें न दूँगा। यदि वह फ्रांसीसी सीमा के बाहर विदेश में, बल्कि बेहतर हो अमरीका में, रहने को तैयार हो जाय तो मैं उसे दस हजार फ्रैंक सालाना देने को तैयार हूँ। मैंने कुछ सूचना मँगवाई थी, उसके जवाब में जो पत्र आया है वह पढ़ना। इस निर्लज्ज व्यक्ति ने स्वयं मुझमें मादाम द रेनाल को पत्र लिखकर पूछने के लिए प्रेरित किया था। इस व्यक्ति के बारे में मैं तुम्हारी एक पक्ति भी पढ़ने को तैयार नहीं हूँ। मुझे तुम और पेरिस दोनों से घृणा हो गयी है। मेरा अनुरोध है कि जो कुछ निकट भविष्य में होने वाला है उसको एकदम गुप्त रखो। इस दुष्ट आदमी को खुले दिल से और स्वाधीनतापूर्वक छोड़ दोगी तो तुम्हारे पिता तुम्हें वापिस मिल जायेंगे।”

“मादाम द रेनाल का पत्र कहाँ है?” जुलिये ने भावहीन स्वर में पूछा।

“यह रहा। समाचार देने के पहले मैं तुम्हें उसे न दिखाना चाहती थी।” वह पत्र इस प्रकार था :

“महाशय, धर्म और नीति के पवित्र उद्देश्य के प्रति जो मेरा कर्तव्य है उसी से बाध्य होकर मैं यह दुःखद कार्य कर रही हूँ। एक अटल सिद्धान्त मुझे आदेश दे रहा है कि एक अधिक लज्जाजनक

अपराध को रोकने के लिए मैं अपने पड़ोसी के साथ बुराई करूँ। ऐसा करने में मुझे जो दुख है उसकी अपेक्षा कर्तव्य का भाव कहीं अधिक है। महोदय, यह बहुत ही सही है कि त्रिम व्यक्ति के विषय में आपने सम्पूर्ण सत्य मुझसे जानना चाहा है उसके आचरण का हेतु समझना अथवा उसे किसी सम्मानपूर्ण हेतु के योग्य मानना आपको कठिन लगा हो। बुद्धिमानी और धर्म दोनों की ही यह माँग थी कि मैं सत्य के थोड़े-से अंश पर परदा डालना उचित समझनी; पर जिस आचरण के बारे में आप जानना चाहते हैं वह वास्तव में बहुत ही निन्दनीय है, इतना निन्दनीय है कि मेरे लिए कहना कठिन है। वह एक गरीब और लालची इन्सान है। उसने बड़ा भारी ढोंग रच कर और एक दुर्बल एवं दुखी स्त्री को पथभ्रष्ट करके अपनी उन्नति और महत्व-प्राप्ति का प्रयत्न किया था। यह बात कहना मेरा दुःख कर्तव्य है कि मेरे विचार में म० जु—के कोई धार्मिक सिद्धान्त नहीं हैं। मैं मन्वे हृदय से इस बात में विश्वास करती हूँ कि किसी भी परिवार में उसकी सफलता का एक ढंग यह है कि घर की सबसे प्रभावशाली स्त्री को पथभ्रष्ट करे। उदासीनता की आड़ में और उपन्यासों की गव्वावली का प्रयोग करके उसका सब से बड़ा और एकमात्र उद्देश्य यह होना कि किसी प्रकार गृहस्वामी और उसकी धन-सम्पत्ति के ऊपर पूरा-पूरा काबू कर ले। वह जहाँ से भी जाता है वही दुख और चिरकालीन पश्चात्ताप ही छोड़कर जाता है, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि।”

पत्र बहुत ही लम्बा था और उस पर बीच-बीच में आँसुओं के बब्बे थे। किन्तु वह निश्चय ही मादाम द रेनाल के हाथ का निवा हुआ था; वह सावधानी से भी अधिक सावधानी से निवा गया था।

पत्र पूरा पढ़ चुकने के बाद जुलिये ने कहा, “मैं म० द ला मोल को दोष नहीं दे सकता। उनकी बात ठीक भी है और बुद्धिमानी की भी। कौन-सा पिता अपनी प्यारी बेटी ऐसे आदमी को देना चाहेगा! अच्छा विदा!”

जुलिये गाड़ी से कूद पड़ा और सड़क के दूसरे छोर पर खड़ी हुई अपनी घोड़ागाड़ी की ओर दौड़ा। लगता था कि मातिल्द को वह बिल्कुल भूल ही गया है जिसने मानो उसका अनुसरण करने के लिए दो-एक कदम बढ़ाये। पर इसी बीच कई दुकानदार जो उसे पहचानते थे, अपनी-अपनी दुकानों के दरवाजों से बाहर भाँकने लगे थे, जिससे लाचार होकर मातिल्द को जल्दी से बगीचे में लौटना पड़ा।

जुलिये बेरियेर के लिए चल पड़ा था। उसका इरादा था कि रास्ते से वह मातिल्द को पत्र लिख देगा, पर यह सम्भव न हो सका। उसके हाथ से कागज पर टेढ़ी-मेढ़ी लकीरो के अतिरिक्त और कुछ न बन पाता था।

बेरियेर में वह इतवार के दिन पहुँचा। वह सीधा स्थानीय बन्दूक बेचने वाले की दुकान पर गया जहाँ उसके सौभाग्य पर उसे बहुत-बहुत बधाइयाँ दी गईं। सारे जिले में इसी बात की चर्चा थी।

जुलिये बड़ी कठिनाई से दुकानदार को समझा सका कि उसे जेबो पिस्तौल के लिए कारतूस चाहिए। उसके कहने से दुकानदार ने पिस्तौल में कारतूस भर दिये।

तीन घण्टियाँ अभी-अभी बजी थीं। फ्रांस के गाँवों में यह सुपरिचित सकेत है जो सबेरे की विभिन्न घण्टियों के बाद इस बात की सूचना देता है कि प्रार्थना शुरू ही होने वाली है।

जुलिये ने बेरियेर के नये बने हुये गिरजाघर में प्रवेश किया। भवन की सारी ऊँची-ऊँची खिडकियों पर लाल रंग के परदे पड़े थे। वह मादाम द रेनाल के स्थान से कुछ ही फीट पीछे जाकर खड़ा हो गया। उसे लगा कि वह बड़ी भक्तिभाव से प्रार्थना कर रही हैं। इस स्त्री को देखते ही, जिसने कभी उसे इतनी तीव्रता के साथ प्यार किया था, जुलिये का हाथ कुछ इस तरह से काप उठा कि शुरू में उसके लिए अपना इरादा पूरा करना कठिन हो उठा। उसने मन ही मन कहा कि यह मुझ से नहीं हो सकता। मैं इसके लिए एकदम अयोग्य हूँ।

उसी समय प्रार्थना में सहायता करने वाले तत्क्षण पुरोहित ने एक विशिष्ट विधि के लिए घण्टी बजाई। मादाम द रेनार् ने अपना सिर झुका लिया जो क्षणभर के लिए उनके शरीर की तन्त्रों में पूरी तरह छिप गया। जुलिये को अब वह इतनी सफ़ाई नहीं दीख रही थी। उसने पिस्तौल निकालकर उनके ऊपर गोली चलाई जो उन्हें नहीं लगी। तब उसने दूसरी बार गोली छोड़ी जिस पर वह गिर पड़ी।

: ३६ :

दुखजनक बातें

जुलिये निश्चल खड़ा था। उसकी आँखों की ज्योति जाती रही थी। जब उसे थोड़ा-सा होश हुआ तो उसने देखा कि सब लोग गिरजाघर के बाहर भागे जा रहे हैं। पुरोहित भी वेदी से जा चुके थे। जुलिये बहुत ही धीरे-धीरे कुछेक चीखती-पुकारती हुई स्त्रियों के पीछे-पीछे बाहर की ओर चला। एक स्त्री औरों की अपेक्षा अधिक तेजी से भागने का प्रयत्न कर रही थी, उसका जोर से धक्का लगने से जुलिये गिर पड़ा। उसके पैर भीड़ द्वारा उल्टी-पुल्टी कुर्सियों में उलझ गये। जब वह फिर से खड़ा हुआ तो उसे अपनी गरदन के ऊपर किसी कठोर पकड़ का अनुभव हुआ। पूरी वर्दी पहने हुए एक पुलिस के सिपाही ने उसे गिरफ्तार कर लिया था। यन्त्रवत् भाव से जुलिये ने अपनी जेबी पिस्तौल निकालने का यत्न किया किन्तु दूसरे सिपाही ने उसकी बाँहें पकड़ ली।

उसे जेल में ले जाया गया। वहाँ उसके हाथों में हथकड़ी डाल कर एक कमरे में अकेला बन्द कर दिया गया। दरवाजे के ऊपर दोहरा ताला पड़ा था। यह सब बहुत जल्दी ही हुआ और अभी तक उसे इस बात का कोई होश न था।

कुछ होश आने पर उसने मन ही मन कहा, हाँ, सचमुच सब कुछ समाप्त हो चुका है। पन्द्रह दिन में गिलोटीन—हाँ, इसी बीच मैं स्वयं आत्महत्या कर लूँ तो दूसरी बात है।

उसकी बुद्धि ने इससे आगे काम न दिया। उसे ऐसा लग रहा था

मानो किसी ने उसके सिर को बड़ी जोर से किसी चीज के बीच दबा दिया हो। वह घूमकर देखने लगा कि कहीं किसी ने उसे पकड़ तो नहीं रक्खा है। कुछ ही क्षण बाद वह गहरी नींद सो गया।

मादाम द रेनाल घातक रूप में आहत न हुई थी। पन्नी गोली उनकी टोपी में से गयी थी और जैसे ही वह घूमी कि दूसरी गोली छोड़ी गयी। यह गोली उनके कंधे पर लगी और बहुत ही आश्चर्यजनक संयोगवश कंधे की हड्डी से फिसल कर एक गोथिक खम्भे पर जाकर लगी थी। उनके कंधे की हड्डी को चूर कर देने के साथ-साथ गोली ने खम्भे के पत्थर का बड़ा भारी टुकड़ा तोड़ दिया था।

जब बहुत देर तक कष्टदायक मरहम-पट्टी करने के बाद डाक्टर ने, जो गम्भीर स्वभाव के व्यक्ति थे, मादाम द रेनाल ने कहा कि “मैं आपकी जान बचाने का जिम्मा लेता हूँ,” तो वह बहुत ही दुखी हुई।

मिथिले बहुत दिनों से वह सचमुच मृत्यु की कामना करने लगी थी। अपने पाप-स्वीकारकर्ता के आदेश पर जो पत्र उन्होंने म० द ला मोल को लिखा था, उसने इस सुदीर्घ यातना से दुर्बल आत्मा के ऊपर अन्तिम आघात का कार्य किया। यह यातना जुलिय की वियोग की थी, स्वयं अपने आप वह इसे पश्चात्ताप कहा करती थी। हाल ही में दिजो से आए हुए एक अत्यन्त ही धार्मिक और सदाचारी पुरोहित आजकल उनके आध्यात्मिक निर्देशक थे। उन्हें भी इस विषय में कोई भ्रम न था।

मादाम द रेनाल सोचती थी इस भाँति मरना पाप न होगा। शायद भगवान् मुझे मृत्यु से प्रसन्न होने के पाप के लिए क्षमा कर दे। यह जोड़ने का साहस उनमें न था कि जुलिये के हाथ से मरना तो सुख की चरम सीमा है।

डाक्टर तथा अपने सब बन्धु-बान्धवों के जाने ही उन्होंने तुरन्त अपनी नौकरानी एलिजा को बुला भेजा।

“जेलर बहुत ही निर्दयी आदमी है,” उन्होंने लज्जा में लाल होने-होते उससे कहा। “वह अवश्य ही उसके साथ कठोर व्यवहार करेगा

और यह सोचिगा कि मुझे इससे प्रसन्नता होगी। यह बात मुझे सहन नहीं है। क्या तुम स्वयं, मानो अपनी ओर से, जाकर जेलर को यह पेंकेट न दे आओगी? इसमें कुछ धन है। जेलर से कहना कि धर्म इस बात की आज्ञा नहीं देता कि उसके साथ बुरा व्यवहार किया जाय।— पर उसे जता देना कि वह इस धन का जिक्र कहीं किसी से न करे।”

इसी कारण जुलिये को जेलर के हाथों इतना मानवीय व्यवहार मिला था। यह जेलर वही म० न्वारू थे जिन्हें आदर्श सरकारी अफसर के रूप में हम एक बार म० आप्पेर के आगमन से इतना भयभीत होते हुए देख चुके हैं।

एक मजिस्ट्रेट साहब जेल में पधारें। जुलिये ने उनसे कहा, “मैं जानबूझ कर हत्या करने का अपराधी हूँ। मैंने पिस्तौल खरीदी और अमुक दुकानदार से उसमें कारतूस भरवाये। अपराध सहिता की धारा १३४२ बिलकुल ही स्पष्ट है। मैं मृत्युदण्ड के उपयुक्त हूँ और उसी की मुझे आशा है।” मजिस्ट्रेट इस उत्तर से बहुत ही चकित हुए। उन्होंने तरह-तरह के ऐसे सवाल करने का प्रयत्न किया कि अपराधी अपने उत्तर में परस्पर-विरोधी बातें कह दे।

“पर आप यह क्यों नहीं देखते,” जुलिये ने मुस्कराते हुए कहा, “कि जैसा आप चाहते होंगे, मैं स्वयं अपने को अपराधी माने ले रहा हूँ। यकीन रखिये, आपको अपना शिकार प्राप्त करने में कोई असुविधा न होगी। मुझे दण्ड देने का पूरा-पूरा आनन्द आपको मिलेगा। अब यदि आप अपनी उपस्थिति से मुझे मुक्ति दे तो बड़ी कृपा हो।”

जुलिये सोचने लगा कि अभी एक कष्टदायक कर्तव्य मुझे और पूरा करना है। माद० द ला मोल को तुरन्त पत्र लिखना है। उसने लिखा —

“मैंने अपना बदला ले लिया। दुर्भाग्यवश मेरा नाम पत्रों में प्रकाशित होगा, इस दुनिया से मैं अज्ञात ही न भाग सकूँगा। दो महीने के भीतर ही मेरी मृत्यु निश्चित है। मेरी प्रतिहिंसा भयकर सिद्ध हुई

है, किन्तु उतना ही भयकर तुमसे बिछुड़ने का दुख है। इस क्षण से मैंने तुम्हे लिखने अथवा तुम्हारा नाम लेने के लिए अपने ऊपर रोक लगा ली है। तुम भी कभी मेरा जिक्र न करना, मेरे बेटे से भी नहीं; मेरी स्मृति का सम्मान करने का एकमात्र उपाय मौन है। साधारण लोगो के लिए मैं सामान्य हत्यारा ही रहूँगा। " इस चरम क्षण में मुझे सच्ची बात कहने की आज्ञा दो—तुम मुझे भूल जाओगी। इन वज्राघात के कारण, जिसके विषय मे मेरा अनुरोध है कि तुम कभी किसी व्यक्ति के आगे मुँह न खोलना, अगले कई वर्षों तक उन तमाम रोमान्टिक और साहसिक प्रवृत्तियों की सम्भावनायें समाप्त हो जायेंगी जो मैं तुम्हारे स्वभाव में देखा करता था। तुम मध्ययुग के योद्धाओ के साथ रहने के लिए बनी थी, उन्हीं के चरित्र की दृढ़ता तुम प्रगट करना। जो कुछ अवश्यम्भावी है उसे चुपचाप और अपने ऊपर जाँच आये बिना ही होने देना। तुम एक दूसरा नाम धारण कर लेना और किसी को अपना रहस्य न बताना। यदि सहायता के लिए किसी व्यक्ति की आवश्यकता हो तो मैं फादर पिरार को तुम्हे सौंपता हूँ।

और किसी व्यक्ति से, विशेष कर लुज अथवा केलुम जैसे अपने वर्ग के किसी व्यक्ति से, कभी कुछ न कहना।

मेरी मृत्यु के एक वर्ष बाद म० द क्रवाजन्वा से विवाह कर लेना। इन बात का मैं तुम्हे पति के नाते आदेश देता हूँ। मुझे कोई पत्र न लिखना। मैं उसका कोई उत्तर न दूँगा। यद्यपि मैं इयागो से बहुत कम दुष्ट व्यक्ति हूँ, कम से कम मुझे यही लगता है, तो भी मैं उसी के शब्द दोहराता हूँ : 'इस क्षण के बाद से मैं एक शब्द भी मुँह से न निकालूँगा।'

मुझसे कोई भी मिलने अथवा पत्र लिखने न पायेगा। मेरे अन्तिम शब्द तथा अन्तिम प्यार भरे विचार केवल तुम्ही को समर्पित हैं।

जु० सो०"

इस पत्र की केज चुकने के बाद जुलियें को थोड़ा होन और

पहली बार उसे बहुत दुःख का अनुभव हुआ। महत्माकाक्षा ने जितनी आशाओं के अकुर जमाये थे उन सबको एक एक करके इन शब्दों द्वारा वह अपने हृदय से उखाड़कर फेंकता रहा “मुझे मरना है।” मृत्यु उसे अपने आप में इतनी भयकर न लगती थी। उसका सारा जीवन दुर्भाग्य की एक लम्बी तैयारी के अतिरिक्त और कुछ न रहा था और जिस दुर्घटना को सबसे बड़ा दुर्भाग्य समझा जाता है उसकी भी उपेक्षा उसने न की थी।

उसने मन ही मन कहा, हे ईश्वर ! क्या मैं इतना दुर्बल हूँ कि यदि आज से साठ दिन बाद मुझे किसी ऐसे व्यक्ति से द्वन्द्व-युद्ध करना पड़ता जो तलवार चलाने में अत्यधिक निपुण होता, तो केवल उसी के विषय में दिन-रात आतंकित होकर सोचता रहता।

वह एक घण्टे तक यही सोचने का प्रयत्न करता रहा कि इस दृष्टि से उसकी स्थिति ठीक-ठीक क्या है।

जब उसने अपने हृदय का भाव स्पष्ट देख लिया और सत्य उसकी आँखों के आगे जेल के खम्भों की भाँति उजागर हो उठा तो वह पश्चात्ताप की बात सोचने लगा।

मैं क्यों कोई पश्चात्ताप अनुभव करूँ ? मुझे भी तो भीषणतम रूप में आहत किया गया है, मैंने प्राण लिये हैं, मैं मौत की सजा के योग्य हूँ। इतनी ही तो बात है। पर मैं मानव-जाति से अपना हिसाब चुकता करके ही मरूँगा। मैं अपने पीछे कोई अपूर्ण दायित्व छोड़कर न हूँ जा रहा हूँ, किसी का ऋणी नहीं हूँ। मेरी मृत्यु में उसके उपाय को छोड़कर और कोई चीज लज्जाजनक नहीं है। यह सही है कि उसके कारण बेरियर के नगर-निवासियों की दृष्टि में मेरी स्थिति पर्याप्त लज्जाजनक होगी। किन्तु बौद्धिक दृष्टि से इसमें अधिक घृणित जनमत और कौन-सा होगा ? इन लोगों की दृष्टि में महत्वपूर्ण बनने का केवल एक ही उपाय है कि मैं मृत्यु-दंड के लिए जाते समय रास्ते में भीड़ के ऊपर सोना बिखेरता जाऊँ। स्वर्ण के साथ जुड़कर मेरी-मृत्यु उनके लिए

उत्तम और शानदार हो जायगी ।

यह तर्कक्रम उसे स्वयंसिद्ध जैसा लगा । उसके बाद वह सोचने लगा कि मुझे इस धरती पर अब और कुछ नहीं करना है । इस विचार के बाद वह गहरी नींद में सो गया ।

रात को नौ बजे के लगभग जेलर उसका भोजन लेकर आया तो उसने जगाया ।

“वेरियेर में लोग क्या कह रहे हैं ?”

“म० जुलिये, इस नौकरी पर नियुक्त होने समय क्लाम के आगे और राजा की अदालत में मैंने जो शपथ ली थी उसके कारण मैं चुप रहने के लिए बाध्य हूँ ।”

उसने और कुछ न कहा पर तो भी वही मटराना रहा । इस अशोभन ढोंग के दृश्य में जुलिये को बड़ा कौतूहल हुआ । वह सोचने लगा कि अपनी आत्मा की कीमन के रूप में जो पाँच फ्रैंक वह चाहता है उसके लिए अभी और प्रतीक्षा करानी चाहिए ।

जब जेलर ने देखा कि घूम के किसी प्रस्ताव के बिना ही भोजन समाप्त हुआ जा रहा है तो उसने बड़े मीठे और मक्कारी भरे ढंग से कहा : “म० जुलिये, लोग भले ही इसे न्याय के विरुद्ध कहे, पर आपके प्रति मित्रता के कारण मैं आपको सब बातें बताने को मजबूर हूँ । मैं जानता हूँ कि म० जुलिये जैसे दयावान सज्जन यह जानकर बड़े प्रसन्न होंगे कि मादाम द रेनाल की हालत सुधर रही है ।”

“क्या ! वह मरी नहीं,” जुलिये ने बेहद आश्चर्य में कहा ।

“क्या मतलब ? आप यह बात नहीं जानते थे ?” जेलर ने ऐसे बुद्धूषण के भाव से कहा जिसने तुरन्त ही सहर्ष लालच का रूप ले लिया । “श्रीमान्, आपके लिए यह बहुत उचित होगा कि कुछ न कुछ इस सर्जन को भी दें, जो न्याय और कानून के अनुसार कुछ भी नहीं बता सकता । पर श्रीमान् को प्रसन्न करने के लिए मैं स्वयं उनके घर गया और उन्होंने मुझे सारी बातें बतल दी । . . .”

“सक्षेप मे जरूम बहुत घातक नहीं है” जुलिये ने अधीर होकर कहा • “तुम सौगन्ध खाकर कहते हो ?”

जेलर छ फीट ऊँचा चौड़ा आदमी था, पर वह इस बात से डर गया और पीछे दरवाजे की तरफ हटने लगा। जुलिये तुरन्त समझ गया कि सच्चाई जानने का यह रास्ता गलत है। वह तुरन्त बैठ गया और उसने एक सोने का सिक्का म० न्वाख के आगे फेंक दिया।

ज्यो-ज्यो उस आदमी की कहानी से यह प्रमाणित होने लगा कि मादाम दे रेनाल का जरूम घातक नहीं है, ल्यो-ल्यो जुलिये को अनुभव होने लगा कि उसके आँसू रोके न रुक सकेंगे। वह एकाएक बोला, “यहाँ से निकल जाओ !”

जेलर ने तुरन्त आज्ञा का पालन किया। दरवाजा बन्द होते ही जुलिये सिसक उठा। हे ईश्वर ! वह मरी नहीं ! और वह घुटनों के बल बैठकर फूट-फूटकर रोने लगा।

इस चरम क्षण मे उसे परमात्मा पर विश्वास हो आया। पुरोहितों की बेईमानी से क्या आता-जाता है ? क्या वे किसी भी भाँति परमात्मा की सत्यता और उदात्त गरिमा को कम कर सकते हैं ?

अब जुलिये को अपने अपराध के लिए पश्चात्ताप हुआ। केवल संयोगवश ही उस क्षण वह उस शारीरिक त्रास और अर्धविक्षिप्त अवस्था से मुक्ति पा सका जिससे वह पेरिस से बेरियेर चलने के समय से ग्रस्त था।

उसके आँसू बड़े उदार कारण से निकले थे, अपने दण्ड के विषय मे उसे कोई सन्देह न था।

तो वह जीवन रहेगी। वह सोचने लगा—वह मुझे क्षमा करने और प्यार करने के लिए जीवित रहेगी। अगले दिन सबेरे जेलर ने उसे बहुत देर से जगाया। “आपका हृदय सचमुच ही बेहद मजबूत है, म० जुलिये,” वह कहने लगा। “मैं यहाँ दो बार आ चुका हूँ पर एक बार भी आपको जगाने की इच्छा न हुई। हमारे कयोरे म० मास्लो ने आपके

लिए ये बढ़िया शराब की दो बोतले भेजी है ।’

“क्या ! वह शैतान अभी तक यहाँ है ?” जुलिये ने कहा ।

“जी हाँ, श्रीमान्,” जेलर ने अपनी आवाज धीमी करते हुए उत्तर दिया । “पर इतने जोर से न बोलिये, इससे आपको नुकसान पहुँच सकता है ।” जुलिये जी खोलकर हँसा ।

“भले आदमी, मैं जिस जगह पहुँच चुका हूँ, वहाँ कबल तुम ही नरमी और दया का बर्ताव बन्द करके मुझे नुकसान पहुँचा सकते हो । तुम्हें इसके बदले में पूरा मुआवजा मिलेगा,” जुलिये ने कहा और बीच ही में रुककर अपना पिछला राजसी भाव धारण कर लिया । इस कार्य के औचित्य के रूप में तुरन्त ही उसने एक छोटा-सा सबका भी जेलर को दे डाला ।

म० न्वारू ने फिर एक बार उसे पूरे विस्तार से वे सारी बातें सुना दी जो मादाम द रेनाल के बारे में उसने सुनी थी, पर माद० एलिजा के आगमन की बात नहीं कही ।

उस आदमी से अधिक आज्ञाकारी और दासवृत्ति वाला होना कठिन था । एक विचार जुलिये के मन में आया । यह कुरूप राक्षस जैसा व्यक्ति अधिकाधिक तीन-चार सौ फ्रैंक पैदा कर लेता होगा क्योंकि इसकी जेल में ज्यादा आदमी नहीं है । यदि वह मेरे साथ स्विट्जरलैंड भाग चलने को तैयार हो जाय तो मैं उसे दस हजार फ्रैंक की गारण्टी दे सकता हूँ । कठिनाई केवल यही होगी कि शायद उसे मेरी बात का भरोसा न हो । ऐसे नीच व्यक्ति से इस विषय में लम्बी चर्चा की सम्भावना से ही जुलिये विरक्ति से भर उठा और वह दूसरी बातें सोचने लगा ।

उस दिन शाम को फिर कोई समय न मिला । आधी रात के समय एक घोड़ागाड़ी उसको ले जाने के लिए आई । उसके साथ जो पुलिस के सिपाही यात्रा कर रहे थे, उनसे वह बहुत प्रसन्न हुआ । सबसे जब वह बजांसो की जेल में पहुँचा तो उन्होंने कृपा करके उसे एक गौथिक शैली के भवन में ऊपरी मंजिल में ले जा कर टिकाया । उसने अनुमान किया

कि उस मकान का वास्तुशिल्प चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ का होगा। वह उसकी शोभा और सुखद सुकुमार सुन्दरता की प्रशंसा करने लगा। एक बड़े भारी सहन के दूसरे छोर पर दो दीवारों के बीच खाली जगह में से बहुत ही भव्य तथा सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता था। अगले दिन उसका औपचारिक बयान ले लिया गया जिसके बाद बहुत दिनों तक फिर किसी ने उसे नहीं तग किया। उसका मन शान्त और स्थिर था। अपने मामले में उसे हर चीज बिलकुल सीधी और साफ़ दीखती थी : मैंने हत्या करने का प्रयत्न किया था, इसलिए मुझे मौत की मजा मिलनी चाहिए।

इस विषय पर इससे अधिक वह न सोचता था। मुकदमा, लोगों के सामने आने की परेशानी, अपनी ओर से मुकदमे की पैरबी, इन सब बातों को वह नीरस और तग करने वाली क्षुद्र औपचारिक आवश्यकताएँ मानता था जिनके बारे में ठीक मुकदमे के दिन ही सोचना पर्याप्त था। मृत्यु के विषय में भी उसका ध्यान इससे अधिक केन्द्रित नहीं होता था। उसके विषय में सजा सुनाये जाने के बाद सोचूँगा, वह मन ही मन कहता। जीवन उसे फिर भी कष्टदायक न लगता था, और वह हर विषय पर एक नये दृष्टिकोण से विचार करने लगा था। उसकी महत्वाकांक्षाएँ सब चुक गयी थी। माद० द ला मोल की बात भी वह बहुत कम ही सोचता था। पश्चात्ताप उसके मन में बहुत था, जिसके कारण प्रायः उसकी आँखों के आगे मादाम द रेनाल का चित्र खिंच जाता था, विशेषकर रात की निस्तब्धता में जा इस ऊँची इमारत में केवल समुद्री गरुड की पुकार से ही कभी-कभी भग हो जाया करती थी।

वह नियति को धन्यवाद देता कि उसके हाथों मादाम द रेनाल की मृत्यु न हुई। कैसी विस्मयजनक बात है। वह मन ही मन कहता। मैंने सोचा था कि म० द ला मोल को अपने पत्र से उन्होंने मेरा सुख सदा के लिए नष्ट कर दिया है और उस पत्र की तारीख के पंद्रह दिन के भीतर ही अब मैं उस विषय पर पल भर भी ध्यान नहीं देता जिसने

उस समय मेरे समूचे मन को घेर रक्खा था—वेर्जि जैमे पहाड़ी गाँव में चुपचाप जीवन बिताने के लिए दो या तीन हजार लिब्र सालाना की आमदनी हो—उन दिनों मैं सचमुच सुखी था—मैं स्वयं अपने को तब समझ न सका था ।

दूसरे ही क्षण वह एकाएक अपनी कुर्सी से चौककर उठ खड़ा होता । यदि मैंने मादाम द रेनाल को मार डाला होता तो मैं स्वयं अपने भी प्राण ले लेता । यदि मैं अपने आप से घृणा नहीं करना चाहता तो इस बात पर पक्का यकीन होना बड़ा जरूरी है ।

मेरा आत्महत्या करना ठीक होगा ? वह सोचता कि यही सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है । वे सब न्यायाधीश जो औपचारिकता से जकड़े हुए हैं, जो बेचारे दुखी अपराधी के पीछे बुरी तरह से पड़ जाते हैं और अपनी छाती पर केवल एक पदक सजाने के लिए योग्य से योग्य नागरिक को फाँसी पर लटकवा सकते हैं मुझे उनके चगुल से अपने आपको मुक्त कर लेना चाहिए । उनकी उन अपमानजनक बातों से अपना पीछा छुड़ा लेना चाहिए जिन्हें वे व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भाषा में कहेंगे और जिन्हें स्थानीय समाचार-पत्र ओजस्वी वक्तृता-कला का प्रमाण घोषित करेंगे ।

पाँच-छ सप्ताह की जिन्दगी अभी और है । आत्महत्या ! हे ईश्वर ! कुछ दिनों बाद वह सोचने लगा कि नैपोलियन तो अन्त तक जीवित रहा था इसके अतिरिक्त जीवन मुझे सुखद रहा है । मेरा यह निवासस्थान कितना शान्त है । और हँसते-हँसते उसने आगे सोचा कि यहाँ परेशान करने वाले और जी उबाने वाले लोगो का बखेड़ा नहीं और फिर वह उन पुस्तको की सूची बनाने लगा जो वह पेरिस से अपने लिये मँगाना चाहता था ।

: ३७ :

कैदखाना

उसे बरामदे में बड़े जोर की आवाज सुनाई पड़ी, यह मुलाकात का घण्टा तो न था। समुद्री गरुड चीखता हुआ उड़ गया, द्वार खुला और वयोवृद्ध क्योरे शैला ने अपनी छड़ी को कसकर पकड़े काँपते हुए प्रवेश किया और तुरन्त जुलिये को अपने हृदय से लगा लिया।

“ओफ ! दयामय ईश्वर, क्या यह सम्भव है, मेरे बेटे बल्कि राक्षस, मुझे कहना चाहिए !”

और बिचारे वृद्ध एक शब्द भी अधिक न कह सके। जुलिये को भय हुआ कि वह गिर न पड़े। उसने ले जाकर उन्हें एक कुर्सी पर बिठा दिया। किसी जमाने में यह व्यक्ति कितना उत्साह और शक्ति से भरा रहता था। अब समय का भारी हस्त उसको दबाये हुए था। जुलिये को वह अपने पिछले युग की छाया से अधिक न लगा।

जब उनकी साँस कुछ ठहरी तो वह बोले : “परसो ही तो मुझे तुम्हारा स्त्रासबूर का पत्र और बेरियेर के गरीबों के लिए पाँच सौ फ्रैंक मिले थे। वह मेरे पास पहाडो में लिबरु नामक स्थान पर पहुँचा जहाँ मैं आजकल अपने भतीजे ज्याँ के पास रहता हूँ। कल मुझे इस वज्रपात का पता चला। हे प्रभु ! क्या यह सचमुच सम्भव है !” वृद्ध अब रौं नहीं रहे थे। वह ऐसे दिखाई पड़ रहे थे मानो उनका मन शून्य हो गया हो। उन्होंने यन्त्रवत् आगे कहा, “तुम्हें अब अपने उन पाँच सौ फ्रैंक की आवश्यकता पड़ेगी, मैं उन्हें तुम्हारे लिये वापिस ले आया हूँ।”

“मुझे जरूरत आपसे मिलने की थी, फादर !” जुलिये ने सिसक कर कहा । वह बहुत ही भावविह्वल हो उठा था । “घन तो मेरे पास कुछ है ।”

पर उसके बाद वह बोई समझदारी का उत्तर न पा सका । बीच-बीच में म० शैला की आँखों से कुछ आँसू छुपचाप गालों के ऊपर बह जाते, तब वह जुलिये की ओर टवटकी बाँध कर देखते और अवाक्-सी अवस्था में उसका हाथ उठाकर अपने होठों से लगा लेते । वह मुख-मुद्रा जो कभी इतनी जीवन्त रहती थी और जिस पर उच्चतम भावनाएँ इतने प्रबल रूप में प्रगट हुआ करती थी, अब उसके ऊपर विरक्ति का भाव स्थायी रूप से अंकित था । शीघ्र ही एक किसान वृद्ध को ढूँढता हुआ वहाँ आया । वह जुलिये से कहने लगा, “कहीं ये थक न जायें ।” जुलिये समझ गया कि यह उनका भतीजा है । इस संक्षिप्त भेंट ने जुलिये को ऐसे तीखे दुःख में डुबा दिया कि उसके आँसू तक न आये । उसे हर वस्तु उदासीभरी और सात्वताहीन जान पड़ी, उसे लगा कि उसके वक्ष के भीतर उसका हृदय जमकर बरफ हो गया है ।

अपने अपराध के बाद से यह उसके लिए सबसे कठवा क्षण था । उसने अभी-अभी मृत्यु को अपने कुरूपतम रूप में सामने देखा था । महानु आत्मा के साहस और उच्चता के सारे धर्म तूफान के आगे बादलों की भाँति बिखर गये थे ।

यह भयंकर अवस्था कई घण्टों तक रही । मन के विषाक्त हो जाने पर आदमी को शारीरिक उपचार और जैम्पेन के एक गिलास की आवश्यकता होती है । जुलिये यदि ऐसे साधनों का सहारा लेता तो अपने आपको कायर अनुभव करता । सारे दिन वह अपने कमरे में इधर से उधर चहल-कदमी करता रहा । उस भयंकर दिन के समाप्त होते-होते वह कह उठा कि मैं भी कैसा मूर्ख हूँ ! मुझे भी यदि अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े मरना होता तो इस वृद्ध व्यक्ति की दयनीय दशा को देखकर दुःखी अनुभव करना ठीक था, किन्तु भरी जवानी में मौत मुझे ऐसी

दयनीय जराजीरता से बचा लेगी ।

किन्तु जितनी भी युक्तियाँ जलिये के मन में आती उन सभी से उसे अपने ऊपर अन्य दुर्बल-हृदय व्यक्तियों की भाँति तरस आने लगता और वह इस भेट के परिणामस्वरूप दुखी हो उठता ।

अब उसमें किसी अनगढ़ भव्यता का, किसी रोमन गुण का लेशमात्र न बचा था । मृत्यु उसे अपने ऊपर मँडराती हुई जान पड़ती थी और अब इतनी सहज न लगती थी ।

यह मेरे लिये थर्मामीटर का काम देगी, वह मन ही मन कहने लगा । आज मेरा साहस गिलोटीन के लिए आवश्यक स्तर से दस डिग्री नीचे है । सबेरे उतना साहस मेरे पास था । जो हो, इससे क्या अन्तर पड़ता है ? आवश्यकता होने पर फिर प्राप्त हो जाय, यही काफी है । थर्मामीटर के विचार ने उसका जो हल्का कर दिया और अन्त में उसका मन किसी और बात में लग गया ।

अगले दिन सबेरे नीद खुलने पर वह पहले दिन की भाँति ही अपने ऊपर लज्जित हो उठा । वह सोचने लगा कि मेरे मन की शांति, मेरा सुख दाँव पर है । उसने लगभग निश्चय कर लिया कि जिले के अटर्नी को लिख दे कि किसी को उससे मिलने न दिया जाय । पर फिर सोचने लगा कि यदि फूके आया तो ? यदि उसने बजासो आने का प्रयत्न किया तो वह कितना दुखी होगा ।

सम्भवतः दो महीने से उसे फूके की याद तक न आई थी । वह सोचने लगा कि मैं स्त्रासबूर में कैसी मूर्खताएँ करता रहा । अपने कालर की बनावट के परे कोई बात सूझती ही न थी । फूके की स्मृतियाँ उसके मन में बहुत थी और उन्होंने उसकी मन स्थिति को थोड़ा नरम कर दिया । वह उत्तेजनावश इधर से उधर टहलने लगा । इस समय मैं निश्चित रूप से मृत्यु के स्तर से बीस डिग्री नीचे हूँ । यदि यह दुर्बलता बढ़ी तो आत्महत्या ही अधिक उचित होगी । यदि मैं रिरियाते पिल्ले की भाँति मरा तो मास्लो और वालनो जैसे लोगों को कितनी खुशी होगी ।

फूके आ पहुँचा, वह सरल स्नेही व्यक्ति शोक से विक्षिप्त-मा था । उसके मन में बस यही विचार था कि अपनी सारी संपत्ति बेचकर किसी तरह जेलर को फुसलाये और जुलिये का जीवन बचा ले । वह विस्तार से म० द लवालेते के जेल से भागने की कहानी सुनाता रहा ।

“तुम्हारी बात से मुझे दुख हो रहा है,” जुलिये ने उससे कहा । “म० द लवालेते निरपराध थे, मैं अपराधी हूँ । अनचाहे ही तुम मुझे इस अन्तर पर विचार करने को बाध्य कर रहो हो । पर क्या यह वास्तव में सच भी है ?” एकाएक शका और अविश्वास के भाव से उसने पूछा : “क्या ! तुम अपनी सारी संपत्ति बेच दोगे ?”

फूके इतनी देर में अपने मित्र को अपने विचार से प्रभावित होते देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ । वह उसे बहुत विस्तार से एक-एक फ़ैक का हिमात्र बनाने लगा कि उसकी सारी जायदाद से कितना धन मिल नकेगा ।

एक छोटे-से देहाती जमींदार के लिए किन्ना मशहूर उदारता का कार्य था । जुलिये सोचने लगा । वह मेरे लिए अपनी छोटी-छोटी किफायती से बचाया हुआ धन त्याग करने को उद्यत है । उसकी इन सब बातों से उन दिनों मुझे कितनी लज्जा हुआ करती थी । द ला मोल भवन में जिन सब सुन्दर नौजवानों से मेरी भेंट होती थी उनमें से किसी में फूके के अजीब तौर-तरीके नहीं मिलेंगे । किन्तु बहुत ही अल्पवयस्क और अपनी लोगों को छोड़कर, जो पैसे का कोई मूल्य अभी नहीं जानते, उन सुंदर पेरिसवासियों में से कौन ऐसा त्याग करने में समर्थ होता ?

फूके की सारी व्याकरण की भूलें, उसके सारे फूहड़ रगड़ग नज़र से ओझल हो गये । जुलिये ने उसे हृदय से लगा लिया । पेरिस की तुलना में दूरस्थ प्रान्त कभी इतने उच्च न दिखाई पड़े होंगे । इतनी बड़ी श्रद्धाजर्न उन्हें कभी न मिली होगी । अपने मित्र की आँखों में उत्साह की चमक से फूके प्रसन्न हो उठा, उसने इसे भाग निकलने की योजना के लिए जुलिये की सम्मति का सूचक समझा ।

उदात्तता के इस दर्शन से जुलिये की वह सारी शक्ति फिर से लौट

आयी जो फादर शैलों के आकस्मिक आगमन के कारण उससे छिन गयी थी। वह अभी भी बहुत अल्पवयस्क था, पर मेरे मन से वह एक स्वस्थ पौधे की भाँति था। अधिकांश व्यक्तियों की भाँति कोमल अकुर से बढ़ कर छोटे-मोटे वृक्ष का रूप ले लेने के बजाय, आयु के साथ-साथ उसे अधिकाधिक करुणावान विशाल हृदय प्राप्त होता, उसका सारा विक्षिप्त अविश्वास किन्तु ऐसी सब व्यर्थ भविष्यवाणियों से क्या लाभ है ?

जुलिये के तमाम प्रयत्नों के बावजूद मुकदमे की जाच-पड़ताल से सम्बन्धित पूछताछ बढ़ती जा रही थी, यद्यपि उसके सारे उत्तर ऐसे थे कि काम जल्दी से जल्दी खत्म हो। वह हर रोज यही दोहराता - “मैंने हत्या की है, अथवा कम से कम पहले से सोच-समझ कर हत्या करने का प्रयत्न किया है।” पर मजिस्ट्रेट तो सबसे पहले औपचारिकता का प्रेमी था। जुलिये के बयानों से पूछताछ किसी तरह कम नहीं हुई, उनसे तो मजिस्ट्रेट के अभिमान को और भी बल मिलता था। जुलिये यह नहीं जानता था कि उन्होंने उसे एक भयंकर तहखाने की कोठरी में रखने का निश्चय किया था, और केवल फूके के प्रयत्नों के कारण ही उसे घरती से एक सौ अस्सी सीढ़ी ऊपर इस सुन्दर कमरे में रहने दिया जा सका था।

जलाऊ लकड़ी के लिए फूके का जिन महत्वपूर्ण व्यक्तियों से सम्पर्क था उनमें आबे द फिलेर भी थे। लकड़ी के इस योग्य कारबारी की पहुँच सर्वशक्तिमान प्रधान विकार के पास भी थी।

म० द फिलेर ने उसे बताया कि जुलिये के चरित्र के उत्तम गुणों से और किसी जमाने में शिक्षा-मठ की उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर उन्होंने मजिस्ट्रेट से जुलिये के पक्ष में बातचीत करने का निश्चय किया है। फूके की खुशी का ठिकाना न था और उसे अपने मित्र को बचाने की एक क्षीण-सी आशा दीखने लगी। श्रद्धापूर्वक अभिवादन करके बाहर जाते-जाते उसने प्रधान विकार से यह प्रार्थना की कि अपराधी की मुक्ति के लिए दस लुई पूजा में खर्च किये जायें।

फूके को बड़ा विचित्र भ्रम था। म० फिलेर वालनों की जात के

व्यक्ति न थे। उन्होंने उसका यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया और उस किसान को यह समझाने का प्रयत्न भी किया कि वह अपने पैसे को अलग ही रखे तो अच्छा है। यह देखकर कि अद्वारदर्शी हुए बिना अपनी बात को समझाना कठिन है, म० द फिलेर ने उसे सलाह दी कि वह इस रकम को गरीब कैदियों में बँटवा दे जिन्हें सचमुच ही हर प्रकार की वस्तुओं की आवश्यकता थी।

म० द फिलेर सोचने लगे कि यह आदमी जुलियें बड़ा अजीब है, उसका कार्य समझ में नहीं आता। पर मेरे लिए कोई चीज दुर्बोध न होनी चाहिये। शायद उसे शहीद बनाना सम्भव हो सके। मैं पता लगाऊँगा कि आखिर इस मामले की जड़ क्या है; शायद उस औरत मादाम द रेनाल को भी कुछ डराने का अवसर मिल सके। उसके मन में हम लोगों के लिए कोई इज्जत नहीं और मुझ से तो वह मन ही मन घृणा करती है। इसमें शायद कोई ऐसा उपाय भी हाथ लग जाय जिससे म० द ला मोल से समझौता हो सके। इस युवक के लिए उनके मन में बड़ी कमजोरी है।

उनके मुकदमे के कागज-पत्रों पर कुछ ही सप्ताह पहले हस्ताक्षर हुए थे और फादर पिरार ने बजासों से चलने के पहले जुलियें के जन्म-विषयक रहस्य का भी कुछ जिक्र किया था। यह सब ठीक उसी दिन हुआ जिस दिन उस अभागे युवक ने वेरियेर के गिरजाघर में मादाम द रेनाल की हत्या करने का प्रयत्न किया।

जुलिये को अपने और अपनी मृत्यु के बीच केवल एक ही अप्रिय घटना दिखाई पड़ती थी और वह थी अपने पिता से भेट। उसने फूके से इस विषय में परामर्श किया कि ज़िले के अटर्नी से कहकर किसी प्रकार मुलाकातियों का आना बन्द हो सके। ऐसे क्षण में भी पिता के प्रति ऐसी घृणा देखकर फूके के सरल निश्चल हृदय को बड़ा गहरा घक्का लगा।

यह बात अब उसकी समझ में आने लगी कि उसके मित्र से इतने

लोग ऐसी तीव्र धृणा करते हैं । पर उसके दुःख का ध्यान करके उसने अपने विचार प्रगट न किये ।

उसने कुछ रुखे स्वर में उत्तर दिया, “पर यह एकान्त-निर्वासन का आदेश तुम्हारे पिता पर लागू न होगा ।”

प्रभावशाली व्यक्ति

अगले दिन बहुत सबेरे जेलखाने के द्वार खुले । जुलिये चौंककर उठ बैठा ।

आह, हे ईश्वर ! वह सोचने लगा । मेरे पिता जी आ गये ! कैसी अप्रिय स्थिति होगी ।

उसी क्षण किसानों के-से वस्त्र पहने हुए एक स्त्री आकर उससे लिपट गयी, जुलिये को पहचानने में कुछ कठिनाई हुई । यह माद० द ला मोल थी ।

“निष्ठुर कही कै ! तुम्हारे पत्र से मुझे इससे अधिक कुछ पता न चल सका कि तुम हो कहाँ । और जिसे तुम अपना अपराध कहते हो उसके बारे में तो मुझे वेरियेर में पता चला । वह उच्च कोटि के प्रतिकार के अतिरिक्त और कुछ नहीं और उससे तुम्हारे वक्ष में घडकते हुए हृदय के उच्चतम गुण ही प्रगट होते हैं ।”

“माद० द ला मोल के विषय में अपने सन्देहों के बावजूद, जिन्हें वह स्वयं अपने आगे भी निश्चित रूप से स्वीकार न करता था, जुलिये को वह बहुत ही मोहक जान पड़ी । उनके इस व्यवहार और बातचीत में उच्च निस्वार्थ स्नेह को न पहचानना कैसे सम्भव था ? कोई क्षुद्र और कुत्सित प्रवृत्ति का व्यक्ति उन्हें प्रगट करने का साहस नहीं कर सकता । उसे लगा मानो वह अभी तक किसी साम्राज्ञी से प्रेम करता रहा हो । कुछ पल बाद जब उसने उत्तर दिया तो उसके शब्दों में और

विचारो मे एक अपूर्व ऊर्जस्वल भावना की छाप थी । “मैं भविष्य की रूपरेखा अपनी आँखों के आगे स्पष्ट देख रहा था । अपनी मृत्यु के बाद मैंने तुमसे म० द क्रवाजन्वा के साथ विवाह करने का अनुरोध किया था । मैंने सोचा था कि एक विधवा युवती का उच्च किन्तु थोड़ा-सा रोमांटिक हृदय एक विशिष्ट, दुखपूर्ण और उदात्त घटना के कारण विस्मय-चकित हो साधारण दैनन्दिन दूरदर्शिता का पुजारी हो जाता और वह तरुण मार्कि का वास्तविक महत्व पहचान लेती । तुम एक प्रकार मे लाचार होकर उन सब वस्तुओं को स्वीकार कर लेती जिन्हें दुनिया सुख कहती है—प्रतिष्ठा, धन-सम्पत्ति, उच्च पद-मर्यादा, इत्यादि । पर प्यारी मातिल्द, यदि तुम्हारे यहाँ आने का पता बजासो मे लोगो को चल गया तो म० द ला मोल को इससे बड़ा भयकर कष्ट होगा जिसके लिए मैं अपने आपको कभी न क्षमा कर सकूँगा । मैं पहले ही उन्हें बहुत दुख दे चुका हूँ । वह अकादमी-सदस्य कहेंगे कि उन्होंने आस्तीन में साँप पाल रखा था ।”

“यह तो मानना ही पड़ेगा,” माद० द ला मोल ने अर्ध-कुद्ध भाव से कहा, “कि मैंने भविष्य के प्रति ऐसी चिन्ता और इतनी खूबी दलीलो की आशा न की थी । मेरी नौकरानी भी इतनी ही मावधान रहने वाली है । उसने अपने लिए एक पासपोर्ट जुटाया और मैं यहाँ मादाम मिशले के नाम से ही जल्दी मे आई हूँ ।”

“और क्या मादाम मिशले को यहाँ मेरे पास तक पहुँचने मे बहुत आसानी हुई ?”

“ओफ ! तुम अभी तक वही श्रेष्ठ पुरुष बने हुए हो जिसने मेरा स्नेह जीता था । सबसे पहले तो मैंने सौ फ्रेंक एक मजिस्ट्रेट के सेक्रेटरी को दिये जो कहता था कि मेरा इस जेल मे प्रवेश असम्भव है । किन्तु एक बार धन ले लेने के बाद उन विनम्र सज्जन ने मुझे लटकाये रखवा और तरङ्-तरङ् की कठिनाइयों की चर्चा करने लगे । मैंने सोचा कि यह मुझे लूटना चाहते है ।” मातिल्द एकाएक चुप हो गयी ।

“फिर ?” जुलिये ने पूछा ।

“मुझसे नाराज न हो, जुलिये, प्रियतम,” मातिल्द ने उससे लिपटते हुए कहा । “हार कर मुझे अपना नाम इस सेक्रेटरी को बताना पड़ा जिसने मुझे सुन्दर जुलिये के प्रेम में पागल पेरिम की कोई वस्त्र सीने वाली समझ रक्खा था । सचमुच ये उमी के शब्द है । मैंने उससे सौगन्ध खाई कि मैं तुम्हारी पत्नी हूँ और मुझे तुमसे रोज मिलने की आज्ञा चाहिये ।”

जुलिये सोचने लगा कि यह मूर्खता की चरम सीमा है, पर मैं इसे रोक नहीं सकता । म० द ला नोन इतने बड़े सामन्त हैं कि ज़रूरत इस सुन्दर विधवा से विवाह करने वाले तरुण कर्नल के लिए आसानी से कोई न कोई बहाना ढूँढ लेगा । मेरी मृत्यु से सब बात ढँक जायगी । उसने आत्मविभोर होकर मातिल्द के प्रेम के आगे आत्मसमर्पण कर दिया । उसमें पागलपन था, आत्मा की महानता थी । मातिल्द ने गम्भीरता में उसके आगे प्रस्ताव किया कि दोनों एक साथ ही प्राण दे दें ।

प्रेम-विह्वलता के इन प्रथम क्षणों के बाद, जब उसकी जुलिये से मिलन-सुख की लालसा कुछ मिटी तो उसका मन अचानक तीव्र कौतूहल से भर उठा । वह ध्यान से अपने प्रेमी की ओर देखने लगी और वह उसे कल्पना से कहीं अधिक श्रेष्ठ दीव पड़ा । वह उसे बोनीफाम द ला मोल का और भी अधिक वीरतापूर्ण अवतार जैसा जान पड़ा ।

मातिल्द नगर के मुख्य वकीलो से मिली जो उसके खुल्लमखुल्ला घूस के प्रस्ताव से पहले तो नाराज हुए पर फिर अन्त में मान गये ।

वह शीघ्र ही इस निष्कर्ष पर पहुँच गयी कि बजासो में चोरी-छिपे के किसी भी महत्वपूर्ण मौदे में सब कुछ आबे द फिनेर के ऊपर निर्भर था ।

शुरू में मादाम मिगले के माधारग नाम के कारण उसे सर्वशक्तिमान जैस्त्रिटपथी से भेंट करने में भी बड़ी बाधा का सामना करना पड़ा । पर तरुण आबे जुलिये सोरेल को सान्त्वना देने के लिए पेरिम से आने

वाली प्रेम-विह्वल सिलाई करने वाली युवती के सौन्दर्य क चर्चा शीघ्र ही सारे शहर में फैल गयी ।

मातिल्द बजासो की सड़को में अकेली ही पैदल इधर से उधर आती-सोचती कि कोई उसे पहचान न सकेगा । कम से कम वह यह तो सोचती ही थी कि साधारण लोगों के ऊपर प्रभाव डालना उसके उद्देश्य के लिए बहुत उपयोगी तो होगा ही । अपनी मूर्खतावश वह यह कल्पना करती थी कि वह जुलिये को बचाने के लिए लोगों को दगा करने के लिए भडका सकेगी । वह यह भी सोचती थी कि उसके वस्त्र बहुत ही साधारण और दुखी स्त्री के उपयुक्त हैं । पर वास्तव में उसके वस्त्र ऐसे थे कि हर व्यक्ति की दृष्टि उसकी ओर आकृष्ट होती थी ।

बजासो में चारों ओर उसीकी चर्चा थी । आखिरकार एक सप्ताह तक प्रयत्न करने के बाद उसे म० द फिलेर से भेट का अवसर मिला । अपने सारे साहस के बावजूद धर्मसंघ के प्रभावशाली सदस्य के विषय में ऐसे आडम्बरपूर्ण, ढोंगी और धूर्त व्यक्ति की कल्पना उसके मन में थी कि बिशप के महल के द्वार पर घण्टी बजाते समय वह काँप रही थी । वह लडखड़ाती हुई-सी सीढ़ियों पर चढ़कर प्रधान विकार के कक्ष में पहुँची । बिशप के महल की निर्जनता ने उसे भय से जडीभूत कर दिया । वह सोचने लगी कि यदि बैठते ही कुर्सी मेरी बाँहों को जकड़ ले और मैं लोप हो जाऊँ तो मेरी नौकरानी किससे समाचार पूछने जायेगी ? पुलिस का कप्तान कोई परवाह ही न करेगा इस बड़े भारी शहर में मैं एकदम अकेली हूँ !

कमरे के ऊपर पहली बार दृष्टि डालते ही मातिल्द का विश्वास लौट आया । सबसे पहले तो एक बहुत ही बढिया वर्दी पहने हुए नौकर दरवाजा खोलने के लिए मौजूद था । जिस ड्राइंग रूम में उससे प्रतीक्षा करने को कहा गया वह ऐसे सुन्दर और सुरचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ था जो पेरिस के भी केवल बड़े से बड़े घरानों में ही मिलता है ।

अपनी ओर बढ़ते हुए म० द फिलेर के स्नेहपूर्ण भाव पर दृष्टि पड़ते ही भयकर अपराध की सारी आशकाएँ उसके मन से दूर हो गयी। उस सुन्दर मुख पर उसे उस जोशीली और कुछ-कुछ डरावती सदाचार-प्रियता का कोई चिह्न न दिखाई पड़ा जो पेरिसवासियों को इतनी अप्रिय है। बजासो के सर्वशक्तिमान पुरोहित के मुख पर हल्की-सी मुस्कराहट का आभास इस बात की भी घोषणा करता था कि वह व्यक्ति भद्र समाज में उठने-बैठने का अभ्यस्त है और साथ ही सुसंस्कृत धर्माधिकारी तथा सुयोग्य प्रशासक भी है। मातिल्द को लगा जैसे वह पेरिस में आ पहुँची हो।

म० द फिलेर को मातिल्द से यह स्वीकार करा लेने में कुछ ही मिनट लगे कि वह उसके शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वी मार्कि द ला मोल की पुत्री है।

“सच बात यह है कि मैं मादाम मिशले नहीं हूँ,” उसने अपने समस्त स्वाभाविक दर्प के साथ कहा, “और इस बात को स्वीकार करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि महोदय, मैं आपसे म० द वेर्ने के जेल से भाग सकने के विषय में परामर्श लेने आयी हूँ। पहले तो उन्होंने साधारण मूर्खता से अधिक कोई अपराध नहीं किया है, जिस स्त्री पर उन्होंने गोली चलाई थी वह जीवित है। दूसरे छोटे-छोटे अफसरो के लिए मैं पचास हजार फ्रैंक यहाँ इसी समय नकद और इससे दूनी रकम का वचन देने को तैयार हूँ। अन्त में, म० द वेर्ने के रक्षक के लिए मेरी और मेरे परिवार की इतनी कृतज्ञता होगी कि उसके लिए कुछ भी करना असम्भव न होगा।”

म० द फिलेर यह नाम सुनकर कुछ चकित हुए। मातिल्द ने उन्हें युद्ध-मन्त्रालय के कई पत्र दिखाये जो म० जुलिये सोरेल द ला वेर्ने के नाम लिखे गये थे।

“देखिये महाशय, मेरे पिता ने उनकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी। मैंने उनसे चुपचाप विवाह किया है क्योंकि मेरे पिता चाहते थे कि

इस विवाह की अनुमति देने के पहले, जो ल मोल परिवार के लिए बड़ी असाधारण है, म० द ला वेर्ने उच्च अफसर हो जाये ।”

मातिल्द ने देखा कि इन महत्वपूर्ण बातों की जानकारी होने के साथ-साथ म० द फिलेर के मुख से दया और हल्के विनोद का भाव शीघ्र ही गायब हो गया । गहरी कुटिलता के साथ-साथ एक प्रकार की धूर्तता का भाव उनके मुख पर झलक उठा ।

उन्हे सन्देह होने लगा था, वह सरकारी कागजों को फिर से धीरे-धीरे पढ़ने लगे ।

वह आश्चर्य से सोच रहे थे कि इस विचित्र रहस्योद्घाटन ने मेरा क्या लाभ हो सकेगा ? अचानक ही इस समय उन सुप्रसिद्ध मादाम द फेरवाक के एक बन्धु से मेरा इतना घनिष्ठ सम्पर्क हो गया है, जो—के बिशप की सर्वशक्तिमान भतीजी है, और जिनकी सहायता में फ्रांस में लोग बिशप बना करते हैं । जिसे मैं अभी तक सुदूर भविष्य की बात समझा करता था वह अप्रत्याशित रूप में ही आज मेरे सामने प्रस्तुत है । इससे मैं अपनी सारी आशाएँ पूरी कर सकना हूँ ।

जिस परम प्रभावशाली व्यक्ति के साथ मातिल्द एक दूरस्थ कक्ष में एकदम अकेली थी उसके मुख का भाव इस प्रकार अचानक बदलते देखकर पहले तो वह कुछ चौकी, किन्तु पल भर बाद ही सोचने लगी कि इस अधिकार और स्वार्थलिप्सा में डूबे हुए पुरोहित के आत्मकेन्द्रित तथा रूखे हृदय पर यदि मैं कोई भी प्रभाव न डाल सकी तो क्या यह मेरा सबसे बड़ा दुर्भाग्य न होगा ?

बिशप बनने की इस आकस्मिक और अप्रत्याशित सम्भावना से चौधिया कर और मातिल्द की बुद्धि से विस्मित होकर म० द फिलेर पल भर के लिए कुछ बेखबर हो गये । महत्वाकांक्षा से उत्सुक होकर वह उत्तेजना के कारण सचमुच काँपने लगे थे । मातिल्द को लगा कि वह अब उसके चरणों में ही गिर पड़ेगे ।

वह सोचने लगी कि बात साफ है । यहाँ मादाम द फेरवाक के मित्र के

लिए कोई चीज अमम्भव नहीं। मन ही मन बड़ी तीखी ईर्ष्या होते हुए भी उसने साहस करके यह बताया कि जुलियेँ स्वयं मारेसाल का घनिष्ठ बन्धु है और लगभग रोज शाम को उनके घर पर—के बिशप महोदय से मिला करता था।

आखिरकार आँखों में महत्वाकांक्षा की तीखी चमक के साथ और प्रत्येक शब्द पर जोर देते हुए प्रधान विकार ने कहा, “इस जिले के सब से महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से लगातार चार या पाँच बार लाट डालकर छत्तीस जूरियों की सूची भी बनाई जाय तो भी यदि प्रत्येक सूची में आठ या नौ व्यक्ति, और वे भी उनमें से सबसे अधिक बुद्धिमान, मेरे मित्र न निकले तो मैं अपने आपको बहुत ही अभाग्य समझूँगा। बहुमत लगभग अनिवार्य रूप में हर बार मुझे ही मिलेगा, निर्णय के लिए जितना आवश्यक है उससे कहीं अधिक। मादम्वाजेल, आप ही देखिये मेरे लिए छुटकारा दिलाना इतना आसान है।”

अचानक आगे द फिलेर बीच में ही चुप हो गये, मानो उन्हें अपने ही स्वर पर आश्चर्य हो उठा हो। वह ऐसी बातें स्वीकार कर रहे थे जो सांसारिक लोगों के सामने कभी नहीं कही जा सकती।

दूसरी ओर मातिल्द भी उनकी बात सुनकर विस्मय से अवाक् हो गयी। उन्होंने उसे बताया कि जुलियेँ के इस विचित्र काण्ड में बजासो वासियों के लिए सबसे अधिक आश्चर्य और दिलचस्पी की बात यह थी कि किसी जमाने में उसने मादाम द रेनाल के हृदय में बड़ा गहरा प्रेम जाग्रत किया था और बहुत दिनों तक वह स्वयं भी वैसा ही अनुभव करता था। म० द फिलेर को यह समझाने में कोई कठिनाई न हुई कि उनकी कहानी ने कितना तीखा सन्ताप उत्पन्न किया है।

वह सोचने लगे कि आखिरकार मेरा बदला पूरा हुआ। अब इस जिद्दी लड़की को काबू में करने का रास्ता निकल आया, मुझे भय था कि कहीं कोई उपाय न सूझा तो क्या होगा। उसके विशिष्ट और कुछ-कुछ दुर्बोध-से भाव के कारण उस युवती का अपूर्व सौन्दर्य उन्हें और भी

अधिक आकर्षक लगा जो इस समय लगभग याचिका की-सी मुद्रा में उनके आगे बैठी थी। उनका सारा आत्मसंयम लौट आया। मातिल्द के हृदय के भीतर कटार को और भी उमेटने में उन्हें तनिक भी सकोच न हुआ।

वह बड़ी लापरवाही के साथ बोले, “मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य न होगा कि म० सोरेल जिस स्त्री को किसी समय इतना अधिक प्यार करते थे उसके ऊपर उन्होंने दो बार गोली ईर्ष्या के कारण चलाई। वह कम सुन्दरी नहीं है और पिछले कुछ दिनों से वह दिजों के एक फादर मार्किनो से बहुत मिलने-जुलने लगी है। यह आदमी जानसेनपथी है और अपनी कोटि के सब व्यक्तियों की भाँति बिल्कुल नैतिकता हीन है।

बड़े इल्मीनान के साथ और एक प्रकार की इन्द्रिय-तृप्ति के भाव से म० द फिलेर इस रूपवती लडकी के हृदय को त्रास देते रहे जिसकी दुर्बलता उन्होंने पकड़ ली थी।

मातिल्द के ऊपर जलती हुई आँखें गढाकर वह पूछने लगे, “म० सोरेल ने अपने इस कार्य के लिए गिरजाघर को ही क्यों चुना? इस बात का इसके सिवाय और क्या कारण हो सकता है कि उस समय उनका प्रतिद्वन्द्वी भी वही पूजा कर रहा था? यह तो सभी मानते हैं, कि जिस व्यक्ति को आपकी छत्रछाया का सौभाग्य प्राप्त है, वह बुद्धिमान ही नहीं बेहद चतुर तथा दूरदर्शी भी है। फिर उसके लिए इससे अधिक आसान क्या होता कि वह चुपचाप म० द रेनाल के बाग में छिपकर बैठ जाता जिसे वह भली भाँति जानता है? यह निश्चित था कि वहाँ न तो कोई उन्हें देखता, न वह पकड़े जाते, और न कोई उन पर सन्देह करता। वह आसानी से उस स्त्री को मार सकते थे जिसने उन्हें ईर्ष्यालु बनाया था।”

ऊपर से इतनी समझदारी की इन दलीलों ने मातिल्द को पूरी तरह से विक्षिप्तप्राय कर दिया। उसकी आत्मा इतनी गर्वीली और विशिष्ट होने पर भी उस शुष्क दूरदर्शिता में डूबी हुई थी जिसे उच्च समाज

मानव हृदय की इतनी सच्ची अनुकृति समझता है । उसमे इतनी समझ न थी कि दूरदर्शिता की सम्पूर्ण उपेक्षा के उस आनन्द को समझ सके जो किसी उत्सुक ज्वलन्त आत्मा के लिए ऐसे प्रखर सुख का कारण हो सकता है । पेरिस के उच्च वर्ग मे प्रेम बड़ी मुश्किल से दूरदर्शिता से अलग होता है और केवल पाँचवी मजिल के लोग ही खिड़कियो से कूदकर प्राण देते है ।

आखिरकार आबे द फिलेर को अपनी क्षमता का पूरा निश्चय हो गया । उन्होने मातिल्द को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया (निस्सन्देह वह झूठ बोल रहे थे) कि जुलिये का मुकदमा जिस विशेष सरकारी वकील के हाथो मे है उससे वह जो चाहे करवा सकते हैं । चुनाव द्वारा छत्तीस जूरियो के नाम निर्धारित हो जाने के बाद वह कम से कम उनमे से तीस से प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत अनुरोध इस विषय मे कर सकेंगे । यदि म० द फिलेर को मातिल्द इतनी सुन्दर न लगती तो वह उसके साथ पाँचवी या छठवी भेट के पहले इतने स्पष्ट शब्दो मे कभी न बात करते ।

षड्यन्त्र

बिशप के महल से लौटने के बाद मातिल्द ने मादाम द फेरवाक के पास एक सन्देशवाहक भेजने में कोई सकोच न किया; बदनामी के भय वह तनिक भी पीछे न हटी। उसने मादाम द फेरवाक से प्रार्थना की कि वह बजासो के बिशप का लिखा हुआ एक पत्र म० द फिलेर के नाम प्राप्त कर लें। बल्कि उसने उनसे स्वयं बजासो आ जाने की प्रार्थना की। एक अत्यन्त अभिमानिनी और ईर्ष्यालु स्वभाव की महिला के लिए यह बड़ा ही उच्च तथा उदारतापूर्ण कार्य था।

फूके की सलाह मानकर उसने जुलिये को अभी तक यह न बताया था कि वह क्या कर रही है। वैसे ही उसकी उपस्थिति मात्र से जुलिये को काफी उद्विग्नता हो रही थी। मृत्यु के समीप पहुँचकर आज वह नैतिक प्रश्नों के विषय में इतना सजग हो उठा था जितना जीवन भर कभी न रहा था। उसे न केवल म० द ला मोल के कारण बल्कि स्वयं मातिल्द के लिए भी बड़ा भारी मानसिक सन्ताप हो रहा था।

वह अपने आपसे प्रश्न पूछता कि मैं उसकी उपस्थिति में कुछ खोया-खोया सा, अनमना और कभी-कभी उकताया-सा क्यों हो उठता हूँ? वह मेरे लिए अपना जीवन बरबाद किये दे रही हैं, और मैं उसका यह बदला दे रहा हूँ। क्या इसका यह अर्थ है कि मैं सचमुच ही हृदयहीन और निर्मम हूँ? जिन दिनों वह महत्वाकांक्षी था उन दिनों यह प्रश्न उसको बहुत कम परेशान करता, क्योंकि उन दिनों आगे बढ़ने में असफलता ही

उसकी दृष्टि में एकमात्र अपमान की बात थी ।

मातिल्द के सामने उसके मन की बेचैनी और भी तीव्र हो उठती थी क्योंकि मातिल्द के भीतर इस समय विचित्रतम और अत्यन्त ही उन्मत्त प्रकार का प्रेमभाव जाग्रत हो रहा था । वह उसे बचाने के लिए असाधारण से असाधारण बलिदान करने के अतिरिक्त और किसी विषय पर बात ही न करती थी ।

एक ऐसी भावना में बहकर, जिसका उसे गर्व था और जो उसके अहंकार से कहीं अधिक प्रबल था, वह यह नहीं चाहती थी कि उसके जीवन का एक भी क्षण ऐसा हो जो किसी न किसी असाधारण कार्य से भरा हुआ न हो । स्वयं अपने लिए अधिक से अधिक विपत्ति से भरपूर और अजीब से अजीब योजनाओं के ऊपर ही वह जुलिये से देर तक बातचीत करती रहती । जेलरो को इतना धन दे दिया गया था कि उसे जेल में कोई भी वस्तु मँगाने की छूट थी । मातिल्द के विचार केवल अपनी प्रतिष्ठा के बलिदान तक ही सीमित न थे; उसे इस बात की तनिक भी चिन्ता न थी कि सारे समाज को उसकी स्थिति का पता चलेगा अथवा नहीं । उसकी ज्वरग्रस्त साहसिकता से उत्तेजित कल्पना में भयंकर विचार चक्कर काटते रहते । राजा की गाड़ी के मार्ग में कहीं घुटनों के बल बैठकर जुलिये को क्षमा कर देने की प्रार्थना करना, हज़ार बार मृत्यु का खतरा उठाकर भी सम्राट् का ध्यान अपनी प्रार्थना के लिए आकर्षित करना आदि बातें भी उसके दिमाग में मँडराती रहती । राजदरबार में अपने मित्रों की सहायता से उसे इस बात का भरोसा था कि पार्क द सैन्क्लू के जो द्वार जनसाधारण के लिए बन्द हैं वहाँ प्रवेश करने की अनुमति उसे मिल सकेगी ।

जुलिये को लगता कि वह ऐसे प्रेम के लिए तनिक भी योग्य नहीं; सच बात यह थी कि वह वीर-पूजा से उकता चुका था । इस समय तो वह सरल अकृत्रिम और लगभग सकुचाये हुए-से स्नेह द्वारा ही विचलित हो सकता था । इसके विपरीत मातिल्द के अभिमानी मन में सदा एक

दर्शकवृन्द का विचार बना रहता, फिर चाहे वह दर्शकवृन्द साधारण लोगो का हो या दूसरे प्रकार का ।

अपनी इस तमाम यातना के बीच, अपने प्रेमी के जीवन के विषय में समस्त भय और आशका के बीच—जिसकी मृत्यु के बाद स्वयं जीवित न रहने का उसने निश्चय कर लिया था—उसके मन में एक गुप्त-सी आकांक्षा यह थी कि वह अपने प्रेम की प्रबलता और अपने प्रयत्नों की उच्च उदात्तता से सारे ससार को चकि त कर दे ।

इस समस्त वीर-पूजा से प्रभावित न हो सकने के कारण जुलिये बहुत उद्विग्न हो उठा । यदि उसे पता चलता कि मातिल्द उस भले आदमी फूके के स्नेहपूर्ण किन्तु अत्यन्त ही समझदार और सीमित मन को कैसी-कैसी विक्षिप्त योजनाओं से परेशान करती रहती है तो उसे कितना अधिक क्रोध होता । फूके की समझ में ही न आता था कि मातिल्द के इस प्रेम में कौन सा-दोष ढूँढे । वह स्वयं भी जुलिये को बचाने के लिए अपनी सारी सम्पत्ति को लुटाने और अपने जीवन को सकट में डालने तक के लिए तैयार था । मातिल्द जितना सोना लुटा रही थी उसे देखकर वह भौचक्का रह गया था । अन्य प्रान्तवासियों की भाँति फूके के मन में भी धन के प्रति सम्मान का भाव था और उसे इस भाँति खर्च होते देखकर पहले-पहल वह बहुत ही प्रभावित हुआ था ।

धीरे-धीरे उसे पता चला कि माद० द ला मोल की योजनाएँ अक्सर बदलती रहती हैं । अन्त में उसे एक शब्द सूझ गया जिसके द्वारा वह उसके चरित्र के दोष को व्यक्त करने में सफल हो सका : वह बहुत अस्थिर मति की लडकी है । इस विशेषण से 'जिद्दी' केवल एक ही कदम आगे है । कस्बो में इससे बड़ा दोष और दूसरा नहीं ।

एक दिन जब मातिल्द जेल से चली गई तो जुलिये सोच में पड़ गया । कितना अजीब है कि ऐसे उत्कट प्रेम का, और वह भी ऐसा जिसका लक्ष्य मैं स्वयं हूँ, मेरे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है । दो महीने पहले ही तो मैं उसके लिए पागल था ! मैंने कही पढ़ा था कि

मृत्यु पास आते ही आदमी हर चीज से विरक्त हो जाता है। पर अपने भीतर अकृतज्ञता का अनुभव और उसे दूर न कर सकने की चेतना कितनी भयकर है। तो क्या मैं अहंकारी हूँ? इस बात को लेकर वह अपनी तीव्र से तीव्र भर्त्सना करने लगा।

उसके हृदय की महत्वाकांक्षा मर चुकी थी। उसकी राख से एक और भाव उठ खड़ा हुआ था जिसे वह मादाम द रेनाल की हत्या का पश्चात्ताप कहता।

सच बात यह थी कि मादाम द रेनाल से उसे बड़ा ही उत्कट प्रेम था। जब भी वह एकदम एकान्त में और किसी विघ्न-बाधा की आशंका के बिना उन्मुक्त हृदय से वेरियर तथा वेर्जि में बिताये हुए दूरागत सुखी दिनों की स्मृतियों में डूब जाता तो उसे बड़े अनोखे ढंग का सुख अनुभव होना। वे दिन कितने जल्दी उड़ गये थे, किन्तु उस समय की छोटी से छोटी घटना भी उसे बेहद मोहक और लुभावनी जान पड़ती। पेरिस की सफलताएँ कभी उसे याद न आती, उनसे वह तग आ चुका था।

यह प्रवृत्ति दिनोदिन प्रबल होती जा रही थी और अब मातिल्द की ईर्ष्यालु आँखों को भी कुछ-कुछ दीखने लगी थी। उसे स्पष्ट दीखता था कि उसकी और एकान्तप्रियता की टक्कर है। कभी-कभी अपने भीतर आतंक के भाव से वह मादाम द रेनाल का नाम लेती। वह देखती कि सुनकर जुलिये काँप उठा है। उस क्षण से उसके प्रेम की न तो कोई सीमा रही न कोई मात्रा।

वह मन ही मन अधिक से अधिक निश्चलता के साथ कहती कि उसकी मौत के साथ-साथ मैं अपने प्राण दे दूँगी। मेरी जैसी उच्च घराने की लड़की के मृत्युदण्ड-प्राप्त प्रेमी के प्रति ऐसी लगन दिखाने से पेरिस के ड्राइगरूमों में लोग क्या कहेंगे? ऐसी भावनाओं को सम्भलने के लिए हमें योद्धाओं के युग में लौटना होगा; चार्ल्स नवें और हेनरी तृतीय के युग में ऐसे ही प्रेम से लोगों का हृदय धड़कता था।

कभी-कभी प्रबलतम भाव-विह्वलता के क्षणों में जब वह जुलिये के मस्तक को अपने हृदय से चिपटा लेती तो उसका मन इस भयकर विचार से आकुल हो उठता : क्या ! यह प्यारा मस्तक इस भाँति गिरने के लिए है ? और फिर एक प्रकार के सुख-सिक्त वीर-भाव से अनुप्राणित होकर वह सोचने लगती कि उसके चौबीस घण्टे के भीतर ही मेरे जो होठ इस समय इन प्यारे, घुँघराले बालों पर लगे हुए हैं, बरफ के समान शीतल हो जायेंगे ।

वीरता और विलिप्त तथा भयकर भावनाओं के इन क्षणों की स्मृतियाँ उसे अपने लौह-बन्धन में जकड़े रहती । आत्महत्या का विचार अपने आप में इतना आकर्षक होने पर भी अभी तक उस स्वाभिमानिनी के लिए सर्वथा अपरिचित था । अब उसने वहाँ प्रवेश करके अपना एकछत्र साम्राज्य स्थापित कर लिया था । मातिल्द बड़े गर्व के साथ सोचती कि मेरे पुंवजों का रक्त मेरे भीतर अभी ठण्डा नहीं पड़ा ।

“मैं एक कृपा की याचना तुम से करना चाहता हूँ,” एक दिन उसके प्रेमी ने उससे कहा । “अपने बच्चे को पालने के लिये तुम बेरियर में किसी नर्स को रखना । मादाम द रेनाल उस नर्स पर नज़र रखेंगी ।”

“यह तुम मुझसे बड़ी कठोर बात कह रहे हो ;” कहते-कहते मातिल्द का मुख पीला पड़ गया ।

“सचमुच, और मैं तुम से हजार बार माफी माँगता हूँ,” जुलिये ने अपने सपनों से जागते हुए कहा और उसे अपने हृदय से कस कर लिपटा लिया ।

मातिल्द के आँसू सूख जाने के बाद जुलिये ने फिर अपने मन की बात का जिक्र किया, पर इस बार अधिक सूक्ष्मता के साथ । उसने बातचीत को बड़ा उदासीभरा और दार्शनिक-सा रूप दे दिया था और उस भविष्य की चर्चा करने लगा था जो जल्दी ही उसके लिए बन्द होने वाला था । “मातिल्द प्रिय, यह तो तुम्हें मानना पड़ेगा कि मेरा-तुम्हारा प्रेम एक आकस्मिक घटना है, यद्यपि वह ऐसी आकस्मिक घटना है जो

उच्च स्वभाव वाले व्यक्तियों के साथ ही होती है। मेरे बेटे की मृत्यु वास्तव में तुम्हारे परिवार के गौरव के लिये बड़ी अच्छी बात होगी और नौकर-चाकर यही अनुमान भी लगायेंगे। दुख और लज्जा में उत्पन्न इस शिशु के भाग्य में उपेक्षा ही जुटेगी।” मुझे आशा है कि एक दिन, जिसे मैं आज निश्चित करने को आतुर नहीं हूँ, पर जिसे भविष्य में देख सकने का साहस मुझमें अवश्य मौजूद है, तुम मेरी अन्तिम सलाह को मान लोगी और मार्किट क्रवाजन्वा से विवाह कर लोगी।”

“क्या ! इस भाँति बदनामी के बाद भी !”

“बदनामी तुम्हारे जैसे नाम को नहीं छू सकती। तुम विधवा कहलाओगी और वह भा एक पागल आदमी की विधवा, बस इतना ही। बल्कि मैं यह भी कहूँगा कि मेरा अपराध धन के लालच से न होने के कारण उससे कोई बदनामी नहीं होगी। शायद उस समय तक कोई बुद्धिमान दूरदर्शी विधान-निर्माता तत्कालीन जनमत का लाभ उठाकर मृत्युदण्ड को ही बन्द करा दे। तब शायद कोई स्नेही व्यक्ति उदाहरण के रूप में कहे : ‘अरे माद० द ला मोल के पहले पति को ही ले लो— वह पागल था पर दुष्ट और धूर्त नहीं। उसका सिर काटना कितना चाहियात था !...’ तब मेरी स्मृति लज्जा की बात न रहेगी, कम से कम थोड़े दिनों बाद।” तुम्हारे साथ विवाह होने के बाद म० द क्रवाजन्वा, समाज में तुम्हारी स्थिति के कारण, तुम्हारी सम्पत्ति, बल्कि तुम्हारी प्रतिभा के कारण, ऐसा कार्य कर सकेंगे जो अपने आप कभी उनके लिए सम्भव न होगा। उनके पास अपने कुलीन परिवार और साहस के अतिरिक्त और कोई पूजा नहीं, और केवल ये गुण किसी व्यक्ति को आदर्श बनाने के लिए १७२६ में भले ही पर्याप्त रहे हो, आज एक शताब्दी बाद सर्वथा अपर्याप्त हो उठे हैं। उनके आधार पर महानता का दावा झूठा होगा। यदि आज किसी को फ्रांस में नयी पीढ़ी का नायक बनना है तो कुछ और गुणों की भी आवश्यकता होगी।

“जिस राजनीतिक पार्टी में तुम अपने पति को ले जाओगी, उस को भी तुम एक दृढ़ता और साहसिकता प्रदान करोगी। तुम मादाम द शत्रज और फ्रौन्द की मादाम द लौगविल जैसी महिलाओं की उत्तराधिकारिणी हो सकती हो। पर प्रिय, आज इस क्षण जो दिव्य अग्नि तुम्हें प्रेरित कर रही है वह उस समय कुछ-कुछ ठण्डी हो चुकेगी।”

बहुत-सी प्रारम्भिक बातों के बाद जुलिये ने आगे जोड़ा, : “मुझे यह कहने की आज्ञा दो कि आज से पन्द्रह वर्ष के भीतर तुम्हें मुझसे यह सारा प्रेम एक मूर्खतापूर्ण कार्य ही लगेगा, जो चाहे क्षम्य हो पर होगा मूर्खतापूर्ण ही -”

एकाएक वह झुप हो गया और फिर अपने सपनों में डूब गया। उनके मन में फिर वही विचार घुमड़ने लगा जिसने मातिल्द को बुरी तरह आघात पहुँचाया था पन्द्रह वर्ष के भीतर मादाम द रेनाल मेरे बेटे को प्यार करने लगेंगी और तुम मुझे भूल जाओगी।

मन की शान्ति

इन चर्चाओं में मुकदमे की जाँच-पड़ताल में बाधा पड़ गई, उसी के बाद जुलिये को अपने वकील से भेद करनी पड़ी। हर प्रकार की चिन्ता और उद्वेग से मुक्त तथा स्नेहभरे सपनों में परिपूर्ण जीवन में ये क्षण ही सर्वथा अप्रिय थे।

“वह हत्या थी और पहले से सोच-समझकर की गयी हत्या,” जुलिये ने मजिस्ट्रेट और वकील दोनों से यही कहा। “सज्जनो, मुझे दुख है कि इससे आपका काम बहुत ही हल्का हो जायगा।”

इन दोनों व्यवित्यों से छुटकारा पाने के बाद जुलिये सोचने लगा कि मुझे तो माहसी होना चाहिए, कम से कम इन दोनों व्यक्तियों से अधिक माहस दिखा सकना चाहिए। वे इस प्रकार के दुखपूर्ण अन्त को सबसे बड़ा आतंक, सबसे बड़ा दुर्भाग्य मानते हैं, मैं इस विषय में नम्रभोरतापूर्वक चिन्ता ठीक मृत्यु के दिन ही करूँगा।

यह इसीलिए कि मैंने इससे भी बड़े दुर्भाग्य का अनुभव किया है। जब मैं पहली बार स्त्रासबूर गया था और जिन दिनों मैं सोचता था कि मातिल्द ने मुझे भुला दिया है, उन दिनों मैंने इससे कहीं अधिक तीव्र यातना सहन की थी। किन्तु जिस अपूर्व घनिष्ठता के लिए मैं एक दिन ऐसा विह्वल और व्याकुल था उससे आज मैं कितना ज़दासीन हो उठा हूँ। वास्तव में इस लावण्यमयी नारी की समीपता की अपेक्षा अकेले रह जाने में कहीं अधिक सुख अनुभव होता है।

वकील कायदे-कानून वाला आदमी था। वह जुलिये को पागल समझता था और अन्य सब लोगो की भाँति इस बात में विश्वास करता था कि उसने ईर्ष्यावश ही पिस्तौल हाथ में ली थी। एक दिन उसने जुलिये को यह सुझाने का साहस किया कि यह आरोप, चाहे सच हो अथवा झूठ, बचाव के लिए एक अच्छी दलील बन सकता है। किन्तु यह सुनते ही बन्दी पलक मारते क्रोध और क्षोभ की रक्त मूर्ति बन उठा।

जुलिये ने क्रोध से उबलते हुए चीखकर कहा, “मैं आपको चेतावनी दिये देता हूँ कि अपनी खैर चाहते हैं तो ऐसी नीचतापूर्ण झूठी बात को फिर मुँह से न निकालें।” बेचारे वकील को पल भर के लिए तो लगा कि अब स्वयं उसकी ही जान गई।

वह मुकदमे की तैयारी करने लगा क्योंकि तारीख पास आती जा रही थी। बजासो में और सारे जिले में इस प्रसिद्ध मुकदमे के अतिरिक्त और किसी बात की चर्चा ही नहीं थी। जुलिये को इस सब का कुछ पता न था क्योंकि उसने सबसे कह रक्खा था कि ऐसी बातें उसके सामने न कही जायें।

एक दिन फूके और मातिल्द ने उसे यह बताना चाहा कि शहर में ऐसी अफवाहें फैल रही हैं जिनसे उसके बचाव की कुछ आशा हो सकती है। किन्तु जुलिये ने पहले ही शब्द पर उनकी बात काटते हुए कहा था :

“मुझे अपने सपनों की आदर्श जिन्दगी का आनन्द उठाने दो। तुम्हारी ये छोटी-छोटी चिन्ताएँ और परेशानियाँ, भौतिक अस्तित्व की ये बातें जो कमोवेश मेरी भावनाओं को ठेस ही पहुँचाती हैं, मुझे मेरे स्वर्ग से नीचे घसीट लायेगी। हर व्यक्ति यथासम्भव अच्छी तरह मरता है। मैं स्वयं भी अपनी मृत्यु की बात अपने ढंग से सोचना चाहता हूँ। मुझे दूसरे लोगो की क्या परवाह ? दूसरे लोगो से मेरे सम्बन्ध शीघ्र ही एकदम समाप्त हो जायेंगे। दया करके मुझसे ऐसे लोगो के बारे में और कुछ न कहो, मजिस्ट्रेट और अपने वकील से मिलना ही कुछ कम नहीं है !”

वह सोचता कि सचमुच मेरे भाग्य में शायद स्वप्नदर्शी की भाँति मरना ही लिखा है। मेरे जैसे अदना आदमी को दुनिया हफ्ते दो हफ्ते में भूल जायेगी। इस समय ढोंग रचाने से बड़ी मूर्खता और क्या होगी ? तो भी यह कितना विचित्र है कि आज जब जीवन का अन्त इतना निकट दीखता है तभी मैं जीवन की कला सीख पाया हूँ।

इन अन्तिम दिनों में प्रायः वह जेल की ऊपरी मजिल पर एक छोटे-से चबूतरे के ऊपर टहलता रहता था। मातिल्द ने उसके लिये एक आदमी भेज कर हालैंड से कुछ बढिया सिगार मँगवा लिये थे जिन्हें वह पीता रहता था। उसे इस बात का तनिक भी सन्देह न था कि शहर की अनगिनती दूरबीनें उस चबूतरे पर उसके प्रगट होने की प्रतीक्षा करती रहती हैं। उसके विचार दूर वेर्जि में खोये रहते थे। उसने स्वयं फूँके से मादाम द रेनाल की कोई चर्चा न की थी। पर दो या तीन बार उसने कहा था कि अब वह बहुत जल्दी से स्वास्थ्य लाभ कर रही है। ये शब्द उसके हृदय में जैसे गूँज उठते।

जहाँ जुलिये का मन लगभग पूरी तरह सदा विचारों की दुनिया में खोया रहता वहाँ मातिल्द एक अभिजातवर्गीय व्यक्ति की भाँति बास्नविकताओं में उलझी हुई थी। उसने मादाम द फेरवाक् और म० द फिलेर के बीच व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार की घनिष्ठता को इस स्तर तक पहुँचा दिया था कि 'विशय पद' का जादू भरा शब्द लिखा जा चुका था।

नियुक्तियों के अधिकारी बिशप महोदय ने अन्य सब बातों के साथ-साथ पुनश्च करके अपने पत्र में यह भी लिखा था कि "वह बिबारा खोरेल बस गरम मिजाज का पागल आदमी है। मुझे आशा है कि वह हमें फिर से प्राप्त हो सकेगा।"

इन पत्रियों को देखते ही म० द फिलेर लगभग हर्ष से पागल हो उठे। उन्हें कोई सन्देह ही न था कि वह जुलिये को बचा लेंगे।

छत्तीस जूरिओं के चुनाव के एक दिन पहले उन्होंने मातिल्द से

कहा, “यदि यह अनगिनती जूरियों की सूची बनाने का जैकोबिन कासून न होता, जिसका केवल एक ही उद्देश्य है कि भले घराने के लोगो के हाथ से सब अधिकार छीन लिये जाये, तो मैं फैसेले का पक्का जिम्मा ले सकता था। फादर न—को तो मैंने छुड़वाया ही था।”

अगले दिन जब नाम घोषित हुए तो म० द फिलेर को यह देखकर बहुत खुशी हुई कि उसमें पाँच नाम बजासो के धर्मसंघ के लोगो के थे और नगर के बाहर वालो में म० द वालनो, म० द म्वारो और म० द शोला के नाम थे। उन्होंने मातिल्द से कहा, “इन आठ जूरियों की ओर से तो मैं आश्वासन दे सकता हूँ। उनमें से पहले पाँच तो निरे यत्र हैं। वालनो मेरा अपना ही आदमी है, म्वारो को सब कुछ मेरी कृपा से मिला है और शोला बुद्धू है जिसे हर चीज से डर लगता है।”

अखबारो ने जूरियों के नाम छापकर सारे जिले में फैला दिये और मादाम द रेनाल ने अपने पति की अकथनीय खीभ के बावजूद बजासों आने का निश्चय कर डाला। म० द रेनाल उनसे केवल इतना ही वचन ले सके कि वह बिस्तर छोड़कर न उठेगी जिससे गवाही देने की परेशानी से बची रहे। वेरियेर के भूतपूर्व मेजर ने कहा, “तुम मेरी स्थिति नहीं समझती। अब मैं उदारपन्थी गद्दार हूँ, कम से कम लोग यही करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह शैतान वालनो और म० द फिलेर जिले के अटर्नी को तथा न्यायाधीशो को इस बात के लिए तैयार कर लेगे कि मुझे अधिक से अधिक मुसीबत में डाला जाय।”

अपने पति का यह आदेश मादाम द रेनाल ने बिना किसी कठिनाई के मान लिया। उन्होंने सोचा कि मेरे अदालत में हाज़िर होने से लगेगा कि मैं प्रतिशोध चाहती हूँ।

अपने पति तथा अपने आध्यात्मिक गुरु से तमाम वायदो के बावजूद बजासो पहुँचते ही उन्होंने अपने हाथ से छत्तीसो जूरियों को पत्र लिख भेजा :

“महाशय, मैं मुकदमे के दिन अदालत में हाज़िर होना नहीं चाहती,

क्योंकि मेरी उपस्थिति से म० सोरेल के विरुद्ध प्रभाव पड़ने की आशका है। पर मुझे ससार में एक ही चीज की, और वह भी बहुत ही प्रबल इच्छा है कि उन्हें छोड़ दिया जाय। कृपया इसमें तनिक भी सन्देह न करे कि यदि मेरे कारण एक निरपराध व्यक्ति को मृत्यु-दण्ड मिला तो इस भीषण विचार से मेरा शेष जीवन न केवल विषाक्त हो जायेगा बल्कि निस्सन्देह छोटा हो जायेगा। जब मैं स्वयं जीवित हू तो आप उन्हें मौत की सजा कैसे दे सकते हैं? नहीं, इसमें कोई सन्देह की सम्भावना नहीं कि समाज को किसी व्यक्ति से, विशेषकर जुलिये सोरेल जैसे व्यक्ति से, उसका जीवन छीन लेने का कोई अधिकार नहीं। वेरियेर में सभी जानते हैं कि वह बीच-बीच में रास्ते से भटकते रहे हैं। इस विचारे गरीब युवक के बड़े-बड़े शक्तिशाली शत्रु हैं, किन्तु उसके शत्रुओं में भी (और वे कितने हैं) ऐसा कौन है जो उसकी अद्भुत प्रतिभा और अगाध विद्वत्ता पर सन्देह कर सके? महोदय, आपको निर्णय किसी साधारण व्यक्ति के विषय में नहीं करना है। पिछले कोई अठारह महीनों से हम सब जानते हैं कि वह धार्मिक, सदाचारी और कतव्यपरायण जीवन बिताता रहा है; किन्तु वर्ष में दो-तीन बार उसे खिन्नता का ऐसा दौरा-सा आता है जो लगभग विक्षिप्तता जैसा होता है। सारा वेरियेर नगर, वेर्ज के हमारे सब पड़ोसी, मेरा समूचा परिवार और स्वयं उपजिलाधीश महोदय तक उसके आदर्श सदाचार की साक्षी देंगे। उसे पवित्र बाइबल शुरू से अन्त तक कण्ठस्थ है। क्या धार्मिक सिद्धान्तों से हीन व्यक्ति इतने दिन पवित्र धर्म-ग्रन्थों को सीखने में लगायेगा? मेरे बेटे स्वयं ये पत्र लेकर आपके पास पहुँचेंगे। वे अभी बालक ही हैं, आप उनसे इस विषय में प्रश्न पूछ कर देखिये, वे आपको इस युवक के विषय में विस्तार से ऐसी सारी बातें बतायेंगे जिनसे आपको विश्वास हो जायेगा कि उसे इस भाँति मृत्युदण्ड देना कैसा अमानुषिक कार्य है। इस भाँति मेरा प्रतिशोध लेने के बजाय आप मुझे ही मृत्यु का दण्ड दे देंगे।

“उसके शत्रु इसके विरुद्ध कौन-सी बात रख सकते हैं ? उसकी क्षणिक विक्षिप्तता के कारण, जिसके चित्त कभी-कभी मेरे बालकों ने भी अपने शिक्षक में देखे हैं, जो चोट मुझे लगी थी वह इतनी मामूली थी कि दो महीने के भीतर ही मैं गाड़ी से यात्रा करके वेस्टियर से बजासों आ सकी हूँ। महोदय, यदि मुझे यह आशंका हुई कि ऐसे निरपराध व्यक्ति को कानून की बर्बरता से बचाने में आपको तनिक भी हिचक है तो मैं स्वयं अपना बिस्तर छोड़कर, यद्यपि ऐसा न करने की मेरे पति की आज्ञा है, आपके पास आऊँगी और आपके पैरों पर गिरकर प्रार्थना करूँगी।

“कृपया यही घोषित कीजिये कि यह कार्य पहले से सोचकर नहीं किया गया था और आपको एक निरपराध व्यक्ति की जान लेने का पछतावा न होगा, इत्यादि, इत्यादि।”

: ४१ :

मुकदमा

अन्त में जिस दिन का मादाम द रेनाल और मातिल्द को इतना भय था वह नज़दीक आ पहुँचा ।

नगर की अमाधारण अवस्था को देखकर उनके मन में आतक और भी बढ़ा । यहाँ तक कि फूके का दृढ़ हृदय भी अविचलित न रह सका । सारा प्रान्त इस रोमाण्टिक मुकदमे को देखने के लिए बजासो में उमड़ पड़ा था ।

कई दिनों से सरायों में तिल धरने को जगह न थी । अदालत के अध्यक्ष के पास प्रवेश-पत्र के लिए आवेदनो का अम्बार लग गया था । नगर की हर महिला मुकदमे के समय मौजूद रहना चाहती थी, जुलिये की तस्वीरें सबको पर बिक रही थी, इत्यादि-इत्यादि ।

मातिल्द इस चरम क्षण के लिए—के बिशप का अपने हाथ से लिखा हुआ पत्र रखे थी । ये बिशप महोदय फ्रांस की चर्च के संचालक थे और बाकी बिशपो को नियुक्त करते थे । उन्होंने स्वयं जुलिये की रिहाई की माँग करने की कृपा की थी । मुकदमे के एक दिन पहले मातिल्द इस पत्र को लेकर सर्वशक्तिशाली प्रधान विचार के पास पहुँची ।

भेंट के बाद जब वह आँसुओं भरी आँखें लिए कमरे से चलने लगी तो म० द फिलेर ने उससे कहा, “मैं जूरी के फैसले का आपको आश्वासन देता हूँ ।” इस समय उन्होंने अपनी छद्म उदासीनता छोड़ दी थी और लगता था जैसे वह स्वयं विचलित हैं । उन्होंने आगे कहा, “इस

बात की जाँच के लिए बारह व्यक्ति नियुक्त हुए हैं कि आपके बन्धु का अपराध स्पष्ट सिद्ध होता है अथवा नहीं, और विशेष रूप से वह पहले से सोचकर किया गया था अथवा नहीं। उनमें से छ तो मेरे ऐसे मित्र हैं जिन्हें मेरी सफलता की हृदय से कामना है, और मैंने उन्हें यह बात बता दी है कि मेरा बिशप बनना न बनना उनके ऊपर निर्भर है।

“बैरन बारो द वालनो को मैंने ही वेरियेर का मेयर बनवाया है। वह अपने मातहत अफसर म० द म्वारो और म० द शोला से जो चाहे करवा सकते हैं। यह सही है कि दुर्भाग्यवश इस मामले में दो जूरी ऐसे आ गये हैं जिनके मतमत का कोई भरोसा नहीं। किन्तु उग्र उदारपंथी होने पर भी महत्वपूर्ण अवसरों पर वे चुपचाप मेरे आदेशों का पालन करते हैं और मैंने उनसे भी कहलवा दिया है कि वे म० द वालनो के साथ ही मतदान करें। मुझे पता चला है कि छठे जूरी बहुत ही धनी हैं और बड़े भारी उदारपंथी बनते हैं, उन्हें युद्ध-मन्त्रालय से किसी बड़े भारी ठेके की आशा है। इसलिए वह भी मुझे अप्रसन्न करने का साहस नहीं कर सकते। मैंने उन्हें भी सूचित करवा दिया है कि मेरे अन्तिम आदेश म० द वालनो के पास है।”

“और यह म० द वालनो कौन हैं ?” मातिल्द ने व्यग्रतापूर्वक पूछा।

“यदि आप उन्हें जानती तो आपको अपनी सफलता में कोई सन्देह न रहता। वह कड़ी जबान के व्यक्ति हैं, उद्धत, असंस्कृत और मूर्खों के जन्मजात नेता। १८१४ में उन्हें भिक्षावृत्ति से मुक्ति मिली और आज मैं उन्हें जिलाधीश बनाने वाला हूँ। उनमें यह भी सामर्थ्य है कि दूसरे जूरी यदि उनकी इच्छानुसार मतदान न करें तो उनकी कस कर पिटवाई करा दें।”

मातिल्द को थोड़ी सी तसल्ली हुई।

उसी दिन शाम को एक और बहस उसे करनी थी। जुलिये ने यह निश्चय कर रक्खा था कि मुकदमे में वह अपने पक्ष में कोई बयान ही न देगा। उसे मुकदमे के परिणाम का पक्का निश्चय था, इसलिए वह

जिरह के कष्टदायक समय को ययासम्भव सक्षिप्त रखना चाहता था ।

“मेरी ओर से सारी बातचीत मेरे वकील करेंगे,” उसने मातिल्द से कहा । “जो हो, मुझे अपने शत्रुओं के लिए एक तमाशे की भाँति बहुत देर तक वहाँ उपस्थित रहना पड़ेगा । तुम्हारे कारण मेरी इतनी जल्दी सफलता से ये कस्बेवाले बड़े हक्का-बक्का हैं और विश्वास करो, उनमें से एक भी ऐसा नहीं है जो एक ओर तो मेरे लिए मृत्युदण्ड की कामना न करता हो और दूसरी ओर मेरे सजा के लिए जाते समय झूठे आँसू बहाने का ढोंग न रचे ।”

“यह तो बिल्कुल ठीक है कि वे तुम्हें अपमानित देखना चाहते हैं,” मातिल्द ने कहा, “पर यह मैं नहीं विश्वास करती कि वे हृदयहीन हैं । बजासो में यहाँ मुझे और मेरे दुख को देखकर सब स्त्रियाँ पसीज उठी हैं, बाकी काम तुम्हारा सुन्दर चेहरा पूरा कर देगा । यदि तुम न्यायाधीश के सामने एक शब्द भी कह दो तो अदालत में उपस्थित सारे लोग तुम्हारे पक्ष में हो जायेंगे ।” वह ऐसी ही बहुत-सी बातें कहती गई ।

। अगले दिन सबेरे नौ बजे जब जुलिये अपनी जेल से उतर कर अदालत के बड़े कमरे के लिए चला तो पुलिस बड़ी कठिनाई से भारी भीड़ पर काबू पा सकी । जुलिये भली भाँति सोया था, वह बहुत शान्त था और उन ईर्ष्यालु व्यक्तियों की भाँति एक प्रकार की दार्शनिक कर्तव्य के अतिरिक्त अन्य कोई भाव उसके मन में न था । वह सोच रहा था कि ये लोग हृदयहीन नहीं हैं पर शीघ्र ही उसके मृत्युदण्ड की सराहना करेंगे । इसलिए भीड़ में पन्द्रह मिनट तक रुकने पर जब उसने देखा कि उसकी उपस्थिति ने दर्शकों के हृदय में बड़े स्नेह और कर्तव्य का संचार किया है तो उसे इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने एक भी व्यर्थ वाक्य न सुना । वह मन ही मन कहने लगा कि ये लोग, मैंने सोच रक्खा था, उससे कहीं कम द्वेषी हैं ।

। अदालत में प्रवेश करने पर उसके स्थापत्य की शोभा और सुन्दरता की ओर उसका ध्यान फहले गया । उसकी शैली शुद्ध गौथिक थी और

बहुत से सुन्दर छोटे-छोटे खम्भे अत्यधिक निपुणता के साथ पत्थर में काटकर बनाये गये थे। उसे लगा वह लन्दन आ पहुँचा है।

किन्तु शीघ्र ही उसका सारा ध्यान उन बारह अथवा पन्द्रह स्त्रियों की ओर चला गया जो कठघरे के ठीक सामने बैठी थी। न्यायाधीश और जूरियों के स्थान के ऊपर तीन छोटी-छोटी गैलरियाँ उन्हीं से भरी थी। दर्शकों की भीड़ की ओर मुड़ने पर उसने देखा कि मुख्य हॉल के ऊपर की गोल गैलरी भी स्त्रियों से भरी है। उनमें अधिकांश युवतियाँ थी और वे उसको अत्यन्त ही सुन्दर जान पड़ीं; उनकी आँखें उत्पुङ्गता से चमक रही थी। बाकी अदालत में भीड़ का कोई ठिकाना न था। लोग दरवाजों पर घुक्का-मुक्की कर रहे थे और सतरी किसी भी तरह उनको चुप कर रख पाते थे।

सबकी नज़रें जुलिये को ही डूँढ़ रही थी। जब उन्होंने उसे कैदी की ऊँची-सी बेच पर बैठते देखा तो एक प्रकार के विस्मय और आत्मीयता-भरे मर्मर शब्द से उसका स्वागत किया।

उस दिन उसे देखकर लगता था कि वह बीस वर्ष से भी कम का होगा। उसने बहुत ही सादे पर सुरुचिपूर्ण कपड़े पहन रखे थे; उसके बाल बड़े सुन्दर लग रहे थे; मातित्व ने स्वयं अपने हाथ से उसका भूगार किया था। जुलिये का चेहरा बहुत ही पीला था। वह कठघरे में अभी बैठा ही था कि उसने चारों ओर से लोगों को कहते सुना : “राम राम ! अभी कितनी कम उम्र है उसकी !” • “अरे, अभी तो वह बालक ही है !” • “देखने में वह अपनी तसवीर से कहीं अधिक सुन्दर लगता है !” इत्यादि।

“कैदी !” उसकी दायाँ ओर बैठे पुलिस के सिपाही ने कहा, “वहाँ ऊपर गैलरी में वे छः महिलाएँ बैठी हैं न ?” जूरियों के स्थान के ऊपर आगे निकली हुई एक छोटी-सी गैलरी की ओर सिपाही ने इशारा किया और आगे बोला, “वह जिलाधीश की पत्नी है। उनके ठीक बगल में ही मार्किज व म—हैं। वह महिला तो तुम्हारी बड़ी दोस्त हैं। मैंने

उन्हें मजिस्ट्रेट साहब से बातचीत करते सुना था । उनके पास ही मादाम देर्विल हैं ।”

“मादाम देर्विल !” जुलिये ने कुछ आश्चर्य से कहा और उसका माथा एकदम लाल हो उठा । वह सोचने लगा कि यहाँ से जाने के बाद वह मादाम दे रेनाल को सूचित कर देगी । उसे अभी तक मादाम दे रेनाल के बजासो में आगमन का पता न था ।

गवाहों की जाँच होने लगी । इसमें कई घण्टे बीत गये । सरकारी वकील का भाषण शुरू होते ही जुलिये के सामने छोटी-सी गैलरी में बैठी हुई दो महिलाएँ रो पड़ी । मादाम देर्विल ने वह भाव प्रगट नहीं किया, जुलिये सोचने लगा । किन्तु उसे लगा कि उनके गाल एकदम बाल हो उठे हैं ।

सरकारी वकील लच्चेदार किन्तु अशुद्ध भाषा में अपराधी की बर्बरता का बखान करने लगा । जुलिये ने देखा कि मादाम देर्विल के पास बैठी हुई महिलाओं ने इस पर बहुत तीव्र असन्तोष के चिह्न प्रगट किये । बहुत से जूरी जो स्पष्ट ही महिलाओं के मित्र जान पड़ते थे, उनसे आकर बातें करने लगे और उन्हें आश्वासन देने लगे । जुलिये ने सोचा कि शायद यह शुभ शकुन है ।

उस समय तक उसके मन में मुकदमे में भाग लेने वाले तमाम व्यक्तियों के प्रति केवल घृणा ही थी । सरकारी वकील की निरर्थक व्याख्यानबाज से उसकी खीझ का भाव और भी बढ़ा । पर धीरे-धीरे उसका जड़ीभूत हृदय इतने सब व्यक्तियों को अपने मामले में दिलचस्पी लेते देखकर पिघलने लगा ।

अपने वकील के शांत सयत भाव से उसे प्रसन्नता हुई । बैरिस्टर के बोलना शुरू करने के पहले जुलिये ने बहुत ही धीमे से उससे कहा, “लच्चेदार शब्दावली नहीं !”

“बोसे से चुराई हुई उस शब्दावली से आपका हित ही हुआ है,” उसके वकील ने कहा और सचमुच उसके वकील को बोलते पाँच मिनट

भी न हुए थे कि सब स्त्रियों के रूमाल उनके हाथों में थे ।

इस बात से प्रोत्साहित होकर वकील ने जूरियों से बहुत ही शक्ति-शाली भाषा में अपनी बात कही । जुलिये काँप रहा था, उसे लगा कि आँसू निकलने वाले हैं । हे भगवान् ! उसने सोचा, मेरे शत्रु क्या कहेंगे ?

वह अपने इस भावावेग से परास्त होने को ही था कि सौभाग्यवश उसकी दृष्टि बारो द वालनो की उद्धत मुखमुद्रा पर पड़ी ।

वह सोचने लगा, इस शैतान की आँखें कैसी चमक रही हैं ! इस ओछे क्षुद्र व्यक्ति के लिए कैसा विजय का अवसर है ! यदि मेरे अपराध का केवल एक यही परिणाम होता तो भी मुझे इसका पश्चात्ताप होना चाहिये । भगवान् जाने, वह मादाम द रेनाल से मेरे बारे में क्या कहेगा ?”

इस विचार ने बाकी सब विचारों को मिटा दिया । थोड़ी ही देर बाद जनता की समर्थन भरी आवाजों से उसे कुछ चेत हुआ । उसके वकील ने सफाई की वक्तृता अभी-अभी समाप्त की थी । जुलिये को याद आया कि इस समय उससे हाथ मिलाना चाहिये । वक्त बहुत जल्दी बीत रहा था ।

वकील और मुजरिम के लिए कुछ जलपान लाया गया । ठीक उसी समय जुलिये का एक विचित्र परिस्थिति पर ध्यान गया । एक भी महिला भोजन के लिए न गयी थी ।

“सच कहता हूँ, मैं तो भूख से मरा जा रहा हूँ,” उसके वकील ने कहा, “और आप ?”

“मैं भी,” जुलिये ने उत्तर दिया ।

“देखिये,” वकील ने उस छोटी-सी गैलरी की ओर इशारा करते हुए कहा, “वह जिलाधीश की पत्नी भी अपना भोजन यही साथ ले आई हैं । हिम्मत रखिये, सब ठीक ही चल रहा है ।” मुकदमा फिर शुरू हुआ ।

“जिस समय अध्यक्ष ने अपना अन्तिम भाषण शुरू किया तभी आधी रात के छपटे बजे और उसे अपनी बात भी बीच ही में बन्द करनी पड़ी ।

उस निस्तब्धता और चारों ओर सशय के बीच घड़ी के घटो की गूँजती हुई आवाज़ अदालत में भर गयी ।

जुलिये सोचने लगा, मेरे जीवन का अन्तिम दिन शुरू हुआ । शीघ्र ही वह अपने कर्तव्य के विचार से प्रेरित हो उठा । अब तक उसने अपनी भावनाओं को वश में रक्खा था, और एक भी शब्द न कहने के निश्चय का पालन करता आया था । पर जब अदालत के अध्यक्ष ने उससे पूछा कि उसे और कुछ कहना है तो वह खड़ा हो गया । अपने सामने उसे माँदाम देविल की आँखें दिखाई पड़ी, जो दिये की रोशनी में उसे विचित्र रूप से चमकती हुई लगी । क्या वह रो रही है ? अपनी बात आरम्भ करते-करते वह आश्चर्य से सोचने लगा । उसने कहा :

“श्रीमान् जूरियो, मैं अपने भीतर तिरस्कार के प्रति तीव्र घृणा में लाचार होकर ही इस समय बोलने को बाध्य हुआ हूँ, यद्यपि मैंने पहले सोचा था कि मृत्यु सामने होने पर मैं इसकी उपेक्षा कर सकूँगा । सज्जनो, मुझे आप ही के वर्ग में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है । मैं अपने जीवन की निम्नता के विरुद्ध विद्रोह करने वाला किसान हूँ ।

“मैं आपसे दया की भीख नहीं माँगता,” जुलिये ने आगे कहा; उसकी आवाज़ धीरे-धीरे और भी दृढ़ होती जा रही थी । “मुझे कोई भ्रम भी नहीं है, मैं जानता हूँ मौत मेरी प्रतीक्षा कर रही है । यह दण्ड समुचित ही होगा । मैंने ऐसी महिला की हत्या करने का प्रयत्न किया जो सब प्रकार से सम्मान और आदर के योग्य है । मेरा अपराध जघन्य है और पूर्व चिन्तित भी । इसलिए सज्जनो, मैं मृत्युदण्ड के उपयुक्त हूँ । पर यदि मेरा अपराध कम होता तो भी मेरे सामने उपस्थित व्यक्ति, पल भर भी कम उम्र होने के कारण मेरे ऊपर दया की बात सोचे बिना ही मुझे दण्ड देकर सदा के लिए उन नौजवानों को सबक सिखाना चाहते जो साधारण परिवार में जन्म लेकर और गरीबी से त्रस्त होकर भी अच्छी शिक्षा का अवसर पा जाते हैं और इस भाँति जिसे अमीर लोग घमण्ड के कारण ‘सम्य समाज’ कहते हैं, उसमें उठने-बैठने का

सौभाग्य हासिल कर लेते हैं ।

“सज्जनो, मेरा अपराध यही है और उसका उतना ही कठोर दण्ड भी मिलेगा क्योंकि मेरे अपराध पर विचार करने वालों में मेरे वर्ग का कोई नहीं है । जूरियो में कोई भी धनी किसान नहीं, केवल मुझसे क्रुद्ध मध्यवर्ग के ही सब व्यक्ति हैं ।”

बीस मिनट तक जुलिये इसी भाँति बोलता रहा, उसके हृदय में जो कुछ भी था वह उसने कह डाला । सरकारी वकील, जो अभिजात वर्ग का कृपाकाक्षी था, बीच-बीच में अपनी जगह से उछला पड़ता था । किन्तु जुलिये की बातचीत थोड़ी-सी विचारात्मक होने के बावजूद सभी महिलाओं की आँखों से आँसू बह रहे थे । मादाम देविल ने अपनी आँखें रुमाळ से ढँक रक्खी थी । समाप्त करने के पहले बुलिये ने फिर एक बार अपने कार्य के पूर्ण चिन्तित होने का, अपने पश्चात्ताप का तथा किसी समय मादाम दे रेनाल के प्रति अनुभव की हुई अगाध श्रद्धा और स्नेह का उल्लेख किया । मादाम देविल के मुख से चीख निकली और वह बेहोश हो गयी ।

जिस समय जूरी अपने कमरे में जाने लगे तब एक बजा था । कोई भी स्त्री अपने स्थान से न हटी थी । बहुत से पुरुषों की आँखों में भी आँसू थे । बातचीत पहले तो बहुत उत्तेजनापूर्ण थी, पर धीरे-धीरे जब जूरियो का फैसला आने में बहुत देर होने लगी तो भीड़ के ऊपर साधारण शकान के कारण एक तरह की क्लान्ति-सी छा गयी । वह बहुत ही अम्भीर क्षण था; रोशनी अब पहले मद्धिम हो गयी थी । जुलिये भी बिलकुल क्लान्त हो चुका था । उसने अपने चारों ओर लोगों को यही बाद-विवाद करते सुना कि यह देर शुभ है अथवा अशुभ । यह देखकर उसे बहुत खुशी हुई कि सब लोग उसकी भलाई ही चाहते थे । जूरियो के लौटने में देर हो रही थी, तो भी एक भी स्त्री अदालत से गयी नहीं थी ।

जैसे ही दो का घण्टा बजा बड़ी हलचल-सी सुनाई दी । जूरियों के

कमरे का छोटा-सा द्वार खुला । बारो द वालनो गम्भीर नाटकीय चाल से आगे बढे, बाकी जूरी उनके पीछे-पीछे थे । वह पहले खांसे और फिर बोले “अपनी आत्मा और विवेक को साक्षी करके कहता हूँ कि जूरियो के सर्वसम्मत निर्णय के अनुसार जुलिये सोरेल हत्या का और पूर्वचिन्तित हत्या का अपराधी है ।” इस निर्णय से मृत्यु-दंड अनिवार्य था । पल भर बाद उसकी भी घोषणा कर दी गयी । जुलिये ने अपनी घड़ी की आर देखा; उस समय सवा दो बजे थे । वह सोचने लगा, आज शुक्रवार है ।

हाँ, पर वालनो के लिए जो मुझे मौत की सजा दे रहा है, यह बडे सौभाग्य का दिन है । मेरे ऊपर इतनी कडी निगरानी है कि मादाम द लवालेत की भाँति मातिल्द मुझे बचा न सकेगी ।... इसलिए तीन दिन के भीतर इसी समय मैं उस महान अज्ञात रहस्य को जान जाऊँगा ।

उसी क्षण उसने एक चीख सुनी और वह इस लोक में लौट आया । उसके चारो ओर बैठी हुई स्त्रियाँ सिसक रही थी, उसने देखा कि सब चेहरे एक चौकोर गॉथिक खभे के पीछे एक छोटी-सी गैलरी की ओर मुडे हुए हैं । उसे बाद में पता चला कि मातिल्द वही छिपी बैठी थी । चीख दुबारा सुनाई न पडी तो सब लोगो की दृष्टि फिर जुलिये की ओर धूमि । अब पुलिस के सिपाही उसके जाने के लिए रास्ता साफ कर रहे थे ।

जुलिये ने सोचा कि उस शैतान वालनो को हँसने का कोई मौका नही देना चाहिए । कैसी भूठी और बनावटी शोक-मुद्रा में उसने वह निर्णय सुनाया जिसकी सजा मौत है ? वह बेचारा अदालत का अध्यक्ष इतने दिनों से न्यायाधीश है, पर मेरी सजा सुनाते समय उसकी आँखों में भी आँसू आ गये थे । मादाम द रेनाल के कारण उस पुरानी प्रतिद्विष्टता का बदला लेकर आज वालनो को इतनी खुशी होगी ।...तो अब मैं उन्हें कभी न देख सकूँगा । सब समाप्त हो गया ।... मैं जानता हूँ कि अन्तिम विदा भी अब हम लोब्रो के लिए असम्भव है । यदि मैं किसी प्रकार

उन्हे बता सकता कि अपने अपराध के लिए मुझ कितनी ग्यानि है तो मैं
कैसा सुखी होता ।

केवल ये शब्द मैं सोचता हूँ मुझे उचित ही दण्ड मिला है ।

कालकोठरी

लौटकर जेल में पहुँचने पर जुलिये को उस कोठरी में रखा गया जिसमें मृत्यु-दण्ड पाने वाले कैदी रक्खे जाते हैं। साधारणतः उसकी दृष्टि छोटी से छोटी वस्तु पर जाती थी, पर इस समय इस ओर भी उसका ध्यान न गया कि अब उसे जेल के ऊपर वाले कमरे में नहीं ले जाया जा रहा है। वह केवल यही सोच रहा था कि यदि अन्तिम क्षण के पहले किसी भाँति उसे मादाम दे रेनाल से मिलने का सुख मिल ही गया तो वह उनसे क्या कहेगा। उसे लगा कि वह जल्दी ही उसको बीच में टोक देगी। वह ऐसे शब्दों की तलाश करने लगा जिनको कहते ही उसका सारा पश्चात्ताप तुरन्त प्रगट हो जाय। अपनी इस करनूत के बाद मैं उन्हें कैसे यह विश्वास दिला सकूँगा कि मैं उन्हें और केवल उन्हें ही प्यार करता हूँ? क्योंकि चाहे महत्वाकांक्षा के कारण हो अथवा मातिल्द के प्रेम के कारण, अन्ततः उनकी हत्या का प्रयत्न तो मैंने किया ही था। बिस्तर में पड़ते समय उसने देखा कि चादरे किसी मोटे कपड़े की बनी हुई हैं। अब उसकी आँखें खुली। आह! मैं कालकोठरी में हूँ, वह सोचने लगा। ठीक ही है।

काउण्ट आल्तामिरा ने एक बार मुझे बताया था कि मृत्यु के कुछ समय पहले डैण्टन ने अपनी गूँजती हुई आवाज में कहा था “कैसी अजीब बात है कि ‘गिलोटीन करना’ क्रिया के रूप सब वालों में नहीं बनते। यह तो कहा जा सकता है कि मुझे ‘गिलोटीन किया जायेगा’

‘तुम्हें गिलोटीन किया जायेगा’, पर यह नहीं कहा जा सकता कि मुझे गिलोटीन किया जा चुका है।”

जुलिये आगे सोचने लगा कि यदि दूसरा जीवन हो तो क्यों नहीं ? हे ईश्वर ! यदि मुझे ईसाइयों के भगवान से मिलना पड़ा तो मेरी खैर नहीं ! वह अत्याचारी है और इसलिए प्रतिशोध के विचारों से भरा रहता है, उसकी बाइबल में भयकर दण्ड के अलावा और किसी बात का उल्लेख ही नहीं । उससे मैं कभी प्रेम न कर सका । मुझे कभी यह विश्वास भी न हो सका कि सच्चे हृदय से कोई उससे प्रेम कर सकता है । उसके पास कोई करुणा नहीं । (यहाँ जुलिये को बाइबल के बहुत से अंश याद आये ।) वह मुझे कोई अत्यन्त भयकर दण्ड देगा ।

पर यदि मेरी फेनेलो के ईश्वर से भेंट हुई ! वह शायद मुझसे कहे : “तेरे बहुत से पाप क्षमा कर दिये जायेंगे, क्योंकि तूने बहुत प्रेम किया है । ”

मैंने क्या सचमुच बहुत प्रेम किया है ? ओह ! मादाम दे रेनाल से मैं अवश्य प्यार करता था, पर मैंने उनके साथ अत्यन्त दुष्टतापूर्ण व्यवहार किया है । दूसरी चीजों की भाँति प्यार में भी मैं सरल अकृत्रिम खरे सोने को छोड़कर भूठी चमक के पीछे दौड़ता रहा ।

पर क्या-क्या सम्भावनाएँ थी ! हसार का कर्नल युद्ध छिड़ने पर दूतावास का मंत्री, शान्तिकाल में । फिर उसके बाद राजदूत—क्योंकि शीघ्र ही मैं कामकाज की अच्छी जानकारी हासिल कर लेता—और यदि मैं बिल्कुल बुढ़ा ही होता तो भी मार्किट ला मोल के दामाद को किस प्रतिद्वन्द्विता का डर होता ? मेरी तमाम मूर्खतापूर्ण भूलें क्षमा कर दी जाती, या उन्हें भी गुण ही समझा जाता । मैं प्रतिष्ठित और श्रेष्ठ व्यक्ति होता और वियना अथवा लन्दन में मौज की ज़िन्दगी बिताता ।

नहीं, यह नहीं, महाशय—तीन दिन में आपको गिलोटीन मिलने वाली है !

अपनी इस वाक्चातुरी पर जुलिये दिल खोलकर हँसा । वह सोचने

लम्बा वास्तव में आदमी के भीतर दो अलग-अलग व्यक्ति होने हैं । यह द्वेषपूर्ण विचार किसे सूझा था ?

उमने नीच पे टोکنे वाली आवाज को उत्तर दिया, ठीक है, ठीक है, मेरे मित्र, तीन दिन के भीतर गिलोटीन ही सही । म० द शोलां देखने के लिए एक खिडकी किराये पर लेंगे, शायद फादर माम्नो को साथ में खर्च में साझीदार कर ले । पर इस काम में इन दोनों महानुभावों में से कौन किसको ठगेगा ?

रोत्रू की पुस्तक 'वासस्लास' से एक अश्व अचानक उसके दिमाग में दौड़ गया ।

“लेडिसलास : ” ‘मेरी आत्मा तैयार है ।’

“राजा (उसका पिता) : ‘फाँसी का तख्ता भी तैयार है, अपना सिर उस पर रख दो’ ।”

वह सोचने लगा, उत्तर कितना सुन्दर है, और उसे नींद आ गयी । सबेरे किसी ने उसके कन्धे को जोर से दबा कर उसे उठाया ।

“क्या अभी से !” जुलिये ने अपनी मुरझाई हुई आँखें खोलते हुए कहा । उसे लगा था जैसे वह बधिक के हाथों में हो ।

पर यह मातिल्द थी । वह सोचने लगा, अच्छा हुआ उसने मेरी बात नहीं समझी । इस विचार से उसका सब समय लौट आया । मातिल्द इतनी बदली हुई लग रही थी मानो छः महीने से बीमार हो । सचमुच उसे पहचानना भी कठिन था ।

“उस शैतान फिलेर ने धोखा दिया,” वह हाथ मलते हुए बोली । क्रोध के कारण उसके आँसू नहीं निकल रहे थे ।

“कल जब मैं बोलने खड़ा हुआ तो अच्छा नहीं लग रहा था ?” जुलिये ने उत्तर में कहा । “मैं उसी समय सोच कर बोल रहा था, और जीवन में पहली बार । यह सच है, वह जीवन में शायद अन्तिम भी सिद्ध हो ।”

उस समय जुलिये मातिल्द के चरित्र के साथ उसी भाँति खेल रहा

था जमे कोई कुशल वादक अपने पियानो के परदे खेड़ रहा हो । उसने आगे कहा 'यह सही है कि मुझे उच्च परिवार में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त नहीं, पर मातिल्द ने अपनी उदात्तता से अपने प्रेमी को भी अपने स्तर तक उठा लिया है । क्या तुम सोचती हो कि बोनीफास द ला मोल अपने न्यायाधीशों के सामने इससे अधिक उत्तम व्यवहार कर पाता ?”

उस दिन मातिल्द उतनी ही अकृत्रिमता से स्नेह-विह्वल थी जितनी कोई भी गरीब लड़की कभी हो सकती है, पर वह उससे एक शब्द भी अधिक सरल भाषा में न कहना सही । एकदम अनजाने ही जुलिये उस सब यातना का बदला ले रहा था जो वह इतनी बार उसे दे चुकी थी ।

जुलिये सोचने लगा कि हम कोई नील नदी के उद्गम के विषय में नहीं जानते । नदियों की इस साम्राज्ञी को क्षुद्र धारा के रूप में देखने का सौभाग्य किसी मनुष्य को नहीं मिला है । उसी भाँति कोई मानव-दृष्टि जुलिये को दुर्बल न देख सकेगी, और विशेषकर इसलिए भी कि वह ऐसा है ही नहीं । किन्तु मेरा हृदय बड़ी आसानी से विचलित हो जाता है । साधारण से साधारण बात को भी सत्य की भाँति कहते ही मेरी आवाज भावावेग से कांपने लगती है और मेरी आँखों में आँसू तक आ जाते हैं । पाषाण-हृदय लोगो ने कितनी बार इस दुर्बलता के लिए मेरा तिरस्कार न किया होगा ! वे सोचने लगते थे कि मैं दया की भीख माँग रहा हूँ, और यह मैं कभी नहीं सहन करूँगा ।

कहते हैं, फाँसी के तख्ते के आगे खड़ा होकर डेण्टन अपनी पत्नी की याद से विचलित हो उठा था, किन्तु डेण्टन ने तुच्छ और दुर्बल-हृदय जाति को बल दिया था और शत्रु को पेरिस पहुँचने से रोका था ।

यह केवल मैं ही जानता हूँ कि मैं क्या-क्या करता । दूसरे से अधिक से अधिक यही कह सकते हैं कि मैं शायद बहुत कुछ कर दिखाता ।

पर मातिल्द के बजाय यहाँ कोठरी में यदि मादाम द रेनाल होती तो क्या मेरा अपने ऊपर इतना बस रहता । उस समूय मेरा दुख और

पश्चात्ताप इतना अधिक हो जाता कि वालनो तथा पास-पड़ोस के अन्य बुजुर्गों की दृष्टि में वह केवल मौत के जघन्य भय जैसा ही जान पड़ता । ये दुर्बल-हृदय प्राणी जो अपनी आर्थिक स्थिति के कारण प्रलोभन की पहुँच के बाहर हैं, कितने घमण्डी होते हैं । “देखो, बढई का बेटा होना क्या चीज है ।” म द म्बारो और म० द शोला, जिन्होंने अभी-अभी मुझे मृत्यु का दण्ड दिया है, यही कहते । आदमी चाहे विद्वान् और वतुर भले ही हो जाय, पर हिम्मत ! ..हिम्मत ऐसी चीज नहीं है जो सिखाई जा सके । मेरी इस बेचारी मातिल्द को भी नहीं, जो इस समय रो रही है, बल्कि जिससे अब और रोया भी नहीं जाता । उसकी लाल आँखों को देखकर वह सोचने लगा । और उसने उसे कस कर अपनी बाँहों में बाँध लिया । उस वास्तविक शोक को देखकर वह अपनी सारी दार्शनिकता भूल गया । वह मन ही मन कह उठा कि शायद यह रात भर रोती रही है, किन्तु एक दिन इस स्मृति से उसे कितनी लज्जा आयेगी ! वह सोचेगी कि यौवन के शुरू में मैं अपने भोलेपन के कारण एक नीच तुच्छ व्यक्ति के बहकाने में आ गयी थी । .. वह आदमी क्वाजन्वा इतना दुर्बल तो है ही कि उससे विवाह कर ले, और मुझे विश्वास है कि वह उन्नति करेगा । मातिल्द उसके द्वारा अवश्य कोई न कोई महत्वपूर्ण कार्य करवा सकेगी । एक कविता की पक्तियाँ उसके दिमाग में कौंध गयी । कैसी अजीब बात है ! मौत की सज़ा सुनने के बाद से अनगिनती पक्तियाँ मुझे याद आ रही हैं । निश्चय ही यह मानसिक ह्रास का चिह्न होगा ।

मातिल्द बहुत ही क्षीण आवाज़ में उससे कहे जा रही थी “वह यही है, दूसरे कमरे में ।” आखिरकार जुलिये का ध्यान उसकी बात की ओर गया । वह सोचने लगा कि उसकी आवाज़ सचमुच क्षीण हो गयी है, पर उसके स्वर में इस लड़की का सारा राजसी स्वभाव अभी तक प्रगट होता है । उसने अपना स्वर इसलिए धीमा कर रखा है कि कुछ न हो उठे ।

“कौन है ?” उसने धीमे से पूछा ।

“वकील, अपील के ऊपर तुम्हारे दस्तखत कराने के लिए ।”

“मैं अपील नहीं करूँगा ।”

“क्या ! अपील नहीं करोगे !” उसने अपना स्वर ऊँचा करते हुए कहा । उसकी आँखें क्रोध से जल रही थी । “क्यों नहीं ? बताना जरा ।”

“क्योंकि इस क्षण मैं अनुभव करता हूँ कि अधिक हँसी उड़वाये बिना ही मर जाने का साहस मुझ में मौजूद है । यह आश्वासन मुझे कौन देगा कि दो महीने बाद इस सील भरी कोठरी में इतने दिनों रह चुकने पर मेरा मन ऐसा ही बना रहेगा ? मुझे पहले से ही पुरोहितों के साथ, अपने पिता के साथ, भेट की सम्भावना दीख रही है ।... मैं इससे अधिक अप्रिय स्थिति की कल्पना नहीं कर सकता । मुझे मर जाने दो ।”

इस अप्रत्याशित मतभेद से मातित्व के स्वभाव का सारा उद्धत अश उभर आया । बग़ासो जेल में मुलाकातों के समय से पहले वह आबे द फ़िलेर से मिल न सकी थी । इमे लेकर उसके मन में जो गुस्सा था वह जुलिये के सिर पर टूटा । वह उसके पीछे पागल थी, पर अगले पन्द्रह मिनट तक वह तरह-तरह से उसके चरित्र को दोष देती रही और इस बात के लिए पछताती रही कि वह क्यों उसके प्रेम में पड़ी । द ला मोल भवन के पुस्तकालय में एक दिन जिस भाँति उसने जुलिये के ऊपर अपमानजनक बातों की वर्षा की थी वही घमण्ड का भाव इस समय फिर प्रगट हो उठा ।

“भगवान् को यह चाहिये था कि तुम्हें पुरुष बना ता,” जुलिये ने उससे कहा ।

वह सोच रहा था कि लोगों की तरह-तरह की अपमानजनक और बदनामीभरी मनगढन्त बातों का लक्ष्य बनकर, और सान्त्वना के रूप में केवल इस पागल लडकी की कहा-सुनी के साथ, इस गन्दी जगह में दो महीने और जीवित रहना नितान्त मूर्खता है । तो फिर ठीक है-

परसो मैं उस आदमी के साथ द्वन्द्व-युद्ध लड़ूंगा जो अपनी अद्भुत निपुणता के लिए प्रसिद्ध है। (उसकी आत्मा के भीतर शैतान ने कहा, सचमुच बहुत अद्भुत है, उसका निशाना कभी नहीं चूकता।)

बहुत ठीक, यही पक्का रहा, यही उत्तम भी है। (मातिल्द की ओजस्वी वक्तृता अभी चल रही थी।) जुलिये ने मन ही मन कहा, नहीं, हे ईश्वर, नहीं, मैं अपील नहीं करूँगा।

यह निश्चय कर लेने के बाद वह फिर सपनों में डूब गया। डाकिया सदा की भाँति छ' बजे अखबार लायेगा। म० द रेनाल के पढ चुकने के बाद आठ बजे एलिजा चुपचाप मादाम द रेनाल के कमरे में प्रवेश करके अखबार को उनके पलंग पर रख देगी। बाद में उनकी नींद खुलेगी, अचानक पढते-पढते वह कुछ व्यथित हो उठेगी, उनका सुन्दर हाथ काँपने लगेगा, पढते-पढते वह इन शब्दों तक आ पहुँचेगी "दस बजकर पाँच मिनट पर उसकी जीवन-लीला समाप्त हो गयी।

उनके गरम-गरम आँसू बह निकलेगे, मैं उन्हें जानता हूँ। इस बात से कोई अन्तर न होगा कि मैंने उनकी हत्या का प्रयत्न किया। सब कुछ भुला दिया जायेगा, और मैंने जिम स्त्री के प्राण लेने की कोशिश की, एकमात्र वही मेरी मृत्यु के लिए सच्चे दिल से रोयेगी।

ओह ! कैमा विरोधाभास है ! वह सोचने लगा, और अगले पन्द्रह मिनट तक, जिस बीच मातिल्द निरंतर उसे भली-बुरी सुनाती रही, वह केवल मादाम द रेनाल की बात ही सोचता रहा। अपनी इच्छा के बावजूद, और बीच-बीच में मातिल्द की बात का उत्तर देते हुए भी, वह अपनी स्मृति को वेरियेर के शयन-कक्ष से न हटा सका। वह देखने लगा कि 'गाजेत द फ्रास' नारंगी रंग के बिस्तर पर पड़ा है; उसने देखा कि वह बर्फ जैसा गोरा हाथ व्याकुल भाव से अखबार को पकड़े हुए है, उसने देखा कि मादाम द रेनाल रो रही है। "वह उस सलोन में मुख पर लुढ़कते हुए प्रत्येक आँसू को आदि से अन्त तक देखता रहा।

माद० द बा मोल ने जुलिये से कुछ भी मनवा सकने में असफल

होकर अन्त मे वकील को अन्दर बुलवा लिया। सयोगवश वह १७६६ मे सेना का कप्तान था, और इटली मे मानवेल के साथ-साथ लडा था। उसने जुलिये के निर्णय का विरोध किया। जुलिये ने उसके सम्मान का ध्यान रखकर उसे अपने सारे कारण समझाये।

“यह मानता हू कि आदमी आपकी तरह से भी सोच सकता है,” वकील महोदय ने, जिनका नाम म० फेलिवानो था, अन्त मे उससे कहा। “पर आपके पास अपील करने के लिए अभी तीन दिन हैं और यह मेरा कर्तव्य है कि मैं यहाँ प्रतिदिन आपसे पूछने के लिए आऊँ। अगले दो महीनो मे यदि इस जेल के नीचे कोई ज्वालामुखी प्रगट हो जाय तो आपकी जान बच सकती है। किसी रोग से भी तो आपकी मृत्यु हो सकती है,” उसने जुलिये की ओर देखते हुए कहा।

जुलिये उससे हाथ मिलाकर बोला, “धन्यवाद, आप सज्जन आदमी हैं। मैं सोच देखूँगा।”

और जब आखिरकार मातिल्द वकील के साथ चली गई तो उसकी अपेक्षा वकील के लिए उसके मन मे कहीं अधिक मैत्री-भाव था।

: ४३ : पुराना प्रेम

एक घण्टे बाद अचानक बड़ी गहरी नीद से वह चौक कर जागा। उसे लगा कि उसके हाथ पर टपटप आँसू गिर रहे हैं। ओफ, फिर मातिल्द आ गई। उसने अर्ध-जाग्रत अवस्था में सोचा। वह अपने वचन की पक्की है, अब वह प्यार की कोमल भावनाओं द्वारा मेरा निश्चय ढिगाने के लिए आई है। ऐसे करुणाजनक वार्तालाप की सम्भावना से अस्त होकर वह आँखें मूँदे ही पड़ा रहा। अपनी पत्नी से भागते हुए बैलफँगौर की पक्तियाँ उसे याद पड़ी।

उसे एक विचित्र-सी आह सुनाई दी; उसने अपनी आँखें खोल दी—
मादाम, दे रेनाल वहाँ बैठी थी।

“ओह, तो मृत्यु के पहले एक बार तुम्हारे दर्शन हो गये ! क्या यह कोई भ्रम है ?” वह चीख उठा और उनके पैरों पर गिर पड़ा।

“पर मुझे क्षमा कीजिये, मैडम,” उसने तुरन्त ही होश में आते हुए कहा। “आपके लिए तो मैं बस एक हत्यारा ही हूँ !”

“जुलिये, मैं तुमसे अपील के लिए अनुनय करने आई हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम नहीं करना चाहते।” सिसकियों से उनका गला रुँध गया, वह आगे कुछ न बोल सकी।

“क्या आप मुझे क्षमा करने की कृपा करेगी ?”

“प्रियतम, यदि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें क्षमा कर दूँ तो तुरन्त अपने मृत्यु-दण्ड के विरुद्ध अपील कर दो,” उन्होंने उठकर उससे लिपटते

सुर्ख और स्याह

हुए कहा ।

जुलिये ने चुम्बनो से उनका मुख आच्छादित कर दिया ।

“क्या तुम अगले दो महीनो तक रोज मुझ से मिलने आओगी ?”

“सौगन्ध खाती हूँ, जरूर आऊंगी, रोज । मेरे पति ने मना कर दिया तो दूसरी बात है ।”

“तो मैं अपील कर दूँगा ।” जुलिये ने उसे देखकर कहा । “सच ! तुमने मुझे क्षमा कर दिया ? क्या यह सचमुच सम्भव है ?”

उसने उन्हे अपनी बाहो में कस लिया, उसका होशहवास जाता रहा था । उनके मुँह से एक हल्की-सी चीख निकली । वह बोली, “और कुछ नहीं, बस कुछ दर्द होने लगा था ।”

“शोली कन्वे मे लगी थी न ।” जुलिये ने आँखों में आँसू भर कर कहा । वह थोड़ा-सा पीछे हट गया और उनके हाथ को जलते हुए चुम्बनो से भर दिया । “पिछली बार जब बेरियर में तुम्हारे सोने के कमरे में मुलाकात हुई थी तो इस बात की किसने कल्पना की थी ?”

“यही कौन कह सकता था कि मैं वह लज्जाजनक पत्र म० द ला मोल को लिखूँगी ?”

“सच कहता हूँ, मैं सदा तुम्हें प्यार करता रहा, तुम्हारे सिवाय किसी को मैंने कभी प्यार नहीं किया ।”

“सचमुच ?” मादाम द रेनाल ने खुशी से भर कर कहा । जुलिये घुटनो के बल उनके सामने बैठा था । वह उसके ऊपर झुक गयी और देर तक वे दोनों एक साथ चुपचाप रोते रहे ।

जुलिये ने अपने जीवन में पहले कभी ऐसे क्षण का अनुभव न किया था । बहुत देर बाद जब वे प्रकृतिस्थ हुए तो मादाम द रेनाल कहने लगीं, “और वह लडकी मादाम मिशले, बल्कि माद० द ला मोल—मैं तो सचमुच इस विचित्र प्रेम-कथा पर विश्वास करने लगी हूँ !”

“वह बस ऊपर से ही सच है,” जुलिये ने उत्तर दिया । “वह मेरी पत्नी है, पर मेरे हृदय की स्वामिनी रही ।” ..

और इस भाँति सौ बार बीच में टोकते हुए बहुत कठिनाई के साथ उन्होंने एक दूसरे को वे सब बातें बता दी जो वे न जानते थे । म० दत्ता मोल को लिखा गया पत्र उस तक्षण पुरोहित का काम था जो मादाम द रेनाल का धर्मगुरु था । पत्र को बाद में उन्होंने अपने हाथ से नकल करके भेज दिया था । “धर्म ने मुझसे कैसा जघन्य काम करवा लिया है !” वह कहने लगी, “फिर भी मैंने पत्र के अधिक भयकर अशो को हल्का कर दिया था ।”

जुलिये के हर्षातिरेक से यह स्पष्ट प्रगट था कि उसने उन्हें पूरी तरह क्षमा कर दिया । ऐसे पागल प्रेम का अनुभव उसने पहले कभी न किया था ।

“तो भी मैं अपने आपको धार्मिक मानती हूँ,” बातचीत के दौरा में मादाम द रेनाल ने कहा । “मैं सच्चे दिल से भगवान् में विश्वास करती हूँ; उतने ही सच्चे दिल से मैं इस बात में विश्वास करती हूँ, और सचमुच यह सिद्ध भी हो चुका है कि जो पाप मैं कर रही हूँ वह बड़ा भयकर है । किन्तु दो बार तुम्हारे मुँह पर पिस्तौल चलाने के बाद भी जैसे ही मैं तुम्हें देखती हूँ...” यहाँ उनके लाख रोकने पर भी ज़ुलिये ने एक बार फिर उनके मुख को चुम्बनो से आच्छादित कर दिया ।

“मुझे छोड़ो तो सही,” उन्होंने कहा । “भूलने के पहले मैं तुमसे गम्भीरतापूर्वक बात करना चाहती हूँ । तुम्हें देखते ही मेरा कर्तव्य-बोध गायब हो जाता है । तुम्हारे प्रति प्रेम के अतिरिक्त और मेरे भीतर कुछ नहीं बचता, बल्कि ‘प्रेम’ शब्द बहुत ही अपर्याप्त है । मैं तुम्हारे लिये कुछ ऐसा अनुभव करती हूँ जो मुझे केवल भगवान् के लिए ही करना चाहिए—आदर, प्रेम और आज्ञाकारिता, सब एक साथ, मिश्रित ।...” सच पूछो तो मैं जानती नहीं कि तुम्हारे प्रति मेरे हृदय में कौन-से भाव हैं... यदि तुम मुझ से जेलर के हृदय में छुरा भोक्ने को कहो तो कुछ सोचने के पहले ही मैं यह अपराध कर बैठूँगी । जाने के पहले तुम इस बात को मुझे ठीक-ठीक समझा दो, मैं अपने हृदय को स्पष्ट देखना चाहती हूँ । बो... महीने में तो हमको फिर एक दूसरे से विदा लेनी ही

होगी। पर हाँ, क्या सचमुच हमें विदा लेने की आवश्यकता होगी ?”
उन्होंने मुस्कराते हुए उससे पूछा।

“मैं अपना वचन वापिस लेता हूँ,” जुलिये ने उछल कर खड़े होते हुए कहा। “अगर तुम विष, छूरा, पिस्तौल, कोयला अथवा किसी अन्य उपाय द्वारा अपने जीवन को समाप्त करने का अथवा उसे किसी जोखिम में डालने का प्रयत्न करोगी तो मैं अपील नहीं करूँगा।”

मादाम द रेनाल के मुख का भाव एकाएक बदल गया। प्रेम-विह्वलता का स्थान अनमनी एकाग्रता ने ले लिया।

“यदि हम लोग यहाँ और इसी समय मर जायें तो ?” उन्होंने आखिरकार कहा।

“कौन जानता है अगले जीवन में हमें क्या मिलेगा ?” जुलिये ने उत्तर दिया। “शायद याननाएँ, शायद कुछ नहीं। हम लोग ये दो सहीने अधिक से अधिक आनन्द के साथ क्यों नहीं बिता सकते ? दो सहीने तो बहुत होते हैं। मुझे इतना सुख और कभी न मिल सकेगा।”

“इतना सुख कभी न मिल सकेगा ?”

“कभी नहीं,” जुलिये भाव-विह्वल स्वर में बोला। “मैं तुमसे ऐसे ही बात कर रहा हूँ जैसे अपने मन से करता हूँ। इसमें तनिक भी अतिरजना नहीं।”

“इस तरह से कहना तो मुझे आज्ञा देने के बराबर है,” उन्होंने एक दबी हुई उदास मुस्कराहट के साथ कहा।

“अच्छी बात है। तो सौगन्ध खाओ, मेरे प्रति अपने प्यार की सौगन्ध खाकर कहो कि किसी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष उपाय से अपनी जान खेने का प्रयत्न न करोगी। याद रखो तुम्हें मेरे बेटे के लिए जीवित रहना होगा। भ्रातृत्व तो मार्किज द कवाजन्वा होते ही उसे भाड़े के आदमियों के हाथों छोड़ देगी।”

“मैं सौगन्ध खाती हूँ,” उन्होंने कुछ नीरस स्वर में उत्तर दिया।

“पर आज मैंने तुम्हारे अपने हाथों लिखी हुई अपील लेकर जाने का पक्का

निश्चय कर लिया है। मैं स्वयं उसे जिला अटर्नी के पास ले जाऊँगी।”

“पर इसमें तो तुम्हारी बदनामी होने का डर है।”

“जेल में तुमसे मिलने आने के बाद,” उन्होंने बहुत गहरी पीड़ा के स्वर में कहा, “मैं सदा के लिए, बजातो और फ्रांश-कोते भर में, बदनामी उड़ाने वालों की कहानियों की नायिका बन चुकी हूँ। शीज़-सद बार की सीमा में लॉघ आई हूँ। मैं अब ऐसी स्त्री हूँ जो अपना सम्मान और लज्जा गँवा बैठी है। यह सच है कि यह सब तुम्हारे ही लिये किया है।”

उनके स्वर में ऐसी उदासी की गूँज थी कि जुलिये ने उन्हें एक सर्वथा नये सुख के भाव से हृदय से लगा लिया। यह प्रेम की विक्षिप्त विह्वलता न थी, गहन आन्तरिक कृतज्ञता थी। उसे पहली बार अनुभव हुआ कि उन्होंने उनके लिये कितना बड़ा त्याग कर डाला है।

निस्सन्देह किसी उदार हृदय व्यक्ति ने म० द रेनाल को उनकी पत्नी के जुलिये से मिलने की सूचना दे दी। तीसरे ही दिन उन्होंने गाड़ी भेजी और उन्हें तुरन्त वेरियेर लौटने का आदेश दिया।

इस निर्मम विच्छेद से दिन का प्रारम्भ जुलियो के लिए बहुत ही अशुभ हुआ। दो-तीन घण्टे बाद उसे पता चला कि किसी घूर्त पुरोहित ने, जो बजासो के जैस्विटपथियों के ऊपर प्रभाव न डाल सका था, उस दिन सबेरे से जेल के दरवाजे के आगे अड्डा जमा दिया है। वर्षा जोरों से हो रही थी और वह व्यक्ति वहाँ शहीद के भाव से खड़ा था। जुलिये इस सब बेवकूफी के लिए तैयार न था। इससे वह बहुत ही क्षुब्ध हुआ।

अगले दिन सबेरे जुलिये ने उससे मिलने से इन्कार कर दिया, पर उस आदमी ने यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वह जुलिये का पाप-स्वीकार प्राप्त करेगा ही और इस भाँति बहुत-सी रहस्य-भरी बातें जान कर बजासो की युवतियों में अपने लिये नाम पैदा कर लेगा।

यह आदमी गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाता रहा कि वह दिन-रात जेल के द्वार पर ही बैठा रहेगा। “भगवान् ने मुझे इस अधार्मिक व्यक्ति

के हृदय को द्रवित करने के लिए भेजा है।" लोग तो ऐसे तमाशे के लिये तैयार ही रहते हैं, उनके चारों ओर भीड़ जमा होने लगी।

"हाँ भाइयो," वह उनसे कहता, "मैं यहाँ दिनों-रात घरना दूँगा। मुझे भगवान् का आदेश मिला है। मुझे इस नौजवान सोरेल की आत्मा को बचाने का भार दिया गया है। आप भी मिल कर मेरे साथ प्रार्थना कीजिये, इत्यादि-इत्यादि।"

जुलिये को बदनामी से और किसी भी कार्य द्वारा अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने से बड़ी घृणा थी। वह सोचने लगा कि चुपचाप दुनिया से भाग निकलने का कोई अवसर ढूँढा जाय अथवा नहीं। पर उसे अभी भी मादाम द रेनाल से फिर मिलने की आशा थी, और उसके प्रेम का कोई पारावार नहीं था।

जेल के दरवाजे एक बहुत ही चालू सड़क पर थे। इस कीचड़सने पुरोहित के भीड़ इकट्ठा करने और बदनामी फैलाने के विचार से जुलिये को बहुत ही कष्ट हो रहा था। इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि हर क्षण वह मेरा नाम ले रहा होगा। यह स्थिति उसे मृत्यु से भी अधिक कष्टदायक जान पड़ी।

दो-तीन बार घण्टे-घण्टे भर बाद उसने सतरी को, जो उससे हमदर्दी रखता था, यह देखने के लिए बाहर भेजा कि वह पुरोहित अभी जेल के दरवाजे पर बैठा है अथवा नहीं।

"वह कीचड़ में घुटने के बल बैठा है," सतरी हर बार लौटकर उसे बताता। "वह गला फाड़-फाड़ कर प्रार्थना कर रहा है और आपकी आत्मा को बचाने के लिए मंत्र पढ़ रहा है।" "घूर्त शैतान कहीं का!" जुलिये सोचने लगा। उसी समय उसने सचमुच एक महरी गुँजती हुई आवाज सुनी, इकट्ठी भीड़ उसके साथ-साथ मंत्र-पाठ कर रही थी। जब उसने स्वयं सतरी के होठों को मंत्रों का उच्चारण करते देखा तो उसका बीरज बिल्कुल जाता रहा। सतरी ने कहा, "लोग कहते हैं कि आर्यका हृदय सचमुच कठोर हो चुका है, क्षमी आप इस बेचारे धर्म-गुरु

की सहायता लेने से इन्कार कर रहे हैं।”

“हे मेरे देश ! कैसी बर्बर अवस्था में तुम अभी तक पड़े हो !” जुलिये ने क्रोध से विक्षिप्त अवस्था में चीखकर कहा और वह सतरी की उपस्थिति को भूल जोर-जोर से अपने विचारों को व्यक्त करता रहा।

“यह आदमी अखबार में एक लेख चाहता है, जो अब उसे मिलना निश्चित है। ओफ ! ये शैतान कस्बेवाले ! पेरिस में मुझे ये सब मुसीबतें न उठानी पड़ती। उन लोगों का ढोंग और कपट कहीं अधिक सूक्ष्म है।”

“इस पुरोहित को अन्दर ले आओ,” आखिरकार उसने सतरी से कहा। उसके मुख पर पसीने की धार छूट रही थी। सतरी ने क्रास का चिह्न बनाया और खुश होकर बाहर चला गया।

पुरोहित बेहद कुरूप व्यक्ति था और कीचड़ से गन्दा भी हो रहा था। बाहर की वर्षा और सर्दियों के कारण जुलिये की कोठरी अधिक अँधेरी थी और सीलन भी बढ गयी थी। पुरोहित ने जुलिये का आलिङ्गन करने का प्रयत्न किया और उसके आगे दयनीय भाव से व्यवहार करने लगा। स्पष्ट ही यह नीचता और पाखण्ड की हृद थी। जुलिये को इतना अधिक क्रोध जीवन में कभी न आया था।

पुरोहित के आगमन के पन्द्रह मिनट बाद जुलिये को लगा कि वह एकदम कायर हो उठा है। पहली बार मृत्यु उसे बड़ी डरावनी जान पड़ी। वह सोचने लगा कि मरने के दो दिन बाद ही उसका शरीर कैसे सड़ने लगेगा इत्यादि-इत्यादि।

वह किसी प्रकार दुर्बलता प्रगट करके, अथवा पुरोहित को पकड़ कर अपनी जजीर से उसका गला घोटकर अपना क्रोध प्रगट करने ही वाला था कि एकाएक उसे बड़ी बढिया बात सूझी। उसने पुरोहित से कहा कि वह चालीस फ्रेक की पूजा रोज उसके नाम से कर दिया करे। उस समय अभी दोपहर ही थी, इसलिए पुरोहित जल्दी से बाहर चला गया।

सुख और स्याह

: ४४ :

सत्य क्या है ?

पुरोहित के जाते ही जुलिये चीखकर रो उठा और उसके आँसू अपनी मृत्यु के लिए थे । धीरे-धीरे उसके मन में विचार आया कि यदि मादाम द रेनाल वजासो में होती तो वह अपनी दुर्बलता उनके आगे स्वीकार कर लेता ।

जिस समय वह अपनी इस प्रियतमा की अनुपस्थिति के लिए बेहद दुखी हो रहा था उसी समय उसने मातिल्द के पैरो की चाप सुनी । वह सोचने लगा कि जेल में होने का सबसे बड़ा अभिशाप यह है कि आदमी अपने कमरे के द्वार कभी बन्द नहीं कर सकता । उस समय मातिल्द ने जो कुछ भी कहा उससे उसकी खीझ और भी बढ़ी ।

वह उसे बताने लगी कि मुकदमे के दिन ही म० द वालनो को जिलाधीश नियुक्त होने का परचा मिल गया था । उसे जेल में रखकर उन्होंने म० द फिलेर को अगूठा दिखा दिया और जुलिये को मौत की सजा सुनाने का आनन्द उठाया ।

“म० द फिलेर अभी-अभी मुझसे कह रहे थे, मध्यवर्गीय धनिकों के क्षुद्र अहंकार पर आघात करने में आपके बन्धु का क्या उद्देश्य था ? जाति का जिक्र किया ही क्यों जाये ? आपके बन्धु ने ही उन्हें यह सुझा दिया कि अपनी पार्टी के हित में उनका कर्त्तव्य क्या है, उन मूर्खों को यह बात पल भर के लिए भी न सूझी थी और वे सब आँसू बहाने को तैयार थे । पर जातिगत हित का विचार आते ही वे ऐसे अंधे हो गये कि

आदमी को मृत्युदण्ड देने में भी न हिचके। यह तो आप मानेंगी कि म० सोरेल इन सब मामलों में बहुत ही अनाड़ी है। यदि हम उनकी क्षमा-याचना के प्रार्थना-पत्र के आधार पर उन्हें न बचा सके तो उनकी मृत्यु एक प्रकार की आत्महत्या ही होगी ”

मातिल्द जुलिये को वे सब बातें तो बता न सकती थी जिनका अभी स्वयं उसे भी अनुमान न था। वास्तव में इस ओर से पूरी तरह निराश होकर म० द फिलेर अब यह सोच रहे थे कि किसी प्रकार जुलिये के उत्तराधिकारी बन सके तो उनकी महत्वाकांक्षा पूरी हो सकती है।

क्रोध और झुल्लाहट से आपा खोकर जुलिये ने मातिल्द से कहा, “जाओ और मेरी ओर से पूजा करा दो, और मुझे पल भर चैन लेने दो।”

मातिल्द जुलिये के इस चिड़चिड़ेपन का कारण समझती थी। मादाम द रेनाल से उसे बहुत ईर्ष्या होती थी और उसे अभी-अभी पता चला था कि वह वापिस लौट गयी हैं। उसकी आँखों में आँसू भर आये।

उसका शोक सच्चा और हार्दिक था; जुलिये भी यह बात समझता था पर इससे उसका चिड़चिड़ापन और भी बढ़ा। उसे एकान्त की तात्कालिक आवश्यकता अनुभव हो रही थी, पर समझ में न आता था कि वह किस भाँति प्राप्त करे।

अन्त में जब किसी भी भाँति उसका दिल न पसीजा तो मातिल्द उसे अकेला छोड़कर चली गयी। उसके जाते-जाते ही फूके आ पहुँचा।

“मुझे सचमुच एकान्त की जरूरत है,” उसने अपने इस वफादार मित्र से कहा और उसे कुछ हिचकचाते देखकर आगे बोला, “मैं अपना क्षमा-याचना का प्रार्थना-पत्र तैयार कर रहा हूँ” और देखो—यदि तुम मुझे प्रसन्न करना चाहते हो तो मृत्यु का जिक्क मेरे सामने न करो। यदि उस दिन मुझे किसी विशेष सेवा की आवश्यकता पड़ी तो मैं स्वयं ही तुमसे कहूँगा।”

आखिरकार जब जुलिये को एकान्त मिला तो उसने अनुभव किया

कि वह पहले से भी अधिक हताश और अधिक दुर्बल अनुभव कर रहा है। उसकी क्लान्त आत्मा में जो भी थोड़ी-बहुत शक्ति बची थी वह माद० द ला मोल और फूके से अपनी मन स्थिति छिपाने के प्रयत्न में चुक गयी।

शाम होते-होते एक विचार से उसे कुछ सान्त्वना मिली। यदि आज सबेरे जब मृत्यु मुझे इतनी भयकर दीख रही थी, मुझे मौत के लिए तैयार होने को कहा गया होता तो लोगो की नज़रो का ध्यान करके मेरे स्वाभिमान को प्रेरणा मिली होती। मैं अपनी मुद्रा ऐसी बनाने का प्रयत्न करने लगता मानो कोई लजीला छैना किसी डाइग-रूम में प्रवेश कर रहा हो। इन कस्बेवालो में समझदार लोग शायद मेरी दुर्बलता का अनुमान कर लेते, पर उसे कोई देख न पाता।

और उसे लगा कि उसकी यातना थोड़ी हल्की हुई। वह मन ही मन कुछ गुनगुनाता हुआ सा कहता रहा कि मैं इस समय कायर हूँ किन्तु इसका कभी किसी को पता न चलेगा।

अगले दिन सबेरे एक और भी अप्रिय घटना उसके साथ घटने वाली थी। बहुत दिनों से उसके पिता के मिलने के लिए आने की बां थी। उस दिन सबेरे जुलिये के नींद से उठने के पहले ही श्वेतकेशी वृद्ध बढई उसकी कोठरी में आ मौजूद हुआ।

जुलिये को बड़ी दुर्बलता अनुभव हुई। उसे लगा कि अब बहुत ही अप्रिय भली-बुरी बातें सुननी पड़ेगी। इन कष्टदायक विचारों के साथ-साथ उस दिन उसे इस बात के लिये भी बड़ा पछतावा हो रहा था कि उसे अपने पिता से कोई प्रेम नहीं है।

जेल का सतरी आकर उसके कमरे में थोड़ी सफाई करने लगा। जुलिये सोच रहा था कि नियति ने इस धरती पर हम दोनों को एक दूसरे के बहुत समीप रखा किन्तु हमने जितना संभव था एक दूसरे को दुख ही दिया। अब यह मेरी मृत्यु के समय अन्तिम आघात देने के लिए आ पहुँचे हैं।

कोठरी में एकान्त होते ही वृद्ध ने अपनी डॉट-डपट शुरू कर दी । जुलिये का अपने आँसू रोक सकना असम्भव हो उठा । कैसी लज्जाजनक दुर्बलता है ! वह क्रोध में सोचने लगा । अब यह हर जगह मेरी कमजोरी का गीत गाते फिरेंगे । वालनो तथा बेरियेर में राज करने वाले उस जैसे दोगी-पाखण्डियों को इससे कैसा सन्तोष होगा । फ्रांस में आज इन्हीं लोगों का बोजबाला है । उन्हें समाज में हर तरह की सुविधा मिली हुई है । यह ठीक है कि उनके पास धन भी है और हर तरह के सम्मान की भी कोई कमी नहीं, किन्तु मेरे हृदय में उच्चता और उदात्तता का राज है ।

किन्तु इनकी साक्षी ऐसी है जिस पर सब विश्वास कर लेगे और यह कुछ बड़ा-चड़ा कर ही सारे बेरियेर को विश्वास दिलायेगे कि मौत को सामने देखकर मैं भयभीत हो उठा था । सब लोग यही समझेंगे कि इस साहस की परीक्षा में मैं कायर सिद्ध हुआ । जुलिये की हताशा का कोई ठिकाना न था । उसकी समझ में न आता था कि अपने पिता से कैसे पीछा छुड़ाये और इस क्षण किसी तिकड़म से चालाक बूढ़े को धोखा दे सकना उसके बूढ़े के बाहर था ।

उसका मन हर तरह की सम्भावनाओं पर जल्दी-जल्दी विचार करने लगा ।

“मैंने कुछ रुपया बचा कर रक्खा है ।” जुलिये ने एकाएक कहा ।

यह बड़ी प्रतिभा की सूझ थी जिसने तुरन्त ही बूढ़े के चेहरे का भाव और जुलिये की अपनी स्थिति को बदल दिया ।

“उसका मैं कैसे उपयोग करूँ ?” जुलिये ने कुछ शांत होने हुए आगे कहा ।

अपने शब्दों के प्रभाव को देखकर हीनता का भाव उसके मन से पूरी तरह गायब हो गया ।

बूढ़ा अब इस सारे धन को हथियाने के लिए बेचैन था, जिसका थोड़ा-सा अंश जुलिये अपने भाइयों को देना चाहता था । बूढ़ा बड़े

सुख और स्याह

विस्तार से और कुछ उत्तेजित भाव से बातचीत करने लगा। अब जुलिये को उसे डाँटने का मौका मिल गया।

“भगवान् ने मुझे अपने वसीयतनामे के बारे में एक प्रेरणा दी है। मैं एक हजार फ्रैंक अपने भाइयों को और बाकी आपको दे जाऊँगा।”

“यह तो बहुत ठीक है,” बूडे ने कहा, “यह बाकी धन मुझे ही मिलना चाहिए। पर जब भगवान् ने दया करके तुम्हारे हृदय को छुआ है और यदि तुम भले ईसाई की भाँति मरना चाहते हो तो तुम्हें अपने सब कर्ज चुका देने चाहिए। तुम्हारे पालन-पोषण और तुम्हारी शिक्षा में जो कुछ खर्च पड़ा था वह मैंने ही तो कर्ज के बतौर तुम्हें दिया था। उसका तुमने कोई खयाल नहीं किया।”

तो यह है पिता का प्रेम। जब आखिरकार जुलिये अकेला रह गया तो उसने बड़ी गहरी पीडा से कहा। शीघ्र ही जेलर आ पहुँचा।

“श्रीमान्, परिवार के लोगो से भेट के बाद मैं सदा यहाँ रहने वालों के लिए बढिया शैम्पेन की बोतल लाया करता हूँ। जरा दाम तो ज्यादा है, एक बोतल के छः फ्रैंक, पर उससे दिल को चैन मिलता है।”

“मेरे लिये तीन गिलास ले आओ,” जुलिये ने बच्चों की भाँति उत्सुक भाव से कहा, “और बरामदे में जिन दो कैदियों के चलने की आवाज मुझे सुनाई दे रही है उन्हें भी बुला लाओ।”

जेलर दो और कैदियों को ले आया जो किसी नये अपराध के लिए सजा पाकर आये थे। वे दोनों गुण्डे बहुत ही खुश-मिजाज थे और अपनी घूतता, साहस और टण्डे दिमाग के लिए सचमुच अद्वितीय थे।

उनमें से एक जुलिये से कहने लगा, “अगर आप मुझे बीस फ्रैंक दे तो मैं आपको अपनी ज़िन्दगी की कहानी सुना दूँ। फडक उठोगे।”

“पर तुम झूठी बातें बना करके सुनाओगे?” जुलिये ने कहा।

“आपकी सौगन्ध खाकर कहता हूँ, नहीं,” उसने उत्तर दिया। “यह मेरा दोस्त जो मेरे ये बीस फ्रैंक स्वयं हथियाने के लिए बेचैन है, कुछ भी झठ बोलते ही फौरन आपको बता देगा।”

उसकी कहानी बड़ी ग्लानिकारक थी। उसके वीर हृदय में केवल एक ही लालसा थी—स्वर्ग की।

उनके जाने के बाद जुलिये वही व्यक्ति न रहा। अपने प्रति उसका सारा क्रोध गायब हो चुका था। मादाम दे रेनाल के जाने के बाद से जिस कायरता से विषावत दुख ने उसके भीतर अपने दाँत गड़ा रखे थे, उसने अब अवसाद का रूप धारण कर लिया।

वह सोचने लगा कि जैसे-जैसे मेरा बाहरी दिखावट से मूर्ख बनना कम होने लगा था वैसे ही वैसे मुझे यह सूझना चाहिए था कि पेरिस के ड्राइगरूमों में या तो मेरे पिता जैसे ईमानदार लोग इकट्ठे होते हैं या इन कैदियों जैसे धूर्त गुण्डे। और ठीक भी है, इन ड्राइगरूम के लोगों को कभी भी सबेरे उठकर यह सार्थक प्रश्न अपने आपसे नहीं पूछना पड़ता : 'आज का भोजन कैसे मिलेगा ?' और वे ऊपर से पवित्रता का दम्भ करते हैं। और कभी उन्हें जूरी बनने का मौका मिले तो भूख से बेचैन होकर चाँदी की चम्मच चुराने वाले को वे बड़े घमण्ड से सजा सुनाते हैं।

पर कोई राजदरबार का मामला हो अथवा किसी मंत्री की गद्दी हासिल करने अथवा गँवाने का प्रश्न हो तो ये सब ईमानदार ड्राइगरूम वाले ठीक वे सब अपराध ही करते हैं जो दो कौर भोजन की आवश्यकता के कारण इन पक्के अपराधियों को करने पड़े होंगे।

नैसर्गिक नियम जैसी कोई चीज नहीं। ये शब्द केवल एक प्राचीन प्रकार की बकवास हैं और उस सरकारी वकील के ही उपयुक्त हैं जिसने मुझे उस दिन सजा दिलाई और जिसके पूर्वज चौदहवें लुई द्वारा ज्वत् की हुई सम्पत्ति से अमीर बने हैं। दण्ड के भय से किसी व्यक्ति को कोई काम करने से रोकने वाले कानून के सिवाय और कोई कानून नहीं। कानून के जन्म से पहले, शेर की शक्ति को छोड़कर, अथवा भूख और सर्दी से, सक्षेप में अभाव से, दुखी होने वाले प्राणी की आवश्यकताओं को छोड़कर, अन्य कोई वस्तु नैसर्गिक नहीं होती। * 'नहीं,

दुनिया जिन लोगो का सम्मान करती है वे केवल ऐसे गुण्डे हैं जिन्हें रगे हाथो पकड़े जाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका। जिस सरकारी वकील को मेरे ऊपर आरोप लगाने के लिए नियुक्त किया गया है वह अपनी दौलत बेईमानी से इकट्ठी करता है। मैंने हत्या करने का प्रयत्न किया, और मुझे सजा मिलना उचित है, किन्तु इस अकेले कार्य के अतिरिक्त मुझे सजा देने वाला वालनो समाज के लिए सौ गुना खतरनाक है।

और सचमुच अपने तमाम लालच के बावजूद मेरे पिता इन सब लोगो से कहीं अधिक भले हैं, जुलिये उदासी के साथ किन्तु किसी प्रकार के क्रोध के बिना ही कह उठा। उन्होंने कभी मुझे प्यार नहीं किया। अब मेरी इस लज्जाजनक मृत्यु से उनके नाम पर अधिक से अधिक बट्टा लगेगा। अपने उस घनाभाव के भय के कारण, मानव स्वभाव की दुष्टता के उस अतिरजित दृष्टिकोण के कारण, जिसे लोग लालच कहते हैं, उन्हें मेरे इन तीन-चार सौ लुई में सात्वना और सुरक्षा का बड़ा भारी आधार दीखने लगता है। रविवार को भोजन के बाद वह बेरियर में अपने ईर्ष्यालु पडोसियो को अपना स्वर्ण दिखाया करेगे। उनकी नजरे उनसे कहा करेंगी, "तुम में से ऐसा कौन है जो ऐसा मूल्य मिलने पर अपने बेटे को गिलोटीन पर चढ़ा देने के लिए तैयार न हो जाये?"

भले ही ये सब विचार दार्शनिक दृष्टि से ठीक हों, पर इनके कारण आदमी को मरने की ही इच्छा होती है। पाँच लम्बे दिन इसी भाँति बीत गये। मातिल्द के साथ वह बहुत विनम्र और कोमल व्यवहार करता। वह भली भाँति समझता था कि वह बड़ी तीखी ईर्ष्या से दुखी है। एक दिन जुलिये ने सचमुच आत्महत्या का विचार किया। मादाम द रेनाल के प्रस्थान से जिस गहरी निराशा के गर्त में वह जा गिरा था उससे उसका धीरज टूट रहा था। वास्तविक जीवन की अथवा कल्पना की कोई चीज उसे अच्छी न लगती थी। व्यायाम के अभाव में उसका

स्वास्थ्य बिगडने लगा था और अब वह एक जर्मन विद्यार्थी की भाँति दुर्बल तथा शीघ्र उत्तेजित होने वाला व्यक्ति दिखाई पड़ता था । उसका वह पुरुषोचित स्वाभिमान कम होता जा रहा था जिसके बल पर दुखी मनुष्य अपने हृदय को घेरने वाले ओछे विचारों को प्रबल निश्चय द्वारा ठुकराते रहते हैं ।

मैंने सत्य से प्रेम किया है • पर वह अब कहाँ मिलेगा ? सब जगह मुझे ढोंग या कपट दिखाई पड़ता है, बड़े से बड़े सदाचारी व्यक्ति में भी, बड़े से बड़े महापुरुष में भी । ग्लानि से उसके होठ सिकुड़ गये • नहीं, आदमी किसी पर भरोसा नहीं कर सकता ।

मादाम द—ने जब गरीब अनाथों के लिए चन्दा इकट्ठा करने समय मुझे कहा था कि अमुक-अमुक राजा ने उन्हें दस लुई दिये, जो बिल्कुल झूठ था । पर मैं क्या कह रहा हूँ ? सेंटैलेना में नैपोलियन ! • विशुद्ध पाखंड, रोम के राजा के पक्ष में घोषणा !

हे ईश्वर ! यदि ऐसा व्यक्ति, और वह भी ऐसे अवसर पर जब अपने दुर्भाग्य को देखकर उसे अपने कर्तव्य की सबसे अधिक याद आनी चाहिए थी, पाखण्ड पर उतर सकता है तो और किसी से क्या आशा की जा सकती है ?

सत्य कहाँ है ? • धर्म में ? • • • हाँ, उसने तीव्रतम तिरस्कारभरी कड़वी मुस्कराहट से कहा, हाँ, मासलों, फ़िनेर, कास्तानेद जैसे लोगों के मुख में । • • • शायद सच्चे ईसाई धर्म में, जिसके पुरोहितों को सम्भवतः प्रारम्भिक धर्म-गुरुओं से अधिक धन नहीं मिलता । किन्तु सेंट-पाल को तो कानून बनाने का, भाषण देने का और लोगों से अपने विषय में चर्चा सुनने का आनन्द प्राप्त हुआ था । •

ओफ ! यदि कहीं सच्चा धर्म होता • • • मैं भी कैसा मूर्ख हूँ । मुझे तो एक रगा हुआ, काँच की खिड़की वाला सदियों पुराना गॉथिक गिरजाघर दीखता है । मेरा दुर्बल हृदय तो ऐसे पुरोहित का स्वप्न देखता है जो इन खिड़कियों में दिखाई पड़े । मेरी आत्मा उसे समझ सकती

है, मेरी आत्मा को उसकी आवश्यकता है। पर मुझे मिलता है चिकने-चुपड़े बेशो वाला अहकारी मूर्ख, कोई शवालिये द बोव्वाजि, और वह भी अपनी खूबियों के बिना।

किन्तु एक सच्चा पुरोहित, एक मासीलो, एक फेनेलो* मासीलो ने दुबुआ को बिशप बना दिया था। से-सिमो के स्मरणों के कारण फेनेलो मुझे इतना अच्छा नहीं लगता किन्तु तो भी वह सच्चा पुरोहित था। तब प्रेमी आत्माओं को इस धरती पर कोई सामान्य मिलन-स्थान प्राप्त हो सकेगा। हमे दूसरो से विच्छिन्न न होना चाहिए। यह भला पुरोहित हमे भगवान् के बारे में बताता। पर कौन सा भगवान्? बाइबल वाला भगवान् नहीं, वह तो छोटा-मोटा अत्याचारी है, क्रूर और प्रतिशोध का प्यासा किन्तु वोल्तेर का भगवान्, न्यायी, दयानु और अनन्त * * *

बाइबल उसे कण्ठस्थ थी, इस समय उसकी स्मृतियों से वह क्षुब्ध हो उठा*** वह सोचने लगा कि कैसे दो तीन व्यक्तियों के इकट्ठे होते ही आदमी भगवान् के इस महान् नाम में विश्वास करने लगता है, पुरोहितों द्वारा उसका इतना दुरुपयोग होने के बाद भी?

एकान्त में जीवन बिताना।*** कैसी यातना है!

उसने अपनी भौंहे मलते हुए कहा, मैं मूर्ख और अनुदार होता जा रहा हूँ। मैं यहाँ इस कोठरी में अकेला हूँ, किन्तु इस धरती पर मुझे, एकान्तवास नहीं करना पड़ा। कर्तव्य का प्रबल विचार सदा मेरे साथ रहा। जिस कर्तव्य को सही या गलत मैंने अपने लिये निर्धारित कर लिया था, वह एक वृक्ष के भारी-भरकम तने की भाँति सदा मेरे सामने मौजूद रहा है, जिसका सहारा हर तूफान में भी मुझे सुलभ था। मैं इधर-उधर डगमगाया, मेरे पैर काँपे। आखिरकार मैं भी तो इन्सान ही था* * * पर कभी मेरे पैर उखड़े नहीं।

इस कोठरी की सीलन-भरी हवा ही मुझे एकान्तवास की बात सोचने को लाचार कर रही है * *

और फिर ढोंग की निन्दा करते-करते ढोंग रचने से क्या लाभ ? मेरी इस निराशा का कारण मृत्यु अथवा यह कोठरी अथवा इसकी गीली हवा नहीं है—उसका कारण है मादाम द रेनाल की अनुपस्थिति । यदि मैं बेरियेर में होता और उनसे मिलने के लिए हफ्तों तक भी उनके मकान के तहखानों में रहने को बाध्य होता, तो क्या मुझे किसी बात की शिकायत होती ?

अपने समकालीनों के प्रभाव से बिल्कुल मुक्त होना बड़ा मुश्किल है, उसने तीखी हँसी हँसते हुए जोर से कहा । मौत अब केवल दो कदम दूर है, तब भी अपने आप बात करते-करते भी मुझसे ढोंग नहीं छोड़ा जाता ।***

शिकारी जंगल में गोली छोड़ता है, उसका शिकार गिर पड़ता है, वह उसे पकड़ने के लिए झपटता है । इस झपटने में उसके जूते की ठोकर एक-दो फीट ऊँचे चींटियों के ढूँढ़ पर पड़ती है, चींटियों का घर नष्ट हो जाता है, वे और उनके अण्डे इधर-उधर बिखर जाते हैं ।*** बड़ी से बड़ी दार्शनिक चीटी भी कभी उस विराट काली डरावनी वस्तु को—शिकारी के जूते को—नहीं समझ सकेगी, जिसने ऐसे अचानक ही अकल्पनीय गति से, इतने भयंकर घडाके के बाद, और ऐसी लाल आग की लपटों के साथ उनके घर को ध्वस किया ।

जीवन, मरण और काल की अनन्तता भी ऐसी ही है । यदि किसी की इन्द्रियाँ इतनी विराट हो तो उनका समझना बहुत सरल हो ।

गर्मी के दिनों में कुछ मक्खियाँ सबेरे नौ बजे जन्म लेती हैं और शाम को पाँच बजे मर जाती हैं । वे 'रात्रि' शब्द को कैसे समझ सकती हैं ? उन्हें पाँच घण्टे का जीवन और मिले तो वे देखने और समझने लगेगी कि रात का क्या अर्थ है ।

यही हाल मेरा है । मैं तेईस वर्ष की उम्र में मर जाऊँगा । मुझे मादाम द रेनाल के साथ रहने के लिए पाँच वर्ष का जीवन और मिलना चाहिए । •

वह मैफिस्टोफेलीस की भाँति हँसने लगा । इन बड़ी-बड़ी समस्याओं पर विचार करना भी कैसी मूर्खता है !

पहली बात तो यह है कि मैं किसी से कम ढोगी नहीं हूँ ।

दूसरे, मेरी जिन्दगी के इतने थोड़े से दिन बचे हैं तो भी मैं जीना और प्यार करना भूला जा रहा हूँ .. हाय ! मादाम द रेनाल मेरे पास नहीं हैं । शायद उनके पति अब उन्हें अधिक बदनाम होने के लिए बजासो न आने देंगे ।

इसी से मुझे इतना अकेला अनुभव होता है । किसी ऐसे न्यायी, दयालु और सर्वशक्तिमान ईश्वर के अभाव में नहीं, जिसे न राग-द्वेष है, न लालच है, और न जिसमें प्रतिशोध की इच्छा है । ओफ ! यदि वह उपस्थित होता । ओफ ! मैं उसके पैरों पर गिर पड़ता । उससे कहता कि मैं मृत्यु-दण्ड के योग्य तो हूँ, पर ओ महानु ईश्वर, ओ दयालु ईश्वर, मुझे मेरी प्रेयसी लौटा दे ।

रात बहुत बीत चुकी थी । घण्टे दो घण्टे चैन की नींद के बाद फूके आ पहुँचा ।

अब जूलिये इतना दृढ़ और सशक्त अनुभव कर रहा था मानो उसे अपना हृदय स्पष्ट दीख रहा हो ।

: ४५ :

अन्तिम भेंट

“सचमुच मैं बेचारे फादर शा-बर्नार के साथ ऐसी गन्दी चाल नहीं चल सकता कि उन्हें यहाँ बुला भेजूँ,” उसने फूके से कहा। “उसके बाद तीन दिन तक उन्हें अन्न न पचेगा। कोई जानसेनपथी ढूँढ़ निकालो, जो म० पिरार का मित्र हो और किसी षड्यन्त्र में न फँस सके।”

फूके बड़ी अधीरता से इस गुंजाइश की प्रतीक्षा कर रहा था। कस्बों में जनमत को सन्तुष्ट करने के लिए जो कुछ आवश्यक है उसे जुलिये ने उचित रीति से ही पूरा किया। आबे द फिलेर की कृपा से और पाप-स्वीकारकर्ता के मामले में अपने अनुपयुक्त चुनाव के बावजूद, जुलिये अपनी कोठरी में जैस्विटपथियों के सरक्षण में ही था। यदि वह समझदारी से काम लेता तो भाग निकलना असम्भव न था। पर कोठरी की घुटन का प्रभाव पड़ने लगा था और उसकी तकशक्ति क्षीय होती जा रही थी। उसे एक बार फिर मादाम द रेनाल के लौटने से बड़ी प्रसन्नता हुई।

“मेरा पहला कर्तव्य तुम्हारे प्रति है,” उन्होंने उससे लिपटते हुए कहा। “मैं वेरियेर से भाग आई हूँ।”

उनके प्रति जुलिये की भावनाओं में सुब्द अहंकार का अब कोई लेश भी न था। अपनी सारी दुर्बलताओं की बात उसने उन्हें कह सुनाई। उनका व्यवहार उसके साथ स्नेह और ममता से पूरम्पूर था।

उस दिन शाम को जेल से निकलते ही उन्होंने उस पुरोहित को

अपनी चाची के घर बुला भेजा जो जुलिये के साथ जोर की तरह चिपक गया था। उसकी एकमात्र इच्छा यह थी कि बजासो के भद्र समाज की नवयुवतियों में अपनी धाक जमा ले। इसलिए मादाम द रेनाल ने उसे आसानी से इस बात के लिए मना लिया कि वह जाकर ब्रे-ला-ओ के गिरजाघर में पूजा करे।

जुलिये के प्यार की उन्मत्त नियंत्रणहीनता को शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।

खुले हाथों धन लुटाकर और अधिकारियों के बीच अपनी चाची की धार्मिकता और सम्पत्ति के प्रभाव का सदुपयोग तथा दुष्टपयोग करके मादाम द रेनाल ने दिन में दो बार उससे मिलने की अनुमति प्राप्त कर ली।

यह सुनकर मातिल्द की ईर्ष्या तो बिक्षिप्तावस्था तक जा पहुँची। म० द फिलेर ने उससे कहा था कि उनकी भी प्रतिष्ठा इतनी अधिक नहीं है कि वह सब कायदे-कानून की उपेक्षा करके उसे अपने मित्र से दिन में एक बार से अधिक मिलने की अनुमति दिला सके। मातिल्द ने मादाम द रेनाल के पीछे आदमी लगा दिये जिससे उसे उनके हर काम का पता चलता रहे। म० द फिलेर ने मातिल्द को यह समझाने में अपनी सारी धूर्तता और चतुराई खर्च कर डाली कि जुलिये उनके योग्य नहीं है। पर इन सब यत्नों के फलस्वरूप जुलिये के प्रति उसका प्यार और भी बढ़ गया, और उसकी लगभग प्रत्येक दिन उसके साथ कहा-सुनी हो जाती।

जुलिये की यह बहुत इच्छा थी कि जैसे भी बने वैसे अन्ततः इस बेचारी लड़की के साथ उचित ही व्यवहार करे जिसने उसके कारण इतनी भारी बदनामी उठाई थी। पर प्रत्येक क्षण वह मादाम द रेनाल के प्रति जिस उच्छ्रित प्रेमावेग का अनुभव करता था उसके आगे कोई बस न चलता था। जब अपनी दलीलो के थोथेपन के कारण वह मातिल्द को इस बात का विश्वास दिलाने में असमर्थ रहा कि मादाम

भर उठी ।

जुलिये उनसे कहता, “अतीत मे जब वेर्जि के जंगलों मे भ्रमण करते-करते मेरे लिए इतना अधिक सुखी होना सम्भव था, तब मेरी प्रबल महत्वाकांक्षा मुझे कल्पना-लोको मे बहका ले जाती थी । अपने होठो के इतने समीप तुम्हारी इस सुन्दर बाँह को अपने हृदय से लगा लेने के बजाय मैं भविष्य की कल्पनाओं में तुमसे दूर हट जाना था, गौरव की खोज मे अनगिनती लडाइयों की कल्पना मे खोया रहता था—नहीं, यदि तुम यहाँ इस जेल में मुझसे मिलने न आती तो मैं सच्चे सुख को पहचाने बिना ही मर जाता ।”

इस शान्तिपूर्ण जिन्दगी मे बाधा डालनेवाली दो घटनाएँ घटीं । जुलिये का पाप-स्त्रीकारकर्ता जानसेनपथी होते हुए भी जैस्विटपंथियों के षड्यंत्र से बच न सका और अनजाने ही उनका सहकारी बन गया ।

एक दिन वह आकर जुलिये से कहने लगा कि यदि वह आत्महत्या के भयकर पाप का भागी नहीं होना चाहता तो उसे अपनी क्षमायाचना के लिए कोई प्रयत्न बाकी न उठा रखना चाहिये । पुरोहित-वर्ग का पेरिस मे न्यायमंत्रालय के ऊपर बड़ा अधिक प्रभाव था । इसलिए उसे एक सरल-सा रास्ता सुझाया गया : वह इस प्रकार अपने धर्म-परिवर्तन की घोषणा करे कि जन-साधारण का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो जाये ।

“जन-साधारण का ध्यान आकर्षित हो जाये,” जुलिये ने दोहराया । “मैं आपका मतलब समझ गया । फादर आप भी वही पुरानी तिकड़म का उपयोग करना चाहते हैं ।”

जानसेनपथी पुरोहित ने बड़ी गम्भीरता की मुद्रा से कहा, “आपकी तरुणार्ई, भगवान् का दिया हुआ आपका आकर्षक चेहरा, आपके अपराध का अभी तक रहस्यमय उद्देश्य, आपके बचाने के लिए माद० द ला मोल के साहसिक प्रयत्न—संक्षेप मे हर बात से, यहाँ तक कि जिसकी आपने हत्या करनी चाही थी उसकी आपके प्रति अद्भुत मित्रता के कारण भी,

आप बजांसो की नवयुवतियों के नायक बन गये हैं। आपके लिये वे सब कुछ, राजनीति तक, भूल गयी है।

“आपके धर्म-परिवर्तन की अनुगूँज उनके हृदय में भी होगी और उसकी वहाँ बड़ी छाप पड़ेगी। धर्म के लिए आपकी अधिक से अधिक देन हो सकती है। इस क्षुद्र कारण से हिवकचाना अनुचित है कि ऐसे अवसर पर जैस्विटपथी भा यही रास्ता अपनाते ! इस भाँति इस मामले में भी वह धर्म की क्षति ही करने वाले हैं। ऐसा मत होने दीजिये आपके धर्म-परिवर्तन के फलस्वरूप जो आँसू बहेगे उनसे वोल्तेर के दस सत्करणों का विषाक्त प्रभाव भी धुल जायेगा।”

“और यदि मैं अपने आपसे धृष्टा करने लगा तो मेरे पास क्या बचेगा ?” जुलिये ने बड़े रूखे स्वर में कहा। “मेरे मन में बड़ी महत्वा-कांक्षाएँ थी, उनके लिये मैं अपने आपको अपराधी नहीं मानता। तब मैंने समय की आवश्यकता के अनुसार कार्य किया। अब मैं आज के लिए चिन्तित रहता हूँ, कल का विचार नहीं करता। किन्तु जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, यदि मैंने अपने आप को किसी कायरता के काम में बहक जाने दिया तो मेरे दुःख का कोई ठिकाना न रहेगा।...”

जिस अन्य घटना ने जुलिये को बहुत ही प्रबल रूप में विचलित किया वह मादाम द रेनाल से सम्बन्धित थी। किसी न किसी चालाक मित्र ने इस सकोची सरल प्राणी को यह समझा लिया था कि उन्हें सैन्य-जाकर सम्राट चार्ल्स दशम के चरणों पर गिरकर प्रार्थना करनी चाहिये।

जुलिये से बिछुड़ने के चरम त्याग के बाद अब लोगों के लिए तमाशा बन जाने की उन्हें तनिक भी परवाह न थी। पहले यह उन्हें मृत्यु से भी भयकर दुर्घटना जान पड़ती।

“मैं महाराज के पास जाऊँगी, और खुल्लमखुल्ला स्वीकार करूँगी कि तुम मेरे प्रेमी हो। इन्सान का जीवन, विशेष कर जुलिये जैसे इन्सान का जीवन, बाकी सब बातों से ऊपर है। ऐसे अनिश्चित उदाहरण मिलते

है जिनमे जूरी अथवा राजा की दयालुता के कारण अभागे नौजवानों को प्राणदान मिला है ।”

“मैं तुमसे मिलना बन्द कर दूँगा” जुलिये ने चीखकर कहा, “मैं तुम्हारे लिए अपनी जेल का दरवाजा बन्द करा दूँगा, और फिर अगले दिन निराश होकर आत्महत्या कर लूँगा । नहीं तो तुम मेरी सौगन्ध खाओ कि ऐसा कोई काम न करोगी जिससे लोगों के सामने हम दोनों तमाशा बन जायें । यह पेरिस जाने का विचार तुम्हारा अपना नहीं । मुझे उस शैतान स्त्री का नाम बताओ जिसने यह तुम्हें सुभाया है ।”

“इस जिन्दगी के बाकी थोड़े-से दिनों में सुख को यो नष्ट न करो । हमारा अस्तित्व छिपा रहना ही ठीक है । मेरा अपराध इतना अधिक उजागर है । माद० द ला मोल की पेरिस में अधिक से अधिक पहुँच है । विश्वास करो कि इन्सान से जो कुछ सम्भव है वह सब कर रही हैं । यहाँ कस्बे में सब धनी और प्रभावशाली व्यक्ति मेरे विरुद्ध हैं । तुम्हारे इस कार्य से ये सब लोग जो समझदारी को सबसे बड़ी चीज मानते हैं, और जिनके लिए जिन्दगी इतनी आसान है, और भी कुढ़ जायेंगे ।” हमें मासलो, वालनो उनसे भी अधिक योग्य व्यक्तियों को हँसने का मौका नहीं देना चाहिए ।”

कोठरी की विषाक्त वायु जुलिये के लिए असह्य हो उठी थी । सौभाग्यवश जो दिन उनकी मृत्यु के लिए निश्चित हुआ था उस दिन चमकती हुई धूप ने सारी प्रकृति को उल्लास से भर दिया और वह स्वयं बड़ा साहस अनुभव कर रहा था । खुली हवा में बाहर निकलकर उसे बड़ी ही प्रसन्नता हुई, ठीक वैसी ही जैसी बहुत दिन तक समुद्र में रहने वाले मल्लाह को सूखी धरती पर पैर रखकर होती होगी । वह मन ही मन कहने लगा कि ठीक है, सब कुछ ठीक है मेरा साहस जवाब नहीं दे रहा है ।

उस मस्तक को ऐसा काव्यात्मक सौन्दर्य पहले कभी नहीं प्राप्त हुआ था जैसा कटकरु गिरने के क्षण में उसमें दिखाई पडा । अतीत में वेजि

सुर्ज और स्याह

के वनो में बिताये हुए मधुरतम क्षण बड़ी आकुलता के साथ उसके मन में उमड़ आये।

सब कुछ सहज और शोभन रूप में सम्पन्न हुआ, उसने कृत्रिमता का कोई भी चिह्न न प्रगट किया।

दो दिन पहले उसने फूके से कहा था - “उस समय मेरी भावनाएं क्या होगी, यह तो मैं अभी नहीं कह सकता। यह गद्दी सीलनभरी कोठरी बीच-बीच में मुझे ऐसा विक्षिप्त कर देती है कि अपने ऊपर मेरा वश नहीं रहता। पर भय मेरे भीतर तनिक भी नहीं है, किसी को मेरा चेहरा उतरा हुआ न दीखेगा।”

उसने पहले से ही इस बात का प्रबन्ध कर दिया था कि अन्तिम दिन फूके मातिल्द और मादाम द रेनाल को सबेरे ही वहाँ से ले जाये। उसने उससे कहा था, “उन्हें अपने साथ एक ही गाड़ी में ले जाना। ऐसा प्रबन्ध करना कि घोड़े लगातार सरपट दौड़ते रहे, वे दोनों या तो एक दूसरे से लिपट जायें या एक दूसरे के प्रति तीव्री घृणा प्रगट करेंगी। हर हालत में बेचारी स्त्रियाँ इस भयंकर शोक से पल भर के लिए अपने आपको मुक्त कर सकेंगी।”

मादाम द रेनाल से जुलिये ने इस बात का पक्का वचन ले लिया था कि वह मातिल्द के बच्चे का पालन करने के लिए जीवित रहेगी।

एक दिन उसने फूके से कहा, “कौन जानता है? शायद मौत के बाद भी इन्सान को अनुभव होता हो। मेरी बड़ी इच्छा है कि मृत्यु के बाद उस ऊँची पहाड़ी की छोटी-सी गुफा में विश्राम करूँ—विश्राम कहना ही ठीक है—जहाँ से वेरियेर दिखाई पड़ता है। मैंने तुम्हें पहले भी बताया है कि कई बार रात भर इस गुफा में बिताने और फ्रांस के समृद्धतम प्रान्तों की ओर ताकते रहने के बाद मुझे अनुभव हुआ है कि मेरा हृदय महत्वाकांक्षा से प्रज्वलित हो उठा है; उस समय मैं उसी में पागल था।” संक्षेप में वह गुफा मुझे बहुत ही प्रिय है, और इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि वह ऐसी जगह बनी है कि

द रेनाल का आना सर्वथा निर्दोष है, तो वह मन ही मन कहने लगा : अब तो हम नाटक का अन्त अनिवार्य रूप से बहुत ही समीप है। अब यदि मैं अधिक अच्छा बहाना नहीं खोज पाता तो लाचारी है।

माद० द ला मोल को खबर मिली कि मार्कि द क्रवाजन्वा की मृत्यु हो गई। म० द तालेर ने मातिल्द के गायब होने के विषय में अप्रिय बातें कह दी थी। म० द क्रवाजन्वा उनके यहाँ यह अनुरोध करने गये कि वह अपने शब्दों को वापिस ले ले। किन्तु म० द तालेर ने कुछ ऐसे गुमनाम पत्र उन्हें दिखाये जिनमें बहुत-सी बातें ऐसी थी कि बेचारे मार्कि के लिए सत्य से इन्कार करना असम्भव हो गया।

ऊपर से म० द तालेर ने कुछ भद्दे मजाक भी कर डाले। दुख और क्रोध से पागल होकर म० द क्रवाजन्वा ने ऐसी भयकर क्षमा-याचना की माँग की कि उस करोड़पति ने द्वंद्व-युद्ध करना ही पसन्द किया। अन्त में मूर्खता की विजय हुई और स्त्री के प्यार के लिए एक सर्वथा उपयुक्त व्यक्ति की चौबीस वर्ष से कम उम्र में ही मृत्यु हो गयी। जुलिये के मन की जैसी दुर्बल अवस्था थी उसमें इस मृत्यु का बड़ा विचित्र और अस्वास्थ्यकर प्रभाव पड़ा।

“बेचारे क्रवाजन्वा ने,” उसने मातिल्द से कहा, “सचमुच बड़े संयम और सम्मान का व्यवहार हमारे प्रति किया। वह चाहता तो तुम्हारी माँ के ड्राइगरूम में तुम्हारे असंयत व्यवहार के बाद मुझसे घृणा करने लगता और मुझमें झगडा भी कर बैठता। तिरस्कार के बाद होने वाली घृणा साधारणतः बड़ी प्रबल होती है।”

म० द क्रवाजन्वा की मृत्यु से मातिल्द के भविष्य के विषय में जुलिये की सारी योजनाएँ उलट-पलट हो गयी। बहुत दिनों तक वह उसे यह समझाता रहा कि उसे म० द लुज से विवाह कर लेना चाहिये। वह कहता, “वह कुछ शर्मीला आदमी है, बहुत अधिक जैस्विटपथी भी नहीं। निस्सन्देह वह तुमसे विवाह का प्रस्ताव करेगा। बेचारे क्रवाजन्वा की अपेक्षा उसकी महत्वाकांक्षा दिखावटी कम है, और स्थायी भी

अधिक है। उसे जुलिये सोरेल की विधवा से विवाह करने में अधिक हिचक न होगी।”

“और ऐसी विधवा के साथ जिसे महान् आवेगों से नफरत है,” मातिल्द ने रूखे स्वर में उत्तर दिया। “क्योंकि उसने अपनी जिन्दगी में यह भी देख लिया है कि छ. महीने के बाद उसका प्रेमा उसी स्त्री को अधिक प्यार करता है जो उनके सारे दुर्भाग्य का जड है।”

“तुम अन्याय कर रही हो। मादाम द रेनाल के आने-जाने से मेरी प्रीति में पैरवी करनेवाले पेरिस के बैरिस्टर को कुछ बड़ी उपयोगी बातें कहने को मिल जायेगी। वह ऐसा चित्र खीचेगा कि हत्यारे को उसी व्यक्ति का सम्मान मिल रहा है जिसकी उसने हत्या करनी चाही थी। इसका बड़ा प्रभाव पड़ सकता है और शायद एक दिन तुम मझे किसी बड़े भावुक नाटक के नायक के रूप में देखोगी,” इत्यादि इत्यादि।

मातिल्द इस समय ऐसी ईर्ष्या से त्रस्त थी जिसके प्रतिशोध की कोई सम्भावना न थी। उसे अपने भयकर दुःख का कोई अन्त न दीखता था क्योंकि जुलिये यदि बच भी गया तो उसका हृदय फिर से जीत सकने की आशा उसे न होती थी। किन्तु इस सबके बावजूद अपने इस वेवफा प्रेमी के प्रति और भी अधिक प्यार अनुभव करने के कारण उसकी लज्जा और दुःख तीव्रतर हो उठा था। इन सब बातों ने मातिल्द को एक ऐसे क्षोभपूर्ण मौन के गर्त में ढकेल दिया था जिससे न तो म० द फिलेर का प्रेम-प्रदर्शन और न फूके की दो टूक बात ही उसे निकाल पाती थी।

उत्तर जुलिये तो मातिल्द द्वारा छीने हुए समय के अतिरिक्त केवल प्रेम के सहारे जीवित था और भविष्य का कोई विचार भी पल भर उसके मन में न आता था। ऐसे अकृत्रिम और चरम प्रेमावेग का एक विचित्र परिणाम यह हुआ कि मादाम द रेनाल भी उसी की भाँति उल्लास और उत्साह से तन्हा सारी दुनिया के प्रति एक प्रकार की उदासीनता से

किसी दार्शनिक को भी उसकी चाह हो नुम तो जानते ही ... हो कि बजासो के जैस्विटपर्था हर चीज से पैसा बनाना जानते हैं। अगर तुमने होशियारी में काम लिया तो वे मेरे अस्थि अवशेष तुम्हारे हाथ बेच देंगे।”

इस दुःखद सौदे में फूके को सफलता मिली। वह अपने कमरे में अकेला अपने मित्र के शव के पास रात भर बैठने वाला था। तभी अचानक मातिल्द को वहाँ देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ ही घण्टे पहले वह उसे बजासो से कोई बीस मील दूर छोड़कर आया था। उसका चेहरा विक्षिप्त था। उसकी आँखें पथराई हुई-सी थीं।

“मैं उसे देखना चाहती हूँ,” वह बोली।

फूके में इतना भी साहस न बचा था कि कुछ बोल सके अथवा कुर्सी से उठ सके। उसने उँगली से फर्श पर एक बड़े भारी नीले लबादे की ओर इशारा किया। जुलिये के अवशेष उसी में लिपटे हुए पड़े थे।

वह विक्षिप्त-सी गिरकर घुटनों के बल बैठ गयी। बोनीफास द ला मोल और मार्गरित द नावार की स्मृति ने निस्सन्देह उसे अति-मानवीय साहस प्रदान कर दिया था। काँपते हुए हाथों से उसने लबादे को अलग हटाया। फूके ने अपनी आँखें फेर लीं।

उसने मातिल्द के कमरे में तेजी से इधर-उधर घूमने की आवाज सुनी। वह बहुत-सी मोम-बत्तियाँ जला रही थीं। आखिरकार फूके को उसकी ओर दृष्टि घुमाने का साहस हुआ तो उसने देखा कि उसने जुलिये के सिर को अपने सामने एक छोटी-सी मगमरमर की मेज पर रख लिया है और उसके मस्तक को चूम रही है।

मातिल्द अपने प्रेमी के साथ उस समाधिस्थल तक गयी जो वह अपने लिये निश्चित कर गया था। अर्थी के साथ बहुत-से पुरोहित भी थे। और अपनी गाड़ी में काले वस्त्र पहने अकेली बैठी हुई वह सबके अन-जान में ही अपने घुटनों पर उस व्यक्ति का सिर रखे थी जिसे उसने इतनी अनन्यता से प्यार किया था।

जुरा पर्वतमाला के एक उच्चतम शिखर के पास उस छोटी-सी गुफा में लोग आधी रात के समय पहुँचे । गुफा को अनगिनती मोम-बत्तियों से भव्य रूप में आलोकित कर दिया गया था । वहाँ बीसियों पुरोहितों ने अन्तिम सस्कार पूरा किया । मार्ग के छोटे-छोटे पहाड़ी गाँवों के निवासी भी जुलूस के पीछे-पीछे चले आये थे; इस विचित्र आयोजन का असाधारण रूप उन्हें बरबस खींच लाया था ।

मातिल्द सिर से पैर तक शोक-सूचक वस्त्रों में उनके बीच आकर खड़ी हो गयी और पूजा समाप्त होने के बाद उसने कई हज़ार फ़ाँक उनके बीच बिखेर दिये ।

जब फूँके और वह अकेले रह गये तो उसने इस बात की हठ की कि अपने प्रेमी का सिर वह अपने हाथ से दफनायेगी । फूँके शोक से लगभग पागल हो उठा ।

मातिल्द ने अपने प्यार भरे यत्न से इस अनगढ़ गुफा को बहुत धन लगाकर इटली के बहुमूल्य सगमरमर से सजाया ।

मादाम द रेनाल ने भी अपना वचन पूरा किया । उन्होंने स्वयं अपने प्राण लेने का कोई भी प्रयत्न न किया, किन्तु जुलियों की मृत्यु के तीन दिन बाद उन्होंने अपने बच्चों को अन्तिम बार हृदय से लगाया और प्राण त्याग दिये ।

सुख और स्याह